श्रीमद् जिनलाभसूरि विरचित.

श्री

आत्मप्रबोध भाषांतर.

जिन वचनामृत महोदधिमांथी धुरधर गीतार्थ पंडित वचनतरंग बिन्दुरूप सम्यक्त्व, देशविरति, सर्वविरति अने परमात्मभाव स्वरूप विगेरे अनेक विषयोपर दृष्टांतयुक्त विस्तारथी विवेचन.

अनुवादक,

स्वर्गस्थ झवेरभाइ भाइचंद शाह,

भावनगर निवासी.

बाबुसाहेब प्रतापचंदजी गुलाबचंदजी मुंबइ निवासीए करेली

आर्थिक सहायवडे,

छपावी प्रसिद्धकर्त्ता,

श्री जैन आत्मानंद सभा

भावनगर.

वीर संवत २४३८ आत्म संवत १७ विक्रम संवत १९६८ इ. स १९१२

धी " आनंद " प्रीन्टींग प्रेस—भावनगर

नरेंद्र देवेंद्रसुखानि सर्वा-एयपि प्रकामं सुलभानि लोके ।
परं चिदानंदपदैकहेतुः सुदुर्लभस्तात्त्विक आत्मबोधः ॥
ततो निरस्याऽखिलदुष्टकर्म-व्रजं सुधीभिः सततं स्वधर्मः ।
समग्र सांसारिकदुःखरोध-स्समर्जनीयः शुचिरात्मबोधः ॥

ત્રણ ભુવનોમાં ચક્રવર્તી અને ઇંદ્રના સર્વ સુખો અત્યંતપણે સુલભ છે; પરંતુ સિદ્ધિસુખના અદ્વિતીય કારણરૂપ '**આત્મબોધની પ્રાપ્તિ**' વાસ્તવિકપણે દુર્લભ છે. તેટલા માટે વિચક્ષણ જનોએ સમસ્ત દુષ્ટ કર્મના સમૂહને દૂર કરી આત્માને એકાંત હિતકારી અને સંસારની સર્વ આધિ, વ્યાધિ અને ઉપાધિઓને સંવર કરનાર પવિત્ર આત્મબોધની ઉપાર્જના કરવી.

श्रीमद् जिनलाभसूरिजी.
(आत्मप्रबोध)





बाबुसाहेब गुलाबचंदजी अमीचंदजी झवेरी

मुंबई.

Baboosaheb Gulabchandji Amichandji Zaveri



अर्पणपत्रिका.



स्वर्गवासी बाबुसाहेब,

गुलाबचंदजी अमीचंदजी पन्नालाल झवेरी,

मुंबइ.

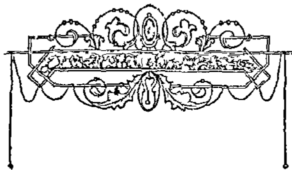
आप व्यावहारिक स्थितिमां सारी मह्त्त्विवाळा हता. आपनो उच्च कुळमां जन्म थयो होवाथी तेमज बाबु पन्नालाल पुरणचंदजीना पौत्र थता होवाथी झवेरीना धंधामां कुशळ होवासाथे धर्मउपर श्रध्धावाळा हता. आपनुं हृदय जद्रिक, शांत, उदार अने साधर्मी बंधुओने सहाय करवानी जावनाथी वासित हतुं. जीवदया अने ज्ञानोध्धारना कार्यो पर आपने खास प्रेम हतो. आपना तेवा प्रेमपात्र धार्मिक कार्यो जोवानो जैनसमाजने वखत आव्या पहेलां लघुवयमां आपनो देहोत्सर्ग थयो छे, तेवा परलोकवासी आत्माने जावमय शांति आपनारो, अने भव्यात्माने आत्मबोध प्राप्त करावनारो (आत्म स्वरूप ओळखावनारो) आ आत्मप्रबोध ग्रंथ आपना स्मरणीय हृदयमां आरोपित करी तेनी प्रेरणा करनार आपना पितृजक्त पुत्र बाबु साहेब प्रतापचंदजीना पुत्र कर्तव्यने अजिनंदन आपी अमे अति आनंदित थइए छीये.

आत्मानंद भुवन.

श्री जैन आत्मानंद सभा,
भावनगर.







प्रस्तावना.

दरेक आत्मामां असाधारण अन्युदयने आपनार सामर्थ्य अने शक्तिओ बीजरुपे रहेली छे. तेमने मनुष्य निश्चय बळथी मेळवी शके छे. निश्चयबळ ए कांइ साधारण प्रकारनुं बळ नथी, पण ते मनुष्य जीवननी ऊंचामां ऊंची जूमिकामां जवानुं साधन छे. जैन योगविद्यानो महान् आरंन जेने माटे प्ररूपित थयेलो छे, तेवा मनना निग्रहनुं फळ पण निश्चयबळ छे. मनुष्यनी अंतर्वृत्तिमां जे उच्च अनिलाषाओ अने शुद्ध विचारो प्रगटे छे, तेमनी कृतार्थता निश्चयबळमांज रहेली छे. जेनामां ए अद्भुत बळ रहेलुं छे, ते धर्मनी क्रिया अने तत्त्वमार्गनो पथिक बनी शके छे. विश्वोपकारी जगवान् तीर्थकरोए प्राणीओना हितने माटे जे आज्ञारुप नियमो प्ररूपेला छे, ते बधा निश्चयबळथीज पाळी शकाय छे. ते निश्चय बळने दृढ राखवाने माटेज दान, शील, तप अने जाव-ए चतुर्विध धर्मनी प्ररूपणा करवामां आवी छे. ए चार स्तंजोने अवलंबीने सर्वधर्मशिरोमणि आर्हतधर्मनो सुंदर प्रासाद रहेलो छे. निश्चयबळ अथवा मनोबळने धारण करनार जव्य आत्माए पवित्र अने सुंदर प्रासादमां वास करवानो अधिकारी थाय छे. ते निश्चयबळने टकावी राखवाने माटे जे गुणोनी आवश्यकता छे, ते गुणो आर्हत धर्म-शास्त्रमां दर्शावेला छे, ते शास्त्र उद्घोषणा करे छे के, "निश्चयबळ मेळववाने माटे सद्वर्तन धारण करजो. उदासीनता, खेद, चिंता अने जय जे मनोबळने लुलुं करी नांखनारा छे अने आत्माना जावी उदयने रोकनारा छे तेमने हृदयमां पेसवा देशो नहीं. निरंतर आत्मचिंतवन करजो, कटुतामां मधुरता शीखजो. एटले दुःखमां सुखने मानी लेतां शीखजो. दुःखोने अनुजवी ढीला थशो नहीं अने संतापना रोदणां रडशो नहीं. तमारा मनने कर्म प्रकृतिनुं ज्ञाता अने तत्त्वज्ञानने सेववानुं अधिकारी बनाववा निश्चयबळ आपजो, तेथी तमोने दुःखमां प्रसन्नता राखवानुं कार्य जरापण कठिन जणाशे नहीं."

शास्त्रोनी आ वाणी बोली जवानी के सांभळी जवानी नथी पण तेने क्रियामां–वर्त्तनमां मुकवी जोइए. ए वर्त्तनमां मुकवाने माटेज आर्हत आगम उपरथी प्राचीन विद्वानोए अनेक लेख लखेला छे. प्रत्येक लेखनी रचना भिन्न भिन्न लागे छे, पण तेमनो पवित्र उद्देश एकज होय छे. ते पवित्र उद्देशथी लखाएला ग्रंथोनी अंदर केटलुं बधुं गौरव रहेलुं छे ? तेनो चितार सहृदय विद्वानोज आपी शके तेम छे.

सर्व दर्शन शिरोमणि जैनदर्शनमां विश्वोपकारी महात्माओए भव्यात्माओना हितनी खातर अनेक ग्रंथो लखेला छे. अने तेथीज भारतवर्ष उपर वसती आर्य प्रजामां आर्हत धर्मनी ज्ञानसमृद्धि सर्वोत्कृष्ट गणाय छे. जोके तेनां अनेक कारणो छे, परंतु मुख्य कारण तेमना ग्रंथोमां वर्णवेलुं उच्च प्रकारनुं तत्त्वज्ञान केवल शुष्क नथी, पण ते साथे ते क्रिया, आचार अने सद्वर्तनना बोधरूप माधुर्यथी भरपूर छे. तेनी अंदर हृदयना उच्च भावने जाग्रत करनारी भावनाओ एवी रीते भरूपेली छे के जेमनाथी संसारी जीवो पोताना दोषोने दूर करवा अने आत्माना गुणोने संपादन करवा समर्थ थइ शके छे.

आ आत्मप्रबोध ग्रंथ आर्हत धर्मनी ज्ञानसमृद्धिना वैभवना परिपूर्ण विलास रुप छे. उपर कहेल निश्चयबळ अथवा मनोबळ प्राप्त करवानी सामग्री आ ग्रंथमां भरपूर गोठवेली छे. आत्मा ए पदार्थनी अंदर जे सामर्थ्य, वीर्य अने सत्ता रहेली छे, तेने ओळखाववाने माटे जे जे साधनो जोइए, ते साधनो आ ग्रंथमां युक्ति अने प्रमाण साथे प्रतिपादित करेला छे. मनुष्योमां कर्मजनित जे जे दोषो रहेला छे, तेमने टाळीने तेमना आत्मामां रहेला उच्च लक्षणो खीलववामाटे सर्वोत्तम साधन सम्यक्त्वज छे. ते विषे आ ग्रंथमां सविस्तर विवेचन करवामां आवेलुं छे, ते उपरथी आत्मा केवी रीते प्रबोधने प्राप्त करे छे, अने प्रबोध प्राप्त करवा माटे आत्माए शुं करवुं जोइए ? इत्यादि उच्च प्रकारो ग्रंथकारे एवी शैली अने क्रमथी वर्णव्या छे के, जेथी आ ग्रंथनुं आत्मप्रबोध ए नाम संपूर्ण सार्थकताने धारण करे छे. वळी प्रबोधनो अर्थ जागृति थायछे, जेनाथी आत्मानी प्रबोध–जागृति थाय एवा विचारोनो जेमां संग्रह छे, एवो आत्मप्रबोध ग्रंथ तेना नामनी संपूर्ण कृतार्थता पण संपादन करेछे.

ज्यां प्रकाश त्यां प्रबोध होयछे. अंधकारमां प्रबोध होइ शकतो नथी; तेथी आ ग्रंथना प्रकरणने प्रकाश नाम आपेलुं छे. आ ग्रंथमां प्रकरण रुपे चार

प्रकाशो आपेला छे. प्रथम प्रकाशनुं नाम सम्यक्त्वनिर्णय राखेलुं छे. आ प्रकाशनी अंदर आ ग्रंथना अधिकारीनो निर्णय करी आत्मा शब्दनो अर्थ, आत्माना प्रकार, अने सम्यक्त्वनुं स्वरूप विस्तारथी निरूपण करेलुं छे. श्रावकपणाना तत्त्वने प्रतिपादन करनार सम्यकत्त्व तत्त्वने प्ररुपतां ग्रंथकारे तेने अंगे आत्मशुद्धिनो विषय घणो सरसरीते वर्णव्यो छे. मनुष्यनी मानस शक्तिओ अने गुणो केवी-रीते विकाशने पामेछे अने असाधारण मानसशक्तिओ शाथी खीलेछे? ए वात आत्मशुद्धिना विषयथी स्पष्ट थायछे. ते उपर आपेला प्रभास चित्रकारनुं दृष्टांत ए विषयनुं यथार्थ स्पष्टीकरण करेछे. सम्यक्त्वना भेदोना प्रसंगमां पंचविध विनयनुं स्वरुप प्रतिपादन करतां देवपूजा अने चैत्य भक्तिनो विषय घणोज चित्ताकर्षक रचाएलो छे. पवित्र प्रभुनी पूजा—भक्तिथी हृदय उपर ऊंडामां ऊंडी जे भावना पडेछे, अने तेथी हृदय जे द्रवीभूत थायछे, तेनो चितार ग्रंथकारे ते विषयनी चर्चामां दर्शावेलो छे. अने ते उपर असरकारक दृष्टांतो आपी प्रस्तुत विषयने अत्यंत समर्थ बनाव्यो छे; जे वांचतां आस्तिक हृदय भावोल्लासथी उभराइ जायछे. सम्यकत्त्वनी विविध शुद्धि दर्शावतां ग्रंथकारे सम्यक्त्वनी महत्तानुं भान कराव्युं छे अने पछी तेना दुषणो ने दृष्टांत पूर्वक समजावी सम्यक्त्वना आठ प्रभावकनुं सविस्तार व्यान आपेलुं छे. जे प्रसंग सम्यक्त्वना अधिकारी आत्माओने अति आनंद उपजावे छे. ते उपरथी ग्रंथकारे सिद्ध करी वताव्युं छे के, दरेक जैने सम्यक्त्वनी भावनाने माटे उच्चपणे गतिमान् थवुं जोइए, ते प्रमाणे गतिमान् थतां उच्च वर्त्तन राखवा प्रयत्न करवो जोइए अने कल्याणकारक प्रवृत्ति आचरवी जोइए अने तेथी दरेक जैने सम्यक्त्वना प्रभावक थवुं जोइए. प्रवचन, धर्मकथा, वादविवाद, निमित्तज्ञान, तप, विद्यासिद्धि अने शासनज्ञान ए उच्च साधनोथी प्रभावक थइ शकाय छे, अने प्रभावनाने माटे ते साधनो मेळववानी आवश्यकता छे, ए वात विद्वान् ग्रंथकारे उच्च आशयथी प्रतिपादन करेली छे. आ भवोदधिमांथी प्रसार थवा इच्छा राखनारा भव्यात्माए धारण करेला सम्यक्त्वने सर्वदा विभूषित राखवुं जोइए. ए उद्देशने लइने आर्हत आगममां दर्शावेला सम्यक्त्वना भूषणो विषे ग्रंथकारे रसिक विवेचन करेलुं छे. त्यार बाद सम्यक्त्वना पांच लक्षणो हेतुपूर्वक उदाहरणो आपी समजाव्या छे. पछी छ प्रकारनी यतना, छ आगार, छ भावना अने छ स्थानकना शुद्ध स्वरूप दर्शावी ए प्रथम प्रकाशने पूर्ण करवामां आव्यो छे.

आ ग्रंथनो बीजो देशविरति नामे प्रकाश छे. आ प्रकाशमां गृहस्थ धर्मनुं उपयोगी विवेचन आपेलुं छे. गृहस्थनी समाचारी केवी होवी जोइए? केवा गुणोथी गृहस्थावास अलंकृत थाय छे? अने गृहस्थे केवा व्रतो पाळवा जोइए? ए विषय उपर ग्रंथकारे पोतानो वाणीनो वैभव उच्च प्रकारे दर्शाव्यो छे. तेमांथी एवो ध्वनि निकळे छे के, भव्य मनुष्ये निश्चय बळ वधारवाना साधनो संपादन करवा, दुर्लभ एवा मनुष्यजीवनने सूर्य जेवुं तेजस्वी, प्रतापी अने सर्वेनुं श्रेयःसाधक बनाववुं, आळस, प्रमाद, व्यग्रता, क्रोध, चिंता, मोह अने अमर्याद आसक्ति एटलाथी अत्यंत सावध रहेवुं, ए दोषो विपत्तिओना महासागरमां डुबाडनारा छे, एम मानवुं, सप्तदुर्व्यसनो उदयनी आशाने निर्मूळ करी दुर्गतिना दरवाजा तरफ लइ जनारा छे, एम निश्चय करवो. छळ प्रपंचनी छायामां पण उभा न रहेवुं, सत्यनो प्राण जतां पण त्याग न करवो अने निश्चय बळ अने आत्मबळमां विश्वासवाळा रहेवुं, ए देशविरति धर्मना उपदेशनुं रहस्य छे, अने गृहस्थ धर्मना शुध्ध स्वरूपनो प्रकाश छे. ते गृहस्थधर्मने अंगे बार व्रतोनुं स्वरुप अने सदाचार भरेला सद्वर्त्तन विषे ग्रंथकारे घणां रसिक दृष्टांतो आपेला छे. ते प्रसंगे दानधर्मनुं विवेचन करी गृहस्थावासमां करवा योग्य उदारता भरेली सखावतो विषे पण इसारो करवामां आवेलो छे. तदनुसार श्रावकनी एकादश प्रतिमा दृष्टांत सहित प्रतिपादन करी गृहस्थ श्रावकना उच्च जीवनने अर्पनारा कर्त्तव्यो दर्शाव्या छे; जे मनन पूर्वक वांचवा योग्य छे. आ प्रकाशना लेख उपरथी ग्रंथकारे सिध्ध कर्युं छे के, प्रत्येक ग्रहस्थे कर्त्तव्यनिष्ट थवानुं छे अने पोताना जीवनने सद्भावनामय बनावी सर्व प्रति उच्च प्रेमनी लागणीथी जोवानुं छे. हृदयमां प्रेमरुप अमृतने भरी मृदुता भरेली वाणी उचारवानी छे, जे वाणी सर्व श्रवण करनारने शीतळता अने शांति उपजावे छे. प्रत्येक गृहस्थ देशविरति छे, छतां तेनी भावनामां सर्व विरतिपणानुं स्वरूप प्रकाशित होवुं जोइए. तेनुं वर्त्तन दयाळुताथी रंगाएलुं, विशुध्ध अने सात्विक होवुं जोइए; जेथी शुध्धदेव, गुरु अने धर्म—ए त्रिपुटीनी आराधना करवानी योग्यता तेनामां पूर्णरीते प्राप्त थाय छे. सद्वर्त्तननी शुध्धिने सेवनारो गृहस्थ श्रावक आत्माना असाधारण महिमाने जाणी शकेछे, ते कोइपण जातना दुराग्रहने वश थतो नथी, मिथ्यात्व भरेला विचारो तेने रुचिकर लागता नथी, ते निरंतर पोतानी सम्यग् दृष्टि उच्चपद तरफ राखेछे, अने नीचपदनी उपेक्षा करेछे. तेनी भावनामां श्रेणीबंध सद्विचारो

रहेला छे. तेनी मनोवृत्तिथी मलिन वासना सदा दूर होय छे अने तेना जीवननो प्रवाह सत्प्रवृत्ति तरफ वल्या करेछे. आवा गृहस्थना उच्च जीवनने माटे ग्रंथकारे घणुं विवेचन करेलुं छे.

त्रीजा प्रकाशनुं नाम सर्वविरति छे. आ स्थळे विद्वच्छिरोमणि ग्रंथकारे संयम मार्गना शुद्ध स्वरूपनी प्ररूपणा करेली छे. संयमनुं स्वरूप, तेना अधिकारी अने यतिधर्मना दश प्रकार विषे करेलुं विवेचन अभ्यासी वाचकोने अति उपयोगी थइ पडे तेवुं छे. तप, स्वाध्याय, इंद्रियनिग्रह, दंभविरति वगेरे विषयो रसिक दृष्टांत पूर्वक प्रतिपादन करेला छे. संयम साधकने हेय अने उपादेय शुं छे ? ते दर्शावी बार भावनानुं सुबोधक स्वरूप आपेलुं छे. ते प्रसंगे आपेला प्राचीन ऐतिहासिक दृष्टांतो घणा असरकारक छे. ते पछी बार प्रतिमानुं स्वरूप आपी साधुओनो अहोरात्रनो कार्यक्रम उपस्थित कर्यो छे. आ प्रसंगे ग्रंथकारे सिद्धांतमां कहेला साधुगुणोनुं वर्णन एवी सुंदरताथी करी बताव्युं छे के, जेनी असर आस्तिक वाचकोना हृदय उपर सत्वर आरुढ थइ शके छे.

आ प्रकाश उपरथी महोपकारी महाशय ग्रंथकर्त्ताए सिद्ध करी बताव्युं छे के, अधिकारी मनुष्यने पोतानुं जीवन उच्च स्थितिए लइ जवामां बे मार्ग साधनीय छे. गृहधर्म मार्ग अने यतिधर्म मार्ग. गृहधर्म मार्ग यथार्थ रीते संपादन कर्यो होय तो ते द्वारा यतिधर्मनो मार्ग सुगमताथी प्राप्त कराय छे. सर्व विरति संयममार्ग ए मानवजीवननी उन्नतिनुं शिखर छे. ते पर आरूढ थयेलो आत्मा परम आनंदनी समीप आववानो अधिकारी बने छे. संसारनो त्याग करवाथी तेना अंगरुप बीजी उपाधिओ दूर रहे छे, एटले ते निरुपाधि आनंदनो पूर्ण अनुभव करवानो अधिकारी बने छे. आनंदनी शीतळ छायामां विश्रांत थयेला संयमीने ज्ञेय चिंतनीय अने ध्येय सुख साध्य थाय छे. ते सर्वदा पोताना हृदयने संबोधीने कहे छे के, " मारुं जीवन संयमनो जे आनंद अनुभवे छे ते आनंदज मारुं लक्ष्य छे, मारुं जीवन छे, मारा हृदयनो रवि छे, अने मारुं सर्वस्व छे. अग्निनो संबंध थतां जेम पारो उडी जाय छे अने सूर्यना प्रकाशनो संबंध थतां जेम अंधकार उडी जाय छे, तेम मने संयमनो संबंध थतां आ संसारनी विविध उपाधिओ उडी गइ छे. जे हृदयमां पूर्वे क्षणे क्षणे दुःख, क्लेश, भय, चिंता अने शोक वगेरे आवीने उभा रहेता हता, ते अत्यारे सिंहना नादथी जेम मृगवृंद नाशी जाय, तेम नाशी गया छे. संयमरुपी सिंह मारा हृदयरुप गुफामां बेठो छे.

तेना मुखमांथी 'सोऽहं' रुप महानाद थया करे छे, जे महानादनो प्रतिध्वनि गगनने भेदी लोकाकाशना सर्व प्रदेशमां व्यापी जाय छे."

आ ग्रंथना चोथा प्रकाशनुं नाम परमात्मस्वरूप छे. परमात्मा कोण ? परमात्मापणुं केवुं होय ? अने तेनी प्राप्ति शी रीते थाय ? ए विषयो ग्रंथकारे सुबोधक वाणीथी वर्णवेला छे. भवस्थ केवळीनुं स्वरूप आपी जिननिक्षेपानुं यथार्थ रहस्य दर्शावेलुं छे. ते पछी सिद्ध स्वरूप, सिद्धोनी अवगाहना अने समस्त वस्तु विषयिक केवळज्ञान अने केवळदर्शन संक्षिप्तमां एवी स्पष्टताथी निरूपित करेला छे के, जे उपरथी ग्रंथकारनी दिव्य प्रतिभावाळी महाशक्ति जणाइ आवे छे. श्री अर्हत् भाषित जैनआगममां जेने अनिर्वाच्य कहे छे, तेवा सिद्ध सुखनुं दृष्टांत सहित वर्णन करतां ग्रंथकार विद्वान् वाचकोना हृदयने आकर्षी ले छे. ते पछी सिद्धभगवानना अलौकिक गुणोनुं वर्णन करी अने आत्मबोधनी दुर्लभता दर्शावी श्री विद्वच्छिरोमणि ग्रंथकार आ आत्मिकज्ञानना महोदधिरुप ग्रंथना सामा तट उपर आवी पोहोंचे छे—ग्रंथ समाप्त थायछे.

आ छेल्ला गहन विषय उपर ग्रंथकारनो जे महान् उदेश छे, तेने जो पल्लवित करवा धारीए तो आ प्रस्तावना पण एक ग्रंथरुप थइ पडे. तेथी संक्षेपमां एटलुंज कहेवानुं के, परमात्मभाव ए लोकोत्तर दिव्यभाव छे. ते भावनी साथे सिद्धावस्थानो उत्कृष्ट संबंध छे. सिद्धावस्थानो आनंद अवर्णनीय छे—अवाच्य छे. ते आनंदना अनुभवीओज तेने जाणे छे. आपणे तो तेनी भावनाज भाववानी छे. ए भावना भावतांज विचार, वाणी अने कृति आनंदमय बनी जाय छे. ते विषे एटलुंज कहेवुं बस छे.

आ प्रमाणे धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष ए चार पुरुषार्थनी संख्याने जाणे सूचवता होय, तेवा चार प्रकाशथी आ आत्मप्रबोध ग्रंथने तेना विद्वान् कर्त्ताए प्रकाशित करेलो छे. उदयमान जैनसमुदायने धर्म अने तत्त्वोनी श्रेष्ठ शिक्षण पद्धतिने जैनागम प्रमाणे उत्तेजी तेने स्वाश्रयनिष्ठ तथा कर्त्तव्यनिष्ठ करवा आ ग्रंथ उद्देशे छे, एटलुंज नहीं पण तेना मनन पूर्वक अभ्यासीने आत्मिक उन्नतिना आनंदमय द्वारसुधी उत्तम सुबोधना शब्दोथी ते दोरी जाय छे ए निःसंदेह छे.

आ ग्रंथना कर्त्ता श्री जिनलाभसूरि खरतरगच्छना एक प्रख्यात आचार्य हता. विक्रमसंवत् १७८४ ना वर्षमां तेमनो जन्म बिकानेरमां थयो

हतो. तेमनुं संसारी नाम लालचंद हतुं. तेमणे विक्रमसंवत् १७९६ ना वर्षमां बारवर्षनी वयमां दीक्षा लीधी हती. तेमना गुरुनुं नाम जिनभक्तिसूरि हतुं. जिनलाभसूरि बाल्यवयमांथीज बुद्धिशाळी हता. तेमणे दीक्षा लीधा पछी उंची जातनो अभ्यास कर्यो हतो. तेमनी व्याख्यान करवानी शक्ति उत्तम हती, आथी लोको तेमने बहु मान आपता हता. विक्रम संवत् १८०४ना वर्षमां तेमनी वीश वर्षनी वय थतां तेमने सूरिपद आपवामां आव्युं हतुं. ए सूरिपदनो महोत्सव कच्छदेशमां आवेला मांडवीबंदरनी अंदर थयो हतो. ते स्थळे रहीने तेमणे आ आत्मप्रबोध ग्रंथनी रचना करी हती. अने तेना सुबोधक व्याख्यानो कच्छनी जैनप्रजाने संभळाव्या हता. जेनी प्रशंसाना शब्दो देश विदेशमां पण प्रसरी गया हता.

सूरिवर जिनलाभसूरिनी विद्वत्ता अने व्याख्यान शक्तिथी घणाओ आ संसार तरफ विरक्त थइ तेमनी पासे दीक्षित थया हता. विक्रम संवत् १८१९ना वर्षमां तेमना परिवारमां पोणोसो साधुओ विद्यमान हता. एवा शिष्योना मोटा परिवार साथे तेमणे गोडी पार्श्वनाथजीनी तथा आबुनी यात्रा करी हती. विक्रम संवत् १८३४ना वर्षमां पचाश वर्षनी वये ते महानुभाव काळधर्मने पाम्या हता. तेमना स्वर्गवासथी ते देशनी जैनप्रजामां कहेवायुं हतुं के, " खरतर गच्छरूपी गगनमांथी एक तेजस्वी तारो अस्त थइ गयो. "

आ ग्रंथनुं गुर्जर भाषांतर भावनगर निवासी स्वर्गस्थ शा. झवेरचंद भाइ-चंदे करेलुं छे. मरहूम आर्हत धर्मशास्त्रना सारा ज्ञाता हता. भावनगरनी श्री जैनप्रजाना आगेवान पैकीना तेओ एक हता. अने तेज नगरमां स्थपाएल श्री वृद्धिचंद्रजी जैनविद्याशाळाना मंत्री हता अने पोताने प्राप्त थयेल धर्मज्ञान बीजाने आपवुं एज जेनो मुख्य उद्देश हतो; आथी तेओ शास्त्रीय ज्ञानने संपादन करवामां अने तेनुं दान बीजाने आपवामां यावज्जीवित उत्साही रह्या हता. आर्हत ज्ञानना अनुभवनो परिपाक थयेलो होवाथी तेओ आ उत्तम ग्रंथनुं भाषांतर करवा शक्तिमान् थयेला छे, तेमज तेओए जैन शैलीने अनुसरी लखेली भाषा लालित्य-वाळी छे. केटलेक प्रसंगे मूळ ग्रंथना आशयने समजाववामां तेमणे सारो स्पष्टार्थ करेलो छे. भाषांतरकार आ पोतानी कृतिने परिपूर्ण मुद्रांकित थयेल जोइ शक्या नथी. आ ग्रंथनो बीजो प्रकाश थोडो छपाया बाद गइ शालना श्रावण वदी ८ ना रोज तेमना जीवितनुं अवसान थयेलुं छे, पाछळथी तेमना पितृभक्त अने उत्साही पुत्र फत्तेहचंदे पोताना पितानी कृतिने पूर्ण रीते प्रसिद्ध थवा शुफो वि-

गेरे वांचवामां आ सन्नाने सारी मदद करी छे. जो नापांतरकार आ ग्रंथना मुद्रित थयेला बाह्य अने आन्यंतर सुंदर स्वरूपने प्रसिद्ध थयेलुं जोइ शक्या होत तो तेमना हृदयमां पूर्ण संतोष थात अने आ प्रसिद्ध करनारी संस्थाने सारुं अनिनंदन मळत; परंतु कर्मयोगे एम बनी शक्युं नहीं, एटलुं असंतोषनुं कारण थयुं छे.

आ प्रसंगे जणावतां आनंद उपजे छे के, नामदार नीजाम सरकारना झवेरी बाबू पन्नालाल पूरणचंदना प्रपौत्र बाबू प्रतापचंदजी गुलाबचंदजीए पोताना स्वर्गवासी पिता बाबूसाहेब गुलाबचंदजीना स्मरणार्थे आ उपयोगी ग्रंथ प्रगट करवामां उत्तम सहाय आपी छे. स्वर्गवासी बाबू गुलाबचंदजी पोताना टुंक जीवनमां पण धार्मिक वृत्ति, तेमज पोताना झवेरी तरिकेना धंधामां असाधारण उदारतायुक्त अने कर्त्तव्य निष्ट थयेला छे, तेवा पोताना स्वर्गवासी पिताना नामना स्मरणार्थे पितृनक्त युवान पुत्र बाबू प्रतापचंद्रजीनी आ सत्प्रवृत्ति खरेखर धन्यवादने पात्र छे. उद्योग, ज्ञान अने धार्मिक कार्योमां उत्साहथी आगळ वधता युवान बाबू प्रतापचंद्रजीनी आ प्रवृत्ति बीजा गृहस्थोने अनुकरण करवा योग्य छे, एवी नम्र सूचना आपी तेओए आपेली सहायताने माटे अंतःकरणथी आनार मानवामां आवे छे.

सदरहु ग्रंथनी शुद्धिने माटे यथाशक्ति प्रयत्न करवामां आवेलो छे छतां छद्मस्थपणामां सुलन एवा प्रमाद तथा दृष्टि दोषादि दोष के प्रेसना दोषने लइने कोइपण स्थाने स्खलना थइ होय तो मिथ्यादुष्कृत पूर्वक क्षमा याचीए छीए.

सर्व जैनप्रजा पोताना धार्मिक साहित्यना गौरवमां, समृद्धिमां तथा कल्याण शक्तिमां वृद्धि करनारा, आ उपयोगी ग्रंथने पठन,पाठन तथा वांचननो उत्तम उपयोग करी आदर आपशे तो करेलो श्रम सफळ थयेलो मानी आ संस्था पोतानी आवी प्रवृत्तिमां विशेष उत्साहित थशे.

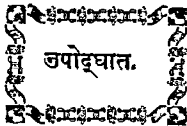
छेवट नीचेनी नावनावडे आत्मानुं उद्बोधन करी आ प्रस्तावना समाप्त करवामां आवे छे.

" प्रवर्त्ततां सत्प्रवृत्या, सधर्मसुहृदोऽखिलाः ।
निवर्त्ततां सदा तेषां, विपत्तत्रांतरायकृत् " ॥१॥

" सर्व साधर्मी बंधुओ सत्प्रवृत्तिथी प्रवर्त्तो अने तेमने ते प्रवृत्तिमां अंतराय करनारी विपत्तिनी सदा निवृत्ति थाओ. " ॥ १ ॥

वीर संवत २४३८, आत्म संवत १७
आश्विन शुक्ल तृतीया रवीवार
आत्मानंद नुवन.

श्री जैन आत्मानंद सन्ना.
नावनगर.



उपोद्घात.

प्रत्येक ग्रंथना आंतर शरीरनी घटनानो आधार खास करीने तेना अनुबंध चतुष्टय उपर होवाथी तेनी जेवा प्रकारे संकलना थयेली होय तदनुसार विद्वज्जनो ग्रंथ महत्वतानी समीक्षा करे छे. मंगळ, अभिधेय, प्रयोजन अने संबंधरुप आ चतुष्टय ग्रंथनी आदरणीयता तरफ दिग्दर्शन करावी वांचकोने सन्मुख थवा प्रवृत्ति करावे छे. जे ग्रंथनी आदिमां अढार दोष रहित सर्वज्ञ परमात्माने नमस्कार होय, जे ग्रंथमां आत्मानो उद्बोधन क्रम अभिधेय होय, जे ग्रंथनुं प्रयोजन स्वपरने व्यावहारिक मात्र नहि किंतु आत्मिक हित शीघ्रपणे प्राप्त कराववुं होय, अने जे ग्रंथमां दर्शावेला आंतरभावो रुप उपायो वडे कर्मक्षयथी उत्पन्न थयेली मुक्ति संपादन थइ शके—आवा ग्रंथो लौकिक फळदानने उल्लंघी अलौकिक फळदान सादर करे तेमां शुं आश्चर्य ! जैनदर्शनना ग्रंथकारोए प्रथमथीज आवाज अनुबंध चतुष्टयनी योजना करेली छे, जे प्रशस्य होइ ज्ञानीओए प्राप्त करेला उत्तम फळने अभिलक्षे छे. सन्मुख थयेला वांचको पछीथी ग्रंथना अभिधेय अंगोनुं निरीक्षण करी स्वरुचि अने स्वादर रुप तुलाओ वडे ग्रंथपरत्वे पोताना अधिकारनी तुलना करे छे; तदनुसार श्रवण मनन के वांचन तरफ प्रवृत्तिशील बने छे, अने बुद्धिना क्षयोपशम प्रमाणे ग्रंथावलोकननी समीक्षा थाय छे. श्रुत, चिंता अने भावनाना सतत परिशीलन वडे ग्रंथनी आंतर सुंदरता ओळखवामां आवे छे अने भावनाना परिपाकपणा पछी ग्रंथना चर्मदृष्टिए देखाता स्थूलभावोनुं चैतन्यमय आत्मा साथे आरोपण थाय छे—अत्र ग्रंथकारनो श्रम संपूर्ण फळग्राही बने छे.

आत्मा शब्दनो अर्थ आ आत्मप्रबोध ग्रंथना व्याख्याकारे 'अततीति आत्मा' 'ते ते भावने सततपणे प्राप्त करे ते आत्मा' ए रीते शरुआतमां कहेलो छे, ते अपूर्व भावसूचक छे. पश्चिमथी पूर्वतरफ जोसबंध वहेता आ जरूवादना जमानामां आत्मा ए शुं वस्तु छे ? ते अरूपी होवा छतां केवा लक्षणो वडे ओळखी शकाय छे ? अजकुलगतकेसरीनी पेठे पोतानुं स्वरूप कया साधनो

वडे जाणी शके छे ? अविद्याना अंधकारमां पडी रहेला आत्मरत्नने शावडे खोळी कढाय छे ? श्वासोश्वासादि बाह्य प्राणोथी जीवन्त कहेवाता—देह एज हुं एवी मान्यता करता मनुष्योनो आत्मा केवुं जीवन अनुभवे छे ? स्थावर अने जंगम रुप बाह्य समृद्धिने पोतानी समृद्धि माननाराओ आत्माने ओळखी शक्या छे के केम ? वैज्ञानिक विद्यार्थी पण आत्मा जेवो कोइ देहगत पदार्थ छे तेम अनुमान थइ शके छे ? सुख दुःखनो ज्ञाता कोण होवो जोइए ? आ सर्व स्थितिओ तपासवी मुश्केल छे तो आत्मज्ञान प्राप्त करी तेनो उन्नतिक्रम नक्की करी ते मार्गना अनुयायी थवुं, ए विशेष प्रमाणमां दुर्लक्ष्य होय, तेनुं कहेवुंज शुं !

जडवादना आ जमानाने अंगे एक तरफथी आत्मज्ञान नष्ट थतुं जाय छे, तो बीजी तरफथी आत्मानुं अस्तित्व प्रतिपादन करनारा शास्त्रो जुदीज दिशामां गमन करता होवाथी आत्मारुप पदार्थनुं वास्तविक ज्ञान प्रकट थइ शकतुं नथी. जुओ ! बौद्ध दर्शन आत्माने द्रव्यरुपे क्षणस्थायी मानी वस्तुस्थितिमां सांकर्य उत्पन्न करे छे, मीमांसको सर्व अवस्थामां आत्माने नित्य अने अबंध माने छे, प्रत्येक शरीरे भिन्न भिन्न आत्मा मानतुं सांख्यदर्शन सर्व अवस्थामां आत्माने अकर्ता अने अभोक्ता माने छे तेमज नैयायिक दर्शन पण जीवात्मा अने परमात्मा जुदा माने छे तेथी जीवात्मा परमात्मा थइ शके नहि विगेरे मान्यताने अवलंबी आत्मवादने अन्यथारुपे करेलो छे. तदुपरांत प्रत्यक्ष प्रमाणनेज माननाराओ आत्मारुप पदार्थ नहीं देखातो होवाथी तेना अस्तित्वनीज उपेक्षा करता होवाथी आत्मवादथी विदूर छे. आ रीते आत्माने शोधवो अने ते यथार्थ रीते शोधवो ए सामान्य बुद्धिगम्य नथी, परंतु तेने वास्तविक रीते शोधी मूळस्वरूपनी ओळखाण कराववी ए सूक्ष्म बुद्धिगम्य होवाथी जैनदर्शने निवेदन करेला नित्यानित्यरुप, द्रव्यपर्यायात्मक, निश्चय व्यवहारमय—विगेरे अपेक्षाओ वडे जुदी जुदी अवस्थामां प्राप्त थता स्वरूपने शास्त्र साधनवडे नीहाळी अनुष्ठान रुप कष, छेद, अने तापरुप कसोटीए चडावी सुवर्णनी जेम आत्मशुद्धि—एकात्म भाव ओळखी काढवो ए आ दश दृष्टांतथी दुर्लभ मनुष्यजन्मनुं अपूर्व कर्तव्य छे, जे स्वयंसिद्ध छे अने अध्यात्मज्ञानीओ तेमज संबोधि गया छे.

चतुर्गतिमां अग्रपद धरावती मनुज गतिने प्राप्त थयेलो मनुष्यप्राणी के जेमां अन्य गतिओ करतां बुद्धिमत्ता विशाळ प्रमाणमां प्राक् पुण्य कर्मने अंगे मळेली होय छे तेओ त्रण प्रकारना जीवन वडे जीवता होय छे. (१) बहि-

रात्म जीवन (२) अंतरात्म जीवन (३) परमात्म जीवन. आत्माने नहि ओळखनार पौद्गलिक भावोमां रची पची रहेनार अने स्थूळदेहवडे अनुग्रह अने उपघात युक्त बनता दरेक पदार्थोनी क्रियाने पोतानी माननार, दरेक प्रसंगे स्वत्वनुं आरोपण करनार, सर्व मनुष्यो बहिरात्म जीवनवाळा गणायछे. आ मनुष्योना साडा त्रण हाथनी अवगाहनावाळा देहगत प्रमाण वाळो आत्मा पोतानी आसपासना तेमज बहु दूर रहेला पदार्थोनो कर्त्ता पोतानेज माने छे. आ स्वरूपमां आत्मस्वभावनुं आच्छादन थइ गयेलुं होवाथी तेओ प्रथम कोटिमां वर्ते छे. बीजी कोटिमां वर्तता मनुष्यो 'आत्माने ओळखी लेनारा' होय छे; तेमने समजाय छे के हुं कोण छुं? आ पौद्गलिक सर्व पदार्थोथी मारी स्थिति विलक्षण प्रकारनी छे. मारो अने तेनो संबंध पूर्व अने पश्चिम दिशानी जेवो छे; छतां आजसुधी दिङ्मूढ प्राणीनी जेम पूर्व ने पश्चिम दिशा गणी बंने एकज छे तेवा भ्रांतिजन्य अज्ञानमां वासित हतो. चौदराजलोकना सर्व जड पदार्थोथी पोताने जुदोज समजी लेनारा पोतानी मर्यादाने वास्तविक स्थितिमां समजी लेनारा मनुष्यो अंतरात्म जीवन वडे सजीव गणाय छे; परंतु परमात्मजीवनयुक्त मनुष्योए आत्माने स्वरूपवडे संपूर्ण रीते ओळखी लीधेलो छे; अने ते एवी रीते ओळखी लीधेलो छे के, जे पुनः कदापि विस्मृतिना पटमां अदृश्य न थाय! एटलुंज नहि, परंतु तेओए जगत्ना सर्व प्राणीओना आत्मानी परिस्थिति जाणी लीधेली छे. आ मनुष्यो कदापि आत्मा शिवाय अन्य वस्तुना संबंधनी इच्छा करता नथी. ज्यांसुधी देहधारीपणे होय त्यांसुधी आ संसारमां विहरेछे; पछीथी निरीहभावपणे रहेला देहसंबंधने पण तजीने पूर्णानंदमय आत्माज मात्र लोकाग्रे विराजे छे; अने ते शाश्वतपणे आत्मानुभव करता सदा जीवन्त छे. आथी ए पण सिद्ध थाय छे के जेटले जेटले अंशे साधक थाय—आत्मज्ञान—आत्मबोध प्राप्त थाय तेटले तेटले अंशे आत्माना आत्मत्वनो आविर्भाव छे.

आत्माने उच्च कोटिमां मूकवाने माटे, रागद्वेष दूर करवाना शिक्षणने घणा दर्शनकारो सम्मत थयेला छे; परंतु तेने दूर करवाना अनुष्ठानोमां अनेक गुण तफावत छे. जैनदर्शन वडे निरूपण करायलो आ क्रम सर्व दर्शनोथी अग्रपद धरावे छे, एम कहवुं अतिशयोक्ति भरेलुं कदापि थशेज नहि. केमके कर्मनी बंध, निधत्त, निकाचित, उदय, उदीरणा विगेरे अवस्थाओ, आत्मप्रदेशनी साथे थतो तेमनो संबंध, ते वडे आत्माने प्राप्त थतो अनुग्रह अने उपघात तेमज कर्म

प्रकृतिओनुं घातित्व, अघातित्व, संक्रमण अने निष्क्रमण विगेरे जेवुं सूक्ष्मतर स्वरूप आ दर्शनमां वर्णवेलुं छे, तेनो आंशिक भाग पण अन्यदर्शनोमां दृष्टिगोचर थइ शकतुं नथी; एज बतावी आपे छे के आ सर्वज्ञप्रणीत दर्शन होवुं जोइए; अन्यथा आवा प्रकारनी अपूर्व हकीकतनो संभव क्यांथी होइ शके ? जे दर्शन जडपरमाणुओने पण कर्ता मानी अन्यनो जगत् कर्ता तरीके निरास करे छे, ते साथे आत्मा पोतेज कार्मण परमाणुओना वशवर्ती पणाथी अनेक पदार्थो, अनेक स्थितिओ अने नानी नानी अनेक सृष्टिओ सर्जवानी शक्ति धरावे छे (पछी ते ज्ञानथी के अज्ञानथी गमे ते रीते होय) अने पछीथी विनाश करे छे. आवी परंपराओनी मान्यतावाळुं जैनदर्शन आधुनिक प्रत्यक्ष प्रमाण मात्रने माननारी विज्ञान विद्या (Science) वडे शोधखोळ करायला जड स्वरूपने मळतुं आवे छे, एटलुंज नहि परंतु अरूपी पणे प्रत्यक्ष प्रमाणथी अगोचर आत्मवादने सुंदर शैली वडे स्थापन करी, जडवादथी थयेला एकांत अज्ञानने दूर करी, सूक्ष्मदर्शीजनोने 'प्रदीप हस्तप्रतिनी' पेठे अच्छो प्रकाश आपे छे. वस्तुस्थिति आ प्रकारे होइ जगत्ना आत्माओ शिवाय एवा कोइ जगत्कर्ता महात्मानी सृष्टिना पदार्थो सर्जनरुपे जरुर पडती लागती नथी, के जे वगर विश्वव्यवस्था शून्य बनी जाय! परमाणुओ पण अनंत शक्तिवाळा निवेदन करेलाछे. आ उपरथी वास्तविक रीते ए सिद्ध थायछे के आत्मा ए अस्तित्व धरावनारी अपूर्व वस्तु छे अने ते अनंत शक्तिवाळी छे.

कर्मरुप जडपरमाणुओथी जेनो स्वभाव आच्छादित थइ गयेलो छे एवा आ आत्माने ते ते जडपरमाणुओने दूर करवानो आत्मज्ञान प्राप्त करवानो यथार्थ क्रम होय अने तेने अनादि मिथ्यात्वरुप घोर निद्रामांथी जागी आत्मा समजवा प्रयत्न करे अने समजी तदनुकूळ आचरण करे तो इष्टसिद्धि संपादन करे ए युक्तियुक्त छे. आ ग्रंथ 'आत्मप्रबोध' तदनुकूळ कार्यवाहकपणे योजायेलो छे; तेमां आत्मानी चार भूमिकाओ उच्च उच्च भावने अनुक्रमे वहन करनारी दर्शावी तेना उपर आरोहण करवानो वारंवार उद्बोध करवामां आवेलो छे. जोके जैनदर्शनमां आत्मानी चौद भूमिकाओ—ज्ञान दर्शन चारित्रना प्रकटीकरणनी जुदी जुदी अवस्थाओ प्रतिस्थाने वर्णवेली छे, छतां ग्रंथकर्त्ताए संक्षिप्तपणे ग्रहण करी आ चार भूमिकानुं निरूपण कर्युं छे.

(१) सम्यक्त्व (२) देशविरति (३) सर्वविरति (४) परमात्मभाव.

सम्यक्त्व भूमिकाना स्वरूप दर्शनमां मिथ्यात्व गुणस्थानकथी आत्मा उच्च स्थाने आवतां–तेना मिश्र परिणाम थतां, पछीथी अनिवृत्ति करणरुप आत्मवीर्यथी चतुर्थ गुणस्थानके प्रवेशतां आत्मा सम्यक्त्व भूमिका प्राप्त करे छे. आ सम्यक्त्वने केवी रीते प्राप्त करवुं ? प्राप्त करनार आत्माना परिणाम केवा होय ? विगेरे प्रथम प्रकाशरुपे क्रमपुरःसर दर्शावेलुं छे. सम्यक्त्व ए अनादि निष्पन्न भवनी आत्यंतिक निवृत्तिनुं बीज छे एम जैनदर्शन पुनः पुनः निर्भिय वगाडीने कहे छे; तेथीज कहेवामां आवेलुं छे केः—

कृष्णपक्षे परिक्षीणे, शुक्ले च समुदञ्चति ।
द्योतते सकलाध्यक्षाः, पूर्णानंदविधोः कलाः ॥

'मिथ्यात्वरुप कृष्णपक्ष पूर्ण थतां अने सम्यक्त्वरुप शुक्लपक्ष उदयमान थतां पूर्णानंदमय आत्मारुप चंद्रनी कलाओ क्रमशः सकळभावोने प्रत्यक्ष करती प्रकाशे छे' श्रीमद् यशोविजयजी.

आम होइ सम्यक्त्वरुप बीज अवश्य मुक्ति फळ प्राप्त करावी आपे छे, *सप्त कर्म प्रकृतिओना क्षय के उपशमथी उत्पन्न थयेलुं क्षायिक के औपशमिक सम्यक्त्व उत्कृष्ट स्वरूपमां सर्व घाति प्रकृतिओना क्षयरुप क्षायिक सम्यक्त्वरुपे प्रकटे छे. सप्तकर्मप्रकृतिना क्षय के उपशमरुप आत्मभावनी जागृति ते अंतरात्म अवस्था छे अने सर्व प्रकृतिओना क्षयरुप आत्मभावनी जागृति ते परमात्म अवस्था छे.

ग्रंथकर्ता पूर्वोक्त स्थितिनुं भान करावतां सम्यक्त्वना बाह्य अने आभ्यंतर स्वरूपनुं दर्शन करावे छे, ते साथे सम्यक्त्वना सद्दहणा, लिंग, विगेरे सडसठ प्रकारो दर्शावे छे.

सम्यक्त्वना अनेक प्रकारो जुदीजुदी अपेक्षाए पण दर्शावे छे, परंतु व्यवहारथी शुद्ध देव–गुरु अने धर्मनी श्रद्धा अने निश्चयथी अंतरात्मपणुं प्राप्त करवुं ए मुख्य उद्देशोमां सम्यक्त्वना पट्स्थानको दर्शावतां आ प्रकाश समाप्त करे छे. त्यार पछी पंचम गुणस्थानक उपर देशविरतिनी भूमिकानो आत्माने अधिकारी बनावे छे. 'ज्ञानस्य फलं विरति' ए सूत्रनुं सत्य आत्माने देशविरतिनी भूमिका यथार्थ करावे छे. केमके आत्माए संसारना क्षणिक पदार्थोने भ्रममूलक जाण्या

---

* अनंतानुबंधी क्रोध—मान—माया—लोभ, मिथ्यात्वमोहनीय, मिश्रमोहनीय, अने सम्यक्त्व मोहनीय.

शी रीते ? शुं कहेवा मात्रथी ? शुं अन्यने उपदेश आपवा पुरता ? शुं पोतानुं स्वार्थी जीवन तृप्त करवा खातर ? शुं दंभवडे जगत्नी वंचना खातर ? नहिज. वास्तविक स्थिति जाणनार मनुष्य तेज होइ शके के जे जाण्या पछी हेय पदार्थोने तजवानी अभिलाषा राखतो जाय–क्रमे क्रमे तजतो जाय अने परिणामे सर्वेने तजी दे. देशविरतिपणुं ए गृहस्थने योग्य बारव्रतनी परिपालना रुप कर्तव्य विशेष छे, के जे कर्तव्यवडे आत्मा असत्य मार्गथी दूर रहेवा यथाशक्ति प्रयत्नपरायण थाय छे, अने सर्व रीते दूर रहेवानी निरंतर अभिलाषानुं सेवन करे छे. षष्ठ तथा सप्तम गुणस्थानके वर्तता आत्मानी त्रीजी भूमिका सर्वविरति छे. अत्र जगतना सर्व पदार्थोमांथी 'अहंममता' दूर थाय छे. आरंभ समारंभजन्य सर्व पापोनो परिहार थाय छे. सर्व विरति भूमिकाने प्राप्त थयेला मनुष्य प्राणीओ कोइ प्रकारनुं पाप सेवता नथी, अन्यने तेवुं करवानो उपदेश करता नथी, तेमज तेवुं करनारनी अनुमोदना करता नथी. सांसारिक इच्छा मात्रनो ज्यां त्याग अने एक मात्र आत्मानुभवनीज अपेक्षा अस्खलितपणे वहेती होय त्यां स्वार्थमय दुनियामां निर्विघ्नपणे वास करी रहेला क्रोध, कीर्ति, यश, मान, दंभ अने प्रपंचोमां अमूल्य समयने गुमाववानो वखत क्यांथी होय ? वस्तुतः सर्व विरतिनो आ अप्रतिहत मार्ग निर्दिष्ट थयेलो छे. आ भूमिकामां बाह्य मर्यादाओमां टकी रहेवाने संस्कार पाडवा माटे द्रव्यथी मुनिवेष अंगीकार करवो पडे छे अने भावथी कषायादिने निर्मूल करवा हिंसा, असत्य विगेरे अव्रतोथी सर्व प्रकारे विरमण करवुं पडे छे. चतुर्थ परमात्म भूमिका अष्टम गुणस्थान वर्ती आत्माथी मांडीने सिद्धपणानी अवस्था पर्यंत छे. आमां क्षपकश्रेणि के उपशम श्रेणिगत आत्मा अगीयारमुं गुणस्थानक के ज्यां मोहनो सर्वथा उपशम होय छे, अथवा बारमुं गुणस्थानक के ज्यां मोहनो सर्वथा क्षय होय छे तेथी, आ बंने गुणस्थानके 'वीतराग' पणे संबोधाय छे, त्यारथी ते परमात्मानी कोटिमां आवी शके छे. चतुर्दश गुणस्थानक सुधी ते भवस्थ परमात्मतामां छे अने पछीथी शाश्वतपणे सिद्धिस्थ परमात्मतामां वर्ते छे. आ प्रकाशमां भवस्थ केवलीनुं स्वरूप तथा सिद्धना जीवोनी अवगाहना तथा सिद्ध सुखनी अनिर्वचनीयतानुं स्फोटन करे छे. आ रीते विस्तारथी चारे भूमिकानुं स्वरूप ग्रंथकार प्रतिपादन करे छे.

जैनदर्शनरुप प्रासादना चार द्वार द्रव्यानुयोग, गणितानुयोग, चरणकर-

णानुयोग अने कथानुयोग रुप छे. आ चारेनुं स्वरूप अखिल ग्रंथना सर्वांगमां व्यापेलुं छे. दरेक द्रव्यानुयोगनी हकीकत प्रसंगे कथाओ, दृष्टांतो अने उपनयो आपी द्रव्यानुयोगना उत्तम पण कठिन विषयने सामान्य बुद्धिजनोने तृप्ति थाय तेवुं बनाववामां ग्रंथकर्ताए अधिक पण उपयोगी श्रम लीधेलो छे; प्रसंगे चैत्यविनय विगेरे प्रकरणोमां गणितानुयोगरुपे चैत्य संख्या विगेरे प्रतिपादन करेली छे; अने देशविरति तथा सर्वविरति अधिकारमां तो खास करीने चरणकरणानुयोग अग्रपद धरावतो होवाथी चतुर्गतिना अंतरुप चारे अनुयोगोनो प्रकाश पामेलो छे. प्रसंगोपात्त भगवती तथा राजप्रश्नीय विगेरे सूत्रना आळावाओ साक्षीरुपे दर्शावेला छे, नीतिशास्त्रना श्लोको उपनय तरीके दाखल करेला छे, अने अशुचिभावनामां गर्भनुं व्यावहारिक स्वरूप पण बतावी आप्युं छे; आ सर्व अंगो एकंदरे तपासतां आ ग्रंथना अधिकारी मनुष्यो प्रति ग्रंथकारनी उपकार्य बुद्धि सादर थयेली छे एम स्पष्ट थाय छे.

ग्रंथना अंतरंग शरीर परत्वे आटली हकीकतना निवेदन पछी कहेवानी आवश्यकता छे के, अमारा मर्हूम पिताश्री के जेओ आ ग्रंथना भाषांतर कर्त्ता छे ' मर्हुम पूज्यपाद श्रीमद् वृद्धिचंदजी महाराज पासे तेओए व्याख्यानमां आ सुंदर ग्रंथनो अमुक भाग श्रवण करतां तेनुं भाषांतर करवानी इच्छा तेमना हृदयमां प्रकटी. आथी पोताना अनेक व्यवसायोमांथी पण अवकाश मेळवी, मर्हुम पूज्यपाद पासे आ ग्रंथ साद्यंत वांची लीधो अने पछीथी अनुकूळताए भाषांतरनी शरुआत करी थोडा वखतमां ते पूर्ण कर्यो. त्यारपछी अनेक प्रकारनी व्यवसायमय प्रवृत्तिओना उद्भवने अंगे तैयार करेलो ग्रंथ एक बाजुएज रह्यो. आ ग्रंथ उपरांत बीजी अनेक परचुरण संक्षिप्त हकीकतोनो संग्रह करेलो, परंतु ते अग्निनो भोग थइ पडतां फक्त आ ग्रंथ अन्यस्थाने होवाथी अवशेष रह्यो; केटलोक वखत वीतवा पछी अमारा स्वर्गवासी पिताना निकट संबंधमां श्री जैन आत्मानंद सभाना सेक्रेटरी मी. वल्लभदास त्रिभुवनदास गांधी आवतां प्रसंगोपात्त एक वखत तेमनी साथे धर्मसंबंधी वातचीत थतां–' उक्त ग्रंथ घणोज उपयोगी छे अने जेनुं भाषांतर अमोए कर्युं छे ' एम अमारा मर्हुम पिताश्रीए उक्त सेक्रेटरीने जणाव्युं, जेथी आवो उपयोगी ग्रंथ श्री जैनआत्मानंद सभा तरफथी बहार पडे तो सभाने मोटुं मान प्राप्त थवा साथे जैनप्रजा तेनो लाभ सारी रीते संपादन करी शके एम उक्त सेक्रेटरीने हकीकत जणाववाथी तेमणे अमारा पिताश्रीने उक्त ग्रंथनुं भाषांतर सभा

तरफथी प्रसिद्ध करवानी मागणी करी; अमारा पिताश्रीए ते योग्य जाणी आ ग्रंथ उक्त सेक्रेटरीने सुपरत कर्यो, त्यारबाद शुद्धिने माटे अमारा पिता तरफथी पुनरवलोकन करी ताकीदे उपाय तेम गोठवण करवा सूचववामां आव्युं. तदनुसार आ ग्रंथ छपाववानी शरुआत करवामां आवी. परंतु प्रथम एकज प्रकाश तेमना विद्यमानपणामां मुद्रित थया पछी तेओ काळनी गतिने आधीन थया; जेथी त्यारपछी आ ग्रंथ तेमना अवसान पछी लगभग एक वर्ष उपरांत आश्विन शुक्ल दशमीए पूर्ण थवा पाम्यो छे; अने त्यारपछी जनसमूह समक्ष सादर करवामां आव्यो छे.

ग्रंथना संबंधमां प्रस्तावना के उपोद्घातरुपे ग्रंथकार अथवा तेना अनुवादक जे दृष्टिबिंदु वडे लखी शके छे तेवुं अन्य लखी शकता नथी ए निःसंदेह वात छे. अमारा मर्हुम पिताश्रीना हाथथी आ ग्रंथमाटे तेवुं लखायुं होत तो तेओ धार्मिकज्ञानना एक सारा अभ्यासी होवाथी खरेखर तेने माटे योग्य न्याय आपी शकत; परंतु ग्रंथ प्रसिद्ध थया पहेलां तेओनो देहोत्सर्ग थवाथी तेम बनवुं अशक्य थइ पड्युं छे: जेथी उक्त भाषांतरकार जेवुं नहि परंतु तेमना ऋणी पुत्र तरीके तेमनी सेवारुपे आ ग्रंथपरत्वे तेमनावतीनी यत्किंचित् फरज बजाववा तरीके आ उपोद्घात लखी जनसमाजनी सेवामां मूकवामां आवे छे.

आ ग्रंथना कर्ता श्रीयुत जिनलाभसूरि खरतरगच्छीय छे अने व्याख्याकार श्रीयुत क्षमाकल्याणकजी छे. खरतरगच्छमां पण अनेक धुरंधर पंडितो नयचक्रसारादिना कर्ता श्रीमद् देवचंद्रजी विगेरे थइ गयेला छे. तपगच्छ अने खरतरगच्छनी मान्यतामां अमुक फेरफार पोषधादि क्रियाकांडमां क्वचित् क्वचित् छे; जेथी आ ग्रंथने अंगे थयेला पोषधव्रतना विवेचनमां जेटला पुरतो तफावत छे ते बंने गच्छोने माटे आ ग्रंथना पा. २४४^A मे दर्शाववामां आवेलो जनमंगळ सन्मुख पुरोहित थयेलो छे. श्रीयुत जिनलाभसूरिनी विद्वत्तानी तुलना तेमना ग्रंथना अवलोकन पछी जाणी शकाय तेम छे. तेओश्रीए अन्यग्रंथोनी रचना करी छे के नहि ते जाणवामां आवी शक्युं नथी; छतां एटलुं तो कहेवुं अस्थाने नथीज के 'सामान्य अने विशिष्ट सर्व जनोने एकांत हितकारी आ अमूल्य ग्रंथ छे' ते साथे आ अग्रलेखना प्रांते 'आ उत्तम ग्रंथ यावचंद्र दिवाकर यशस्वी अने अविचल रहो' एवा मांगलिक आशीर्वचन पुरःसर विरमवामां आवे छे. तथाऽस्तु

आश्विन शुक्ल दशमी } शा. फतेचंद झवेरभाइ

भावनगर.

विषयानुक्रमणिका.



प्रथम प्रकाश (सम्यक्त्व निर्णय.)

द्वितिय प्रकाश (देश विरति.)

तृतीय प्रकाश (सर्व विरति.)

चतुर्थ प्रकाश परमात्म स्वरुप.



शुद्धिपत्रक.

पत्र.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
८	१२	पल्पोपमना	पल्योपमना
,,	१३	कोटीनी	कोटाकोटीनी
,,	१५	दुर्नेधअने	दुर्नेधएटले
१०	२४	कांइ न	कांइसास्वादनगुणस्थान-वर्ती न
१६	१६	अविरुद्ध	विरुद्ध
१८	२०	निर्मळ	निर्मल
२०	९	पुरुपअविरति	पुरुप सम्यग्दृष्टिअविरति
२५	१	करवाने के उच्चार करवाने शक्तिमान्	करवाने शक्तिमान
२५	८	नावनाओ	नावनाए
३५	१७	त्रीजा	तीर्जा
४३	८	कुम्दहनइ	कुडकुंडदहनइ
,,	,,	वियदेसु	वियद्देसु
४५	१९	पूइजाइ	पूइज्जाइ
,,	,,	निक्खंन	निष्फन्नंन
४८	४	स्पर्ष्ट	स्पृष्ट
५०	२९	गयो	गया
५३	२	प्रेमरागा	प्पेमरागा
५४	६	प्रसादनी	प्रासादनी
५४	१२	अग्गपूआ	अग्गपूआए

पत्र.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
५५	७	यदाणा	य दाण
५९	१७	२	३
६४	१	पुण्णफलं	पुण्णफलं
,,	,,	पूयाएह	पूयाण्ह
६८	१६	संध	संघ
६७	१	उच्छव	उच्छेय
७०	३	अक्कअओ	अक्कओ
७२	२१	स्थिरता	स्थित.
७३	२-४	,,	,,
,,	१०	वय	वाया
७८	२	घर्मो	धर्मो
८०	९	प्रवचनना	प्रवचनी
,,	२०	थता	तथा
८१	१८	चेतननो अने	ज्ञानरुप
८३	७	देवार्द्धि	देवार्द्ध
८६	२	घर्मकथी	धर्मकथी
७४	१८	सूरि	सूरिए
१००	१५	कोलाहाल	कोलाहल
१००	१७	प्रसाद	प्रासाद
१०८	१८	प्रत्याख्याननुं फल विशेषज्ञान	विशेषज्ञाननुंफलप्रत्याख्यान
१२०	१६	उदयना	हृदयना
१२८	२	सुधर्मा	सुधर्मा
१२५	१८	अभिलाप राखवो	अभिलाप न राखवो
१२७	१५	शोजतेनापि	शोजनेनापि
१३४	६	ह्दममां	हृदयमां
१४१	२२	पठी	पठी
१४७	फुटनोट	प्रकारनुं	प्रकारनुं
१६१	१२	युक्त शरीरवडे	युक्त थइ
१६३	१	वृद्वाणगो	वृद्धाणगो
१६७	२	मज्जा	मज्ज
,,	४	वारसचओ	वारसव्वओ
१६८	२३	तेमनो	सूक्ष्मएकेंद्रियनो

पत्र.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१७८	२	दयालुपणाथी	दयालुपणानी कसोटीथी
१८३	८	स्थूल	थूल
१८५	९	परजूइ	पराजूई
१९०	५	डुरहिणिवेसाउ	डुरहिणिवेसाठ
१९९	६	पम्नफं	पप्भफं
,,	९	पंकुत्तं	पांकुत्तं
१९८	२३	दीपथी	दीपथी
२०१	८	तेनाथी	बाकीनाथी
,,	१९	वस्तु	वास्तु
२०४	२	विविरं	विवरं
,,	१३	एटले	एटले तेना
,,	१४	प्रमाणनुं स्वरूप अने	प्रमाणमां
२०८	२५	अमे	अने
२१०	१२	जेवा आ	जेवा गृहस्थे आ
२१३	५	अनेएपणीय	अनेपणीय
२२३	२३	नक्त	मांस
२२६	१०	दल	दाल,
२२८	१६	दुध्यान	दुर्ध्यान
२३१	७	अनर्थदंम वर्जेलो छे अने	अर्थदंड वर्जेलो छे तेथी
२३६	१०	अंगकारी	अंगीकारी
,,	२३	तेए	तेने
२३७	२	राजादिकश्रावकनीपाछळचालतातेने	राजादिकने
,,	१	एवो श्रावक	एवा
२३८	२०	स्वजन अने परिजन	स्वजन अने परजन
२४१	५	दिग्व्रतने	दिग्व्रतनो
२४४	३	देह अने सत्कार	देहसत्कार
,,	११	चतुर्विध	चतुर्विध
२४५	९	पुच्छगं	पुच्छगं
२४९	९	पोषध अतिथि	पोषध अने अतिथि
२५४	११	करावाने	करवाने
२५९	१०	पड्जंगीनो	पड्जंगी छे;
,,	११	अनुमति अने	अनुमतिनो
२६७	२०	तेनानामनुं	तेनुं

पत्र.	पंक्ति.	अशुध्द.	शुध्द.
"	"	वन्या	धन्या
२६८	१७	पाळवापणुं	पामवापणुं
"	१ए	करीतेमांसर्वे	करीसर्वे
२ए१	१०	जणस्स	जणय
२एए	१६	न्दजद्	न्नजेद्
३१०	२४	धर्मवाळुं अने	धर्मवाळुं छे ते
३११	७	पत्र	पात्र
३१६	२३	करवा	करावबा
३२६	२०	करतो	करवो
३२७	१०	प्रवृत्तिवाळाने	प्रवृत्तिवाळा
३२ए	ए	पर्यापवाल्लाने	पर्यायवालाने
३३६	७	वणी	धणी
३४२	१२	करे नहीं,	करे
३४४	७	एवमणं	एवमेयं
३५३	ए	न्नावेयवा	न्नावेयव्वा
"	१५	पदार्थोने-पेठे	पदार्थो--पेठे,
३६३	५	अस्थिन्नज्जा	अस्थिमज्जा
३६५	२	अवाङ्गुख	अवाङ्मुख
३७६	२२	अव्यवन्न	अव्यवछिन्न
३७८	१८	उद्दम	उद्दम
३७०	१४	तेने विषे	करतां उतां
३७ए	८	सुरासुरादि	सुरसुरादि
"	११	कायंगुत्तो	कायगुत्तो
"	२५	परिद्ध	पसिध्द
३०१	फुटनोट	देवताष्ठित	देवताधिष्ठित
३ए६	२१	जैनान्नासोए	जैनाभासो
३ए०	१७	उन्वाइ	उववाइ
"	२१	चेहयाणि	चेइयाणि
४००	३	प्रमाणे	ज्ञाने
४०४	१३	ज्ञानना	ज्ञानना
४१०	१६	सामान्य सिध्दोनुं	सिध्दोनुं सामान्य
४१४	१ए	व्राह्म	बाह्य

શ્રી આત્મ પ્રબોધ.

(ભાષાંતર.)



। नमः श्री पार्श्वनाथाय ।

श्री आत्मप्रबोध.

प्रथम प्रकाश.



(सम्यक्त्व निर्णय.)

अनंतविज्ञानविशुद्धरूपं निरस्तमोहादिपरस्वरूपम् ।
नरामरेंद्रैः कृतचारुभक्तिं नमामि तीर्थेशमनंतशक्तिम् ॥ १ ॥



नुं विज्ञान अनंत छे, जेनुं स्वरूप निर्मळ छे, जेणे मोह अज्ञान-आदि पर स्वरूपने टाळेलुं छे अने मनुष्योना इंद्र—चक्रवर्त्तीओए तथा देवताओना इंद्रोए जेनी मनोहर भक्ति करेली छे, एवा अनंतशक्तिवाळा श्री तीर्थंकर प्रभुने हुं नमस्कार करुं छुं. १

अनादिसंबद्धसमस्तकर्म—मलीमसत्वं निजकं निरस्य ।
उपात्तशुद्धात्मगुणाय सद्यो नमोऽस्तु देवार्यमहेश्वराय ॥ २ ॥

पोतानी अनादिकाळथी बंधाएला समस्तकर्मनी मलिनताने दूर करी जेमणे शुद्ध आत्मगुण ग्रहण करेलो छे, एवा देवताओने पूजवा योग्य महेश्वर श्री वीर भगवान्‌ने नमस्कार हो. २

जगत्त्रयाधीशमुखोद्भवाया वागूदेवतायाः स्मरणं विधाय ।
विजन्यतेऽसौ स्वपरोपकृत्यै विशुद्धिहेतुः शुचिरात्मबोधः ॥२॥

त्रण जगत्ना स्वामीना मुखथी उत्पन्न थयेल वाग्देवता—सरस्वतीनुं स्मरण करी पोताना अने परना उपकारने माटे विशुद्धिनो हेतुरूप एवो आ पवित्र—शुद्ध आत्मबोध ग्रंथ रचवामां आवे छे. ३

ग्रंथना आरंभमां संक्षेप करवानी इच्छावाळा पुरुषे शिष्टपुरुषोना आचारने आचरवाने अने ग्रंथनी समाप्ति थवामां अंतराय करनारा घणां विघ्नोना समूहने दूर करवाने अत्यंत अव्यभिचारी अने योग्य इष्टदेवताना स्तवन वगेरे करवा रुप जेनुं स्वरूप छे एवुं भाव मंगळ भावे करीने करवुं जोइए, एवुं विचारी अहिं पण ग्रंथनी आदिमां सर्व तीर्थकरोने प्रणाम करवा पूर्वक नजीकना उपकारी श्रीवीर परमेश्वरने नमस्कार करवा रुप अने वाग्देवताना स्मरण करवा रुप भावमंगळनो आश्रय करवामां आव्यो छे. तेमज वळी श्रोताओनी प्रवृत्ति माटे आ ग्रंथनुं प्रयोजन, अभिधेय अने संबंध ए त्रण पण नियमथी कहेवा जोइए. आत्मज्ञान मोक्षने प्राप्त करावनार होवाथी सर्वनुं उपकारक छे, तेथी अहिं पोताना अने परना उपकारने अर्थे ए पद कही स्वोपकार अने परोपकार रुप प्रयोजन दर्शाववामां आव्युं छे, अने 'आत्मबोध' ए नाम आपी अतिशुद्ध आत्मज्ञाननो मार्ग अभिधेय रुपे निरुपण करवामां आवेल छे. अने 'ते आत्मबोध' कहेवामां आवे छे' एम कही वाच्य वाचक भाव वगेरे संबंध सूचव्यो छे. तेमां आत्मबोधनुं स्वरूप ते वाच्य छे अने 'आ ग्रंथ' वाचक छे. इत्यादि अहीं घणुं कहेवानुं छे, पण ते सद्बुद्धिवाळा पुरुषोए पोतानी मेळे बीजा ग्रंथोथी जाणी लेवुं. ग्रंथनो विस्तार थवाना भयथी अहीं कहेवामां आव्युं नथी.

हवे प्रथम जे सामान्यथी अभिप्राय दर्शावेल छे, तेने विवेचन करी बतावे छे.

प्रकाश माद्यं वर दर्शनस्य ततश्च देशाद्विरतेर्द्वितीयं ।
तृतीय मस्मिन् सुमुनि व्रतानां वक्ष्ये चतुर्थं परमात्मतायाः॥४॥

आ ग्रंथमां प्रथम प्रकाशमां सम्यग् दर्शननुं स्वरुप बतावेल छे, बीजा प्रकाशमां देश विरतिनुं स्वरुप, त्रीजा प्रकाशमां उत्तम मुनिव्रतनुं स्वरुप अने चोथा प्रकाशमां परमात्म भावनुं स्वरुप दर्शावेल छे. आ उपरथी परस्पर संबंधवाला सम्यक्त्वादि स्वरूपने प्रतिपादन करनारा एवा चार प्रकाशथी प्रतिबध्ध एवो आ आत्मप्रबोध ग्रंथ छे, एम सूचवेलुं छे.

आ ग्रंथना अधिकारीओ, कोण छे ?

न संत्यभव्या नहि जातिभव्या न दूरभव्या बहु संसृतित्वात् ।
मुमुक्षवोऽभूरिभवभ्रमा हि आसन्नभव्यास्त्वधिकारिणोऽत्र ॥५॥

अभव्य, जातिभव्य अने दूरभव्य ए बहु संसारी होवाथी आ ग्रंथना अधिकारी नथी. जेमने बहु भवमां भ्रमण करवानुं नथी एवा मुमुक्षु पुरुषो अने आसन्न भव्य ए आ ग्रंथना अधिकारी छे. ५

आ कहेवानुं तात्पर्य ए छे के, दुष्ट अंतवाला अने अनंत चार प्रकारनी गतिना स्वरुपने प्रसार करनारा आ संसारने विषे आ जगतना सर्व जंतुओना चित्तने चमत्कार करनारा एवा इंद्रादिक सुर असुरोए रचेला उत्कृष्ट आठ महा प्रातिहार्य वगेरे सर्व अतिशयोथी युक्त एवा जगद्गुरु श्री वीरप्रभुए सर्व घनघाति कर्मना दळीयाना समूहना नाशथी उत्पन्न थयेल सर्व लोकालोक लक्षणवाला लक्ष्यने अवलोकन करवामां कुशळ एवा निर्मल केवलज्ञानना बलथी त्रण प्रकारना जीवो कहेला छे. १ भव्य, २ अभव्य, अने ३ जातिभव्य. जे जीवो कालादिकना योगनी सामग्री प्राप्त करी पोतानी शक्तिथी सर्व कर्मोने खपावी मुक्तिए गया छे, जाय छे अने जवाना छे, ते सर्व जीवो त्रिकालनी अपेक्षाए भव्य कहेवाय छे.

जे जीवो आर्य क्षेत्र विगेरेनी सामग्री छतां पण तेवी जातना कोइ जाति स्वभावने लइने सर्वदा तत्त्वश्रद्धाना अभावथी क्यारे पण मुक्तिने पाम्या नथी, पामता नथी अने पामवाना नथी, ते अभव्य कहेवाय छे.

मुक्तिनी प्राप्तिनुं मूल कारण सम्यक्त्वज छे, तेने माटे शास्त्रमां कह्युं छे—

दंसणभट्ठो भट्ठो दंसण भट्ठस्स नत्थि निव्वाणं।
सिज्झंति चरणरहिया दंसणरहिया न सिज्झंति॥ १ ॥

जे सम्यक्त्वथी भ्रष्ट थयेलो छे, ते सर्वथी भ्रष्ट समजवो. सम्यक्त्वथी भ्रष्ट थयेला प्राणीने मोक्ष प्राप्त थतो नथी; प्राणीओ चारित्ररहित मुक्ति पामे छे परंतु सम्यक्त्वरहित कदापि मुक्तिमार्ग प्रति प्रयाण करी शकता नथी.

आहिं जे ' चारित्र रहित ' एम कह्युं, ते द्रव्य चारित्रथी रहित एम समजवुं.

वली जे जीव अनादिकालथी आश्रित एवा सूक्ष्म भावनो त्याग करी जो बादर भावने पामे तो ते अवश्य सिद्ध थाय छे, परंतु सर्व संस्कारने करनाराना विषयमां नहीं आवेली खाणनी अंदर रहेल संस्कारने योग्य एवा पाषाणनी जेम सूक्ष्म भावनो त्याग करी कदि पण अव्यवहार राशिरूप खाणथी बाहेर आवेला नथी, आवता नथी अने आववाना नथी, ते जातिभव्य कहेवाय छे. आ जीवो मात्र कहेवानाज भव्य छे, पण सिद्धि साधकपणे भव्य नथी, तेने माटे आगममां कह्युं छे के—

" सामग्गिअभावाओ, ववहाररासिअप्पवेसाओ ।
भव्वावि ते अनंता, जे सिद्धिसुहं न पावंतित्ति ॥१॥

सामग्रीनो अभाव होवाथी जेमनो व्यवहार राशिमां प्रवेश नथी एवा भव्य जीवो पण अनंता छे के, जेओ मोक्ष सुखने पामता नथी अने पामवाना नथी. १

उपर कहेला त्रिविध जीवोमांथी जे अभव्य अने जातिभव्य—ए बे

राशिना जीवो निर्मल श्रद्धाथी रहित होवाथी आ आत्म प्रबोध ग्रंथने विषे अधिकारी नथी, माटे बाकीना भव्य राशिना जीवो रह्या, तेज आ ग्रंथना अधिकारी छे.

ते भव्य जीवो बे प्रकारना छे. एक आसन्नभव्य अने २ दूरभव्य, तेमां दूरभव्य कोने कहेवाय ? ते कहे छे. जेने अर्ध पुद्गल परावर्तनथी अधिक संसार हजी वर्त्ते छे, ते दूरभव्य कहेवाय छे अने जेने अर्ध पुद्गल परावर्त्तनथी न्यून संसार वर्त्ते छे, ते आसन्नभव्य कहेवाय छे, तेओमां जे दूरभव्य छे, तेमने मिथ्यात्वनो उदय प्रबल होवाथी केटलाक काळ पर्यंत सम्यक्दर्शननी प्राप्तिनो अभाव होय छे, तेथी तेमनुं पर्यटन आ संसार अटवीमां घणो काल रहे छे, एटले तेमने आत्मबोधनो सद्धर्म मार्ग दुर्लभ थाय छे, अने जेओ आसन्नभव्य छे, तेमने कांइक न्यून अर्ध पुद्गल परावर्त्तन काल होवाथी आत्मबोधनो सद्धर्म मार्ग सुलभ थाय छे. वली तेमने हलका कर्मने लइने तत्त्व श्रद्धा सुलभ छे, माटे आसन्नभव्य जीवो आ ग्रंथना अधिकारी छे, ते आसन्नभव्य जीवोना उपकारने अर्थे आत्मबोधनुं कांइक स्वरूप निरूपण करवामां आवे छे.

आत्मा शब्दनो अर्थ.

ते ते भावने सततपणे प्राप्त थाय ते आत्मा कहेवाय छे. (अततीति आत्मा पोताना गुणपर्यायोने ग्रहण करवानी जेनामां शक्ति छे, ते आत्मा कहेवाय छे.

आत्माना त्रण प्रकार.

ते आत्मा त्रण प्रकारना छे. १ बहिरात्मा, २ अंतरात्मा अने ३ परमात्मा.

बहिरात्मानुं स्वरूप.

मिथ्यात्वना उदयने वश थइ शरीर, धन, परिवार, मंदिर, नगर, देश, मित्र अने शत्रु वगेरे इष्ट—अनिष्ट वस्तुओमां राग द्वेषनी बुद्धिने

धारण करे छे अने सर्व असार वस्तुने सार रूपे जाणे छे. ते पेहेला गुण ठाणामां वर्त्तनारो जीव बाह्य दृष्टिपणाने लइने बहिरात्मा कहेवाय छे.

अंतरआत्मानुं स्वरूप.

जे तत्त्व श्रद्धासहित थइ कर्मना बंध वगेरेनुं स्वरूप सारीरीते जाणे छे. जेम के "आ जीव आ संसारने विषे कर्म बंधना हेतुरूप एवा मिथ्यात्व, अविरति, कषाय अने योगवडे समय समय प्रत्ये कर्मने बांधे छे, ते कर्म ज्यारे उदय आवे छे, त्यारे ए जीव पोतेज तेने जोगवे छे. तेने कोइ बीजो जीव सहाय पण करतो नथी." आ प्रमाणे चिंतवे छे. अने ज्यारे द्रव्य वगेरे कांइक वस्तु जाय छे, त्यारे ते आ प्रमाणे चिंतवे छे. मारो आ वस्तुनी साथेनो संबंध नष्ट थयो. मारुं खरुं द्रव्यतो ज्ञानादि छे, जे आत्म प्रदेशनी साथे संबंध धरावे छे, ते द्रव्य कयांइ पण जवानुं नथी." ज्यारे कांइ द्रव्य वगेरेनो लाज थाय छे, त्यारे ते आ प्रमाणे जाणे छे—"आ पौद्गलिक वस्तुनो संबंध मारे थयो छे; तेमां हर्ष शो धारण करवो ?" ज्यारे वेदनीय कर्मना उदयथी कष्ट वगेरेनी प्राप्ति थाय त्यारे ते समजावने धारण करे छे अने आत्माने परजावथी जिन्न मानी तेने त्याग करवानो उपाय करे छे अने चित्तमां परमात्मानुं ध्यान करे छे. तेमज आवश्यकादि धर्म कृत्यमां विशेष उद्यमवंत थाय छे, ते चोथा गुणठाणाथी बारमा गुण ठाणां सुधी वर्त्तनारो जीव अंतर्दृष्टिथी अंतरात्मा कहेवाय छे.

परमात्मानुं स्वरूप.

जे जीव शुद्ध आत्मस्वजावने प्रतिबंध करनारा कर्म शत्रुओने हणी अने निरुपम केवलज्ञानादिकनी उत्तम संपत्तिने प्राप्त करी सर्व पदार्थोना समूहने हथेलीमां रहेल आमळानी जेम अथवा हथेळीमां रहेल निर्मळ जलनी जेम जाणे अने जुवे, तेमज परम आनंदना संदोहथी संपन्न थाय ते तेरमा अने चौदमा गुणठाणामां रहेल आत्मा तथा सिद्धात्मा (शुद्ध स्वरूपपणे) परमात्मा कहेवाय छे.

आत्मबोध शब्दनो अर्थ.

बोधन एटले वस्तुना यथार्थ स्वरुपनुं ज्ञान ते बोध. आत्मा के. जेनुं लक्षण आगळ कहेवामां आवशे, एवो चेतन अने तेनाथी अभिन्न सम्यक्त्वादि धर्म तेनो बोध, ते आत्मबोध तेने प्रतिपादन करनारो ग्रंथ ते उपचारथी आत्मबोध कहेवाय छे. एवी रीते आत्मबोध शब्दनो अर्थ कह्यो.

आत्मबोधनुं माहात्म्य वर्णवे छे.

जे प्राणीने आत्मबोध थयेलो होय छे, ते प्राणी परमानंदमां मग्न होवाथी कदि पण संसार सुखनो अभिलाषी थतो नथी. कारण के, ते संसार सुख अल्प अने अस्थिर होय छे. जेम कोइ माणस विशिष्ट इच्छित वस्तुने आपनारा कल्पवृक्षने प्राप्त करी तेनी पासे लुखा भोजननी प्रार्थना करतो नथी, तेम प्राणी परमानंदमां मग्न थइ संसार सुखनो अभिलाषी थतो नथी. जेम सारा मार्गे चालनारो देखातो पुरुष कुवामां पडतो नथी, तेम जे प्राणीओ आत्मज्ञानमां तत्पर छे, तेओ कदि पण नरकादि दुःखने पामता नथी. जेणे अमृतनो स्वाद लीधो होय तेवा पुरुषने जेम खारा पाणीने पीवानी रुचि थती नथी, तेम जेणे आत्मबोधने प्राप्त कर्यो छे, तेने बाहेरनी वस्तुना संसर्गनी इच्छा थती नथी.

आत्मबोध वगरनो प्राणी केवो होय छे ?

जेने आत्मबोध थयो नथी ते प्राणीने मनुष्य देह होवाथी शींगडा पुंछडा प्रमुख कांइ होतुं नथी, तोपण तेने पशुज जाणवो. कारण के, आहार, निद्रा, भय अने मैथुनवडे युक्त होवाथी तेना ते धर्म पशुना जेवा छे, तेम वली जे प्राणीए वस्तुताए आत्माने जाण्यो नथी, तेने सिद्धिनी प्राप्ति दूर छे, अने परमात्मसंपत्तिनो उपलक्षक ते थतो नथी, अने संसारनी धन धान्य विगेरेनी समृद्धि तेना उत्साहनुं कारण रहे छे तेमज तेनी आशा रुपी नदी सदा पूर्ण रहे छे. तेथी ज्यांसुधी प्राणीने आत्मबोध थयो नथी, त्यांसुधी तेने आ संसार समुद्र दुस्तर छे; त्यांसुधी मोह रुपी महा सुभट तेने दुर्जय छे अने त्यांसुधी अति विषम एवा कषायो टके छे, तेथी आत्मबोध सर्वोत्तम छे.

आत्मबोध थवानुं कारण सम्यक्त्व छे.

कारण विना कार्यनी उत्पत्ति थती नथी एवो न्याय छे, तो आत्मबोध प्रगट थवामां कांइ सत् रुप कारण होवुं जोइए. ते कारण वस्तुताए सम्यक्त्व ज छे. बीजुं कांइ नथी. आगममां पण सम्यक्त्व शिवाय आत्मबोधनी उत्पत्ति सांभळवामां नथी, ते उपरथी आत्मबोध सम्यक्त्व मूळ छे एम सिध्ध थयुं.

सम्यक्त्वना स्वरुपने प्रतिपादन करवाने तेनी उत्पत्तिनी रीति कहे छे.

कोइ अनादि काळनो मिथ्यादृष्टि जीव मिथ्यात्वने लइने अनंत पुद्‍गल परावर्त्तन सुधी आ अपार संसार रुपी गहनमां भमी भमी भव्यपणाना परिपाकने पामी तेने लइ पर्वतनी नदीना जळना वेगमां घसडाता पाषाणना घसारानी जेम मांड मांड अनाभोगथी निवृत्त एवा यथा प्रवृत्ति करणरुप परिणाम विशेषथी घणां कर्मनी निर्जरा करतो अने थोडा कर्मने बांधतो संज्ञी जीवपणुं प्राप्त करे छे. पछी पल्योपमना असंख्येय भागथी न्यून एवा एक सागरोपम कोटीनी स्थितिवाळा आयुष्य शिवायना सात कर्मोने करे छे. जीवने पोताना दुष्कर्मथी उत्पन्न थयेल घाटा राग द्वेषना परिणाम रुप, कठोर अने घाटा लांबा काळनी लागेल गोपाएल वक्रग्रंथि (गांठ) ना जेवो दुर्भेद्य अने पूर्वे कदि नहीं भेदाएल ग्रंथि छे, ए ग्रंथि सुधी अभव्य जीवो पण यथाप्रवृत्तिकरणवडे कर्मने खपावी अनंतवार आवे छे. अने ते ग्रंथिदेशमां रहेल अभव्य जीव अथवा भव्य जीव संख्येय अथवा असंख्येय काळ सुधी रहे छे. तेमां कोइ अभव्य जीव चक्रवर्त्ती वगेरे अनेक राजाओए जेमने श्रेष्ठ पूजा, सत्कार, अने सन्मान आपेल छे, एवा उत्तम साधुओने जोवाथी, अथवा जिन समृध्धिना देखवाथी अथवा स्वर्गना सुख वगेरेना प्रयोजनथी दीक्षा ग्रहण करी द्रव्य साधुपणाने प्राप्त करी पोतानी महत्ता वगेरेनी अभिलाषाथी भावसाधुनी जेम प्रतिलेखनादि क्रियाओना कलापने आचरे छे. अने ते क्रियाना बळथी उत्कृष्ट नवमा ग्रैवेयक सुधी पण जाय छे.

अने कोइ नवमा पूर्व सुधी मात्र सूत्रपाठ जाणे अर्थ जाणतो नथी,

कारण के, अभव्य जीवोने पूर्वधर लब्धिनो अभाव छे, तेथी ते मात्र द्रव्यश्रुत मेळवे छे. कोइ मिथ्यात्वी भव्य जीव तो ग्रंथिदेशमां रही कांइक ऊणा दश पूर्व सुधी द्रव्यश्रुत मेळवे छे, एथीज कांइक ऊणा दशपूर्व सुधी श्रुत पण मिथ्याश्रुत थइ जाय. कारण के, ते मिथ्यात्वीए ग्रहण करेल छे, अने जेने पूर्ण दशपूर्व श्रुत थाय तेने निश्चे सम्यक्त्व थाय छे, अने बाकीना कांइ ऊणा दशपूर्वधर वगेरेमां सम्यक्त्व थवानी भजना छे एटले सम्यक्त्व थाय अथवा न पण थाय. तेने माटे कल्पभाष्यमां नीचे प्रमाणे कह्युं छे—

"चउदस दसय अभिन्ने, नियमा सम्मं तु सेसए भयणा."

ए पछी कोइ महात्मा के जेने परम निर्वृत्ति-मोक्षनुं सुख नजीक छे अने जेना अनिवार्य वीर्यनो वेग घणीरीते उल्लास पामेलो छे, ते महात्मा तीक्ष्ण खड्गनी धारानी जेम परम शुद्ध अध्यवसाय विशेष रुप अपूर्वकरणवडे जेनुं स्वरूप कहेवामां आव्युं छे, एवा ग्रंथिनो भेद करी अनिवृत्तिकरणमां प्रवेश करे छे. त्यां प्रतिसमये शुद्ध थतो ते तेज कर्मोने निरंतर खपावतो अने उदय आवेला मिथ्यात्वने वेदतो ते जे उदय आवेल नथी तेने उपशम करवारुप अंतर्मुहूर्त काळना प्रमाणवाळा अंतरकरणमां प्रवेश करे छे.

ते प्रवेश करवानो विधि आ प्रमाणे छे.

अंतरकरणनी स्थितिना मध्यमांथी दलिया लइ ज्यांसुधी अंतरकरणना दलीया सघळा क्षय पामे त्यांसुधी प्रथमनी स्थितिमां नांखे छे. एवी रीते अंतर्मुहूर्तना काळे करी सर्व दलियानो क्षय थइ जाय छे. ते पछी ज्यारे ते अनिवृत्तिकरण समाप्त थाय अने उदीरणा करेल मिथ्यात्वने भोगववाथी क्षीण थतां, अने नही उदीरणा करेल मिथ्यात्वने परिणाम विशेषथी रोकतां खारी जमीननी जेम मिथ्यात्वनो विवर पामीने एटले जेम संग्रामने विषे मोटो सुभट वैरीनो जय करीने अत्यंत आल्हादने पामे तेम कर्मे आपेला मार्गने पामीने परम-उत्कृष्ट-आनंदमय अने अपौद्गलिक एवा उपशम सम्यक्त्वने पामे छे. ज्यारे जीव उपशम सम्यक्त्वने पाम्यो ते वखते जेम उन्हाळाना तापमां तपाइ गयेलो कोइ जीव बावनाचंदनथी अत्यंत शीतळताने पामे छे, तेम ते जीवने उपशम

ना आत्मानी अंदर अत्यंत शीतळता प्रगट थाय छे. [illegible] सम्यक्त्वने विषे वर्त्तातो जीव सत्ताने विषे वर्त्तता एवा मिथ्यात्वने [illegible] त्रण पुंज रुपे व्यवस्था करे छे. जेम कोइ मेणाना कोद्राने शोधे छे, प्रगट थ[illegible]ा केटलाएक शुध्ध थइ जाय छे, केटलाएक अर्धा शुध्ध थाय छे अने छे. [illegible]एक तेवाने तेवाज रहे छे. एम जीव पण अध्यवसाये करीने जिनवचननी [illegible]चने रोकनारा दुष्टरसनो उच्छेद करी मिथ्यात्वने शोधे छे, ते शोधतां छतां शुद्ध, अर्ध शुद्ध अने अशुध्ध, एम त्रण प्रकारे थाय छे.

आ त्रण पुंजमां जे शुध्ध पुंज छे, ते सर्वज्ञ भगवंतना धर्मने विषे सम्यक्त्वनी प्राप्तिमां रोकवावाळो नथी ; तेथी ते सम्यक्त्व पुंज कहेवाय छे अनेबीजो जे अर्ध शुद्ध पुंज छे, ते मिश्रपुंज कहेवाय छे. ते मिश्रपुंजनो उदय थवाथी जिन धर्मने विषे उदासीनता होय छे, अने अशुध्ध पुंजना उदयथी अरिहंत—सिद्धादिकने विषे मिथ्यापणानी प्राप्तिनो उदय थाय छे, तेथी ते मिथ्यात्वपुंज कहेवाय छे, एटले शुद्धदेव अरिहंतने कुदेव माने अने शुद्ध गुरुने कुगुरु माने ते मिथ्यात्व कहेवाय छे. तेज अंतरकरणे करी अंतर्मुहूर्त्त काल पर्यंत औपशमिक सम्यक्त्व अनुभव्या पछी तरतज निश्चयथी शुध्ध पुंजना उदयथी क्षयोपशम सम्यग्दृष्टि थाय छे अने अर्ध शुद्ध पुंजना उदयथी मिश्र अने अशुद्ध पुंजना उदयथी सास्वादन गुणस्थान फरसवा पूर्वक मिथ्यादृष्टि थाय छे. ते सास्वादन गुणस्थान जघन्यपणे एक समय प्रमाण अने उत्कृष्टथी छ आवळी प्रमाण छे. वळी प्रथमनुं उपशम सम्यक्त्व प्राप्त थतां कोइ जीव सम्यक्त्वनी साथेज देशविरति पणाने पण पामे छे अने कोइ जीव प्रमत्त भावना छठा गुणस्थानने पामे छे अने कोइ जीव सास्वादन गुणस्थान पामी मिथ्यादृष्टि पण थाय छे. शतकनी—बृहद् चूर्णीमां ते विषे कह्युं छे—

उवसम सम्मदिठ्ठी अंतरकरणठिओ कोइ देसविरइंपि ॥
लहइ कोइ पमत्तभावंपि सासायणो पुण न किंपि लहे
इत्ति ॥ १ ॥

बीजुं कांइ न पामे एम कर्म ग्रंथनो अभिप्राय कहेलो छे. हवे सिध्धांत

नो अभिप्राय कहे छे—

अनादि मिथ्यादृष्टि कोइ ग्रंथिभेद करीने तेवी रीतना तीव्र परिणाम साथे अपूर्व करणमां आरूढ थइ मिथ्यात्वना त्रण पुंज करे छे, ते पछी अनिवृत्ति करणना सामर्थ्यथी शुद्ध पुंजना पुद्गलोने वेदता उपशम समकित पाम्या वगरज तेने प्रथमथीज क्षयोपशम सम्यक्त्व प्राप्त थाय छे.

अन्य आचार्य वळी आ प्रमाणे कहे छे. "यथाप्रवृत्ति वगेरे त्रण करण करीने अंतर करणने पेहेले समये उपशम सम्यक्त्व पामे छे, पण ते त्रण पुंजने करतो नथी अने ते पछी उपशम सम्यक्त्वथी पडी अवश्य मिथ्यात्वमांज जाय छे." आ विषे तत्त्व शुं छे? ते केवली भगवान् जाणे छे.

हवे कल्प भाष्यने विषे कहेल त्रण पुंजनो संक्रमण विधि बतावे छे— मिथ्यात्वना दलिया रूप जे पुद्गलो छे, तेमने खेंचीने जे सम्यग्दृष्टि ते जेना परिणाम विशेष वधता छे ते सम्यक्त्व अने मिश्र ए बंनेनी मध्ये संक्रमावे छे, अने सम्यग्दृष्टि मिश्र पुद्गलोने सम्यक्त्वमां संक्रमावे छे, अने मिथ्यात्वी मिश्र पुद्गलोने मिथ्यात्वमां संक्रमावे छे अने सम्यक्त्वना पुद्गलोने मिथ्यादृष्टि मिथ्यात्वने विषे संक्रमावे छे पण मिश्रमां संक्रमावे नहीं—ए प्रकारे पण मिथ्यात्व क्षीण न थयुं होय त्यांसुधी सम्यग्दृष्टिओ नियमा ए त्रण पुंजवाला होय छे. मिथ्यात्वनो क्षय थतां निश्चे बे पुंजवाला होय छे, अने मिश्रनो क्षय थतां एक पुंजवाला होय छे, अने सम्यक्त्वनो क्षय थतां क्षायिक समकिती होय छे. उपर ज्यां ज्यां सम्यक्त्व, मिश्र अने मिथ्यात्व ए त्रण शब्दो योजवामां आव्या छे, त्यां त्यां मोहनीय शब्द साथे जोडवाथी सम्यक्त्व मोहनीय, मिश्र मोहनीय अने मिथ्यात्व मोहनीय एम जुदा नाम पडे छे.

वळी कर्मग्रंथना अभिप्राये एम छे के, "पहेलवेलो सम्यक्त्व पामेलो जीव सम्यक्त्वमांथी पतित थइ मिथ्यात्वने पाम्या छतां फरीथी उत्कृष्ट स्थितिवाळी कर्म प्रकृतिने बांधे छे, अने सिद्धांतना अभिप्राय प्रमाणे एम छे के, जेणे ग्रंथिभेद करी सम्यक्त्व प्राप्त करेल छे, एवो जीव सम्यक्त्वथी पतित थइ पुनः कर्मनी उत्कृष्ट स्थिति बांधतो नथी. आ स्थळे सम्यक्त्वना विचारने माटे घणी

चर्चा छे, पण ग्रंथगौरवना नयथी ते अहीं करेल नथी; ते बीजा ग्रंथोथी जाणी लेवुं.

सम्यक्त्वना भेद.

सम्यक्त्व केटला प्रकारनुं छे ? तेवी शंका थतां तेने दूर करवाने सम्यक्त्वना भेद बताववामां आवे छे—सम्यक्त्व एक प्रकारे छे, तेम बे, त्रण, चार, पांच अने दश प्रकारे पण छे, एम अनंतज्ञानी श्री तीर्थंकर भगवाने कहेलुं छे.

सम्यक्त्वनो एक प्रकार शीरीते थाय? ते कहे छे. **तत्त्वश्रद्धान** एटले तत्त्वने विषे श्रद्धा ते सम्यक्त्वनो एक प्रकार छे. श्रीजिनभगवाने उपदेश करी बतावेला जीव-अजीव विगेरे पदार्थने विषे सम्यक् प्रकारे जे श्रद्धा एटले धारणानी रुचि ते सम्यक्त्वनो एक प्रकार छे.

सम्यक्त्वना द्रव्य अने भाव एम बे प्रकार थाय छे, जे परिणामनी विशुद्धिथी मिथ्यात्वना पुद्गलोने विशुद्ध करवा ते "द्रव्यसम्यक्त्व" कहेवाय छे, एटले तेमां पुद्गल द्रव्यने शोधी शुद्ध करवाथी ते द्रव्य शुद्ध थयुं, माटे ते द्रव्य सम्यक्त्व कहेवाय छे, अने जे तेना आधारभूत थइ जीवने जिनेश्वरे कहेला वचनने विषे तत्त्वश्रद्धा थवी ते बीजुं "भावसम्यक्त्व" कहेवाय छे.

वळी निश्चय अने व्यवहारना भेदथी सम्यक्त्व बे प्रकारनुं थाय छे. ज्ञान 'दर्शन अने चारित्र रुप जे आत्माना शुभ परिणाम ते "निश्चयसम्यक्त्व" कहेवाय छे, 'अथवा "ज्ञानादि परिणामथी आत्मा अभिन्न छे, एटले जुदो नथी" आवुं जे श्रद्धाथी 'मानवुं, ते "निश्चयसम्यक्त्व" कहेवाय छे. तेने माटे कह्युं छे के—

" आत्मैव दर्शनज्ञानचारित्राण्यथवा यतेः ।
यत्तदात्मक एवैष शरीरमधितिष्ठति " ॥ १ ॥

यतिने आत्माज दर्शन, ज्ञान अने चारित्र छे. कारणके, ज्ञान, दर्शन चारित्र रूपज आत्मा आ शरीरने विषे रहेलो छे. कारणके, जोते आत्माथी भिन्न होय तो मुक्तिना हेतु रूप थइ शकता नथी.

वळी निश्चयथी पोतानो जीवज देव निष्पन्न स्वरूपवाळो छे, तेम पोता-

चर्चा छे, पण ग्रंथगौरवना जयथी ते अहीं करेल नथी; ते बीजा ग्रंथोथी जाणी लेवुं.

सम्यक्त्वना भेद.

सम्यक्त्व केटला प्रकारनुं छे ? तेवी शंका थतां तेने दूर करवाने सम्यक्त्वना भेद बताववामां आवे छे—सम्यक्त्व एक प्रकारे छे, तेम बे, त्रण, चार, पांच अने दश प्रकारे पण छे, एम अनंतज्ञानी श्री तीर्थंकर भगवाने कहेलुं छे.

सम्यक्त्वनो एक प्रकार शी रीते थाय? ते कहे छे. **तत्त्वश्रद्धान** एटले तत्त्वने विषे श्रद्धा ते सम्यक्त्वनो एक प्रकार छे. श्रीजिनभगवाने उपदेश करी बतावेला जीव-अजीव विगेरे पदार्थने विषे सम्यक् प्रकारे जे श्रद्धा एटले धारणानी रुचि ते सम्यक्त्वनो एक प्रकार छे.

सम्यक्त्वना द्रव्य अने भाव एम बे प्रकार थाय छे, जे परिणामनी विशुद्धिथी मिथ्यात्वना पुद्गलोने विशुद्ध करवा ते "द्रव्यसम्यक्त्व" कहेवाय छे, एटले तेमां पुद्गल द्रव्यने शोधी शुद्ध करवाथी ते द्रव्य शुद्ध थयुं, माटे ते द्रव्य सम्यक्त्व कहेवाय छे, अने जे तेना आधारभूत थइ जीवने जिनेश्वरे कहेला वचनने विषे तत्त्वश्रद्धा थवी ते बीजुं "भावसम्यक्त्व" कहेवाय छे.

वळी निश्चय अने व्यवहारना भेदथी सम्यक्त्व बे प्रकारनुं थाय छे. ज्ञान दर्शन अने चारित्र रूप जे आत्माना शुभ परिणाम ते "निश्चयसम्यक्त्व" कहेवाय छे, अथवा "ज्ञानादि परिणामथी आत्मा अभिन्न छे, एटले जुदो नथी " आवुं जे श्रद्धाथी मानवुं, ते "निश्चयसम्यक्त्व" कहेवाय छे. तेने माटे कह्युं छे के—

" आत्मैव दर्शनज्ञानचारित्राण्यथवा यतेः ।
यत्तदात्मक एवैष शरीरमधितिष्ठति " ॥ १ ॥

यतिने आत्माज दर्शन, ज्ञान अने चारित्र छे. कारणके, ज्ञान, दर्शन चारित्र रूपज आत्मा आ शरीरने विषे रहेलो छे. कारणके, जो ते आत्माथी भिन्न होय तो मुक्तिना हेतु रूप थइ शकता नथी.

वळी निश्चयथी पोतानो जीवज देव निष्पन्न स्वरूपवाळो छे, तेम पोता-

नो आत्मा तत्त्व रमणरुप गुरु पण छे अने पोताना जीवनो जे ज्ञानदर्शन स्वभाव तेज धर्म छे. ते शिवाय कोइ बीजो नथी. आवुं जे श्रद्धान ते निश्चय सम्यक्त्व कहेवाय छे. आ सम्यक्त्वज मोक्षनुं कारण छे तेथी जीवने स्वरूपना ज्ञान विना कर्मक्षयरूप मोक्ष थतोज नथी.

अरिहंत भगवान् ते देव छे, सुधर्मनो उपदेश आपी मोक्षमार्गने देखाडनार ते गुरु छे, अने केवली भगवंते कहेलो दयामूल धर्म ते धर्म छे, इत्यादिक पदार्थ तरफ सातनय चार प्रमाण अने चार निक्षेपवडे जे तत्त्वश्रद्धान ते निश्चयसम्यक्त्वनुं कारणभूत व्यवहारसम्यक्त्व कहेवाय छे. अहिं कहेवानुं तात्पर्य ए छे के, जेना राग, द्वेष, मोह अने अज्ञान गयेला छे, तेज देव कहेवाय. तेवा देव तो श्री अरिहंत भगवान् छे. बीजा हरि, हर ब्रह्मादिक देव नथी, एटले ते देवोमां देवत्व नथी, कारण के तेओने विषे स्त्री, शस्त्र, जपमाला आदि रागादिकना चिन्हो प्रगटपणे वर्त्ते छे.

अहिं शिष्य प्रश्न करे छे के, " ते देवोने विषे रागादिक होय तेमां अमारे शी हानि छे ? " तेना उत्तरमां गुरु कहे छे—" एम कहो नही. कारण के, ते देवो रागादिकथी कलुषित छे, तेथी तेमनो हजु मोक्ष थयो नथी, तेथी तेमनामां मोक्षसुख आपवानी योग्यता नथी, माटे तेमनामां देवपणुं नथी, कारण के, देवनुं सन्मुखपणुं मोक्षसुखने अर्थे छे, एटले जो देव सन्मुख होय तो मोक्षसुख सुखे मेलवी शकाय छे, तेथी एम कहेवुं योग्य नथी. नित्यमुक्त तेजके जे कर्मे करीने लेपाय नही, अने रागादि के करीने पण न लेपाय. जे विष्णु, शंकर अने ब्रह्माने नित्यमुक्त कह्या छे, ते अयोग्य छे, कारण के, तेमने फरीथी संसारमां भटकवापणुं सांभळवामां आवे छे, अने तेमने असंख्याता भव करवा पुराणोने विषे कहेला छे.

अहिं शिष्य प्रश्न करे छे के, भले कदि ते देवने मुक्तिना दातापणुं न होय तो पण तेमनामां राज्य–धन दोलतनुं दातापणुं तेमज रागादिक कष्टनुं वारवापणुं छे, तेथी आ जगतमां कहेवाता जे देव–ते नाम देवने विषे साक्षात् जोवामां आवे छे.

गुरु उत्तर आपे छे; "एम कहेवुं योग्य नथी. कारणके, जो एवा देव कहेवाता होय तो राजा प्रमुख तथा वैद्योमां देवपणुं केम न कहेवाय? पण राजा प्रमुख अने वैद्यो सामा पुरुषना कर्मने अनुसारेज आपनारा छे, तेथी अधिक आपनारा नथी, केमके वधारे आपवानी तेमनी शक्तिज नथी, तेमनी तेटलीज प्रवृत्ति छे, वली ते देवना सर्व भक्त राजाओ नीरोगी होय, ते अनुभवथी पण विरुद्ध छे. कह्युं छे के,—जे पुरुष (जीव) पोते जेवा कर्म करे छे अथवा तेणे जेवां करेलां छे, ते जीव तेवा प्रकारे कर्मनुं शुभाशुभ फल भोगवेछे एटले तेवा प्रकारना भोगने पामे छे ते विषे हवे विशेष कहेवाथी बस थयुं.

आ जगत्मां जे देव कहेवाय छे, ते सर्व देवतत्त्वने लायक नथी. जे अढार दूषणथी रहित तथा रागद्वेषथी रहित छे, ते देव कहेवाय छे अने तेज मारा शुद्ध देव छे. जे पृथ्वीकाय वगेरे छ कायजीवनी विराधनाथी निवृत्ति पाम्या छे अने उत्तम ज्ञानवान् छे, तेज मारा शुद्ध गुरु छे. परंतु जेमनी सर्व आरंभमां प्रवृत्ति छे अने जे निरंतर छकाय जीवनी हिंसा करनारा छे, तेवा ब्राह्मण, तापस वगेरे मारा गुरु नथी, एम निश्चय दृष्टिवंत भव्य जीवने सम्यक्त्व होय छे.

अहिं शिष्य प्रश्न करे छे के, "ब्राह्मण वगेरे कुगुरुने विषे छकायनी विराधना भले होय, पण जातिथी तो ते ब्राह्मण छे."

गुरुए उत्तर आप्यो. "शिष्य, एम कहे नहीं. कारण ब्राह्मण जातिए श्रेष्ठ होय, पण जो तेना आचरण निंदनीय होय तो ते निंदा करवा योग्य छे. जुवो पाराशर अने विश्वामित्र वगेरे ऋषिओ ब्राह्मण जातिने अभावे पूजनीय कहेवाया छे. ते विषे पुराणमां लखे छे के,—

" श्वपाकीगर्भसंभूतः पाराशरमहामुनिः ।
तपसा ब्राह्मणो जातस्तस्माज्जातिरकारणम् " ॥१॥

पाराशरमहामुनि चंडाळणीना गर्भथी उत्पन्न थया हता, पण तपवडे ब्राह्मण थया हता, तेथी ब्राह्मणपणामां जाति कारण नथी. १

"कैवर्त्तीगर्भसंभूतो व्यासो नाम महामुनिः ।
तपसा ब्राह्मणो जातस्तस्माज्जातिरकारणम्" ॥ २ ॥

धीवरनी स्त्रीथी उत्पन्न थयेला महामुनि व्यास तपवडे ब्राह्मण थया हता, तेथी ब्राह्मण थवामां जाति कारण नथी. २

"शशकीगर्भसंभूतः शुको नाम महामुनिः ।
तपसा ब्राह्मणो जातस्तस्माज्जातिरकारणम्"॥ ३ ॥

हरिणीना गर्भथी उत्पन्न थयेला महामुनि शुकदेव तपवडे ब्राह्मण थया हता, तेथी ब्राह्मण थवामां जाति कारण नथी. ३

"न तेषां ब्राह्मणी माता संस्कारश्च न विद्यते ।
तपसा ब्राह्मणा जातास्तस्माज्जातिरकारणम्" ॥ ५ ॥

ते उपर कहेला मुनिओनी माता ब्राह्मणी न हती, तेमज तेमने संस्कार थयो नहतो; परंतु तेओ ब्राह्मणो थया हता, तेथी ब्राह्मण थवामां जाति कारण नथी. ५

वळी बीजे स्थळे पण कह्युं छे के,—

"सत्यं ब्रह्म तपो ब्रह्म ब्रह्म चेंद्रियनिग्रहः ।
सर्वभूतदया ब्रह्म एतद् ब्राह्मणलक्षणम्" ॥ १ ॥

"सत्य ब्रह्म छे, तप ब्रह्म छे, इंद्रियोनो निग्रह करवो ए ब्रह्म छे अने सर्व प्राणी उपर दया करवी ए ब्रह्म छे, ए ब्राह्मणना लक्षणो छे." १

"शूद्रोऽपि शीलसंपन्नो गुणवान् ब्राह्मणो भवेत् ।
ब्राह्मणोऽपि क्रियाहीनः शूद्रापत्यसमो भवेत्" ॥२॥

शूद्र होय पण जो ते शीलसंपन्न अने गुणवान् होय तो ते ब्राह्मण थाय-छे, अने ब्राह्मण होय पण जो ते क्रियारहित होय तो ते शूद्रना संतान जेवो थइ जाय छे. १

तेथी सर्वमां विरति प्रमाणभूत छे. विरतिभाव विना गुरुपणुं पण तार्य तारकपणाने अयोग्य छे ते विषे कह्युं छे के,—

" दुन्निवि विसयासत्ता दुन्निवि धणधन्नसंगहसमेआ ।
सीस गुरू समदोसा तारिज्जइ भणसु को केण " ॥१॥

" गुरु अने शिष्य बंने विषयमां आसक्त छे, बंने धन तथा धान्यना संग्रहथी युक्त छे, तेथी बंने सरखा दोषवाळा छे, तो तेमां कोण कोने तारे ? ते कहे. " १

कदि कहेशो के, तापस वगेरेने शामाटे गुरु न कहेवाय ? कारण के, तेओ संयमी, निःसंगी अने जंगलमां रहेनारा छे. वळी तेओ फुल फळादिक खानारा छे. पण तेमने गुरु कहेवा योग्य नथी, कारण के, तेमने सम्यक् प्रकारे जीवना स्वरुपनो बोध होतो नथी, तेमज तेमनामां स्नान वगेरेनुं आरंभपणुं रहेलछे, तेथी छकायना पाळक साधुज मारा गुरु छे, एम सिद्ध थाय छे. तेम सर्वज्ञ, अने केवळज्ञानीए प्ररूपेल धर्मज श्रेष्ठ छे, ते मोक्षपदने आपनारो छे, बीजा अन्य धर्मो मोक्षपदने आपनारा नथी, तेथी ते धर्मो सर्वज्ञना धर्म छे, एम कहेवुं नहीं, अने तेमना देव तथा गुरुने सर्वज्ञ न कहेवा, कारण के, एक मूर्तिपणे जे अविरुद्ध धर्मनुं भाषण करवुं, ते सर्व रीते अयोग्य छे. जे धर्मना व्याख्यानमां अनेक प्रकारना जुदा जुदा विरुद्ध कथन आवे ते धर्मनुं मूळ कहेवाय नहीं. जैन धर्मना आगममां ज्यां ज्यां जुवो त्यां अरिहंत भगवाननुं कथन एकज प्रकारनुं आवेछे तेथी ते धर्म मानवाने योग्य छे. ज्यां मोक्ष मार्गना हेतुमां विरुध्ध कथन आवे त्यां धर्म रहेवानो संभव नथी कारण, 'एक कहे आम करवुं अने एक कहे तेथी विपरीत करवुं तेथी आचरनारने कयुं करवुं, ते विषे भव्य प्राणी शंका आकांक्षामां पडी जाय छे. अने शंका वगेरेथी धर्म विमुक्तताना हेतु प्रगट थाय छे. जेमके विष्णुना मतमां आ सृष्टि विष्णु मूळ छे,एम कहे छे अने शैवमतमां आ सृष्टि शिव मूळ छे,

एम माने छे, तेमज शुद्धिनी बाबतमां पण एक जळे करी शुद्धि माने छे, अने एक रक्षावडे शुद्धि माने छे. मोक्षनी बाबतमां एक आत्माना क्षये करी मोक्ष माने छे अने एक नव गुणनो उच्छेद थाय, त्यारे मोक्ष माने छे. वळी तेमां देवताओ पाछळथी उच्छेद करनारा, वरदानने आपनारा अने सांसारिक रीतिमां वर्त्तनारा होय छे, तेथी तेओ सर्वज्ञपणाने योग्य शी रीते थाय ? नज थाय. ते माटे तेमनो प्ररूपेलो धर्म प्रमाणभूत नथी. जेम अनेक माणसो 'अमे, आ, ते, तेओ, एम पोतानी मेळे धर्म कहे ते प्रमाणभूत गणाय नहीं, तेम तेमनो कहेलो धर्म प्रमाण भूत गणातो नथी; कारणके, तेओ सर्वज्ञना वचनने अनुसारे धर्मने कहेता नथी, जे सर्वज्ञना वचनने अनुसारे कहेवामां आवे तेज धर्म गणाय छे, तेथी केवलि प्ररूपित धर्मज श्रेष्ठ छे, आ प्रमाणे सम्यक् प्रकारनी शुद्ध रुचि—श्रद्धा होय ते व्यवहार सम्यक्त्व कहेवाय छे. कारणके, व्यवहारनयनो मतपण प्रमाणज छे. ते व्यवहारनयना बळथीज तीर्थनी प्रवृत्ति छे, जो ते नयने प्रमाणभूत न मानीए, तो तीर्थनो उच्छेद थइ जाय.

शास्त्रमां कह्युं छे के,—

" जइ जिणमयं पवज्जह, ता मा ववहार निच्छयं मुयह ।
ववहारनउच्छेए तित्थुच्छेओ जउवस्समिति" ॥ १ ॥

" जो तमारे जिनमत अंगीकार करवो होय तो तमे निश्चय अने व्यवहार बंने नयने छोडशो नहीं. तेमां व्यवहार नयने छोडवाथी. अवश्य तीर्थनो उच्छेद थाय छे. " १

सम्यक्त्वना बीजा बे प्रकार.

पुद्गलिक अने अपुद्गलिक एम पण सम्यक्त्वना बे भेद पडेछे. जेमां मिथ्या स्वभाव गयो होय अने सम्यक्त्वना पुंजमां रहेला पुद्गलोना वेदवा रूप क्षयोपशम प्राप्त थाय, ते पुद्गलिक सम्यक्त्व कहेवाय छे. सर्वथा मिथ्यात्व, मिश्र सम्यक्त्व पुंजना पुद्गलोनो क्षय थवाथी तथा उपशमथी उत्पन्न थयेल जे निःकेवल जीव परिणाम रूप क्षायिक तथा उपशम सम्यक्त्व ते अपुद्गलिक सम्यक्त्व कहेवायछे.

अर्थात् पुद्गलोनुं वेदन स्वरूप ते पुद्गलिक सम्यक्त्व अने क्षयोपशम करवाथी जे जीवना परिणाम ते अपुद्गलिक सम्यक्त्व एम समजवुं.

सम्यक्त्वना बीजा बे प्रकार.

वळी निसर्ग अने अधिगम एम बे प्रकारे पण सम्यक्त्व कहेवाय छे. तीर्थंकर तथा गणधर वगेरेना उपदेश शिवाय स्वाभाविक कर्मना उपशम क्षयपणाथी जे सम्यक्त्व प्रगट थाय, ते निसर्गसम्यक्त्व कहेवाय छे. श्री तीर्थंकर गणधर वगेरेना उपदेशथी तथा जिन प्रतिमा देखवाथी अने बीजा शुभ बाह्य निमित्तना आधारथी कर्मनो उपशम-क्षय थतां जे सम्यक्त्व थाय ते अधिगम सम्यक्त्व कहेवाय छे.

ते विषे मार्ग तथा ज्वरनुं दृष्टांत.

.. एक वटेमार्गु मार्गथी भ्रष्ट थयो होय, ते कोइना बताव्या शिवाय भमतो भमतो पोते तेज खरे मार्गे जेम आवी जाय छे, तेवी रीते निसर्गसम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे. कोइ वटेमार्गु मार्गथी भ्रष्ट थतां कोइना बताववाथी खरे मार्गे आवे तेवी रीते अधिगम सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे. जेम कोइ माणसने ज्वर आव्यो होय ते परिपक्व स्थिति थातां औषधना उपचार विना स्वाभाविक रीते उतरी जाय छे तेवी रीते निसर्ग सम्यक्त्व समजवुं अने जेम कोइनो ज्वर औषधना उपचारथी उतरी जाय छे, ते अधिगम सम्यक्त्व जाणवुं. एवी रीते प्राणीने मिथ्यात्व रूप ज्वरना जवाथी सम्यक्त्व मार्गनी प्राप्ति थाय छे अने ते निसर्ग अधिगम रूप थायछे.

सम्यक्त्वना त्रण प्रकार.

कारक, रोचक अने दीपक एम सम्यक्त्व त्रण प्रकारनुं छे. जे जीवोने सम्यक् प्रकारना अनुष्ठाननी क्रियानी प्रवृत्ति करावे ते कारकसम्यक्त्व कहेवाय-छे. एटले ते सम्यक्त्वमां उत्कृष्ट विशुद्धि-निर्मळतारूप सम्यक्त्व प्रगट थतां जीव सूत्रमां कहेवा प्रमाणे क्रिया करे छे, तेथी ते कारक सम्यक्त्व कहेवाय छे. ए कारक सम्यक्त्व विशेष निर्मळ चारित्रवाळानेज प्राप्त थायछे. मात्र श्रद्धान ए रोचक सम्यक्त्व कहेवाय छे. ए सम्यक्त्वमां जीवने सम्यक् अनुष्ठाननी प्रवृत्ति

रुचे छे, पण ते करी शकतो नथी. आ सम्यक्त्व अविरति सम्यग्दृष्टि एवा कृ-पण अने श्रेणिक वगेरेने थयुं हतुं. जे जीव पोते मिथ्यादृष्टि अथवा अन्नव्य एवा अंगारमर्दक आचार्यनी जेम धर्मकथावमे जिनेश्वरना कहेल जीव-अजीवादि पदार्थोने यथार्थरीते परने प्रकाशे-दीपावे तेथी ते दीपक सम्यक्त्व कहेवाय छे. दीपक जेम बीजाना अंधकारने दूर करे छे अने पोताने प्रकाश करतो नथी तेम दीपक सम्यक्त्वथी बीजाने गुण थाय छे अने पोताने गुण थतो नथी, तेथी ते दीपक सम्यक्त्व कहेवाय छे.

अहीं शिष्य प्रश्न करे छे. जे जीव पोते मिथ्यादृष्टि छे, तो पछी तेने सम्यक्त्व शब्द शी रीते घटे ? ए वचननो विरोध आवे छे.

गुरु उत्तर आपे छे. शिष्य, एम कहे नहीं. ते जीवने मिथ्यादृष्टिपणुं छ-तां पण तेनामां जे परिणाम विशेष छे, ते निश्चे प्राणीने धर्म पमाम्वानो हेतुरूप थाय छे एटले सम्यक्त्वनुं कारणनूत थाय छे, तेथी जेम घीमां आयुष्यनो उप-चार करवामां दोष नथी तेम कारणने विषे कार्यनो उपचार करवाथी ते सम्य-क्त्व कहेवाय छे.

सम्यक्त्वना बीजी रीते त्रण नेद.

औपशमिक, क्षायिक अने क्षयोपशमिक एम सम्यक्त्वना त्रण प्रकार पण थाय छे.

सम्यक्त्वना चार नेद.

उपशमिक, क्षायिक, क्षयोपशमिक अने सास्वादन-एवा सम्यक्त्वना चार नेद छे.

सम्यक्त्वना पांच प्रकार.

उपशमिक, क्षायिक, क्षयोपशमिक, सास्वादन अने वेदक-एम सम्यक्त्व-ना पांच प्रकार पण थाय छे.

१ उपशमिक—उदीरणा करेला मिथ्यात्वने अनुनवथी क्षय करतां अने नहीं उदीरणा करेला मिथ्यात्वने परिणामनी निर्मळता विशेषे करी सर्व प्रकारे

उपशमावतां—दबावी देतां एटले उदयमां न आववा देवारुप करतां जे चैतन्यनो गुण प्रगट थाय छे, ते उपशमिक सम्यक्त्व कहेवाय छे.

आ सम्यक्त्व अनादि मिथ्यादृष्टिने, ग्रंथिभेद करनारने, अने उपशम श्रेणिना प्रारंभना करनारने थायछे.

२ क्षायिक—अनंतानुबंधी कषायनी चोकडीनो क्षय थया पछी अनंतर मिथ्यात्व, मिश्र सम्यक्त्वरूप त्रण पुंजरूप दर्शनमोहनीय कर्मनो सर्वथा क्षय थतां आत्माने जे गुण उत्पन्न थाय, ते क्षायिक सम्यक्त्व कहेवायछे. आ सम्यक्त्व क्षपक श्रेणी अंगीकार करनारने होय छे. " क्षपकश्रेणी अंगीकार करनार पुरुष आठ वर्षथी उपरांत वयवाळो, वज्रऋषभनाराच संघयणवाळो, अने ध्यानने विषे चित्त आपनारो होय छे, ते पुरुष अविरति होय, देश विरति होय अथवा प्रमत्त—छठा गुणठाणावाळा अथवा अप्रमत्त—सातमा आठमा गुणठाणांवाळामांथी गमे ते होय ते क्षपकश्रेणी मांडे छे, " एम प्रवचनसारोद्धार ग्रंथने विषे कहेलुं छे.

३ क्षयोपशमिक—उदय आवेला मिथ्यात्वने विपाकना उदये करी वेदी क्षय करे अने शेष के जे सत्तामां अनुदय आवेलुं होय तेने उपशांत करे एटले मिथ्यात्व मिश्र पुंजने आश्रीने रोके अर्थात् उदयने अटकावे. अने शुद्ध पुंजने आश्री मिथ्यात्व भावने दूर करी एटले उदीरणा करेल मिथ्यात्वनो क्षय करवाथी अने नही उदीरणा करेल मिथ्यात्वनो उपशम करवाथी आत्माने जे गुण उत्पन्न थाय ते क्षयोपशमिक सम्यक्त्व कहेवाय छे. आ मिथ्यात्व शुद्ध पुंज लक्षणवाळुं छे, ते अतिशय निर्मल एवा वादळानी पेठे छे, तेथी तेमां यथावस्थित शुद्ध तत्त्वरुचिनुं आच्छादन थतुं नथी, एटले ते आच्छादन करनार न होवाथी ते उपचारथी सम्यक्त्व कहेवाय छे.

अहिं शिष्य प्रश्न करे छे—उपशम सम्यक्त्व अने क्षयोपशमसम्यक्त्वमां शो तफावत छे ? कारणके, ते बंने सम्यक्त्वमां कांइ विशेष जोवामां आवतुं नथी. ते बंनेमां उदय आवेल मिथ्यात्वनो क्षय अने नही उदय आवेल मिथ्यात्वनो उपशम, ए कहेवामां आव्युं छे.

गुरु उत्तर आपे छे—तेमां विशेषपणुं छे.

क्षयोपशम सम्यक्त्वमां मिथ्यात्वना विपाकनो अनुभव नथी, पण रक्षाए

ढांकी राखेला अग्निना धुमाडानी श्रेणीनी जेम प्रदेशनो अनुभव छे. अने उपशम सम्यक्त्वमां विपाक उदयथी तथा प्रदेश उदयथी सर्वथा मिथ्यात्वनों अनुभवज नथी, माटे ते बंनेमां एटलो तफावत छे.

४ सास्वादन—प्रथम कहेला उपशम सम्यक्त्वथी पडता एटले सम्यक्त्वथी पतित थतां ते वखते सम्यक्त्वना आस्वादस्वरूपमय थवाय ते सास्वादन सम्यक्त्व कहेवाय छे. उपशम सम्यक्त्वथी पडतां छतां ज्यांसुधी मिथ्यात्व न पमाय त्यांसुधी सास्वादन सम्यक्त्व होय छे. ते सास्वादनसम्यक्त्वनो काल जघन्य एक समयनो अने उत्कृष्ट छ आवळीनो छे.

५ वेदक—जेणे क्षपक श्रेणी अंगीकार करेली छे, एवा पुरुषने चार अनंतानुबंधी अने मिथ्यात्व मिश्र पुंज (बे) खपावतां अने क्षायोपशमिक लक्षण रूप शुध्ध पुंजने खपावता, ते शुध्ध पुंजना पुद्गलनो छेल्लो पुद्गल खपाववाने उजमाळ थतां ते छेल्ला पुद्गलने वेदवा रूप जे सम्यक्त्व ते वेदक सम्यक्त्व कहेवाय छे. ते सम्यक्त्व एक समयनुं छे. वेदक सम्यक्त्व पाम्या पछी अनंतर समयेज क्षायिक सम्यक्त्व अवश्य प्रगट थाय छे.

ते पांचे सम्यक्त्वना कालनो नियम कहेछे.

" अंतमुहुत्तोवसमो छावलि सासाणवेअगो समओ ।
साहीयतित्ति सायर खइओ दुगुणो खओवसमो ॥१॥"

उपशम सम्यक्त्वनो काल अंतर्मुहूर्तनो छे, सास्वादन सम्यक्त्वनो काल छ आवलीनो छे, वेदकनो काल एक समयनो छे, क्षायक सम्यक्त्वनो काल तेत्रीश सागरोपमथी कांइक अधिकनो छे अने क्षयोपशम सम्यक्त्वनो काल छासठ सागरोपमथी कांइक अधिक एटले क्षयोपशमनो क्षायकना करतां बमणो काल छे. आ उत्कृष्ट काल कहेलो छे. क्षायक सम्यक्त्वनी स्थिति जे तेत्रीश सागरोपमथी अधिक कहेली छे, ते सर्वार्थसिध्धादिकनी अपेक्षाए संसारने आश्रीने समजवी अने सिध्ध अवस्थानी अपेक्षा ए तो तेनी सादि अनंत स्थिति जाणवी. जे क्षयोपशमनी बमणी स्थिति कही छे, ते विजयादिक अनुत्तर विमानने विषे तेत्रीश सागरोपमनी स्थितिमां बे वार जवानी अपेक्षा ए कही छे. अथवा बारमा दे-

वलोकने विषे बावीश सागरोपमनी स्थितिए त्रणवार जवानी अपेक्षाए कही छे. जे साधिक—(अधिक सहित) एम कहेवामां आव्युं छे, ते मनुष्य भवना आयुष्यनो प्रक्षेप करवाथी जाणवुं. आ सर्व उत्कृष्ट स्थिति जाणवी. जघन्य स्थिति तो वेदक, उपशम अने सास्वादन–ए त्रणेनी एकज समयनी स्थिति छे अने क्षयोपशम तथा क्षायक ए छेल्ला बे सम्यक्त्वनी स्थिति जघन्यपणे अंतर्मुहूर्तनी छे. आठ समयथी मांडीने बे घडीमां एक समय ओछो ते अंतर्मुहूर्त कहेवाय छे. ते अंतर्मुहूर्त्तना असंख्याता भेद छे.

सम्यक्त्व केटली वार पमाय छे.

" उक्कोसं सासायणं उवसमियं हुं ति पंचवाराओ ।
वेयग खइगाइक्कसि असंखवारा खउवसमो" ॥ १ ॥

" आ संसारने विषे उत्कृष्टथी सास्वादन अने उपशमिक सम्यक्त्व पांच वार होय छे. पण ते प्रथम एकवार उपशम सम्यक्त्व प्राप्त थाय त्यारे चार वखत उपशम श्रेणीनी अपेक्षाए होय छे. वेदक तथा क्षायक सम्यक्त्व एकजवार होय छे अने क्षयोपशम सम्यक्त्व असंख्यातिवार होय छे, ते पण बहु भवनी अपेक्षाए समजवुं."

कये गुणस्थानके कयुं सम्यक्त्व होय छे.

"बीयगुणे सासाणो तुरियाइसु अठिगारचउचउसु ।
उवसमखायगवेयगखाओवसमा कमा हुंति" ॥ १ ॥

सास्वादनसम्यक्त्व बीजे गुणठाणे होय छे. अने उपशम सम्यक्त्व चोथा-सम्यक्दृष्टि गुणठाणांथी अगीयारमा गुणठाणा सुधी आठ गुणस्थानके एटले अविरतिथी लइने उपशांतमोह गुणठाणांसुधी उपशम सम्यक्त्व होय छे तथा चोथा गुणस्थानथी अयोगी गुणस्थानना अंत सुधी अगीयार गुणठाणे क्षायिक सम्यक्त्व होय छे. चोथा गुणठाणांथी लइने अप्रमत्त गुणठाणानां अंत सुधी वेदक सम्यक्त्व होय छे तेज चोथा गुणस्थानथी मांडीने अप्रमत्त गुणस्थान सुधी एटले चार गुणस्थाने क्षयोपशमिक सम्यक्त्व होय छे, अर्थात् सातमा गु

णठाणा सुधी ते होय छे. अने क्षपकश्रेणि मांडवावाळाने वेदक थइने क्षायक थाय छे अने आठमे गुणठाणेथी श्रेणि मांडे छे. ”

सम्यक्त्व केटलीवार मुकाय अने केटलीवार ग्रहण थाय.

प्रथम मुक्युं पछी ग्रहण कर्युं, एवुं जे सम्यक्त्वादि ते गृहीतमुक्तने आकर्षा कहेवाय छे. ते सम्यक्त्व केटलीवार ग्रहण थाय अने केटलीवार मुकाय, ते दर्शावे छे. ते साथे एक जीवने एक भवमां केटला सम्यक्त्व थाय ते पण जणावे छे. भावश्रुत, सम्यक्त्व अने देशविरति नामना त्रण सामायिकवाळाने एक भवमां हजार [1]पृथक्त्व होय छे. सर्वविरतिवाळाने एक भवे सो पृथक्त्व आकर्षा थायछे. ते उत्कृष्टथी जाणवा. अने जघन्यथी तो एकज आकर्ष थाय छे.

संसारने विषे रहेला जीवोने सर्व भवमां केटला आकर्षा एटले जीव व्यवहार राशिमां आव्या पछी मोक्षे जाय त्यां सुधीमां केटला आकर्षा थाय ते वात जणावतां कहे छे के, अनेक भवोमां एक जीवने त्रण भावश्रुतादिकना असंख्याता हजार पृथक्त्व आकर्षा थाय छे एटले सर्व भवनी अपेक्षाये त्रण भावश्रुतादिने उत्कृष्ट असंख्याता हजार पृथक्त्व आकर्षा थाय छे. तेमां जे सर्व विरति छे, तेने हजार पृथक्त्व उत्कृष्ट थाय छे, अने द्रव्यश्रुतवाळाने अनंता आकर्षा थाय छे; कारणके, तेमां बेइंद्रिय आदि मिथ्यात्वीओनी गणना छे.

सम्यक्त्वना दश प्रकार.

प्रथम आंतरा रहित कहेला एवा उपशमादिक पांच प्रकारना सम्यक्त्वने निसर्ग तथा अधिगम साथे गणतां तेना दश प्रकार थाय छे अथवा पन्नवणा वगेरे आगमोने विषे निसर्ग रुचि वगेरे भेदथी दश प्रकारना सम्यक्त्व कहेला छे, तेना नाम आ प्रमाणे छे. १ निसर्गरुचि, २ उपदेशरुचि, ३ आज्ञारुचि, ४ सूत्ररुचि, ५ बीजरुचि, ६ अभिगमरुचि, ७ विस्ताररुचि, ८ क्रियारुचि, ९ संक्षेपरुचि अने १० धर्मरुचि.

ते दश प्रकारना सम्यक्त्वनुं विवेचन.

१ बेथी लइने नव धी कहेवामां पृथक्त्व शब्द वपराय छे.

१ निसर्गरुचि—निसर्ग एटले स्वन्नावे करीने जिनेश्वरना कहेला तत्त्वोने विषे रुचि थाय, ते निसर्गरुचि सम्यक्त्व कहेवाय छे; अर्थात् जिनेश्वरे दर्शावेला तत्त्वादिकनुं स्वरूप एमज छे, तेथी अन्यथा छेज नहीं, आम जाणे; एटले जे तीर्थंकर भगवाने कहेला द्रव्य, क्षेत्र, काल तथा न्नावना भेदे करी तथा नाम, स्थापना द्रव्यभावना न्नेदे करी चार प्रकारना जीवादिक पदार्थोने जातिस्मरण ज्ञाननी जेम बीजाना उपदेश विना अथवा श्रुतज्ञानना बळे करीने अत्यंत श्रद्धा करे ते निसर्गरुचि सम्यक्त्व कहेवाय छे.

२ उपदेशरुचि—गुरु, माता, पिता वगेरे वमिलोए कहेला वस्तुतत्त्वमां जे रुचि उत्पन्न थाय एटले आंतरा रहित कहेला जीवादिक पदार्थोने विषे तीर्थंकर, गणधर आदि पुरुषोना तेमज छद्मस्थ पुरुषोना उपदेशथी जे रुचि–श्रद्धा उत्पन्न थाय ते उपदेश रुचि सम्यक्त्व कहेवाय छे.

३ आज्ञारुचि—सर्वज्ञनी आज्ञा उपर जे न्नव्य पुरुष रुचि करे एटले जे न्नव्य राग, द्वेष, मोह,तथा अज्ञानथी देशथकी रहित थइ तीर्थंकर तथा गणधर वगेरेनी आज्ञा वमे प्रवचनना अर्थ थयेला छे, एम जाणी पोते बुद्धिहीन होय तो पण तेने यथार्थ रीते मापतुष मुनिनी पेठे अंगीकार करे ते आज्ञारुचि सम्यक्त्ववालो कहेवाय छे. आ सम्यक्त्वमां कहेवानुं तात्पर्य ए छे के, आगमने विषे जे अर्थ ज्ञानी महाराजे कहेलो छे ते यथार्थज छे–मारे प्रमाण छे; कदि तेमांथी कोइ न्नाग हुं मंदबुद्धि समजी शकतो नथी तो आगळ उपर विशेष अन्न्यासथी ते मारा समजवामां आवशे. उद्यम करवाथी शुं प्राप्त थतुं नथी ? तेम करतां कदि समजवामां न आवे तो मारा कोइ कर्मनो दोष छे. आ प्रमाणे मानें छे. पण जेमां पोताने समज पडे नहीं तेने अप्रमाण गणे नहीं; अने एवी दृष्टिथी पोते पोतानी मंद बुद्धि थवाना कारण प्रगट करेछे. सर्व न्नव्य जीवोए सम्यग्दृष्टिथी जिनेश्वरना वचन उपर श्रद्धापूर्वक एवी प्रतीति करवी जोइए. अने अन्न्यासमां तत्पर रहेवुं जोइए. एवी रीते जिनेश्वरे जे कहेल तेने प्रमाणभूत माने ते आज्ञारुचि सम्यक्त्व कहेवाय छे.

आज्ञारुचि सम्यक्त्व उपर मापतुषनुं दृष्टांत.

कोइ पुरुषे कोइ उत्तम गुरु पासे धर्म सांन्नळी प्रतिबोध पामी दीक्षा लीधी हती. गुरुए तेने अन्न्यास कराववा मांम्यो, परंतु कोइ ज्ञानावरणीय कर्म-

ना उदयथी ते शिष्य एक पद पण धारण करवाने के उच्चार करवाने शक्तिमान् थयो नहीं. आथी गुरु कंटाळी गया अने तेमणे मान्युं के, हवे आ शिष्यने शास्त्रनुं अध्ययन कराववाथी सर्युं. छेवटे एक वखते गुरुए तेने कह्युं के, " शिष्य, तने कांइ पण आवडे तेम नथी, माटे तुं केवळ ' मारुष, मातुष ' एम जप्या कर. " ते अल्पमति शिष्य ते वाक्य पण पूरी रीते बोली शक्यो नहीं. तेने ठेकाणे ' मापतुष' एम बोलवा लाग्यो. पोते ते जाणतां पोताना आत्माने पण्ण निंदतो हतो, पण केवळ गुरुनी आज्ञाने प्रमाण करी ते उपर पूर्ण श्रद्धा राखतो हतो, तेथी ते उत्तम भावनाओ करी चार घनघातीकर्मनो क्षय करी तत्काळ केवळज्ञाननी लक्ष्मीने प्राप्त थयो हतो. आवो पुरुष आज्ञारुचि कहेवाय छे.

४ सूत्ररुचि—सूत्र एटले अंग उपांग आदि आचारांगप्रमुख. जेनी अंदर आचारनुं लक्षण कहेवामां आवे छे, तेने विषे जेने रुचि छे एटले जाणवा जणाववानी, धारवानी अने तेना स्वरूपना चिंतवननी प्रीति छे, ते सूत्ररुचि सम्यक्त्ववान् कहेवाय छे. अर्थात् सूत्र जाणतां जणावतां ते सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे अने अतिशय सारा अध्यवसाय उत्पन्न थाय छे. ते सूत्ररुचि उपर गोविंदवाचकनुं दृष्टांत छे.

गोविंद वाचकनी कथा.

गोविंद नामे एक बौद्ध धर्मनो भक्त हतो. ते जिनेश्वरना आगमनुं रहस्य तथा तत्त्व ग्रहण करवा माटे कपटे करी जैन साधु बनी आचार्य महाराजनी पासे जैन सिध्धांत जाणवा आव्यो. जैन सिध्धांत जाणतां तेने सूत्रना अर्थवडे तेना परिणामनी निर्मळता प्रगट थइ आवी अने तेथी सम्यक्त्वने पामी जैन शुध्ध मुनि थइ आचार्य पदने पामी गोविंदवाचकना नामथी प्रख्यात थया हता. आ गोविंद वाचक सूत्ररुचि सम्यक्त्ववाळा जाणवा. ·

५ बीजरुचि—बीजनी पेठे जे एक वचन अनेक अर्थने बोध करनारुं होय ते बीज वचन कहेवाय छे, तेवा वचनने विषे जेने रुचि होय ते बीजरुचि सम्यक्त्ववान् कहेवाय छे. जेम बीज एक होय छतां अनेक बीजोने उत्पन्न करे छे, तेम आत्माने एक पद उपर रुचि होय ते अनेक पदनी रुचिने उत्पन्न करनारी थाय छे, एवी जे आत्माने विषे रुचि ते बीजरुचि कहेवाय छे. अथवा ते

उपर जळने विषे पमेला तेलना बिंदुनुं दृष्टांत छे. जेम तेलनो बिंदु जळना एक देशमां पमे छे, पण ते पछी समस्त जळने आक्रमण करे छे, तेवी रीते तत्त्वना एक देशमां आत्मानी रुचि उत्पन्न थइ, तो ते आत्मानी रुचि तेवी रीतना क्षयोपशमथी समस्त तत्त्वोने विषे प्रसरी जाय छे, आवुं नाम बीजरुचि कहेवाय छे.

६ अभिगमरुचि—अभिगम एटले विशेष प्रकारनुं ज्ञान, तेने विषे जेने रुचि थाय ते अभिगमरुचि सम्यक्त्ववान् कहेवाय छे. एटले [1]श्रुतज्ञानना अर्थने आश्रीने जेने विज्ञान—विशिष्ट ज्ञान प्राप्त थाय ते अभिगमरुचि कहेवाय छे.

७ विस्ताररुचि—सातनयो वमे संपूर्ण द्वादशांगीनी विस्तार पूर्वक विचारणा करवामां जेनी रुचि वृद्धि पामे छे, ते विस्ताररुचि सम्यक्त्ववाळो कहेवाय छे.

ए विस्ताररुचि सम्यक्त्वमां नैगमादिक सर्वनयो वमे तथा प्रत्यक्षादिक प्रमाणो वमे षट् द्रव्यनुं अने तेना पर्यायनुं यथार्थ ज्ञान थाय छे.

८ क्रियारुचि—सम्यक् प्रकारे संयम—चारित्रना अनुष्ठान एटले क्रिया तेनी प्रवृत्तिने विषे जे रुचि थवी ते क्रियारुचि सम्यक्त्व कहेवाय छे. जे पुरुषने क्रियारुचि सम्यक्त्व प्राप्त थयेलुं होय, तेने भावथी ज्ञानाचार, दर्शनाचार अने चारित्राचार आदि अनुष्ठानने विषे रुचि उत्पन्न थाय छे.

ए संक्षेपरुचि—जेनामां विशेष प्रकारे जाणवानी शक्ति न होय, तेथी जे संक्षेपथी जाणवानी रुचि करे, ते संक्षेपरुचि सम्यक्त्ववाळो कहेवाय छे. ते सम्यक्त्वमां जिन वचन रूप आगमने विषे अकुशलपणुं छतां तेमज बौद्धादिक कुदर्शननो अभिलाषी न छतां चिलातिपुत्रनी पेठे उपशम, विवेक अने संवर नामना त्रण पदे करीने तत्त्वनी रुचि प्राप्त थाय छे.

१० धर्मरुचि—धर्म एटले अस्तिकायादि धर्म तथा श्रुतधर्म अने चारित्रधर्म, तेने विषे जेने रुचि होय ते धर्मरुचि सम्यक्त्ववाळो कहेवाय छे. एटले जिनेश्वरे कहेला धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय वगेरेना गति, स्थिति रुप उपष्टंभकता आदि स्वभावने विषे अस्तिपणुं तेमज अंग—प्रविष्ट अर्थात् अंग—आगम

[1] आचारांग आदि अंग, उववाइ आदि उपांग अने उत्तराध्ययनादि प्रकरण ते श्रुतज्ञान कहेवाय छे.

ना स्वरूपने विषे तथा सामायिकादि चारित्रधर्मने विषे जे जीव श्रद्धा करे छे, ते धर्मरुचि समजवो.

अहिं जे सम्यक्त्वना उपाधि भेद वडे जुदा जुदा प्रकार कह्या छे, ते शिष्यने विशेष बुद्धि उपजाववा माटे कहेला छे. परंतु वस्तुताए तो निसर्ग अने अधिगम ए वे भेदमांज कोइ कोइ स्थळे ते बधानो अंतर्भाव थइ जाय छे. वळी अहिं सम्यक्त्वने जीवथी अभिन्नपणुं जे कहेलुं छे, ते गुण अने गुणीनो अभेद जणाववा माटे कहेल छे, ते उपरथी समजवानुं के, जे दश प्रकारनुं सम्यक्त्व तेज आत्मा छे, कारण के सम्यक्त्व ए आत्मानो गुण छे, एटले आत्मा तेज सम्यक्त्व अने सम्यक्त्व तेज आत्मा, ए तत्त्वथी जाणवुं. आत्मा अने आत्माना गुणमां अभेद छे. तत्त्वथी गुण अने गुणी जुदां नथी.—ए परमार्थ छे.

सर्व धर्मकृत्योमां सम्यक्त्वनी प्रधानता.

" समत्तमेव मूलं निद्दिठं जिणवरेहिं धम्मस्स ।
एगंपि "धम्मकिच्चं न तं विणा सोहए नियमा" ॥१॥

" जिनवरोए धर्मनुं मूळ सम्यक्त्वनेज कहेलुं छे, ते सम्यक्त्व विना धर्मनुं एक कार्य पण निश्चे शोभतुं नथी. " १

आ अपार संसारमां बहु प्रकारे भ्रमण करी खेद पामी गयेला भव्यजीवोए जेनुं स्वरुप प्रथम कहेलुं छे एवा शुद्ध सम्यक्त्ववडे पोताना आत्माने युक्त करवो. कारण के, पोतानी आत्मारूपी भूमिने निर्मळ करवाथी ते आधारे करेला सर्व धर्मना कृत्यो प्रभास चित्रकारे रचेली भूमि उपरना चित्रोनी जेम असाधारण रीते शोभी उठे छे. कारण के, आत्म शुद्धि कर्या विना एक पण धर्मकृत्य शोभतुं नथी; तेथी भव्य जीवोए प्रथम आत्मशुद्धिने विषे प्रयत्न करवो.

प्रभास चित्रकारनुं दृष्टांत.

आ जंबूद्वीपने विषे भरतक्षेत्रना मध्य भागे साकेतपुर नामे नगर छे. ते मनोहर अने उज्वळ एवा घरोथी तथा सुंदर जिन मंदिरोनी श्रेणीथी सुशोभित छे. नाग, पुंनाग विगेरे विविध जातना वृक्षोथी युक्त एवा अनेक उद्यानोए करी ते विराजित छे. तेमां सर्व शत्रुरूपी वृक्षोने उखेडवामां गजेंद्र समान महाबल नामे

एक राजा हतो. एक वखते ते राजा सन्नागंरुपमां बेठो छे, तेवामां अनेक प्रकारना देशोमां फरनारा पोताना एक दूतने आ प्रमाणे पुछ्युं, "हे दूत, मारा राज्यने विषे राजक्रीडाने योग्य एवी कोइ वस्तु नथी एम छे ?" दूते कह्युं, राजेंद्र, तमारा राज्यमां बीजी वस्तुओ छे, पण नेत्रोने आनंद आपनारी अने अनेक प्रकारना चित्रोथी अलंकृत एवी राजक्रीडा योग्य चित्रसन्ना नथी." दूतनां आ वचन सांजळी राजानुं मन तेवी सन्नाना कुतूहलथी पूरित थइ गयुं. तत्काळ तेणे मंत्रीने बोलावीने हुकम कर्यो के, 'सत्वर एवी चित्रसन्ना करावो.' राजानी आज्ञा थतांज मंत्रीए ते आज्ञा शिरपर चमावी दीधी, विस्तारवाळी अने मनोहर विविध प्रकारनी रचनाथी सुशोन्नित एक मोटी सन्ना तैयार करावी. ते पछी राजाए विमल अने प्रन्नास नामना बे चित्रकारोने बोलावीने कह्युं, "चित्रकारो, तमे बंने चित्रना काममां निपुण छो, माटे एक आ सन्नाने चित्रवाळी करो, तेमां सन्नानो अर्ध न्नाग विमल चितरे अने अर्ध न्नाग प्रन्नास चितरे," एम कही तेमने अर्ध अर्ध न्नाग वहेंची आप्यो. पछी तेनी मध्य न्नागे एक पमदो बांधी राजाए तेमने सूचना आपी के "तमारे कोइ कोइना चित्रो जोवां नहीं, तमे प्रत्येक तमारी बुद्धि प्रमाणे तेमां चितार काम करो."

राजानी आवी आज्ञा थतां ते बंने चित्रकारो एक बीजानी स्पर्धाथी पोतपोताना न्नागमां चित्रकाम करवा लाग्या. एवी रीते चित्रकाम करतां तेमने छ मास वीती गया. ते पछी चित्रकाम जोवाने आतुर एवा राजाए ते बंनेनी पासे आवी चित्रकाम पूर्ण करवा माटे पुछ्युं, आ वखते विमले कह्युं, "स्वामी, में मारो न्नाग पूरो कर्यो छे, ते आप जुवो." राजाए तेमां प्रवेश करी जोयुं, त्यां विचित्र प्रकारना चित्रोथी अद्नुत एवा ते न्नूमि न्नागने जोइने राजा संतुष्ट थइ गयो. तत्काल राजाए विमलने घणुं द्रव्य तथा वस्त्रादिकनुं इनाम आपी तेनी उपर महान् प्रसाद कर्यो. ते पछी राजाए प्रन्नासने पुछ्युं, त्यारे प्रन्नासे कह्युं के, में तो हजु चित्रनो आरंन्न पण कर्यो नथी, मात्र हजु न्नूमि संस्कार कर्यो छे. एटले चितरवानी न्नूमिने शुद्ध करी छे. कारण जो न्नूमिने बराबर शुद्ध करी होय तो ते पर चितार काम घणुंज शोन्नी उठे छे. पछी राजाए ते न्नूमि संस्कार केवो कर्यो हशे ते जोवाने माटे वचमां राखेला पमदाने दूर कराव्यो. तेवामां ते न्नूमिनी अंदर घणुं रमणीय चित्रकाम थयेलुं जोवामां आव्युं. ते जोइ राजाए कह्युं,—

अरे प्रज्ञास, तुं शुं अमने पण ठगे छे ? अहिं तो साक्षात् चित्रकाम देखाय " प्रज्ञासे कह्युं, " महाराज, ए साक्षात् चित्रो नथी पण आ सामेना जागना त्रोना प्रतिबिंबोनो संक्रम थयेलो छे. " तेना आ वचनो सांजळी राजाए फ-वार ते पमदो बंधाव्यो, एटले मात्र एकली जूमि जोवामां आवी. आथी राजा-विस्मय पामीने पुछ्युं, " चित्रकार, तें आवा जारे संस्कारवाळी जूमि केम ी ?" प्रज्ञास बोल्यो, " स्वामी, आवी उज्ज्वल जूमि उपर चित्रकाम घणुं स-। थाय छे. चितरेली मूर्त्तिओना रंगनी कांति अधिक शोजे छे अने तेपर आले-ला रूप बहुज दीपी नीकळे छे, जेथी प्रेक्षकोना हृदयमां आवेहूब जावनो उ-ास थइ आवे छे. " प्रज्ञास चित्रकारना आ वचनो सांजळी राजा तेनी विवे-गळी कुशलता उपर हृदयमां संतुष्ट थइ तेने इनाम आपी तेनी उपर प्रसाद कर्यो. ने तेने कह्युं के, "मारी आ चित्र सजा जे प्रकारनी शोजावाळी थइ छे ते आ-ं प्रसिद्धि पामी एवी ने एवी कायम रहो. "

ए कथानो उपनय.

साकेतपुर नगर ते आ महान् संसार समजवो. महाबल राजा ते सम्यक् कारे उपदेश आपनार आचार्य समजवा. जे सजा ते मनुष्यगति समजवी. जे त्रकार ते जव्य जीव जाणवो. जे चित्रशालानी जूमि ते आत्मा अने ते जूमि-' जे संस्कार ते सम्यक्त्व जाणवुं. अने चित्र ते धर्म समजवो. जे अनेक प्रकार-: चित्रो ते प्राणातिपातनी विरति वगेरे व्रतो जाणवा. चित्रोने दीपावनारा उज्ज्वल पुरुख वर्णो ते धर्मने शोजावनारा अनेक प्रकारना नियमो जाणवा. अने जावनो ल्लास ते वीर्य समजवुं.

आ उपरथी ए उपदेश लेवानो छे के, प्रज्ञास चित्रकारनी जेम पंमित रुपोए आत्मारूप जूमिने निर्मळ करवी के जेथी ते आत्मजूमि उज्ज्वल क्रियारूप नेक प्रकारना चित्रोनी अद्भुत शोजाने धारण करे छे, जे शोजा आ जगतने पे अनुपम गणाय छे. आ प्रज्ञासना दृष्टांतथी सर्व धर्म कार्योने विषे सम्यक्त्वनुं धानपणुं दर्शाव्युं छे.

सम्यक्त्वना बीजा समसठ जेदो.

हवे विस्ताररुचि जीवोना उपकारने माटे सम्यक्त्वना समसठ जेदो कहे-

छे. चार प्रकारनी श्रध्धा, त्रण लिंग, दश विनय, त्रण शुध्धि, पांच दूषण रहित, आठ प्रभावक, पांच भूषण, पांच लक्षण, छ जयणा, छ आगार, छ भावना अने छ स्थानक, एवी रीते सम्यक्त्वना सम्सठ भेदो थाय छे. ए सम्सठ भेदोए जे युक्त होय तेने निश्चयथी विशुध्ध सम्यक्त्व प्राप्त थाय छे.

चार श्रध्धा.

१ परमार्थनी स्तवना, २ परमार्थ जाणनारनी सेवा एटले तेनी गुरुपणे मान्यता, ३ जेमणे सम्यक्त्व वमेलुं होय तेवा व्यापन्न दर्शनीओनुं वर्जवुं, ४ तथा अन्य दर्शनीओनो त्याग करवो. आ चार प्रकारनी श्रध्धा कहेवाय छे. जेने आ चार श्रध्धा होय तेने अवश्य सम्यक्त्व होय छे.

त्रण लिंग.

जेनामां सम्यक्त्व होय, तेने ओळखवाना जे चिन्हो ते लिंग कहेवाय छे १ शुश्रूषा, २ धर्मराग अने ३ वैयावृत्य ए त्रण लिंग जाणवा.

दश प्रकारनो विनय.

१ अरिहंत, २ सिध्ध, ३ चैत्य, ४ श्रुत, ५ धर्म, ६ साधुवर्ग, ७ आचार्य, ८ उपाध्याय, ९ प्रवचन अने १० दर्शन ए दशनो विनय करवो ते दश प्रकारनो विनय कहेवाय छे. भक्ति–बहुमान आदिथी विनय कराय छे.

त्रण प्रकारनी शुध्धि.

१ जिन, २ जिनमत अने ३ जिनमतने विषे रहेला जे साधु साध्वी वगेरे, तेनाथी बीजाने असाररूपे चिंतववा–ए त्रण प्रकारनी शुध्धि कहेवाय छे.

पांच दूषण.

१ शंका, २ कांक्षा, ३ विचिकित्सा, ४ कुदृष्टि प्रशंसा अने ५ कुदृष्टि परिचय ए सम्यक्त्वना पांच दूषणो वर्जवा योग्य छे.

आठ प्रभाविक.

१ प्रवचनी, २ धर्मकथी, ३ वादी, ४ नैमित्तिक ५ तपस्वी, ६ भद्

आदि विद्यावान् ७ चूर्ण, अंजनादिकवमे सिद्ध, अने ८ कवि—ए आठ प्रजाविक कहेवाय छे.

पांच जूषण.

१ जिनमतने विषे कुशळता, २ जिन शासननी प्रजावना करवापणुं, ३ तीर्थसेवा, ४ जिनमतने, विषे स्थिरता, अने ५ जिनमतने विषे जक्ति-ए पांच सम्यक्त्वना जूषण कहेवाय छे. कारण के, ते सम्यक्त्वने आजूषणनी जेम शोजा पमाडनारा छे.

पांच लक्षण.

१ शम, २ संवेग, ३ निर्वेद ४ अनुकंपा, अने आस्तिकता—ए पांच सम्यक्त्वना लक्षण छे. ते उपरथी सम्यक्त्ववान् पुरुष ओळखी शकाय छे.

ठ यतना.

परतीर्थिक आदिने १ वंदन, २ नमस्कार, ३ आलाप, ४ संलाप, ५ खानपाननुं दान अने ६ गंध पुष्पादिक अर्पवा— ए ठ यतना वर्जवा योग्य छे.

ठ आगार.

१ राजाना हुकमथी, २ समुदायनी आज्ञाथी, ३ बळवान्ना हुकमथी, ४ देवतानी आज्ञाथी, ५ दुर्लज आजीविकाथी अने ६ मोटा महान् पुरुषना आग्रहथी कांइ करवुं पडे ते आगार कहेवाय छे, ते उपर प्रमाणे ठ प्रकारना आगार छे.

ठ जावना.

१ आ सम्यक्त्व चारित्र धर्मनुं मूल छे, २ आ सम्यक्त्व चारित्र धर्मनुं द्वार छे, ३ आ सम्यक्त्व चारित्र धर्मनो स्तंज छे, ४ आ सम्यक्त्व चारित्र धर्मनुं आधारजूत छे, ५ आ सम्यक्त्व चारित्र धर्मनुं जाजन छे अने ६ आ सम्यक्त्व चारित्र धर्मनुं निधान छे. आ प्रमाणे शास्त्रमां कहेल छे, तेनुं चिंतवन करवुं, ते ठ जावना कहेवाय छे.

ठ स्थानक.

१ जीव छे, २ ते जीव नित्य छे, ३ ते जीव कर्मो करे छे, ४ ते करेला

कर्मने जोगवे छे, ५ मोक्ष छे अने ६ मोक्षनो उपाय छे. एवी अस्ति (छे) पणे श्रध्धा करवी ते छ स्थानक कहेवाय छे.

आ प्रमाणे सम्सठ जेदे करी सम्यक्त्व निर्मल होय छे.

ते सम्यक्त्वना सम्सठ जेदोनुं सविस्तर विवेचन.

चार श्रध्धानुं स्वरूप.

१ परमार्थ संस्तव एटले जीव, अजीव, पुण्य, पाप वगेरे तात्त्विक पदार्थोनो परिचय, अर्थात् तेना स्वरूप जाणवानो विशेष उद्यम, रटण, बहुमान पूर्वक जीवादि पदार्थोने विषे जे निरंतर अन्यास ते प्रथम श्रध्धा कहेवाय छे. २ परमार्थने जाणनारानी सेवा एटले परमार्थने जाणनारा आचार्य वगेरेनी जक्ति अर्थात् जवेरीनी जेम मुनिना गुणोनी परीक्षा करी तेमनी सेवा जक्ति करवी. जे मुनि संवेग एटले मोक्षाजिलाषना शुध्ध रंगना कल्लोलने फीलनारा अर्थात् जेना चित्तमां निरंतर मोक्ष जवाना तरंग उठी रह्या छे, एवा अने जे शुध्ध जैन मार्गने प्ररूपनारा छे, तेवा पुरुषोनी सेवा—जक्ति करवाथी समतारूप अमृतनुं पान मळे छे. अने तेथी आत्माने विषे आनंद पमाय छे. ए बीजी श्रध्धा छे.

३ जेमणे जैन दर्शननो नाश कर्यो छे, एवा अने प्रजुना वचनने उत्थापनारा एवा निन्हवो वगेरेने वर्जवा. कारणके ते निन्हवो सम्यक्त्वने ग्रहण करी पुनः तेनुं वमन करनारा छे. अने प्रजुना वचनथी विपरीत रीते वर्त्तनारा छे, ते गोष्ठा माहिल वगेरे कहेवाय छे. तेवी रीते यथाछंदा पुरुषोने पण वर्जी देवा. ते लोको आगम उपर दृष्टि बंध करी स्वच्छंदे वर्त्तनारा अने स्वकपोल कल्पित मार्गे चालनारा छे. तेमनुं आचरण गृहस्थना करतां पण नठारुं छे. तेओ काचुं पाणी पीवे छे, माथे तेल घाली मुंमावे छे, काचा पाणीए न्हाय छे, धोवे छे, वस्त्रो धोवरावे छे, गुप्त रीते स्त्री सेवन करे छे, अने लोकोमां पोताने ब्रह्मचारी कहेवरावे छे, उपान प्रमुख पेहेरे छे अने मठधारी थइ रहे छे. पासत्या, उसन्ना, कुशीलिया, संसक्ता, यथाछंदा ए पांच जिन मतमां अवंदनीय कहेला छे. महावीर प्रजुना वेषनी विमंबना करनारा, मंद अने अज्ञानी एवा ए कुगुरुने वर्जवाथी त्रीजी श्रध्धा प्रगटे छे.

४ चोथी श्रद्धा कुदर्शनने त्याग करवा रूप छे. कुदर्शन एटले जैन शिवाय बौद्ध वगेरेना दर्शनो तेनो त्याग करवाथी सम्यक्त्वनी चोथी श्रद्धा कहेवाय छे. ए चार श्रद्धा उपरथी पुरुषमां सम्यक्त्वनी प्रतीति थाय छे. सम्यग्दर्शनवाळा प्राणीओए पोताना आत्माना गुणोने निर्मल करनारी ए परमार्थ परिचय वगेरे चार श्रद्धाओने निरंतर धारण करवी. तेमां खास करीने चोथी श्रद्धामां कहेला कुदर्शनवाला पुरुषोनो सर्वथा त्याग करवानो छे. कारणके, ते पोताना दर्शननी मलिनताना हेतु रूप छे. जो कुदर्शनीनो संग न वर्जे तो जेम गंगानुं जल लवण समुद्रना संसर्गथी तत्काल खारुं थइ जाय छे, तेम सम्यग्दृष्टिना उंचा गुणो तेवा कुगुरुना संसर्गथी तत्काल नाश पामी जाय छे; तेथी सर्वथा तेमनो संसर्ग वर्जवो; एवो जिनेश्वरनो उपदेश छे.

त्रण लिंगनी व्याख्या.

१ शुश्रूषा—एटले सांभळवानी इच्छा. सद्ज्ञानना हेतु रूप एवा धर्मशास्त्र सांभळवा उपर प्रीति. साकरना स्वादथी पण वधारे मधुर अने युवान अने सुंदर स्त्रीओथी परिवृत थइ दिव्य गीतने सांभळवानी इच्छावाला चतुर पुरुषने जेवो राग थाय, तेवी रीते धर्म सांभळवानो आत्मानो जे अध्यवसाय ते शुश्रूषा नामे सम्यक्त्वनुं पेहेलुं लिंग—चिन्ह छे. ज्यारे भव्य जीवने सम्यक्त्व प्राप्त थयुं होय, त्यारे एवा परिणाम थाय छे.

२ धर्मराग—चारित्रादि धर्मने विषे राग ते धर्मराग नामे बीजुं चिन्ह कहेवाय छे. एटले कोइ मोटी अटवीनुं उल्लंघन करी आवेलो अने क्षुधाथी जेनुं शरीर क्षीण थइ गयुं छे, एवो ब्राह्मण जेम घेवर खावानी इच्छा करे तेम सम्यक्त्ववालो जीव कोइ कर्मदोषथी सदनुष्ठानादि धर्म करवाने अशक्त होय पण तेने धर्मने विषे तीव्र अभिलाष होय छे, तेवुं धर्मरागनुं चिन्ह कहेवाय छे.

३ देवगुरुनी वैयावच्च करवानो नियम ए सम्यक्त्ववंतनुं त्रीजुं चिन्ह छे. देव एटले अतिशय आराधन करवा योग्य अरिहंत अने गुरु एटले शुद्ध धर्मनो उपदेश करनारा आचार्य भगवान, तेमनी वैयावच करवामां यथाशक्ति सेवा प्रमुख करवानो नियम, जे नियम श्रेणिक वगेरेने हतो. महान् श्रेणिक

राजाने एवो नियम हतो, के ज्यारे परम तीर्थंकर महावीर जगवान् जे दिशाए विचरता होय, ते समाचार जाणवामां आवे त्यारे, ते दिशानी सन्मुख सुवर्णना एकसो आठ जवनो साथीओ करी पछी दातण करवुं, तेवी रीते देवपूजामां पण तेने एवो साथीओ करवानो नियम हतो, ते प्रमाणे ते दररोज करतो अने तेथी तेणे तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन कर्युं हतुं. तेवीरीते बीजा पण जव्य जीवोए ए प्रमाणे यथाशक्ति नियमो ग्रहण करवा यत्न करवो जोइए. ए शु-श्रूषादिक त्रणे लिंगोथी सम्यक्त्वनी उत्पत्तिनो निश्चय थाय छे.

दशप्रकारना विनयनी व्याख्या.

१ अरिहंत एटले तीर्थंकर जावजिन विचरता जिन. २ सिद्ध एटले जेमना आठ कर्म रूप मलना पमल क्षीण थइ गया छे, एवा सिद्ध जगवान्. ३ चैत्य एटले जिनेश्वरनी प्रतिमा—मूर्त्ति, ४ श्रुत एटले सिद्धांत—आचारांग आदि आगम. ५ धर्म एटले क्षमादिक दश प्रकार रूप. ६ साधुवर्ग एटले श्रमण समूह. ७ आचार्य एटले छत्रीश गुणना धारक अने गच्छना नायक. ८ उपाध्याय एटले शिष्यो ने सूत्रो जणावनारा, ए प्रवचन एटले जीवादि नव तत्त्वोने कहेनार (अथवा संघ) १० सम्यग्दर्शन एटले सम्यक्त्व अने तेनी साथे अजेदोपचारथी सम्यक्त्ववान् पण दर्शन कहेवाय छे. पूर्वे पण संजव प्रमाणे कहेवुं. ए अरिहंतादिक दशस्थानने विषे पांच प्रकारे विनय करवो.

विनयना पांच प्रकारनी व्याख्या.

१ जक्ति एटले साहामा जवुं, अशनादिक चार प्रकारनो आहार आपवो, अथवा जे योग्य होय ते आपवुं, ते रूप बाह्य प्रतिपत्ति.—बाहेरनी देखाती सेवा. आम जक्ति करवाथी अन्य जनो जाणे के, 'आ जक्तिवंत छे,' ते जोइ बीजाओ पण तेम करवाने प्रवर्त्ते. आहिं बाह्य जक्तिनो अर्थ राग विनानी —उपरनी जक्ति एवो अर्थ न करवो; कारणके, समकितगुण होवाथी जीवथी अंतर्दशारूप परिणामवाळीज जक्ति थने छे.

२ बहुमान एटले मनमां अतिशय प्रीति.

३ वर्णन एटले तेमना प्रजाविक गुणोनुं कीर्त्तन—स्तवन करवुं ते.

४ अवर्णवादपरिहार एटले तेमनी अप्रशंसा—निंदानो त्याग करवो. बीजाना उत्तम गुणोनी प्रशंसा करे, पोताना गुणोनी न करे, अने जेथी धर्मनी लघुता थती होय, तेवा कामने गोपवे—प्रगट न करे.

५ आशातनापरिहार—एटले मन, वचन अने कायाए करीने प्रतिकूल प्रवृत्तिनो निषेध करे एटले जे जे काम करे तेमां देव, गुरु अने धर्मनी आशातना करे नहीं अने करावे नहीं. अर्थात् जिनमतनी निंदा, लघुता थवारूप आशातना पण न करे. एटले पोताना हृदयने नठारी प्रवृत्तिमां नांखे नहीं.

आ दश प्रकारनो दर्शन विनय उपर कहेला दश स्थानोने आश्रीने जाणी लेवो. सम्यक्त्व होयतोज आ विनय प्रगट थाय छे, तेथी ते दर्शनविनय कहेवामां आव्यो छे.

त्रीजा चैत्य विनय विषे विवेचन.

चैत्यनो अर्थ जिनेश्वरनी प्रतिमा थाय छे. अथवा जिनबिंब थाय छे. ए प्रभुनी प्रतिमां केवा स्वरूपवाळी अने केटला प्रकारनी छे? एवी शिष्यनी शंका थतां तेना भेद दर्शावे छे. श्री जिनेश्वरना चैत्यना पांच भेद छे. १ भक्ति चैत्य, २ मंगळ चैत्य, ३ निश्राकृत चैत्य, ४ अनिश्राकृत चैत्य अने ५ शाश्वत चैत्य. गृहने विषे शास्त्रोक्त विधिपूर्वक लक्षणादिक सहित प्रतिदिन त्रिकाल पूजा वंदनादि करवाने माटे करावेली जे जिनप्रतिमा ते भक्ति चैत्य कहेवाय छे. ए प्रतिमा घर देरासरमां थापवाने धातुनी बनेली अने अष्ट प्रातिहार्य सहित थाय छे.

घरना द्वार उपर रहेला तीजा काष्ट (उत्तरांग)ना मध्य भागे स्थापेला जिनबिंबने मंगलचैत्य कहे छे. लोको मांगलिकने माटे ते द्वारना काष्ट उपर जिनमूर्त्ति कोतरावे छे. अने जो ते मंगलचैत्य होय तोज ते. घरमां रहे छे, अन्यथा रहेता नथी. मंगलचैत्य वगरना घरमां रही शकाय नहीं, ते विषे एक दृष्टांत कहेवाय छे.

मथुरा नगरीने विषे मंगल निमित्ते प्रथम जिनप्रतिमानी प्रतिष्ठा करे छे. जिनबिंबनुं स्थापन करे छे. जे घरमां मंगलचैत्यनुं स्थापन न कर्युं होय ते घर

पमी जाय छे. श्री सिद्धसेनाचार्ये कह्युं छे के "घर घर प्रत्ये द्वारना मध्य जागे —उतरांगे श्री पार्श्वनाथ प्रजुनी प्रतिमा स्थापे छे." ते मथुरा नगरीमां आजे पण लोकोना घरना द्वार उपर मंगल चैत्य देखाय छे. जे कोइ गच्छ संबंधी चैत्य एटले तपगच्छ, खरतरगच्छ, के अंचलगच्छनुं चैत्य, ते निश्राकृत चैत्य कहेवायछे. ते चैत्यमां ते ते गच्छना आचार्यादिकनो तेमां प्रतिष्ठा प्रमुख कार्यो करवानो अधिकार होय छे. बीजा गच्छना आचार्यो बीजा गच्छ संबंधी चैत्यमां प्रतिष्ठा करावी शकता नथी.

उपर कहेल निश्राकृत चैत्यथी विपरीत जाववालुं चैत्य अनिश्राकृत चैत्य कहेवाय छे. ते चैत्यने विषे सर्व गच्छोना आचार्यो प्रतिष्ठा करावी शके छे. मालारोपण वगेरे चैत्य संबंधी सर्व कार्यो करवानो अधिकार सर्व गच्छोना आचार्योने होय छे. शत्रुंजयगिरि उपर आदीश्वर जगवाननुं चैत्य अनिश्राकृत चैत्य छे, ते टुंकमां सर्व गच्छोना आचार्यो प्रतिष्ठादि करावी शके छे. त्यां सवासोमजीना देरासरमां देवाजियतीने नामे ओळखातो यतिवर्ग तेनी मालेकी धरावी तेमां प्रतिष्ठादि करावे छे, ते निश्राकृत चैत्य कहेवाय छे.

पांचमुं सिद्धचैत्य ते सिद्धायतनना नामथी ओळखाय छे. अने तेने शाश्वत जिन चैत्य पण कहे छे.

बीजी रीते चैत्यना पांच प्रकार.

१ नित्य चैत्य, २ द्विविध चैत्य, ३ जक्तिकृतचैत्य, ४ मंगलकृतचैत्य अने ५ साधर्मिक चैत्य. जे देवलोकने विषे शाश्वत चैत्य छे, ते नित्यचैत्य कहेवाय छे.

बे प्रकारे जक्तिए करेला निश्राकृत अने अनिश्राकृत (जरतादिके जेम कराव्या हता तेवा) ए बे प्रकारना चैत्य ते द्विविध चैत्य कहेवाय छे. ते बीजो अने त्रीजो जेद समजवो. मथुरानगरीनी जेम मंगळने अर्थे गृहद्वारना मध्य जागे काष्ट (उत्तरांग) उपर करेल चैत्य ते मंगळचैत्य समजवुं. जे कोइना नामथी देवगृहमां प्रतिमा करावी स्थापे ते साधर्मिक चैत्य कहेवाय छे. वार्त्तक मुनिना पुत्रे पोताना रमणीय देवगृहने विषे पोताना पितानी मूर्त्ति स्थापी हती. ते साधर्मिक चैत्य कहेवायुं छे.

वार्त्तक मुनिनी कथा.

वार्त्तक नामना नगरने विषे अजयसेन नामे राजा हतो. तेने सद्बुद्धिना नंमार रूप वार्त्तक नामनो मंत्री हतो.

एक वखते ते मंत्री पोताना घरना दीवानखानामां बेठो हतो, तेवामां कोइ परगामथी मीजमान आव्यो. मंत्री तेने मान आपी तेनी साथे वार्त्तालाप करवा लाग्यो, तेवामां धर्मघोष नामना मुनि तेने घेर जिक्षा लेवाने आव्या. मुनिने जिक्षा माटे आवेला जाणी वार्त्तकनी स्त्री घी, खांमथी मिश्रित एवुं एक क्षीरनुं पात्र जरी तेमने व्होरावा आवी. ते वखते पात्रमांथी एक बिंदु जूमि उपर पड्यो. ते मुनिना जोवामां आव्यो. ते महात्मा जगवंते उपदेश करेला जिक्षाग्रहणना विधिने जाणनारा हता. जिक्षा बेंतालीश दोषोथी दूषित न होवी जोइए, एम तेओ समजता हता. आथी ते पमेलो बिंदु जोइ तेमना मनमां स्फुरी आव्युं के, " आ जिक्षा छर्दित नामना दोषथी दूषित छे, तेथी आ जिक्षा मारे कल्पे नहीं. " आवुं विचारी ते महात्मा ते जिक्षा ग्रहण कर्या वगर ते घरमांथी बाहेर नीकळी गया. चतुर मंत्री वार्त्तक के जे घरना दीवानखानामां बेठो हतो, तेणे मुनिने जिक्षा लीधा वगर पाछा जतां जोयां. ते जोतांज ते मनमां चिंतववा लाग्यो के, आ मुनिए मारा घरनी जिक्षा केम लीधी नहीं ? जेवामां तेणे आ प्रमाणे जोयुं, त्यां आंगणामां घी साथे मिश्रित खांमनो बिंदु जोवामां आव्यो. ते उपर मांखीओ एकठी थइ. ते मांखीओने जक्षण करवाने गरोळी दोमी. ते गरोळीनुं जक्षण करवा उंदर दोड्यो. उंदरने मारवा माटे बीलामी दोमी आवी. बीलामीने हणवा माटे पेला आवेला मीजमाननो कुतरो दोड्यो. तेने मारवाने आमोशी पामोशीना कूतरा दोड्या. ते कुतराओने परस्पर लमाइ थइ एटले पोतपोताना कूतराओने वारवाने ते मीजमानना अने आमोशी पामोशीना तथा मंत्रीना सेवको दोमी आव्या. पोतपोताना कूतरानो पक्ष करतां तेमनी वच्चे परस्पर लमाइ सळगी उठी. पछी वार्त्तक मंत्रीए ए सर्वना युद्धने शांत करी दीधुं. पछी तेणे पोताना मनमां विचार्युं के, " एक घी खांमनो बिंदु जूमि उपर पमवाथी आटली बधी मारामारी थइ पमी, तेथीज ते महा मुनिए "आ दूषित जिक्षा ग्रहण करी नहीं. ते महात्माए विचार्युं हशे के जो हुं आ दूषित जिक्षा लइश-

तो मने मोटा पापनो लाग लागी जशे. कारणके, आमांथी पापनो प्रसंग उत्पन्न थया विना रहेशे नहीं. " आ प्रमाणे विचार करी दूषित भिक्षा ग्रहण करी नहि. ते पछी वार्त्तक मंत्रीए नीचे प्रमाणे जैनधर्मनी प्रशंसा करी हती.

" अहो ! भगवान् जिनेश्वरनो शुद्धदृष्टिवाळो धर्म केवो छे ? वीतराग भगवान् विना आवो पापरहित धर्मनो उपदेश देवाने कोण समर्थ छे ? माटे मारे पण हवे वीतराग प्रभुना धर्मने त्रिकरण शुद्धिथी सेववो. ए वीतराग भगवानज मारे सेववा योग्य छे. अने तेमणे कहेली क्रियाज पाळवी उचित छे. " आ प्रमाणे चिंतवी ते मंत्री आ संसार उपरथी विमुख थइ गयो. तेनामां शुभ ध्याननो योग प्रगट थयो. तत्काल तेने जातिस्मरण ज्ञान थइ आव्युं. ते वखते देवताओए तेने मुनिवेश अर्पण कर्यो. पछी मंत्री वार्त्तके गृहनो त्याग करी शुद्ध अनगार थइ बीजे स्थले विहार कर्यो. अनुक्रमे चिरकाल संयम पाळतां तेने केवलज्ञान प्राप्त थयुं. पछी ते वार्त्तक नगरने विषेज देह त्याग करी ते मोक्षे गयो.

ते मंत्रीनो सुबुद्धि नामे पुत्र हतो. पिताना स्नेहे करीने तेनुं हृदय पुराइ गयुं. पछी ते पितृवत्सल पुत्र एकरमणीय देरासर करावी तेमां रजोहरण तथा मुहपत्तीरुप परिग्रहने धरनारी पितानी प्रतिमा रचावी स्थापित करी अने तेनी पासे एक दानशाळा उघाडी. आ साधर्मिक चैत्य कहेवाय छे. ए रीते चैत्यना पांच भेद कहेला छे.

उपर कहेला चैत्यना भेदोमां भक्तिकृत वगेरे चार प्रकारना चैत्योनी अंदर कृत्रिमपणुं छे, तेथी तेमां न्यूनाधिक भावनो संभव होय छे, माटे तेमनी संख्यानो नियम नथी एटले जे कार्त्रिम जिनभुवन छे, तेने श्रावको भक्तिने अर्थे करे छे. ते अशाश्वता जिनभुवन कहेवाय छे. ते जिनभुवनो कांइक वधारे अने कांइक ओछा होय छे, तेथी तेमनी संख्यानो नियम होइ शकतो नथी. अने जे शाश्वता जिन चैत्यो छे, तेमनुं नित्यपणुं छे, माटे तेमनी संख्या होइ शके छे ते कारण माटे आ त्रिभुवनने विषे शाश्वतजिन संबंधी देवकुळना बिंबोनी संख्या चैत्यवंदननी अंतर्गत रहेल 'कम्मभूमि' इत्यादि गाथाने अनुसारे कहेवामां आवे छे ते गाथा नीचे प्रमाणे छे.

बेनी संख्या मेळववाने माटे " सत्ताए वईसहस्सा " इत्यादि बे गाथाओ कहेली छे अने ते उपरथी सर्व संख्या प्राप्त कराय छे. अहींआ चैत्यो अने जिनबिंबोना अविसंवादी स्थानोने आश्रीने आ संख्या देखाडी छे. केटलाएक आचार्य विसंवादि स्थानोने आश्रीने आंतरारहित कहेली संख्यानी अपेक्षाए चैत्य अने बिंबोनी संख्या वधारे प्रतिपादन करे छे. ते विषे संघाचार नामनी चैत्यवंदन भाष्यनी टीकाने विषे नीचे प्रमाणे कह्युं छे.

" सगकोडि लक्ख विसयरि, अहो य तिरिए दुतिसपणसयरा ।
चुलसिलखा सग नवई, सहसतेविसुवरिलोए ॥ १ ॥

तेरस कोडि सया कोडिगुण नवइ सट्ठिलक्ख अहलोए ।
तिरिए तिलक्ख तेणवइ सहस्सपडिमाडसयचत्ता ॥ २ ॥

बावन्न कोडिसय चउणवइ लक्खसहस चउयाल ।
सत्तसयासट्ठिजुआ सासयपडिमाउ वरिलोए ॥ ३ ॥

" अधोलोकने विषे सात क्रोड अने बोहोतेर लाख चैत्यो छे. तिरछालोकमां प्रत्येक भवने एक एक चैत्यनो सद्भाव होवाथी बत्रीशोने पंचोतेर चैत्यो छे. ते चैत्योने विस्तार पूर्वक कहे छे. पांचमेरु, वीश गजदंता पर्वतो, जंबू शाल्मली प्रमुख दश वृक्षो, एंशी वखारा पर्वतो, एकसो सीतेर दीर्घ वैताढय पर्वतो, त्रीश कुलगिरि पर्वतो, चार इषुकार पर्वत, मानुषोत्तर पर्वत, नंदीश्वर द्वीप, कुंडलद्वीप, अने रुचकद्वीपने विषे अविसंवादी स्थानोमां चारशों ने त्रेशठ चैत्यो जे पूर्वे कहेला छे, ते जाणवा. बाकी रहेल चैत्योनी संख्या विसंवादी स्थानने विषे छे, ते आ प्रमाणे—पांचमेरुनी अपेक्षाए पांच भद्रशाल वनने विषे आठ आठ करिकूट (हाथीना आकारना) पर्वतो छे. ते दरेक पर्वत उपर एक एक चैत्य होइ बधा मळी चालिश चैत्यो आवेला छे. गंगा सिंधु वगेरे नदीओना प्रपात कुंडो त्रणसो ने एंशी छे, ते दरेकमां एक एक चैत्य होवाथी त्रणसोने एंशी चैत्यो त्यां रहेला छे. एंशी प्रद्रह छे. तेमांपण एंशी चैत्यो छे; पांच देवकुरु अने पांच उत्तरकुरुने विषे दश चैत्यो, हजार कांचनगिरिओने विषे हजार चैत्य, अने वीश यमलगिरिमां वीश चैत्यो छे; सीतेर गंगादि महा नदीओमां सीतेर चैत्यो छे; वीश वृत्त वैताढ्योने

विषे वीश चैत्यो छे. जंबू, शाल्मली, प्रमुख, मूल दश वृक्षोने विषे जे दश चैत्यो छे, ते पूर्वे कहेल अविसंवादी चैत्योनी गणनामां ग्रहण करेला छे ; पण तेना परिवार भूत एवा अगीयारसो अने साठनी संख्यावाळा लघु जंबू आदी वृक्षो छे, तेओमां चैत्योनी संख्या तेटली ज छे ; ते आ स्थले ग्रहण करवा.

वळी बत्रीश राजधानीओने विषे बत्रीश चैत्यो छे. एथी विसंवादी स्थानना सर्व चैत्योनी संख्या बे हजार, आठसो अने बारनी थाय छे. एवी रीते अविसंवादी तथा विसंवादी बंने स्थानोना सर्व चैत्योनी संख्या मेळवतां कुल मळीने बत्रीशोने पंचोतेर चैत्यो थाय छे. अने ऊर्ध्व लोकने विषे चोराशी लाख, सत्ताणुं हजार अने त्रेवीश चैत्योनी संख्या छे. ते संख्या प्रत्येक विमाने एकेक चैत्यना सद्भावथी थाय छे. ए प्रथम गाथानो अर्थ थयो.

बाकीनी बे गाथा वडे ते कहेला चैत्योने विषे अनुक्रमे जिन बिंबोनी संख्या दर्शावे छे. अधो लोकने विषे तेरसोने नेवाशी क्रोड अने साठ लाख प्रतिमाओ छे. तेटली संख्या दरेक चैत्ये एकसो एंशी जिनबिंबना सद्भावथी थाय छे. तिरछा लोकमां त्रण लाख, त्राणुं हजार, बशो अने चालीश जिन बिंबो छे, ते आ प्रमाणे—नंदीश्वर, रुचक अने कुंडल द्वीपने विषे रहेला साठ चैत्योमां प्रत्येकने विषे एकसो चोवीश बिंबोना सद्भावथी अने बाकीना स्थानने विषे रहेला सत्यावीशसो अने बावन चैत्योनी अंदर एकसो वीश बिंबोना सद्भावथी—ऊपर कहेली संख्या थाय छे.

तथा ऊपरना लोकमां एकसो बावन क्रोड, चोराणुं लाख, चुमालीश हजार सातसो अने साठ शाश्वत प्रतिमाओ छे. बार देवलोकने विषे रहेला चैत्योनी अंदर प्रत्येके एकसो एंशी बिंबोनो स्वीकार होवाथी तेमज नवग्रैवेयक तथा पांच अनुत्तर विमानने विषे रहेला चैत्योनी अंदर प्रत्येके एकसो वीश जिनबिंबो होवाथी ऊपर कहेली संख्या थाय छे. ए बीजी गाथानो अर्थ जाणवो. सर्व चैत्योना जिनबिंबोनी संख्या केटली छे ? तेने माटे नीचेनी बे गाथा कहेली छे.

" सव्वेवि अट्ठकोडि लक्खा सगवन्न छसयअमनउआ ।
तिहुअण चेइय वंदे असंखुदहि दीवजोइवणे ॥ १ ॥

पनरसकोमिसयाइं कोमि बायाल लरकअडवन्ना ।
अमतीससहस्सवंदे सासयजिए पमिमतियल्लोए ॥ २ ॥

आ गाथानो अर्थ सुगम छे, मात्र तेमां एटलोज विशेष छे के, समुद्र द्वीप ज्योतिषीना विमानो, अने व्यंतर देवोना नगरो असंख्याता छे, तेमने विषे रहेला असंख्याता चैत्योने हुं वंदन करुं छुं. अहिं प्रथम करिकूटादि पर्वतोने जे विसंवादी स्थानपणुं कह्युं छे, ते जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति विगेरे ग्रंथोमां. ते स्थानोने विषे चैत्योने कहेला नथी, तेथी कहेल छे. वळी तेने अनुसरती क्षेत्रसमासनी गाथा आ प्रमाणे छे—

" करिकुमदहनइ कुरुकंचणजमलसम वियढेसु ।
जिणन्नवण विसंवाओ जोतं जाणंति गियत्था ॥ १ ॥

पूर्वे जे दरेक चैत्य प्रत्ये एकसो साठ जिन बिंबोनी संख्या ग्रहण करेली छे, ते बधी पन्नत्तिने अनुसारेज छे. तथा वैताढ्यने विषे रहेला सिद्धायतन—कूटना अधिकार विषे नीचे प्रमाणे सूत्र छे—

" एत्थणं महं एगे सिद्धाययणे पन्नत्ते कोसं आयामेणं अद्धकोसं विरकंन्नेणं देसूणं कोसं उड्ढ उच्चत्तेणं अठ्ठाइं धणुसयाइं विस्कंन्नेणं तावंतियं चेव पवेसेणं सेयावर कणगथूनियागा दारवण्णओजाववणमाणा तस्सणं सिद्धायतणस्स बहुसमरमणिजस्स भूमिन्नागस्स बहु मज्झादेसन्नागे एत्थणं महंएगे देवच्छंदे पन्नत्ते इत्यादि ॥

आ पाठमां एकसो आठ आठ प्रतिमा कहेली छे अने ते पछी ते जिन प्रतिमानो परिवार कहेल छे.

ए रीते जंबूद्वीपने विषे रहेला सर्व चैत्योने विषे प्रत्येक तेमां एकसो आठ जिन प्रतिमा छे. ते छवा जपांगमां कहेल छे; तेने अनुसारे त्रण लोकना सर्व चैत्योने विषे प्रत्येक चैत्ये एकसो आठ जिन प्रतिमा जाणी लेवी. एज कार-

एथी ' कम्मभूमि ' इत्यादि स्तोत्रने विषे पण एज प्रमाणे संख्या प्रतिपादन करेली छे, तेथी सद्बुध्धिवालाओए विचार करवो अने जैनागम सर्व प्रमाण भूत मानवो.

अहिं कोइ प्रश्न करे के, "तमोए ए प्रकारे चैत्योनी अने जिन बिंबोनी संख्या प्रतिपादन करी पण जो चैत्यादिकनी संख्या अधिक हशे, तो पछी तेनी ओछी संख्या कहेवामां मोटो दोष उत्पन्न थशे. " आ प्रश्ननो उत्तर आपे छे—" तमे जे शंका करी ते सत्य छे, पण ते कारणने लइने स्तोत्रने अंते त्रिलोकवर्त्ती सर्व शाश्वता तथा अशाश्वत जिन चैत्यादिकने नमस्कारनुं प्रतिपादन करनारी ' जं किंचि नाम तिथ्थं इत्यादि गाथा कहेली छे, माटे तेमां उपरनो दोष उत्पन्न थशे नहीं. अने तत्त्वथी तो तेनो निर्णय केवली अथवा बहु श्रुत जाणे. विवाद करवामां कांइ पण सिध्धि थती नथी.

सम्यग् दृष्टिओने तो " तमेव सच्चं निस्संकं जं जिणेहिं पवेइयं " आ वाक्यज ग्रहण करवा योग्य छे. ते विषे हवे बहु विस्तार करवानी जरुर नथी.

हवे अविसंवादी तथा विसंवादि बंने स्थानकने आश्रीने त्रिभुवनने विषे रहेला शाश्वत जिनचैत्योनुं प्रमाण दर्शावे छे, बार देवलोक, नव ग्रैवेयक, पांच अनुत्तर अने नंदीश्वर, कुंडल तथा रुचक नामना द्वीपोने विषे रहेला जिन चैत्यो बोंतेर योजन उंचा एकसो योजन लांबा अने पचास योजन पोहोळा छे. कुलगिरि, देवकुरु, उत्तर कुरु, मेरुवन, गजदंतपर्वत, वखारा पर्वत, इषुकार पर्वत, मानुषोत्तर अने असुरकुमारादि दश निकायने विषे रहेला चैत्यो छत्रीश योजन उंचा, पचाश योजन लांबा अने पचाश योजन पोहोळा छे. दीर्घ वैताढ्य, मेरुनी चूलिका, कांचनगिरि, महा नदीओ, कुंडो, जंबू प्रमुख वृक्षो, वैताढय, द्रहो, यमल पर्वतो, अने करिकूट गिरिओने विषे रहेला चैत्यो चौदशें चुंमालीश धनुष उंचा, एक गाउ लांबा अने अर्ध गाउ पोहोळा छे, राजधानी, व्यंतर देवताना नगरो, अने ज्योतिष्क विमानोने विषे रहेला चैत्यो नव योजन उंचा, साडाबार योजन लांबा अने सवाछ योजन पोहोळा छे. इत्यादि सर्व सद्बुध्धिवंत पुरुषोए विचारी लेवुं.

जे नंदीश्वर, रुचक अने कुंमल ए त्रण द्वीपोने स्थाने रहेला सात चैत्योने चार चार द्वार छे अने ते शिवायना सर्व शाश्वत चैत्योने त्रण त्रण द्वार छे. वळी शाश्वत जिन चैत्योमां रहेला जिन विंबो ऋषभानन, चंद्रानन, वारिषेण अने वर्द्धमान एवा चार नामे ओळखाय छे. अने ते आगमने विषे प्रतिपादन करेल छे.

एवी रीते शाश्वत जिनचैत्य संबंधी वक्तव्यता कही अने भक्तिकृत विगेरे अशाश्वत जिनचैत्योना गुणदोषनुं वर्णन करेछे. कपाल, नासिका, मुख, ग्रीवा, हृदय, नाभि, गुह्य, साथळ, जानु, पींमी अने चरण प्रमुख अगीयार अंगोमां जे प्रतिमा वास्तुकादि ग्रंथने विषे कहेला प्रमाणवाळी होय, नेत्र, कान, खांध, हाथ अने अंगुलि आदि सर्व अवयवोवमे अदूषित होय, समचोरस संस्थाने रहेल पर्यंकासने युक्त होय, कायोत्सर्गे करी विराजित होय, सर्वांगे सुंदर होय अने विधिवमे चैत्यादिकमां प्रतिष्ठित करी होय, तेवी प्रतिमा पूजवाथी सर्व भवी प्राणीओने ते मन वांछित आपनारी थाय छे. उपर कहेलां लक्षणोथी रहित एवी जिनप्रतिमा अशुभ अर्थनी सूचक होवाथी अपूज्य छे. जे प्रतिमा उपर कहेलां लक्षणोथी युक्त होय, पण जो सो वर्ष अगाउ कोइ प्रकारे अवयवोथी दूषित थइ होय तो ते पण अपूज्य गणाय छे. पण जो उत्तम पुरूषे विधिपूर्वक चैत्यादिकने विषे प्रतिष्ठित करेली होय अने ते सो वर्ष पछी अंगथी विकल थइ गइ होय तो तेने पूजवामां बीलकुल दोष नथी तेने माटे शास्त्रमां नीचे प्रमाणे कहेलुं छे के—

" वरससयाओ उड्ढं जं बिंबं उत्तमेहिं संठवियं ।
वियलंगुविपूइज्जाइ तं बिंबं निक्कलंन जओ ॥ १ ॥

अहिं एटलो विशेष छे के, मुख, नेत्र, मोक अने कटी भाग आदि प्रदेशने विषे खंमित थयेल मूलनायक बिंब सर्वथा पूजवाने अयोग्य छे. अने आधार, परिकर अने लांछनादिक प्रदेशे करीने खंमित होय तो ते पूजनिक छे. जेम धातु तथा लेप आदिना बिंबो विकल अंग थवाथी फरीथी समाराय छे, तेम पाषाण, काष्ठ तथा रत्नमय बिंब खंडित थवाथी फरीथी सज्ज करी शकाता नथी.

तेम वळी अतिशय अंगवाळी, हीन अंगवाळी, कृशोदरी, वृन्दोदरी, कृश हृदयवाळी, नेत्रादिकथी हीन, उंची दृष्टिवाळी, नीची दृष्टिवाळी, अधो मुखवाळी अने भयंकर मुखवाळी प्रतिमा देखनारने शांत भाव नहीं उत्पन्न करनारी तेमज स्वामीनो नाश, राजादिकनो भय, द्रव्यनो नाश, अने शोक–संताप आदि अशुभने सूचवनारी होवाथी ते सज्जन पुरुषोने अपूजनीय कहेली छे. अने यथोक्त उचित अंगने धरनारी अने शांत दृष्टिवाली जिनप्रतिमा सद्भावने उत्पन्न करनारी तथा शांति अने सौभाग्यनी वृद्धि करवा प्रमुख शुभ अर्थने आपनारी होवाथी सदा पूजनीय कहेली छे.

गृहस्थोए पोताना घरने विषे केवी प्रतिमा पूजवी जोइए ?

गृहस्थोए पोताना घरने विषे केवी प्रतिमा पूजवी जोइए ? तेनुं स्वरुप दर्शावे छे. पूर्वे दर्शावेला दोषथी रहित, एकथी लइने अगीयार आंगळ सुधीन मानवाळी, परिकर सहित,–एटले अष्ट प्रातिहार्य सहित, सुवर्ण, रुपुं, रत्न अने पीतलादि धातुमय अने सर्व अंगे सुंदर, एवी जिन प्रतिमा गृहस्थे पोताना घरने विषे स्थापी सेववा योग्य छे. परिकर विनानी उपर कहेला मानथी रहित, पाषाण, लेप, दांत, काष्ट, लोह अने चित्रमां आलेखेली जिनप्रतिमा गृहस्थने पोताना घरने विषे पूजनिक नथी–अेटले पूजवी न जोइए तेने माटे शास्त्रमां कह्युं छे के, —

" समयावलि सूत्ताओ लेवोवलकट्ठदंतलोहाणं ।
परिवारमाणरहियं घरंमि नहु पूयए बिंबं ॥ १ ॥

ते घर देराशरनी प्रतिमानी आगळ बलिवाकुलनो बहु विस्तार न करवो ; पण भावथीज निरंतर न्हावण करवुं, अने त्रिकाल पूजा करवी. अगीयार आंगळथी अधिक प्रमाणवाली जिनप्रतिमा घरने विषे पूजवी नहीं. तेवी प्रतिमा तो देराशरने विषेज पूजवा योग्य छे. तेमज अगीयार आंगळथी हीन प्रमाणवाली प्रतिमा मोटा देराशरमां स्थापवी नहीं, ए पण विवेक राखवो.

विधिपूर्वक जिनबिंबना करनार तथा करावनारने सर्वकाल समृद्धिनी

वृद्धि थाय छे. दारिद्र, दुर्भाग्य, नठारुं शरीर, दुर्गति, हीनबुद्धि, अपमान, रोग अने शोक वगेरे दोषो कोइकाळे पण थता नथी.

अहिं जिनचैत्यना अधिकारमां घणी बाबत कहेवानी छे, पण ते विषे श्रीआचारदिनकर प्रमुख ग्रंथोथी जाणी लेवुं. ए प्रकारे पांच प्रकारना चैत्योनी वक्तव्यता कहेवामां आवी, हवे तेना विनयनुं स्वरुप कहे छे.

चैत्य विनयनुं स्वरूप.

द्वित्रिपंचाष्टादिभेदैः प्रोक्ता भक्तिरनेकधा ।
द्विविधा द्रव्यभावाभ्यां त्रिविधांगादिभेदतः ॥ १ ॥

पूर्वे विनय, भक्ति, बहुमान वगेरे जे कहेला छे, तेना प्रकार कहे छे. भक्ति बे, त्रण, पांच अने आठ वगेरे भेदोथी अनेक प्रकारनी छे. तेमां द्रव्य अने भावथी बे प्रकारनी छे. अने अंग, अग्र अने भाव—एम त्रण प्रकारनी छे. तेमां जल, विलेपन, पुष्प अने आभरण वगेरेथी जे अंग पूजा थाय छे, ते बतावे छे. दुःखे करीने प्राप्त थयेला सम्यक्त्व रत्नने स्थिर करवानी इच्छावाला विवेकी पुरुषे पोते प्रथम पवित्र थइ, बादर जीवनी यतनादिकने माटे शुद्ध वस्त्र पेहेरी जिनालयमां जवुं. त्यां श्री जिनेश्वर समान गुणाए युक्त, एवा श्री जिनबिंबने मार्जन करी, कपूर, पुष्प, केशर, तथा साकर प्रमुखथी मिश्रित सुगंधी जलवडे स्नात्र करवुं. ते पछी कपूर, केशर, अने चंदन आदि द्रव्योथी विलेपन करवुं, ते पछी पुष्प पूजा करवी. भव्य प्राणीए सामान्य पुष्पोथी प्रभु पूजा न करवी. तेने माटे नीचे प्रमाणे कहेलुं छे—

" न शुष्कैः पूजयेद्देवं कुसुमैर्न महीगतैः ।
न विशीर्णैः फलस्पृष्टैर्नाशुभैर्नाविकासिभिः ॥ ॥ १ ॥"

सुकाइ गयेला, पृथ्वीपर पडेला, सडीने विशीर्ण थयेला, फलोथी स्पर्शाएला, अशुभ अने विकास नहीं पामेला पुष्पोथी जिनेश्वरनी पूजा करवी नहीं. १

" पूतिगंधान्यगंधानि आम्लगंधानि वर्जयेत् ।
कीटकोशापविद्धानि जीर्णे पर्युषिता निच ॥ २ ॥

नठारा गंधवाला, सुगंध वगरना, खाटा गंधवाला, कीमाए वींधेला, जु-ना अने वासी पुष्पोथी पूजा करवी नहीं. २

हस्ता त्प्रस्खलितं क्षितौ निपतितं लग्नं कचित्पादयो
र्यन्मूर्ध्वोर्ध्वगतं धृतं कुवसनैर्नाभेरधो यद् धृतम् ।
स्पृष्टं दुष्टजनैर्धनैरभिहितं यद् दूषितं कीटकैः
त्याज्यं तत्कुसुमं दलं फल मथो भक्तैर्जिनप्रीतये ॥ ३ ॥

हाथथी पमीगयेलुं, पृथ्वीपर पमेलुं, पगमां कोइ ठेकाणे अमकेलुं, म-स्तक उपर चमेलुं, नठारा वस्त्रोमां लीधेलुं, नाभिनी नीचे राखेलुं, दुष्ट लोकोए स्पर्शेलुं, धनथी हणाएलुं, अने कीमाओए दूषित करेलुं एवुं पुष्प, पत्र अने फल जिनेश्वरनी प्रीतिने माटे भक्तोए त्यजी देवुं. ३

उपर कहेला दूषित पुष्पोवमे प्रभुनी पूजा करवाथी माणस नीचपणां-ने पामे छे. तेने माटे कह्युं छे के,

" पूजां कुर्वन्नंगलग्नैर्धरामा पतितैः पुनः ।
यः करोत्यर्चनं पुष्पै रुच्छिष्टः सोऽभिजायते ॥ १ ॥ "

अंग उपर लागेला अने पृथ्वीपर पमीगयेला पुष्पोथी जे पुरुष पूजा करे छे, ते पुरुष उच्छिष्ट थइ जाय छे. एटले नीचपणाने पामे छे. १

ए कारण माटे उपर कहेला दोषथी वर्जित एवा पुष्पोवमे जिनपूजा करवी. तेवा उत्तम प्रकारना पुष्पोनी पूजाना प्रभावथी भव्य प्राणीना घरने विषे धनसारनी पेठे सर्व सुखवाली समृद्धिनी वृद्धि वगेरे प्रगट थाय छे. अने दारिद्र, शोक, अने संताप आदि पापना उदय दूर थइ जाय छे. आ प्रमाणे आ लोकमां फल मले छे अने परलोकमां देव लोकना तथा मोक्षना सुखनी प्राप्ति थाय छे.

पुष्प पूजा विषे धनसारनी कथा.

कुसुमपुर नामना नगरने विषे धनसार शेठ रहेतो हतो. ते हमेशा त्रि-काल जिनपूजा वगेरे कार्यो करवामां तत्पर हतो. एक वखते अर्धरात्रे ते धनसार

शेठना मनमां आ प्रमाणे विचार थयो—" में पूर्वजवे सारा काम करेला हशे, तेथी आ जवमां ते शुज कर्मना बलथी मने आ वृद्धि पामती समृद्धि प्राप्त थइ छे. हवे जो हुं आ जवने विषे कांइ शुज कार्यनी क्रियानुं सेवन करुं तो हुं पाछो आगामी जवे समृद्धिना सुखने प्राप्त करनारो थइश. वली जे आ समृद्धि देखाय छे, ते पण हाथीना कर्णनी जेम चंचल छे, माटे आ प्राप्त थयेली लक्ष्मीने सफल करवाने अने परलोकमां सुख पामवाने अर्थे हुं एक जिन प्रासाद करावीश, कारण के, शास्त्रने विषे श्री जिनप्रासाद करावबानुं महा फल कहेलुं छे. अने तेथी मोटा पुण्यनी प्राप्ति दर्शावी छे. तेथी प्रथम एज कार्य करी मने प्राप्त थयेल आ मनुष्यजव वगेरेनी सर्व सामग्री मारे सफल करवी उचित छे."

आ प्रमाणे चिंतवन करता धनसार शेठने बाकीनी सर्व रात्रि व्यतिक्रांत थइ गइ. ज्यारे प्रजात समय थयो एटले ते धनसारे न्यायथी उपार्जन करेली पोतानी लक्ष्मीवमे बावन जिनालयवालुं एक जिनमंदिर कराववानो आरंज कर्यो. आ कार्यमां प्रतिदिन घणां इव्यनो खर्च थवाथी तेना पुत्रे पोताना पिता धनसारने पूछ्युं.—" पिताजी, सर्व इव्यने नाश करनारुं आ वृथा काम केम आरंज्युं छे ? आ काम मने बीलकुल रुचतुं नथी. आ इव्यथी नवा घर, अने नवीन आजूषणो कराव्या होय तो वधारे सारुं. कारण के, घर अने आजूषण वगेरे कोइ कालांतरे काम आवे छे." पुत्रनां आ वचनो शेठ धनसारे जाणे सांजल्या नहोय तेम काढी नाख्यां. तेणे ते उपर बीलकुल ध्यान आप्युं नहीं. धनसार शेठे तो उल्लास सहित चमता परिणामे करी इव्यनो जारे व्यय करी ते जिनालयने पूर्ण कराव्युं. ज्यारे चैत्य पूर्ण थयुं, त्यारे कोइ पूर्वना अंतराय कर्मना उदयथी तेना घरमां रहेला सर्व इव्यनो नाश थइ गयो. आ वखते तेनो पुत्र अने बीजा मिथ्यात्वी लोको बोलवा लाग्या के " धनसार शेठे जिनालय कराव्युं, तेथी तेना सर्व इव्यनो नाश थइ गयो." ते लोको आम बोलतां तोपण जेनुं चित्त जैन धर्मने विषे दृढ छे एवो धनसार शेठ पोताना इव्यना प्रमाणमां थोडुं थोडुं पुण्य कर्या करतो हतो.

एक वखते धर्मगुरु जगवान् ते नगरमां पधार्या. धनसार तेमने वंदना क-

खाने गयो. गुरुए ए धर्मी शेठने पुछ्युं, ' केम तमारे सुखशाता छे ? ' त्यारे शेठे कह्युं, " जगवन्, तमारी कृपाथी सुखज छे, पण धर्मना निंदक लोको बोले छे के, " जिनालय करावधाथी आ धनसार शेठनुं सर्व द्रव्य नाश पामी गयुं. " आवी धर्मनी निंदा सांजळी मारा मनने चिंता थाय छे. मारुं द्रव्य नष्ट थयुं, तेनी चिंता मने बीलकुल नथी पण धर्मनी निंदा थवाथी मने जारे खेद थायछे. द्रव्यने माटे तो हुं समजुं छुं के, शुज कर्मना उदयथी द्रव्य बहु वार आवेछे अने अंतराय कर्मना उदयथी नाश पामे छे. हे स्वामी, आप ज्ञानना बलथी जुओ अने मने कहो के " आ जवने विषे मारुं अंतराय कर्म त्रुटशे के नहीं ?" धनसार शेठना आ वचनो सांजळी ते गुरु संतुष्ट थइ गयो, अने तेमणे पोताना ज्ञानना बलथी धनसार शेठना अशुज कर्मनो नाश अने शुज कर्मनो उदय जाणी लीधो. पछी धर्मनी उन्नति करवाने माटे गुरुए ते धनसार शेठने सर्व मंत्रोमां श्रेष्ठ अने महामंगल रुप नवकार मंत्र साधन विधि सहित आप्यो. धनसार शेठ ते मंत्रने विधि सहित जाणी जिनालयमां जइ मूलनायक प्रभुनी आगळ रही अष्टमतप आचरवा पूर्वक ते महा मंत्रनो जप करवा लाग्यो. ज्यारे ए तपना पारणानो दिवस आव्यो एटले ते दिवसे एक अखंमित उत्तम पुष्पोनी माला श्री जिनेश्वरना कंठमां स्थापी. जेवामां प्रजुनी स्तुति करवा प्रवर्त्यो, तेवामां नाग कुमार देवतानो इंद्र धरणेंद्र संतुष्ट थइ ते शेठनी आगळ प्रगट थयो. अने बोल्यो, " धनसार शेठ, तमारी जक्तिथी हुं संतुष्ट थयो छुं. जे इच्छा होय ते मागी लो. धनसार शेठे प्रजुनी स्तुति पूर्ण करीने कह्युं, " देव, जो तमे मारी पर संतुष्ट थया हो तो, आ प्रजुना कंठमां आरोपण करेली पुष्पमाला वडे जे पुण्य प्राप्त थयुं होय, तेनुं फल मने आपो. " धरणेंद्रे कह्युं, " शेठ, ते अर्पण करेली पुष्पमालाना पुण्यनुं फल आपवाने हुं समर्थ नथी. चोसठ इंद्रो पण तेनुं फल आपवाने शक्तिमान् नथी, माटे बीजुं कांइ मागो. " शेठे कह्युं, " कदि तमे वधी पुष्पमालानुं फल आपवाने असमर्थ हो तो ते मालाने विषे रहेल एकज पुष्पनुं फल आपो. " इंद्रे कह्युं, " ते पण आपवाने हुं समर्थ नथी. " धनसार शेठे कह्युं, " ज्यारे तमारामां एटलुं फल आपवानी पण शक्ति नथी तो तमे तमारे स्थाने पाछा चाल्या जाओ. " धनसार शेठना ए वचन सांजळी धरणेंद्रे कह्युं, " शेठजी, देवतानुं दर्शन निष्फल होय नहीं, माटे तमारा घरमां में रत्नोथी

जरेला सुवर्णना कलशो स्थाप्या छे. " आटलुं कही धरणेंद्र अदृश्य थइ गयो.

ते पछी धनसार शेठ ज्यां गुरु महाराज हता, त्यां आव्यो. अने तेमनी समक्ष ते देवेंद्र संबंधी वृत्तांत जणाव्यो. पछी, पोताने घेर आवी पारणुं कर्युं. पारणुं कर्या पछी धनसारे जैनधर्मनी निंदा करवामां तत्पर एवा पोताना पुत्रोने बोलावी पूर्वनो सर्व वृत्तांत कही संजळाव्यो अने रत्न जरित सुवर्णना कलशो बताव्या. ते पछी श्री जिनेश्वरनी पुष्पनी पूजानो महिमा वर्णवी पोताना सर्व कुटुंबने जैनधर्मना मार्गमां स्थिर करीने धनसार शेठ जावजीव सुधी सुखी, जोगी, दानी अने जितेंद्रिय थयो हतो. आ प्रमाणे पुष्प पूजा उपर धनसार शेठनी कथा छे.

आजरण पूजा.

विवेकी पुरुषोए सुवर्णना अने रत्नोना चक्षु, श्रीवत्स, हार, कुंमल, बीजोरुं, छत्र, मुगट अने तिलक आदि अनेक प्रकारना आजरणो के जे पोते तथा अन्य पुरुषोए अणजोगवेला होय ते जिनबिंबने यथायोग्य स्थाने आरोपित करवा, जे दमयंती वगेरेए करेला हता. दमयंती के जे पूर्वजवे वीरमती नामे स्त्री हती, तेणीए अष्टापद पर्वतने विषे चोवीश जिनबिंबोना ललाटने विषे रत्नना तिलको आरोपित कर्या हता. ते पुण्यना प्रजावथी ते बीजे जवे स्वाजाविक तिलकथी अलंकृत ललाटवाळी अने तेनी कांतिवमे निरंतर अंधकारनो नाश करनारी त्रिखंडना अधिपति नळ राजानी दमयंती नामे राणी थइ हती. ते शिवाय बीजा पण घणां जव्य जीवो आजरण पूजाना प्रजावथी सुखनी श्रेणीने पामेला छे. आ प्रमाणे पेहेली अंगपूजा कहेवामां आवी.

बीजी अग्र पूजा.

नैवेद्य, फल, अक्षत अने दीवा प्रमुखथी अग्र पूजा थाय छे. अहिं उत्तम प्रकारना मोदक प्रमुख खाजां ते नैवेद्य कहेवाय छे. श्रीफल बीजोरा वगेरे फल कहेवाय छे. पोताने जोग्य एवुं खंम रहित अने उज्ज्वल एवुं शालिप्रमुख धान्य विशेष ते अक्षत कहेवाय छे. ते नैवेद्य, फल अने अक्षत प्रजुनी पासे मुकवा. ते साथे प्रधान यतना पूर्वक प्रजु समीपे श्रेष्ठ घृतनो दीपक करवो. अहिं विवेकी

गृहस्थे एटलुं ध्यानमां राखवानुं के, ते प्रभुना दीपकवमे पोतानुं गृहकार्य कांइपण करवुं नही. जो कोइ ए दीपकवमे गृहकार्य करे तो ते देवसेननी मातानी जेम तिर्यंच प्रमुख योनिओमां उत्पन्न थाय छे. अने तेथी मोटा दुःखनुं भाजन थाय छे. ते विषे कहुं छे के, –

दीपं विधाय देवाना मग्रतः पुनरे वहि ।
गृह कार्यं न कर्तव्यं कृते तिर्यग् भवो भवेत् ॥१॥

"देवनी आगळ दीवो करी ते दीवा वमे गृहकार्य न करवुं. तेम करवाथी तिर्यंचनो भव प्राप्त थाय छे." १

ते विषे देवसेननी मातानुं दृष्टांत.

इंद्रपुर नामना नगरमां अजितसेन नामे राजा हतो. ते नगरमां देवसेन नामे एक शेठ रहेतो हतो. ते उत्तम श्रावक हतो. ते हंमेशा धर्म कार्य करी सुखे काल निर्गमन करतो हतो. ते नगरमां धनसेन नामे एक उंटने वहन करनारो पुरुष हतो. तेना घरमांथी एक उंटमी निरंतर देवसेन शेठने घेर आव्या करती हती. उष्ट्रवाहक धनसेन लाकमीओना प्रहार करी तेणीने तामन करतो तो पण ए उंटमी तेना घरमां रहेती नहीं देवसेनने घेर आव्या करती हती. ते उंटमीने अति मार पमतो जोइ जेनुं हृदय दयाथी आर्द्र छे, एवा देवसेन शेठे मूल्य आपीने ते उंटमी खरीदी लीधी अने पोताने घेर राखी.

एक वखते धर्मघोष आचार्य ते नगरने विषे पधार्या. ते खबर सांभळी घणा भव्य जीवो तेमने वंदना करवाने गया. तेमनी साथे देवसेन शेठ पण गयो हतो. ते वखते ते गुरुए तेमने नीचे प्रमाणे धर्मोपदेश आप्यो.

"धर्मो जगतः सारः सर्वसुखानां प्रधानहेतुत्वात् ।
तस्योत्पत्तिर्मनुजात्सारं तेनैव मानुष्यम् ॥ १ ॥
अपि लभ्यते सुराज्यं लभ्यंते पुरवराणि रम्याणि ।
नहि लभ्यते विशुद्धः सर्वज्ञोक्तो महाधर्मः ॥ २ ॥

न धम्मकज्जं परमत्थि कज्जं, न पाणि हिंसा परमं अकज्जं।
न प्रेमरागा परमत्थि बंधो, न वोहिलाभा परमत्थि लाभो॥३॥

" सर्वे सुखोनुं मुख्य हेतु होवाथी धर्म आ जगतमां सार रुप छे. ते धर्मनी उत्पत्ति मनुष्यथी थायछे, तेथी मनुष्य पणुंज तेमां सार रुप छे. कदि सारुं राज्य प्राप्त थाय अने मनोहर नगरी मेळवी शकाय पण शुद्ध एवो सर्वज्ञ कथित धर्म मेळवी शकातो नथी. धर्म कार्यना जेवुं बीजुं उत्कृष्ट कार्य नथी. जीव हिंसाना जेवुं बीजुं उत्कृष्ट अकार्य नथी, प्रेमरागना जेवो बीजो उत्कृष्ट बंध नथी अने बोधिलाभना जेवो बीजो उत्कृष्ट लाभ नथी." १–२–३.

आ प्रमाणे धर्मघोष गुरुनो उपदेश सांभळ्या पछी देवसेन शेठे गुरुने आ प्रमाणे पुछयुं,–" स्वामी, कोइ एक उंटडी छे, ते मारा घर शिवाय कोइ बीजे ठेकाणे रहेती नथी, तेनुं शुं कारण हशे ? " गुरु महाराजे कह्युं; " भद्र, ए उंटडी पूर्व भवे तारी माता हती. एक दिवसे तेणीए श्री जिनेश्वरनी आगळ दीवो करी ते दीवावडे पोताना घरना काम कर्या. तेमज प्रभु आगळ करेला धूपना अंगारा वडे घरनो चुलो सळगाव्यो हतो. ते पापने तेणीए आलोव्युं नहीं, अने काळे करी मृत्यु पामी गइ. ते कर्मना योगे ते अहिं उंटडी थइने अवतरी छे. पूर्व भवना स्नेहथी ते तारा घरने छोडती नथी." आ वार्त्ता सांभळी देवसेन शेठ वगेरे भव्य लोको देव संबंधी वस्तुना एवा उपयोगनुं फळ जाणी तेनो त्याग करवाने उजमाळ थया, अने ते गुरु महाराजने नमी पोतपोताने स्थाने चाल्या गया हता.

आ प्रमाणे देवसेननी मातानुं दृष्टांत लक्षमां लइ संसारथी भय पामनारा भव्य जीवोए देवनी वस्तुओवडे पोताना घरनुं कार्य न करवुं. देव उपर चडेलुं थोडुं पण ग्रहण करवुं नहीं. देवनी सुखडनुं तिलक पण न करवुं, अने देवना जळवडे पोताना हाथ पग पण पखाळवा नहीं. देव द्रव्य व्याजे पण लेवुं नहीं. अर्थात् देव संबंधी वस्तु पोताना काममां कदिपण लेवी नहीं.

त्रीजी भाव पूजा.

आ त्रीजी भाव पूजा जिनेश्वरने वंदन स्तवन स्मरण वगेरेथी थाय छे.

प्रथम उचित स्थाने रही चैत्यवंदन करवुं. तेमां शक्रस्तव विगेरे बोलवा. पछी लोकोत्तर एवा तीर्थंकरना छता गुणोने वर्णन करनारा वचनो वडे स्तुति करवी. ते पछी श्री जिनेंद्रने पोताना हृदयकमळमां स्थापी तेमना गुणोनुं स्मरण करवुं, तथा प्रभुनी आगळ नाटकादि करी रावणनी जेम अखंडभाव धारण करवो. जेम लंकाना स्वामी रावणे एक समये अष्टापद पर्वतने विषे भरत राजाए करावेला पोतपोताना वर्ण प्रमाणवाला चोवीश जिनेश्वरोना प्रसादनी अंदर ऋषभादिक प्रभुओनी द्रव्यपूजा करी हती, अने मंदोदरी प्रमुख सोळहजार अंतःपुर साथे नाटक कर्युं हतुं, ते समये तेणे तेनी वीणानी तांत तुटी जतां प्रभुना गुण गानना रंगमां भंग पडवाना भयथी पोताना शरीरमांथी नस खेंचीने सांधी हती. तेवी जिन भक्तिथी ते रावणे तीर्थंकर नाम कर्म उपार्जन कर्युं हतुं. जे रावण महाविदेह क्षेत्रने विषे तीर्थंकर थशे.

ए प्रमाणे वीजा पण भव्य जीवोए जिनपूजाने विषे यत्न करवो. जो तेने माटे भाष्यमां नीचे प्रमाणे लख्युं छे.

" यद्यपि गंधव्वनट्टवाइयलेवणजलारत्तियाइ दीवाइ जं किः तं सव्वं पिउरइ अग्गपूआ " ॥ १ ॥

आ वचनथी जो के नाटकने अग्र पूजामां गणेल छे, तो पण ते ना भाव मिश्रित होवाथी, तेमां भावनी प्रधानता छे, तेथी तेने भाव पूजामां क छे; ते दोष नथी, एम जाणवुं. ए प्रकारे त्रीजी भाव पूजा जाणवी.

पांच प्रकारनी पूजा.

पांच प्रकारनी पूजा आ प्रमाणे कहेवाय छे. १ पुष्प प्रमुखनी पूजा, २ जिनेश्वरनी आज्ञा, ३ देव द्रव्यनुं रक्षण करवुं, ४ उत्सव अने ५ तीर्थ यात्रा आ पांच प्रकारे जिनेश्वरनी भक्ति पण कहेवाय छे ते विषे कह्युं छे के—

" पुष्पाद्यर्चा तदाज्ञा च, तद्द्रव्य परिरक्षणम् ।
उत्सवास्तीर्थयात्रा च, भक्तिः पंचविधाजिने " ॥ १ ॥

" पुष्पादिकथी पूजा करवी, जिनेश्वरनी आज्ञा मानवी, देव द्रव्यनुं

रक्षण करवुं, उत्सवो करवा अने तीर्थ यात्रा करवी—ए पांच प्रकारनी जिनेश्वरनी भक्ति कहेवाय छे. " १

जिनेश्वरनी भक्ति पांच प्रकारे थाय छे. केतकी, चंपक, जाइ, जुइ, शतपत्र वगेरे अनेक प्रकारना उत्तम पुष्पो तथा धूप, दीप अने चंदनादि वडे पूजा करवी ते प्रथम भक्ति कहेवाय छे.

मन, वचन अने कायाए करीने जिनेंद्रनी आज्ञा पाळवी ए बीजी भक्ति कहेवाय छे. जिनेश्वरनी आज्ञा ए सर्व धर्मकृत्यनुं मूल कारण छे, जिनाज्ञा विना सर्व धर्म कार्यो निरर्थक छे, एम जाणी भव्य जीवोए जिनाज्ञा पाळवाने उद्यम करवो. तेने माटे आ प्रमाणे कह्युं छे—

" आणाइतवो, आणाइसंजमो, तह्र यदाणा माणाए ।
आणारहिओ धम्मो पलाल पूलव्व पडिहाइ ॥ १ ॥
भमिओ भवो अणंतो तुहआणाविरहिएहिं जीवेहिं ।
पुणभवियव्वो तेहिं जेहिं नंगीकया आणा ॥ २ ॥
जो न कुणइ तुह आणं सो आणं कुणइ तिहुअणजणस्स ।
जो पुण कुणइ जिणाणं तस्साणा तिहुअणेचेव ॥ ३ ॥"

" जिनेश्वरनी आज्ञा ए तप, ए संयम अने दान मान ए आज्ञाथी सफल छे. ते आज्ञा विनानो धर्म ते शाळना फोतरानी जेम निष्फल छे.

हे जिनेश्वर, तमारी आज्ञाथी रहित एवा जीवो आ अनंत संसारमां भम्या छे. अने जे जीवे तमारी आज्ञा अंगीकार करी नथी, ते जीवनी गति फरीथी पण तेवीज थशे. २

जे जीव तमारी आज्ञा करशे नहीं, ते जीव त्रण जगत्‌ना लोकोनी आज्ञा करे छे एटले तेने त्रण जगत्‌ना जीवोने ताबे रहेवुं पडे छे अने जे जीव तमारी आज्ञा माने छे, तेनी आज्ञाने त्रण जगत्‌ना जीवो माने छे. ३

देव द्रव्यनुं सम्यक् प्रकारे रक्षण करवुं,— वृद्धि करवी, ते त्रीजी भक्ति कहेवाय छे. आ संसारने विषे सर्व प्राणीओ पोताना द्रव्यना रक्षणने माटे

तत्पर रहे छे, परंतु देव द्रव्यनुं रक्षण करवामां — तेने वधारवामां उत्तम जीवोनी ज प्रवृत्ति होय छे. जेओ देव द्रव्यना रक्षणने माटे सारी रीते प्रवर्ते छे, ते प्राणीओ आ लोक तथा परलोकमां सुखनी परंपराने प्राप्त करनारा थाय छे, जेओ देव द्रव्यनुं भक्षणादिक करे छे, तेओ आ उभय लोकने विषे अति घोर दुःखना भाजन बने छे. ते विषे कह्युं छे के,

"जिण पवयण वुड्ढी करं पभावगं नाणदंसण गुणाणं।
भक्खंतो जिणदव्वं अणंत संसारिओ होइ"॥१॥

" जिन प्रवचननी वृद्धि करनारुं अने ज्ञान तथा दर्शन गुणोनुं प्रभावक एवा जिन द्रव्यनुं जे पुरुष भक्षण करे छे, ते अनंत संसारी थाय छे."१

जिण पवयण वुड्ढी करं पभावगं नाणदंसण गुणाणं।
रक्खंतो जिण दव्वं परित्त संसारिओ होइ ॥२॥

" जिन प्रवचननी वृद्धि करनारुं अने ज्ञान तथा दर्शन गुणोनुं प्रभावक एवा जिन द्रव्यनुं जे पुरुष रक्षण करे छे, ते पुरुष भव संख्याना प्रमाणवाळो थाय छे. एटले तेना भवनी संख्या परिमित थाय छे."२

" जिण पवयण वुड्ढी करं पभावगं नाणदंसणगुणाणं।
वड्ढंतो जिणदव्वं तित्थयरत्तं लहइ जीवो ॥३॥

" जिन प्रवचननी वृद्धि करनारुं अने ज्ञान तथा दर्शनना गुणोनुं प्रभावक एवा जिन द्रव्यने वधारनारो जीव तीर्थंकरपणाने प्राप्त करे छे." ३

अहिं वृद्धि एटले नवा नवा द्रव्यनो प्रक्षेप करवा वगेरेथी वधारवुं, एम समजवुं ते पण पंनर प्रकारना कर्मादान रुप कुव्यापार वर्जीने सद्व्यापारना विधि वडे द्रव्यनी वृद्धि करवी. अविधि वडे करेली द्रव्य वृद्धि उलटी दोषरुप थाय. छे. तेने माटे शास्त्रमां कह्युं छे के,

" जिणवर आणा रहियं, वधारंतावि केवि जिणदव्वं।
वुड्डंति भवसमुद्दे मूढा मोहेण अ[illegible] १॥"

" जिनेश्वरनी आज्ञाथी रहितपणे जिनद्रव्यने वधारनारा केटलाएक मूढ थयेला अज्ञानी जीवो पण मोहवसे आ समुद्रने विषे बुडे छे. १ " .

केटलाएक आचार्य कहे छे के, श्रावक शिवायना बीजा पासेथी वधारे ग्रहण करी कालांतरे देवद्रव्यनी वृद्धि करवी उचित छे, कह्युं छे के,

" चेइयदव्वविणासे रिसिघाए पवयणस्सउड्डाहे ।
संजयी चउथ्थभंगे, मूलग्गि बोहिलाभस्स ॥ १ ॥

चैत्यद्रव्यनो विनाश करवाथी, मुनिनो घात करवाथी, शासननी निंदा करवाथी अने संयतिनुं चोथु व्रत भांगवाथी बोधिलाभनो मूलमांथी नाश पामे छे. १ "

चैत्यद्रव्यनुं कोइ भक्षण करतो होय तेनी उपेक्षा करवी, ए चैत्यद्रव्यनो विनाश समजवो. चैत्यद्रव्यना भक्षण तथा रक्षण करवा उपर घणा दृष्टांतो छे, पण आ स्थळे सागर शेठनुं दृष्टांत कहेवामां आवे छे.

सागर शेठनुं दृष्टांत.

साकेतपुर नगरमां सागर नामे एक शेठ रहेतो हतो, ते परम श्रावक हतो. एक वखते ते नगरना श्रावकोए ' आ सारो श्रावक छे. ' एम धारी तेने चैत्यनुं द्रव्य सोंपी दीधुं. अने कह्युं के, " सागर शेठ, आ नवीन चैत्य बने छे, तेनी अंदर सुतार, कमीआ वगेरे जे काम करनारा छे, तेमने तमारे द्रव्य चुकववुं. " सागर शेठे ते द्रव्य ग्रहण कर्युं. लोभने वश थयेला ते शेठे ते मजुरोने रोकडुं द्रव्य न आपतां ते द्रव्यने वदले दाणा, गोळ, घी, तेल, वस्त्र वगेरे पदार्थो आपवा मांड्या, अने ते वस्तुओ खरीद करी तेमां जे नफो मळे ते पोते लेवा मांड्यो. एम करतां रुपीआना अेंशीमा भागरुप जे कांकणी थाय छे, तेवी एकहजार कांकणीनो तेने नफो थयो. आ कृत्य करवाथी ते सागर शेठे अतिघोर दुष्कर्म उपार्जन कर्युं. केटलेक समये ते सागर शेठ ते कर्म आलोव्या विना मृत्यु पामी समुद्रमां जल मानुष रुपे उत्पन्न थयो. जातिवंत रत्नोना ग्रहण करनारा

पुरुषोए समुद्रना जलचर जीवोना उपद्रवने वारनार अने जलनी अंदर उद्योत करनार तेल ग्रहण करवाने माटे ते जल मनुष्यने पकडी वज्रनी घंटीमां नांख्यो. तेमां ते महान् पीडाथी छ मास सुधी छुंदाइ मृत्यु पामी त्रीजी नरके नारकी रुपे उत्पन्न थयो. त्यांथी नीकळीने पांचसो धनुष्यना प्रमाणवालो मोटो मत्स्य थयो. त्यां म्लेच्छ लोकोए सर्व अंगना छेदवारुप मोटी कदर्थना करी तेने मारी नांख्यो. त्यांथी मृत्यु पामी ते चोथी नरके गयो. त्यांथी नीकळी एज प्रमाणे बे वार मत्स्य थयो अने बे वार सातमी नरके उत्पन्न थयो. एटले एक वार मत्स्य अने एकवार सातमी नरके—एवी रीते उत्पन्न थयो. ते पछी पूर्वे करेला हजार कांकणी प्रमाण देव द्रव्यना उपभोगथी अंतर रहित हजार-वार घोडो थयो. ते पछी अनुक्रमे भुंड, गाडर, हरण, सावर, शीयाळ, मार्जार, उंदर, नोळीओ, गीरोळी, घो, सर्प, वींछी, पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, शंख, छीप, जलो, कीडी, कीडा, करमीआ, पतंगीआ, मांखी, भमर, मत्स्य, काचवो, गधेडो, पाडो, ऊंट, खचर, घोडो, अने हाथी वगेरे अनेक जातिमां सहस्र भव भम्यो हतो. ते सर्व तिर्यंचोना भवोमां शस्त्रोना घातनी मोटी पीडाओ सहन करी मरण पाम्यो हतो. एवी रीते थवाथी जेना दुष्कर्म क्षीण थयेला छे, एवो ते सागर-शेठनो जीव वसंतपुर नगरने विषे रहेता कोटिपति वसुदत्त नामना शेठनी स्त्री वसुमतीना उदरने विषे गर्भपणे उत्पन्न थयो. ज्यारे जीव गर्भमां आव्यो त्यारे ए कोटि धनपति वसुदत्त शेठनुं सर्व द्रव्य नाश पामी गयुं. ज्यारे तेनो जन्म थयो त्यारे तेनो पिता वसुदत्त शेठ पोतेज मरण पामी गयो. ज्यारे ते बालक पांच वर्षनो थयो त्यारे तेनी माता वसुमती मरण पामी. त्यारे लोकोए तेनुं नाम निःपुण्यक पाडयुं. ते भिखारीनी वृत्तिथी उछरी मोटो थयो.

आथी ते उद्वेग पामीने देशांतर चाल्यो गयो. फरतो फरतो ताम्रलिप्ती नगरीने विषे रहेता विनयंधर नामना एक शेठने घेर नोकर रह्यो. जे दिवसे ते रह्यो, तेज दिवसे ते शेठनुं घर अग्निथी बळीने भस्म थइ गयुं. एथी शेठे तेने श्वानननी जेम घरनी बाहेर काढी मुक्यो. 'हवे शुं करवुं ?' एम मूढ बनी ते पोताना कर्मने निंदवा लाग्यो. कह्युं छे के,

"कम्मं कुणंति सवसा, तस्सुदयंमिय परव्वसा हुंति।
दुक्खं सहइ सवसो निवसइ परवसो तत्तो" ॥१॥

"जे जीवो स्ववश थइने कर्म करे छे, तेओने परवश थइने कर्म भोगववा पडे छे. पण स्ववशे जे दुःख भोगवे छे, ते परवश पडता नथी." १

ते पछी पोतानुं भाग्य बीजे स्थळे हशे, एवुं धारी ते समुद्रना तीर उपर गयो. अने तेज दिवसे एक वहाणमां बेठो. त्यां रहेला धनावह नामना एक खलासीनी साथे ते सुखे द्वीपांतरमां आवी पोहोच्यो. आ वखते ते हृदयमां फुलाइ गयो अने विचार करवा लाग्यो के, 'हवे मारा भाग्यनो उदय थयो, कारण के, हुं बेठा छतां आ वाहाण भांग्युं नहीं के बुडयुं नहीं. अथवा मारा दुर्दैवनुं कृत्य हमणा मने विसरी गयुं. हवे वळती वखते मने ए दुर्दैवनुं स्मरण न थाओ." आ प्रकारे चिंतवी ते पाछो वळतां वाहाण पर चड्यो. दुर्दैवे जेम दंडथी पात्र भांगे तेम ते वहाणने भांगी नाख्युं. तेना सो कटका थइ गया. ते वखते निःपुण्यक एक पाटीआने वळगी महाकष्टे करी केटलेक दिवसे समुद्रने कांठे आव्यो. त्यां आवेला एक गामना ठाकोरने त्यां सेवक थइने रह्यो. ते ठाकोरना शत्रु भीलोए ते गाम उपर धाड पाडी, अने 'आ ठाकोरनो पुत्र छे' एम धारी निःपुण्यकने बांधी पोतानी पल्लीमां लइ गया. तेज दिवसे बीजी पल्लीना पतिए आवी ते पल्लीनो नाश कर्यो. आथी पेला भीलोए 'आ कोइ अभागीओ छे' एवुं मानी निःपुण्यकने पोतानी पल्लीमांथी बाहेर काढी मुक्यो.

एवी रीते ते निःपुण्यकने उपद्रवोनो हेतु होवाथी बीजा हजारो ठेकाणेथी काढी मुकवामां आव्यो हतो अने तेथी तेणे अनेक जातना दुःखो भोगव्या हता.

एक वखते ते वांछितने आपनारा एक यक्षना मंदिरमां आवी चड्यो. त्यां तेणे पोताना दुःख निवेदन करवा पूर्वक एकाग्रताथी ते यक्षनी आराधना करी. एकवीश दिवस उपवास करतां ते यक्ष तेने तुष्यमान थयो. यक्षे प्रत्यक्ष दर्शन आपी तेने कह्युं, "जद्र, अहिं दररोज सायंकाले सोनाना हजार पींछावालो एक मोटो मोर आवी मारी पासे नृत्य करशे, ते नृत्य थइ रह्या पछी तेना पींछामांथी दररोज एक एक सोनानुं पींछुं पडशे, ते तारे ग्रहण करवुं." यक्षना आवां वचन सांजळी ते निःपुण्यक खुशी थयो. पछी त्यां रही ते प्रतिदिन ते मोरना सुवर्णना पींछाने ग्रहण करवा लाग्यो. अनुक्रमे तेणे नवसो पींछा एकठा कर्या. हवे ते मोरनी पासे सो पींछा बाकी रह्या. दुर्दैवथी प्रेराएला ते निःपुण्यके चिंतव्युं के, 'हवे एक एक पींछुं लेवाने माटे आ अटवीमां केटलोक वखत रहेवुं, माटे एक साथे आ बाकी रहेला सो पींछा मुठीमां ग्रहण करी लउं." आवुं चिंतवी ते मोरना बधा पींछा मुष्टिवडे ग्रहण करवा गयो, तेवामां ते मोर काकीडानुं रुप लइ उडी गयो अने निःपुण्यके जे पूर्वे नवसो पींछा ग्रहण करेला हता, ते पण तेनी साथे नाशी गया. कह्युं छे के,

" दैवमुल्लंघ्य यत्कार्यं क्रियते फलवन्न तत् ।
सरोऽम्भश्चातकेनात्तं गलरंध्रेण गच्छति" ॥ १ ॥

"जे काम दैव-कर्मने ओलंगीने करवामां आवे, ते सफल थतुं नथी. चातक (बपैयो) सरोवरनुं जल मेळवे छे, पण ते तेना गळाना छिद्रमांथी नीकळी जाय छे." १

ते निःपुण्यक 'मने धिक्कार छे. में फोगटनी उतावळ करी.' एम चिंतवतो ते वनमां आमतेम जमवा लाग्यो. तेवामां एक ज्ञानी मुनि तेना जोवामां आव्या. तेणे ते मुनिने नमस्कार करी पोतानो पूर्वजव पुछयो. पछी ते मुनिए तेना पूर्वजवनुं स्वरूप यथास्थित कही संजळाव्युं. ते सांजळी तेणे पूर्वजवे देवद्रव्य वडे करेल आजीविकाना पापनी आलोयणा मागी. त्यारे मुनिए कह्युं के, प्रथम तो देवद्रव्य अधिक अधिक आपवुं अने ते आप्या पछी तेनुं सम्यक् प्रकारे रक्षण अने वृद्धि प्रमुख करवुं-एम करवुं, ते लागेला दुष्कर्मनो प्रतिकार (उपाय) छे, अने तेम करवाथीज सर्व प्रकारे जोगऋद्धि तथा सुखनो लाज प्राप्त थाय छे."

अने भरत ऐरवतमां एक एकनो सद्भाव होवाथी चोत्रीश विजयो थाय अने तेमां पांच भरत, पांच ऐरवत अने महाविदेहना एकसो साठ एम कुल मळी एकसो सीत्तेर विजय थाय छे. ते प्रत्येकमां एक एक दीर्घ वैताढय पर्वत छे ते दरेक पर्वत उपर एक एक चैत्य होवाथी एकसोने सीत्तेर चैत्य छे. जंबुद्वीपमां छ अने धातकीखंड तथा पुष्करार्द्धने विषे बार बार थइने त्रीश कुलगिरि पर्वतोछे, तेमनी उपर त्रीश चैत्यो छे. धातकीखंड अने पुष्करार्द्ध बंनेमां बे बे इक्षुकार पर्वतोमां चार चैत्यो छे. अढीद्वीपनी मर्यादा करनार समयक्षेत्ररुप मानुषोत्तर पर्वतने विषे चार दिशाओमां चार चैत्यो छे. तथा आठमा नंदीश्वर द्वीपमां बावन चैत्यो छे ते आ प्रमाणे—पूर्व दिशाए आवेला नंदीश्वरना मुख्य भागे अंजनना जेवा वर्णवाळो अंजनगिरि छे. तेनी चार दिशाए चार वाव्यो छे, ते वाव्योना मध्यभागे श्वेतवर्णना चार दधिमुख पर्वतो छे. चार विदिशामां बबेनो सद्भाव होवाथी रक्तवर्णना आठ रतिकर पर्वतो छे. ते आठ, चार अने एक एम मळीने पूर्व दिशाए तेर पर्वतो थया, ते तेर पर्वतो उपर तेर चैत्यो छे. तेवी रीते पश्चिम, दक्षिण अने उत्तर—ए त्रणे दिशाए कहेला नाम प्रमाणे तेर तेर पर्वतो छे, एम चारे दिशाओ मळी बावन पर्वतो थया. ते दरेक पर्वत उपर एकेक चैत्य होवाथी बावन चैत्यो थाय छे. अगीआरमा कुंडलद्वीपने विषे चार दिशाओमां चार अने तेरमा रुचकद्वीपने विषे चार दिशाओमां चार चैत्यो रहेला छे; एम सर्वनी संकलनाए करी तिरछा लोकमां चारसोने त्रेशठ चैत्यो थायछे; ते चैत्योनी अंदर पचास हजारने चार जिनबिंबो छे; अहीं पण दरेक चैत्यने विषे एकसो आठ बिंबो रहेला छे.

हवे ऊर्ध्व लोकने विषे सुधर्मा देवलोकथी आरंभीने पांच अनुत्तर विमान सुधी चोराशी लाख, सत्ताणु हजार अने त्रेवीश विमान छे. ते दरेक विमाने एक चैत्यनो सद्भाव होवाथी चैत्यो पण तेटलाज छे. ते सर्व चैत्योमां मळी एकाणुं क्रोड, छोंतेर लाख, अठ्योतेर हजार, चारसोने चोराशी जिनबिंबो छे. कारण के दरेक चैत्ये एकसो आठ जिनबिंबोना सद्भाव होवाथी तेमनी संख्या तेटलीज थाय छे.

ए प्रमाणे त्रण लोकने विषे रहेला शाश्वत जैन चैत्योनी अने जिनबिं-

एक वखते ते वांछितने आपनारा एक यक्षना मंदिरमां आवी चड्यो.
[तेणे पोताना दुःख निवेदन करवा पूर्वक एकाग्रताथी ते यक्षनी आराधना
]. एकवीश दिवस उपवास करतां ते यक्ष तेने तुष्यमान थयो. यक्षे प्रत्यक्ष
[न आपी तेने कह्युं, " नद्र, अहिं दररोज सायंकाले सोनाना हजार पींछा-
ओ एक मोटो मोर आवी मारी पासे नृत्य करशे, ते नृत्य थइ रह्या पछी तेना
छामांथी दररोज एक एक सोनानुं पींछुं पडशे, ते तारे ग्रहण करवुं. " यक्षना
वां वचन सांजळी ते निःपुण्यक खुशी थयो. पछी त्यां रही ते प्रतिदिन ते
रना सुवर्णना पींछाने ग्रहण करवा लाग्यो. अनुक्रमे तेणे नवसो पींछा एकठा
र्यां. हवे ते मोरनी पासे सो पींछा बाकी रह्या. दुर्दैवथी प्रेराएला ते निःपुण्यके
तव्युं के, ' हवे एक एक पींछुं लेवाने माटे आ अटवीमां केटलोक वखत रहेवुं,
टे एक साथे आ बाकी रहेला सो पींछा मुठीमां ग्रहण करी लउं. " आवुं
तवी ते मोरना वधा पींछा मुष्टिवडे ग्रहण करवा गयो, तेवामां ते मोर काकी-
नुं रुप लइ उमी गयो अने निःपुण्यके जे पूर्वे नवसो पींछा ग्रहण करेला
ता, ते पण तेनी साथे नाशी गया. कह्युं छे के,

" दैवमुल्लंघ्य यत्कार्यं क्रियते फलवन्न तत् ।
सरोऽम्भश्चातकेनात्तं गलरंध्रेण गच्छति" ॥ १ ॥

" जे काम दैव–कर्मने ओळंगीने करवामां आवे, ते सफल थतुं नथी.
ातक (बपैयो) सरोवरनुं जल्ल मेळवे छे, पण ते तेना गळाना छिद्रमांथी नी-
ळी जाय छे. " १

ते निःपुण्यक ' मने धिक्कार छे. में फोगटनी उतावळ करी. ' एम चिंत-
तो ते वनमां आमतेम जमवा लाग्यो. तेवामां एक ज्ञानी मुनि तेना जोवामां
आव्या. तेणे ते मुनिने नमस्कार करी पोतानो पूर्वजव पुछयो. पछी ते मुनिए
तेना पूर्वजवनुं स्वरूप यथास्थित कही संजळाव्युं. ते सांजळी तेणे पूर्वजवे देव-
द्रव्य वडे करेल आजीविकाना पापनी आलोयणा मागी. त्यारे मुनिए कह्युं के,
प्रथम तो देवद्रव्य अधिक अधिक आपवुं अने ते आप्या पछी तेनुं सम्यक् प्रकारे
रक्षण अने वृद्धि प्रमुख करवुं–एम करवुं, ते लागेला दुष्कर्मनो प्रतिकार (उपाय)
छे, अने तेम करवाथीज सर्व प्रकारे जोगऋद्धि तथा सुखनो लाभ प्राप्त थाय छे."

अने भरत ऐरवतमां एक एकनो सद्भाव होवाथी चोत्रीश विजयो थाय अने तेमां पांच भरत, पांच ऐरवत अने महाविदेहना एकसो साठ एम कुल मळी एकसो सीतेर विजय थाय छे. ते प्रत्येकमां एक एक दीर्घ वैताढय पर्वत छे ते दरेक पर्वत उपर एक एक चैत्य होवाथी एकसोने सीत्तेर चैत्य छे. जंबुद्वीपमां छ अने धातकीखंड तथा पुष्करार्द्धने विषे बार बार थइने त्रीश कुलगिरि पर्वतोछे, तेमनी उपर त्रीश चैत्यो छे. धातकीखंड अने पुष्करार्द्ध बंनेमां बे बे इक्षुकार पर्वतोमां चार चैत्यो छे. अढीद्वीपनी मर्यादा करनार समयक्षेत्ररुप मानुषोत्तर पर्वतने विषे चार दिशाओमां चार चैत्यो छे. तथा आठमा नंदीश्वर द्वीपमां बावन चैत्यो छे ते आ प्रमाणे—पूर्व दिशाए आवेला नंदीश्वरना मध्य भागे अंजनना जेवा वर्णवाळा अंजनगिरि छे. तेनी चार दिशाए चार वाव्यो छे, ते वाव्योना मध्यभागे श्वेतवर्णना चार दधिमुख पर्वतो छे. चार विदिशामां बबेनो सद्भाव होवाथी रक्तवर्णना आठ रतिकर पर्वतो छे. ते आठ, चार अने एक एम मळीने पूर्व दिशाए तेर पर्वतो थया, ते तेर पर्वतो उपर तेर चैत्यो छे. तेवी रीते पश्चिम, दक्षिण अने उत्तर—ए त्रणे दिशाए कहेला नाम प्रमाणे तेर तेर पर्वतो छे, एम चारे दिशाओ मळी बावन पर्वतो थया. ते दरेक पर्वत उपर एकेक चैत्य होवाथी बावन चैत्यो थाय छे. अगीआरमा कुंडलद्वीपने विषे चार दिशाओमां चार अने तेरमा रुचकद्वीपने विषे चार दिशाओमां चार चैत्यो रहेला छे; एम सर्वनी संकलनाए करी तिरछा लोकमां चारसोने ऐशठ चैत्यो थायछे; ते चैत्योनी अंदर पचास हजारने चार जिनबिंबो छे; अहीं पण दरेक चैत्यने विषे एकसो आठ बिंबो रहेला छे.

हवे ऊर्ध्व लोकने विषे सुधर्मा देवलोकथी आरंभीने पांच अनुत्तर विमान सुधी चोराशी लाख, सत्ताणु हजार अने त्रेवीश विमान छे. ते दरेक विमाने एक चैत्यनो सद्भाव होवाथी चैत्यो पण तेटलाज छे. ते सर्व चैत्योमां मळी एकाणुं क्रोड, छोंतेर लाख, अठ्योतेर हजार, चारसोने चोराशी जिनबिंबो छे. कारण के दरेक चैत्ये एकसो आठ जिनबिंबोना सद्भाव होवाथी तेमनी संख्या तेटलीज थाय छे.

ए प्रमाणे त्रण लोकने विषे रहेला शाश्वत जैन चैत्योनी अने जिनबिं-

" सत्ताणवइ सहस्सा लक्खाछपन्न अट्ठकोडिओ ।
चउसय छायासिया तिलुके चेइए वंदे ॥ १ ॥
वंदे नवकोडिसयं पणवीसं कोडितेवन्ना ।
अट्ठावीस सहस्सा चउसय अट्ठासियापडिमा " ॥ २ ॥

आठ क्रोड,छप्पनलाख, सत्ताणुहजार, चारसोने छयाशी, एटला जिन चैत्य त्रण लोकने विषे छे तेमने हुं नमस्कार करुं छुं. तथा नवसो पचवीश क्रोड त्रेपनलाख, अठयावीश हजार, चारसो अठ्यासी एटला जिनबिंब त्रणलोकने विषे छे, तेमने हुं नमस्कार करुंछुं.

हवे त्रण भुवनने विषे कहेला प्रमाणनी शाश्वत जिनभुवन तथा जिनबिंबोनी जे संख्या छे, ते कहे छे. तेमां अधोलोक पाताळने विषे दक्षिण अने उत्तर दिशाना विभागे रहेला भुवनपतिना दश निकायने विषे सर्व संख्या सातकोटी अने बोतेरलाख, भुवनो छे. ते दरेक भुवनने विषे एक एक चैत्यनो सद्भाव होइने शाश्वत जिनचैत्यो पण तेटलाज छे ते चैत्योने विषे रहेला जिनबिंबोनी सर्व संख्या आठसोने तेत्रीशकोटी, अने छोंतेर लाखनी छे, ते दरेक चैत्यने विषे एकसोने आठ जिनप्रतिमानो सद्भाव होइने उपर प्रमाणे जिनबिंबो छे.

हवे तीरछा लोकने विषे अने पांच मेरुने विषे पंचाशी चैत्यो केवी रीते छे ? ते कहे छे. ते प्रत्येक मेरुमां चार चार वन छे. ते दरेक वनने विषे चारे दिशाए चार चार चैत्यो छे. ते दरेक मेरुने एक एक चूलिका छे, ते उपर एकेक चैत्य एम एकएक मेरुने विषे सत्तर सत्तर चैत्य छे, एटले ते पांचे मेरुनां सर्व मळीने पंचाशी चैत्यो थाय छे. तथा ते दरेक मेरुनी विदिशामां चार चार गजदंता पर्वत मळी वीश गजदंता पर्वतो छे. अने तेनी उपर वीश चैत्यो तथा पांच पांच देवकुरु अने उत्तरकुरुने विषे आवेला जंबू शाल्मलि प्रमुख दश वृक्षोनी अंदर दश चैत्यो छे. प्रत्येक महाविदेहने विषे शोळ शोळनो सद्भाव होवाथी एंशी वखारा

मुनिनां आवां वचन सांजळी तेणे एवो नियम ग्रहण कर्यो के " ज्यां सुधी पूर्वे ग्रहण करेला देवद्रव्यथी हजार गणुं द्रव्य न अपाय त्यांसुधी आहार, वस्त्रादिकना निर्वाहथी जरा पण अधिक द्रव्य मारे ग्रहण करवुं नहीं. " आवो नियम ग्रहण करी तेणे श्रावकनो धर्म अंगीकार कर्यो. ते पछी ते निःपुण्यक जे जे वेपार करवा लाग्यो, तेमां ते घणुं द्रव्य कमावा लाग्यो. ते पोताना आहार वस्त्रना निर्वाह जेटलुं राखी बाकीनुं द्रव्य देव कार्यमां आपतो. एम करतां थोडा दिवसमां तेणे देव निमित्ते दश लाख कांकणी द्रव्य आपी दीधुं. तेटलुं द्रव्य आपी ते देवनो अनृणी थयो. पछी घणुं द्रव्य उपार्जन करी ते पोताना नगरमां आव्यो. त्यां ते सर्व धनाढ्य शेठोमां महान् शेठ गणायो. पोताना अने परना करावेला सर्व चैत्योने विषे पोतानी शक्ति प्रमाणे अखंड जक्ति पूर्वक निरंतर पूजा प्रजावना करवा लाग्यो. अने सम्यक् प्रकारे देव द्रव्यनुं रक्षण अने योग्यता पूर्वक देव द्रव्यनी वृद्धि वगेरे करी तेणे अरिहंत जक्तिरूप प्रथम स्थानक आराध्युं अने तेथी करीने तेणे जिननाम कर्म–तीर्थंकर नाम कर्म उपार्जन कर्युं. ज्यारे अवसर प्राप्त थयो, एटले तेणे गीतार्थ गुरुनी पासे दीक्षा ग्रहण करी. ते पछी सिद्धांतनो अभ्यास करी ते गीतार्थ थयो. अने तेणे धर्मदेशनाथी घणां जव्य जीवोने प्रतिबोध कर्यो. छेवटे तेणे अनशन लइ काल करी सर्वार्थ सिद्धि विमानने विषे देव रुपे उत्पन्न थयो. त्यां देवतानी समृद्धि जोगवी महा विदेह क्षेत्रने विषे तीर्थंकरनी संपत्ति जोगवी ते मोक्षपदने प्राप्त थयो. ए प्रकारे देवद्रव्यना अधिकारमां सागर शेठनी कथा कहेवाय छे. एवी रीते जिनेश्वरनी त्रीजी जक्ति कहेवामां आवी.

चोथी जक्ति.

जे निश्चे करी जव्यजीवो अष्टाह्नउत्सव, स्नात्र, चैत्यबिंबनी प्रतिष्ठा, वगेरे उत्सवो करे तथा श्रीपर्यूषण पर्वने विषे कल्पसूत्रनी वांचना प्रमुख शासननी प्रजावना करे, ते जिनशासननी उन्नतिना हेतु होवाथी ते पण जिनपूजाज कहेवाय छे. कह्युं छे के.—

" प्रकारेणाधिकां मन्ये जावनातः प्रजावनाम् ।
जावना स्वस्य लाजाय स्वान्ययोस्तु प्रजावना ॥ १ ॥

" कोइ प्रकारे नावनाथी प्रनावना अधिक छे एम हुं मानुं छुं, कारण के, नावना पोतानाज लानने माटे थाय छे अने प्रनावना पोताना अने बीजाना बंनेना लानने माटे थाय छे. १ "

पांचमी नक्ति.

तीर्थयात्रा करवी ए जिनेश्वरनी पांचमी नक्ति कहेवाय छे. शत्रुंजय, गिरनार, अर्बुदाचल, अष्टापद, संमेतशिखर, आदि सर्व तीर्थोने विषे जिनवंदन करवा अने ते क्षेत्रनी स्पर्शनादिक करवाने माटे जवुं, ते तीर्थयात्रा कहेवाय छे ; ए तीर्थयात्रा पण जिननक्तिज गणाय छे. ते तीर्थोमां शत्रुंजय तीर्थ सर्व तीर्थोनो राजा छे अने त्रण लोकमां तेना जेवुं बीजुं तीर्थ नथी. कह्युं छे के.

" नमस्कारसमो मंत्रः शत्रुंजयसमो गिरिः ।
वीतरागसमो देवो न नूतो न नविष्यति ॥ १ ॥"

" नवकारना जेवो मंत्र, शत्रुंजयना जेवो गिरि अने वीतरागना जेवो देव थया नथी, अने थशे नहीं. १ "

श्री शत्रुंजय तीर्थना स्पर्शवा प्रमुखे करी महापापी प्राणीओ पण स्वर्गादिकना सुखने नोगवनारा थाय छे. अने जे पुण्यवंत प्राणीओ छे, ते अल्पकाळमां सिद्धिपदने पामे छे. तेने माटे कह्युं छे के.—

" कृत्वा पापसहस्राणि हत्वाजंतुशतानिच ।
इदं तीर्थं समासाद्य तिर्यंचोऽपि दिवंगताः ॥ १ ॥
एकैकस्मिन् पदे दत्ते शत्रुंजयगिरिं प्रति ।
नवकोटि सहस्रेन्यः पातकेन्यो विमुच्यते ॥ २ ॥"

" हजारो पाप करीने अने हजारो प्राणीओने मारीने तिर्यंचो पण आ शत्रुंजय तीर्थने प्राप्त करी स्वर्गे गयेला छे. १

शत्रुंजय पर्वत प्रत्ये एक एक पगलुं नरवाथी प्राणी क्रोमहजार नवना पापमांथी मुकाय छे. १—२

तेम वळी कह्युं छे के.—

'छठेणंभत्तेणं अपाणएणं व सत्तजत्ताउ
जो कुणइ सत्तुंजे सो तइय भवे लहइ सिद्धिं'

छठ भक्तवडे पाणीथी रहित सातयात्रा शत्रुंजय पर्वत उपर करनार प्राणी त्रीजे भवे मुक्ति पामे छे. वळी आ प्रकारे जे मनुष्य दुर्लभ मनुष्यभव पामीने सिद्धाचळ तीर्थनी यात्रा करीने पोतानो जन्म सफळ करे छे तेने धन्य छे ! जे प्राणी तथाप्रकारनी योग्य सामग्रीना अभावथी पोते यात्रा करवानी शक्ति रहीत छे तोपण अन्य यात्रिकोनी अनुमोदना करे छे तेमने पण धन्यवाद छे. जे प्राणीओ श्री सिद्धाचळने पोतानी दृष्टिए अवलोकन करे छे अने पोताना शरीरना अंगोपांगोवडे स्पर्शे छे तेमज ऋषभादि देवोनुं अर्चन करे छे तेओ पण अनेकशः स्तुतिपात्र छे. परमति यात्रा संबंधे उपदेश आपतां हीचे मुजब कहे छे.

वपुः पवित्रीकुरुतीर्थयात्रया । चित्तंपवित्रीकुरु धर्मवांछया ॥
वित्तं पवित्रीकुरु पात्र दानतः । कुलं पवित्रीकुरु सच्चारित्रतः॥

अर्थ—तीर्थयात्रा वडे शरीरने पवित्र करो, धर्म इच्छा वडे चित्तने पवित्र करो, द्रव्यने सुपात्र दानवडे पवित्र करो अने उत्तम आचारना पालनवडे कुलने पावन करो. आ प्रकारे उपदेश आप्या करे तथा मुक्तिनगर प्रति प्रयाण करवा इच्छता लोकोने सुखे करीने आरोहण करवाने माटे उत्तम पगथीयारुप विमलाचल तीर्थने हुं क्यारे नेत्रयुगल वडे नीरखीश तेमज स्वशरीर वडे क्यारे हुं ते तीर्थाधिराजने स्पर्शवा भाग्यशाळी थइश. आ मारो जन्म तीर्थना दर्शनादि विना फोकट जाय छे ए रीते स्वचित्तमां भावना भावे छे तेवा प्राणीओ पोताना स्थानके रहेला छतां पण तीर्थ यात्राना महा फळने पामेछे. जेओ छती सामग्रीए यात्रा करता नथी तेओ दीर्घसंसारी जाणवा. श्री शत्रुंजय गिरि उपर थोडुं पण करेलुं पुण्य महा फळ दायक थाय छे, कह्युं छे.

" नवि तं सुवन्नभूमिभूसण दाणेण अन्नतित्थेसु ।

जं पावइ पुण्णफलं पूयाएह्वणेण सत्तुंजे ॥ १ ॥ ”

“ अन्य तीर्थोमां सुवर्ण, भूमि अने आभूषणोना दान करवाथी जे पुण्य थतुं नथी, ते पुण्य शत्रुंजय तीर्थ उपर पूजा अने न्हावण करवाथी थाय छे १ ”

वळी तीर्थ यात्रा करनारा प्राणीओए यात्रा वखते भूमि संथारो, शीलव्रत, अने एकाहार प्रमुख छ वानां करवाना छे. अने तेम करीने रहेवाथी त्यां तीर्थयात्रानो प्रयास विशेष इष्टफळनेआपनारो थाय छे. ते छ वानांने 'छरी' करीने कहे छे. छ रीकार नीचे प्रमाणे दर्शाव्या छे.

“ एकाहारी भूमिसंस्तारकारी
पद्भ्यां चारी शुद्धसम्यक्त्व धारी ।
यात्राकाले यः सचित्तापहारी
पुण्यात्मा स्याद् ब्रह्मचारी विवेकी ॥ १ ॥ ”

“ यात्रा वखते जे विवेकी पुरुष एकाहार—एक वखत आहार करनार, भूमि संस्तारकारी—भूमि उपर संथारो करनार, पगवडे चारी—चालनार, सचित्तापहारी—सचित्त वस्तुनो त्याग करनार अने ब्रह्मचारी—ब्रह्मचर्य पाळनार रहे छे ते पुण्यात्मा कहेवाय छे. १ ”

वळी कह्युं छे के,

“ श्रीतीर्थपांथरजसा विरजी भवंति
तीर्थेषु वंभ्रमणतो न भवे भ्रमंति ।
द्रव्यव्ययादिह नराः स्थिरसंपदःस्युः
पूज्या भवंति जगदीशमथार्चयंतः ॥ १ ॥ ”

“ भव्य प्राणीओ तीर्थना मार्गना रजवडे विरज पापरहित थाय छे तीर्थोमां भ्रमण करनाराओ आ संसारमां भ्रमण करता नथी. जेओ तीर्थक्षेत्रमां द्रव्यनो व्यय करे छे, तेओ स्थिरसंपत्तिवाळा थाय छे अने त्यां जगत्पतिने पूजनाराओ बीजाओने पूजवा योग्य थाय छे. ” १

आ प्रमाणे तीर्थ सेवानुं महाफल जाणीने भव्य जीवोए श्री शत्रुंजयादि महातीर्थनी यात्राने विषे आदर सहित थवुं. अने तेमां पोतानुं द्रव्य सफल करवुं वळी तीर्थनी यात्रा करवाने इच्छता एवा बीजा यात्रालुओने शंबळ (भातु) आपवा वगेरेथी सहाय करवी. तीर्थ यात्रा करनारे धनशेठनी जेम पोतानी शक्ति प्रमाणे तीर्थनी उन्नति करवी, लघुता करवी नहीं.

ते विषे धनशेठनी कथा.

हस्तिनागपुर नगरने विषे अनेक कोटी द्रव्यनो स्वामी धनशेठ नामे एक परम श्रावक हतो. एक दिवसे रात्रे धर्म जागरण करतां तेणे पोताना मनमां आ प्रमाणे चिंतव्युं. " हुं निश्चे पूर्व जन्मना पुण्यने लीधे आ मनुष्य जन्म पाम्यो छुं. ते साथे आर्यक्षेत्र, उत्तम कुळ, रुप अने लक्ष्मीना समूहने प्राप्त थयो छुं. तेम वळी जेम मोटा पुण्यना उदयथी रंक पुरुष निधानने प्राप्त करे, तेम हुं श्री जिनेश्वरे कहेला धर्मने पाम्यो छुं. पण ज्यां सुधी श्री विमलाचल अने रैवताचल आदि तीर्थमां रहेला श्री आदीश्वर प्रभु तथा नेमिनाथ प्रभु वगेरे तीर्थंकरोना बिंबना दर्शन, वंदन, अने पूजनादि सत्कृत्यो में कर्या नथी, त्यां सुधी आ सर्व समृद्धि प्राप्त थवाथी शुं ? तेमज आ वैभवथी परिपूर्ण एवा कुटुंब, गृह वगेरे प्राप्त थया, ते शा कामना ? "

आ प्रमाणे चिंतवी प्रभात काळे राजानी आज्ञा लइ तेणे हस्तिनागपुरनगरमां उद्घोषणा करी मोटो संघ एकठो कर्यो. पछी शुभ दिवसे ते मोटा संघनी साथे हस्तिनागपुरनी बाहेर नीकळ्यो. अने तेणे शासनना अधिपति श्री वीर प्रभुना चैत्यने साथे लीधुं. मार्गमां ठेकाणे ठेकाणे मोटी समृद्धिथी चैत्योने पूजतो, जीर्ण चैत्योनो उद्धार करतो, मुनिराजना चरण कमळने वंदन करतो, स्वामिवात्सल्य करतो अने करुणाथी दीन जनोने निरंतर वांछित दान आपतो ते धन शेठ अनुक्रमे शत्रुंजय पर्वत पासे आवी पोहोच्यो. ते गिरिपर आरूढ थयो अने त्यां आदीश्वर प्रभुने मोटी समृद्धिथी नमन पूजन करी अठ्ठाइ उत्सव आदर्यो. ते सिद्धक्षेत्रने स्पर्शी, वंदन, पूजन अने भेट वगेरे करी तेणे पोताना जन्मने सफळ कर्यो.

ते पछी ते धनशेठ गिरनार पर्वत उपर आव्यो. त्यां मुख्य चैत्यने विषे

यादव कुळना मंडनरूप अने सर्व ब्रह्मचारीओना समूहमां मुगट समान एवा श्री नेमिनाथ प्रभुने त्रण प्रदक्षिणा करी नमस्कार कर्यो. ते पछी सुगंधी जळवडे प्रभुने न्हावण करावी उत्तम बावना चंदननुं विलेपन करी सारा उत्तम वस्त्रोथी अने मणि सुवर्ण तथा रत्नो आभरणोथी श्री नेमिप्रभुना बिंबने भूषित कर्युं. ते पछी प्रभुना कंठमां पंचवर्णी पुष्पमाळा आरोपित करी, तेमनी समीपे अष्टमंगळनुं आलेखन करी श्रीफळने ढोकित कर्युं. पछी धूपनो उत्क्षेप, दीपक, छत्र चामर अने चंदरवा प्रमुख स्थापी मोटी ध्वजा चडावी. इत्यादि अनेक प्रकारनी पूजा करी भक्तिथी उल्लसित एवा रोमांचने धारण करतो ते धनशेठ जेवामां श्री नेमिप्रभुना मुखकमळने अवलोकतो हतो, तेवामां महाराष्ट्र देशना मध्य भागे आवेला मलयपुर नगरथी श्वेतांबर साधुओनो द्वेषी, दिगंबर मतनो भक्त वरुण नामनो एक क्रोडपति शेठ पोताना संघने लइ त्यां आवी चड्यो. अहीं धनशेठे करेली प्रभु पूजाने देखी ते वरुण शेठना हृदयमां द्वेष उत्पन्न थइ आव्यो ते रोषातुर थइने आ प्रमाणे धनशेठ प्रत्ये बोल्यो. “ तत्त्वथी विमुख एवा श्वेतांबर श्रावकोए निर्ग्रंथोमां श्रेष्ट एवा आ भगवानने सग्रंथ केम कर्या ? परिग्रहवाळा केम बनाव्या? आ प्रमाणे कही ते मिथ्याबुद्धिवाळा वरुण शेठे तरतज उतावळा थइ प्रभु उपर चडावेला, वस्त्र, आभूषण, पुष्पमाळा वगेरने बिंब उपरथी दूर कराव्या. अने हाथी पगलांना जळवडे ते जिनबिंबनी पखाळ करावी आ वखते जिनेश्वर देवनी अविधि–आशातना करनारा ते वरुण शेठनी साथे धनशेठने घणो वचनविवाद थयो. ते पछी ते बंने संघपतिओ परस्पर आमर्ष राखी पोतपोताना परिवार साथे तत्काळ पर्वत उपरथी नीचे उतर्या अने विक्रमराजाना गिरिनगर नामना नगरनी समीपे आवी पोहोच्या त्यां ते बंनेनी वच्चे पोतपोतानी पर्षदा करी पोतपोताना तीर्थनी स्थापना करवा महान् वादविवाद थयो. राजा विक्रमे आ तेमनो वृत्तांत लोकोना मुखथी सांभळ्यो एटले पोते राजा तेमनी पासे आव्यो अने तेमने वादविवाद करतां अटकावी कह्युं के, “ हुं तमारो वाद काले सवारे दूर करीश. हमणां कोइए कदाग्रह करवो नहीं. ” आ प्रमाणे कही राजा विक्रम पोताने स्थाने चाल्यो गयो. राजा गया पछी तेओ बंने संघपतिओ पण पोताना स्थाने गया. आ वखते धनशेठ ‘ प्रभाते कोनुं तीर्थ स्थापाशे. ’ एवी चिंता करवा लाग्यो अने तेथी तने निद्रा आवी नहीं. तेणे पोताना चित्तने शासन देवीना

ध्यानमां लगाव्युं. तेवामां शासन देवी प्रत्यक्ष प्रगट थइ नीचे प्रमाणे बोली—

" वरसिठजिठ सुपठइसमयंसुठगाजयनठमामणागऽवि-
नियमणे कुणसु डुक्कामिणं " ॥ १ ॥

" प्रधान अने मोटामां मोटा धर्मने तथा आगमने तुं पाम्यो छे, एटले हवे तारो जय नष्ट थयेलो समजजे. तेथी मनमां जरा पण दुःख धरवुं नहीं. अने मनने निश्चित राखवुं. " १

" जं चिइवंदणमज्झगाहं उज्जिंतसेलइच्चाइं पखिविय नि-
वसहाए जयं धुवं तुज्झ दाहामि" ॥ २ ॥

" जे चैत्यवंदनना मध्यमां " उज्जिंतसेलसिहरे " ए गाथा छे, ते प्रक्षिप्त गाथा छे; एम तेना कहेवाथी तने राजा विक्रमनी सभामां अवश्य जयलक्ष्मी अपावीश. " २

आ वात सांभळी धन शेठ हर्षित थइ गयो. पछी तेणे रात्रिने सुखेथी निर्गमन करी. प्रभात थतां राजा विक्रमे ते बंने संघपतिओने पोतानी सभामां परिवार सहित बोलाव्या. तेओ राज सभामां आव्या अने राजानी आज्ञाथी ते बंने पक्षकारोए पोतपोतानो वृत्तांत जणाव्यो. ते सांभळी राजा विक्रम बोल्यो " संघपतिओ, तमो बंने जैन आगमना ज्ञाता छो; जैन धर्मना श्रद्धालु छो अने जिनशासनना प्रभावक करवाने विषे प्रवीण देखाओ छो, ते छतां तमोए आवुं अघटित कार्य केम आरंभ्युं छे ? प्रथम धन शेठे नम्रताथी कह्युं, " राजेंद्र, अमोए अमारा तीर्थमां वस्त्र–आभूषणोए करी जिनपूजा करीए छीए, तेनो आ दुष्ट बुद्धिवाळो शेठ शामाटे विनाश करे छे ? त्यारे वरुण शेठे जणाव्युं, "स्वामी, अमो अमारा तीर्थने विषे कोइने अविधि–आशातना नहीं करवा दइए. आ प्रमाणे बंनेना वचन सांभळी राजाए संशय लावीने कह्युं, " आ तमारा बंनेमां कोनुं तीर्थ हशे, ए शी रीते जाणवामां आवे ?" धनशेठे कह्युं, " स्वामी, आ तीर्थ अमारुं ज छे कारणके, अमारा चैत्यवंदननी अंदर ' उज्जित सेलसिहरे ' इत्यादि गाथा लांबा वखतथी चाली आवे छे. जो आपने तेमां शंका रहे-

ती होय तो आ अमारा संघमांथी बालक, तरुण, अने वृध्धमांथी गमे तेनी पासे चैत्यवंदन सूत्र बोलावो, एटले आपने खात्री थशे." वरुण शेठे कह्युं, "महाराजा, आ नवीन गाथा रची आ कपटी शेठ पोताना बधा संघने बरवते शीखव तो न होय ? ते शी खबर पमे ?" वरुण शेठना आ वचन सांभळी राजाए पोताने खात्री करवाने माटे एक सेवकने पवनगति नामनी सांढणी उपर बेसाडी पोताना शेहेरनी नजीक रहेला श्रेणिपल्ली नामना गाममांथी शीलादिक गुणोवडे प्रसिध्ध, उत्कृष्ट जैन धर्मना जाण एवा धनशेठनी एक पुत्रीने तत्काल त्यां बोलावी. ते शेठ पुत्री त्यां आवी एटले राजाए श्वेतांबर संघनी समक्ष तेणीने पुछ्युं, "व्हेन तने चैत्यवंदन आवडे छे ? तेणीए कह्युं, स्वामी, ते मने सारी रीते आवडे छे." राजाए कह्युं, त्यारे तुं ते सत्वर कही संजळाव." राजानी आज्ञाथी ते बालाए अति गंभीर स्वरथी प्रथम संपूर्ण चैत्यवंदन त्यांसुधी कह्युं के, ज्यांसुधी नीचेनी गाथा बोलवामां आवी.

" उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खानाणं निसिहिया जस्स ।
तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि " ॥ १ ॥

आ गाथा सुधी ज्यारे ते बाला चैत्यवंदन बोली, ते सांभळी सर्व परिवार सहित राजा विक्रमनुं हृदय हर्षथी उल्लसित थइ गयुं. तत्काल ते प्रसन्न थइ बोल्यो, "आ श्वेतांबर संघ जीत्यो छे. निश्चयथी आ तीर्थ तेनुं ज छे." राजाना आ वचन सांभळी हारी गयेलो वरुण शेठ लोकोना मुखथी पोतानी निंदा, अने धन शेठनी प्रशंसा सांभळतो कचवाते मने पोतानो संघ लइ चाल्यो गयो. अने पोताने स्थाने आव्यो.

त्यारथी ए गाथा चैत्यवंदननी अंदर अद्यापि भणाय छे. जो के आ गाथा अविरति देवताए रचेली होवाथी विरतिवंतोने भणवी अयुक्त छे, तोपण ते शासननी उन्नतिनी हेतु रुप छे, तेथी पूर्वाचार्योए–गीतार्थ पंडितोए तेनो निषेध करेलो नथी; तेथी सज्जन भविजनोए ते अवश्य भणवा योग्य छे. तेम वळी तेवा पूर्वाचार्योना आचरणने जे अन्यथा करे छे, तेने आगमने विषे दंड आपवो कह्यो छे. श्री भद्र बाहु स्वामीए सूयगडांग सूत्रनी निर्युक्तिमां तथा अध्ययनमां आ प्रमाणे कहेलुं छे—

" आयरियपरंपरएण आगयं जो उच्छवबुद्धिए कोविय
इच्छे य वाइजमालिनासंसनासिहिइ " ॥१॥

आचार्यनी परंपराए आवेलानो जे उच्छेद करे छे, ते जमालिनी पेठे अनेक दुःखोने सहन करे छे. " १

ते पछी जैनो विजय थयो छे, एवा ते धनशेठनो विक्रम राजाए सारो सत्कार कर्यो अने घणुं सन्मान आपी तेने विदाय कर्यो. पछी धनशेठ पोताना संघनी साथे फरीवार गिरनार पर्वत उपर आव्यो अने त्यां श्री नेमिप्रभुनी उत्तम वस्त्राभरणो अने पुष्पोथी प्रथमना करतां विशेष पूजा करी. तेणे त्यां याचकोने अगणित दान आपी अष्टाइ उत्सव कर्यो. पछी पोते पोताना संघने साथे लइ, त्यांथी नीकळ्यो अने अनुक्रमे मार्गे चालतां हस्तिनागपुर आवी पोहोंच्यो. त्यां राजा वगेरे प्रजा जने ते धनशेठनुं सारे सन्मान कर्युं. ते पछी धनशेठ चिरकाल सुधी श्रावक धर्मने पाळी अने अनेक प्रकारे जिन शासननी प्रभावना करी अंते सद्गतिनो भाजन बन्यो हतो. आ प्रमाणे वृद्ध संप्रदायथी आ धन शेठनी कथा द्वारा पांचमी भक्ति कहेली छे, जेनी अंदर पांच प्रकारनी पूजा कहेवामां आवी छे.

आठ प्रकारनी पूजा.

हवे आठ प्रकारनी पूजा कहे छे, तेने माटे कह्युं छे के,

" वरगंधधूवचुक्खएहिं, कुसुमेहिं पवरदीवेहिं ।
नेवजफलजलेहिय, जिणपूयाअठहा होइ " ॥ १ ॥

" १ उत्तम गंध-चंदनादिक द्रव्य, २ अगरु प्रमुख सुगंधी धूप, ३ अखंडित अक्षत, ४ पंचवर्णी पुष्पो, ५ निर्मल घृतथी पूरित सुवर्ण मणिमय पात्रवाळो दीपक, ६ लाडवा प्रमुख नैवेद्य, ७ श्रीफल प्रमुख फल, अने ८ निर्मल-पवित्र जल एम आठ प्रकारे पूजा कहेवाय छे. ते अष्ट प्रकारी पूजानुं फल नीचे प्रमाणे कहे छे—

" अंगगंधसुवन्नवन्नं रूवं सुहं च सोहग्गं ।

पावइ परम पयं पिहु, पुरिसो जिणगंधपूयाए ॥ ३१ ॥
जिण पूयणेण पुंसो, होइ सुगंधोसुगंध धूवेण ।
दीवेण दित्तमंतो, अक्खओ अक्खएहिं तु ॥ ३२ ॥
पूयई जो जिणचंदं, तिणिवि संझासु पवर कुसुमेहिं ।
सो पावइ सुर सुक्खं, कमेण मुक्खं सया सुक्खं ॥ ३३ ॥
दीवाली पव्वदिणे, दीवं काऊण वद्धमाणग्गे ।
जो ढोयइ वरसफले, वरसंलफलं भवे तस्स ॥ ३४ ॥
ढोयइ बहु भत्ति जुओ, नेवज्जं जो जिणंद चंदाणं ।
भुंजइ सो वरभोए, देवासुरमणुअनाहाणं ॥ ३५ ॥
जो ढोयइ जलभरियं कलसं भत्तिइयवीयरागाणं ।
सो पावइ परमपयं सुपसत्थं भावसुद्धीए ॥ ३६ ॥"

"पुरुषो जिननी गंधपूजा करवाथी सुगंधी अने सुवर्ण वर्णी रूप वाला शरीरने पामे छे. तथा सौभाग्य, सुख अने अनुक्रमे मोक्ष सुखने प्राप्त करे छे. ३१

सुगंधी धूपवमे जिनपूजा करवाथी पुरुष सुगंधी थाय छे, दीपपूजा करवाथी दीप्तिवालो—तेजस्वी अने अक्षत पूजाथी अक्षय सुखवालो थाय छे. ३२

जे पुरुष त्रणे काल उत्तम प्रकारना पुष्पोथी जिनपूजा करे छे,ते देवताना सुख पामी अनुक्रमे सदा सुखवाला मोक्षने प्राप्त करे छे. ३३

जे दीवालीना पर्वने विषे श्री वर्द्धमान प्रभुनी पासे दीपक प्रकटी उत्तम फलने मुके, ते पुरुषनुं आखुं वर्ष सफल थाय छे. ३४

जे पुरुष घणी भक्तिवालो थइ श्री जिनचंद्रने नैवेद्य धरे छे, ते पुरुष देव, असुर अने मनुष्योना स्वामीना भोगने भोगवे छे. ३५.

जे पुरुष भक्तिथी श्री वीतराग प्रभुने जलनो भरेल कलश ढोळे, ते पुरुष भाव शुद्धिवडे श्रेष्ठ थइ उत्तम एवा मोक्षपदने पामे छे. ३६

उपर प्रमाणे विविध प्रकारे कहेली जिनपूजा भव्य पुरुषोए मन, वचन अने कायानी शुद्धि पूर्वक करवी. जो जिनभक्ति शुद्ध भावथी करी होय, ते थोडी होय तो पण मोटा फलने आपनारी थाय छे ते विषे कह्युं छे के—

" यास्या म्यायतनं जिनस्य लभते ध्यायंश्चतुर्थं फलं
षष्ठं चोत्थित उद्यतोऽष्टममयो गंतुं प्रवृत्तोऽध्वनि ।
श्रद्धालुर्दशमं बहिर्जिनगृहा त्प्राप्तस्ततो द्वादशं
मध्ये पाक्षिकमीक्षिते जिनपतौ मासोपवासं फलम् ॥

" हुं जिन मंदिरमां जइश ' एवुं चिंतववाथी पुरुषने एक उपवासनुं फल मळे छे. अने त्यां जवाने उठे त्यारे छठ तपनुं फल मळे छे. ज्यारे ते प्रत्ये मार्गे चालवा मांडे त्यारे अष्टमनुं फल मळे छे. जिनगृहनी बाहेर नजीक आवे त्यारे चार उपवासनुं फल मळे छे, चैत्यमां आवे त्यारे पांच उपवासनुं फल मळे छे, चैत्यनी मध्ये आवे त्यारे पंनर उपवासनुं फल मळे छे अने जिनेश्वरना दर्शन करे त्यारे मासोपवासनुं फल मळे छे. " १

अहिं तेवी ज रीतनी भावशुद्धि ते मुख्य कारण समजवुं. एवी रीते आठ प्रकारनी पूजा कहेली छे. आदि शब्दथी सत्तर प्रकारनी अने एकवीश प्रकारनी पूजा पण कहेवाय छे. ते आ प्रमाणे—

" न्हवण विलेवण वच्छजुग, गंधारुहणं च पुप्फरोहणयं ।
मालारुहणं वन्नय, चुन्न पडागाण आभरणे ॥ २७ ॥
माल कलावंस घरं, पुप्फ पगरं च, अठ मंगल यं ।
धूवुक्खेवो गीयं, नट्टं वज्जं तहा भणियं " ॥ २८ ॥

" १ निर्मल जल वडे स्नान, २ चंदनादिक वडे नव अंगे नव तिलक, ३ वस्त्र युगळ पेहेरावबा, ४ वास चूर्णनो प्रक्षेप, ५ विकस्वर पुष्पो चडाववा, ६

प्रभु कंठे गुंथेल पुष्पमाळनुं आरोपण, ७ पंचवर्णी पुष्पो वमे सर्व अंगे शोना करवी—अर्थात् फुलनी आंगी रचवी, ८ कपूर, कृष्णागरु प्रमुख सुगंधी रूव्य वमे पूजन करवुं, ९ ध्वजा चमाववी, १० छत्र, मुगट वगेरे आनूषणो पेहेराववा, ११ पुष्पनुं गृह करवुं, १२ प्रभुनी आगळ पांचवर्णी पुष्पोनो ढगलो करवो, १३ अक्षत वगेरे अष्टमंगळ आलेखवा, १४ सुगंधी धूप उखेववो, १५ गीत–गान करवा, १६ अनेक प्रकारना नृत्य करवा,—नाटक करवा, १७ अने शंख, नगारा वगेरे वाजित्रो वगामवा ए सत्तर प्रकारी पूजा कहेवाय छे.

एकवीश प्रकारनी पूजा नीचे प्रमाणे कहेली छे—

जिणपमिमाणं पूया, नेया इगवीस नीरचंदणयं।
नूसणपुप्फो वासं, धूवं फलदीव तंमुलयं ॥ २९ ॥
नेवज्जं पत्त पूगी, वारि सुवच्छं च छत्त चामरयं ।
वाजित्तगीय नट्टं, थुइकोसं वुढ्ढ इयहीरं ॥ ३० ॥ "

" १ स्नान, २ चंदन, ३ आनूषण, ४ पुष्प, ५ वासक्षेप, ६ धूप, ७ फल, ८ दीपक, ९ अक्षत, १० नैवेद्य, ११ पान, १२ सोपारी, १३ जल, १४ वस्त्र, १५ छत्र १६ चामर, १७ वाजित्र, १८ गीत १९ नाटक, २० स्तुति अने २१ नंमारनी वृद्धि. ए प्रमाणे एकवीश प्रकारनी पूजा कहेवाय छे. "

ते शिवाय एकसो आठ वगेरे बीजा पूजानां घणां नेदो कहेला छे; ते बीजा शास्त्रीय ग्रंथोथी जाणी लेवा. एवी रीते चैत्य विनयनी अंदर आवेल दश प्रकारना विनय मांहेलो आ विनयनो त्रीजो नेद कहेवामां आव्यो. बाकीना विनयना बीजा नेदोनी सविस्तर व्याख्या पंमितोए बीजा मोटा ग्रंथोमांथी जाणी लेवी.

सम्यक्त्वनी त्रिविध शुद्धि.

अनुक्रमे सम्यक्त्वनी त्रण प्रकारनी शुद्धिनी व्याख्या करे छे. १ जिन, २ जिनमत अने ३ जिनमतने विषे स्थिरता. ए सम्यक्त्वनी त्रिविध शुद्धि छे

जिन एटले श्री वीतराग. जिनमत एटले स्यात् पदे करीने युक्त एवा तीर्थंकर प्रणीत, यथास्थित जीव अजीवादि तत्त्वो, अने जिनमतने विषे स्थिरता एटले जेमणे जिन तीर्थंकरना आगमने अंगीकार करेल छे, एवा मुनि महाराजा वगेरे–एटले साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविका. ए जिन, जिनमत अने जिनमतने विषे स्थिरता कहेवाय छे. ए कहेवानो आशय एवो छे के, ए जिनादि त्रणने मुकी बाकीना एकांत वादरुप ग्रहे करीने ग्रसित थयेला आ संसारने विषे कचरारुप छे. एटले जिनादिक त्रणज आ जगतमां साररुप छे, बाकीना सर्व असार रुप छे. आवा प्रकारनी विचारणाथी सम्यकत्वनी निर्मलता थाय छे, तेथी ते सम्यकत्वनी शुद्धि कहेवाय छे, ते सम्यकत्वनी शुद्धि आगमने विषे त्रीजी रीते पण कहेली छे. ते आ प्रमाणे—

" मणवयकायाणं सुद्धि सम्मत्त साहणा तथ्थ ।
मणसुद्धि जिण जिणमय वज्जमसारं मुणइ लोयं ॥१॥
तिथ्थंकर चलणाराहणेण जं मझसिज्झई न कज्जं ।
पच्छेमि तथ्थ नन्नं देव विसेसं च वयसुद्धि॥ २ ॥
छिज्जंतो भिज्जंतो पिलिज्जंतोविडज्झमाणोवि ।
जिणवज्जं देवयाणं नमइ जो तस्स तणुसुद्धि " ॥ ३ ॥

" मन, वचन अने काया ए त्रणे करीने कराती जे शुद्धि, ते सम्यकत्वनी साधन भूत थाय छे. एटले मन, वचन तथा कायानी शुद्धिथीज सम्यकत्व उत्पन्न थाय छे, ज्यारे जीव जिनमत शिवाय आ समग्र लोकने असारपणे माने छे, त्यारे ते पहेली मनः शुद्धि कहेवाय छे. श्री तीर्थंकर देवना चरण कमलनुं आराधन करीने मारुं कार्य सिद्ध थयुं नथी, तो पछी बीजा देवना आराधनथी मारुं कार्य शी रीते सिद्ध थाय ? अर्थात् नज थाय; तेथी हुं तीर्थंकर शिवाय बीजा देवनी आराधना नही करुं. ' आ प्रमाणे पोताने मुखे कहेवुं, ए बीजी वचन शुद्धि कहेवाय छे. जे शस्त्र वगेरेथी छेदातो होय, भेदातो होय, पीलातो होय अने बलतो होय, छतां बीजा देवने जरा पण कायाथी नमे नही, तो त्रीजी काय शुद्धि कहेवाय छे. १–२–३

आ प्रकारे बीजी रीते पण सम्यक्त्वनी त्रण प्रकारनी शुद्धि कहेली छे.

पांचदूषण.

१ शंका एटले रागद्वेषथी रहित, यथार्थ उपदेशना करनार अने सर्वज्ञ एवा जिनेश्वरना वचनने विषे संशय ए शंका सम्यक्त्वने बाधित करनारी छे, तेथी ते सम्यक्त्वनुं पहेलुं दूषण कहेवाय छे. तेथी सम्यक्त्व दर्शनीओए ए शंकानो सर्वथा परिहार करवो जोइए. वळी ते शंकाथी लोकमां पण माणस पोताना कार्यने सिद्ध करी शकतो नथी. शंकालु माणसनुं कार्य नाश पामी जाय छे. जेओ निःशंक रहेनारा छे, तेओना कार्य अवश्य सिद्ध थयेला देखाय छे. ते विषे बे व्यापारीओनुं दृष्टांत प्रसिद्ध छे.

शंका उपर बे व्यापारीओनुं दृष्टांत.

कोइ एक नगरीमां बे व्यापारीओ रहेता हता. तेओ बंने कोइ पूर्व कर्मना योगथी जन्मथीज दरिद्री हता. एक वखते तेओ ज्यां त्यां भमता हता, तेवामां कोइ सिद्ध पुरुष तेमना जोवामां आव्यो. तेने जोइ संपत्तिनी सिद्धि करवाने माटे तेओ बंने ते सिद्ध पुरुषनी सेवा करवा लाग्या. एक दिवसे तेमनी सेवाभक्तिथी प्रसन्न थयेला ते सिद्ध पुरुषे ते बंनेनी. वच्चे बे कंथाओ (मंत्रितवस्त्रो) आपी. अने तेणे आ प्रमाणे कहुं, "वेपारीओ, आ बे कंथा चमत्कारी छे. तमारे तेने कंठने विषे धारण करवी. छ मास सुधी आ कंथा तमे धारण करशो, एटले पछी दररोज ते कंथा तमोने पांचसो सोनैया आपशे." सिद्ध पुरुषना आ वचनो सांभळी ते बंने व्यापारीओ ते कंथाओ लइ पोतपोताने स्थाने आव्या. ते बंनेमांथी एक व्यापारी शंकाशील हतो, तेणे विचार कर्यो के, "आ कंथा छ मास सुधी धारण कर्या पछी फळ आपशे, एनी शी खात्री ?" आवी शंका लावी तेणे ते कंथानो त्याग करी दीधो. बीजाए एवी शंका करी नहीं. तेणे निःशंक थइ अने लोकलज्जाने छोडी दइ ते कंथाने छ मास सुधी धारण करी. आथी ते कंथाना प्रभावथी ते मोटी समृद्धिवाळो शेठ बनी गयो. तेनी आवी समृद्धि जोइ पेला कंथाने त्याग करनारा व्यापारीने यावज्जीवित पश्चात्ताप थया कर्यो. धनाढ्य बनेलो व्यापारी यावज्जीवित सुखी, भोगी अने दानी

थयो-हतो."

आ दृष्टांत उपरथी समजण लइ भव्य पुरुषोए उत्तम वस्तुमां जरा पण शंका न करवी जोइए.

'कांक्षा' एटले अन्य दर्शननो अभिलाप. ते उत्पन्न थवाथी परमार्थ रीते श्री अरिहंत भगवाने कहेला आगम उपर अविश्वास थायछे, तेथी ते सम्यक्त्वने दूषण कहेवाय छे. सम्यक्त्वंत पुरुषोए ते कांक्षा दूषणनो परिहार करवामां यत्न करवो. कारणके, लोकमां पण कांक्षा करनारो पुरुष घणां दुःखोनो भागी थतो देखाय छे. ते विषे एक दृष्टांत कहेवाय छे.

कांक्षा उपर दृष्टांत.

"एक नगरने विषे कोइ एक ब्राह्मण रहेतो हतो. ते हमेशां 'धारा' नामनी पोतानी गोत्रदेवीनुं आराधन करतो हतो. एक वखते तेणे लोकोना मुखथी 'चामुंडा' देवीनो प्रभाव सांभळ्यो. ते सांभळी ते चामुंडा देवीनुं आराधन करवा लाग्यो. एटले धारा अने चामुंडा बंने देवीओनी आराधना करवा लाग्यो. अने तेम करतां घणो समय वीती गयो.

एक वखते ते ब्राह्मण ग्रामांतर जतो हतो. मार्गमां चालतां एक नदीनुं चोतरफ पूर आव्युं. ते पूरमां ब्राह्मण सपडाइ गयो अने तणावा लाग्यो. ज्यारे ते पूरनी बाहेर नीकळी न शक्यो, त्यारे ते उंचे स्वरे पोकार करी कहेवा लाग्यो "हे धारादेवी, दोडो दोडो, हे चामुंडा, मारी रक्षा करो, रक्षा करो." आवा पोकारथी ते बंने देवीओनुं स्मरण करवा लाग्यो. तेना पोकारथी बंने देवीओ त्यां हाजर थइ. परस्पर इर्ष्याथी ते बंनेमांथी एके देवी ते ब्राह्मणनी सहाय करवाने गइ नहीं. ब्राह्मणनुं रक्षण थयु नहीं. ब्राह्मण आर्त्त तथा रौद्रध्यान धरतो ते पुरना जळमां डुबी गयो हतो.

आ दृष्टांत उपरथी आत्म हितेच्छु पुरुषोए बीजा मतनी कांक्षा न करवी. ए प्रकारे कांक्षा नामनुं सम्यक्त्वनुं बीजुं दूषण दृष्टांत पूर्वक कहेलुं छे.

त्रीजुं विचिकित्सा दूषण.

जिनेश्वरनी आज्ञाने अनुसरी चालनारा अने शुद्ध आचारने धारण

करनारा मुनि आदि. आदि शब्दथी श्रावको पण लेवा. तेमनी जे निंदा करवी, ते विचिकित्सा नामे त्रीजुं दूषण कहेवाय छे. ते सम्यक्त्वने दूषित करनारुं होवाथी तेने दूषण तरीके कहेलुं छे. ए विचिकित्सा दूषणने सर्वथा वर्जित करवुं. जेमने सम्यक्त्व रत्न प्राप्त थयेल छे, अने जेओ सम्यक्त्वने विषे प्रयत्नवंत छे, एवा पुरुषोनी तथा बीजा हरकोइ पुरुषनी निंदा करवी योग्य नथी. तेमां जे निर्दोष एवा साधु प्रमुख उत्तम पुरुषो छे, तेमनी निंदा तो सर्वथा वर्जवी, एवो न्याय छे. जे श्रद्धालु एवा बीजानी आगळ पोताना गुरुजननी निंदा करे छे, अने जेओ स्वयं मंगळरुप अने मंगळना कारणरुप एवा त्यागी गुरुओने सन्मुख आवता जोइ "आ अमंगळनुं कारणरुप मारे अपशुकन थयां. हवे आथी मारा कार्यनी सिद्धि नहीं थाय." आ प्रमाणे पोताना मनमां चिंतवे छे, तेओ महा मूढपणावाळा, जिनवचनथी विमुख, एकांते मिथ्यादृष्टिवाळा अने दुष्कर्मना बंधक जाणवा. ज्ञानी महाराज कहे छे के, तेवा दुष्ट प्राणीओनी आलोक तथा परलोकमां माये करीने कोइ वखत पण वांछित कार्यनी सिद्धि थती नथी. ए सम्यक्त्वनुं विचिकित्सा नामे त्रीजुं दूषण कहेल छे.

कुदृष्टि प्रशंसा.

मिथ्यात्वनी प्रशंसा करवारुप सम्यक्त्वनुं चोथुं दूषण छे.

कुदृष्टि एटले खराब दृष्टिवाळा, जेनुं शुध्ध दर्शन नथी, एवा अशुध्ध धर्मवादी कुतीर्थी, तेमनी जे प्रशंसा करवी. ते सम्यक्त्वनुं चोथुं दूषण छे. ते प्रथम कहेला हेतुथी वर्जवुं. कारण के, ते सम्यक्त्वने मलिन करे छे.

जेओ कुतीर्थिओना कांइक अतिशय वगेरे जोइ " आ ठीक छे, आ मत ग्राह्य छे, कारण के जेनी अंदर आवा अतिशयवाळा होय छे. " आ प्रमाणे जे प्रशंसा करे छे, ते मूढ निष्कारण पोतानुं शुध्ध सम्यक्त्व रत्न मलिन करे छे.

मिथ्यात्वीनो परिचय.

मिथ्यात्वीओनो परिचय राखवो, ए सम्यक्त्वनुं पांचमुं दूषण छे. उपर कहेला कुदृष्टिओनी साथे आलाप संलाप प्रमुखथी परिचय करवो, ते पण सम्यक्त्वने दूषित करे छे, माटे ए पांचमा दूषणनो सर्वथा परिहार करवो. जेओ सुदृष्टि-

वाळा मुनिओ वगेरे होय तेमनोज परिचय करवो. कुदृष्टिओनो परिचय न करवो. कुदृष्टि—अन्य मतिओनो परिचय करवाथी नंद मणिकार शेठनी पेठे प्राप्त थयेल सम्यक्त्वरुप रत्न नाश पामे छे.

नंद मणिकर शेठनुं दृष्टांत.

एक वखते राजगृह नगरने विषे श्री चरम तीर्थंकर श्री वर्द्धमान प्रभु समोसर्या हता. श्रेणिक वगेरे श्रद्धालु लोको तेमने वंदना करवाने आव्या हता. ते समये सौधर्म देवलोकनो निवासी दर्दुरांक नामे देव पोताना चार हजार सामानीक देवताओना परिवार साथे त्यां प्रभुने वंदना करवा आव्यो. तेणे सूर्याभ देवनी पेठे श्री वीर प्रभुनी आगळ बत्रीश प्रकारनुं नाटक करवा मांड्युं. ते नाटक कर्या पछी ते देव पोताने स्थाने चाल्यो गयो. ते पछी श्री गौतम गणधरे भगवंतने पुछ्युं के, "भगवन्, आ देवताए आवी ऋद्धि क्या पुण्यथी प्राप्त करी छे?" प्रभुए उत्तर आप्यो. " आ नगरमां नंदमणिकार नामे एक शेठ वसे छे. एक वखते मारा मुखथी धर्म सांभळीने तेणे सम्यक्त्व सहित श्रावक धर्मने अंगीकार कर्यो. ते पछी घणां काळ सुधी तेणे श्रावक धर्म पाळ्यो हतो. एक वखते कोइ कर्मना योगथी तेने कोइ कुदृष्टिनो परिचय थयो. तेनो परिचय वधवाथी तेने कोइ शुद्ध मुनि महाराजना परिचयनो अभाव थयो. आथी तेना हृदयमां मिथ्या बुद्धि वृद्धि पामी. ते पूर्वे घणो सद्बुद्धिवाळो हतो, पण मिथ्यादृष्टिना सहवासथी अनुक्रमे बुद्धिमां मंद भावने पामी गयो. ते मिश्र परिणामथी काळक्षेप करवा लाग्यो.

एक दिवसे ते नंद मणिकार शेठे ग्रीष्मऋतुमां पोषध साथे अठमनो तप ग्रहण कर्यो. बे दिवसे तेणे ए व्रत पाळ्युं. त्रीजे दिवसे मध्य रात्रे तेने अतितीव्र जळनी तृषा लागी. तृषानी वेदनाथी तेनामां आर्त्तध्यान उत्पन्न थयुं. ते आ प्रमाणे चिंतववा लाग्यो. " आ संसारने विषे जे पुरुषो परोपकारने माटे वाव्यो तथा कुवाओ करावे छे, तेओने धन्य छे. धर्मना उपदेशकोए नवाण करावनाना धर्मने उत्तम कह्यो छे. जेओ ते धर्मने निंदे छे, तेओनी युक्ति खोटी छे. वाव्य कुवा वगेरे नवाण करावनाराने माटे शास्त्रमां कह्युं छे के. "

"धन्यास्त एव संसारे कारयंति वहूनिये।

वापी कूपादि कृत्यानि परोपकृति हेतवे ॥१॥
धर्मोपदेशकैश्चापि प्रोक्तो ऽसौ धर्म उत्तमः ।
येत्वाहुर्दुष्टतामत्र तद्धक्तिर्दश्यते वृथा ॥२॥"

"जेओ वाव्य, कुवा वगेरेना कृत्यो परोपकारने माटे करावे छे, तेओ आ संसारमां धन्य छे. धर्मना उपदेशकोए ए धर्मने उत्तम कहेलो छे. जे लोको ए धर्मने दूषित कहे छे, तेमनुं वचन वृथा छे."१-२

वळी कह्युं छे के,

"ग्रीष्मर्तौ दुर्बलाः सत्वास्तृपार्त्ता वापिकादिषु ।
समागत्य जलं पीत्वा भवंति सुखिनो यतः ॥३॥"

"ग्रीष्मऋतुने विषे दुर्बळ प्राणीओ, तृषाथी पीडित थइ वाव्य अथवा कूवा वगेरेमां आवीने जलपान करी सुखी थाय छे."

"अतोहमपि च प्रातर्वापीमेकां महत्तराम् ।
कारयिष्यामि तस्मान्मे सर्वदा पुण्यसंभवः" ॥ ४ ॥

"एथी हुं पण प्रातःकाले एक मोटी वाव्य करावीश, तेथी मने सर्वदा पुण्य थवानो संभव छे."४

आ प्रमाणे मनमां चिंतवता तेणे बाकीनी सर्व रात्रि प्रसार करी प्रातःकाले पारणुं करी श्रेणिकराजानो हुकम लइ ते वैभारगिरि पर्वतने विषे आव्या अने त्यां आवीने तेणे एक मोटी वाव्य करावी. ते वापिकानी चारे दिशाए अनेक प्रकारना वृक्षोथी सुशोभित अने दानशाळा, मठ मंडप तथा देवकुल प्रमुख थी मंडित एवा वन कराव्या. मिथ्यात्वीना परिचयथी आ प्रमाणे तेणे पोताना धर्मनो त्याग करी दीधो. अनुक्रमे प्रबळ कर्मनो उदय थवाथी तेनामां मोटा सोळ रोग उत्पन्न थया. ते सोळ रोगना नाम आ प्रमाणे छे. १ कास, २ श्वास, ३ ज्वर ४ दाह, ५ कुक्षिमां शूल, ६ भगंदर, ७ हरस, ८ अजीर्ण, ९ दृष्टिरोग, १० पृष्ट शूल, ११ अरुचि, १२ खुजली, १३ जलोदर, १४ माथानी पीडा, १५ कर्ण वेदना अने १६ कोढ आ सोळ रोगो तेने भारे पीडा करवा लाग्या. आ रोगोथी

जेनुं शरीर पीडित थयेलुं छे, एवो ते शेठ अतिशय वेदना भोगवी मृत्यु पामी गयो. मरण वखते तेनुं ध्यान तेनी वाव्य उपर हतुं, तेथी ते मरण पामीने तेज वाव्यमां गर्भज देडकापणे उत्पन्न थया. ते वाव्य जोइने ते वाव्य पोतानी करावी छे, एम थतां तेने जाति स्मरणज्ञान उत्पन्न थइ आव्युं. ते ज्ञान उत्पन्न थवाथी तेना जाणवामां आव्युं के, जैन धर्मनी विराधना करवाथी आ फळ प्राप्त थयुं छे, तेथी तेना हृदयमां वैराग्य उत्पन्न थइ आव्युं. आथी ते देडको विचार करवा लाग्यो के, " आजथी हवे मारे निरंतर छठ तप करवो. पारणाने दिवसे वाव्यना कांठा उपर आवी स्नान करता एवा लोकोथी प्रासुक थयेला जलनुं पान करवुं अने प्रासुक थयेली मृत्तिकानुं भक्षण करवुं. " आवो विचार करी तेणे तेवो अभिग्रह धारण कर्यो.

एक वखते ते वाव्यने विषे स्नान करवाने आवता एवा लोकोथी मारुं आगमन तेना सांभळवामां आव्युं, तेथी मने ते पोताना पूर्व भवनो धर्माचार्य मानी एक सहस्र पत्रवाळुं कमळ मुखमां लइ मने वंदना करवाने नीकळ्यो. ते वखते केटलाएक दयालु लोको मने वंदना करवा आवता हता, तेमणे दयाबुद्धिथी ते देडकाने वारंवार वाव्यना जलमां नांखवा मांडयो. छतां पण मने वंदना करवामां एकाग्रचित्तवाळो ते देडको वाव्यमांथी बाहेर नीकळी जेवामां आवतो हतो, तेवामां भक्तिथी जेनुं मन उल्लास पामेलुं छे एवो श्रेणिकराजा घणो परिवार लइने मने वंदन करवा आवतो हतो, ते तेज मार्गे नीकळ्यो. कर्म योगे ते देडको श्रेणिकराजाना घोडानी खरी नीचे चकदाइ गयो. शुभ ध्यानथी त्यांज मृत्यु पामी ते सौधर्म देवलोकने विषे दर्दुरांक नामे महा समृद्धिवान् देवतारुपे उत्पन्न थयो. तरतज तेने अवधिज्ञान उत्पन्न थयुं. तेथी तेणे पोताना पूर्व भवनो वृत्तांत अवलोकी अहीं मारा समवसरणनी वीना जाणी तत्काल अहीं मने वंदना करवाने आव्यो अने पोतानी सर्व समृद्धि देखाडी पाछो पोताना स्थान प्रत्ये चाल्यो गयो. हे गौतम, ए प्रमाणे ए दर्दुरांक देवनो वृत्तांत में तमने कह्यो छे."

गौतम मुनिए पुनः प्रभुने प्रश्न कर्यो " भगवन्, ए देवता अहींथी च्यवीने क्यां जशे ? " भगवाने कह्युं, " ते महाविदेह क्षेत्रने विषे उत्पन्न थशे."

मिथ्यात्वीना परिचयथी केवुं नठारुं फळ मळे छे? ते विषे आ नंदमणि-

कारणुं दृष्टांत सांजळी सम्यक्त्ववंत पुरुषोए सर्वथा कुदृष्टिना परिचयनो त्याग करवो. अने सम्यग्दृष्टिना परिचयने वधारवो.

आ प्रमाणे सम्यक्त्वने दूषित करनारा सम्यक्त्वना पांच दूषणो जे कहेवामां आव्या तेओथी सम्यक्त्व मलिन थाय छे, माटे ते पांचे दूषणोनो सर्वथा परिहार करवो.

सम्यक्त्वना आठ प्रज्ञावक.

हवे सम्यक्त्वना आठ प्रज्ञावक कहे छे. जेनाथी सम्यक्त्वनो प्रजाव वधे ते प्रजावक कहेवाय छे.

१ प्रवचनी प्रज्ञावक.

प्रवचन एटले द्वादशांगी. ते जेने अतिशयनी पेठे होय ते प्रवचननी कहेवाय छे. वर्त्तमानकाळने योग्य एवा जे जे सूत्रो छे, तेना अने तेना अर्थना धारण करनारा—तीर्थना वहन करनारा जे आचार्य ते प्रावचनी कहेवाय छे. देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमणादिक प्रथम प्रवचनना प्रजावक थया हतां.

देवर्द्धिगणिनी कथा.

एक वखते राजगृही नगरीने विषे चरम तीर्थकर श्री महावीर प्रज्ञु समोसर्या हता. देवताओए मनोहर समवसरण रचेलुं हतुं. बार परिषदो तेमां एकठी मळी हती. ते वखते सुधर्मा इंद्र आव्यो. ते जगवानने त्रण प्रदक्षिणा करी अने वंदन करी पोताने योग्य स्थाने बेठो. ते पछी प्रज्ञुए जल सहित मेघना जेवा ध्वनिथी स्वरनी मधुरताथी परमानंदरूप अमृतने फरनारी, महा निविड मोहरूप अंधकारनो नाश करनारी, सर्व जगत्नां प्राणीओने चमत्कार करनारी अने मनने हरनारी एवी देशना आपी. देशनाने अंते सौधर्मपति इंद्रे विनयथी वीरप्रज्ञुने पुछ्युं, " जगवन्, आ अवसर्पिणी काळमां तमारुं तीर्थ केटलो काळ प्रवर्त्तशे. पछी शी रीते तेनो विच्छेद थशे ? " इंद्रनो आ प्रश्न सांजळी वीर प्रज्ञुए कह्युं, हे इंद्र, एकवीश हजार वर्ष दुषम नामे पांचमा आरा सुधी मारुं तीर्थ प्रवर्त्तशे. ते पछी पांचमा आराना छेल्ले दिवसे पेहेला पोहोरमां १ श्रुत, २ सूरि, ३ धर्म अने ४ संघ–ए चार विच्छेद पामशे. बीजे पोहोरे विमलवाहन राजा थता तेनो

सुधर्मा नामे मंत्री अने राजनीति नाश पामी जशे. सायंकाळे वादर अग्निनो वि-च्छेद थइ जशे. आवी रीते मारा तीर्थनो उच्छेद थइ जशे.

इंद्रे पुनः प्रश्न कर्यो; " स्वामी, तमारुं पूर्वगत श्रुत केटलो काल रहेशे?" प्रभुए उत्तर आप्यो. " इंद्र, एक हजार वर्ष पर्यंत मारुं पूर्वगत श्रुत रहेशे. ते पछी तेनो उच्छेद थइ जशे.

इंद्रे पुनः पुछ्युं,—स्वामी, कया आचार्य महाराजनी पछी सर्व पूर्वगत श्रुत विनाश पामशे ? " प्रभु बोल्या–" देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमणनी पछी सर्व पूर्व-गत श्रुत विच्छेद पामी जशे. " इंद्रे फरीथी पुछ्युं, " भगवन्, जे देवर्द्धिगणी थवाना छे, तेमनो जीव हाल क्यां छे ? " प्रभुए कह्युं, " इंद्र, जे तारा पेदल सैन्यनो अधिपति आ हरिणगमेषी देव तारी पासे रहेलो छे, ते देवर्द्धिगणीनो भावी जीव छे. प्रभुनां आ वचन सांभळी इंद्र विस्मय पामी गयो अने ते पो-तानी पासे रहेला हरिणगमेषी देवनी प्रशंसा करवा लाग्यो. ते देवे पण आ पोतानो वृत्तांत सांभळी लीधो. ते पछी इंद्र परिवार सहित प्रभुने नमी पोताने स्थाने चाल्यो गयो.

ते हरिणगमेषी देवे अनुक्रमे आयुष्यना दलियानी हानि थतां छ मासनुं आयुष्य थाकतां मनुष्यनुं आयुष्य बांध्युं, ते पछी पोतानी पुष्पमाळानुं करमाइ जवुं अने कल्पवृक्षोनुं कंपन वगेरे च्यववाना चिन्हो देखी तेणे इंद्रने आ प्रमाणे विनंति करी. " स्वामी, तमे अमारा पोषण करनारा प्रभु छो तेथी मारा पर कृ-पा करी एटलुं करो के, जेथी मने परभवने विषे धर्मनी प्राप्ति थाय. हुं फरीथी योनिरूप यंत्रना संकटमां पडी वे प्रकारना अंधकारथी जेना चेतननो अने चक्षु-नो लोप थयेलो छे एवो बनी गर्भनी ओरमां लेपाएला शरीरने अग्निथी ताप थाय अने सूची (सोइ)ना समूहथी पण अधिक शरीरने वेदना थाय, तेवा दुःखो भोगववा जतां हुं धर्मकरणीने भुली जइश, माटे मारे स्थाने उत्पन्न थयेला बीजा हरिणगमेषी देवने मने बोध करवा मोकलजो. एथी आपनुं स्वामिपणुं पर भवने विषे पण सफळ थशे. "

ते देवताना आ वचनो इंद्रे अंगीकार कर्या, तोपण ए हरिणगमेषी देवताए पोताना विमाननी भींत उपर वज्र रत्नवडे नीचे प्रमाणे अक्षरो लख्या.

" जे हरिणगमेषी देव आ स्थाने उत्पन्न थाय, तेणे मने परजवने विषे प्रतिबोध करवो. जो ते नहीं करे तो तेने इंडना चरणकमळनी सेवामां विमुखपणानो दोष लागशे. "

आयुष्य पूर्ण थया पछी ते हरिणगमेषी देव त्यांथी च्यवीने जंबूद्दीपमां आवेला जरतक्षेत्रनी अंदर सौराष्ट्र देशमां वेलाकुलनगरना राजा अरिदमनना सेवक कामर्ध्धि क्षत्रियनी स्त्री कलावतीनी कुक्षिने विषे पुत्ररूपे उत्पन्न थयो. ते कामर्ध्धि सेवक काश्यप गोत्री हतो. ज्यारे ए गर्जमां आव्यो त्यारे तेनी माता कलावतीए स्वमाने विषे एक महार्ध्धिक देवने जोयो हतो. अनुक्रमे शुज्ञ दिवसे ए पुत्रनो जन्म थयो. तेनुं नाम देवर्ध्धि पाम्युं. पांच धात्रीओथी पालन करातो ते पुत्र बार वर्षनो थयो. पिताए तेने बे कन्याओ परणावी. देवर्ध्धि ते कन्याओनी साथे विषय जोग जोगवतो हतो. ते युवान थयो त्यारे तेने अधर्मी जनोनो सहवास थयो हतो. पोतानी समान वयना राजपुत्रो तथा क्षत्रिय पुत्रोनी साथे ते सोकारनवार्ता करतो हतो. ते धर्मनी वार्ता जाणतो नहीं तेम सांजळतो पण नहीं. ते आ रीते पोतानो काल निर्गमन करतो हतो.

हवे पेला विमानने विषे नवो हरिणगमेषी देव उत्पन्न थयो. उत्पत्ति समये जे पूजा आदि करणी करवा योग्य छे, ते करी ते सुधर्मा इंडनी सन्नामां सेवाने माटे आव्यो. तेने देखी इंडे पुछ्युं के, " तुं नवो उत्पन्न थयो छे ? " तेणे हा कही एटले इंडे तेने आज्ञा करी के, तारा स्थान उपर थयेला पेहेलाना हरिणगमेषी देवने तारे प्रतिबोध करवो. " इंडनी आ आज्ञा तेणे अंगीकार करी. ते पछी ते पोताने स्थाने चाल्यो गयो.

एक वखते ते हरिणगमेषी देवे पोताना विमाननी दीवाल उपर पेला अक्षरो अवलोक्या. ते वांची तेणे एक पत्र लख्यो. तेमां नीचे प्रमाणे श्लोक लख्यो हतो.

" स्वभित्तिलिखितं वाक्यं, मित्र त्वं सफलं कुरु।
हरिणेगमेषिको वक्ति, संसारं विषमं त्यज ॥ १ ॥ "

" हे मित्र, तारा विमाननी भींते लखेलुं वाक्य तुं सफल कर. अने हरिणगमेषी देव कहे छे के, आ विषम संसारने छोडी दे. १ "

आ श्लोक लखी तेणे पोताना एक सेवकने बोलावी कह्युं के, " आ पत्र तारे देवर्द्धिने आपवो. " एम कही ते सेवकने विदाय कर्यो. ते सेवक ज्यां देवर्द्धि हतो त्यां आव्यो अने आकाशमां रही ते पत्र तेनी पासे नांख्यो. देवर्द्धिए आकाशमांथी पडता ते पत्रने देखी लइने वांच्यो, पण तेनो अर्थ तेना समजवामां आव्यो नहीं. ते पछी केटलोक समय वीती गयो. पछी पेला देवताए स्वप्नामां आवी तेने ए श्लोक कह्यो, तोपण देवर्द्धि प्रतिबोध पाम्यो नहीं.

एक वखते देवर्द्धि सीकार करवाने नीकल्यो हतो. कोइ अटवीमां आवतां एक वराह तेनी नजरे आव्यो. तत्काळ तेणे पोताना घोडाने वाराहनी पुंठे दोडाव्यो. वराहनी पाछळ ते अटवीमां दूर चाल्यो गयो. तेवामां पेला हरिणगमेषी देवे तेने भय बताव्यो. एक केशरीसिंह उभो छे अने पाछळ मोटो खाड छे, ते खाडनी बे पडखे बे मोटा वराह घुर्घुर शब्दो करतां उभा छे. नीचे धरतीकंप थाय छे अने उपरथी पथरानो वर्षाद पडे छे. आ प्रमाणे मृत्युना भयने उत्पन्न करनारा कारणोने देखी ते देवर्द्धि भयथी व्याकुल थइ गयो. अने चारे दिशा तरफ जोवा लाग्यो. तेणे चोतरफ जोयुं पण कोइ तेना मरणनो निवारक जोवामां आव्यो नहीं, तेथी ते विशेष चिंता करवा लाग्यो. ते समये पेला देवताए रुद्र दृष्टिए विलोकीने कह्युं, "केम हजु सुधी मारा कहेला श्लोकनो अर्थ नथी जाणतो ?" देवर्द्धिए भय पामीने कह्युं, " हुं कांइपण जाणतो नथी. " पछी ते देवताए तेने तेना पूर्वभवनो बधो वृत्तांत कही संभळाव्यो. अने पछी कह्युं के, ' जो तुं व्रत ग्रहण कर तो तने छोडी दउं—आ मरणांत कष्टमांथी तारुं रक्षण करुं. " ते सांभळी ते देवर्द्धिए ते अंगीकार कर्युं, पछी ते देवताए ते देवर्द्धिने त्यांथी उपाडी लोहीताचार्यनी पासे मुक्या अने त्यां तेमणे जिनेश्वर भगवान्नी दीक्षा ग्रहण करी. दीक्षित थयेला देवर्द्धिए आगमनुं पूर्ण ज्ञान संपादन कर्युं अने पोते यथार्थ गीतार्थ थया. गुरुनी पासे जेटलुं पूर्वश्रुत हतुं, तेटलुं तेमणे भणी लीधुं. ते पछी तेओ श्री केशीगणधरना संतानिक देवगुप्त गणी पासे आव्या अने तेमनी पासे प्रथम पूर्व अर्थयुक्त अने बीजुं पूर्व मात्र सूत्ररूपे भणया हता. तेमना विद्यागुरु

स्वर्गवासी थया पछी गुरुमहाराजाए देवर्द्धिने गीतार्थ जाणी पोतानी पाटे स्थापित कर्या अने तेमने गणिपद आप्युं. अने बीजा गुरुए तेमने क्षमाश्रमण पद आप्युं. त्यारे महानुभाव देवर्द्धि गणी क्षमाश्रमण, ए नामथी प्रख्यात थया हता.

ते समये पांचसो आचार्यो विद्यमान हता, तेओमां देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण युग प्रधानपदने धारण करनार, कलिकाल केवली, सर्व सिध्धांतनी वांचना आपनारा, अने जिनशासननी प्रभावना करनारा थया हता.

एक वखते महानुभाव देवर्द्धिगणी श्री शत्रुंजय पर्वत उपर आव्या हता. त्यां वज्रस्वामीए स्थापेल श्री आदीश्वर प्रभुनी प्रतिमाने नमी तेमणे श्री कपर्द्दियक्षनी आराधना करी हती. श्री कपर्द्दियक्षे प्रत्यक्ष थइने गणीने कह्युं के, "मारुं शुं काम छे ?" ते वखते महानुभाव देवर्द्धिगणीए कह्युं, हे यक्षदेव, हमणां बार वर्षनो दुकाल थयेलो छे. श्री स्कंदिलाचार्ये मथुरामां सिध्धांतनी वांचना करी, तो पणचालता समयने अनुसारे मंदबुध्धिपणाथी साधुओ आगमोने विसरी जाय छे, अने जशे. तेथी तमारी सहायथी ते सिध्धांतोने ताम्रपत्र उपर लखवानी मारी इच्छा छे. तेम करवाथी जिनशासननी उन्नति थशे. कारण के, मंद बुध्धिवाळा पुरुषो पण पुस्तकनुं अवलंबन करीने सुखे शास्त्राभ्यास करी शकशे."

देवर्द्धिगणीना आ वचनो सांभळी ते यक्ष प्रसन्न थइने बोल्यो "हुं तमोने ए कार्यमां सांनिध्य करीश. तमो साधुओने एकठा करो. पछी आचार्ये कह्युं के, तमो मषी, ताम्रपत्र विगेरेनो मोटो जथ्थो एकत्र करावो. केटलाएक लहीआने पण एकठा करो. अने ते साथे साधारण द्रव्य पण एकठुं करो." आ प्रमाणे कही ते गणी त्यांथी विहार करीने वल्लभीपुरमां आव्या हता. त्यां पेला यक्षे पुस्तक लखवानी सर्व सामग्री एकठी करी हती. पछी वृध्ध अने गीतार्थ देवर्द्धिगणी जेम जेम अंग–उपांगना आलावा कहेता गया, तेम तेम लहीआओए प्रथम खरडारूपे लखी लीधा. ते पछी ते गणी महाराजाए संयोजना करावी मूळ पत्रमां लखाव्या हता. अद्यापि पण ते कारणने लइने अंगोने विषे उपांगोनी साक्षी आपवामां आवे छे. वळी वचे वचे विसंवादनी संख्यानो

नियम न होवाथी माथुरी वाचना पण देखाइ आवे छे. तेम वळी पूर्वे आर्यरक्षितसूरि महाराजाए सिध्धांतोने विषे जुदा जुदा अनुयोग कर्या, स्कंदिलाचार्ये तेमनी वांचना करी अने देवर्ध्धिगणीए तेमने पुस्तकारूढ कर्या हता. ते कारणने लइने सुधर्मा स्वामीना वचनो कोइ कोइ ठेकाणे विसंस्थूल देखाय छे. एटले तेमां पाठांतरो जोवामां आवे छे; ते पण आ दुषम काळनोज प्रभाव छे. तथापि सम्यग् दृष्टि जीवोए आ जिन आगमने विषे जरा पण संशय करवो नहीं. ते समये देवताना सांनिध्यथी एक वर्षनी अंदर एक कोटी प्रमाण जैन पुस्तको लखवामां आव्या हता. श्रीवीरप्रभुना निर्वाण पछी नवसो ऐंशी वर्ष अतिक्रांत थया पछी सर्व सिद्धांतोना लखनार अने युग प्रधान पदने धारण करनार श्री देवर्ध्धिगणी क्षमाश्रमण श्री जिनशासननी बहु प्रकारे प्रभावना करी छेवटे सिध्धगिरि उपर अनशन करी देवलोके गया हता.

आवा प्रकारना आचार्यो श्री जिनशासनना प्रभावक कहेवाय छे. बीजा धर्मकथी नामे प्रभावक कहेवाय छे. जेमनी धर्मकथा प्रशस्त होय ते धर्मकथी कहेवाय छे. तेओ क्षीराश्रव लब्धि प्राप्त करी जल सहित मेघनी गर्जना जेवी वाणी वडे आक्षेपणी, विक्षेपणी, संवेदनी, अने निर्वेदनी—एवी चार जातनी देशना वडे लोकोना मनने प्रमोद उत्पन्न करे तेवी धर्म कथाओ करे छे अने तेमनाथी घणां भव्य जीवोने प्रतिबोध करे छे. तेवा धर्मकथी श्री नंदिषेण विगेरे हता.

ते चार प्रकारनी कथाओना लक्षणो.

१ जेमां हेतु दृष्टांत वडे स्याद्वादनी पध्धतीथी पोतानो मत स्थापन करवामां आवे, ते आक्षेपणी कथा कहेवाय छे.

२ जेमां पूर्वापर विरोधवडे मिथ्या दृष्टिना मतनो तिरस्कार करवामां आवे ते विक्षेपणी कथा कहेवाय छे.

३ जे मात्र सांभळवाथी भव्य जीवोने मोक्षनो अभिलाष थाय, ते संवेदनी कथा कहेवाय छे.

४ जेमां संसारना भोगना अंगनी स्थिति—लक्षणनुं मात्र वर्णन करवाथी

ज अन्य जीवोने ते वैराग्यनुं कारण थाय, ते निर्वेदनी कथा कहेवाय छे.

धर्मकथी श्री नंदिषेणनुं दृष्टांत.

कोइ एक नगरमां मुखप्रिय नामे एक धनवान् ब्राह्मण रहेतो हतो. एक वखते तेणे मिथ्यात्वथी मोहित थइ यज्ञ करवानो आरंभ कर्यो.ते यज्ञमां रांधेला अन्ननी रक्षा करवा माटे तेणे एक भीम नामना पोताना सेवकने आज्ञा करी. ते वखते ते भीमे एवो ठराव कर्यो के, ब्राह्मणोने जमाड्या पछी जे बाकी अन्न रहे ते मने आपवुं.' आवा ठरावथी तेणे ते अन्ननी रक्षा करवाने कबुल कर्युं हतुं. मुखप्रिय ब्राह्मणे ते ठराव कबुल कर्यो अने ते भीमने अन्ननी रक्षा करवाने राख्यो. ते गृहस्वामी मुखप्रिय ब्राह्मणे ब्राह्मणो जमी रह्या पछी वधेलुं अन्न पोताना सेवक भीमने आपी दीधुं. भीम सेवावृत्ति करतो हतो, तोपण ते सम्यक् दृष्टि हतो. तेणे ते अन्नथी जैन मुनिओने प्रतिलाभित कर्या. अने बीजा अन्य दर्शनीओने पण दया दाननी बुद्धिथी आप्युं; आथी ते भीमे भोगकर्म उपार्जन कर्युं. केटलेक समये ए भीम सेवक मृत्यु पामीने देवता थयो. देवताना सुख भोगवी त्यांथी च्यवीने ते राजगृह नगरीना राजा श्रेणिकने घरे पुत्ररूपे उत्पन्न थयो. त्यां तेनुं नंदिषेण नाम पाडवामां आव्युं. पेला मुखप्रिय ब्राह्मणनो जीव मृत्यु पामी केटलाक भव भमी ते काळे कदलीना वनने विषे कोइ हाथिओना टोळामां एक हाथिणीनी कुक्षिने विषे उत्पन्न थयो. ते वखते हाथिणीओना यूथपति गजेंद्र विचार करतो के, जो कोइ नवीन हाथी मोटो यूथपति थशे, तो ते मारो पराभव करशे." आवुं विचारी ते यूथपति हाथिणीओने प्रसव समये कोइ हाथी अवतरे त्यारे तेने हणी नांखतो हतो. जेना गर्भमां पेला मुखप्रिय ब्राह्मणनो जीव अवतरेल ते हाथिणी ते यूथपतिथी पोताना गर्भनुं अकुशल जाणी कपटथी लंगडी थइ अने हळवे हळवे हाथीनी पाछळ चालवा लागी.कोइ कोइवार एक बे दिवसे ते पोताना यूथपतिना टोळाने मळवा लागी. एक वखते कपट करी हाथिणी टोळाथी विखूटी पडी कोइ तापसना आश्रममां आवी तेणी पोतानी सुंढवडे ते दयालु तापसना चरणनो स्पर्श करवा लागी अने तेने वारंवार नमवा लागी. दयालु तापसोए ते हाथिणीने गर्भवती जाणी तारो गर्भ कुशल रहो ' एम आशीष आपी पोताना आश्रय नीचे राखी. हाथिणीए एक

दिवसे एक पुत्रने जन्म आप्यो. तापसना पुत्रोए तेनी परिपालना करवा मांडी अने ते गजपुत्र सुरक्षित थयो. हाथिणी अरण्यमां चरवा जती अने आश्रममां पोताना पुत्रने स्तनपान करावा आवती हती. हाथिणीनुं ते बालक उछरवा लाग्युं अने तापसोना बालकोनी साथे क्रीमा करवा लाग्युं. तापसोना कुटुंबोनी साथे हलीमली गयेलो ते गजबालक हंमेशां पोतानी सुंढमां जल लावी आश्रमना वृक्षोने सिंचन करतो हतो. आ प्रमाणे वृक्षोने सिंचन करतां गजेंद्रना बालकने जोइने ते तापसोए तेनुं नाम सेचनक पाडयुं. ते सेचनक ते स्थले उछरी वृद्धि पामी त्रीश वर्षनो गजेंद्र थयो. एक वखते ते महान् हस्ती वनमां फरतां पेला मोटा गजेंद्रना जोवामां आव्यो. तत्काल ते गजेंद्र तेना उपर धसी आवतां आ युवान हस्तीए पोताना उग्र बलथी ते यूथपति गजराजने मारी नांख्यो. अने पोते यूथपति बनी गयो. तेणे विचार्युं के "जेम मारी माताए पेला यूथपतिना नयथी मने तापसोना आश्रममां जणी मोटो कराव्यो, तेवी रीते बीजी हाथणीओ न करे." आवुं धारी पोतानुं यूथ लइ तापसोना आश्रममां गयो अने त्यां ते तापसना झुंपमाने तेणे नांगी नांख्युं. ते जोइ तापसो तेनी उपर रोषाविष्ट थइ गया अने ते प्रदेशना राजा श्रेणिकनी पासे तेनी फरीयाद करी. राजा श्रेणिक तापसोनुं ते कष्ट जोइ कांइ प्रयोगथी ते नवीन यूथपतिने बंधनमां लाव्यो. अने बंधनना स्थानमां यंत्रवाली सांकळोथी तेने बंधाव्यो.

एक वखते तापसोए ते बांधेला सेचनक हाथीने जोइने कह्युं के, 'तें जेवुं कर्म कर्युं, तेवुं तने फल मळ्युं छे.' आ वाक्य सांजळतांज ते गजेंद्र क्रोधातुर *थइ गयो अने तत्काल ते बंधनने तोमी ते तापसोने मारवाने पाछळ दोम्यो.* तापसो व्याकुलपणाना शब्दो पोकारता नाशी गया. तापसोनो पोकार सांजळी श्रेणिक राजानो पुत्र नंदीषेण ते हस्तीने वश करवा माटे दोमी आव्यो. नंदीषेणने जोतांज ते गजेंद्र तत्काल उहापोह करवा लाग्यो. अने तेम करतां तेने अवधिज्ञान उत्पन्न थइ आव्युं. तेने पोताना पूर्व नवनो वृत्तांत याद आवी गयो. कुमार नंदीषेण पण ते हाथीने जोइ स्निग्ध हृदयवालो थइ गयो. पूर्व नवना स्नेहथी तेणे गजेंद्रने केटलाएक वचनो कही प्रतिबोध आप्यो. पछी संतुष्ट थयेला गजेंद्रनी उपर बेसी कुमार नंदीषेण तेने बंधन स्थानमां लाव्यो अने त्यां तेने बांधी दीधो.

आ खबर सांभळी श्रेणिकराजाए प्रसन्न थइ पोताना कुमारनो भारे सत्कार कर्यो अने तेने पांचसो कन्याओ परणावी. एक वखते श्रीवीर भगवान् राजगृह नगरीमां समोसर्या. आ शुभ खबर सांभळी तेमने वंदन करवाने पोताना पिता श्रेणिक राजनी साथे कुमार नंदीषेण पण गयो हतो. श्रीवीरप्रभुए धर्मदेशना आपी. ते सांभळी नंदीषेण प्रतिबोध पाम्यो. तत्काल नंदीषेणे वीरप्रभुनी पासे दीक्षा आपवानी मागणी करी. तत्काल प्रभुए विचार्युं के, "अमाराथी तेने धर्मनी वृद्धि थशे." आवुं विचारी 'यथा सुखं. देवानुप्रिय' एम कही पछी 'आने प्रतिबंध करशो नहीं' एवुं बीजुं वाक्य कह्युं नहीं कारण के, तेमणे जाण्युं हतुं के, आगळ उपर आ नंदीषेणने व्रतमां विघ्न थवानुं छे.

नंदीषेण कुमार ते पछी प्रभुने वांदी घेर आव्यो. तेणे व्रत लेवाने माटे पोताना मातापितानी आज्ञा मेळवी. पछी ते मोटा उत्सव पूर्वक दीक्षा ग्रहण करवा तत्पर थयो. आ वखते शासन देवताए आकाश वाणीथी जणाव्युं, "कुमार नंदीषेण, तुं दीक्षा लेवाने तैयार थयो छे, पण हजु तारे भोगनिक कर्मनो उदय छे, माटे केटलोक वखत तेनी राह जो. पछी दीक्षा ग्रहण करजे." शासन देवताए आ प्रमाणे कह्युं, तोपण नंदीषेणे ते मान्युं नहीं अने तत्काल पोताना मननी दृढता विचारीने ते श्री वीरप्रभुनी पासे गयो अने तेमनी पासे दीक्षा ग्रहण करी. दीक्षा लीधा पछी ते बुद्धिमान् नंदीषेण मुनिए अनुक्रमे दशपूर्व ज्ञाननो अभ्यास कर्यो. अने ते राजर्षि दुष्कर तपस्या करवा लाग्या. आ तेना आचरणथी तेओ पूर्ण रीते लब्धिवान् थया हता. वीरप्रभुए जे धारणा धारी हती, अने शासनदेवे तेने माटे जे वचनो उच्चार्या हता, ते सफल थवानो वखत आव्यो. मुनि नंदीषेणने तेमना भोग कर्मनो उदय थइ आव्यो. मननी चंचळताथी पूर्वे भोगवेला अने रमण करेला वैषयिक विचारो तेना स्मरण मार्गमां आववा लाग्या. तेना मनमां मनोभवनो उदय थयो. ज्यारे पोते ए कामपीडाने सहन करवा असमर्थ थया एटले सूत्रने विषे कहेला विधि प्रमाणे मनने वश करवाने अने पोताना विकारी देहने कृश करवाने माटे घणी आतापना करवा लाग्या. हंमेशा विशेष तप आचरवा लाग्या. तोपण तेमनी भोगनी इच्छा निवृत्त थइ नहीं.

ज्यारे कोइ पण रीते तेनी कामवेदना शांत थइ नहीं एटले तेमने पोताना शुध्ध व्रतनो भंग थवानो महान् भय लागो आव्यो. तत्काल तेमणे चितव्युं के, "व्रतनो भंग थया करतां मरण पामवुं सारुं छे." आथी तेओए मृत्यु पामवाने माटे गळे पाश नांख्यो. तत्काळ ते खबर जाणी देवीए तेनो फांसो तोडी नांख्यो तोपण तेओ एटलेथी अटक्या नहीं. तत्काल तेमणे विष भक्षण कर्युं. देवताना प्रभावथी ते विष अमृत रुप थइ गयुं. पछी अग्निमां पडी प्राण काढवा तैयार थया. देवना प्रभावथी ते अग्नि पण बुझाइ गयो. एवी रीते मरणने माटे करेला तेमना सर्व प्रयोगो निष्फळ थइ गया हता.

एक वखते ते नंदीषेण मुनि राजगृह नगरीमां अठमना पारणा माटे भिक्षा लेवा नीकळतां एक वेश्याना घरमां पेशी गया. त्यां जइ तेमणे कह्युं, "हे गृहनायिका, जो तारी श्रध्धा होय तो मने भिक्षा आप. तने धर्म लाभ थशे.

वेश्याए नंदिषेण मुनिना आ वचन सांभळी हसता हसता कह्युं, "महाराज, तमे धर्म लाभ आपो छो, पण ते धर्म लाभमां सिध्धि नथी. अर्थ लाभमां छे." वेश्याना आ वचन सांभळी ते वखते अभिमान रुपी पर्वत उपर आरूढ थयेला एवा मुनि नंदीषेण वेश्या प्रत्ये बोली उठ्या के, 'तमारे अर्थ लाभ थाओ.' आ वाक्य मुखमांथी नीकळतांज तेमना तपनी लब्धिथी ते वेश्यानुं घर साडाबार क्रोड सोनैयाथी पुराइ गयुं हतुं. ते विषे निशीथ सूत्रना छठा अध्ययनमां नीचे प्रमाणे कहेलुं छे.

"धम्मलाभं तओ भणइ, अथ्थलाभं विमग्गिओ ।
तेणावि लध्धिजुत्तेण, एवं भवउत्ति भाणियं" ॥१॥

"धर्मलाभ बोले छे, तेवामां तो तेणीए (वेश्याए) अर्थ लाभ माग्यो. तेणे पण लब्धि युक्त थइ 'एमज थाओ' एम कह्युं." १

श्री ऋषिमंडलनी टीका वगेरेमां वळी बीजी रीते कह्युं छे, तेथी तत्त्वनी वात तो केवळी भगवान् जाणे.

वेश्या अत्यंत विस्मय पामी गइ अने उतावळी ऊठी मुनिना चरणमां आवीने नमी पडी. तेणीए हावभाव करी मुनिना चित्तमां विकार उत्पन्न क-

रवा आ प्रमाणे बोली. " स्वामी, तमोए आ सोनैयाथी मने वेचाती लीधी छे, तेथी आ धन साथे मने तमे ज नोगवो. " आ प्रमाणे कही मोहना चाळा करती अने प्रेम वचनोने माधुर्य साथे बोलती वेश्याए मुनिना हृदयने क्षोज पमाम्री दीधुं. मुनि नोग्य कर्मना उदयथी क्षोज पामी वेश्याने वश थइ तेणीना आवासमांज रह्या. तोपण मुनिए ते वखते एवो नियम राख्यो हतो के, वेश्याने त्यां आवनारा कामी पुरुषोमां दररोज दश पुरुषोने धर्मनो उपदेश करी प्रतिबोध पमाम्वा. ज्यारे तेमां एक पण न्यून रहे त्यारे तेनी जग्याए पोताने रही प्रतिबोध पामवो. आ नियमने लइने मुनि वेश्याना गृहद्वार आगळ उन्ना रहेता अने जे कामी पुरुषो त्यां आवे, तेमने अनेक प्रकारनी युक्तिनी रचना साथे आक्षेपणी वगेरे चार प्रकारनी धर्म कथाओ कहेता हता. अने धर्म करावता हता. तेओमांथी तेमणे केटलाएकने तो श्रीजिनेश्वर समीपे महाव्रत लेवरावता अने केटलाएकने सम्यकत्व मूल बार व्रतो अंगीकार करावता हता. आ प्रमाणे धर्म कथाथी नव्य जीवोने प्रतिबोध आपता अने पोते शुध्ध श्रावक धर्मने पाळता बार वर्ष वीती गया हता. हवे तेमना नोग्य कर्म जीर्ण थइ गया, आथी एक दिवसे नव कामी पुरुषोने प्रतिबोध आप्यो,

दशमा पुरुषने शोधतां एक सोनी मळी आव्यो. तेने अनेक प्रकारनी युक्तिथी प्रतिबोध आपवा मांड्यो, पण ते धीठ पुरुष प्रतिबोध पाम्यो नहीं. ज्यारे तेने घणुं समजाव्यो, त्यारे तेणे मुनिने कह्युं. " अरे नाइ, विषय रुप कादवमां बुमेला तारा आत्माने तारवाने तुं पोते समर्थ नथी तो, पछी बीजाने शो उपदेश आपे छे ?" आ अरसामां वेश्याए ते नंदिषेणने नोजन करवाने बोलाव्या, पण दश पुरुषोने प्रतिबोध करवानी पोतानी प्रतिज्ञा पूर्ण थइ नथी, त्यां सुधी तेओ नोजनने इच्छता नथी. रांधेली रसवती बे त्रण वार शीतळ थइ गइ. ज्यारे नंदिषेण आव्या नहीं एटले वेश्या तेमनी पासे आवी अने हसती हसती बोली—" स्वामी, जो कोइ दशमो पुरुष मळतो न होय तो तमे पोतेज दशमा थाओ. अने तमारी प्रतिज्ञा पूर्ण करी आवीने जमी ल्यो. "

वेश्याना आ वचनो सांनळी मुनि नंदिषेण के जेमना नोग्य कर्म पूर्ण थइ गया छे, एवा तेओ फरीवार मुनिवेष लइ श्री वीर प्रज्जुनी पासे आव्या

अने तेमणे तेमनी पासे महाव्रत अंगीकार कर्या. पछी शुद्ध–निर्मल चारित्र पाळी अंते समाधिथी काल करी देवलोकने प्राप्त थया. त्यांथी च्यवीने तेओ महाविदेह क्षेत्रने विषे जइ मोक्ष पदने प्राप्त थशे. आ वृत्तांत श्री वीर चरित्र उपरथी लेवामां आव्यो छे. महा निशीथ सूत्रमां तो नंदिषेणने केवळज्ञाननी प्राप्ति थयेली, एम लखेलुं छे. तेमां तत्त्व शुं छे ? ते केवलिगम्य छे. आ प्रकारे आ धर्मकथी नामना शासनना बीजा प्रभावक जाणवा.

त्रीजा वादी नामना प्रभावक.

वादी, प्रतिवादी, सभ्य अने सभापति ए चतुर्विध पर्षदाने विषे प्रतिपक्षनुं निराकरण करवा पूर्वक स्वपक्षनुं स्थापन करवा भाषण करे ते वादी नामे शासनना त्रीजा प्रभावक कहेवाय छे. जे वाद लब्धिथी संपन्न अथवा वस्तुकवादी होइ देवताओना वृंदोथी पण जेमना वचननो वैभव मंद करी शकाय नहीं एवा होय ते वादी कहेवाय छे. ते उपर प्रत्यक्षादि सर्व प्रमाणोमां कुशळ अने प्रतिवादीनो जय करी राजद्वारमां मोटा माहात्म्यने पामेला मल्लवादीनुं दृष्टांत छे. ते मल्लवादी शासनना त्रीजा प्रभाविक जाणवा. ते मल्लवादीनी कथा अन्य ग्रंथोथी जाणी लेवी.

चोथो नैमित्तिक नामे प्रभावक.

निमित्त एटले लाभ तथा अलाभने सूचवनारुं त्रैकालिक ज्ञान; तेने जे जाणे छे अथवा भणे छे, ते नैमित्तिक कहेवाय छे. जिनमतना प्रतिस्पर्धीने जीतवा माटे भद्रबाहु स्वामी प्रमुखे अनेक निश्चय भरेला चमत्कारो बताव्या हता. चोथा नैमित्तिक नामना शासनना प्रभावकमां महानुभाव भद्रबाहु स्वामीनुं वृत्तांत प्रसिद्ध छे. ते वृत्तांत बीजा ग्रंथोथी प्रख्यात थयेलुं होवाथी अहीं आपवामां आव्युं नथी.

पांचमो तपस्वी नामे प्रभावक.

विशेष उत्कृष्ट अने दुःखथी करी शकाय तेवा अष्टम प्रमुख तपने जे आचरे ते तपस्वी कहेवाय छे. जे तपस्वी शांत रसथी भरपुर थइ अष्टम, चार उपवास, पांच उपवास, पक्ष, मासखमण वगेरे अनेक जातनी तपस्या करी

जिनमतनी प्रज्ञावना करे छे, ते वीर शासननो पांचमो तपस्वी नामे प्रज्ञावक कहे-वाय छे. ते विषे श्रीवीर प्रज्ञुए वर्णन करेला धना कांकदी नामना साधु वगेरेना वृत्तांतो प्रख्यात छे. ते तपस्वी नामे पांचमा प्रज्ञावक जाणवा.

छठो विद्यावान् नामे प्रज्ञावक.

विद्या एटले प्रज्ञप्ति प्रमुख शोळ विद्यादेवीओ अने शासनदेवी तेओ जेमने सहायज्ञूत छे, ते विद्यावान् नामे शासननो छठो प्रज्ञावक कहेवाय छे. ते उपर महानुज्ञाव वज्र स्वामीनुं वृत्तांत प्रसिद्ध छे.

सातमो सिद्ध नामे प्रज्ञावक.

सिद्ध चूर्ण, अंजन, पादलेप, तिलक, अने गुटिका तथा वैक्रिय प्रमुख सिद्धिओ जेने प्राप्त थाय, ते सिद्ध नामे सातमो प्रभावक कहेवाय छे. ते सिद्ध चमत्कार ज्ञरेला संघादिक कार्यो साधवाने माटे अने ते चमत्कारद्वारा मिथ्यात्वनो नाश करवा माटे तेमज शासननी प्रज्ञावना वधारवाने माटे अवसर प्रमाणे ते चूर्ण, अंजन विगेरेने जोडवामां कुशलपणुं बतावे छे. तेवा सिद्धोमां आर्यसमित आचार्य वगेरेना वृत्तांतो प्रख्यात छे. तेओ शासनना सातमा प्रज्ञावक जाणवा.

आर्यसमित सूरिनी कथा.

आज्ञीर देशमां अचलपुर नामे एक नगर छे. ते नगरमां जिन शासनने दीपावनारा अने मोटी समृद्धिमान् घणां श्रावको रहे छे. ते अचळपुरनी समीपे कन्या अने बीणा नामनी बे नदीओ आवेली छे. ते नदीओने मध्य ज्ञाग एक ब्रह्मदीप छे. तेनी अंदर घणा तापसो वसे छे. ते तापसोमां एक तापस पादलेपनी क्रियाने विषे प्रवीण छे. ते हमेशां पाद लेप करी स्थल मार्गनी जेम जल मार्गे चालतो हतो. ते क्रियाथी लोकोने अति आश्चर्य पमाडतो ते तापस बेणा नदी उतरी पारणुं करवाने अचलपुरमां आवतो हतो. ज्ञोळा लोको ते तापसनो आ चमत्कार देखी दुःसह एवा मिथ्यात्वना तापथी तपेला होवाथी पाडानी जेम तेना दर्शन रुप कादवमां खुची गया. ते लोको जिनमतनी श्रद्धावाळा श्रावकोने जिनमतनी अवगणना करता आ प्रमाणे कहेवा लाग्या—श्रावको, जुवो,

अमारा शासनने विषे गुरुनो जेवो प्रत्यक्ष प्रभाव छे, तेवो तमारा शासनमां नथी; तेथी अमारा धर्मनी समान बीजो कोइ धर्म नथी. "

तेमना आ वचन सांभळी " ए भोळा लोकोनुं मिथ्यात्वने विषे स्थिर थवापणुं न थाओ " एम चिंतवी ते श्रावको ते मिथ्यात्वीओना वचनने अनेक युक्तिओथी प्रतिहत करी ते तापसने दृष्टिथी पण जोता नहीं. एक दिवसे आचार्यपणानां संपूर्ण गुणोथी अलंकृत अने अनेक सिद्धिओथी संपन्न एवा श्री वज्रस्वामीना मामा श्री आर्यसमितसूरि त्यां आवी चड्या. तेमना आगमनो वृत्तांत सांभळी नगरना सर्व श्रावकोए मोटा आडंबरथी सामा जइ तेमना चरणकमळने विषे वंदना करी. पछी ते श्रावकोए पेला तापसे करेली जिन शासननी लघुतानो वृत्तांत दीन वचनोथी सूरिजीने निवेदन कर्यो. ते सांभळी आर्यसमितगुरुए ते श्रावकोने आ प्रमाणे कह्युं, " श्रावको, ए कपटी तापस पादलेपनी क्रियाथी मूढ लोकोने ठगे छे; तेनामां बीजी कोइ जातनी तपशक्ति नथी. "

सूरिवरना आ वचनो सांभळी ते श्रावको ते गुरुने सविनय वंदना करी पोताना स्थान तरफ आव्या. तेमणे तत्काल ते धूर्त्त तापसनी परीक्षा करवानो विचार करी ते तापसने अति आदरपूर्वक एक श्रावके पोताने घेर भिक्षा माटे आमंत्रण कर्युं. घणा भक्त अने रागी लोकोथी परिवृत थयेलो ते तापस उत्सुक थइ ते श्रावकने घेर जमवा आव्यो. ते तापसने आवतो जोइ अवसरने जाणनारा ते श्रावके एकदम बेठा थइ तेने बहु मान आपी एक उंचा आसन उपर बेसार्यो, पछी उष्णजलथी ते तापसना चरणनुं क्षालन करवा मांड्युं. ते कपटी तापस पोताना पाद लेपनो नाश थवाना भयथी चरणनुं क्षालन इच्छतो न हतो, तोपण ते श्रावके भक्ति दर्शावतां अति आग्रहथी पाद प्रक्षालन कर्युं. ते एवी रीते मर्दन करीने कर्युं के जेथी लेपनो गंध पण तेमां रह्यो नहीं. पछी अनेक जातनी रसवती पीरसी तेने जमाड्यो. तापस मिष्ट रसवतीने जमतो पण पोताना चरणलेपनो नाश थवाथी कदर्थना थवाना भविष्यना भयथी चिंतातुर रहेतो हतो. तेने रसवतीनो स्वाद पण बे स्वाद लागतो हतो. भोजन कर्या पछी ते बेणा नदीने कांठे आव्यो. तेनी ते चमत्कारी क्रिया जोवाने हजारो लोको एकठा थया हता. तेमां श्रावको पण मोटी संख्यामां हाजर हता. ते वखते कपटी तापसे विचार कर्यो के,

ते श्रावके चरणनो लेप धोइ नांख्यो छे, छतां तेनी अंदर लेपनो कांइक अंश रहे लो हशे, तेथी जल मार्गे चालवामां हरकत नहीं आवे. आवुं चिंतवी ते तापस हिंमत लावीने वेणा नदीना पूरमां पेठो. तेमां पेसतांज ते जलमां बुडवा लाग्यो. 'हुं बुडुं छुं हुं बुडुं छुं' एम तेणे पोकार करवा मांड्या, ते वखते केटलाएक दयालु श्रावकोए अनुकंपा करी तेनी पाछळ दोडी तेने जलनी बाहेर काढयो. ते वखते तेनुं पोगळ सर्वना जाणवामां आव्युं. केटलाएक लोको ' अरे ! आ कपटीए आपणने छेतर्या हता, ' एम कहेवा लाग्या. ते पछी केटलाएक तेना रागी बनेला मिथ्यात्वीओ पण तत्काल जैनधर्मना रागी बनी गया. ते वखते श्री जिन शासननी प्रभावना करवाने इच्छता अने अनेक योगना संयोगने जाणनारा श्री आर्य समित सूरि त्यां आव्या. तेमणे ते वेणा नदीमां एक चूर्ण नांखीने सर्व लोकोनी समक्ष कह्युं के, " वेणानदी, अमारे तारी पेली पार जवानी इच्छा छे. " आटलुं कहेतांज ते नदीना बे कांठा एकदम भेगा मळी गया. ते जोइ सर्व लोको आश्चर्य पामी गया. ते पछी ते महान् आचार्य अमंद आनंदथी पूर्ण एवा चतुर्विध संघ सहित ते नदीना सामेना तीरनी भूमि उपर आवी पहोंच्या. अने त्यां तेमणे सत्य धर्मोपदेश आपी सर्व तापसोने प्रतिबोध आप्यो. आचार्यना प्रतिबोधथी जेमना हृदयमां सर्व मिथ्यात्व मल नाश पाम्यो छे, एवा ते सर्व तापसोए प्रतिबोध पामी ते आचार्यनी दीक्षा ग्रहण करी हती. ते तापस साधुओथी ब्रह्म दीपिका नामे एक शाखा चाली छे ते आगममां प्रसिद्ध छे.

आ प्रमाणे महानुभाव आर्यसमितसूरि ते पाखंडीओना तीव्र मतनुं खंडन करी, जिनमतनी भारे प्रभावना वधारी, अने ते उत्कृष्ट एवा जिनमतने विषे रक्त थयेला भव्यजनोना मनने हर्षमय करी त्यांथी बीजे स्थले विहार कर्यो हतो. त्यां रहेला सर्व श्रावको अनेक प्रकारनी धर्मक्रिया वडे जिन शासननी उन्नति करतां सुखे श्रावक धर्म पाळतां अनुक्रमे सद्ग[illegible] भाजन थया

त्पन्न करनार अने अनेक जाषाए ग्रंथित एवा गद्यमय तथा पद्यमय प्रबंधोनुं वर्णन करे ते ' कवि ' कहेवाय छे. आपणा सत्यधर्मनी वृद्धिने अर्थे सुंदर तथा रसिक वचनोनी रचना करी राजा प्रमुख उत्तमजनोने ते प्रतिबोधे छे, तेथी ते कवि ए शासननो आठमो प्रजाविक गणाय छे. ते उपर सिद्धसेन दिवाकरनुं दृष्टांत आपवामां आवे छे.

सिद्धसेन दिवाकरनुं दृष्टांत.

उज्जयिनी नगरीने विषे श्री विक्रमादित्य नामे राजा हतो. तेने देवसिका नामनी मातानी कुक्षिमांथी उत्पन्न थयेलो अने सर्व विद्यामां प्रवीण एवो मुकुंद नामे एक पुरोहित पुत्र हतो. एक वखते ते मुकुंद वाद–विवाद करवाने माटे नृगुपुर (जरूच) तरफ चाल्यो. रस्तामां चालता जैनोना गुरु वृद्धवादी आचार्य तेने सामा मळ्या. तेमनी साथे ए मुकुंद वाद करवाने तैयार थयो. ते वखते बंनेनी वच्चे एवी प्रतिज्ञा करवामां आवी के, जे कोइ जेनाथी हारे ते तेनो शिष्य थाय. आवी प्रतिज्ञा करी तेमणे तेज स्थळे कोइना क्षेत्रमां वादनो आरंज कर्यो, ते स्थळे हार जीतमां साक्षी तरीके गोवाळीयाओने राखवामां आव्या. तत्काल मुकुंदे आचार्यनी साथे प्रथम वादनो आरंज कर्यो. अने संस्कृत जाषामां पूर्व पक्ष ग्रहण कर्यो. ते वखते गोवाळीआ लोको संस्कृत जाषा समजी शक्या नहीं, एटले तेमणे जणाव्युं के अमे आ जाषामां कांइ पण समजता नथी. तोपण मुकुंदे संस्कृत जाषा छोडी नहीं एटले गोवाळीयाओए जाण्युं के, आ पुरोहित कांइ पण समजतो नथी. ' पछी गुरु महाराज अवसर जाणी रजोहरणने कटी साथे बांधी चपटीथी नृत्य करतां बोल्या—

" नवि चोरीए नवि मारीए, परदारा गमण निवारीए;
थोवा थोवं दाइए, सग्ग मटामट जाइए. १

कालो कंबल अरुणी छट्ट, गाछें जरिओ दीवरू पट्ट;
एवरू पमीओ नीले कारू, अवर कीशुं छे सग्ग निलारू. २

ते श्रावके चरणनो लेप धोइ नांख्यो छे, छतां तेनी अंदर लेपनो कांइक अंश रहे लो हशे, तेथी जल मार्गे चालवामां हरकत नहीं आवे. आवुं चिंतवी ते तापस हिंमत लावीने वेणा नदीना पूरमां पेठो. तेमां पेसतांज ते जलमां बुडवा लाग्यो. 'हुं बुडुं बुं हुं बुडुं बुं' एम तेणे पोकार करवा मांड्या, ते वखते केटलाएक दयालु श्रावकोए अनुकंपा करी तेनी पाछळ दोडी तेने जलनी बाहेर काढयो. ते वखते तेनुं पोगळ सर्वना जाणवामां आव्युं. केटलाएक लोको ' अरे ! आ कपटीए आपणने छेतर्या हता, ' एम कहेवा लाग्या. ते पछी केटलाएक तेना रागी बनेला मिथ्यात्वीओ पण तत्काल जैनधर्मना रागी बनी गया. ते वखते श्री जिन शासननी प्रभावना करवाने इच्छता अने अनेक योगना संयोगने जाणनारा श्री आर्य समित सूरि त्यां आव्या. तेमणे ते वेणा नदीमां एक चूर्ण नांखीने सर्व लोकोनी समक्ष कह्युं के, " वेणानदी, अमारे तारी पेली पार जवानी इच्छा छे. " आटलुं कहेतांज ते नदीना बे कांठा एकदम भेगा मली गया. ते जोइ सर्व लोको आश्चर्य पामी गया. ते पछी ते महान् आचार्य अमंद आनंदथी पूर्ण एवा चतुर्विध संघ सहित ते नदीना सामेना तीरनी भूमि उपर आवी पहोच्या. अने त्यां तेमणे सत्य धर्मोपदेश आपी सर्व तापसोने प्रतिबोध आप्यो. आचार्यना प्रतिबोधथी जेमना हृदयमां सर्व मिथ्यात्व मल नाश पाम्यो छे, एवा ते सर्व तापसोए प्रतिबोध पामी ते आचार्यनी दीक्षा ग्रहण करी हती. ते तापस साधुओथी ब्रह्म दीपिका नामे एक शाखा चाली छे ते आगममां प्रसिद्ध छे.

आ प्रमाणे महानुभाव आर्यसमितसूरि ते पाखंडीओना तीव्र मतनुं खंडन करी, जिनमतनी भारे प्रभावना वधारी, अने ते उत्कृष्ट एवा जिनमतने विषे रक्त थयेला भव्यजनोना मनने हर्षमय करी त्यांथी बीजे स्थले विहार कर्यो हतो. त्यां रहेला सर्व श्रावको अनेक प्रकारनी धर्मक्रिया वडे जिन शासननी उन्नति करतां सुखे श्रावक धर्म पाळतां अनुक्रमे सद्गतिना भाजन थया हता. आ प्रमाणे ते आर्यसमितसूरिनुं दृष्टांत ' सिद्ध ' नामना शासनना सातमा प्रभावक विषे जाणवुं.

शासन कवि नामनो आठमो प्रभावक.

जे नव नवा वचनोनी रचनाओथी सुशोभित, श्रोतृवर्गना मनने हर्ष उ-

त्पन्न करनार अने अनेक जाषाए ग्रंथित एवा गद्यमय तथा पद्यमय प्रबंधोनुं वर्णन करे ते ' कवि ' कहेवाय छे. आपणा सत्यधर्मनी वृध्धिने अर्थे सुंदर तथा रसिक वचनोनी रचना करी राजा प्रमुख उत्तमजनोने ते प्रतिबोधे छे, तेथी ते कवि ए शासननो आठमो प्रजाविक गणाय छे. ते उपर सिध्धसेन दिवाकरनुं दृष्टांत आपवामां आवे छे.

सिद्धसेन दिवाकरनुं दृष्टांत.

उज्जयिनी नगरीने विषे श्री विक्रमादित्य नामे राजा हतो. तेने देवसिका नामनी मातानी कुक्षिमांथी उत्पन्न थयेलो अने सर्व विद्यामां प्रवीण एवो मुकुंद नामे एक पुरोहित पुत्र हतो. एक वखते ते मुकुंद वाद–विवाद करवाने माटे जृगुपुर (जरूच) तरफ चाल्यो. रस्तामां चालता जैनोना गुरु वृध्धवादी आचार्य तेने सामा मळ्या. तेमनी साथे ए मुकुंद वाद करवाने तैयार थयो. ते वखते बंनेनी वच्चे एवी प्रतिज्ञा करवामां आवी के, जे कोइ जेनाथी हारे ते तेनो शिष्य थाय. आवी प्रतिज्ञा करी तेमणे तेज स्थळे कोइना क्षेत्रमां वादनो आरंज कर्यो, ते स्थळे हार जीतमां साक्षी तरीके गोवाळीयाओने राखवामां आव्या. तत्काळ मुकुंदे आचार्यनी साथे प्रथम वादनो आरंज कर्यो. अने संस्कृत जाषामां पूर्व पक्ष ग्रहण कर्यो. ते वखते गोवाळीआ लोको संस्कृत जाषा समजी शक्या नहीं, एटले तेमणे जणाव्युं के अमे आ जाषामां कांइ पण समजता नथी. तोपण मुकुंदे संस्कृत जाषा छोडी नहीं एटले गोवाळीयाओए जाण्युं के, ' आ पुरोहित कांइ पण समजतो नथी. ' पछी गुरु महाराज अवसर जाणी रजोहरणने कटी साथे बांधी चर्पटीथी नृत्य करतां बोल्या—

" नवि चोरीए नवि मारीए, परदारा गमण निवारीए;
थोवा थोवं दाइए, सग्ग मटामट जाइए. १

कालो कंबल अरुणी छट्ट, छाछें जरिओ दीवरु पट्ट;
एवम् पमीओ नीले झाम, अवर कीशुं छे सग्ग निलाम. २

अर्थ—चोरी करवी नहीं, कोइ जीवने मारवा नहीं, परस्त्री गमन करवुं नहीं, वधारे शक्ति होयतो विशेष दान आपवुं अने अल्पशक्ति होय तो थोडुं दान आपवुं, एम करवाथी सुखे देवलोकमां जवाय छे. जेमनी पासे काळी कांबलो होय छे, जेओ वृक्षनो छालना वस्त्रो पेहेरे छे अने जेओ छासथी जरेली दोणी उपर रोटला राखी लीला सुगंधी आंबाना वृक्ष नीचे रहेला छे, एवा गोवालीयाओने गुरु महाराज कहे छे के, तमारे आवी सामग्री छे ते छतां तमारा जाग्यमां वीजुं शुं स्वर्ग छे? तमारे तो अहींज स्वर्ग छे. १–२

आचार्यनी आ वाणी सांजळी ते गोवालीयाओ खुशी खुशी थइ गया अने सर्वे एकी साथे कहेवा लाग्या के, आ महाराजे आ मुकुंदने जीती लीधो छे. ते पछी ते वृद्धवादी आचार्य राजसजामां गया अने त्यां मुकुंदनी साथे चर्चा करी तेने पराजुत करी दीधो अने तेने पोतानो शिष्य बनाव्यो. अने तेनुं कुमुदचंद्र एवुं नाम राख्युं. कुमुदचंद्र ते आचार्यनी पासे अज्यास करी आगळ वध्या. पछी गुरुए तेनुं सिद्धसेन दिवाकर एवुं नाम आप्युं. अने त्यारथी ते एज नामथी विख्यात थया हता.

एक वखते सिद्धसेन दिवाकरनी पासे कोइ जट वाद करवाने आव्यो हतो. तेने संजळाववा माटे ते चतुर विद्वाने " नमो अरिहंताणं " इत्यादि प्राकृत पाठने वदले " नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुज्यः " एवो संस्कृत बोल्या हता. ए संस्कृत वाक्य चौद पूर्वनी आदिमां रहेलुं हतुं. एक दिवसे दिवाकरे पोताना गुरुने पुछ्युं के, आपणा सर्व जैन आगमो प्राकृत जाषामां छे, ते संस्कृतमां होय तो केवा बने? जो आपनी आज्ञा होय तो हुं ते सर्वने संस्कृतमां गोठवी दउं. त्यारे गुरुए सिद्धसेन दिवाकरने नीचेना श्लोकथी कह्युं—

" बालस्त्री मंदमूर्खाणां, नृणां चारित्रकांक्षिणाम् ।
अनुग्रहाय तत्त्वज्ञैः, सिद्धांतः प्राकृतः कृतः" ॥१॥

बाल, स्त्री, मंद बुद्धि, अने मूर्ख एवा चारित्रना अजिलाषी पुरुषोनी पर अनुग्रह करवा माटे तत्त्वज्ञ पुरुषोए जैन सिद्धांतने प्राकृत करेलो छे. १

तेथी हे शिष्य, तारा हृदयमां प्राकृत आगमने संस्कृत करवानी जे स्फुरणा थइ, तेथी तने प्रायश्चित्त लाग्युं छे. अने तेथी तने गच्छनी बाहेर मुकवानी शिक्षा करवामां आवे छे. आ प्रमाणे कही ते आचार्ये सिध्धसेन दिवाकरने गच्छनी बाहेर मुकी दीधा हता. आ वखते समस्त संघे आवी सूरिवरने विनंति करी के, " स्वामी, सिध्धसेन दिवाकर कवित्व वगेरेना गुणोथी युक्त छे, तेथी ते शासनना प्रभावक छे, माटे तेमने गच्छनी बाहेर मुकवा न जोइए. आ प्रमाणे संघना अति आग्रह पूर्वक कहेवाथी गुरुए कह्युं के ते सिध्धसेनदिवाकर द्रव्यथी मुनिवेशनो त्याग करी अने भावथी मुनिवेषने धारण करी अनेक प्रकारना तप करतां छेवटे अढार राजाओने प्रतिबोध पमाडी जैनो करशे अने एक नवुं तीर्थ प्रगट करशे, त्यारे हुं तेने गच्छनी अंदर लइश. ते शिवाय लेवामां आवशे नहीं " गुरुना आ वचन सांभळी सिध्धसेनदिवाकरे विचार करी ते गुरुना वचनने अंगीकार कर्यु अने त्यांथी विहार करी तेओ उज्जयिनी नगरीमां आव्या.

एक वखते सिध्धसेनदिवाकर कोइ शेरीमांथी बीजी शेरीमां पेशता हता, तेवामां घोडा खेलववा माटे जतां एवा विक्रम राजाए तेमने जोया. तत्काल राजाए दिवाकरने पुछ्युं, के, " तमे कोण छो ? " सिध्धसेनदिवाकरे उत्तर आप्यो, " अमे सर्वज्ञ पुत्र छीए. " तत्काल राजाए तेमने मानसिक नमस्कार कर्यो. सिध्धसेनदिवाकरे तेमने उंचे स्वरे धर्मलाभ दीधो, त्यारे राजाए आश्चर्य पामीने पुछ्युं के, " तमे कोने धर्मलाभ आप्यो ? " दिवाकरे कह्युं, " जेणे अमोने नमस्कार करेलो छे, तेमने अमे धर्मलाभ आप्यो छे. " ते सांभळी राजा आश्चर्य साथे संतुष्ट थइ गयो अने तेणे हर्षथी तेमने विनंति करी के, " तमारे तमारा पवित्र चरणवडे मारा सभा मंडपने पवित्र करवो. " आम कही विक्रमराजा पोताने स्थाने चाल्यो गयो हतो.

एक वखते सिध्धसेनदिवाकर विक्रमराजाना चार नवा श्लोको रची राजद्वारे गया अने तेमणे द्वारपाल पासे नीचे प्रमाणे राजाने कहेवराव्युं—

" दिदृक्षुर्भिक्षुरायातो, द्वारे तिष्ठति वारितः ।
हस्तन्यस्तचतुः श्लोको, यद्वागच्छतु गच्छतु ॥ १ ॥

"राजाने मळवानी इच्छाथी भिक्षुक आव्यो छे; पण द्वार उपर अट-काववाथी ते त्यां उभो छे. तेना हाथमां चार श्लोक छे; ते आपनी पासे आवे के पाछो जाय." १

राजाए उत्तरमां नीचे प्रमाणे कहेवराव्युं—

दीयंतां दशलक्षाणि, शासनानि चतुर्दश ।
हस्तन्यस्तचतुः श्लोको यद्वा गच्छतु गच्छतु ॥ २ ॥

जेना हाथमां चार श्लोको छे, ते भिक्षुकने दश लाख द्रव्य अने चौद गामोना पट्टा करी आपो. ते खुशी होय तो आवे अने खुशी न होय तो पाछो जाय." २

ते पछी सिद्धसेन दिवाकर राजानी पासे गयो. ते वखते महाराजा वि-क्रम पूर्व दिशा तरफ सिंहासन उपर बेठा हता. त्यां जइ ते कवीश्वर नीचे प्र-माणे नवीन श्लोक बोल्या—

"आहते तव निःस्वाने, स्फुटिते रिपुहृद्घटे ।
गलिते तत्प्रियानेत्रे, राजंश्चित्रमिदं महत्" ॥ १ ॥

"हे राजा, तमारा नीशाननो डंको वागतां तमारा शत्रुओनो हृदयरूप घमो फूटी जाय छे अने तेमनी स्त्रीओना नेत्र गळे छे. आ एक मोटुं आश्चर्य छे." १

आ श्लोक सांभळी राजा विक्रम दक्षिण दिशा तरफ मुख करीने बेठा. कारणके, ते श्लोकथी प्रसन्न थयेला राजाए मनमां चिंतव्युं के, "मैं आ भिक्षुक कविने मारुं पूर्व दिशानुं राज्य आपी दीधुं."

ते पछी आचार्य पुनः सन्मुख आवी नीचे प्रमाणे श्लोक बोल्या—

"अपूर्वेयं धनुर्विद्या, भवता शिक्षिता कुतः ।
मार्गणौघः समभ्येति, गुणो याति दिगंतरम् ॥ २ ॥

हे राजा, कोइ अपूर्व धनुर्विद्या तमो क्यांथी शीख्या के जेथी त-

मारी आगळ मार्गण-बाणोना समूह आवे छे अने गुण (पणछ) बीजी दिशामां जाय छे. एटले कहेवानो आशय एवो छे के, धनुर्विद्या जाणनार पुरुष मार्गण-बाणोना समूहने बीजा तरफ फेंके छे, अने गुण-पणछ उंची चढे छे. परंतु तमारे तो बाणो तमारी पासे आवे छे, अने पणछ बीजी दिशामां जाय छे. आ विरोधनो परिहार एवी रीते छे के, हे राजा, तमारी आगळ मार्गण-याचक लोकोना समूह आवे छे अने तेथी तमारा गुणो बीजी दिशाओमां फेलाय छे. १

आ श्लोक सांजळी राजा विक्रम पश्चिम दिशा तरफ मुख राखीने बेठो एटले दक्षिण दिशानुं राज्य तेने आपी दीधुं. ते वखते सिद्धसेन आचार्य नीचे प्रमाणे त्रीजो श्लोक बोल्या—

" सरस्वती स्थिता वक्त्रे, लक्ष्मीः करसरोरुहे ।
कीर्तिः किं कुपिता राजन्, येन देशांतरं गता ॥ ३ ॥"

हे राजा, तमारा मुखमां सरस्वती रहेल छे अने तमारा करकमळमां लक्ष्मी रहे छे. तोपछी कीर्त्ति शा माटे कोप पामी छे के जे रीसाइने देशांतरमां चाली गइ छे. " ३

आ श्लोक सांजळी राजा विक्रम उत्तर दिशा तरफ मुख राखीने बेठा; त्यारे सिद्धसेनाचार्य तेनी सन्मुख थइ नीचेनो चोथो श्लोक बोल्या—

" सर्वदा सर्वदो सीति, मिथ्या संस्तूयसे बुधैः ।
नारयो लेभिरे पृष्ठं, न वक्षः परयोषितः " ॥ १ ॥

हे राजा, तुं हमेशा सर्वद-सर्व वस्तुओने आपनारो छे, एम विद्वानो तारी स्तुति करे छे, ते मिथ्या छे, कारण के तारा शत्रुओने तें पीठ आपी नथी अने परस्त्रीओने छाती आपी नथी अर्थात् जे सर्व वस्तुनो दाता होय ते तेवी वस्तुने शा माटे न आपे ? कहेवानो आशय एवो छे के, तुं कदिपण रणभूमिमां थी पाछो फर्यो नथी के जेथी तारा शत्रुओ तारी पीठ जुवे अने तें कदिपण परस्त्रीने छाती साथे दबावी नथी के जेथी ते तारी छातीने मेळवे. " ४

आ श्लोक सांजळी संतुष्ट थयेला राजा तत्काल पोताना सिंहासन उपरथी बेठो थयो अने तेणे चारे दिशाओनुं राज्य सूरिवरने आपवा मांगयुं, त्यारे

सूरि सिध्धसेन दिवाकरे कह्युं. " राजन्, मारे राज्यनी कांइ जरुर नथी."
राजाए पुछयुं, " त्यारे तमारे शुं जोइए छीए ? " सूरिजी बोल्या. " हुं मात्र
एटलुं मागुं छुं के ज्यारे हुं तमारी पासे आवुं, त्यारे तमारे मारा मुखथी धर्म
सांभळवो. " राजाए ते वात अंगीकार करी. ते पछी आचार्य सिध्धसेन दिवाकर
पोताने स्थाने चाल्या गया हता.

एक वखते आचार्य सिध्धसेन उज्जयिनी नगरीमां आवेला महाकाल
शंकरना प्रासादमां जइ ते शंकरना लिंग उपर पग करी सुइ गया हता. प्रातःकाले ते शंकरना पूजारीओए आवी तेमने पोकार करी· उठाडवा मांड्या, तोपण
तेओ उठ्या नहीं. ते वखते ते लोकोए जइने राजानी आगळ फरीयाद करी के,
राजेंद्र, कोइ भिक्षुक महाकाल शिवना लिंग उपर पग करीने सुतो छे. अमोए
तेने घणुं कर्युं तोपण ते उठतो नथी. " लोकोना आ वचनो सांभळी राजा विक्रमे हुकम कर्यो के, " तेने मारीने काढो. " तत्काल राजानी आज्ञा मेळवी ते
लोको त्यां आव्या अने चाबुक तथा लाकडीओना प्रहारथी सिध्धसेनने मारवा
लाग्या. जेम जेम ते आचार्यना शरीर उपर घा पडवा लाग्या, तेवी रीते राजाना
अंतःपुरमां राजानी राणीना शरीर उपर घा पडवा मांड्या, आथी जनानामां
मोटो कोलाहल उठ्यो अने ते सांभळी राजा त्यां दोडी आव्यो अने आश्चर्यथी पुछवा लाग्यो के, ' आ शुं थयुं ? तेवामां कोइए आवी राजाने जणाव्युं के,
" महाराज, कोइ महाकाल प्रसादनी अंदर भिक्षुकने ताडना करे छे, ते ताडनाना प्रहारो अंतःपुरमां राणी साहेबने वागे छे. राजा तत्काल महाकाल प्रासादमां गयो, त्यां तेमणे सिध्धसेन आचार्यने जोया अने तत्काल ओळखी लीधा.
तत्काल तेमणे लोकोने ताडना करतां अटकाव्या अने पछी बधो वृत्तांत सांभळ्यो.
राजाए आचार्यने पुछ्युं के, " तमे महादेवना लिंग उपर चरण शामाटे मुक्या
हता ? आ महादेव ए मोटो देव छे अने स्तुति करवा योग्य छे. " आचार्ये कह्युं, राजन, महादेव तो अनन्य देव छे जे महादेव छे. तेनी हुं स्तुति करुं छुं, ते
तमे सावधान थइने सांभळो. " आ प्रमाणे कही सिध्धसेन आचार्ये कल्याणमंदिरस्तोत्र रचवानो आरंभ कर्यो. ज्यारे तेमणे अगीयारमां श्लोकनुं आदिपद
" यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः " आ प्रमाणे कह्युं, त्यारे तत्काल पृथ्वी
कंपायमान थवा लागी. अने अग्निनो धुमाडो नीकळवा लाग्यो. क्षणवारमां ते

शिवलिंगना बे कटका थया अने तेमांथी तेजनो समूह चारे तरफ प्रसरी गयो. तेम थतांज तेमांथी धरणेंद्र सहित श्री पार्श्वनाथजीनी प्रतिमा प्रगट थइ आवी. ते वखते आचार्ये ते स्तोत्रने संपूर्ण करी आ प्रमाणे कह्युं, " राजन्, अहिं प्रथम अवंतिसुकुमालनो लोकप्रसिध्ध पुत्र हतो. तेना पिता नलिनीगुल्म विमानमां गया हता. तेओ जे स्थाने कायोत्सर्ग करीने रह्या हता, ते स्थाने तेणे महाकाल नामे लोक प्रसिध्ध नवो प्रासाद करावी आ प्रतिमानी प्रतिष्ठा करी हती. केटलोक काल गया पछी मिथ्यादृष्टिओए ते पार्श्वनाथना प्रतिबिंबने आच्छादित करी ते ठेकाणे आ शिवलिंगनी स्थापना करी दीधी हती. अत्यारे मारी आ स्तुतिना प्रभावथी ते लिंग फाटी तेमांथी ते प्रतिमा प्रगट थइ छे. " आचार्यना आ वचन सांभळी विक्रम राजाना हृदयमां चमत्कार साथे हर्ष उत्पन्न थइ आव्यो. तत्काल तेज वखते राजा विक्रमने जिनोक्त तत्त्वना स्वरूप उपर पूर्ण श्रध्धा थइ अने तेने सम्यक्त्व रत्ननी प्राप्ति थइ आवी. उदार महाराजाए तेज क्षणे ते पार्श्वनाथ प्रभुनी नित्य पूजाना निर्वाहने माटे एकसो गाम अर्पण कर्या अने पोते श्रावक धर्म अंगीकार कर्यो. आचार्य सिध्धसेन दिवाकरे महाराजा विक्रमनी आज्ञामां वर्तनारा बीजा अढार राजाओने प्रतिबोधित कर्या. आचार्यना गुणोना समूहथी रंजित थयेला विक्रम राजाए आचार्यने बेसवा माटे एक पालखी भेट करी हती. ते पछी ते महान् आचार्य ते पालखीमां बेशी निरंतर राजद्वारमां जता हता. ते पछी वृद्धवादी आचार्यना सांभळवामां आव्युं के, सिध्धसेन दिवाकर जे कार्य करवा माटे गया हता, ते कार्य तो सिद्ध थइ गयुं छे, परंतु तेओ प्रमादरूपी कादवमां मग्न थइ गया छे—राजमानना पाशमां सपडाइ गया छे, माटे मारे त्यां जइ तेमने प्रतिबोध आपवो, अने तेमने प्रमादमांथी मुक्त करी सन्मार्गे दोरवा. " आवुं विचारी वृद्धवादी गुरु विहार करी उज्जयिनी नगरीमां आव्या. सिध्धसेन विक्रम राजाना बहुमानथी तेमनी पासे जइ शक्या नहीं, तेथी वृद्धवादी आचार्य पालखी उपाडनार भोइनुं रूप धारण करी तेने द्वारे उभा रह्या. ज्यारे सिध्धसेनसूरि पालखीमां बेशी राजभुवन तरफ जता हता, तेटलामां ते वृध्धवादीसूरिजीए एक भोइने बदले पोते पालखी उपाडी अने वृध्धपणाने लइने तेओ मंद मंद गतिथी चालवा लाग्या. तेमने मंदगतिथी चालतां जोइ सिध्धसेन दिवाकर नीचे प्रमाणे बोल्या—

" भूरिभारभराक्रांतः स्कंधः किं तव बाधति ।

" घणा भारथी आक्रांत थयेला तारा स्कंधने शुं कांइ बाधा थाय छे ?"

आ वाक्यमां 'बाधति' ए अशुध्ध रूप छे. कारणके, 'बाध्' धातु आत्मनेपद होवाथी तेनुं खरुं रूप 'बाधते' थवुं जोइए. आचार्य सिध्धसेन दिवाकरे प्रमादथी तेवी भूल करी एटले गुरुए नीचे प्रमाणे कह्युं.

" न तथा बाधते स्कंधो यथा बाधति बाधते " ॥ १ ॥

जेवी रीते बाधते ने बदले तुं बाधति एवुं अशुध्ध रूप बोल्यो, ते मने जेवुं पीडे छे, तेवी स्कंधने पीडा थती नथी. "

आ सांभळी ते आचार्य सिध्धसेन चमत्कार पामी विचारमां पडी गया. तत्काल तेमणे विचार्युं के, 'आ कोण छे?' तेमने जोतांज तेमना जाणवामां आव्युं के, 'आ तो वृध्धवादी गुरु छे.' तत्काल पोते पालखी उपरथी उतरी तेमना चरणमां नमी पडया अने 'मारो अपराध क्षमा करो, क्षमा करो' एम कहेवा लाग्या. पछी गुरुए सिध्धसेनने फरीथी प्रतिबोध पमाडी संघनी समक्ष मिथ्या-दुष्कृत आपवा पूर्वक तेमने संघमां लीधा हता.

महानुभाव दिवाकर पछी चिरकाल सुधी श्री वीरशासननी प्रभावना करी अंते सद्गतिना भाजन बन्या हता. आ प्रमाणे ते आचार्य कवि नामना आठमा प्रभावक जाणवा. एवी रीते शासनना आठ प्रभावक कहेवाय छे. ते प्रवचनी आदि आठ प्रभावको जिनशासनने शोभावे छे. पोताना प्रकाशक स्वभाववाळुं जे प्रवचन कहेवाय छे, तेने देश, काल, भाव, द्रव्य तथा क्षेत्रनी योग्यता प्रमाणे सहाय करवाथी–जेओ प्रकाश करे छे, तेथी तेओ प्रभावको कहेवाय छे. तेओनी क्रियारुप प्रभावना सम्यक्त्वने निर्मल करे छे.

बीजे प्रकारे आठ प्रभावक.

ते आठ प्रभावकने बीजे प्रकारे पण दर्शावे छे.

"अइसेसइढ्ढि[1] धम्मकहि[2],
वाइ आयरिय[4] खवग[5] नेमित्ति[6] ।

विज्जाव रायगण संं—
पयाय तित्थं पन्नावंति ॥ १ ॥

अतिशय ऋद्धिवाळा अवधिज्ञानी, मनःपर्यवज्ञानी, आमर्ष औषधि प्रमुख लब्धिवान् ते पेहला; बीजा धर्मकथी, त्रीजा वादी, चोथा आचार्य, पांचमा क्षपक—मोटी आतापना प्रमुख लेनार तपस्वी, छठा निमित्ति, सातमा विद्याश्रेष्ठ अने आठमा राजवल्लभ तथा गच्छ—समुदाय वल्लभ अर्थात् महाजनमान्य ए प्रमाणे आठ प्रभावक बीजे प्रकारे जाणवा.

सम्यक्त्वना पांच भूषण.

जिनशासनमां एटले अरिहंतना दर्शनमां कुशलपणुं, ए पेहेलुं भूषण छे. ते सम्यक्त्वने शोभावे छे, माटे भूषण कहेवाय छे. तेथी सम्यग्दृष्टि जीवोए तेवी कुशलता मेलववामां विशेष उद्यम करवो. अरिहंतना दर्शनने विषे कुशल एवो पुरुष द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावादिकने अनुसारे अनेक प्रकारना उपायो योजी बीजा अज्ञानी जीवोने सुखे करी प्रतिबोध पमाडे छे. ते विषे कमळ नामना एक श्रावक पुत्रने प्रतिबोध पमाडनार श्रीगुणाकरसूरिनो वृत्तांत प्रख्यात छे. बीजा ओए ते सूरिवरनी जेम जिनमतने विषे कुशलता करवी जोइए.

श्रीगुणाकरसूरिनो वृत्तांत.

एक नगरने विषे धन नामे श्रावक रहेतो हतो. ते धनवान्, बुद्धिमान् अने गुणी हतो. तेथी ते महाजन मंडलमां मान्य थइ पड्यो हतो. ते धन शेठने कमल नामे एक पुत्र हतो. ते घणो कलावान् अने चतुर हतो. पण धर्म तरफ अरुचि धरनारो हतो. धर्मना तत्त्व उपर तेनी बीलकुल श्रद्धा नहती. तेनो पिता धन शेठ तेने घणुं समजावतो पण ते मानतो नहतो. ज्यारे तेनो पिता कांइपण तत्त्वनी वात कहे त्यारे ते उठीने नाशी जतो हतो. आथी धन शेठ घणो कंटाळी गयो हतो.

एक वखते धन शेठना मनमां विचार थयो के, जो कोइ आर्हत धर्मना प्रवीण आचार्य अहीं आवे तो मारा पुत्रने लाभ थया विना रहे नहीं. कोइ

पवित्र महात्मानी सेवा करवाथी आ कमळने धर्मनी प्राप्ति थया विना रहेशे नहिं. आ अरसामां कोइ आचार्य महाराज ते नगरनी समीपे आवेला वनमां आवी समोसर्या. आ खबर सांभळी नगरना लोको तेमने वंदना करवाने गया. तेमनी साथे धन शेठ पण गुरुने वंदना करवा आव्यो. गुरुए तेओने धर्मनो उपदेश आप्यो. देशना समाप्त थया पछी बीजा नगरजनो तेमने वंदना करी पोत पोताने स्थले चालता थया. पाछळ रहेला धन शेठे ते महानुभावने आ प्रमाणे विनंति करी—" स्वामी, मारो पुत्र कमळ धर्मना विचारथी तदन अज्ञात छे. धार्मिक तत्त्व उपर तेनी श्रद्धा उत्पन्न थती नथी. तो कृपा करी आपे तेने प्रतिबोध आपवो जोइए. आपना जेवा गीतार्थ गुरुनो बोध कदिपण निष्फल थतो नथी. धन शेठना आ वचनो सांभळी आचार्ये ते वात मान्य करी पछी तत्काल शेठ घेर आव्या अने तेमणे तेना पुत्र कमलने आ प्रमाणे कह्युं,—" पुत्र, आजे एक गीतार्थ गुरु वनने विषे पधार्या छे, तो तारे त्यां जइ तेमना वचन सांभळवा. " पिताना कहेवाथी कमळ ते आचार्यनी पासे आव्यो अने नम्रमुख थइ तेमनी पासे बेठो. आचार्ये तरत सातनय युक्त एवा द्रव्यगुण पर्यायवर्गे गर्भित विचारवाळी देशना आपी. देशना समाप्त थया पछी आचार्ये पुछ्युं, " भद्र, अत्यार सुधीमां तारा समजवामां कांइ आव्युं ? " कमळे प्रत्युत्तर आप्यो, " भगवान, कांइक जाणयुं छे. ' आचार्ये कह्युं, " शुं जाणयुं ? ' कमल बोल्यो, " भगवान, आ नजीक रहेल बोरडीना वृक्षना बिलमांथी मंकोडा नामना एकसोने आठ तेइंद्रि जीवो नीकळीने बीजा बिलमां पेठा. ते मारा जाणवामां आव्युं. पुनः आचार्ये पूछ्युं, " ए तो ठीक, पण अमारा कहेवामांथी कांइ जाणयुं ?,' कमळे कह्युं, " ना, कांइ जाणयुं नथी. " कमलनुं आ वचन सांभळी आचार्ये जाणयुं के, ' आ अयोग्य छे ' पछी तेओ मौन धरी रह्या. पछी कमल उठीने पोताने घेर चाल्यो गयो. बीजे दिवसे कमलनो पिता धन शेठ आचार्यने वंदना करवाने आव्यो. ते वखते आचार्ये कमलनी सर्व चेष्टा तेने जणावी पछी आचार्य त्यांथी विहार करी बीजे स्थाने चाल्या गया हता.

एक वखते कोइ बीजा आचार्य तेज वनमां आवी समोसर्या. धनशेठ तेमने वंदना करवाने आव्यो, अने पूर्वनी जेम तेणे पोताना कमळपुत्रनो वृत्तांत तेमनी आगळ निवेदन कर्यो. आचार्ये धनशेठने कह्युं के, ते कमळने अहिं मोक-

लावो. अने तेने कहेवुं के, तेणे गुरुनी पासे नीची दृष्टिए न रहेवुं, तेम गुरुनी सामे जोया करवुं अने गुरु बोले तेमां उपयोग राखवो." आचार्यनी सूचना उपरथी धन शेठे कमळ पुत्रने ते प्रमाणे करवाने कही गुरुनी समीपे मोकल्यो. कमळ गुरुनुं मुख जोतो तेमनी समीपे बेठो. गुरुए पुछ्युं, "भद्र, तुं कांइ पण तत्त्व जाणे छे?" कमळे कह्युं, "हा, हुं त्रण तत्त्वो जाणुंछुं. मन इच्छित एवुं पहेलुं अशन, बीजुं पान अने त्रीजुं शयन. ए त्रण तत्त्वो जाणुं छुं." आचार्य हसीने बोल्या— "आ तो गाममोआना वचन जेवा वचनो छे. परंतु जे ज्ञेय एटले जाणवा योग्य, हेय एटले त्याग करवा योग्य अने उपादेय एटले ग्रहण करवा योग्य होय, तेमांथी कांइ जाणे छे? कमळे कह्युं, "एमांथी तो हुं कांइपण जाणतो नथी. तमे पोते कहो तो हुं श्रद्धाथी सांभळीश." ते वखते आचार्य तेने प्रतिबोध पमाडवा माटे बे त्रण घडी सुधी तत्त्वना निर्णय रुप देशना आपी निवृत्त थया. पछी तेमणे कमळने पुछयुं के, 'भद्र, कहे, हवे तें शुं तत्त्व जाण्युं?' अल्पमति कमळ बोल्यो, गुरुजी, में कांइ बीजुं जाण्युं नथी. मात्र तमे बोलता हता, त्यारे तमारी हडपीओ एकसो ने आठ वार उंचो नीचो थतो मारा जोवामां आव्यो, ए में जाण्युं छे. ते शिवाय हुं कांइपण समज्यो नथी." कमळना आ वचनो सांभळी आचार्य खेद सहित बोल्या के, "आ तो अंध आगळ आरसी थइ." पछी ते कमळ चाल्यो गयो अने ज्यारे धन शेठ तेमने वांदवा आव्यो एटले आचार्य कमळनी ते चेष्टा धन शेठने निवेदन करी पछी आचार्य त्यांथी विहार करी बीजे स्थले चाल्या गया हता.

एक दिवसे द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भावने अनुसारे परने प्रतिबोध करवामां कुशळ एवा कोइ बीजा आचार्य पाछा तेज वनमां आवी चड्या. तेमना आगमनना खबर सांभळी लोको श्रेणिबंध तेमने वंदना करवाने गया. साथे धनशेठ पण त्यां गयो हतो. देशना पूर्ण थया पछी धनशेठे गुरुने निवेदन कर्युं. स्वामी, मारो पुत्र कमळ धार्मिक विचारमां अत्यंत अज्ञात रहे छे. पूर्वे अहिं पधारेला आचार्योए तेने अतिशय बोध आप्यो हतो, ते छतां ते प्रतिबोध पाम्यो नहीं. प्रथम आचार्ये प्रतिबोध आपतां तेणे मंकोडानी गणत्री करी अने बीजा आचार्ये बोध आपतां तेणे तेमना कंठनो हडीयो उंचा नीचो थवानी गणत्री करी. तेथी कोइपण प्रकारे ते अज्ञानी पुत्रने आप प्रतिबोध आपो के जेथी ते अज्ञानी पुत्र-

नुं मिथ्यात्व रुप अंधकार नष्ट थइ जाय. अने तेनें सम्यक्त्वरत्ननी प्राप्ति थाय. जो मारो पुत्र गाढ अज्ञानमांथी मुक्त थशे तो आपने महान् लाभ थशे." आचार्ये विचार करीने जणाव्युं, "शेठ, आ तमारा पुत्रनी बुद्धि लौकिक व्यवहारमां केवी छे? धनशेठे कह्युं, "स्वामी, एक धर्म विचार विना बीजी सर्व बाबतोमां ते निपुण छे." आचार्ये उत्साह लावीने कह्युं, "त्यारे तो ए तमारो पुत्र सुबोध्य छे; माटे अवसरे तेने अहिं मोकलजो." पछी धनशेठे पोताने घेर आवी कमळनी पासे ते आचार्यना गुणोनी प्रशंसा करी के, "पुत्र, कोइ उत्तम आचार्य आवेला छे, ते त्रिकालदर्शी छे अने सर्व प्राणी मात्रनी सुख दुःखनी प्रवृत्ति जाणे छे, माटे तारे त्यां जइ तेमने मळवुं अने पुछवुं." तत्काल कमळ पितानुं वचन अंगीकार करी आचार्यनी पासे आव्यो. अने विनयथी वंदना करी तेमनी पासे बेठो. आचार्ये तेना मननो अभिप्राय जाणवाने कह्युं, "भद्र आ तारा हाथना मणिबंधमां मत्स्यना मुख सहित शीघ्र फल आपनारी धनरेखा देखाय छे." कमळे विनयथी पुछ्युं, "महाराज, ए रेखानुं शुं फल थशे?" गुरुए "मच्छेण य सहस्सधणं" इत्यादि गाथा बोली कह्युं के, भद्र, ए रेखाथी अमारा जाणवामां आवे छे के, "तारो जन्म शुक्लपक्षमां छे अने तारा ग्रहो समभावने भजनारा थशे." तत्काल कमळ चमत्कार पामी त्यांथी उठी पोताने घेर आव्यो अने जन्मपत्रिका लइ आवी तेणे गुरुने बतावी. गुरुए जन्मपत्रिकामांथी पूर्वे कहेला ग्रहोने बतावी दीधा. अने कह्युं के, तारो अमुक वर्षे विवाह थयेलो छे अने अमुक वर्षे तने तावनी पीडा थइ हती." आ प्रमाणे गुरुनुं वचन सांभळी कमळ चमत्कार पामी गयो अने तेणे घेर आवी पोताना पिताने जणाव्युं के, "गुरु खरेखर त्रिकालज्ञानी छे." ते पछी कमळ दररोज गुरुने वंदना करवा जतो हतो. आचार्य तेज नगरमां चातुर्मास्य रह्या. तेओ हंमेशां कौतुक भरेली कथाओ कही धर्मोपदेश आपवा लाग्या, आथी कमळ धर्मनो विशेष जाण थवा लाग्यो. तेना हृदयमां आर्हत धर्म उपर श्रद्धा थइ आवी अने तेथी तेणे अनुक्रमे श्रावकना बार व्रतो ग्रहण कर्या. छेवटे गुरुनी कृपाथी ते पोताना पिता करतां पण वधारे धर्म पर दृढतावाळो थयो. चातुर्मास्य वीत्या पछी ते आचार्य त्यांथी विहार करी बीजे स्थळे चाल्या गया. कुमार कमळ श्रावक धर्मने चिरकाळ पाळी अंते सद्गतिनुं पात्र थयो हतो. आ उपरथी समजवानुं के, बीजाओए पण तेवी रीते

भव्य जीवोनो उपकार करनारुं श्री जैन शासनने विषे कुशलपणुं राखवुं; तेम करवाथी सम्यक्त्व रत्न आ जगत्मां निःसीम शोभाने धारण करनारुं थाय छे. ए प्रमाणे जिनदर्शनमां कुशलपणारुप सम्यक्त्वना पेहेला भूषण उपर श्रावकपुत्र कमळने प्रतिबोध करनार आचार्यनुं दृष्टांत कहेवामां आव्युं.

सम्यक्त्वनुं बीजुं भूषण.

सम्यक्त्वनुं बीजुं भूषण श्री जिनशासन प्रभावना छे. आगमादिकना बळथी अथवा ज्ञानना बळथी श्री जिनशासननुं विशेष दीपकपणुं करवुं, ते जिनशासननी प्रभावना छे. पूर्वे आठ प्रभावकना भेदथी ते आठ प्रकार कहेवामां आव्युं छे. पूर्वे कहेलानुं अहिं पुनः जे ग्रहण करवामां आव्युं, ते पोताने अने परने उपकारकारी होइने तेमज तीर्थंकर नाम कर्म बांधवाने लइने तेनुं प्राधान्य जणाववाने माटे छे. तेम वळी जे वचनो सद्भूत अर्थने प्रकाश करनारा अने रागद्वेषने दूर करनारा छे, तेने वारंवार ग्रहण करवामां काइ पण दोष नथी; कारणके, ते सद्बोधनी वृद्धिनुं कारण रुप छे. ते विषे श्री उमास्वातिवाचक महाराजाए प्रशमरति प्रकरणमां कह्युं छे—

" ये तीर्थकृत्प्रणीता, भावास्तदनंतरैश्च परिकथिताः ।
तेषां बहुशोऽप्यनुकीर्तनं भवति पुष्टिकरमेव ॥ १ ॥

" जे तीर्थकर प्रणीत भावो छे, ते आंतरा रहित कहेला छतां तेमनुं बहु वार अनुकीर्त्तन-स्मरण करवुं, ते पुष्टिने करनारुं ज थाय छे. " १

यद्वदुपयुक्तमपि सद्, भेषजमासेव्यतेऽर्त्तिनाशाय ।
तद्वद्रागार्त्तिहरं, बहुशोऽप्यनुयोज्यमर्थपदम् ॥ २ ॥"

" जेम औषध एकवार खाधुं होय पण ते पीडानो नाश करवाने फरीवार खवाय छे, तेवी रीते राग रुपी पीडानो नाश करवा माटे अर्थना पदो घणी वार कहेवामां आवे छे. " २

" यद्वद्विषघातार्थं मंत्रपदैःनपुनरुक्तदोषोऽस्ति ।
तद्वद्रागविषघ्नं पुनरुक्तमदुष्टमर्थपदम् ॥ ३ ॥

थवाथी योगनो निरोध थाय छे. ते पछी पर्यवसाने सिद्धिनुं फळ प्राप्त थाय छे. आ प्रमाणे सम्यक्त्वना त्रीजा जूषण तीर्थसेवानुं फल जाणी समकितवंत पुरुषोए तेमां प्रवृत्ति करवी.

सम्यक्त्वनुं चोथुं जूषण.

सम्यक्त्वनुं चोथुं जूषण स्थिरता छे. स्थिरता एटले चित्तनी चपलतानो अजाव. जैनधर्मने विषे पोतानुं अथवा परनुं स्थिरपणुं करवुं—दृढ चित्त राखी रहेवुं, ते स्थिरता कहेवाय छे. परतीर्थीओनी महान् समृद्धि जोवामां आवे तोपण सुलसानी पेठे निःप्रकंप रहेवुं, जिन वचन उपर अविचल श्रद्धा राखवी. तेवा जीवो दृढधर्मी कहेवाय छे. जे दृढधर्मी पुरुषो होय छे, तेओ अरिहंतना प्ररूपेला आगममां प्रशंसनीय गणाय छे. ते विषे आगममां कह्युं छे के, "चार प्रकारना पुरुषो होय छे. १ प्रियधर्मी छे पण दृढधर्मी नथी. २ दृढधर्मी छे, पण प्रियधर्मी नथी. ३ दृढधर्मी छे अने प्रियधर्मी छे अने ४ दृढधर्मी नथी तेम प्रियधर्मी पण नथी. आ चार प्रकारना पुरुषोमां त्रीजो प्रकार सर्वोत्तम छे. अने ते जव्य पुरुषोए ग्रहण करवा योग्य छे.

स्थिरता विषे सुलसानो वृत्तांत.

जंबुद्वीपना जरत क्षेत्रने विषे मगध नामे देश छे. ते देशनी राजधानी राजगृही नगरी छे. ते नगरीमां प्रसेनजित् नामे राजा राज्य करे छे. ते सर्व उचित कलामां कुशल छे. तेने नाग नामे एक सारथि हतो. ते राजा प्रसेनजित्ना चरण कमळनी सेवामां सदा तत्पर रहेतो हतो. तेने सुलसा नामे स्त्री हती. ते पतिव्रता अने जैन धर्म उपर पूर्ण रागी हती. ते गुणवती बाला सर्वदा शुद्ध निष्ठाथी देव जक्ति अने पति जक्ति करती हती.

एक दिवसे नागसारथिए कोइ घरमां गृहस्थने पोताना उत्संगमां पुत्रने रमाडतो जोयो. पोते अपुत्र होवाथी ते जोइ हृदयमां अतिशय परिताप पाम्यो अने पोताना मुखने हाथ उपर राखी आ प्रमाणे मनमां कहेवा लाग्यो—"अहो ! हुं केवो मंद जाग्यवान् छुं के, मारे एक पण पुत्र नथी. आ जाग्यवान् पुरुषने धन्य छे के जेने हृदयने आनंद आपनारा घणा पुत्रो छे." आवुं चिंतवतो

नागसारथि पोताने घेर आव्यो. पोताना पतिने आम चिंता करतो जोइ सती सुलसाए कह्युं, "स्वामी नाथ, तमारा हृदयमां शी चिंता उत्पन्न थइ छे? तमारुं चिंतातुर मुख जोइ मारा हृदयने परिताप थाय छे. माटे जे सत्य होय ते कहो." नागसारथि मंद स्वरथी बोल्यो—"प्रिया, आजे एक गृहस्थने में पोताना उत्संगमां पुत्रने रमाडतो जोयो, ते उपरथी मने पुत्रनी चिंता उत्पन्न थइ आवी छे. आज सुधी मारे कांइ पण पुत्र थयो नथी, एथी हुं मारा आत्माने दुर्भागी मानुं छुं. मने अत्यार सुधी एक पण पुत्र प्राप्त थयो नहीं, ए मारा हृदयने शल्यनी जेम पीडे छे." स्वामीना आवा वचनो सांभळी सुलसाए कह्युं—"स्वामी, चिंता करशो नहीं. पुत्रने उत्पन्न करवा माटे तमे कोइ बीजी कन्यानुं पाणिग्रहण करो. कोइ पण रीते तमारा मननी चिंता दूर करवी ए मारी फरज छे."

नागसारथि बोल्यो—"प्रिये, ए वात मारी आगळ कहीश नहीं. आ जन्ममां मारे तुं एकज प्रिया छे. तारा शिवाय बीजी स्त्रीने हुं मनथी पण इच्छतो नथी. मारामां पुत्र दर्शनना अभिलाषा उत्पन्न थइ छे पण ते पुत्र तारी कुक्षिथी उत्पन्न थयेलोज इच्छुं छुं. बीजी स्त्रीथी उत्पन्न थयेला पुत्रने जोवानी मारी इच्छा नथी. माटे तुं सती छे, तेथी कोइ देवतानी आराधना करी तेनी पासे पुत्रनुं वरदान माग, जेथी मारो मनोरथ सिद्ध थाय." सुलसा पतिना आवा वचन सांभळीने बोली,—स्वामिनाथ, जो आपणा कर्ममां पुत्र हशे तो आपणने अवश्य प्राप्त थशे. ते शिवाय कदिपण पुत्रनी प्राप्ति नहीं थाय. वांछित अर्थनी सिद्धि करवाने माटे मन, वचन अने कायाथी बीजा कोइ पण देवनी आराधना करीश नहीं. आपणे तो श्री अरिहंत देवनी आराधना करीशुं. जे भगवान् सर्व इष्ट सिद्धिना कारण रूप कल्पवृक्ष समान छे. हुं सर्व मनोरथोने पूरनारा [1]आचाम्ल प्रमुख तपने आचरिश. एनाथी आपणां कार्यनी सिद्धि थशे. कोइ जातनी चिंता करशो नहीं." सतीना आ वचनो सांभळी नागसारथिने आश्वासन मळ्युं. ते पछी सती सुलसा आदिनाथ प्रमुख सर्व जिनेश्वरोनी त्रिकाल पूजा करवा लागी अने बीजा धार्मिक कार्यो तथा तपस्या करवामां ते तत्पर बनी गइ.

केटलोक समय वीत्या पछी देवलोकमां इंद्रनी सभानी अंदर सुलसाना

[1] आयंबिल.

धार्मिकपणानी प्रशंसा करवामां आवी ते वखते एक मिथ्यात्वी देवता ते प्रशंसा सांभळी शक्यो नहीं, तेथी ते सुलसानी परीक्षा करवाने पृथ्वी उपर आव्यो. ते साधुनो कृत्रिम वेष पेहेरी सुलसाना घरमां पेठो. आ वखते सुलसा पोताना घरमां जिनेश्वर प्रभुनी पूजा करवामां आसक्त हती, तोपण तेणीए ज्यारे मुनिने घेर आवेला जोया, एटले ते तत्काल बेठी थइ अने अतिशय भक्ति पूर्वक तेणे मुनिना चरणकमळमां वंदना करी सतीए मुनिने विनयथी पूछ्युं, "महाराज, शुं कारण पधार्या छो ?" कपटी मुनिए कह्युं, "बाइ, अमारी साथे एक बीजा साधु छे, तेमने एक रोग थयेलो छे. ते रोगनुं छेदन करवाने लक्षपाक तेल जोइए छीए; तेवुं तेल तमारा घरमां हशे, माटे ते लेवा आव्यो छुं"

मुनिना आ वचनो सांभळतांज सती सुलसा पोताना ओरडामां गई अने लक्षपाक तेलनो एक घडो लावी तेणीए मुनिनी आगळ मुक्यो. पोते ते घडानुं ढांकणुं उघाडवा मांड्युं, तेटलामां देवना प्रभावथी ते घडो फुटी गयो. आथी सुलसाना हृदयमां जरा पण खेद थयो नहीं. ते पाछी घरमां जइने बीजो घडो लावी ते घडो उघाडतांज भांगी गयो. तोपण ते अखिन्न हृदये पाछो त्रीजो घडो लावी. ते पण प्रथमनी जेम भांगी गयो. हवे तेणीना घरमां चोथो घडो नहतो, तेथी ते घडानो अपशोष न करतां पोताना मनमां केहेवा लागी के, "अरे ! हुं केवी निर्भागी ! आ मारुं तेल ग्लान मुनिना उपयोगमां आव्युं नहीं." सती सुलसाने आम चिंतवती जाणी, तेनी उत्तम भावना जोइ ते देव प्रसन्न थइ गयो. तत्काल तेणे पोतानुं स्वरुप प्रगट कर्युं. ते बोल्यो—"सती श्राविका तमने धन्यवाद घटे छे. इंद्रे देवतानी सभामां तमारी प्रशंसा करवा मांडी ते वखते में अल्पबुद्धिवाले तेमां शंका करी. पछी तमारी परीक्षा करवाने हुं मुनिनो वेष धारण करी अहिं आव्यो हतो. इंद्रे करेली प्रशंसाथी पण वधारे तमारामां धर्मनी स्थिरता जोइ हुं संतुष्ट थइ गयो छुं, तेथी जे तमोने इष्ट होय ते मागी ल्यो." आ वखते सती सुलसाए प्रसन्न थइने कह्युं, "देव, जो तमे मारी उपर संतुष्ट थया हो तो मने पुत्र रूप वांछित वर आपो." सतीनी आ मांगणी उपरथी ते देवताए तेणीने बत्रीश गुटिकाओ आपी अने कह्युं के, "तमारे आ गुटिकाओ अनुक्रमे भक्षण करवी तेथी तमारे तेटला सुंदर पुत्रो थशे. ते शिवाय मारा योग्य कांइ पण कार्य आवी पडे तो मने संभारजो." आटलुं कही ते

देव अदृश्य थइ गयो. देव अदृश्य थया पछी चतुर सुलसाए विचार कर्यो के, आ गुटिकाओ अनुक्रमे भक्षण करवाथी बत्रीश पुत्रो थशे. तो ते पुत्रोना मल मूत्र विगेरे अशुचिने कोण साफ करशे ? अने तेमनो बरदास शी रीते थइ शकशे ? माटे आ बधी गुटिकाओ एक साथे खावी वधारे सारी छे, तेम करवाथी बत्रीश लक्षणवाळो एकज पुत्र थशे." आवुं विचारी सुलसा ते बत्रीश गुटिकाओने एकी साथे भक्षण करी गइ. ते पछी सुलसानी धारणा प्रमाणे बन्युं नहीं पण दैवयोगे तेणीना उदरमां बत्रीश गर्भ उत्पन्न थया. अनुक्रमे उदरनी मोटी वृद्धि थवाथी सती सुलसाने जोर पीडा थइ पडी. गर्भना जोरनी पीडाने नहीं सहन करवाथी सुलसाए कायोत्सर्ग करी पेला देवतानुं स्मरण कर्युं. तत्काळ ते देवता त्यां हाजर थयो अने पोताना स्मरणनुं कारण पुछ्युं. सुलसाए ते देवनी आगळ पोतानो सर्व वृत्तांत जणावी दीधो. ते वखते देव बोल्या. "भद्रे. तें एकी साथे बत्रीश गुटिका खाधी, ते घणुं अयोग्य कर्युं छे. हवे तारा गर्भमां बत्रीश बाळको उत्पन्न थया छे. तेओ बधा एकी साथे अवतरशे अने सरखा आयुष्यवाळा थशे. ते सर्वनुं मरण एकज वखते थशे. परंतु तुं गर्भ पीडानो भय राखीश नहीं. हुं तने ते विषे सहाय करीश." आ प्रमाणे कही सुलसाना गर्भनी पीडाने हरी ते देव पोताने स्थाने चाल्यो गयो. पछी सुलसा गर्भनी पीडाथी रहित थइ अने सुखे गर्भनुं वहन करवा लागी. समय पूर्ण थयो एटले तेणीए बत्रीश लक्षणवाळा बत्रीश पुत्रोने जन्म आप्यो. नागसारथिए मोटा आडंबरथी ए बत्रीश पुत्रोनो जन्मोत्सव कर्यो. अनुक्रमे ते बत्रीश पुत्रो मोटा थइ यौवन वयने प्राप्त थया. सारथिए ते बत्रीश कुमारोने राजा श्रेणिकनी सेवामां राख्या. तेमनी उत्तम सेवाथी श्रेणिक राजा तेमनी उपर संतुष्ट रहेतो हतो.

एक दिवसे राजा श्रेणिके प्रथमथी संकेत करी चेडाराजानी पुत्री सुज्येष्ठाने गुप्त रीते लाववानी योजना करी. ते योजना पारपाडवाने चंपा नगरीनी सामे छुपी सुरंग करावी अने ते सुरंग मार्गे नागसारथिना बत्रीश पुत्रोनी साथे रथमां बेशी श्रेणिकराजा ते नगरना दरवाजामां पेठा. राजकुमारी सुज्येष्ठाए पण प्रथम चित्रमां जोयेला मगधपति श्रेणिकने ओळखी पोतानी नानी बेन चेल्लणाने ए वृत्तांत कह्यो हतो. चेल्लणा पोतानो बेनना वियोगने सहन करवा असमर्थ हती, तेथी ते पण ते रथमां साथे आवी. रस्तामां जतां सुज्येष्ठा पोताना आभूषणनो

कंभोओ नुदी जवाथी ते लेवाने पाछी गइ ते वखते सुलसाना बत्रीश पुत्रोए राजा श्रेणिकने जणाव्युं के, " स्वामी, आपणे आ शत्रुना घरमां घणीवार रहेवुं योग्य नथी. " राजाने ते वात रुचिकर लागी. तत्काल ते चेल्लणानेज लइने त्यांथी आगल चाल्यो गयो. पाछलथी सुज्येष्ठा रत्नाभरणनो कंभोयो लइ आवी. तेणे ते स्थले श्रेणिकनो रथ जोयो नहीं. पोतानो मनोरथ अपूर्ण रह्यो. आथी तेना मनमां लागी आव्युं. तेम वळी पोतानी बेन चेल्लणानो वियोग पण ते सहन करी शकी नहीं, आथी तेणीए ऊंचे स्वरे पोकार कर्यो—" हा, हा, कोइ चेल्लणाने हरी जाय छे. " आ पोकार राजाना सांभळवामां आवतां चेडा राजा तत्काल क्रोध पामी तैयार थइ गयो. ते वखते ते राजानी पासे रहेलो वैरंगिक नामनो सुभट ते राजाने निवारी पोते चेल्लणाने पाछी वालवा दोडी गयो. ते वेगथी दोडतां श्रेणिकना रथनी थोडे दूर आवी पोहोच्यो. तेणे जोरथी एक एवुं बाण मार्युं के जेथी सुलसाना बत्रीश पुत्रो एकी साथे हणाइ गया. पछी तेणे ते सांकडी सुरंगमांथी ते बत्रीश रथो खेंचवा मांड्या तेवामां श्रेणिक राजा पोतानो रथ वेगथी आगळ चलावी गयो. ते वखते वैरंगिक सुभट पोतानो मनोरथ सिद्ध न थवाथी निराश थइ पाछो फर्यो. तेणे सखेद मने ते वृत्तांत चेडा राजाने जणाव्यों. अने पछी ते पोताने घेर चाल्यो गयो.

राजा श्रेणिक सुज्येष्ठाने बदले चेल्लणाने लइने पोतानी राजधानी राजगृह नगरीमां आवी पोहोच्यो. त्यां जइ ते गांधर्व विवाहनो विधिथी चेल्लणाने परण्यो. राजाना मुखथी नागसारथि अने सुलसा पोताना बत्रीश पुत्रोना मरणनो वृत्तांत सांभली अति शोकातुर थइ गया. अने तेनो भारे विलाप करवा लाग्या. ते बंने दंपती शोकना महासागरमां मग्न थयेला जाणी राजा श्रेणिक अने अभयकुमारे तेमने आ प्रमाणे प्रतिबोध आप्यो. " भद्र, तमे आर्हत धर्मना ज्ञाता अने विवेकी छो. आ संसारनुं स्वरुप तमारा जाणवामां छे, तेथी तमारे विशेष शोक करवो नहीं. आ संसारने विषे जे कांइ आ साक्षात् भाव देखाय छे ते सर्व विनाशी छे अने मरण पामवुं, ए सर्व जीवोने साधारण छे, तेथी शोकनो त्याग करी धर्मना साधनरुप धैर्यनुं अवलंबन करवुं. " आ प्रमाणे प्रतिबोध आपी राजा श्रेणिक पोताना कुमार अभय मंत्री साथे पोताने महेल गयो. ते पछी बंने

दंपति पोताना पूर्वना कर्मना विपाकने प्रमाण करी शोकरहित थइ गया. अने आर्हत धर्मना आराधनमां विशेष उजमाल थया हता.

एक वखते श्री वीरप्रभु चंपा नगरीना उद्यानमां समोसर्या. सर्व पर्षदा तेमने वंदना करवाने आवी. भगवंते धर्मनी देशना आपी. आ वखते दंड, छत्र, अने [1]काषाय वस्त्रने धारण करनार अंबड नामनो एक परिव्राजक के जे श्री वीर प्रभुनो उत्तम श्रावक हतो, ते वीरप्रभुने नमी योग्य स्थाने बेशी प्रभुना मुखथी धर्मदेशना सांभळतो हतो, ते प्रभुने वंदना करी आ प्रमाणे बोल्यो— " स्वामी, हाल राजगृह नगरने विषे जवानी मारी इच्छा छे." प्रभुए विचार करीने कयुं, " देवानुप्रिय, जो तमारे त्यां जवुं होय तो त्यां नागसारथिने घेर आ मारी श्राविका सुलसा छे, तेने मधुर वाणीथी धर्मशुद्धि साथे सुखशाता पुछजो." प्रभुनी आ आज्ञाने अंगीकार करी अंबड श्रावक लब्धिना बळथी आकाश मार्गे चाली राजगृह नगरीमां आव्यो. ते नागसारथिना घरना द्वार आगळ आवी उभो रह्यो, ते वखते तेणे पोताना मनमां चिंतव्युं के, " भगवान् वीरप्रभु जेने माटे काळजी राखेली छे, एवी सुलसा धर्मने विषे केवी दृढ हशे ? तेनी परीक्षा करवी जोइए." आवुं चिंतवी तेणे तत्काल वैक्रिय लब्धि वडे बीजुं रूप करी सुलसाना घरमां प्रवेश कर्यो. तेणे घरमां पेशी प्रथम सुलसानी पासे भिक्षा मागी. सुलसाए 'सत्पात्र शिवाय बीजाने भिक्षा आपवी नहीं' एवो नियम ग्रहण करेलो हतो, तेथी ते प्रतिज्ञा पाळवाने तेणे अंबड श्रावकने पोताने हाथे भिक्षा आपी नहीं. अंबड त्यांथी पाछो फर्यो अने नगरनी बाहेर पूर्वमां जइ तेणे ब्रह्मानुं स्वरूप विकुर्व्युं. चार मुख अने चार भुजाओ धारण करी. अंग उपर ब्रह्मसूत्र अने कंठमां रुद्रमाळा आरोपित करी. ते सावित्री साथे हंसना वाहन उपर बेठो हतो. ते रक्तवर्णी ब्रह्मा बनी चारे मुखे चार वेदोनो ध्वनि करवा लाग्यो. आ ब्रह्माना प्रत्यक्ष दर्शन करवाने राजगृही नगरीना हजारो लोको आववा लाग्या. केटलाएक तेनी भक्ति करवाने, केटलाएक कौतुक जोवाने अने केटलाएक मननी इच्छा पूरी करवाने ते स्थले एकठा थवा लाग्या. आ वार्त्ता सती सुलसाना सांभळवामां आवी तोपण सम्यक्त्वने विषे दृढ नियमवाळी ते रमणी

[1] भगवा वस्त्र.

ते कपटी ब्रह्मानी पासे गइ नहीं. ज्यारे सुलसा तेने वंदन करवा आवी नहीं एटले ते अंबड श्रावके बीजे दिवसे दक्षिण दिशामां विष्णुनुं स्वरूप धारण कर्युं. तेणे गरूड उपर आसन कर्युं, पीळा वस्त्रो धारण कर्या, चारे भुजामां शंख, चक्र, गदा अने शार्ङ्ग धनुष्य राख्या, ते साथे लक्ष्मी तथा बीजी गोपांगनाओ सहित लीला प्रदर्शित करी. तेना दर्शन करवाने अनेक लोको दोडी गया. पण मिथ्यात्वीओना परिचयथी भय पामती ते शुद्ध श्राविका ते स्थाने गइ नहीं. ज्यारे सुलसा पोताना विष्णुना स्वरूपथी ललचाणी नहीं एटले ते अंबडे त्रीजे दिवसे पश्चिम दिशामां शंकरनुं रूप विकुर्व्युं. ते महादेव वाघना चर्मने धारण करी वृषभनावाहन उपर बेठा हता. त्रण नेत्रो अने मस्तक उपर चंद्र धारण कर्यो. जटामां गंगा, गजचर्मना वस्त्रो, शरीरे भस्म, एक हाथमां त्रिशूल, बीजा हाथमां खप्पर, गळामां रुंढमाळ अने खोळामां पार्वती धारण करेला हता. ते शंकर रूपे लोकोने कहेतो हतो के, आ जगत्ना सर्व प्राणीओने संहार करनार हुं छुं. मारा जेवी कोइनामां शक्ति नथी अने मारा शिवाय कोइ परमेश्वर ज नथी. नगरना सर्व लोको तेना दर्शन करवाने जवा लाग्या पण सम्यक्त्वथी विभूषित एवी सुलसा त्यां गइ नहीं. ते पोताना धर्मने विषे दृढता धारण करीने बेशी रही.

अंबड श्रावके जाण्युं के, सुलसा पोताना धर्ममां दृढ रही छे. पछी चोथे दिवसे तेणे उत्तर दिशामां समवसरणनी रचना करी. आठ प्रातिहार्य सहित जिनेंद्रनुं रूप धारण करी तेमां ते विराजित थयो. ते वार्ता सांभळी घणा लोको तेने वंदना करवाने गया. अने नगरना लोकोने आर्हत धर्मनो उपदेश आपवा मांड्यो. तथापि धर्मने विषे दृढतावाळी सुलसा ते स्थळे गइ नहीं. आ वात अंबडना जाणवामां आवतां तेणे सुलसाना मनने क्षोभ पमाडवाने माटे एक पुरुषने तेणीने घेर मोकल्यो. ते पुरुषे सुलसाने घेर आवी आ प्रमाणे कर्युं,—"भद्रे, आ नगरनी बाहेर श्री अरिहंत भगवान् समोसर्या छे, तेमने वंदना करवाने माटे तमे केम जता नथी ?" सुलसा बोली "हे महाभाग, हाल आ पृथ्वीने विषे श्रीवीर भगवान् शिवाय बीजा कोइ तीर्थंकर विद्यमान नथी. अने श्री वीरभगवान् तो हाल बीजा देश तरफ विचरे छे, तेओ एकदम अहीं शी रीते आवे ? कोइपण रीते वीरप्रभुनो अहीं आववानो संभव नथी." सुलसाना

आ वचन सांजली ते पुरुषे कहुं, " अरे जोळी स्त्री आतो पचवीशमा तीर्थंकर ढे; तेओ हमणांज उत्पन्न थयेला ढे, माटे तमे पोते तेमनी पासे जइ केम वंदना करता नथी ? " सुलसाए आक्षेप करीने कहुं, " जड, ए वात तदन अघटित ढे. आ जगतने विषे पचवीशमा तीर्थंकर कदिपण थताज नथी. मने तो लागे ढे के, आ कोइ मायावी पुरुष ढे. ते कपटना आडंबरथी जोळा लोकोने ठगे ढे. तेवा धूर्त्तनी पासे मारे शा माटे आववुं जोइए ? " सुलसाना आ वचन सांजली ते पुरुषे विचार करीने कहुं, " जडे, तमारे एवी शंका शा माटे लाववी जोइए. ए धूर्त्त होय के कपटी होय तोपण ते जैन शासननी उन्नतिनेतो करनारो ढे. गमे ते रीते शासननी उन्नति थती होय, तेमां दोष जोवानो नथी. " सुलसा जरा नाखुश थइने बोली–" जड, आवी वात कहेवा उपरथी मने लागे ढे के, तुं पण जोळो (मूर्ख) माणस ढे. जो तुं ज्ञानवडे विचार करीश तो तने मालुम पडशे के, असद् व्यवहारथी शासननी उन्नति थती नथी पण उलटी लोकोमां हांसी थाय ढे. " सुलसानां आवां दृढता जरेलां वचनो सांजळी ते पुरुष त्यांथी चाली नीकळ्यो अने अंबडनी आगळ आवी तेणे ते सर्व वृत्तांत निवेदन कर्यो. ते उपरथी अंबडे पोताना हृदयमां विचार कर्यो के, " वीर प्रजुए सना समक्ष जे सुलसाने धर्मलाज पुछाव्यो, अने तेणीनी संजावना करी ते सर्व रीते घटित ढे. ते वखते नीचे प्रमाणे ते पद्य बोल्यो हतो—

" मया व्यामोहितं विश्वं, विश्वं न सुलसा पुनः ।
तमसा ग्रस्यते लोको, न प्रदीपशिखा पुनः ॥ १ ॥
तथामुष्य मनोरूद्धं, विपुलै रर्हतां गुणैः ।
स्थातु मिष्टे मया तत्र, महिमा नहि मादृशाम् ॥ २ ॥"

" में बधा विश्वने मोहित कर्युं, पण सुलसाने मोहित करी नहीं. अंधकार लोकने ग्रसे छे पण ते दिवानी शिखाने ग्रसी शकतुं नथी. १

आ सुलसानुं मन अरिहंतोना विशाळ गुणोथी एवुं रुंधाइ गयुं छे के जेमां मारा जेवाओनो महिमा रही शके तेवो अवकाश रह्यो नथी. २

आ पद्योने कही ते अंबड श्रावके विचार्युं के "सुलसाने में घणी रीते चलायमान करी ते छतां पण ते जरा पण चलित थइ नहीं. तेथी तेनी दृढताने पूर्ण धन्यवाद घटे छे"

आवुं विचारी ते अंबड श्रावके पोतानुं मायारूप फेरवी स्वाभाविक रूप धारण कर्युं, अने ते हृदयमां प्रसन्न थइने सुलसाना घरमां आव्यो. सती सुलसा तेने मूलरूप धारी जोइ बेठी थइ सामी आवी अने तेने एक साधर्मि बंधु तरीके मान आपी आ प्रमाणे बोली—"हे त्रण जगतना स्वामी श्री वीरप्रभुना श्रावक, तमे कुशल छो ?" एम सुखशातानुं प्रश्न करी तेना चरणनुं प्रक्षालन करी तेने पोताना गृह चैत्यनुं वंदन कराव्युं अंबड श्रावक पण विधि पूर्वक चैत्यवंदन करी सुलसा प्रत्ये बोल्यो—"हे महासति, आ भरतक्षेत्रने विषे तमे एकज धर्मने विषे दृढतावाला अने पुण्यवान् छो; कारणके, श्री वीर प्रभुए मारे मुखे तमोने धर्म-लाभ कहेवराव्यो छे.

अंबडना मुखथी आ वात सांभळी सुलसा अतिशय आनंदवाली थइ गइ. अने जे दिशामां प्रभु विहार करता हता, ते दिशा तरफ अंजलि जोडी, प्रभुने हृदयमां धारण करी तेणे उत्तम वाणीथी प्रभुनी स्तुति करी.

आ वखते तेणीनो आशय विशेष जाणवाने माटे अंबड आ प्रमाणे बोल्यो—"महासती, आ नगरनी बाहेर हमणा ब्रह्मा, विष्णु अने शंकर प्रत्यक्ष आव्या हता, तेमना दर्शन करवाने तमे गया हता के केम ? सुलसा बोली—" देव, जे पुरुषो जैन धर्ममां अनुरक्त थया होय, तेओ रागद्वेषरूप शत्रु-ओने जीतनारा, भव्यजनोनो उपकार करनारा, सर्वज्ञ अतिशय संपन्न अने पोताना तेजथी सूर्यने पण पराजित करनार एवा देवाधिदेव श्री महावीर प्रभुने मूकी राग, द्वेष तथा मोहथी पराभव पामेला, निरंतर स्त्री सेवामां तत्पर रहेनारा, वध बंधन वगेरे क्रियाने आचरनारा आत्म धर्मने नहीं जाणनारा अने सूर्यनी आगळ खद्योत जेवा ते देवोने जोवा केम उत्साह करे ? अर्थात् नज करे. कोइ पुरुषे परम आल्हादने आपनारा अमृतनुं पान कर्युं होय तेने खारुं पाणी पीवानी इच्छा केम थाय ? कदिपण न थाय. जेणे हीरा, माणेक तथा रत्नोनो वेपार कर्यो होय तेने काचना कटकानो वेपार करवो केम रुचे ? हे देवता, तमे जिनेश्वरना

कहेला जावने जाणोछो, अने तेमणे प्ररुपेला धर्मने विषे रक्तछो, ते छतां तमे मने आवो प्रश्न केम करो छो ?" सुलसाना आ वचनो सांभळी अंबम अत्यंत प्रसन्न थइ गयो. तेणे सुलसानी धर्म उपरनी स्थिरतानी प्रशंसा करी. पछी तेणे ब्रह्मा, विष्णु, वगेरेना स्वरुपने धारण करवानो पोतानो सर्व वृत्तांत सुलसानी आगळ कही संभळाव्यो. पछी तेणीने मिथ्यादुष्कृत कही ते पोताने स्थाने चाल्यो गयो हतो. पछी अंबमने श्री वीरप्रभु पासे ग्रहण कर्या छे, बार व्रत जेमणे एवा सातसो शिष्यो थया हता. एक वखते ते अंबमना शिष्यो कांपिल्लपुरथी विहार करी पुरिमताळपुर जता हता. मार्गे जतां तेओ तृषाथी आकुळ व्याकुळ थइ गया. तेवामां गंगा नामनी एक मोटी नदी आवी पण कोइ जळ आपनार त्यां न हतुं. तेओ सर्वे अदत्तादानथी विरक्त हता. एटले तेओ परस्पर आ प्रमाणे कहेवा लाग्या. हे देवानुप्रियो, आपण सातसोमांथी कोइ एक पोताना व्रतनो भंग करी जो जलपान करावे तो बाकीना बधाना व्रतनुं रक्षण थाय. आ प्रमाणे कहेवामां आव्युं तोपण कोइ पोताना व्रतनो भंग करवा तैयार थयुं नहीं. पछी सर्वेए ते स्थळे अनशन व्रत ग्रहण कर्युं. हृदयमां श्री महावीर प्रभुनुं ध्यान करतां अने पोताना गुरु अंबमने नमन करतां तेओ समाधि मरणथी काल करी पांचमा देवलोकने प्राप्त थया हता.

अंबम श्रावक मूल परिव्राजक हतो, पण ते आर्हत धर्मने प्राप्त कर्या पछी स्थूलहिंसानो त्याग करतो, नदी वगेरे जलाशयोमां क्रीमाने न करतो, नाटक, तथा विकथादिक अनर्थ दंमने नहीं आचरतो, तुंबी, लाकडां के माटीनां पात्रोने वर्जी बीजा पात्रोने नहीं स्वीकारतो, गंगानी मृत्तिका शिवाय बीजी वस्तुओथी विलेपन न करतो, कंदमूलनुं भक्षण छोमी देतो, आधाकर्मिक आहारनो परिहार करतो, मात्र मुद्रा अलंकारने धारण करतो, काषाय वस्त्रोने पेहेरतो, जलने गळी पान करतो, [1]अर्ध आढक प्रमाण जलथी स्नान करतो अने श्री जिन प्रणीत धर्मने विषे बुद्धिने राखतो पोताना जीवनने सफल करतो हतो. छेवटे छ मासनुं अनशन ग्रहण करी अंबम श्रावक समाधिथी मृत्यु पामी पांचमा देवलोकने प्राप्त थयो हतो. ते देवलोकमां दिव्य भोगने भोगवी अनुक्रमे मनुष्य भव पामी चारित्रनी आराधना करी मोक्षपदने पामशे.

---

१ एक जातनुं माप.

सती सुलसाए हृदयमां धर्मनी स्थिरता धारण करी अने सम्यक्त्वने उत्तम प्रकारे दीपावी तीर्थकर नाम कर्म उपार्जन कर्युं हतुं. ते महा सती आ जरत क्षेत्रने विषे आवती चोवीशीमां श्री निर्मम नामे पंनरमा तीर्थंकर थशे. एवी रीते बीजा जव्य जीवोए पोतानुं सम्यक्त्व रत्न दीपाववा माटे, धर्म उपर स्थिरता करवा माटे सर्वदा प्रयत्न करवो. जेथी आ त्रण जगतना शिखर उपर रहेला मोक्षपदनी प्राप्ति अवश्य थशे. एवी रीते सम्यक्त्वनी स्थिरता उपर सुलसानो वृत्तांत कहेवामां आव्यो.

सम्यक्त्वनुं पांचमुं जूषण जक्ति.

प्रवचननो विनय करवो—वैयावच्च करवी–ते जक्ति कहेवाय छे. ए साचा जावे करवाथी सम्यक्त्वने शोजावे छे, माटे ते सम्यक्त्वनुं जूषण कहेवाय छे. तेनाथी अनुक्रमे मानुषी तथा दैवी संपत्ति प्राप्त थाय छे अने परिणामे ते मोक्षने आपे छे. ते उपर श्रीबाहु तथा सुबाहु आदिना दृष्टांतो प्रख्यात छे. श्रीबाहु साधुए उल्लसित जावथी पोताना गुरु आदि पांचसो साधुओने आहार लावी आपी तेमज बीजी वैयावच्च करी उत्तम प्रकारनी जक्ति करी बतावी हती. तेनाथी तेणे जोग्य कर्म उपार्जन कर्युं हतुं. सुबाहु मुनिए पण तेमनी वैयावच्च—जक्ति करी अतिशय जुजबल उपार्जन कर्युं हतुं. ते पछी बंने मुनिओए पूर्वोक्त प्रकारे जक्ति करता पोताना सम्यक्त्वने सारी रीते शोजाव्युं हतुं. ते जक्तिना प्रभावथी उत्तम पुण्य संपादन करी तेओ देवलोकमां गया अने त्यां दिव्य सुखनो अनुजव लइ ते बंने श्रीऋषजदेव प्रजुना पुत्र रुपे अवतर्या हता. पहेला जे बाहुमुनिनो जीव हतो ते जरत चक्रवर्त्ती थयो अने सुबाहुनो जीव बलवान् बाहुबली थयो हतो. बंने निरुपम एवा मनुष्य सुखने प्राप्त करी छेवटे मोक्षना परम सुखना जोक्ता थया हता. ते विषे विस्तारथी जाणवुं होय तो अन्य ग्रंथोथी जाणी लेवुं. ए प्रमाणे प्रवचननी जक्तिनुं फल मोटुं छे, एम मानी भव्य जीवोए तेने विषे विशेष उद्यम करवो—एवी रीते सम्यक्त्वने दीपावनारा पांच आजूषणो कहेवामां आव्या.

सम्यक्त्वना पांच लक्षणो.

[१]उपशम, [२]संवेग, [३]निर्वेद, [४]अनुकंपा, [५]आस्तिकता–ए सम्यक्त्वनां पांच लक्षणो कहेलां छे.

१. उपशम–मोटो अपराध करनारा माणस उपर पण कोप न करवो, ते उपशम कहेवाय छे. ते उपशम कोइ प्राणीने कषायनी परिणतिना कटु फळ जोवाथी थाय छे अने कोइने स्वाभाविक रीते थाय छे. अर्थात् अपराधी माणसनुं पण प्रतिकूळ चिंतवतुं नहीं ते उपशम कहेवाय छे. आ उपशमथी पोतानामां प्राप्त थयेला सम्यक्त्वनी ओळख थाय छे; तेथी विवेकी पुरुषोए ए उपशम भावने सर्वदा धारण करवो. उपशमभाव एटलो बधो उपयोगी छे के ते सर्व कार्योने स्हेलाइथी साधे छे. क्रोधना उदयथी कदि कार्य नष्ट थइ गयुं होय, पण ते उपशमथी पुनः प्राप्त थाय छे, ते विषे शास्त्रमां आ प्रमाणे कहेलुं छे.

"कोहेण य हारवियं, उप्पज्जंतं च केवलं नाणं ।
दमसारेण य रिसिणा, उवसम जुत्तेण पुण लद्धं" ॥१॥

श्री दमसार मुनिए क्रोधे करीने उत्पन्न थतुं केवळज्ञान गुमाव्युं हतुं, पण उपशम भावथी पाछुं, ते ज्ञान प्राप्त कर्युं हतुं. ते कथा आ प्रमाणे छे.

दमसार राजर्षिनी कथा.

आ जंबूद्वीपमां आवेला भरतक्षेत्रनी अंदर कृतांगला नामे नगरी छे. तेमां सिंहरथ नामे एक राजा थयो हतो, तेने सुनंदा नामे राणी हती. ते राणीना उदरथी दमसार नामे एक कुमार थयो हतो. ते घणोज बुद्धिमान् हतो. ते बाळवयमांज बौंतेर कळामां प्रवीण बनी गयो; तेथी ते तेना पिताने हृदयना आनंदने उपजावतो हतो. अनुक्रमे दमसार यौवन वयने प्राप्त थयो. पिताए तेने घणी राजकन्याओनी साथे परणावी युवराज पद उपर नीमी दीधो. राजकुमार दमसार पछी सुखे काळ निर्गमन करतो हतो.

एक दिवसे ते नगरनी समीपे भगवान् महावीर स्वामी समोसर्या. देवताओए आवी तेमनुं समवसरण कर्युं, पर्षदा वंदन करवाने आवी. आ वखते राजा सिंहरथ पोताना कुमारनी साथे सपरिवार तेमने वंदना करवाने आव्यो. छत्र, चामर वगेरे राजचिन्होने दूर मूकी राजा प्रभुनी समीपे आव्यो. प्रभुने त्रण प्रदक्षिणा करी उत्कृष्ट भक्ति साथे विधिपूर्वक वंदना करी योग्य स्थाने बेठो.

पछी प्रभुए मनुष्य तथा देवतानी पर्षदामां उत्तम प्रकारनी धर्मदेशना आपी. पर्षदा धर्मनी देशना सांभळी पोतपोताने स्थाने चाली गइ. ते वखते दमसार कुमारे भगवंतने प्रदक्षिणा करी विनयपूर्वक आ प्रमाणे कह्युं, "स्वामी, आपे सर्व विरतिरुप धर्मनो जे उपदेश आप्यो, ते मने रुच्यो छे; माटे हुं आपनी पासे दीक्षा लइश. पण जो मारा माता पिता आज्ञा आपशे तोज हुं दीक्षा लइश."

प्रभुए गंभीर स्वरथी कह्युं, "देवानुप्रिय, जेम सुख उपजे तेम करो; पण प्रतिबंध करशो नहीं." प्रभुना आ वचन सांभळी दमसार कुमार घेर आव्यो अने तेणे पोताना मातापिताने आ प्रमाणे कह्युं,—"पूज्य मातापिता, आजे में श्री वीरप्रभुने भक्तिथी वांद्या छे तेमनो उपदेश मने रुचिकर लाग्यो छे. जो तमे मने आज्ञा आपो तो हुं ते प्रभुनी पासे चारित्र लेवानी इच्छा राखुं छुं." कुमारनां आ वचन सांभळी माता पिताए कह्युं, "वत्स, तुं हजी बाळक छे. तें भोग्य कर्मने भोगवेला नथी, तेथी ताराथी चारित्र पाळी शकाय नहीं. संयम मार्ग पाळवो घणोज मुश्केल छे. तीक्ष्ण तरवारनी धार उपर चालवा जेवो छे. तारुं शरीर घणुंज सुकोमळ छे, तेथी ताराथी मुनिना परिषहो सहन थइ शकशे नहीं; माटे आ संसारना सुख भोगव्या पछी योग्य वये चारित्रनुं ग्रहण करजे." माता पिताना आ वचनो सांभळी दमसार कुमार नम्रताथी बोल्यो—"पूज्य माता पिता, तमोए जे संयमनी दुष्करता बतावी ते यथार्थ छे, परंतु ते दुष्करता कायर पुरुषोने लागे छे. धीर पुरुषोने लागती नथी. धर्मवीर पुरुषो संयमनी गमे तेवी मुश्केली होय तोपण तेने साध्य करवाने समर्थ थइ शके छे. तेने माटे कह्युं छे के,—

" तां तुंगो मेरुगिरि, मयरहरो होइ तावदुत्तारो ।
ता विसमा कज्जगइ, जाव न धीरा पवज्जंति " ॥ १ ॥

" ज्यां सुधी धीर पुरुषो प्रव्रजित थया नथी, त्यां सुधी तेमने मेरुपर्वत ऊंचो लागे छे, समुद्र दुस्तर लागे छे, अने कार्यनी गति विषम लागे छे." १

"हे पूज्य माता पिता, आथी हुं संयम ग्रहण करवाने हींमत धरुं छुं. मने संपूर्ण वैराग्य प्राप्त थयेल छे. पूर्वे में अनंतीवार संसारना निःसार सुखो भोगवेला

छे, तेवा असार सुखने विषे हवे मारी इच्छा नथी. संसारनी आधि तरफ मने संपूर्ण तिरस्कार छे, तेथी तमे मने अविलंबे आज्ञा आपो; जेथी हुं संयमने अंगीकार करु."

दमसार कुमारनो संयमने विषे आवो भाव जोइ तेमज दृढ निश्चय जाणी माता पिताए तेने संयम लेवानी आज्ञा आपी. पछी तेमणे पोताना कुमारनो दीक्षोत्सव कर्यो. पवित्र वृत्तिवाळा दमसारे वर्द्धमान परिणामथी श्रीवीरप्रभु पासे आनंद पूर्वक दीक्षा लीधी. पछी तेना माता पिता परिवार सहित पोताने स्थाने चाल्या गया हता.

राजर्षि दमसार ते पछी चारित्र धर्मने यथार्थ रीते पाळवा लाग्या. छठ, अठम वगेरे तपस्या करी तेमणे कर्म निर्जरा करवा मांडी,

एक दिवसे महानुभाव दमसार मुनिए श्री वीरप्रभुनी पासे एवो अभिग्रह ग्रहण कर्यो के, "हे भगवन्, हुं जावज्जीव सुधी मासखमण तप अंगीकार करीने विचरीश." वीरप्रभुए कह्युं, "देवानुप्रिय, जेम तमने सुख उपजे तेम करो." पछी राजर्षि दमसार मुनि ए महा तपने आचरवा लाग्या. घणा मास सुधी ए तपस्या करवाथी तेमनुं शरीर शुष्क थइ गयुं. मात्र शरीरमां हाडपिंजर रहेलुं छे. आ वखते भगवान् महावीर प्रभु चंपा नगरीमां समोसर्या हता. महात्मा दमसार मुनि तेमनी पासे आवी चड्या. एक समये ते राजर्षि मासखमणना पारणाने दिवसे पेहेली पोरिसीए स्वाध्याय ध्यान करी बीजी पोरिसीए ध्यान करतां तेमना मनमां एवो विचार उत्पन्न थयो के, आजे वीरप्रभुने एवो प्रश्न करवो के, हुं भव्य छुं के अभव्य छुं. चरम छुं के अचरम छुं. मने केवलज्ञान थशे के नही थाय ?" आवो विचार करी तेओ ज्यां वीरप्रभु विराजमान हता, त्यां आवी तेमने त्रण प्रदक्षिणा आपी वंदना करी आगळ बेठा. तेवामां त्रिकालदर्शी वीरप्रभुए कह्युं, "दमसार मुनि, आजे ध्यान करतां तमोए मने पुछवाने माटे एवो अध्यवसाय कर्यो हतो के, हुं भव्य छुं के अभव्य, हुं चरम छुं के अचरम अने मने केवलज्ञान थशे के नहीं ?

आ वात सत्य छे ?" प्रभुना आ वचनो सांभळी दमसार मुनिए कह्युं, "स्वामी, ए वात सत्य छे." पछी प्रभुए कह्युं, "राजर्षि, तुं अभव्य नथी पण भव्य छे. तुं

अचरम शरीरी नथी, पण चरम शरीरी छे. तने प्रथम प्रहरनी अंदर केवळज्ञान उदय आव्युं हतुं पण कपायना उदयथी तेमां विलंब थयो छे. अने हजु विलंब पण थशे." आ वखते दमसार मुनि बोल्या—" ज्ञगवन्, हवेथी हुं सर्वथा कपायनो त्याग करीश. ते पछी त्रीजी पोरिसीमां ते राजर्पि प्रजुनी आज्ञा लइ मासखमणने पारणे जिक्षा लेवा माटे नीकळ्या. ते वखते तेओ इर्यासमिति पाळी चालता हता. चालता चालता तेओ चंपा नगरीना मार्गमां आव्या. ते वखते सूर्य मस्तक पर तपे छे. ग्रीष्मऋतुना सख्त तापथी तपेली रेती अग्निनी ज्वाळा समान धखती हती, ते उपर मुकवामां आवता चरणमां महा पीमा थती हती. तापनी पीमाथी आकुळ व्याकुळ थयेला मुनिए पोताना मनमां चिंतव्युं के, " आ ग्रीष्मरुतुनो ताप घणो दुःसह छे, माटे कोइ जाणीता माणसने चंपा नगरीनो रस्तो पुछुं. एटलामां कोइ मिथ्यादृष्टि पुरुष ते मार्गे प्रसार थतो जोवामां आव्यो. ते मुनिने सन्मुख आवता जोइ पेला मिथ्यादृष्टि पुरुपना मनमां आव्युं के 'आ तो अपशुकन थया.' आवुं चिंतवी ते नगरने दरवाजे उन्नो रह्यो. त्यारे मुनिए ते साधुने पुछ्युं— " जद्र, आ नगरमां कये मार्गे जवाय छे ?" ते मिथ्यात्वीए विचार्युं के, आ मुनि मने अपशुकन रुप थयेल छे, तेथी तेने उलो पामी दुःखी करुं' आवुं चिंतवी तेणे साधुने कह्युं, " महाराज जे रस्तो देखाय छे, ते रस्ते चाल्जो एटले नगरमां जवाशे अने ज्यां वस्तीवाळा घर हशे ते स्थळे आवी पोहोंचाशे." मुनि तेणे बतावेल मार्गे चाल्या. ते मार्ग एटलो बधो विषम हतो के मुनि तेमां एक मगलुं पण जरी शक्या नहीं. मगलां जरतां तेने जारे पीमा थइ आवी. ते मार्गे घरोनो पछवामानो जाग जोवामां आव्यो. कोइ पण माणस तेमने सामे मळ्यो नहीं. आथी ते राजर्पिना मनमां क्रोध कपायनो उदय थइ आव्यो. तत्काळ तेमणे पोताना मनमां चिंतव्युं,—" अहा ! आ नगरना लोको दुष्ट छे. कोइ पापीए मने नठारो मार्ग बताव्यो, तेथी हुं घणोज दुःखी थयो. एवा दुष्ट पुरुषो शिक्षा आपवाने योग्य छे. तेने माटे कह्युं छे के,—

" मृदुत्वं मृदुषु श्लाघ्यं, काठिन्यं कठिनेषु च ।
भृंगः छिणोति काष्टानि, कुसुमानि दुनोति न ॥ १ ॥

कोमळ वस्तुनी अंदर कोमळता अने कठिन वस्तुनी अंदर कठिनता

वखाणवा योग्य छे. जेमके भमरो काष्टने छेदे छे. अने पुष्पोने छेदतो नथी. १

तेथी आ गामना दुष्ट लोकोने हुं कष्टमां पाडीश. "

आ प्रमाणे विचारी ते मुनिए कोपथी आकुल-व्याकुल थइ कोइ गाया-वाला प्रदेशमां उभा रही उत्थानश्रुत गणवानो प्रारंभ कर्यो. जे उत्थानश्रुतमां उद्वेगने उत्पन्न करनारा सूत्रो रहेला छे. ते सूत्रोना प्रभावथी जे देश, नगर के गाम सुखे वसवा योग्य होय ते दुःखे वसवा योग्य थइ जाय छे. राजर्षि दमसार मुनिए ते सूत्रने गणाववानो आरंभ कर्यो. जेम जेम ते मुनि तेने गणवा लाग्या, तेम तेम चंपानगरनी अंदर अनेक जातना अकस्मातो थवा लाग्या. नगरना सर्व लोको भयभीत थइ गया. अने शोकाकुल थइ पोतपोताना धन धान्यादिकनो त्याग करी, मात्र जीवित लइ दशे दिशाओमां नाशवा लाग्या. ज्यारे प्रजा नाशवा लागी एटले राजा पण पोताना समृद्धिमान् मेहेलनो त्याग करी नाशी गयो. सर्व नगर शून्य थइ गयुं. आ वखते नगरनो आवो देखाव जोइ अने लोकोने कष्ट पामता विलोकी ते मुनिना हृदयमां पश्चात्ताप थवा लाग्यो. तत्काल तेओ ते सूत्रनी गणना करवाथी निवृत्त थइ गया. तेमणे पोताना मनमां चिंतव्युं " अरे ! आ मे शुं कर्युं ? में कारण शिवाय आ लोकोने दुःखी कर्या. सर्वज्ञनुं वचन अन्यथा होय नहीं. वीर प्रभुए मने कह्युं के, 'कषायना उदयथी तुं केवल-ज्ञानने हारी गयो छे.' ए वीरनुं वचन यथार्थ थयुं छे." आ प्रमाणे चिंतवी अति करुणारसमां मग्न थयेला मुनिए सर्व लोकोने स्थिर करवा माटे समुत्थान-श्रुतने गणवा मांड्युं. ए श्रुतना सूत्रोने गणवाथी देश, नगर के गाम सुवासित थाय छे. तेमणे आह्लाद आपनारा ते सूत्रोनुं परावर्त्तन जेम जेम करवा मांड्युं, तेम तेम सर्व लोको प्रमुदित थता नगरमां पाछा आववा लाग्या. राजा पण सहर्ष थइ पोताना दरबारमां आव्यो. सर्व नगर निर्भय थइ गयुं. अने सर्व लोको स्वस्थ थइ गया.

पछी दमसार मुनि तपथी कृश थइ उत्कृष्ट एवा शमरसमां मग्न थता ते नगरमांथी आहार पाणी लीधा वगर पाछा वळ्या अने विनय सहित प्रभुनी पासे आव्या. राजर्षि दमसार मुनिने जोइ वीरप्रभु बोल्या " राजर्षि, चंपा नग-रीमां भिक्षाने अर्थे जतां कोइ मिथ्या दृष्टिना वचनथी क्रोध पामी पछी क्रोधथी

शांत थइ तुं अहीं आवेलो छुं ए वात यथार्थ छे. " ? मुनिए कह्युं, हा, ए वात यथार्थ छे. प्रभु बोल्या—" मुनि, जे कोइ साधु अथवा साध्वी कषायने वहन करेछे, ते आ संसारने दीर्घ करे छे अने जे उपशम भावने धारण करे छे तेनो संसार अल्प थइ जाय छे. " प्रभुना आ वचनो सांभळी दमसार मुनिए कह्युं,—" भगवन्, कृपा करी मने उपशमनुं सारभूत प्रायश्चित्त आपो. पछी प्रभुए तपकरवा रुप प्रायश्चित्त आप्युं. पछी ते महर्षिए प्रभुनी पासे अभिग्रह लीधो के " स्वामी, ज्यारे मने केवळज्ञान उत्पन्न थशे त्यारे हुं आहारने ग्रहण करीश. " आवो अभिग्रह धारण करी ते महात्मा दमसार मुनि तप तथा संयमथी पोताना आत्माने भावता विचरवा लाग्या. प्रमादथी उत्पन्न थयेला दोषने निंदता अने शुभ अध्यवसायने धारण करता ते महर्षिने ते पछी सातमे दिवसे केवलज्ञान उत्पन्न थइ आव्युं. देवताओए आवी तेमना केवळज्ञाननो महोत्सव कर्यो. महर्षि दमसार केवली भव्यजीवोने प्रतिबोध आपी बार वर्ष सुधी केवलीपर्याय पाळी अंते अनशन करी मोक्षपदने प्राप्त थया हता. आ प्रमाणे उपशम भाव उपर दमसार मुनिनुं सुबोधक दृष्टांत छे. एवी रीते बीजा पण सम्यक्त्वधारी जीवोए सर्व आभ्यंतर [1]तापने निवारवा माटे अने पोताना तथा परना उपकारने करनारा उपशम रसने विषे मग्न थवुं के, जेथी परमानंदना सुखनी श्रेणी उल्लसित थाय छे, ए उपशम नामनुं प्रथम लक्षण कहेवामां आव्युं.

संवेग नामनुं बीजुं लक्षण.

अतिशय श्रेष्ठ एवा देव तथा मनुष्यना सुखनो अभिलाप राखवो, ए संवेग नामनुं सम्यक्त्वनुं बीजुं लक्षण कहेवाय छे. सम्यग्दृष्टि पुरुष इंद्र तथा चक्रवर्त्तीना मनोहर सुखने पण अनित्य अने दुःखानुबंधी माने छे अने शाश्वत–नित्य आनंदना स्वरुपवाळा मोक्षसुखनेज वांछेछे. ए सम्यक्त्वनुं बीजुं संवेग लक्षण कहेवामां आव्युं.

सम्यक्त्वनुं त्रीजुं लक्षण निर्वेद.

नारकी तथा तिर्यंच आदि सांसारिक दुःखथी कंटाळी जवुं, ते निर्वेद नामे सम्यक्त्वनुं त्रीजुं लक्षण कहेवाय छे. सम्यग्दृष्टि प्राणीओ जेमां जन्म मर-

१ क्रोध कषाय

पादि गहन दुःख रहेलुं छे एवा आ संसाररूप बंदीखानामां कर्मरूपी पोलीसो अनेक प्रकारनी कदर्थना करे छे, तेनो प्रतिकार करवाने असमर्थ अने ममत्वथी रहित एवो प्राणी दुःखे करी संसार उपर विरक्त थइ जाय छे. एवी रीते बीजुं संवेग अने त्रीजुं निर्वेद ए उभय लक्षणो मोक्षपदने आपनार होवाथी सम्यग्दृष्टि पुरुषोए दृढप्रहारीनी जेम तेनो सर्वथा आश्रय करवो.

दृढप्रहारीनुं दृष्टांत.

माकंदी नगरीने विषे 'सुभद्र' नामे एक शेठ रहेतो हतो. तेने 'दत्त' नामे एक पुत्र हतो. दत्त बाल्यवयमांथीज उन्मत्त जेवो हतो. ते बीजा बाळकोनी उपर दृढ प्रहार करतो तेथी लोकोमां ते दृढप्रहारीना नामथी ओळखातो हतो. दत्तना तोफानथी लोको तेना पिता सुभद्रने उपको आपवा आवता हता. सुभद्र पोताना उन्मत्त छोकराने घणी रीते वारतो तो पण ते उच्छृंखल छोकरो रंजाम छोडतो नहीं. हंमेशा नाना बाळकोनी उपर प्रहार कर्या करतो हतो. दृढप्रहारीना आवा नठारा वर्तनथी कंटाळी लोकोए राजानी पासे फरीयाद करी. राजाए हुकम कर्यो एटले सुभद्र शेठे दत्तने पोताना घरमांथी काढी मुक्यो. दत्त घर छोडीने चाल्यो गयो. तेनो स्वभाव अतिशय क्रूर होवाथी कोइ ठेकाणे ते निवासने पामी शक्यो नहीं. ते फरतो फरतो कोइ चोर लोकोनी पल्लीमां गयो. त्यां संसर्गना दोषथी दूषित थइ ते चोर बनी गयो. एक वखते कोइ दरिद्री ब्राह्मणना घरमां ते चोरी करवा पेठो. तेवामां तेना आंगणामां रहेली गाय पोताना शींगडाथी तेने मारवा सन्मुख दोडी आवी. घातकी दृढप्रहारीए पोताना हाथमां रहेला खड्गथी ते गायने मारी नांखी. ते वखते घरमां सुतेलो ब्राह्मण हाथमां लाकडी लइ तेनी सामो आव्यो. दृढप्रहारीए तेने पण खड्गथी मारी नांख्यो. ते वखते ते ब्राह्मणनी सगर्भा स्त्री पोकार करवा लागी. घातकी चोरे तेणीने पण ठार मारी नांखी. ते वखते तेणीना उदरमांथी गर्भ बाहेर नीकळी तरफडवा लाग्यो. तेने जोतां ज ते दृढप्रहारीना हृदयमां कोइ शुभ कर्मनो उदय थइ आवतां तत्काल वैराग्य उत्पन्न थइ आव्यो. ते घातकी चोरे पोताना मनमां आ प्रमाणे चिंतव्युं, "अहा! शुं में पापीए आवुं घोर पाप कर्युं? मारा मानुष्य जन्मने धिक्कार छे के जे जन्म आवा पापना समूहने करनार थइ पड्युं." आवुं चिं-

तवी तेणे पंचमुष्टि लोच करी चारित्रनो अंगीकार कर्यो अने एवो अभिग्रह धारण कर्यो के, "ज्यां सुधी मने आ करेला पापनुं स्मरण थइ आवे त्यां सुधी मारे अन्नपाणी ग्रहण करवा नही, आवो अभिग्रह ग्रहण करी ते दृढप्रहारी मुनि ते नगरनी पूर्व दिशाने दरवाजे कायोत्सर्ग ध्याने रह्या हता. ते मुनिने एवी स्थितिमां जोइ नगरना मूर्ख लोको तेनी उपर धुळ तथा पथ्थरनी दृष्टि करवा लाग्या; तो पण ते ज्ञानी मुनि क्षमागुणने धारण करी रहेता हता. तेमना वशीभूत थयेला चित्तनी अंदर कोइ पण जातनो क्षोभ थतो न हतो. तेवी रीतें दोढ मास सुधी रहेतां तेने पोताना पापनुं विस्मरण तद्दन न थयुं, त्यारे ते बीजे दरवाजे जइ कायोत्सर्ग ध्याने रह्या, त्यां पण तेमने तेवीज रीते बन्युं हतुं. तेवी रीते ते चारे दरवाजे फरी तेणे सर्व प्रकारना उपद्रवोने सहन कर्या. अने सर्व प्रकारनी पीडा वेठी पोतानी दृढताने अचल राखी हती. ते पछी आ दुःखमय संसारथी विरक्त अने परम संवेगना रंगथी व्याप्त थयेला ते महर्षिने छ मासे ते पूर्वनुं पाप मूळमांथी नष्ट थतां केवलज्ञान उत्पन्न थयुं पछी तत्काळ तेओ मोक्षपदने प्राप्त थया हता. ए प्रकारे संवेद तथा निर्वेद उपर दृढ प्रहारी महर्षिनी कथा प्रख्यात छे ते कथानुं श्रवण करी बीजा आत्महितार्थी पुरुषोए ते उभय लक्षणोने यत्न पूर्वक धारण करवा.

सम्यक्त्वनुं चोथुं लक्षण अनुकंपा.

दुःखी प्राणीओना दुःखने निष्पक्षपातथी निवारण करवानी जे इच्छा ते अनुकंपा कहेवाय छे. ए सम्यक्त्वनुं चोथुं लक्षण छे. दुष्ट स्वभाववाळा सिंह, वाघ वगेरेने पण पोताना संतानो उपर करुणा होय छे, पण वस्तुताए ते करुणा कहेवाती नथी, कारणके, ते पक्षपातने लइने करुणा छे. जे पक्षपात वगर स्वाभाविक करुणा होय ते अनुकंपा कहेवाय छे. ते अनुकंपा द्रव्य अने भाव एम बे प्रकारे छे. दुःखीयाने देखी पोतानी शक्ति प्रमाणे तेना दुःखनो प्रतिकार करवो, ते द्रव्यथी अनुकंपा कहेवाय छे. जेओ धर्म रहित छे, तेने धर्म पमाडवो अथवा आ संसार तरफ वैराग्य उत्पन्न कराववो, ए भावथी अनुकंपा कहेवाय छे. सम्यग्दृष्टि पुरुषोए इन्द्रदत्तने आश्रीने सुधर्म राजानी पेठे ते उभय प्रकारनी अनुकंपानो सर्वदा आश्रय करवो.

सुधर्म राजानी कथा.

पंचाल देशमां वरशक्ति नामे एक नगर हतुं. तेमां दयाथी जेनुं आर्द्र हृदय छे, अने जे जैन धर्ममां पूर्ण रागी छे, एवो सुधर्मा नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने जयदेव नामे एक नास्तिक मंत्री हतो. एक वखते परदेशमांथी आवेला कोइ चर पुरुषे सभा मंडपमां बेठेला राजानी आगळ विनंती करी के, "स्वामी महाबल नामनो एक सीमाडानो राजा घणो उन्मत्त थइ गयो छे. ते अनेक गामोनो नाश करे छे अने सार्थपतिओने लुंटे छे. ते दुष्ट राजा तमारा शिवाय कोइथी वश थइ शके तेम नथी." ते चरना आवा वचन सांभळी राजाए पोताना मंत्रीनी सामे जोयुं, एटले मंत्री विनयथी बोल्यो, "महाराजा, ए बीचारो रंक राजा आपनी आगळ कोण मात्र छे? ज्यांसुधी आप महाराजाए तेनुं आक्रमण कर्युं नथी, त्यांसुधी ए गर्जना करे छे. तेन माटे कह्युं छे के,

"तावद्गर्जंति मातंगा, वने मदभरालसाः ।
शिरोऽवलग्नलांगूलो यावन्नायाति केशरी" ॥ १ ॥

"ज्यांसुधी मस्तक पर पुंछडो चडावी केशरीसिंह आव्यो नथी, त्यां सुधी मदना भारथी भरपूर एवा गजेंद्रो वनमां गर्जना करे छे." १

मंत्रीनां आवां वचनो सांभळी राजाए चिंतव्युं के, जे तावानो राजा पोताना देश के मंडळनो नाश करनार थाय, तेने अवश्य वश करवो जोइए. नहीं तो तेने नीतिना भंगनो प्रसंग प्राप्त थाय छे. नीति शास्त्रमां लखे छे के, "दुष्टस्य दंडः स्वजनस्य पूजा" एटले जे दुष्ट होय तेने दंड आपवो अने जे स्वजन होय तेनी पूजा करवी; माटे आ कार्यमां जरा पण विलंब न करवो." आवुं चिंतवी राजाए आज्ञा करी पोताना सैन्यने एकठुं कर्युं अने पोते सज्ज थइ ते महाबल शत्रु उपर चडाइ करवा चाल्यो. अनुक्रमे तेना देशमां आव्यो, अने मोटी लडाइ करी ते राजाने क्षणवारमां हरावी दीधो. ते राजानुं सर्वस्व हरी लइ राजा सुधर्म पाछो फरी पोतानी राजधानी पासे आव्यो. नगरना महाजन मंडळे मोटा आडंबरथी सामैयुं कर्युं अने राजानो प्रवेशोत्सव कर्यो. मोटा सैन्यथी परिवृत थयेलो राजा जेवामां नगरना मुख्य दरवाजा पासे आव्यो, तेवामां ते दरवाजो अकस्मात्

तुटी पड्यो. मोटुं अपशुकन थइ पड्युं. पछी राजा पाछो वळी नगरनी बाहेर पडाव नाखीने रह्यो. पछी मंत्रीए हजारो लोकोने कामे लगाडी तत्काळ ते दरवाजो पाछो उभो कराव्यो. पछी बीजे दिवसे राजा प्रवेश करवाने आव्यो, तेटलामां पाछो ते बीजो दरवाजो पण तुटी पड्यो, पुनः पाछो फर्यो अने त्रीजी वार पण तेमज बन्युं; पछी राजाए कंटाळी पोताना मंत्रीने आ प्रमाणे कह्युं, " मंत्रीश्वर, जयदेव, आ दरवाजो वारंवार केम पडतो हशे? हवे ते कया उपाये स्थिर थइ शकशे ? " मंत्रीए कह्युं, " महाराज, में ते विषे एक निमित्तियाने पूछ्युं हतुं, मारा पूछवाथी ते निमित्तियाए मने कह्युं छे के, " आ दरवाजाना अधिष्ठायक देव कोप पाम्या छे; ते दररोज आ दरवाजाने पाडी नाखे छे. जो राजा पोताने हाथे अथवा पोताना मातापिताने हाथे एक मनुष्यनो वध करी तेना रुधिरथी आ दरवाजानुं सिंचन करे तो ते दरवाजो स्थिर रहेशे. ते शिवाय पूजा, बलिदान वगेरे बीजा उपायोथी ते स्थिर रहेशे नही. " मंत्रीना आ वचन सांभळी दया धर्मी राजा बोल्यो. " मारे ए दरवाजाने स्थिर राखवानी कांइ जरुर नथी. जीवनो वध करवो, ए महा पाप छे, एवुं महा पाप माराथी कदिपण बनशे नहीं. तेने माटे कह्युं छे के,

" क्रियते किं सुवर्णेन, शोभते नापि तेन च ।
कर्णस्त्रुट्यति येनांग, शोभा हेतुर्निरंतरम् ॥ १ ॥ "

" ते सुवर्ण शा कामनुं छे ? अने तेनाथी शुं शोभा प्राप्त थाय तेम छे ? के जेनाथी कान तुटी जाय. "

माटे मारे तेवी हिंसा करीने नगरमां जवानी जरुर नथी. ज्यां हुं रहुं, तेज नगर छे. " राजाना मननी आवी दृढता जोइ मंत्रीए नगरना महाजनने बोलावीने कह्युं, " लोको, आ नगरनो दरवाजो मनुष्यनुं बलिदान आप्या शिवाय टकी शकवानो नथी ते मनुष्यनुं बलिदान करवामां राजा विरुद्ध छे, एटले राजानी आज्ञा शिवाय ते बनी शके तेम नथी, माटे हवे तमने योग्य लागे तेम करो. " मंत्रीना आवा वचन सांभळी सर्वे महाजन मळीने राजानी पासे आव्युं अने तेमणे राजाने जणाव्युं, " स्वामी, जे काम आपनाथी बनी शके तेवुं न होय तो ते काम अमे मळीने करीशुं, तमे पोते तेमां मौन पकडीने रहो. " राजाए

कर्युं, " प्रजाजनो, एम बने नहीं. प्रजाथी पुण्य के पाप जे कांइ थाय छे, तेनो छठो भाग राजाने प्राप्त थाय छे. तेथी तेवा पाप कामनो भाग लेवानी मारी इच्छा नथी. " महाजनोए पुनः आग्रहथी जणाव्युं, " स्वामी, तेना पापनो भाग अमारो अने पुण्यनो भाग तमारो छे, एम मानी अमोने आज्ञा आपो. अने कृपा करी मौन धरीने बेशी रहो. " प्रजाजनना आवा आग्रहथी राजा मौन धरीने बेशी रह्यो. पछी नगरजनोए प्रत्येक घरे फरी उघराणुं करी घणुं द्रव्य एकठुं कर्युं. ते द्रव्यथी एक सोनानो पुरुष बनाव्यो. पछी ते पुरुषने एक गाडामां बेसाडी तेनी कोटि द्रव्यनी पत्रिका मुकी नगरमां एवी उद्घोषणा करावी के, " जे कोइ माता पिता पोताने हाथे पुत्रनुं गळुं मरडी मारी देवताने बलिदान आपे तेने आ सुवर्णनो पुरुष अने कोटि द्रव्य आपवामां आवशे. " आवी जाहेर-घोषणा नगरमां चारे तरफ प्रवर्तावी. ते नगरमां वरदत्त नामे एक दरिद्री ब्राम्हण रहेतो हतो. तेने रुद्रसोमा नामे एक स्त्री हती. ते वणीज लोभी अने निर्दय हती. ते दंपतीने सात पुत्रो हता. ज्यारे आ घोषणा सांभळवामां आवी त्यारे ते दरिद्री वरदत्ते आवी पोतानी स्त्री रुद्रसोमाने बधी वात कहीने पूछ्युं " प्रिये आपणे सात पुत्रो छे. तेमां इंद्रदत्त नामे सर्वथी नानो पुत्र छे. जो आपणे तेने बलिदानमां आपीए तो आपणने आ द्रव्यनी प्राप्ति थाय अने आपणुं दारिद्र दूर थइ जाय. जेनी पासे द्रव्य होय छे, ते सर्व सद्गुणी गणाय छे तेने माटे लख्युं छे के,

" यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः
स पंडितः स श्रुतिमान् गुणज्ञः ।
स एव वक्ता सच दर्शनीयः
सर्वे गुणाः कांचनमाश्रयंते ॥ १ ॥ "

" जेनी पासे द्रव्य छे, ते पुरुष कुलवान, पंडित, विद्वान्, गुणज्ञ, वक्ता अने दर्शनीय गणाय छे, तेथी सर्वे गुणो द्रव्यने आश्रीने रहेला छे. १ "

तेम वळी कह्युं छे के,

" पूज्यते यदपूज्योऽपि, यदगम्योऽपि गम्यते ॥
वंद्यते यदवंद्योऽपि, तत्प्रभावो धनस्य च ॥ १ ॥

" जे अपूज्य छतां पूजाय छे, अगम्य छतां गम्य थाय छे अने अवंदनीय छतां वंदनीय थाय छे, ते द्रव्यनो प्रभाव छे. १ "

हे स्त्री, तेथी जो आपणां घरमां द्रव्य आवशे तो आपणे सर्वोपरि थइशुं. अने पुत्रने वेचवाथी थयेला पापने बहु ब्रह्मभोजन वगेरे करीने दूर करीशुं. आ काममां कोइ जातनी चिंता करवी नहीं. " पतिना आ वचन सांभळी ते निर्दय स्त्रीए ते वात अंगीकार करी. पछी वरदत्त ब्राह्मणे महाजनना पटहनो स्पर्श करीने कह्युं, "हुं मारा पुत्रने बलिदानमां आपवाने तैयार छुं, मने आटलुं द्रव्य आपी दो. " महाजने कह्युं, " जो तुं तारी स्त्री सहित तारा पुत्रनुं गळुं मरडी देवताने बलिदान आपे तो पछी आ सर्व द्रव्य तने आपवामां आवशे. वरदत्ते ते वात कबुल करी. आ वखते तेनो पुत्र इंद्रदत्त पोताना माता पितानी स्वार्थमय चेष्टा जोइ विचार करवा लाग्यो—" अहा ! आ संसारनुं स्वरुप केवुं स्वार्थमय छे ? परमार्थे करी कोइ कोइने वल्लभ नथी. कह्युं छे के,

" वृक्षं क्षीणफलं त्यजंति विहगाः शुष्कं सरः सारसाः " इत्यादि

" जेना फलो क्षीण थइ जाय एवा वृक्षनो पक्षीओ त्याग करे छे. अने शुकाइ गयेला सरोवरनो त्याग सारस पक्षीओ करे छे. "

वळी जे दरिद्री होय, तेने प्राये करीने दया होती नथी. कह्युं छे के,—

" बुभुक्षितः किं न करोति पापं, क्षीणा जना निष्करुणा भवन्ति ।

" भुख्यो माणस शुं पाप नथी करतो ? जे माणसो द्रव्यथी क्षीण थइ जाय छे, ते निर्दय बनी जाय छे. "

इंद्रदत्त पोताना मनमां आ प्रमाणे चिंतववा लाग्यो. पछी वरदत्ते पोताना पुत्रने महाजनने सोंप्यो महाजने ते पुत्रने वस्त्र, आभूषण वगेरेथी सणगार्यो. पछी तेना ललाट उपर तिलक करी मुखमां तांबूल आप्युं, एवी रीते तेने

सुशोभित बनावी राजानी पासे लाववामां आव्यो. राजा पण अलंकृत थइ तेना माता पिता अने नगरजनोथी वींटाएला इन्द्रदत्तने प्रसन्न वदनवाळो जोइ चमत्कार पामीने बोल्यो—" हे इन्द्रदत्त, तने आ वखते बलिदानमां लइ जाय छे, ते छतां तुं केम प्रसन्न वदन देखाय छे ? तने मृत्युनो भय केम लागतो नथी ?" इन्द्रदत्त बोल्यो. " देव, ज्यां सुधी भय नथी आव्यो, त्यां सुधी व्हीवुं नहीं. भय आव्या पछी निःशंक थइने ते सहन करवुं. तेने माटे कह्युं छे के,

" तावद्भयस्य भेतव्यं, यावद्भयमनागतम् ।
आगतं तु भयंवीक्ष्य, प्रहर्तव्यमशंकितः "

ज्यां सुधी भय आव्यो नथी, त्यां सुधी तेनाथी भय राखवो, पण ज्यारे भय आवी पडे त्यारे निःशंकपणे ते उपर प्रहार करवो. "

आटलुं कही ते इन्द्रदत्ते कह्युं, आ वखते हुं एक नीतिनुं वचन बोलुं छुं, ते तमारे सर्वेने सावधान थइने सांभळवा योग्य छे. " लोकोमां कहेवाय छे के, पिताए संतापेलो बालक माताने शरणे जायछे माता पिताथी परिताप पामेलो बाळक राजाने शरणे जाय छे अने राजाए संतापेलो महाजनने शरणे जाय छे. हे राजा, ज्यां माता पिता पोते पुत्रनुं गळुं मरडी तेने मारवा तैयार थाय छे, तेमां राजा प्रेरक छे अने महाजन द्रव्य आपी हणवाने माटे ग्रहण करेछे, त्यां एक परमेश्वर शिवाय बीजा कोनी शरणे जवुं ? अने कोनी आगळ ते दुःख निवेदन करवुं ? हवे तो परमेश्वरनुं शरण लइ धैर्यने धारण करी दुःखने सहन करवुं. महाराजा, आवो विचार करवाथी मारा मनमां मरणनो शोक थतो नथी."

इन्द्रदत्तना आ वचनो सांभळी राजानुं हृदय करुणारसमां मग्न थइ गयुं. तेणे आर्द्र हृदयथी जणाव्युं, " लोको, तमे शामाटे आ दीन बाळकने हणवा तत्पर थया छो ? आवुं पाप करवानी शी जरुर छे ? पापना हेतुरुप एवा आ नगर अने तेना स्थिर दरवाजानी मारे कांइ पण जरुर नथी. आ जगत्मां सर्व संसारी प्राणीओ जीवितना अर्थी छे, कोइ पण मरणनी इच्छा करतुं नथी; तेथी आत्माना हितेच्छु पुरुषोए कोइ पण जीवनी हिंसा न करवी जोइए. सर्व जीवोने विषे अनुकंपा राखवी जोइए. " आ प्रमाणे राजाने दया धर्ममां दृढ रहेल

तथा इंद्रदत्तने सत्त्ववंत देखी ते नगरनी प्रतोलीनो अधिष्टायक देव प्रसन्न थइ गयो. तत्काळ तेणे ते बंनेनी उपर पुष्पनी वृष्टि करी अने ते दरवाजाने सर्वना जोतां स्थिर करी दीधो. ते देखाव जोइ सर्व नगर जनो विस्मय पामी गया.

पछी राजाना गुणोनुं कीर्त्तन करता अने दयामय जैन धर्मनी अनुमोदना करता लोको राजानी साथे मोटा उत्सव सहित नगरमां पेठा हता. पेलो इंद्रदत्त पण हर्ष पामतो पोताना माता पितानी साथे घेर गयो. त्यारथी घणा भव्य जनोए दयामय जैन धर्मने अंगीकार कर्यो हतो. ए प्रमाणे अनुकंपा नामे सम्यक्त्वना चोथा लक्षण उपर सुधर्म राजानुं दृष्टांत कहेवामां आव्युं. एवी रीते बीजा पण भव्य जनोए आत्म धर्मने ओळखावनारा, अने सर्व सुखनी श्रेणीने प्रतिपादन करनारा ए अनुकंपा लक्षणने धारण करी जगत्‌ना सर्व प्राणी उपर अनुकंपा राखवी.

सम्यक्त्वनुं पांचमुं लक्षण आस्तिकता.

जेनी मति अस्तिपणाने विषे होय ते आस्तिक कहेवाय छे. ते आस्तिकपणानो भाव अथवा क्रिया ते आस्तिकता अथवा आस्तिक्य कहेवाय छे.अन्यमतना तत्त्वो सांभळे छे तो पण श्री जिनोक्त तत्त्वने विषे जे आकांक्षा रहित प्रीति धारण करवामां आवे छे एटले जिन वचन उपर पूर्ण विश्वास राखवामां आवे ते आस्तिक्य कहेवाय छे. तेवा आस्तिकपणाने लइने सम्यक्त्व सारी रीते ओळखाय छे, तेथी ते सम्यक्त्वनुं लक्षण कहेवाय छे. सम्यक्त्व प्रत्यक्ष जणातुं नथी ते एवा लक्षणथी ओळखाय छे. तेवा आस्तिक्यवाळो पुरुष ते आस्तिक कहेवाय छे. तेने माटे आगमने विषे कह्युं छे के,

" मन्नइ तमेव सच्चं निस्संकं जं जिणेहि पन्नत्तं ।
सुह परिणामो सम्मं कंखाइ विसुत्तियारहिओ " ॥१॥

" जे जिनेश्वरे प्ररुपेल छे, तेने सत्यज माने छे अने ते पण निःशंकपणे माने छे, अने जे आकांक्षा वगेरे दोषथी रहित एवा शुभ परिणाम ते सम्यक्त्व कहेवाय छे. १

आ गाथा उपर पद्मशेखरनी कथा प्रख्यात छे, ते कथानी अंदर आ गा-

थानो भावार्थ आवी जाय छे.

पद्मशेखरनी कथा.

जंबूद्वीपमां भरतक्षेत्रनी अंदर पृथ्वीपुर नामे नगर छे. ते नगरने विषे पद्मशेखर नामे राजा राज्य करे छे.

एक दिवसे ते नगरनी पासे आवेला वनमां घणा मुनिओथी परिवृत्त थयेला श्री विनयंधर नामे आचार्य समोसर्या. तेमना आगमननी वार्त्ता सांभळी राजा प्रमुख घणा लोको तेमने वंदना करवाने आव्या. गुरुवर्ये सर्व भव्य जीवोना उपकारने माटे धर्मदेशना आपी. ते वखते राजा पद्मशेखरे गुरु पासेथी जीवाजीवादि नव तत्त्वोनो परमार्थ जाणी तेने वज्रलेपनी पेठे पोताना हृदयमां धारण कर्यो हतो. बीजा पण घणा भव्य जीवोए ते समये गुरु पासेथी सम्यक्त्व रत्नने प्राप्त कर्युं हतुं. ते पछी राजा प्रमुख सर्व लोको विनयथी गुरु महाराजने नमन करी पोतपोताने स्थाने चाल्या गया. पछी गुरु महाराज त्यांथी विहार करी बीजे स्थले चाल्या गया हता.

त्यारथी राजा पद्मशेखर श्री जिनोक्त तत्त्वोने विषे आस्तिकताने धारण करी सुखे काळ निर्गमन करतो हतो. कदि कोइ पुरुष जिनोक्त नव तत्त्वोनी उपर श्रद्धा न राखे अने पोतानी मंद बुद्धिने लइने ते तरफ अभाव दर्शावे तो राजा पद्मशेखर जेम सारथि दुष्टजनने वश करे तेम तेने वादथी जीती वश करी आर्हत धर्मनुं यथार्थ स्वरूप समजावतो हतो. वळी ते राजा कोइ वार घणा लोकोनी सभा वच्चे गुरु तत्त्वनी आ प्रमाणे प्रशंसा करतो हतो—" हे भव्य लोको, आ संसारमां गुरु सर्वोत्तम छे. जे सदा आ लोकनी ममताथी रहित, जीवदयाना प्ररूपक, दुष्ट वादिगणने जितनार, कषाय रहित, उपमा रहित, उपशम रसना समूहथी परिपूर्ण हृदयवाळा, रागद्वेषथी वर्जित, संसारथी विरक्त, काम विकारने नाश करनार, सिद्धि रूपी स्त्री उपर परिचार करनार, सर्व व्यसनो परिहार करनार, चारित्र रुप महारत्नने ग्रहण करनार, सर्व जीवो उपर करुणा रसने वर्षावनार, अने दुर्धर प्रमाद रुप गजघटानो नाश करवामां सिंह समान छे, ते शुद्ध गुरु कहेवाय छे. जे प्राणीओ मनुष्यत्व विगेरे सर्व धर्मनी सामग्री प्राप्त करी एवा गुणवाळा गुरुने सेवे छे, तेवाओने धन्य छे. अने जेओ तेमना उपदेश वचन रुप

अमृतनुं पान करे छे, तेओने विशेष धन्य छे. " आवा वचनो कही राजा पद्मशेखर घणा जव्य आत्माओने प्रतिबोधित करतो हतो अने अनेक आत्माओना पापकर्मना मलने प्रक्षालित करतो हतो.

ज्यारे राजा आवो प्रतिबोध आपतो हतो, तेवामां एक विजय नामे शेठनो पुत्र ते स्थाने बेठो हतो. राजाना वचनमां तेने प्रतीति आवी नही. तेथी तेणे उजा थइने जणाव्युं, " महाराजा, तमे जे गुरुनी प्रशंसा करोछो, ते सर्व गुरुओ फोतरानी जेम सार वगरना छे; कारण के, पवने चलावेला ध्वजपटनी पेठे चपल चित्तवाला ते मुनिओ विषयोमां आसक्त एवी पोतानी इंद्रियोने रोकवाने केम समर्थ थइ शके ? इंद्रादिक देवताओ पण ते इंद्रियोने रोकवाने समर्थ थइ शकता नथी. " ते श्रेष्ठि पुत्रना आ वचनो सांजळी राजा पोताना मनमां चिंतववा लाग्यो. " आ कोइ दुर्बुद्धि अने वाचाल छे. आ अल्पमति माणस आवा विपरीत वचनोथी जोला लोकोने जमावी सन्मार्गथी भ्रष्ट करशे, माटे आ युवानने कोइ पण रीते प्रतिबोध करवो जोइए. " आवुं चिंतवी राजाए यक्ष नामना एक सेवकने एकांते बोलावीने कह्युं, " यक्ष, तारे आ विजयनी साथे गाढ मैत्री करवी अने तेनो विश्वास मेलववो. पछी तेना रत्नना करंमीयामां आ मारुं महा मूल्यवालुं रत्नाजरण नांखी देवुं. "

राजानी आवी आज्ञा थवाथी ते यक्षे ते विजय शेठनी साथे गाढ मैत्री करी अने तेनो पूर्ण विश्वास संपादन कर्यो. ते पछी एक दिवसे ते रत्नाजरण विजयना करंमीयामां नांखी ते वृत्तांत राजाने निवेदन कर्यो. ते पछी राजाए तत्काल नगरनी अंदर त्रणवार उद्घोषणा करावी के, " सर्व लोकोने खबर आपवामां आवे छे के, आजे राजानुं एक रत्नाजरण गुम थयेलुं छे, तो जो कोइए ते लीधुं होयतो तेणे जलदी आपी देवुं. जो ते नही आपी जाय अने पाछलथी ते जाणवामां आवशे तो तेना लेनारने सख्त शिक्षा करवामां आवशे. " आवी उद्घोषणा करावी सर्व नगरना लोकोना घर शोधवा माटे पोताना सेवकोने हुकम कर्यो. सेवकोए लोकोना घर शोधवा मांमतां विजयना घरनो शोध कर्यो. शोध करतां रत्नना करंमीयामां रत्नाजरण जोवामां आव्युं. ते जोइ तेमणे विजयने पूछ्युं, " विजय, आशुं ? आ राजानुं रत्नाजरण तमारा करंमीयामां क्यां-

थी ? " विजये कर्हुं, " हुं कांइपण जाणतो नथी. " राजपुरुषोए कह्युं, " पोते रत्नाभरणनी चोरी करी अने कहे छे के, हुं कांइ जाणतो नथी. ए केम कहेवाय ? आ माटे चोरीने छुपावे छे ? " विजय भयथी कांइ बोली शक्यो नहीं. ते मौन धरीने रह्यो. " पछी राज सेवकोए तेने पकडी बांधी लीधो अने तेने राजानी समीपे लाव्या. राजाए सेवकोने छानी रीते सूचना करी के, " हुं आज्ञा करुं तोपण तमारे तेनो वध करवो नहीं. पछी राजाए प्रकाशथी सभा समक्ष कह्युं, " आ चोर छे, माटे तेने हणी नांखो. " राजानी आवी आज्ञा थवाथी राज सेवकोए विजयने वध करनारने सोंपी दीधो. विजयना सगांओ, स्नेहीओ अने संबंधीओ ते जोता हता, पण तेने खरो चोर जाणी तेओ तेने छोडाववाने आगळ पड्या नहीं. विजये पोताना मनमां जाण्युं के, हवे मारा जीवितनो अंत आवी जशे. पछी ते पेला यक्षने दीन वचनोथी कहेवा लाग्यो. " मित्र, तुं हरेक रीते राजाने प्रसन्न करी मने छोडाव अने मने जीवितनुं दान आप. " तेनी आवी दीनवाणी सांभळी यक्षने दया आवी तेणे राजाने विनंति पूर्वक कह्युं, " स्वामी, आ मारा मित्र विजयनो योग्य दंड लइ छोडी दो अने सर्व कल्याणना साधन रुप एवा जीवितनुं तेने दान आपो. " यक्षना आ वचनो सांभळी राजा कोपायमान थइने बोल्यो—" यक्ष, आ चोरने छोडी देवो ए मने योग्य लागतुं नथी. तोपण तारा वचननुं मान राखवाने एक उपाय छे के, ते विजय मारा घरमांथी एक तेलथी भरेलुं पात्र हाथमां ले अने तेमांथी एक बिंदु पण नीचे पडे नहीं. तेवी रीते आखा नगरमां भमीने मारी पासे लावीने मुके, तो हुं तेने जीवतो राखीश. ते शिवाय तेने जीवतो राखवामां आवशे नहीं. " यक्षे राजानो आ हुकम विजयने जणाव्यो. मरणना भयथी भय पामेला विजये पोताना प्राण बचाववाने ते सर्व कबुल कर्युं. पछी राजा पद्मशेखरे पोताना नगर जनोने बोलावी आ प्रमाणे आज्ञा करी. नगरजनो, आजे आपणा नगरमां प्रत्येक स्थाने विविध जातना वाजांओ वगडावो. मनोहर रूपने धारण करनारी अने सर्व इंद्रियोना सर्वस्वने हरनारी वेश्याओने घेर घेर नचावो. " राजानी आवी आज्ञा थवाथी लोकोए आखा नगरमां तेवी गोठवण करी दीधी. पछी विजय ते तेलनुं पात्र लइ नगरमां फरवा नीकळ्यो. ते शब्द, रूप, रस, अने गंध वगेरे विषयोनो अति रसिक हतो, छतां मरणना भयथी ते जितेंद्रिय, निर्विकारी अने मनने

जीतनारो थइ कोइ पण स्थले स्खलना पाम्या वगर आखा नगरमां नमी राजानी सभामां आव्यो अने यत्नथी जाळवेलुं ते तेलनुं पात्र राजानी आगळ मुकी ते प्रणाम करीने उभो रह्यो. राजा हास्य करीने बोल्यो—" विजय, तुं नगरमां फर्यो ते वखते वाद्य, गीत, अने नृत्यो थतां हतां, ते छतां ते तारा विद्युत्ना जेवा चपळ मनने अने इंद्रियोने केवी रीते वश करी ?" विजय बोल्यो—" स्वामी, मरणना भयथी हुं तेम करी शक्योछुं. कह्युं छे के, " मरणसमं नत्थि भयं " " मरण समान बीजुं भय नथी. "

राजाए कह्युं, " विजय तुं विषयोमां तृषातुर छे, ते छतां ते एक भवमां मरणना भयथी प्रमादने हणी नांख्यो, तो जे मुनिओ अनंत भवना भीरु छे अने तत्त्वोने जाणनारा छे, तेओ अनंत अनर्थो उत्पन्न करनारा प्रमादने केम सेवे ?" राजानुं आ वचन सांभळी विजय एकदम प्रतिबुध्ध थइ गयो. तेना मोहनो उदय नाश पामी गयो. जिनमतना परमार्थने जाणी तेणे श्रावक धर्मने अंगीकार कर्यो. ते वखते सर्व लोको आनंद पामी गया. अने राजाना सद्गुणोने प्रेमपूर्वक गावा लाग्या.

आ प्रमाणे राजा पद्मशेखरे घणां भव्यजीवोने जैन धर्ममां स्थापित करी अने जैन धर्मना महिमाने वधारी सुखे राज्य पालन कर्युं हतुं. छेवटे आस्तिक्य रुप सम्यक्त्वना लक्षणना प्रभावथी ते चिरकाल राज्य करी देवगतिने प्राप्त थयो हतो.

भव्य जीवोए आ पद्मशेखर राजाना चरित्रने सांभळी पोताना हृदयमां आस्तिकरुप सम्यक्त्वना लक्षणने धारण करवुं के जेथी मोक्षसंपत्ति प्राप्त थाय छे.

छ प्रकारनी यतना.

" परतीर्थिकादि वंदनेत्यादि " परतीर्थिओ एटले परिव्राजक, संन्यासी भिक्षु, अने भौत वगेरे वगेरे शब्दथी शिव, कृष्ण, ब्रह्मा, बौध्ध, प्रमुख देवोनुं ग्रहण करवुं. तथा अरिहंतनी प्रतिमा रुप एवा स्वदेवो पण जो दिगंबर वगेरे कुतीर्थिओए ग्रहण करेला अने भौत एटले भौत मतिओए अंगीकार करेला होय तेमने वंदन स्तवन न करवुं. ते पेहेली यतना कहेवाय छे.

तेवा देवोने नमस्करण एटले मस्तक वमे पंचांग वंदन न करवुं, ते बीजी यतना कहेवाय छे. सम्यक्त्व वंत पुरुषोए आ बंनेनो त्याग करवो. तेनो त्याग न करवाथी जो तेवा देवोने वंदन–स्तवन वगेरे करवामां आवे तो तेना भक्त लोको मिथ्यात्व वगेरेमां स्थिर थाय छे.

प्रवचन सारोद्धार नामना ग्रंथमां लखेलुं छे के, मस्तके करी जे करवामां आवे ते वंदन कहेवाय छे अने प्रणाम पूर्वक श्रेष्ठ ध्वनि वमे गुणोनुं कीर्त्तन करवुं, ते नमस्करण कहेवाय छे. तेने माटे बीजे स्थळे पण आ प्रमाणे लखेलुं छे.

" वंदण यं करजोमण, शिरसा नमण पुयणं च इहनेयं ।
वायाई नमुकारो, नमंसणं मण प्पसाओत्ति " ॥ १ ॥

" कर जोमवा ते वंदन, मस्तक नमाववुं ते नमन, वचने करी नमवुं, ते नमस्करण अने मननो प्रसाद–प्रसन्नता नमंसन समजवुं. " २

परतीर्थिओए प्रथम नही बोलाव्या छतां, तेमनी साथे आलाप न करवो ते त्रीजी यतना कहेवाय छे, सम्यक्दृष्टि पुरुषोए तेवी आलापनो सर्वथा त्याग करवो जोइए.

परतीर्थिओनी साथे संलपन करवुं, एटले वारंवार न बोलवुं, ए चोथी यतना कहेवाय छे. सम्यग् दृष्टिओए संलपन न करवुं जोइए. परतीर्थीओनी साथे विशेष लापण करवाथी अति परिचय थाय छे अने तेने लइने आचार भ्रष्ट थवाय छे तेमज मिथ्यात्वनो उदय थइ आवे छे. कदि परतीर्थिओ प्रथम बोलावे तो संभ्रम रहित थइ लोकापवादना भयथी तेनी साथे थोरुं बोलवुं.

ते परतीर्थिओने अशन, पान, खादिम अने स्वादिम तथा वस्त्र पात्र अनुकंपादान सिवाय बीजी रीते न आपवा ए पांचमी यतना कहेवाय छे. बीजी रीते आपवाथी जो ते बीजा लोकोना जोवामां आवे तो तेमनुं बहुमान थाय छे अने तेथी मिथ्यात्वनी प्राप्ति थाय छे. मात्र परतीर्थिओने अनुकंपादान करवानीज आज्ञा छे. अनुकंपा शिवाय धर्म बुद्धिथी तेमने कांइ पण आपी शकातुं नथी. अनुकंपादान देवामां कांइ पण दोष नथी. तेने माटे कह्युं छे के—

"सव्वेहिं पि जिणेहिं, डुज्जय राग दोस मोहेहिं।
सत्तानुकंपणठा, दाणं न कहिंपि पमिसिद्धं ॥ १ ॥

" जेमणे राग, द्वेष अने मोहनो त्याग करेलो छे, एवा सर्व जिनेश्वरोए सर्व प्राणीओने अनुकंपादान करवानुं कदिपण प्रतिषेध्युं नथी." १

वळी सम्यग् दर्शनी पुरुषोए परतीर्थिकोए ग्रहण करेला जिनबिंबोनी पूजा निमित्ते गंध, पुष्पादिक वस्तु सम्यग्दर्शनीओए मोकलवी नहीं. आदि शब्दथी विनय, वैयावच्च, यात्रा, स्नात्र वगेरे न करवा. तेम करवाथी लोकोने मिथ्यात्वमां स्थिर करवापणुं थाय छे. तेम न करवाथी ए छठ्ठी यतना कहेवाय छे.

आ छ यतना साचवी पर तीर्थीओना परिचयनो सर्वथा त्याग करनारा भव्यात्माओ भोज राजाना पुरोहित धनपालनी पेठे सम्यक्त्वनुं उल्लंघन करता नथी.

धनपाल पुरोहितनी कथा.

अवंति नगरीमां भोज राजाने सर्वधर नामे एक पुरोहित हतो. तेने धनपाल अने शोभन नामे बे पुत्रो हता. बंने पुत्रो पांमित्य वगेरे गुणोथी ते महाराजाना मानीता थया हता. एक दिवसे श्री सिद्धसेनसूरिना संतानिक श्री *सुस्थित नामना आचार्य भव्य जनोने प्रतिबोध करवा माटे त्यां आवी चड्या. पुरोहित सर्वधर हमेशां आचार्य पासे जतो आवतो, तेथी तेने आचार्य उपर प्रीति थइ.

एक वखत पुरोहित सर्वधरे आचार्यश्रीने पुछ्युं, "स्वामी, में मारा घरना आंगणामां कोटि द्रव्य दाटेलुं हतुं, हाल में तेनी घणी तपास करी, तो पण ते द्रव्य मने हाथ लागतुं नथी; तो हवे ते द्रव्यनी प्राप्ति शी रीते थशे ? ते कृपा करी जणावो." आचार्ये हास्य करी उत्तर आप्यो. "भद्र, जो ते द्रव्य तने प्राप्त थाय तो तारे शुं करवुं ?" सर्वधरे कह्युं, "स्वामी, जो ए द्रव्य मने प्राप्त थाय, तो हुं तमोने अर्धोअर्ध वेहेंची आपुं." गुरुए कोइ प्रकारथी ते द्रव्य सर्वधरने बतावी आप्युं. सर्वधर ते द्रव्यनो ढगलो जोइ सानंदाश्चर्य थइ गयो. पछी तेना बे सरखा भागना ढगला करी, तेमांथी एक ढगलो गुरुने माटे निर्धारी

* कोइ बीजा ग्रंथमां श्री उद्योतनसूरिना शिष्य श्री वर्द्धमानसूरि हता, एम कहेलुं छे.

गुरुने विनंति करी. " स्वामी, आ अर्धुं द्रव्य आप ग्रहण करो. " गुरु बोल्या- " जद्र अमारे मुनिने द्रव्यनुं कांइ प्रयोजन नथी. अमोए तो प्रथम पासे रहेला द्रव्यनो त्याग करी दीधो छे.

सर्वधर बोल्यो—" त्यारे शुं तमे सार रुप अर्ध द्रव्य मागोछो ?" गुरुए कह्युं, " हा, जे तमारा घरमां अर्धुं सार रुप होय ते आपो. " सर्वधरे कह्युं,— " मारा घरमां शुं सार रुप छे ?" आचार्य बोल्या—" तमारा घरमां सार रुप बे पुत्रो छे, तेमांथी एक पुत्रने आपो. " गुरुना आ वचनो सांजळी ते पुरोहित चकित थइ गयो अने क्षणवार मौन धरीने रह्यो. पछी ते आचार्य महाराज त्यांथी विहार करी बीजे स्थाने चाल्या गया हता.

पछी पुरोहित सर्वधर ते गुरुना उपकारनुं स्मरण करवा लाग्यो. ते स्मरण करतां तेना मनमां आव्युं के, ते उपकारी गुरुनो प्रत्युपकार करवाने समर्थ थइ शक्यो नहीं. आ पश्चात्तापथी तेने हृदयमां लागेला शल्यनी जेम पीमा थवा लागी. तेवी स्थितिमां केटलोक काळ निर्गमन कर्या पछी ते रोगग्रस्त बनी गयो. रोगी अवस्थामां रहेला ते छेल्ली स्थितिमां आवी पड्यो. ते वखते तेना बंने पुत्रोए पोताना धर्मने उचित एवी अंतक्रिया करवा मांमी. ते वखते पितानुं मन दुःखी थतुं जोइ तेना पुत्रोए पूछ्युं, " तात, तमारा चित्तमां कोइ चिंतानी पीमा होय तेवुं देखाय छे, तो ते शी चिंता छे ? ते कृपा करी निवेदन करो. " पुत्रोना आ वचनो सांजळी सर्वधरे पोतानो सर्व वृत्तांत जणाव्यो. ते पछी कह्युं के, "पुत्रो, तमारा बंनेमांथी एक जण जैनधर्मनी दीक्षा ल्यो. तेम करवाथी हुं ऋणमुक्त थइश. तमारा जेवा पुत्रोए मने ऋणमुक्त करवो जोइए. " पिताना आ वचन सांजळी धनपाल जय पामी नीचुं मुख करी रह्यो. ते वखते शोजने कह्युं,—" तात, हुं दीक्षा ग्रहण करीश, तमे ते जैन मुनिना ऋणमांथी मुक्त थाओ. अने हृदयमां परमानंद जावने धारण करो. " पुत्रना आ वचनो सांजळी ते सर्वधर पुरोहित काल धर्मने पामी देवलोके चाल्यो गयो. ते पछी शोजने पितानी उत्तर क्रिया करी श्री वर्द्धमान सूरिना शिष्य श्री जिनेश्वर सूरि पासे जैन दीक्षा ग्रहण करी. आथी तेनो बंधु धनपाल रोषाविष्ट थइ गयो अने त्यारथी ते जैन धर्मनो पूर्ण द्वेषी थवा लाग्यो. तेणे पोतानी सत्ताथी अवंतिमां साधुओना आगमननो निषेध करा-

व्यो. आथी अवंतिना संघे गुरुने आ प्रमाणे पत्रथी लखी जणाव्युं— " स्वामी, आपे शोजनने दीक्षा आपी उपद्रव उभो कर्यो छे. शोजनने दीक्षा न आपी होत तो शुं गच्छ शून्य थइ जात? शुं ते निर्वंश थइ जात? गच्छ तो एक रत्नाकर रुप छे. शोजने दीक्षा लीधी तेथी तेनो जाइ धनपाल पुरोहित मिथ्यात्वीपणाथी रोपाविष्ट थइ आर्हत धर्मनी घणी हानि करे छे." गुरु आ वृत्तांत जाणी विचारमां पड्या. तेमणे पोताना शिष्य शोजनने गीतार्थ जाणी शुभ दिवसे तेने वांचनाचार्यनुं पद आप्युं हतुं. ते पछी तेमने एक मुनि युगल साथे ते उपद्रवनी शांतिने माटे अवंति तरफ मोकल्या. शोजनाचार्य गुरुनी आज्ञा मान्य करी त्यांथी विहार करी उज्जयिनी नगरी प्रत्ये आव्या. ते वखते रात्रि होवाथी नगरना दरवाजा बंध हता एटले तेओ रात्रे बाहेर रह्या हता. प्रातःकाले प्रतिक्रमण करी तेओए नगरमां प्रवेश कर्यो, तेटलामां पुरोहित धनपाल तेमने सामो मल्यो. ते जैन धर्मनो पूर्ण द्वेषी होवाथी पोताना बंधु शोजनने आ प्रमाणे उपहास्यनुं वचन कह्युं,—

" गर्दजदंत जदंत नमस्ते "

" गधेडाना जेवा जेना दांत छे, एवा हे जगवान्, तने नमस्कार छे."

आ वचन सांजली शोजनाचार्ये पोताना जाइने ओळखी तेना प्रत्युत्तरमां आ प्रमाणे कह्युं.

" कपिवृषणास्य वयस्य सुखं ते " ।

" वांदराना वृषण जेवा मुखवाला हे जाइ, तने सुखशाता छे? "

आ प्रतिहास्यनुं वचन सांजळी धनपाळे कह्युं, " तमारो निवास क्यां छे? " शोजनाचार्ये कह्युं, " ज्यां तमारो निवास छे, त्यां " पछी धनपाळ पोताना जाइना वचनने ओळखी लज्जा पामी त्यांथी कोइ कार्यने माटे चाल्यो गयो हतो. ते पछी शोजनाचार्य प्रत्येक जिनमंदिरे चैत्यवंदन करी जेवामां चैत्यनी बाहेर आवे छे, तेटलामां नगरनो संघ एकठो थइ गयो. अने ते गुरुनी सामे आवी तेमना चरणमां नमी समीप बेठो. शोजनाचार्ये उत्तम वाणीथी तेने धर्मदेशना आपी. पछी सर्व संघनी साथे तेओ पोताना जाइ धनपालना घर तरफ चाल्या.

ते वखते बंधु धनपाल सन्मुख आव्यो अने विनयथी नमस्कार करी ने
लइ गयो. त्यां तेमने वसवाने माटे एक सुशोभित चित्रशाळा आपी. ते
तेणे पोतानी माता अने स्त्री वगेरेनी पासे उत्तम प्रकारनी रसवती तैयार करा
ज्यारे ते रसवती शोभनाचार्य पासे निवेदन करी, त्यारे आचार्य ते स्वीका
नहीं. तेमणे जणाव्युं के, आधाकर्मिक आहार जैन साधुने अग्राह्य छे ते
गुरुनी आज्ञा मेळवी तेमनी साथे रहेला बे मुनिओ श्रद्धालु श्रावकोने
आहार लेवाने गया. ते वखते धनपाल तेमनी साथे चाल्यो. ते समये कोइ श्रा
कने घेर गोचरीए जतां एक गरीब श्राविकाए एक दहींनु पात्र ते मुनिनी आग
धर्युं. अने कह्युं के, "मारा घरमां आ वस्तु छे, ते वोहोरो." मुनिए पुछ्युं, "आ
दहीं शुध्ध छे ?" श्राविकाए कह्युं, "महाराज ते त्रण दिवसनुं छे." तत्काल मु
बोल्या के, "तो ए दहीं अमारे लेवा योग्य नथी. कारण के, श्री जिनेश्
आगममां त्रण दिवसनुं दहीं लेवानो निषेध करेलो छे. आ सांभळी साथे आवेल
धनपाळे पूछ्युं के, "महाराज, आ दहीं अशुध्ध केम छे ?" मुनिए कह्युं "
विषे तमारे तमारा भाइने पुछी जोवुं." पछी धनपाल ते दहींनुं पात्र लइ शो
भनाचार्य पासे आव्यो अने ते आचार्यने बतावी कह्युं के, "आ दहीं अशु
केम छे ? ते लोकोमां अमृत तुल्य कहेवाय छे. जो तमे आ दहींमां जीव देखा
तो हुं श्रावक थइ जाउं अने जो नहीं देखाडो तो हुं जाणीश के, तमे जो
लोकोने ठगनारा छो." पोताना भाइनां आवां वचन सांभळी शोभनाचार्ये क
"हुं तमोने हमणांज जीव बतावुं, पण पछी तमारे तमारुं वचन पाळवुं जोइशे
धनपाळे ए वात कबुल करी पछी शोभनाचार्ये एक लाखनी थेपली मंगा
पछी दहींना पात्रनुं मुख बंध करी, तेनी पमखे एक छिद्र करी ते पात्र त
मुक्युं. पछी ते छिद्रमांथी दहीं पेला लाखना अलतामां पडवा लाग्युं, त्य
तेनी अंदर धोला जीवडाओ जोवामां आव्या. तत्काल तेमणे ते धनपालने बत
व्या. धनपाल ते चालता जीवोने जोइ पोताना मनमां अतिशय आश्चर्य पा
गयो. तत्काल तेना हृदयमां एवी भावना प्रगट थइ आवी के, जैन धर्मने धन्यवा
घटे छे. तत्काल ते पोताने मुखे आर्हत धर्मनी प्रशंसा करवा लाग्यो. तेना हृदय
तत्त्व रुचिरुप सम्यक्त्व प्रगट थइ आव्युं. पछी तेणे पोताना भाइ शोभनाचा
पासे बारव्रत अंगीकार कर्यां अने ते शुद्ध श्रावक बनी गयो. ते श्री अरिहंत

देव, उत्तम साधु ते गुरु, अने जिनेंद्र ज्ञापित ते धर्म मानतो अने हृदयनें श्री पंचपरमेष्ठिनुं ध्यान धरतो ते आत्म साधन करवा लाग्यो. तेणे अन्य तदन छोडी दीधो. ते द्वादशव्रत धारी उत्कृष्ट श्रावक बनी गयो.

शोभनाचार्य आ प्रमाणे पोताना बंधुने प्रतिबोध आपी गुरुनी समीपे हता. धनपाल छ यतना पाळतो सुखे करी सम्यक्त्व धर्मने आराधतो गुमावतो हतो.एक वखते कोइ दुष्ट ब्राह्मणे आवी भोजराजाने कह्युं,"महा- तमारो पुरोहित धनपाल जैन थइ गयो छे. ते जिनेश्वर विना बीजा कोइ देवने नमतो नथी." ते ब्राह्मणना आ वचनो सांभळी राजाए पोताना मनमां र कर्यो के, जो ए वात सत्य होय तो तेनी परीक्षा करीए. ते पछी राजा एक दिवसे धनपालने साथे लइ महाकालना मंदिरमां गयो. भोज राजाए कालेश्वर शंकरने प्रणाम कर्यो. धनपाल शंकरने नम्यो नहीं. तेणे पोताना मां रहेल मुद्रिकानी अंदर स्थापित एवा जिनेश्वरनी प्रतिमाने नमस्कार . भोजराजाए ते चातुर्यथी जाणी लीधुं. पछी राजा पाताने स्थाने आव्यो, णे चंदन पुष्प वगेरे पूजानी सामग्री आपी धनपालने आज्ञा करी के, नपाल आ पूजानी सामग्री लइ देवनी पूजा करी आवो." आवी आज्ञा तेनी पाछळ गुप्त बातमीदारो मोकल्या. धनपाल राजानी आज्ञाथी तत्काल थइ प्रथम देवीना मंदिरमां गयो.त्यांथी त्वरित थइ बाहेर नीकळी शिवा- ां गयो. त्यां पण आसपास फरी बाहेर नीकळी विष्णुना मंदिरमां पेठो.त्यां नुं उत्तरीय वस्त्र नांखी रूप ढांकीने बहार नीकळी श्री ऋषभदेवना मंदिरमां . त्यां शांतचित्ते भक्तिभावथी श्री जिनेश्वरनी पूजा करी राजद्वारे आवी व्यो. राजाए मोकलेला गुप्त दूतोए ते वृत्तांत राजाने छानी रीते कही दीधो राजा भोजे धनपालने पुछ्युं. "केम धनपाल, तमे देवपूजा करी ?" धनपाले र आप्यो. "स्वामी,में सारी रीते पूजा करी." त्यारे राजाए पुनः जणाव्युं." ाल, तमे भवानी देवीना मंदिरमां त्वरित थइ बाहेर केम नीकळी गया ?" ाल बोल्यो "स्वामी, ते देवीना हाथमां त्रिशूल हतुं. ललाट प्रदेशमां भ्रकुटी बेली हती अने ते पाडानुं मर्दन करतां हता. तेथी हुं तेमनाथी भय पामीने र नीकळी गयो हतो. कारण के, में जाण्युं के, आ भवानीने युद्ध करवानो

अवसर छे, पूजानो अवसर नथी, आवुं विचारी में तेमनी पूजा करी नहीं." राजाए पुनः पुछ्युं, " धनपाल, त्यारे तें शंकरनी पूजा केम न करी ?" धनपाले उत्तर आप्यो " स्वामी, जेने कंठ न होय तेने पुष्पमाळा शी रीते पेहेरावाय? जेने नासिका न होय, तेने सुगंध केम अर्पाय ? जेने कान न होय तेने गीत शी रीते संभळावाय ? अने जेने चरण न होय तेने चरणमां वंदना शी रीते थाय ? आवुं विचारी लिंगरूप ते शंकरनी पूजा में करी नहीं. आ अर्थने अनुसरतो श्लोक ते आ प्रमाणे बोल्यो हतो.

"अकंठस्य कंठे कथं पुष्पमाला, विना नासिकायाः कथं धूप गंधः।
अकर्णस्य कर्णे कथं गीतनादः, अपादस्य पादे कथं मे प्रणामः॥१॥"

आ श्लोक बोली रह्या पछी राजा जोजे पुनः प्रश्न कर्यो. " धनपाल, त्यारे विष्णुना मंदिरमां जइ तेमनी पूजा केम न करी ? अने तेमने वस्त्रथी ढांकी तुं जलदी बाहेर केम नीकळी गयो ? " धनपाले कह्युं, " राजेन्द्र, विष्णु पोतानी स्त्रीने साथे राखी रहेला हता. तेथी में विचार कर्यो के, आ वखते विष्णु जनानामां एकांत रहेला छे, माटे हमणां पूजानो वखत नथी. कोइ साधारण पुरुष पण जो पोतानी स्त्री पासे एकांते रह्यो होय ते वखते तेनी समीपे सारा माणसे न जवुं जोइए तो आ तो कृष्ण वासुदेव के जे त्रण खंडना स्वामी कहेवाय छे, तेमनी पासे केम जवाय ? " आवो विचार करी हुं तेमनी पूजा कर्या वगर पाछो वळ्यो हतो. वळी में विचार्युं के, " चौटे जता आवता लोकोनी दृष्टिए आ देखाव आवशे, " आवुं विचारी में तेमनी उपर वस्त्र ढांक्युं हतुं. " धनपालना आ वचन सांभळी राजा जोजे कह्युं, " त्यारे मारी आज्ञा शिवाय, तें ऋषभदेवनी पूजा केम करी ? " धनपाले कह्युं, " स्वामी, तमे मने देवनी पूजा करवानी आज्ञा करी हती अने ते देवपणुं तो में ऋषभदेव भगवानमां जोयुं, तेथी में तेमनी पूजा करी हती. जेमना स्वरूपनुं वर्णन आ प्रमाणे छे.

" प्रशम रसनिमग्नं दृष्टियुग्मं प्रसन्नं
वदनकमलमंकः कामिनी संगशून्यः ।
करयुगमपि धत्ते शस्त्र संबंध वंध्यं
तदसि जगति देवो वीतरागस्त्वमेव " ॥ १ ॥

"जेमना बे नेत्रो समता रसमां निमग्न छे. जेमनुं वदन कमळ प्रसन्न छे, जेमनो उत्संग स्त्रीना संगथी रहित छे अने जे शस्त्रोनां संबंधथी रहित एवा बे हाथने धारण करे छे, एवा हे ऋषभदेव भगवान्, आ जगत्मां तमेज एक वीतराग देव छो. " १

आ श्लोक बोल्या पछी धनपाले विशेषमां जणाव्युं, " स्वामी, जे रागद्वेषथी युक्त होय, ते देव कहेवाता नथी; कारण के, तेमनामां देवपणानो अभाव छे. तेवा देवो आ संसारना तारक थइ शकता नथी. जेओ आ संसारना पारने उतारनारा छे, तेओज आ लोकमां देव कहेवाय छे, अने तेवा देव तो श्री जिनेश्वर एकज छे, तेथी उत्तम बुद्धिवाळा पुरुषोए तेवा देवनीज सेवा भक्ति करवी जोइए. "

धनपालना आवा युक्तिवाळा वचनो सांभळी भोज राजाना मनमां कुदेवने माटे शंका उत्पन्न थइ अने तेणे धनपालनी प्रशंसा करवा मांडी. एक वखते मिथ्यात्वी ब्राह्मणोनी प्रेरणाथी भोज राजाए एक मोटा यज्ञनो आरंभ कर्यो. ज्यारे यज्ञनी पूर्णाहुतिनो समय आव्यो त्यारे एक बोकडाने होमवा माटे त्यां लाववामां आव्यो. होम करतां बोकडो पोकार करवा लाग्यो, ते जोइ राजा भोजे धनपालने पुछ्युं, " भद्र धनपाल, आ बोकडो शुं बोले छे ? ते कहे. ? ते वखते धनपाले कह्युं, " महाराज, ते बोकडो आ प्रमाणे बोले छे—

" नाहं स्वर्गफलोपभोग रसिको नाभ्यर्थितस्त्वं मया
संतुष्ट स्तृण भक्षणेन सततं साधो न युक्तंतव ।
स्वर्गे यांति यदि त्वया विनिहिता यज्ञे ध्रुवं प्राणिनो
यज्ञं किं न करोषि मातृपितृभिः पुत्रैस्तथा बांधवैः ॥ १ ॥

हे साधु पुरुष, हुं स्वर्गना फलनो उपभोग करवामां रसिक नथी. ते फलने माटे में तारी प्रार्थना पण करी नथी. हुं हमेशां घास खाइ संतुष्ट रहुं छुं, ते छतां तुं मने मारे छे, ते घटित नथी. यज्ञमां हणेला प्राणीओ जो स्वर्गे जता होय तो तुं तारा माता पिता, पुत्रो अने बांधवोने मारी यज्ञ केम करतो नथी?"१

धनपालना मुखथी आ शब्दो सांजळी राजा जोज कोपायमान थइ गयो. पण ते वखते ते मौन धरीने बेशी रह्यो.

एक वखते राजा जोजे एक मोटुं सरोवर कराव्युं. वर्षाऋतु आववाथी ते सरोवर जळथी परिपूर्ण जराइ गयुं. ते खबर जाणी राजा जोज पांचसो पंमितोनो परिवार लइ ते सरोवर जोवाने आव्यो. चतुर पंमितो पोतपोतानी बुद्धिने अनुसारे नवा काव्योथी ते सरोवरनुं वर्णन करवा लाग्या. धनपाल ते वखते मौन धरीने रह्यो. ते समये जोज राजाए धनपालनी सामे जोइने कह्युं के, धनपाल, तमे पण सरोवरनुं वर्णन करो. राजानी आज्ञा थवाथी धनपाले आ प्रमाणे एक नवीन कविता रची सरोवरनुं वर्णन कर्युं.

" एषा तमाग मिषतो वरदान शाला
मत्स्यादयो रसवती प्रगुणा सदैव ।
पात्राणि यत्र बक सारस चक्रवाकाः
पुण्यं कियद्भवति तत्र वयं न विद्मः ॥ १ ॥

" आ सरोवर एक उत्तम दानशाळा छे. तेनी अंदर मत्स्य वगेरे सदाकाल तैयार थयेली जमकदार रसोइ छे. बगला, सारस अने चक्रवाक पक्षीओ तेमां पात्ररूप छे. ते दानशाळानुं पुण्य केटलुं थशे, ए अमे जाणी शकता नथी. " १

धनपालना आ वचनो सांजळी राजा जोज मनमां रोषाविष्ट थइ गयो. तेणे पोताना मनमां चिंतव्युं के, " धनपाल घणोज दुष्ट छे. मारी कीर्तिने वधारनारुं जे काम छे, ते जोइने इर्ष्या करे छे. वळी आ तेना वचनो उपरथी जणाय छे के, ते मारो शत्रुरूपे पुरोहित छे. जो एम न होय तो बीजा ब्राह्मणोए आ सरोवरनुं वर्णन करी मारी कीर्ति वधारी प्रशंसा करी अने आ दुष्ट पुरोहिते मारी निंदा करी. माटे मारे पोताए आ धनपाळने सख्त शिक्षा करवी जोइए. बीजी कोइ शिक्षा करवानी जरुर नथी, मात्र तेना बे नेत्रो काढी नांखवा, एटले तेने खरी शिक्षा थशे. " आवुं विचारी मौन धरी राजा पोतानी स्वारी लइने दरबार गढमां आववा नीकळ्यो. चौटामां आवतां एक वृद्ध मोची तेने सामो

मळी. तेणीए एक बालिकाना हाथनुं अवलंबन लीधुं हतुं. ते मोशीने जोइ राजाए पोताना पंमितोने कह्युं.

"करकंपावे शिर धुणे, बुद्धी कहा कहेह"?

"आ बुद्धी हाथ कंपावे छे अने मस्तक धुणावे छे,ते उपरथी ते शुं कहेवा मागे छे? ते कहो.

राजानो आ प्रश्न सांजळी एक पंमिते कह्युं.

"हक्कारंता यम जमां, नन्नंकार करेइ. ॥१॥"

"यमराजाना सुजटो तेने हणाणी, हणाणी, एम हाकोटा मारे छे, त्यारे ते मस्तक धूणावीने 'ना ना' एम कहे छे एटले यमराजाना सुजटो तेने लेवा हाकोटा मारे छे त्यारे ते मोशी ना पामे छे.

आ वखते धनपाले कह्युं, "राजेंद्र, आ मोशी शुं कहे छे? ते सांजळो

किं नंदिः किं मुरारिः किमु रतिरमणः किं नलः किं कुबेरः
किंवा विद्याधरोऽसौ किमथ सुरपतिः किं विधुः किं विधाता।
नायं नायं नचायं न खलु नहि नवा नापि नासौ न चैप[1]:
क्रीडां कर्तुं प्रवृत्तो यदिह महीतले जुपति जोजदेवः ॥ १ ॥

आ पृथ्वी उपर क्रीमा करवाने प्रवर्तेला जोजराजाने जोइ कोइ बालिका आ वृद्ध मोशीने पुछे छे के, "शुं आ नंदि (शंकर) छे? शुं आ कृष्ण छे? शुं आ कामदेव छे? शुं आ नलराजा छे? शुं आ कुबेर छे? शुं आ विद्याधर छे? शुं आ इंद्र छे? शुं आ चंद्र के शुं आ विधाता छे? ते वखते मोशी ना पामे छे के, ए सर्वमांथी कोइ नथी, कोइ नथी, कोइ नथी. परंतु ते आ पृथ्वीपट उपर क्रीमा करवाने माटे प्रवृत्त थयेला जोजराजा छे, १

धनपालना मुखथी आ रसिक कविता सांजळी जोजराजा हृदयमां संतुष्ट थइ गयो. तेणे संतुष्ट थइने कह्युं, धनपाल, हुं तमारी उपर प्रसन्न थयो छुं,माटे

१ ते डोशीना मस्तकनु कंपन आवा प्रकारनुं अर्थ सूचक छे.

जे इच्छा होय ते मागी ल्यो." आ वखते प्रथम सरोवरना वर्णनथी नाखुश थयेला राजाना अभिप्रायने बुद्धिबळथी जाणीने कह्युं, "राजेंद्र, मने बे नेत्रो आपो."

राजा आ वचनो सांभळी अति विस्मय पामी गयो. तेणे पोताना मनमां चिंतव्युं के, "में आ वात कोइने जणावी नथी, ते छतां आ धनपालना जाणवामां शी रीते आवी हशे?

आ उपरथी मने लागे छे के, आ धनपालना हृदयमां कोइ अलौकिक ज्ञान होवुं जोइए." आवुं चिंतवी ते धनपालनो तेणे अनेक इनामो आपी मोटो सत्कार कर्यो. ते पछी राजाए धनपालने बे नेत्रोना वरदानने माटे पूछी जोयुं, त्यारे धनपाले कह्युं के, "स्वामी, श्री जैनधर्मनी सेवाथी मारामां एवी अलौकिक बुद्धि उत्पन्न थइ छे, तेना बळथी हुं ते जाणी शक्यो छुं." आ सांभळी राजाभोजनी जैन धर्म उपर श्रद्धा थइ अने तेणे जैन धर्मनी प्रशंसा करी हती. पछी धनपाल कवि शुद्ध श्रावक बन्यो. हतो. तेणे श्राद्ध धर्म विधि, ऋषभपंचाशिका वगेरे केटलाएक ग्रंथोनी रचना करी आर्हत धर्मनी उन्नति करी हती. श्राद्ध धर्म विधि प्रकरणमां एक नीचे प्रमाणे गाथा लखेली छे.

जत्थपुरे जिणभवणं समयविऊ साहु सावया जत्थ ।
तत्थ सया वसियव्वं पउर जलं इंधणं जत्थ " ॥१॥

जे नगरमां जिन भवन होय, अवसरने जाणनारा साधुओ अने श्रावको होय अने घणुं जल तथा इंधण होय ते नगरमां सदा वास करवो. १

आ प्रकारे जावजीव सुधी छ यतना पाळी सम्यक्त्वादि धर्मने आराधी ते धनपाल अंते देवगतिने पाम्यो हतो. एवी रीते यतनाने विषे धनपालनुं वृत्तांत कहेवामां आव्युं.

छ आगार.

आगार छ कहेवाय छे. १ राजाभियोग, २ गणाभियोग, ३ बलाभियोग, ४ देवाभियोग, ५ गुरुनिग्रह अने ६ वृत्तिकांतार. ए छ आगारोना नाम छे. पोते अणजाणतां राजाना हुकमथी करवुं पडे ते पेहेलो राजाभियोग कहेवाय छे. श्रावकनी इच्छा न होय पण राजानी आज्ञाथी करवुं पडे छे एटले

जे क्रियाना करवाना पच्चखाण कर्यां होय, पण राजाना फरमानथी ते अन्यथी करवी पडे ते पेहेलो आगार छे. तेवा आगारने लइ निषिद्ध क्रिया करवाथी सम्यक्त्वनो नाश गणातो नथी. ते उपर कोशा वेश्यानुं दृष्टांत कहेवाय छे.

कोशा वेश्यानुं दृष्टांत.

पाटलीपुर नगरमां कोशा नामे एक वेश्या रहेती हती. तेणीए श्री स्थूलभद्र मुनिनी पासे सम्यक्त्व प्रमुख बार व्रतो ग्रहण करेला हता. एक वखते संतुष्ट थयेला राजाए ते वेश्याने एक रथकारने आपी दीधी. कोशा राजानी आश्रित हती, एटले राजाए तेणीने हुकम कर्यो के, तारे रथकारनी साथे रहेवुं. कोशा दृढ श्राविका हती. तेथी तेणीने रथकारनी साथे रहेवुं पसंद पड्युं नहीं, तेम ते अंतःकरणथी पण रथकारने इच्छती नहती. परंतु राजाना हुकमथी तेणीने रथकारनी साथे रहेवुं पड्युं. ते पछी कोशा रथकारनी साथे रही तेनी आगल श्री स्थूलभद्र मुनिनी प्रशंसा करती हती. ते आ प्रमाणे प्रशंसानो श्लोक बोली हती.

" संसारेऽस्मिन् समाकीर्णे बहुभिः शिष्टजंतुभिः ।
स्थूलभद्र समः कोऽपि नान्यः पुरुषसत्तमः ॥ १ ॥ "

" घणां शिष्ट जंतुओथी व्याप्त एवा आ संसारमां स्थूलभद्रना जेवो कोइ बीजो उत्तम पुरुष नथी. १ "

स्थूलभद्र मुनिनी आ प्रशंसा सांभली ते रथकार खुशी थतो हतो.

एक वखते ते रथकार कोशा वेश्याना मनने रंजन करवा माटे पोताना घरना बागमां गयो. त्यां जइ एक गोखमां बेशी ते पोतानी कला तेणीने बताववा लाग्यो. प्रथम तेणे पोतानुं एक बाण आंबानी लुंब उपर नांख्युं, बीजा बाणथी ते बाणने अने त्रीजा बाणथी बीजा बाणने—एम पोताना हाथ सुधी बाणोनी श्रेणी करी ते आंबानी लुंबने हाथवडे खेंची लीधी अने ते कोशा वेश्याने आपी, अने तेणीनी सामे जोयुं. आ वखते वेश्याए कह्युं, " तमे तमारी चालाकी बतावी त्यारे हवे मारी चालाकी जुवो. पछी तेणीए एक थाळमां सरसवना दाणानो ढगलो कर्यो, तेमां पुष्पोथी आच्छादित करेल सोय मुकी ते

उपर तेणीए नृत्य करवा मांड्युं, पण ते सोयनी अणीथी तेणीना बे पग वींधाणा नहीं अने सरसवनो ढगलो जरा पण वीखरायो नहीं. कोशानुं आवुं चातुर्य जोइ ते रथकारे कह्युं, वेश्या, तने पूर्ण साबाशी घटे छे. तारुं आवुं अद्भुत चातुर्य जोइ हुं संतुष्ट थयो छुं. तारी इच्छा आवे ते मागी ले. हुं तने जे माग ते आपवा तैयार छुं. वेश्या बोली—" रथकार, तुं खुशी थयो. पण आमां में शुं कर्युं छे? अभ्यासथी गमे ते थइ शके छे, अभ्यासनी आगळ कांइ पण दुष्कर नथी. तेने माटे कह्युं छे के,

" सुकरं नर्तनं मन्ये सुकरं लुंबिकर्त्तनम् ।
स्थूलभद्रोऽपि यच्चक्रे शिक्षितं तत्तु दुष्करम् ॥ १ ॥ "

" आवुं नृत्य करवुं सेहेलुं छे अने आम लुंब कापवी सुगम छे, एम हुं मानुं छुं, पण महामुनि स्थूलभद्र मुनिए जे करी बताव्युं अने शीखव्युं छे ते अति दुष्कर छे. १ "

वेश्याए विशेषमां जणाव्युं के, " शकडाल मंत्रीना पुत्र श्री स्थूलभद्र मुनि पूर्वे मारी साथे बार वर्ष सुधी भोगभोगवी पछी पुनः चारित्र ग्रहण करी अहिंज मारा घरनी चित्रशाळामां शील व्रतने पाळी चातुर्मास रह्या हता, ते वखते तेमने अनेक जातना भोग्य पदार्थो आपवामां आव्या हता. विकार थवातुं एकज कारण होय तो ते लोहमय शरीरवाळा पुरुषना व्रतने नाश करनारुं थाय छे तो पछी षड्रस भोजन, चित्रशाळामां निवास, यौवनवय, अने वर्षाऋतु प्रमुख विकारना कारणो व्रतने नाश करनारा केम न थाय? परंतु ते बधा कारणो ते महामुनि रुप पर्वतने सिंहनी फाळनी जेम क्षोभ पमाडवाने असमर्थ थया हता. ए महानुभाव मुनीश्वरने विषे मारा करेला हावभावो पण जळना प्रहार अने विरागिणीना हारनी जेम निरर्थक थया हता. पोताना व्रतनुं रक्षण करवाने इच्छता एवा मनुष्यो जे स्थानमां स्त्री होय, तेनी समीपे एक क्षणमात्र पण रहेवाने समर्थ नथी, तो श्री स्थूलभद्र मुनि अक्षयव्रत वाळा थइने मारी समीपे सुखे चातुर्मास्य रह्या हता. तेथी वधारे शुं कहेवुं? टुंकामां एटलुंज कहेवानुं के, महामुनि स्थूलभद्र मुनिना जेवा अति दुष्कर कार्यना करनार कोइ पण पुरुष आ पृथ्वी उपर थयेल नथी. "

महानुभाव स्थूलभद्र मुनिनी आवी प्रशंसानुं वर्णन सांभळी ते रथकार हृदयमां प्रतिबोध पामी गयो अने ते कोशा वेश्याने वारंवार नमी स्तुति करवा लाग्यो. स्तुति कर्या पछी तेणे कोशा वेश्याने कह्युं, " भद्रे, तमे मने आ संसार रुप समुद्रमां बुडतो बचाव्यो छे. हुं तमारो हृदयथी आभार मानुं छुं. " आटलुं कही ते रथकारे गुरुनी पासे जइने दीक्षा ग्रहण करी हती. पवित्र हृदया कोशा वेश्या पण सम्यक्त्व युक्त थइ चिरकाल पर्यंत श्रावक धर्म पाळी छेवटे सद्गतिनुं पात्र बनी हती. एवी रीते राजाभियोग उपर कोशा वेश्यानुं दृष्टांत कहेवामां आव्युं.

गणाभियोग.

बीजो गणाभियोग छे. गण एटले स्वजनादिकनो समुदाय, तेनो जे अभियोग एटले हुकम. ते बीजो गणाभियोग कहेवाय छे. जे कार्य सम्यक्त्ववंतने करवुं अयोग्य होय पण कदि ते स्वजन समुदायना आग्रहथी करवुं पडे एटले द्रव्यथी करवुं पडे भावथी नहीं, पण तेथी करीने सम्यग्दृष्टिने धर्मनुं उल्लंघन थतुं नथी. ते उपर विष्णु कुमार प्रमुखनुं दृष्टांत प्रसिध्ध छे. विष्णु कुमारे गच्छना आग्रहवाळा आदेशथी वैक्रिय लब्धिवडे रूप (आकार)नी रचना करी जिनमतना पूराद्वेषी नमुचि नामना पुरोहितने पोताना चरणना प्रहारवडे मारी सातमी नरक भूमिनो अतिथि कर्यो हतो. पछी ते विष्णु कुमार मुनि ते पापनी आलोयणा करी पोताना सम्यक्त्वादि धर्मने आराधी उत्कृष्ट सुखने प्राप्त थया हता. एवी रीते आगळ पण भावना पूर्वक उदाहरणो जोडीने वांची लेवा.

३ बलाभियोग.

बल एटले पराक्रम—हठ प्रयोग, तेवडे बलात्कार करी अभियोग (हुकम) करवो, ते त्रीजो बलाभियोग कहेवाय छे. एटले सम्यक्त्व वंतनी पासे काइ बलवान् पुरुष पोताना बलथी अनुचित कार्य करावे, ते बलाभियोग कहेवाय छे. तेवा बलाभियोगथी जो सम्यग् दृष्टि पुरुष धर्मनुं उल्लंघन करे तो ते दूषित गणातो नथी.

४ देवाभियोग.

कुल देवता वगेरेना अभियोगथी कांइ पण धर्म विरुद्ध कार्य करवुं पमे ते चोथो देवाभियोग कहेवाय छे. तेवा देवना बलात्कारथी कांइ पण धर्मनुं अतिक्रमण करनार पुरुष दूषित थतो नथी. कारण के, देवता पोतानी शक्तिथी अनेक जातनी हेरानगति करी शके छे ; माटे ते देवाभियोग आगारमां गणाय छे.

५ कांतार वृत्ति.

कांतार एटले जंगल, तेने विषे वर्त्तवुं, अर्थात् जंगलमां निर्वाह करवो ते कांतार वृत्ति कहेवाय छे. कांतार—जंगल पीमानो हेतु होवाथी तेनी अहिं विवक्षा करेली छे. जेम जंगलमां रहेवुं पीमाकारी छे, तेम तेवी रीते निर्वाह करवो ते पीमाकारी छे. तेवा कारणथी धर्मनुं उल्लंघन थाय, तो ते निर्दोष छे

६ गुरु निग्रह.

गुरु एटले माता पिता प्रमुख वमिलो, तेमनो निग्रह एटले तेमना आग्रहथी कबजे रहेवुं पमे ते गुरु निग्रह कहेवाय छे. गुरु—वमिलो कया कया कहेवाय ? तेने माटे शास्त्रमां कह्युं छे के,

"माता पिता कलाचार्य एतेषां ज्ञातयस्तथा ।
वृद्धा धर्मोपदेष्टारो गुरुवर्गः सतांमतः ॥ १ ॥"

माता, पिता, कलाचार्य अने तेमना कुटुंबीओ, वृद्ध अने धर्मनो उपदेश करनारा—ए सर्व गुरु वर्ग कहेवाय छे. एम सत्पुरुषोए मानेलुं छे. १

कदि कोइ वमिलना आग्रहथी धर्मनो अतिक्रम करवो पमे तो ते जिनशास्त्रमां आगार कहेल छे, एटले अपवाद कहेल छे. तेवा धर्मना उल्लंघनथी दोषित थइ शकातुं नथी.

आ प्रकारे जेणे सम्यक्त्व मूल बार व्रत अंगीकार करेला छे, एवा प्राणीओने जे परतीर्थ वगेरेनुं वंदन प्रमुख निषेध्युं छे, छतां राजा भियोग वगेरे छ

कारणोने लइने ते नक्ति रहित ड्व्यथी आराधे तो पण ते सम्यग् दृष्टि होवाथी पोताना सम्यक्त्वनुं उल्लंघन करता नथी, एम जाणवुं. आ ठ आगारो—अपवादो जे अल्प सत्त्व वाला ठे, तेमने माटे कहेला ठे परंतु जेओ महा सत्त्ववंत ठे तेमने माटे तो आ प्रमाणे कहेलुं ठे.

" न चलंति महा सत्ता सुन्निज्जमाणाओ सुद्ध धम्माओ ।
इयरेसिं चलणनावे पइन्नन्नंगो न एएहिं ॥ १ ॥

महासत्त्ववाला पुरुषो जो तेमना शुद्ध धर्मने कोइ नेदवा आवेतो पण तेओ चलायमान थता नथी. अने जेओ अल्पसत्त्ववाला ठे, तेओ कदि चलायमान थाय तो ते स्वन्नावने लइने तेमनी प्रतिज्ञानो न्नंग थतो नथी. "

ते उपर टीकाकार लखे ठे के, " महासत्त्ववंत पुरुषो कदि कोइ राजादि तेमने तेमना धर्मथी चलित करवा तत्पर थाय तो पण तेओ मोटा सत्त्ववाला होवाथी चलित थता नथी. पण जेओ अल्प सत्त्ववाला ठे, तेओ चलित थवाना स्वन्नाववाला ठे, एटले तेओ राजादिकना अन्नियोगना कारणथी चलायमान थइ जाय ठे; तेथी तेमने माटे आठ आगार कहेला ठे, तेथी करीने तेमनी प्रतिज्ञानो न्नंग थतो नथी.

ठ न्नावना.

हवे ठ न्नावनानी व्याख्या करे ठे. ए छ न्नावना न्नाववाथी सम्यक्त्व दृढ थाय ठे.

पेहेली भावना.

आ सम्यक्त्व पांच अणुव्रत, त्रण गुणव्रत, अने चार शिक्षाव्रत—ए बार व्रतोनुं अने पंचमहाव्रत रुप चारित्रनुं मूल कारण ठे; एम श्री तीर्थकरोए तथा गणधरादिकोए कहेलुं ठे. जेम मूल वगरनुं वृक्ष तीव्र पवनथी कंपायमान थइ पमी जाय ठे, तेम सम्यक्त्व रुप मूलवालुं धर्म रुपी वृक्ष के जे अति दृढ अने मजबूत ठे, ते धर्म वृक्ष सम्यक्त्व रहित होय तो कुतीर्थ—कुमत रुपी तीव्र पवनथी चलायमान थइ जाय ठे, ते स्थिरताने पामतुं नथी; तेथी सम्यक्त्वने धर्म, वृ-

इसुं मूल कहेलुं छे. जो मूल दृढ होय तो वृक्षने कोइ जातिनी हानि थती नथी. ए पेहेली भावना जाणवी.

बीजी भावना.

आ सम्यक्त्व धर्मरुप नगरमां प्रवेश करवानुं द्वाररुप छे, जेम नगर चारे तरफ दृढ किल्लावाळुं होय, पण जो तेने दरवाजो न होय तो ते नकामुं गणाय छे. कारण के, लोकोने निर्गम अने प्रवेश करवानो तेमां अभाव छे. तेवी रीते धर्म रुपी नगर जो सम्यक्त्वरुप द्वारथी रहित होय तो ते तद्दन नकामुं छे. तेमां प्रवेश करवो अशक्य छे, माटे सम्यक्त्वने धर्मरुप नगरना द्वार तुल्य कहेलुं छे.

त्रीजी भावना.

आ सम्यक्त्व धर्मरुपी प्रासादनुं प्रतिष्ठान एटले पायारुप छे, जेनी उपर प्रासादनी प्रतिष्ठा कराय ते प्रतिष्ठान कहेवाय छे. जो पायो मजबूत होय तो प्रासाद मजबूत रहे छे, अने पायो मजबूत न होय तो प्रासाद दृढ रहेतो नथी, ते भग्न थाय छे. तेथी धर्म रुपी प्रासाद सम्यक्त्व रुप पायाथी मजबूत रहे छे.

चोथी भावना.

आ सम्यक्त्व धर्म रुपी जगतना आधार भूत छे. जेम आ जगत् पृथ्वी तळना आधार विना रही शके नहीं, तेम धर्म रुपी जगत् सम्यक्त्व रुप आधार विना रही शकतुं नथी.

पांचमी भावना.

सम्यक्त्व ए धर्मने रहेवानुं पात्र रुप छे. जेम कुंभी वगेरे पात्र विना क्षीर प्रमुख पदार्थो रही शकता नथी, तेओ विनाश पामी जाय छे, तेम सम्यक्त्व रुप पात्र विना धर्म रुप वस्तुनो समूह विनाश पामी जाय छे; माटे सम्यक्त्वने पात्र कहेलुं छे.

छठी भावना.

- सम्यक्त्व ए धर्मनुं निधान-भंडार रुप छे.जेम निधान वगर बहु मूल्यवाळा मोती, मणि, सुवर्ण वगेरे द्रव्य प्राप्त करी शकाता नथी, तेम सम्यक्त्व रुप मोटा निधान

विना निरुपम सुखने आपनार चारित्र रुप धर्मरत्न प्राप्त करी शकातुं नथी, तेथी ते सम्यक्त्वने निधाननी उपमा आपेली छे.

आ प्रमाणे छ जावना वडे जावेलुं एवुं सम्यक्त्व मोक्षना सुखनुं साधक बने छे.

छ स्थानक.

जे छ स्थानकने यथार्थ रीते धारे ते सम्यक्त्वने संपादन करी शके छे. ते छ स्थानक आ प्रमाणे छे.

१ अस्ति जीवः । २ स च नित्यः। ३ स पुनः कर्माणि करोति । ४ कृतं च वेदयति । निर्वाणमस्ति अस्य जीवस्य । ६ अस्ति पुनर्मोक्षोपायः ।

१ अस्तिजीवः । जीव विद्यमान छे. प्रत्येक प्राणीओने पोताना संवेदन-अनुजव प्रमाणे सिध्ध चैतन्यनी अन्यथापणानी अप्राप्ति छे एटले पोताना आत्माना अनुजवथी बीजा आत्मानी अंदर जणाती जीवपणानी प्राप्ति छे. आ जे चैतन्य छे, ते जूतोनो धर्म नथी. पण जीवनो धर्म—स्वजाव छे. जो ते जूतोनो स्वजाव होय तो ते चैतन्यनी सर्व स्थाने अने सर्व काले प्राप्तिनो प्रसंग आवे. जेम पृथ्वी भूतमां कठिनता छे, तेम चैतन्यमां नथी ते उपरथी सर्व जूतोमां सर्व काले चैतन्यनी प्राप्ति थती नथी. धुळना ढेफामा तथा मुरदामां पण चैतन्यनी अप्राप्ति छे, माटे चैतन्य जूतोनुं पण कार्य नथी. तेनामां अत्यंत विलक्षणपणुं होवाथी चैतन्यने तेना कार्य कारण जावनी पण अप्राप्ति छे. कठिनतादि स्वजाववाला भूतो प्रत्यक्ष प्रतीत थाय छे अने चैतन्यतो तेनाथी विलक्षण छे, तेथी चैतन्य अने जूतोनो कार्य कारण जाव शी रीते घटे ? तेम चैतन्य जूतोनो धर्म पण नथी तेम कार्य पण नथी. तेथी प्रत्येक प्राणीने स्वसंवेदन (स्वानुजव) प्रमाणे जीव छे, ए वात सिध्ध थाय छे. जेनुं आ चैतन्य ते जीव छे, आथी नास्तिक मत परास्त थइ जाय छे.

२ सच नित्यः। ते जीव नित्य छे. एटले उत्पत्ति तथा नाशथी रहित छे. कारण के तेने उत्पन्न करवाना कारणोनो अजाव छे, तेमज सर्व प्रकारे तेनामां विनाशपणानो स्वजाव नथी, तेथी ते नित्य छे. जो अनित्य होय तो बंध मोक्षनुं एकाधिकरणपणुं न थाय. ते विषे कहे छे. जो जीव—आत्माने नित्य न मा-

ने अने पूर्वापर क्षणे त्रुटित एवा अनुसंधान रुप लक्षण अंगीकार करे तो कर्मनो बंध बीजाने थाय अने मोक्ष बीजानो थाय. ते तो एक मुल्यो रहे अने बीजो तृप्त थाय एम बने. दवा कोइ खाय अने रोग कोइ बीजानो मटे, एवो प्रसंग आवे. तपनो क्लेश बीजो सहे अने स्वर्ग बीजाने मळे, तेवा अति प्रसंग पणाना दोषथी ए वात घटित थती नथी. आथी करी बौध्ध मतनो निरास करवामां आव्यो; बौध्धोना सिध्धांत रुप अंधकारनो नाश करी दीधो.

३ स पुनः कर्माणि करोति । ते जीव वळी कर्मोने करे छे. एटले मिथ्यात्व, अविरति अने कषायादि बंधना हेतुथी युक्त होवाथी ते जीव नवा कर्म करे छे. जो एम न होय तो दरेक प्राणीने प्रसिध्ध अने विचित्र एवा सुखदुःखादिकनो अनुभव अप्राप्त थाय अने आ लोकमां तो जीव अनेक प्रकारना सुख दुःखनो अनुभव करे छे, तेथी ते विचित्र सुखदुःखनो अनुभव निर्हेतुक नथी. ते शी रीते ? निर्हेतुकपणुं छतां निष्पन्न एवो आत्मा कमळना पत्रनी पेठे निर्लेप होय छे. ते उपरथी एवो सिध्धांत थाय छे के, सर्व काळे ए सद्भावना अभावनो प्रसंग प्राप्त थवाथी तेम थाय छे ; माटे आ जीवने सुखदुःखना अनुभवनुं कारण पोताना करेला कर्मज छे ; बीजुं कोइ नथी. ते उपरथी एम पण सिध्ध थयुं के, ए जीव कर्मोनो कर्त्ता छे; आथी कपिलना मतनो निरास करेलो छे. अहिं कोइ शंका करे के, "आ जीव तो सर्वकाळे सुखाभिलाषीज छे कोइ काळे ते दुःखनी वांछना राखतो नथी, त्यारे ते पोते कर्मोनो कर्त्ता थइ दुःखना दळने आपनारा कर्मो करे छे" ? तेना उत्तरमां कहेवानुं के, जेम रोगी माणस रोगनी निवृत्ति इच्छे छे. ते रोगथी पराभव पामी अपथ्य सेवन करवा वडे उत्पन्न थवाना भावी कष्टोने जाणे छे, ते छतां ते अपथ्य सेवे छे, तेवी रीते जीव पण मिथ्यात्वादिकथी पराभव पामता छतां अने कोइ प्रकारे ते जाणता छतां पण दुःखना फळने आपनारा कर्मोने करे छे; तेथी तेमां कोइ जातनो दोष आवतो नथी.

४ कृतं च वेदयति। ते जीव करेला कर्मने वेदे छे, एटले ते करेला शुभाशुभ कर्मोने भोगवे छे. तेनुं अंगीकारपणुं अनुभव प्रमाण, लोक प्रमाण अने आगम प्रमाणथी सिध्ध थाय छे जो स्वकृत कर्मना फळने भोगवनार जीवने

अंगीकार न करीए तो सुख दुःखना अनुभवतुं कारण साता असाता वेदनीय कर्मनो उपभोग नहिं थाय, अने तेम छते जीवने सिद्ध अने आकाशनी पेठे सुखदुःखनो अनुभव थशे नहीं. अने आ वात तो प्रसिद्ध छे के दरेक प्राणी-ने सुखदुःखनो अनुभव स्वसंवेदन ज्ञानथी प्रत्यक्ष प्रमाणवडे सिद्ध छे. ते माटे अनुभव प्रमाणथी जीवने पोताना करेला कर्मनुं भोगववापणुं सिद्ध थयुं तेम लोकने विषे पण आ जीव प्राये करीने कर्मनो भोक्ता सिद्धज छे. जेम लोकने विषे कोइ पुरुषने सुखी देखी बीजा लोक कहे छे के, " आ पुरुष पुण्यवान् छे तेथी आवा सुखनो अनुभव करे छे. "

तेने माटे जैन आगममां आ प्रमाणे कहेलुं छे.

सव्वं च पएसतया भुंजइ, कम्ममणुभावओभइयं

" सर्वने प्रदेशपणे भोगवे, तथा विपाकपणे भोगवे उभय प्रकारे भोगवे छे. "

तेम अन्य शास्त्रमां पण कह्युं छे के—

" नाभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि "

" क्रोडो गमे युग वहा जाय, पण करेलुं कर्म भोगव्या विना क्षय पामतुं नथी. "

आ उपरथी सिद्ध थयुं के, " आ जीव करेला कर्मनो भोगवनार छे. आथी जेओ जीवने कर्मनो भोक्ता मानता नथी, तेवाओना मतने परास्त कर्यो छे.

५ निर्वाणमस्ति अस्य जीवस्य । वळी ते जीवने निर्वाण छे एटले तेनो मोक्ष थाय छे. आ जीवनी राग, द्वेष, मद, मोह, जन्म, जरा, मरण, रोगादि दुःखना क्षयरुपवाळी जे अवस्था, ते मोक्ष कहेवाय छे; ते मोक्ष आ जीवने होय छे. वळी ' ते मोक्षनो सर्वथा नाश नथी, एथी दीपकना बुझावारुप अभावरुपे निर्वाण कहेवाय छे ' आ वचनोथी असद्रूप कदाग्रहने निरूपण करनारा सौगत लोकोना मतनो निरास करवामां आव्यो छे. सौगतमतवाला तो निर्वाणने माटे आ प्रमाणे कहे छे—

"दीपो यथा निर्वृतिमभ्युपेतो नैवावनिं गच्छति नांतरीक्षम् ।
दिशं न कांचिद्विदिशं न कांचित् स्नेहक्षयात्केवलमेति शांतिम् ॥१॥
जीवस्तथा निर्वृतिमभ्युपेतो नैवावनिं गच्छतिनांतरीक्षम् ।
दिशं न कांचिद्विदिशं न कांचित् क्लेशक्षयात्केवलमेति शांतिम् ॥२॥

दीपक निर्वाण (बुझावपणा) ने प्राप्त थतां ते पृथ्वीमां, अंतरीक्ष-आकाशमां, दिशा अने विदिशामां चाल्यो जतो नथी, पण केवल स्नेह (तेल) नो क्षय थवाथी ते शांतिने पामे छे. तेवी रीते जीवपण निवृत्ति (निर्वाण) ने प्राप्त थतां पृथ्वी, आकाश, दिशा के विदिशामां जतो रहेतो नथी, पण केवल क्लेशनो क्षय थवाथी ते शांतिने पामे छे. १—२

आ सौगतनो मत तदन अयुक्त छे; कारण के जो तेम होय तो चारित्र सेवा वगेरे प्रयास निरर्थक थाय छे. वली तेमां आपेलुं दीपकनुं दृष्टांत पण घटतुं नथी; कारण के दीपकनी अग्निनो सर्वथा विनाशज नथी. ते तो तेवी जातिना पुद्गलना परिणामनी विचित्रता छे; एटले अग्निना पुद्गलो पोताना देदीप्यमान रूपनो त्याग करी अंधकारना रूपांतरने पामे छे, तेम दीवो बुझाइ जतां केटलोएक काल अंधकारना पुद्गल रुप विकार प्राप्त थाय छे, ते पुनः चिरकाले तरतज प्राप्त करातो नथी; ते आंजणना रजनी पेठे सूक्ष्म अने सूक्ष्मतर परिणामना सद्भावथी प्राप्त करवामां आवतो नथी; अहीं आपेला अंजनना रजनुं दृष्टांत आ प्रमाणे छे.—जेम अंजननी काली रज पवने करी हराती उडी जाय छे, ते परिणामनी सूक्ष्मताथी पमाती नथी, ते छतां ते असत् नथी तेनुं छतांपणुं छे; ते उपरथी सिद्ध थयुं के, जेम आंतरा रहित कहेलुं स्वरूप परिणामांतरने पामी दीपकनो निर्वाण कहेवाय छे, तेम जीव पण कर्म रहित थइ केवल अमूर्त जीव स्वरूप लक्षण रुप परिणामांतरने प्राप्त थयो तेनो निर्वाण कहेवाय छे. तेथी दुःखादिक्षयरुपवाली छती एवी जीवनी अवस्था तेज तेनो निर्वाण मोक्ष छे.

६ अस्ति पुनर्मोक्षोपायः । जीवने मोक्ष मेलववानो उपाय छे. एटले सम्यग् ज्ञान, दर्शन तथा चारित्र मोक्षना साधक होवाथी ते तेना उपाय रुप छे.

ते आ प्रमाणे—मिथ्यात्व, अज्ञान, जीव हिंसादिक दुष्ट हेतुओनो समुदाय सर्व कर्मोना जालने उत्पन्न करवाने समर्थ छे अने तेना विरोधी रुप सम्यग् दर्शनादिकनो अभ्यास सकल कर्मोने निर्मूल करवा समर्थ छे, ते आ प्रमाणे; मिथ्यादृष्टि वमे करेलो जे उपाय, ते मुक्तिनो साधक थशे, एम कहेवुं तथा मिथ्यात्वीनो करेलो उपाय हिंसादिक दोषवमे पाप वालो होवाथी संसारनुं कारणपणुं छे, आ उपरथी मोक्षना उपायना अन्नावने प्रतिपादन करनार कणादमतनो तिरस्कार करवामां आव्यो छे. एवी रीते जीवना अस्तित्व वगेरे छ स्थानको सम्यक्त्वना कहेला छे. जेना आत्माने विषे ए छ स्थानकनी प्रतीति छे, तेने सम्यक्त्व होय छे. अहिं प्रत्येक स्थानके आत्मादिकनी सिद्धिने माटे घणुं कहेवानुं छे, पण ग्रंथनी गहनता थइ जवाना नयथी ते कहेवामां आव्युं नथी.

एवी रीते सरुसठ भेदथी सम्यक्त्वने कह्युं छे. ए सरुसठ नेदथी युक्त एवा सम्यक्त्वने आराधवाथी नव्य आत्मा मोक्ष मार्गनो अधिकारी बने छे. वली अहिं जे नव्य प्राणीओ वस्तुमात्रना प्रमाणनी सिद्धिमां परस्पर सापेक्ष कालादिक पांचने कारणपणे प्रमाण करे छे, तेने तेवा प्रकारना सम्यक्त्व रत्ननुं स्वामिपणुं प्राप्त थाय छे, बीजा एकांतवादीओने थतुं नथी. तेने माटे कह्युं छे के,

" कालो सहाव नियइ पुव्वकयं पुरिसकारणे पंच ।
समवाए सम्मत्तं, एगंते होइ मिच्छत्तं ॥ १ ॥

काल, स्वन्नाव, नियति, पूर्वकृतकर्म, अने पुरुषकार (पुरुषार्थ) ए पांच कारण माने तेने सम्यक्त्व होय छे. अने तेमां जे एकांत माने तेने मिथ्यात्व होय छे. १

इत्थं स्वरूपं परमात्मरूप निरूपकं चित्रगुणं पवित्रम् ।
सम्यक्त्वरत्नं परिगृह्य नव्या नजंतु दिव्यं सुखमक्षयं च ॥ १ ॥

आवी रीते पूर्वे कहेला स्वरूपवालुं, परमात्माना रूपने प्ररूपण करनारुं अने विचित्र रूपवालुं सम्यक्त्व रत्न ग्रहण करीने हे नव्य पुरुषो, तमे दिव्य अने अक्षय सुखने नजो. १

" प्रवचनसारोद्धारा-द्यनु सारेणैष वर्णितो मयका ।
सम्यक्त्वस्य विचारो निजपरचेतः प्रसत्तिकृते ॥ २ ॥

पोताना अने बीजाना चित्तनी प्रसन्नताने माटे प्रवचन सारोध्धार वगेरे ग्रंथोने अनुसारे में आ सम्यक्त्वनो विचार वर्णन करेलो छे. २ "

इति श्री जिनलाभ सूरीश्वरना चरणकमलने विषे भ्रमर तुल्य एवा श्री जिनलाभ सूरिए संग्रह करेल आ आत्मबोध ग्रंथनो सम्यक्त्व निर्णय नामनो प्रथम प्रकाश समाप्त थयो.

इति प्रथमः प्रकाशः ।



अथ द्वितीय प्रकाश.

(देशविरति.)



आ बीजा देशविरति प्रकाशमां जेनुं स्वरूप प्रथम कहेवामां आव्युं छे, एवो सम्यकत्वमूल आत्मबोध प्रकट थवाथी केटलाएक आसन्न भव्य जीवोना चारित्र मोहनीय कर्मनो क्षय अथवा उपशम थवाथी तेमने देशविरति आदि लाभनी प्राप्ति थाय छे, ते बतावे छे.

" सदात्मबोधेन विशुद्धिभाजो भव्याहि केचित्स्फुरितात्मवीर्याः ।
भजंति सार्वोदित शुद्धधर्म देशेन सर्वेण च केचिदार्याः ॥१॥

निरंतर आत्मबोध वडे विशुद्धिने प्राप्त थएला केटलाएक भव्य प्राणीओ पोताना वीर्यने देशथी अने केटलाएक सर्वथी फोरवी सर्वज्ञ प्रभुए कहेला शुद्ध धर्मने भजे छे. १ "

कहेवानो आशय एवो छे के, केटलाएक सर्वज्ञ प्रणीत विरतिलक्षण शुद्ध धर्मने देशथी भजे छे अने केटलाएक सर्वथी एटले सर्व विरति भावने भजे छे. तेमां प्रथम देशविरति पामवानुं स्वरूप प्रगट करे छे. आ संसारने विषे बीजा कषायनी चोकडीनो क्षय अथवा उपशम थतां मनुष्य, अने तिर्यंचो सम्यक्त्व युक्त शरीर वडे जे देशविरति प्राप्त करे छे, तेनी शुद्ध व्याख्या करवामां आवे छे. देश एटले कोइ भाग ते वडे प्राणातिपातादि पाप स्थानकोथी निवृत्त थवुं–पाछा हठवुं, ते देशविरति कहेवाय छे. ते निर्मल देशविरतिपणुं बीजा अप्रत्याख्यान क्रोध, मान, माया अने लोभ लक्षणरूप चार कषाय क्षीण अथवा उपशांत थता आ संसारने विषे सम्यक्त्व युक्त एवा मनुष्य तथा तिर्यंचवर्ग प्राप्त करी शकाय छे; ते शिवाय बीजाथी पमातुं नथी. कारणके,देवता अने नारकीओने ए देशविरतिनी प्राप्तिनो

असंजव छे. तेथी आहिं तेमनुं ग्रहण करवामां आव्युं नथी. वळी सम्यक्त्वनी प्राप्तिने समये रहेली कर्मनी स्थिति मध्येथी पल्योपम पृथक्त्व लक्षणरूप स्थितिनो क्षय थवाथी देशविरति प्राप्त थाय छे. तेने माटे प्रवचन सारोद्धार ग्रंथना २४एमा द्वारमां आ प्रमाणे कहेलुं छे.

"सम्मत्तमियलद्धे पलिय पुहुत्तेण सावओ होइ।
चरणोवसमखायाणं सायर संखंतरा हुंति ॥ १ ॥"

जेटली कर्मनी स्थितिमां सम्यक्त्व पामवापणुं छे तेमांथी पल्योपम पृथक्त्व काळनी स्थिति खपावतां श्रावक थाय छे. अने संख्याता सागरोपमे उपशम चारित्र अथवा क्षायिक चारित्र पामे छे; एटले देशविरति पाम्या पछी संख्याता सागरोपमे चारित्र पामे, ते पछी संख्याता सागरोपमे उपशम श्रेणीने पामे, ते पछी संख्याता सागरोपम जतां क्षपकश्रेणी पामे अने ते पछी तेज जवमां मोक्ष थाय छे.

ए प्रकारे देशविरतिने रहेवानो काळ जघन्यथी अंतर्मुहूर्त्तनो छे. अने उत्कृष्टथी देशे उणा पूर्व कोटीनो छे; एवा प्रकारनी देशविरति जेने विद्यमान छे, ते देशविरति श्रावक कहेवाय छे ते श्रावकने बे प्रकारना कहेला छे. विरता अने अविरता. जेमणे देशविरतिपणुं अंगीकार करेलुं छे, ते आनंदादिक श्रावकोनी पेठे विरता श्रावको कहेवाय छे. अने जेमणे क्षायिक सम्यकत्त्व अंगीकार करेलुं छे, ते अविरता कहेवाय छे. सत्यकि विद्याधर, श्रेणिक तथा कृष्ण वगेरे अविरता श्रावको हता.

आ बीजा देशविरति प्रकाशने विषे जेमणे देशविरतिपणुं अंगीकार करेलुं छे, एवा श्रावकोनुं स्वरूप कहेवामां आवे छे. तेनुं निरूपण करवा माटे प्रथम श्रावकनी योग्यताने दर्शावनारा तेना एकवीश गुणो कहे छे.

"धम्मरयणस्स जुग्गो अखुद्दो रूववंपगइ सोमो।
लोगप्पिओ अकूरो जीरु असढो सदक्खिन्नो ॥ १ ॥
लज्जालुओ दयालू, मज्झत्थो सोमदिट्ठि गुणरागी।
सक्कह सुपरकजुत्तो सुदीहदस्सी विसेसन्नू ॥ २ ॥

वुह्वाणगोविणीओ, कयन्नुओ परहियत्थ कारीय ।
तह चेव लद्ध लरको इगवीस गुणो हवइ सड्ढो ॥ ३ ॥"

१ धर्म रूप रत्न ने योग्य, एवो श्रावक अक्षुद्र एटले उंची जातनो अर्थात् सुखे करीने धर्मने जाणनार.

२ रूपवान् एटले संपूर्ण अंग उपांगवाळो, मनोहर, सौम्य एटले सदाचारनी प्रवृत्ति वडे जव्य लोकोने धर्मने विषे गौरवपणुं उपजावनारो. अहीं कोइ प्रश्न करे के, नंदिषेण, हरिकेशी प्रमुख कुरूपवाळा हता, तेओमां पण धर्मनी प्राप्ति सांजळवामां आवे छे. अने तमे तो रूपवाननेज धर्मना अधिकारी कहो छो, तेनुं शुं कारण?" तेना उत्तरमां कहे छे के, " रूप बे प्रकारनुं छे. एक सामान्य रूप अने बीजुं अतिशयवाळुं रूप तेमां जे संपूर्ण अंगोपांगवाळु रूप के जे नंदिषेण ने हतुं, ते सामान्य रूप समजवुं. अने जे केवळ शेष सद्गुण सद्जावे कुरूपपणुं छे, ते कांइ पण दोषवाळुं गणातुं नथी. तेम अतिशायी रुप तो जो के तीर्थकरादिकनुंज संजवे छे तोपण जे रूपे करीने कोइ देशमां अने कोइ काळे अने हरेक वयने विषे वर्ततो एवो पुरुष 'आ रूपवान् छे' एम लोकोने प्रतीति उत्पन्न करे छे, तेज अहीं अधिकारी जाणवो एटले ते अतिशय रूपमां तेवा श्रावकोने शास्त्रकारे गण्या छे, एम जाणवुं.

३ वळी प्रकृति सौम्य एटले स्वजावे करीने सौम्य-शीतळ आकृतिवाळो जयंकर आकृतिवाळो नही. तेवी सौम्य प्रकृतिवाळो विश्वास करवा लायक होय छे. एवा प्रकारना जीवो घणुं करीने पापव्यापारमां प्रवर्तता नथी अने तेओ सुखे करी आश्रय करवा योग्य होय छे.

४ लोकप्रिय आलोक तथा परलोक संबंधी विरुद्ध कार्योने वर्जवाथी अने दान शीलादिगुणे करीने सर्व लोकोने प्रिय होय छे. एवो लोकप्रिय श्रावक सर्व प्राणीओने धर्म तरफ बहुमान उत्पन्न करावे छे.

५ अक्रूर-एटले क्लिष्ट अध्यवसायवाळो न होय. जे क्रूर होय ते परना छिद्रोने जोवामां लंपट होय छे, तेथी तेनुं मन कलुषित रहे छे. माटे ते धर्मनुं अनुष्ठान आचरतो होय तोपण ते धर्मना आचरणना फळने मेळवी शकतो नथी.

तेथी अक्रूरपणुं राखवुं युक्त छे.

६ **भीरु** एटले आलोक तथा परलोकना कष्टोथी भय पामनार शील-वाळो जे भीरु होय ते निःशंकपणाथी अधर्ममां प्रवर्ततो नथी.

७ **अशठ**–एटले निष्कपट आचारने विषे रहेनार. शाठ्यपणाथी वंचन, प्रपंचना चातुर्य वमे सर्व लोकोने अविश्वासनुं कारण थाय छे, तेथी अशठपणुंज राखवुं युक्त छे.

८ **सदाक्षिण्य**—एटले दाक्षिण्यताथी युक्त पोतानुं कार्य छोडीने पर-कार्य करवामां रसिक हृदयवाळो एवो पुरुष सर्व लोकोने माननीय होय छे.

९ **लज्जालु**–प्राकृत शैलीवमे लज्जावालो ते अकृत्य सेवननी वार्ताथीज लज्जा पामी जाय छे. अने लज्जाने लइने पोते अंगीकार करेला सत् अनुष्ठाननो ते कदि पण त्याग करी शकतो नथी.

१० **दयालु**–एटले दुःखी प्राणीओनुं रक्षण करवानो अभिलाषी. धर्म रूपी वृक्षनुं मूल दयाज छे.

११ **मध्यस्थ**, रागद्वेष रहित बुद्धिवाळो, एटले सर्व ठेकाणे रागद्वेष रहित रहेनारो. तेवा पुरुषनुं वचन सर्व जगत्ने ग्रहण करवा योग्य थाय छे.

१२ **सौम्यदृष्टि**–कोइने उद्वेग नहीं करनार. जेना दर्शन मात्रथी प्राणीओने प्रीति उत्पन्न थाय छे.

१३ **गुणरागी**–गांभीर्य, स्थैर्य प्रमुख गुणोने विषे राग–प्रीतिवाळो. ते ते गुणोनो पक्षपाती होवाथी सद्गुणोने बहु प्रकारे अंगीकार करे छे अने निर्गुणो–अवगुणो तरफ उपेक्षा करे छे.

१४ **सत्कथ**–सुपक्षयुक्त=सदाचारनो धारक होवाथी सद्वृत्तिना कहेनारा जे सहायो ते वमे युक्त. तथी ते कोइ पर तीर्थिओथी उन्मार्गे लइ जइ शकातो नथी. अहिं कोइ आचार्य सत्कथ अने सुपक्ष युक्त–एवा बे जुदा गुणो गणे छे.

१५ **सुदीर्घदर्शी**–लांबा विचार करी सुंदर परिणाम वमे कार्य करनार, साहसथी के उतावळथी कार्य नहीं करनार. ते निश्चयथी पारिणामिकी बुद्धि वमे आ लोकमां सारा परिणामवाळा कार्योनो आरंभ करे छे.

१६ विशेषज्ञ—सारासार वस्तुना विभागने जाणनार, ते विशेषज्ञ कहेवाय छे. जे विशेषज्ञ न होय ते दोषने गुणपणे अने गुणने दोषपणे अंगीकार करे छे, तेथी विशेषज्ञ पणुं घणुंज शोभनिक छे.

१७ वृद्धानुग—वृद्ध पुरुषोनी परिपक बुद्धिने अनुसारे चालनार. एटले गुण उपार्जन करवानी बुद्धिए वृद्धोने सेवनार. वृद्धोना वचनने अनुसरी चालनारो पुरुष कदिपण आपत्तिने पामतो नथी. ते संपत्तिनेज पामे छे. तेने माटे शास्त्रकार आ प्रमाणे लखे छे.

"वृद्धवाक्यं सदामान्यं, प्रायश्च सुगुणैर्नरैः ।
पश्यहंसावने बद्धा, वृद्धवाक्येन मोचिताः ॥ १ ॥"

गुणी पुरुषोए सर्वदा प्राये करी वृद्धना वचनने मानवुं. वनमां बंधाएला हंसो वृद्धना वचनथी मुक्त थया हता. १

१८ विनीत—विनयवालो. महान् पुरुषोनो विनय करनार. विनयथी तत्काल ज्ञानादिकनी संपत्ति प्रकट थाय छे.

१९ कृतज्ञ—करेलाने जाणनार—कदर जाण. ते बीजाए करेल आ लोक संबंधी उपकारने जाणे छे. तेने गोपवतो नथी. परोपकार गोपववाथी कृतघ्न थवाय छे. अने तेथी सर्वत्र निंदा पात्र बने छे. तेथी कृतज्ञ थवुं युक्त छे.

२० परहितार्थकारी—बीजाना हितने करनारा अर्थोने साधनार. अहीं कोइ शंका करे के, प्रथम सदाक्षिण्य ए गुणथी परहितकारीपणुं आवी जाय छे, तो पछी आ बीजी वार ते गुण शामाटे कह्यो ? ते बंनेमां शो तफावत छे ? तेना उत्तरमां कहेवानुं के, सदाक्षिण्य ए दाक्षिण्यता करवानो गुण छे, पण ते बीजानी प्रार्थना करवाथी करवामां आवे छे अने आ परहितार्थकारीनो गुण तो स्वभावथीज छे. ते पुरुष प्रार्थना कर्या विना स्वभावथीज परहित करवामां प्रवर्त्ते छे. तेथी ते निरिच्छकचित्तपणे बीजाओने उत्तम धर्मने विषे स्थापित करे छे.

२१ लब्धलक्ष—शीखवा योग्य आचरण उपर लक्ष आपनार—पामनार. जाणे पूर्व भवे तेणे अभ्यास कर्यो होय, तेम ते अनुष्ठानने जाणे छे. तेवा श्रावकने वंदन तथा प्रतिलेखनादिक धर्म कृत्य सत्वर प्राप्त थाय छे.

आ प्रमाणे एकवीश गुणोथी युक्त एवो श्रावक होवो जोइए. उप कहेला एकवीश गुणवाला जव्य श्रावकने विषे देशविरतिपणानी योग्यता आ छे. तेने माटे कह्युं छे के,

" जे न खमंति परीसह, जयसयाण सिणेह, विसय लोभेहिं।
सव्वविरइं धरेउ, ते जुग्गा देस विरइए " ॥ १ ॥

" जे प्रत्याख्यानावरणी कषायना उदयवाला जीवो परिषह जय, स जन स्नेह, अने विषय लोलुपना कारणो वडे सर्व विरति धारण करवाने समर्थ नथी, तेओ देशविरतिने योग्य होय छे. " १

अहिं कहेवानुं तात्पर्य ए छे के, उत्तम धर्मनी सामग्री प्राप्त करी विवेकी पुरुषोए प्रथमथी सर्व विरतिनो आदर करवो. पण जेओ क्षुधा, तृषा, निद्राने सहन करवा तथा मल धारणादिक परिषहोने खमवा जीरु छे, तेमज अत्यंत प्री तिपात्र एवा माता पिता, स्त्री, पुत्रादि स्वजनोनो त्याग करी एकाकी रहेवाने असमर्थ छे; अने पूर्वना पुण्ययोगे प्राप्त करेला इंद्रियोना विषयोने छोडवा अश क्त छे, तेओने सर्व विरति वरवाने उत्साह करतो नथी. " सर्व प्राणीओ भ्रष्ट न थाओ, सर्वनो नाश थतां जेवो तेवो लाज मळे ते पण श्रेयकारी छे" एम चिंतवी तेमणे देशविरतिनो अंगीकार करवो जोइए जो उपर कहेला स्वरूप- वाला प्रतिबंधक कारणोनो अजाव होय तो सर्व विरति अंगीकार करवी उत्तम छे. तेने माटे आवश्यक चूर्णीमां कह्युं छे के,

" विसयसुह पिवासाए, अहवा बंधवजणाणुराएण।
अचयंतो बावीसं परिसहे दुस्सहे सहिउं ॥ १ ॥
जइ न करेइ विसुद्धं सम्मं अइदुक्करं तवच्चरणं।
तो कुज्जा गिहिधम्मं नयवज्जो होइ धम्मस्स " ॥ २ ॥

" जे विषयनी तृष्णाथी, अथवा स्वजनना अनुरागथी बावीश परिषहोने सहन करवाने समर्थ न थइ शके. तेमज शुद्ध चारित्रने न आचरी शके अने अति दुष्कर तपने न करी शके. तो तेणे गृहस्थ धर्मने आदरवो, जेथी ते धर्म वर्जनिक न थाय. १-२

आवा देशविरतिने अंगीकार करनारा श्रावको जघन्य,मध्यम अने उत्कृष्ट एम त्रण प्रकारना छे.तेने माटे कह्युं छे के

" आउट्टि थूलहिंसाइ मज्जामंसाइं चाइओ ।
जहन्नो सावओ वुत्तो जो नमुक्कारधारओ ॥ १ ॥
धम्मजुग्गगुणाइन्नो छकम्मो बारसव्वओ ।
गिहत्थो सुन्नायारो सावओ होइ मज्झिमो ॥ २ ॥
उक्कोसेणं तु सड्ढोउ सचित्ताहार वज्जिओ ।
एकासणगभोइय बंभयारीतहेवय ॥ ३ ॥"

" जे श्रावक प्रयोजन विना स्थूल हिंसादि करे नहीं, मद्य, मांसादिक अभक्ष्य वस्तुनो त्याग करे, नमस्काररुप महा मंत्रने धारण करे अने दररोज नवकारसीनुं पच्चखाण करे ते जघन्य देशविरति श्रावक कहेवाय छे. जे श्रावक धर्मने योग्य एवा गुणोथी युक्त होय छे,निरंतर छ आवश्यकने आचरे छे अने बार व्रतने अंगीकार करे छे ते सदाचारवान् गृहस्थ मध्यम श्रावक कहेवाय छे. जे श्रावक सर्वदा सचित्त आहारने वर्जे छे, निरंतर एकासणादिक करे छे, अने ब्रह्मचर्यने पाळे छे ते उत्कृष्ट श्रावक कहेवाय छे. "

"हवे बार व्रतरुप लक्षणवाळुं देशविरतिनुं स्वरूप निरूपण करवाने प्रथम ते बार व्रतना नाम आपे छे."

१ प्राणिवध, २ मृषावाद, ३ अदत्तादान, ४ मैथुन, ५ परिग्रह, यकी स्थूलपणे विरमवारुप पांच अणुव्रत तथा ६ दिशिपरिमाण, ७ भोगोप भोगमान, ८ अनर्थदंड विरमण—ए त्रण गुणव्रत तथा ९ सामायिक, १० देशावकाशिक ११ पोषध अने १२ अतिथि संविभाग ए चार शिक्षाव्रत— ए सर्वे मळी बारव्रत कहेवाय छे. कह्युं छे के,

" [1]पाणिवह [2]मुसावाए [3]अदत्त [4]मेहूण [5]परिग्गहे चेव ।
[6]दिसि [7]भोग [8]दंड [9]समइ [10]देसे [11]तहपोसह [12]विभागो॥१॥

अहीं आ प्रमाणे जाणतां सम्यक्त्वना लाभ पछी गृहस्थ प्राणातिपातादिना आरंभनी निवृत्तिथी सद्गति पामवारूप गुणोने जाणता सता बारव्रत ग्रहण करे छे. ते बारव्रतमां सर्व सारभूत प्राणीवधनी निवृत्ति छे, तेथी तेने जैन शासनमां प्रथम कहेलुं छे. प्राणीओना वधथी विरमवुं, ते प्राणिवध विरमण अथवा प्राणातिपात विरमण—अहिंसाव्रत कहेवाय छे. जीव द्रव्यनुं अमूर्तपणुं छे, माटे तेनी हिंसा थवी अयोग्य छे, तेथी सर्व प्राणीओना दश प्राणनो विनाश करवो, ते हिंसा कहेवाय छे. तेने माटे लख्युं छे के,

" पंचेंद्रियाणि त्रिविधं बलं च उच्छ्वास निःश्वासमथान्यदायुः ।
प्राणा दशैते भगवद्भिरुक्तास्तेषां वियोगी करणं तु हिंसा॥१॥"

" पांच इंद्रियो, त्रण बल, श्वासोच्छ्वास अने आयुष्य ए दश प्राण भगवंते कहेला छे, तेमनो वियोग करवो, ते हिंसा कहेवाय छे. १ "

ते प्राणनो वियोग न करवो ते रूप जे व्रत ते अहिंसा व्रत कहेवाय छे. जैन धर्मनुं मूल जीवदया छे, तेथी सर्व व्रतोने विषे अहिंसा व्रतने प्रथम गणवामां आवेलुं छे. तेने माटे कह्युं छे के—

" इक्कंचिअ इत्थवयं निदिट्ठं जिणवरेहिं सव्वेहिं ।
पाणाइवाय विरमणं अवसेसा तस्स रक्खठा " ॥१॥

सर्व जिनवरोए जिन शासनमां प्राणातिपात विरमण ए एकज व्रत कहेलुं छे. बाकीना जे बीजाव्रतो कहेला छे, ते पहेला व्रतनी रक्षाने माटे छे. १

आ संपूर्ण वीश विश्वा प्रमाण वाळी दया साधुओने होय छे अने श्रावकोने सवा विश्वा प्रमाण दया होय छे. तेने माटे कह्युं छे के,

"थूला सुहुमा जीवा संकप्पारंभओ अ ते दुविहा ।
सावराह निरवराहा साविक्खाचेव निरविक्खा ॥ १ ॥

सूक्ष्म अने बादर एवा जीवना बे भेदथी प्राणि वध बे प्रकारनो छे. तेमां बेइंद्रिय प्रमुख स्थूल बादर कहेवाय छे अने एकेंद्रिय सूक्ष्म बादर कहेवाय छे; कारणके, तेमनो शस्त्रादि प्रयोगे करी वध थवानो अभाव छे.

हवे गृहस्थोने तो स्थूल बादर प्राणातिपातथी निवृत्ति थइ शके पण सूक्ष्म प्राणातिपातथी निवृत्ति थइ शके नहीं, कारणके तेमने पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, प्रमुखथी पचन पाचनादि समस्त क्रियानी प्रवृत्ति रहेली छे.

एवी रीते स्थावर जीवनी हिंसानो नियम न होवाथी वीशमांथी दश विश्वा अपगमे एटले तेमने दश विश्वा दया रहे छे.

स्थूल प्राणिवध संकल्प अने आरंभ–एम बे प्रकारनो छे. 'हुं मारुं' ए प्रकारे मनमां जे संकल्प थाय ते संकल्पथी प्राणिवध कहेवाय छे. खेतीवाडी तथा घर प्रमुखनो जे आरंभ, तेमां प्रवर्तवुं, ते बीजो आरंभथी प्राणिवध कहेवाय छे. तेमां संकल्पथी स्थूल प्राणिवधमांथी निवृत्त थवुं, ए गृहस्थथी बनी शके छे; पण आरंभथी निवृत्त थवुं, ए बनी शकतुं नथी. जो आरंभथी निवृत्त थवा इच्छा राखे तो तेना शरीरनो अने कुटुंबादिकनो निर्वाह थइ शके नहीं; तेथी आरंभोत्पन्न हिंसानो अनिषेध थतां दश विश्वामांथी पांच विश्वा दया अपगमे एटले बाकी पांच विश्वा दया रही. हवे जे संकल्पथी वध छे, ते पण बे प्रकारे छे. सापराध अने निरपराध. तेमां जे सापराध चोर, जार पुरुष वगेरेनो वध संकल्पथी वर्जी शके नहीं अने निरपराधनो वध संकल्पथी वर्जी शके, एम सापराध हिंसानो नियम न होवाथी पांच विश्वा दयामांथी अढी विश्वा दया अपगमे एटले बाकी अढी विश्वा दया रही. हवे निरपराध वध छे, ते सापेक्ष अने निरपेक्ष एम बे प्रकारे छे. तेमां अपेक्षा एटले शंका तेनाथी युक्त ते सापेक्ष शंकास्थान कहेवाय छे अने तेथी जे विपरीत एटले अपेक्षा रहित ते निरपेक्ष कहेवाय छे. तेमां गृहस्थ श्रावक सापेक्ष हिंसा वर्जी शकतो नथी, निरपेक्ष हिंसा वर्जी शके छे. जेम कोइ राजाना अधिकारी श्रावके बार व्रत अंगीकार कर्या होय ते पोताना धर्मनो जाण होवाथी तेने शंका रहे छे, तेथी कोइ निरपराधी पुरुष होय तोपण तेने वधनो निषेध करी शकतो नथी अने राजा अथवा कोइ शत्रुना पुत्रनो पण अपराध छतां वध अटकावी शकतो नथी, तेथी सापेक्ष हिंसाना न वर्जवाथी अढी विश्वा दयामांथी सवा विश्वा दया गइ एटले बाकी सवा विश्वा दया रहे छे; तेथी गृहस्थ श्रावक सवा विश्वा दया पाळी शके छे. तेने माटे कह्युं छे के—

" साहु वीसं सड्ढे, तस संकप्पा वराह साविक्खे ।

अद्धद्धओ सवाओ, विसोअओ पाए अइवाए " ॥१॥

साधुने वीश विश्वा दया छे अने श्रावकने आरंभ, सापराध अने सापेक्षपणे थावर जीव हणवाने लीधे सवा विश्वा दया छे. १

अहीं कोइ प्रश्न करे के, नियमित स्थानथी बीजा स्थानमां श्रावक पोतानी इच्छा प्रमाणे जीववध भले करे, तेमां कोइ जातनो दोष नथी. तेना उत्तरमां कहे छे के त्रस जीव वगेरेथी जुदा एवा स्थावरादिकने विषे श्रावकोनी यतना होय छे, पण निर्दयता होती नथी. ए भावार्थ समजवानो छे. " में तो संकल्पथी निरपराधी त्रस जीवना वधनुं पच्चखाण करेलुं छे, बीजानुं कर्युं नथी " आ प्रमाणे चिंतवी श्रावक पृथ्वीकाय वगेरेनुं, तथा आरंभथी त्रसादिकनुं निःशंकपणे उपमर्दन करे नही अने जो निर्वाह थतो होय तो बनता सुधी स्थावरादिकनुं पण उपमर्दन न करे. कदि निर्वाह न थाय तो, ते विचार करे के, " आ साधुओने धन्य छे, के जेओ सर्व प्रकारना आरंभथी मुकाया छे, अने हुं तो महारंभने विषे मग्न थइ पड्यो छुं. हवे हुं एमांथी क्यारे मुक्त थइश." आम दयाथी चिंतवी शंका सहित तेने विषे प्रवर्त्ते छे. तेने माटे कह्युं छे के,

" वज्जइ तिव्वारंभं कुणइ अकामो अनिव्वहंतोय ।
थुणइ निरारंभजणं दयालुओ सव्वजीवेसु " ॥१॥

आ गाथानो अर्थ उपर आवी गयो छे.

वळी कोइ कहे छे के, अनियमित–अप्रत्याख्यात वस्तुने विषे शी यतना होय ? आम बोलवुंज न जोइए. कारणके, यतना शिवाय प्राणातिपात विरमण व्रतना फळनो अभाव थाय छे. वळी जे व्रत छे ते पुण्यने माटेज आदरथी कराय छे, पोताना उच्चारेला निर्वाहने माटे करातुं नथी. अने वळी ते पुण्य मनना परिणामथीज थाय छे. जो स्थावरादिकने विषे निर्दयपणुं थाय तो पछी सर्व ठेकाणे तेवुं निर्दयपणुंज होवुं जोइए. कारणके, जीवपणुं सर्व ठेकाणे समान छे, माटेज नहीं पचखाण करेला स्थावरादिकने विषे पण यतना करवी जोइए. ते विषे कह्युं छे के,

" जं जं घर वावारं कुणइ गिही तथ्थ तथ्थ आरंभो ।
आरंभेविहु जयणं तरतम जोएण चिंतेइ " ॥ १ ॥

" गृहस्थ जे जे घरना काम करे छे, त्यां त्यां आरंभ रहेलो छे, पण श्रावक ते आरंभने विषे तरतमना योगे करी यतना करे छे." १

अल्पारंभथी जे कार्य साध्य होय, तेमां महारंभ करे नहीं एटले बहु सावद्य कर्मने त्यजी अल्प सावद्यने आचरे ते तरतम योग कहेवाय छे.

हवे अन्वय अने व्यतिरेकथी दयानुं शुभाशुभपणुं दर्शावे छे.

" यो रक्षति परजीवान् रक्षति परमार्थतः स आत्मानम् ।
यो हंत्यन्यान् जीवान् स हंति नर आत्मनात्मानम् ॥ १ ॥

जे बीजा जीवोनी रक्षा करे छे, ते परमार्थपणे पोताना आत्मानी रक्षा करे छे अने जे बीजा जीवोनी हिंसा करे छे, ते पोताने हाथे पोताना आत्मानीज हिंसा करे छे. १

अन्वय अने व्यतिरेकथी दयानुं फल.

हवे अन्वय अने व्यतिरेकथी दयानुं फल कहे छे. सुख, सौभाग्य, बल, आयुष्य, बुद्धि, कांति, अने लक्ष्मी, आदि जे फलो छे, ते दयाना फलो छे. बहु रोग, शोक, वियोग, दुर्बलता अने भय, वगेरे हिंसाना फलो छे. उपलक्षणथी संपत्ति, स्वर्ग, वगेरे जे रमणिक छे, ते दयाना फल छे अने नरकादिकमां पडवा रुप ते हिंसाना अनिष्ट फल छे. आ प्रमाणे समजी लेवुं.

प्रथम व्रतनुं दृष्टांतथी वर्णन.

" जे य संसारजं दुक्खं मोक्तुमिच्छंति जंतुणो ।
अणुकंपापरा निच्चं सुलसुव्व हवंति ते ॥ १ ॥ "

जे प्राणीओने आ संसारमांथी उत्पन्न थयेला दुःखथी मुक्त थवानी इच्छा होय, तेमणे सुलसनी जेम अनुकंपा—दयामां तत्पर थवुं. १

सुलसनुं वृत्तांत.

राजगृही नगरीमां कालकसूरियो नामे एक कसाइ रहेतो हतो.ते पोतानी

ज्ञातिना पांचसो घरमां मोटो हतो. तेने सुलस नामे एक पुत्र हतो. तेने अजय-कुमार मंत्रीनो समागम थइ आव्यो. आथी ते दयाधर्मने माननारो श्रावक थइ गयो. सुलसनो पिता कालकसूरियो दयाधर्मथी तदन रहित हतो. ते हंमेशा पांचसो पाडानो वध करतो हतो. राजा श्रेणिक तेने अटकावतो तोपण अभव्यपणाने लइने ते तेवा निंद्य काममांथी निवृत्ति पाम्यो नहीं. अंते ते मोटा उग्र पापथी जरेला पिंडवालो कालक दुष्ट लेश्याना योगथी मृत्यु पामी सातमी नरके गयो.

ज्यारे ते मृत्यु पाम्यो एटले तेना ज्ञाति जनोए तथा कुटुंबीओए आवी सुलसने कह्युं के, "हवे तुं तारा पिताना पदने ग्रहण कर अने कुटुंबनुं जरणपोषण कर." सुलसे जवाब आप्यो के, "ते शी रीते करुं ?" त्यारे कुटुंबीओए कह्युं के, कुलक्रमथी चालता आवेला रीवाज प्रमाणे दररोज पांचसो पाडाओने मार अने तेमांथी उत्पन्न थयेला द्रव्यथी अमारुं जरण-पोषण कर."

कुटुंबीओनां आवां वचन सांजळी सुलस बोल्यो-" अरे ! कुटुंबीओ, एवी मोटी हिंसा करी उपार्जन करेलुं धन तमे खाओ अने तेनाथी उत्पन्न थयेलुं पाप मारे एकने जोगववुं पडे, ए केम बने ?" सुलसनां आवां वचन सांजळी ते कुटुंबीओए जणाव्युं के, "जो एम होय तो अमे बधा तारा पापने वेंहची लइए." आ समये पोताना कुटुंबीओने प्रतिबोध आपवाने माटे सुलसे एक कुहवाडीनो घा करी पोतानो पग जरा छेदी नांख्यो अने तेनी पीडाथी पोते आक्रंद करतो बोल्यो, "मने जारे वेदना थाय छे, माटे तमे बधा मारा कुटुंबीओ आ मारी पीडाने वेंहेची ल्यो." तेनां आ वचनो सांजळी कुटुंबीओए कह्युं, "जाइ सुलस, वेदना वेंहेची लेवानुं सामर्थ्य अमारामां नथी." सुलसे कह्युं, ज्यारे तमारामां तेटलुं सामर्थ्य नथी तो नरकना हेतुरुप अनेक पाडाओना वधथी उत्पन्न थयेला मारा पापने तमे शी रीते वेंहेची लेशो ?"

सुलसनां आ वचन सांजळी सर्वे कुटुंबीओ मौन धरीने बेशी रह्या. पछी सुलस पोताना कुटुंबीओने बोध आपी प्राणीना वधथी निवारी सद्व्यवहारथी तेमनुं पालन करवा लाग्यो. ते यावज्जीवित शुध्ध श्रावक धर्मने पाळी मृत्यु पामी स्वर्गे गयो हतो. एवी रीते पहेला अहिंसा व्रतना आराधन उपर सुलसनुं दृष्टांत कहेवाय छे. एवी रीते बीजा जव्यजीवोए पण उत्तम धर्मनुं मूळ अने सर्वे

अर्थनी सिद्धिने अनुकूळ एवुं ए व्रत प्रयत्नवमे सेववुं. तेने माटे ज्ञावनानी गाथा आ प्रमाणे छे—

" धन्ना तेन मणिज्जा, जेहिं मणवयणकायसुद्धीए ॥
सव्वजियाणं हिंसा, चत्ता एवं विचिंतिज्जा " ॥ १ ॥

" जेमणे मन, वचन अने कायानी शुद्धिए करी सर्व जीवनी हिंसा छोमी छे, तेमने धन्य छे अने तेओ नमस्कार करवा योग्य छे, एम चिंतववुं." १

बीजुं स्थूल मृषावाद विरमण व्रत.

मृषा एटले असत्य वचन, तेनाथी विरमवुं-निवृत्ति थवुं, ए बीजुं मृषावाद विरमण व्रत कहेवाय छे. ते व्रत कन्यालीक वगेरेनी निवृत्ति करवारुप छे. तेने माटे कहे छे—

" कन्नागोभूअलीअं, नासावहारं च कूमसक्खिज्जं ।
थूलमलीयं पंचह, चइए सुहुमंपि जहसत्ति " ॥ १ ॥

"अति स्थूल वस्तु संबंधी एटले अति दुष्ट अध्यवसायथी उत्पन्न थयेल अलीक (जुठुं) मृषावादनो पांच प्रकारे त्याग कहे छे. ते पांच प्रकार आ प्रमाणे छे.

कन्यालीकं १ गवालीकं २ जुवलीकं ३ न्यासापहारः ४ कूटसाक्षिकं च ५ ॥

निर्दोष कन्याने पण 'आ विष कन्या छे' एम कहेवुं, ते कन्यालीक कहेवाय छे. बहु दूधवाळी गायने थोमा दूधवाळी कहेवी, अने थोडा दूधवाळी गायने बहु दूधवाळी कहेवी, ते गवालीक कहेवाय छे. पारकी जमीनने पोतानी कहेवी ते जुवलीक कहेवाय छे. उपलक्षणथी तेवी रीते द्विपद (मनुष्य) चतुष्पद (पशु) अने अपद (सर्पादि) वगेरेनुं अलीक जाणी लेवुं.

अहिं प्रश्न करे छे के, जो तेम उपलक्षणथी समजवानुं होय तो सर्व संग्रहादिकने अर्थे द्विपदादिकनुं ग्रहण केम न कर्युं ? तेना उत्तरमां कहे छे के, लोकोमां

कन्यादिक अलीक अति निंदनीय गणाय छे, माटे ते वर्जवाने अर्थे तेनुं मुख्यपणे ग्रहण करेलुं छे, तेथी तेमां कांइ पण दोष नथी.

न्यास एटले थापण तेनो अपहार एटले ओळववी, ते न्यासापहार कहेवाय छे. आ न्यासापहार अदत्तादाननुं रुप थइ शके छे, पण ओळववा रुप वचननुं प्रधानपणुं होवाथी, तेने मृषावादमां गणेलुं छे. लांच वगेरेना लोभथी अथवा मत्सर भाव वगेरे पराभवपणाथी प्रमाण करेला द्रव्यने अन्यथा रीते स्थापन करवुं, जेथी खोटी साक्षी पूरवी पडे ते कूटसाक्षिपणुं कहेवाय छे. आ भेदमां पारका पापने दृढ करवापणुं होवाथी पूर्वना भेदथी तेनुं जुदापणुं छे एटले चोथो अने पांचमो भेद जुदो छे.

एवी रीते स्थूल मृषावादने दर्शावी हवे गृहस्थने माटे सूक्ष्म अलीकनी यतना कहे छे. एटले गृहस्थे स्थूल मृषावादनो त्याग करवो अने सूक्ष्म मृषावादमां यतना करवी. सूक्ष्म एटले अल्पवस्तु संबंधी मृषावाद तेनो यथाशक्ति त्याग करवा यत्न करवो. अर्थात् जो निर्वाह चाले तो सूक्ष्म मृषावाद पण बोलवुं नहीं, अने निर्वाह न चाले तो तरतम योगथी यतना करवी. कहेवानो आशय एवो छे के, थोडाथी निर्वाह थतो होय तो वधारे मृषा बोलवुं नहीं. ते सत्य व्रतनो प्रभाव आ प्रमाणे छे, ते कहे छे—

" जे सच्च ववहारा, तेसिं डुट्ठावि नेव पहवंति ।
नाइक्कमंति आणं ताणं दिव्वाइं सव्वाइं " ॥ १ ॥

जे सत्यवादी छे, तेमने दुष्ट पुरुषो पण कष्ट आपवाने समर्थ थता नथी अने सर्व दिव्यो तेमनी आज्ञानुं अतिक्रमण करी शकता नथी. " १

ते विषे श्री कालिकाचार्य अने दत्तपुरोहितनी कथा कहेवाय छे,ते त्रीजा प्रकाशमां कहेवाशे.

तेम वळी कह्युं छे के, -

" जलमग्निर्विषं कोशो विषं माषाश्च तंडुलाः ।
'फालं धर्मः सुतस्पर्शो :दिव्यानां दशकं मतम् " ॥१॥

" जल, अग्नि, शत्रु, कोश, विष, माष (अमद), तंदुल, काल, धर्म, सुतनो स्पर्श-ए दश दिव्य कहेवाय छे. " १

ए रुप सर्व दिव्यो तेमनी आज्ञानुं उल्लंघन करता नथी. ते आज्ञा आ प्रमाणे छे. " हे जल, तुं मने बुवाडीश नहीं. " " हे अग्नि, तुं मने बाळीश नहीं. " इत्यादि आज्ञाओ जाणवी.

हवे सत्यनुं प्रतिपक्षी असत्य छे, तेने निंदे छे.

" वयणम्मि जस्स वयणं, निच्च मसच्चं वहेइ वच्चरसो ।
सुद्धीए जलन्हाणं, कुणमाणं तं हसंति बुहा " ॥१॥

जेना मुखने विषे सर्व जगतने अनिष्ट अने अपवित्र एवो असत्य वचन रुप विष्टारस निरंतर वह्या करे छे ते पुरुष शुद्धिने माटे जलमां स्नान करे छे, तेने जोइ पंडित पुरुषो हसे छे. " १

कहेवानो आशय एवो छे के, पुरुष असत्य वचन बोली निरंतर पोताना आत्माने मलिन करे छे अने मात्र त्वचा उपर रहेला मळने पखाळवा जलथी पवित्र थवा इच्छा राखे छे, ते तेनी केवी मूर्खता कहेवाय ? ते विषे बीजा मतवालाओ पण आ प्रमाणे कहे छे.

" चित्तं रागादिभिः क्लिष्टमलीकवचनैर्मुखम् ।
जीवघातादिभिः कायो, गंगा तस्य पराङ्मुखी " ॥१॥

जेनुं चित्त रागादिकथी क्लेशवाळुं छे, असत्य वचनोथी मुख क्लिष्ट थयुं छे, अने जीवहिंसा वगेरेथी काया क्लिष्ट थइ छे, तेवा पुरुषथी गंगा विमुख थाय छे. " १

" सत्यं शौचं तपः शौचं, शौचमिंद्रिय निग्रहः ।
सर्व भूत दया शौचं, जलशौचं च पंचमम् " ॥ १ ॥

" सत्य वचन बोलवुं--सत्य रीते चालवुं, ए पेहेलुं शौच छे; तप आचरवुं, ए बीजुं शौच छे; इंद्रियोनो निग्रह करवो, ए त्रीजुं शौच छे; सर्व प्राणी मात्र

उपर दया राखवी, ए चोथुं शौच छे अने जलनुं शौच-ए पांचमुं शौच छे." १

अहिं सर्व प्रकारना शौचने विषे सत्यता ए प्रधान छे, माटे तेनुं प्रथम ग्रहण करेलुं छे अने जल शौच ए बाह्य इत्तिपणाथी रहेलुं छे, माटे तेने छेल्लुं गणेलुं छे. ते विषे कह्युं छे के,—

" मुयत्तणंपि मन्ने, सारं सारंजवयणसत्तीओ ।
निम्मंमणं चियवरं, जलंत अंगार सिंगारा " ॥ १ ॥

" असत्य जापणवाला अने मर्मने उघाडवादि पाप सहित एवा वचनसंबंधी जे शक्ति, तेनाथी मुंगापणुं वधारे सारुं छे, ते उपर दृष्टांत आपे छे के, धगधगता अग्निना अंगाराथी शरीरनो जे शृंगार करवो तेना करतां आजूषणनो अजाव होय ते सारो छे. १ "

आ कहेवानो आशय एवो छे के, जेम शरीरनी शोजा माटे करेलो अंगारानो शृंगार उलटो दाहादि अनर्थना हेतुरुप छे, तेम पोतानी निपुणताने माटे आरंजेलुं असत्य वचन उलटुं नरकादिकने विषे पामनारुं थाय छे-अनेक दुःखोनुं कारण बने छे, तेनाथी मुंगापणुं उत्तम छे.

आ वीजुं मृषावाद त्याग रूप व्रत पाल्या अणपाल्यानुं फल देखाडे छे.

" सच्चेण जिओ जायइ, अप्पमिहय महुर गहिर वर वयणो ।
अलिएणं मुहरोगी, हीणसरो मम्मणो मूओ " ॥ १ ॥

सत्यव्रत वमे जीव आलोकने विषे विश्वास तथा यशनुं पात्र थाय छे अने परलोकने विषे अप्रतिहत, मधुर अने गंजीर प्रधान एवा वचनोने बोलनारो थाय छे. अप्रतिहत एटले वज्रनी पेठे कोइ ठेकाणे स्खलना न पामे तेवुं, मधुर एटले परिपक्व सेलमीना रसना पान जेवुं, गंजीर एटले जल सहित मेघनी गर्जनानी पेठे अने प्रधान एटले स्पष्ट अक्षरवालुं मनोहर; एम समजवुं.

वली असत्य वचन बोलवाथी आलोकने विषे अविश्वासनुं तथा दुराचरणनुं नाजन थाय छे अने परलोकने विषे मुख रोगी, हीन स्वरवालो अने मन्मन बोलनारो मुंगो थाय छे. जे बोलता बतां स्खलित थाय ते मनमन कहेवाय छे. आ

व्रत वाणीना विषयवालुं होवाथी तेनुं फल पण वाणीना विषयमांज कहेलुं छे. नहीं तो आ व्रत विराधना रहित पालवाथी स्वर्गादिकनुं फल होय छे अने विराधना सहित पालवाथी नरकादिकनुं फल होय छे, एम समजवुं. आ व्रतने माटे व्यतिरेकवमे दृष्टांत कहे छे—

" दप्पेण अलियवयणस्स जं फलं तं न सक्किमोवोत्तुं ।
दक्खिणालिएण विगओ, वसू सत्तमं नरयं " ॥ १ ॥

" पोताना मतनी स्थापनाना गर्वथी—आग्रहथी जे अलीक बोलवुं, एटले जिनमत विरुद्ध नाषण करवुं, तेनुं फल आ अनंतानंत संसारमां भ्रमण करवारूप थाय छे. तेने कहेवाने छद्मस्थ अने प्रमाणोपेत आयुष्यवाला समर्थ थइ शकता नथी. दाक्षिण्यालीक ए शब्दनो एवो अर्थ छे के, दाक्षिण्य एटले गुरु तथा स्त्रीना अनुरोधना हेतुथी जे अलीक एटले असत्य कहेवुं ते. ए रीते बोलेलां असत्य वचनथी ज्यारे दुर्गति थाय छे तो पछी अनिमान वमे कहेलां असत्य वचनथी केवुं नठारुं फल थाय ? ए दाक्षिण्यालीकथी वसुराजा सातमी नरके गयो हतो."

वसुराजानी कथा.

माहलदेशमां शुक्तिमती नामे नगरीने विषे अनिचंद्र नामे राजा हतो. तेने वसु नामे एक पुत्र हतो. तेज नगरमां जिनमतथी वासित हृदयवाला क्षीरकदंवक नामे एक उपाध्याय वसे छे. बालवयथी पंमितना जेवा आचारवालो अने सत्यव्रतमां रक्त वसुकुमार तेमनी समीपे विद्याभ्यास करतो हतो. ते वखते पर्वतक नामनो उपाध्यायनो पुत्र अने एक नारद नामनो विद्यार्थी पण तेज उपाध्याय पासे नणता हता. ते त्रणे वसुकुमारना सहाध्यायी हता.

एक दिवस आ त्रणे विद्यार्थीओ अभ्यासनो श्रम लागवाथी आंगणानी भूमिमां सूता हता, तेवामां तेमना गुरु क्षीरकदंवके आकाशमांथी कोइ चारण ऋषिना मुखथी आ प्रमाणे वाणी सांजली—" जे आ आंगणानी भूमिमां त्रण विद्यार्थीओ सुतेला छे, तेओमांथी एक उच्च गतिने पामशे अने बे नरके जशे." आ वाणी सांजली उपाध्याय क्षीरकदंवके पोताना मनमां विचार्युं के, चारण

मुनिनी वाणी मृषा होती नथी. तेथी आ त्रणेमां नरक गामी बे कोण छे ? अने सद्गतिने पामनार कोण छे ? तेनी परीक्षा करुं. अने ते परीक्षा दयालुपणाथी थइ शकशे. " आ प्रमाणे विचार करी ते चतुर उपाध्याये आटाना त्रण कुकडा बनाव्या. आ कुकडा बनावी ते त्रणे शिष्योने एक एक कुकडो आप्यो. अने कह्युं के, " हे शिष्यो, तमारे कोइ पण न देखी शके एवे स्थले जइ आ कुकडाने हणी नांखवो. " गुरुनी आवी आज्ञा थवाथी वसु अने पर्वतक बंनेए जुदा जुदा एकांत प्रदेशमां जइ निर्दयपणाथी ते पिष्टना कुकडाने मारी नांख्या. पेलो त्रीजो शिष्य नारद ते कुकडाने एकांते लइ जइ आ प्रमाणे विचार करवा लाग्यो—" गुरुए अमोने आवुं भयंकर काम करवानी आज्ञा केम करी हशे ? आवा निरपराधी प्राणीने कयो पुरुष हणशे ? वळी तेमणे कह्युं छे के, " ज्यां कोइ न देखे तेवे स्थळे कुकडाने मारजो. " गुरुनां आवां वचन उपरथी तेमनो अभिप्राय एम जणाय छे के, आ कुकडाने मारवोज न जोइए. कारणके, गमे तेवा एकांतमां जइए, तो त्यां कुकडो तो जुवे छे, अने हुं पण जोउं छुं. अने ज्ञानीओ पण जुवे छे. ज्यां कोइ देखतुं नथी, एवुं स्थान कोइ छेज नहीं. तेथी हुं एम मानुं छुं के, गुरु दयालु होवाथी तेमणे अमारा शिष्योनी परीक्षा करवा माटे आ हुकम करेलो छे. " आवुं विचारी ते नारदे कुकडाने मार्यो नहीं. ते पछी ते नारद शिष्य पोताना गुरुनी पासे आव्यो. तेणे कुकडाने न हणवानो हेतु कही संभळाव्यो. ते शिष्यनो वृत्तांत सांभळी गुरुए नारदनी ऊर्ध्वगति थवानो निश्चय कर्यो अने अतिशय संतुष्ट थइने नारदनी प्रशंसा करी. तेवामां पेला वसु अने पर्वत बंने कुकडाने हणीने आव्या अने तेमणे पोतानो वृत्तांत गुरु समीपे जणाव्यो. गुरुए " तमे पतित मूर्ख छो, " एम कही तेमने धिक्कार आप्यो. अने गुरु पोताना हृदयमां अतिशय खेद पामी गया. गुरुए ते वखते पोताना हृदयमां विचार्युं के, मारा जेवो गुरु मळ्या छतां आ बंने शिष्यो नरकारी गतिए जाय तो पछी तेमां मारुं शुं माहात्म्य? अथवा जेनुं आयुष्य क्षीण थइ गयुं छे, एवा पुरुषने मोटो राजवैद्य होय तो पण ते शुं करी शके ? ऊंचा प्रदेशमां मेघ वृष्टिनी जेम ए बंने शिष्योने भणाववा करेलो मारो श्रम निष्फळ थयो. हवे नरकनी पीडाना कारण रूप एवा आ गृहना आरंभनी शी जरूर छे ? "

आवो विचार करी ते क्षीरकदंबक उपाध्याये संसारनो त्याग करी

चारित्र अंगीकार कर्युं. ते पछी पर्वतक तेनी पाट ऊपर बेठो हतो.

पेलो नारद शिष्य के जे शास्त्रनो महान् वेत्ता हतो, ते पोतानी इच्छा प्रमाणे त्यांथी बीजे स्थले चाल्यो गयो. राजा अभिचंद्रे पण दीक्षा ग्रहण करी. ते पछी तेनो कुमार वसु राज्यासन ऊपर बेठो. वसु नीतिथी राज्य करतो हतो अने ते सत्यवादीपणाथी आखी पृथ्वी ऊपर प्रख्याति पाम्यो हतो. ते कदि पण मृषावाद बोलतो नहीं. एक समये कोइ एक भिल्ल विंध्याचल पर्वतनी अटवीमां फरतो हतो. तेणे एक हरिण ऊपर बाण छोड्युं. ते बाण स्खलना पामी वच्चे पडी गयुं; हरिणने वाग्युं नहीं. आथी आश्चर्य पामी ते भिल्ल पोतानुं बाण व्यर्थ थवानुं कारण शोधवा लाग्या. तेनुं कारण शोधतां एक आकाशमां स्वच्छ स्फटिक शिला तेना जोवामां आवी. तेने पोताना हाथनो स्पर्श कर्यो. ते वखते ते शिलानी नीचे आसपास पेला मृगने चरतो जोयो. ते जोतांज भिल्ले विचार कर्यो के, "मारुं बाण स्खलना पाम्युं, तेनुं कारण आ शिलाज छे. आ अति स्वच्छ–निर्मल शिला वसुराजाने योग्य छे." आवुं विचारी ते भिल्ल छानी रीते वसुराजा पासे आव्यो अने तेने शिलानो वृत्तांत कह्यो. ते ऊपरथी वसुराजाए ते भिल्लने धन आपी ते शिला ग्रहण करावी. पछी वसुए एक सारा कारीगर पासे ते शिलानी वेदिका करावी तेने एकांते गोठवी अने ते ऊपर पोतानुं सिंहासन स्थापित कर्युं. शिलाना प्रभावथी ते सिंहासन आकाशमां रह्युं. ते वखते लोको कहेवा लाग्या के, "वसुराजाना सत्यना प्रभावथी आ सिंहासन आकाशमां रह्युं छे. अने आ राजाना सत्यथी देवताओ पण तेने सेवे छे.

एक वखते नारद प्रीतिथी पर्वतकने घेर आव्यो. ते वखते ते पर्वतक ब्राह्मणोनी सभामां ऋग्वेदनी व्याख्या करतो हतो. ते वखते **"यजैर्यष्टव्यं"** एवुं सूत्र आव्युं. पर्वतके तेनो एवो अर्थ कर्यो के, "बोकडाथी यज्ञ करवो." आ वखते ते सांभळी नारद बोल्यो. "आः शांतं पापं" "अरे पाप शांत थयुं." पछी तेणे पोताना हाथ वडे कान ढांकीने कह्युं, "भाइ, भ्रांतिथी आ शुं बोले छे?" आपणा उपाध्याये तो 'अज' शब्दनो अर्थ त्रण वर्षनी जुनी शाल एवो कह्यो छे. पर्वतकने ते सांभळी गुरुना कहेला ते अर्थनुं स्मरण थइ आव्युं परंतु समीप रहेला लोकोना मनमां पोतानो अविश्वास न ऊपजे एवा

इरादाथी ते गर्वित थइने बोल्यो. " अरे नारद, तुंज भ्रांतिमां पड्यो छे; तेथीज तुं मने भ्रांतिवालो कहे छे. कारण के, 'मेष' शब्दना कहेनारा गुरुनी निघंटु ग्रंथनी साक्षी छे. " नारदे कह्युं, " शब्द बे प्रकारनो छे. एक मुख्य अर्थने कहेनारो अने बीजो गौण अर्थने कहेनारो". तेथी" उजायंते इति अजाः " न उत्पन्न थाय ते 'अज' कहेवाय. आ प्रकारे व्युत्पत्ति करी गुरुए 'अज' शब्दनो गौण अर्थ कहेलो छे; पण ते मुख्य अर्थ नथी. बुद्धिमंतोने निघंटुनो कहेलो शब्दार्थज प्रमाण छे, एम मानीए तो पछी गुरु शा माटे करवा? माटे हे पर्वतक, धर्मोपदेशक गुरु आ धार्मिक श्रुतिनो लोप करे तो ते पोताना बे लोकनो[1] लोप करे छे. "

नारदनां आ वचनो सांभळी पर्वतक गुस्सो करीने बोल्यो-" नारद, आवो फोगट शब्दवाद शा माटे करे छे. आपणे बंने ते विषे पण[2] लइए. जेनो पक्ष जुठो ठरे तेनी जिह्वानो छेद करवो. अने आपणा प्रमाणपणामां वसुराजाने राखो. तेओ जाणेला छे; तेथी ते जे कहे ते आपणे प्रमाण करवुं. " पर्वतकनां आ वचन सांभळी ' पोतानो पक्ष सत्य छे' एवुं दृढताथी माननार नारदना मनमां कांइ पण क्षोभ थयो नहीं. तेणे ते वात कबुल करी. पछी ते कोइ कार्य माटे नगरमां गयो.

पाछळथी पर्वतकनी स्नेहाळ माताए पुत्रनुं एवुं सारे पण जाणी आ प्रमाणे कह्युं, " वत्स, तें तारा आत्माने नाश करनारुं पण कर्युं छे; कारणके, में पण तारा पिता पासेथी सांभळ्युं छे के, अजा एटले व्रीहि-जुनी डांगर समजवी. ते शिवाय बीजो अर्थ तेनो थतो नथी; तेथी हजु पण नारदने बोलावी तारा असत्य वचनने अंगीकार कर अने तेने खमाव. गर्व ए जेम रोगनुं मूल अजीर्ण छे, तेम सर्व आपत्तिनुं मूल छे. तेनो परिहार कर. "

मातानां आ वचन सांभळी पर्वतक बोल्यो-" माता, एमां शो भय राखवानो छे? मरणनो भय राखवो ए घटित नथी. जे प्राणी जन्म्या छे, ते अवश्य मरवानाज छे. हवे तो जे थवानुं होय ते थाय पण जे बोल्या तेमां फरवानुं नथी."

पुत्रनां आवां वचन सांभळी पोताना पुत्रनी आपत्ति दूर करवा माटे

१ आ लोक अने परलोक २ प्रतिज्ञा

वसुराजानी पासे आवी. वसुराजाए प्रणाम करी ते माताना कुशल प्रश्न पुछवा वगेरेथी सत्कार कर्यो. पछी ते विनीत राजाए जणाव्युं, " माता, आजे अहीं पधारी तमे मारी उपर मोटी कृपा करी छे. आपना आगमननुं कारण शुं छे? आपनी शी इच्छा छे? ते जणावो." माताए 'चिरंजीव' नी आशीष आपी आ प्रमाणे कह्युं, " राजा, हुं मारा पुत्रने जीवतो जोउं, एवुं करो. " वसुराजा आश्चर्य पामीने बोल्यो—" जडे, तमारो पुत्र मारो गुरुभाइ छे, तेम वळी मारा गुरुनो पुत्र होवाथी ते मारो गुरु छे, तो तेनो द्वेषी कोण थयो छे? तेनुं नाम आपो. " माताए कह्युं, " तेना पोताना मुख शिवाय तमारा गुरुभाइनो बीजो कोइ द्वेषी नथी. " आटलुं कही तेणीए पोताना पुत्रना विवादनो सर्व वृत्तांत कही संभळाव्यो. पछी तेणीए वसुराजाने प्रार्थना करी के, " तमारे मारा पुत्रना वचनने सत्य करवुं." तेणीनां आवां वचन सांभळी वसुराजाए कह्युं, " जडे, हुं कोइ दिवस कोइ पण वखते मिथ्या वचन बोलतो नथी; तो खोटी साक्षीमां अने गुरुना वचनने उलटुं करवामां हुं मिथ्या केम बोलुं? ए माराथी कदिपण बनवानुं नथी". तेणीए विनंति पूर्वक जणाव्युं, " भाइ, आवो विचार करशो नहीं, जीवरक्षानुं पुण्य तमोने थाओ. अने मृषा बोलवाथी थयेलुं पाप मने लागो." आ प्रमाणे तेणीए तीव्र आग्रहथी कह्युं, एटले वसुराजाए ए वात मान्य करी.

बीजे दिवसे प्रातःकाळे वसुराजा सभामां आव्यो, ते वखते पेला नारद अने पर्वतक वाद करतां करतां राजानी सभामां आव्या अने तेमणे ऊंचे स्वरे पोतपोतानो पक्ष वसुराजा आगळ निवेदन कर्यो. ते समये सभामां बेठेला मध्यस्थ दृष्टिवाळा सभ्य लोकोए वसुराजाने आ प्रमाणे कह्युं, " महाराजा, आ पृथ्वी आपनाथीज सत्यव्रती कहेवाय छे. आपे बाल्यवयथी कदि पण सत्यव्रतनो त्याग कर्यो नथी. सत्य व्रतना प्रभावथी देवताओ पण आपना सेवक थइ आपना सिंहासनने आकाशमां धारण करी राखे छे, तेथी हे सत्यना समुद्र महाराजा, ते सत्यवाणीथी आप आ बंनेना वादने शमावी द्यो. "

सभ्य लोकोए आ प्रमाणे कह्युं तो पण जेनी बुद्धि भ्रष्ट थयेली छे एवा वसुराजाए पोताना सत्यव्रतनो भंग करी कह्युं के " गुरुए 'अज' शब्दनो अर्थ 'मेष' बकरो एम कह्युं छे." आ प्रमाणे राजाए खोटी साक्षी आपी. आ वखते

" आ वसुराजा मलिनात्मा छे, ते मारा निर्मल स्वरुपने अधःपात करे छे, एवो जाणे रोष उत्पन्न थयो होय, तेम ते स्फटिकनी शिला तत्काल फाटी गइ. अने कोपायमान थयेला देवताओए वसुराजाने सिंहासन उपरथी पाडी नांख्यो. आ वखते नारदे कह्युं, " अरे धर्मभ्रष्ट राजा, तारुं मुख जोवा योग्य नथी." आ प्रमाणे तेनी निंदा करी नारद त्यांथी चाली नीकल्यो. ते वखते लोकोए पेला पर्वतकने कह्युं के, " हे मूढ, तें आवा गुप्त अने मलिन विचारथी आ शुं कर्युं ? आ प्रमाणे लोकोनी निंदा थवाथी ते पर्वतके मानभ्रष्ट थइ ते नगरनो त्याग करी दीधो. ते पछी वसुराजाने राजदेवीए पेटमां प्रहार कर्यो, तेथी ते मृत्यु पामी असत्यनी सहायथी सातमी नरके गयो हतो. ते पछी वसुराजानी गादी उपर जे पुत्र बेसे तेनो राजदेवी नाश करवा लागी. अनुक्रमे राजदेवीए तेनी पछीना आठ पुत्रोने मारी नांख्या हता. कह्युं छे के,

" यो यः सूनुरुपाविक्ष्यत् पट्टे तस्यापराधिनः ।
स स देवतया जघ्ने यावदष्टावनुक्रमात्" ॥ १ ॥

" ते अपराधी वसुराजानी पाट (सिंहासन) उपर जे जे पुत्र बेसता, तेने देवताए मारी नांख्या हता. अनुक्रमे एवी रीते आठ पुत्रो मार्या हता." १

आ वात पद्म चरित्रादिकमां कहेली नथी, तो तेमां तत्त्व शुं छे ? ते तो केवली जाणे. ते विषे एम पण कह्युं छे के,

" न भुक्त माजन्म कदापि भुक्तमंते विषं हंति यथा मनुष्यम् ।
कदाप्यनुक्ता वितथा तथा गीरुक्तावसाने वसुमाजघान"॥ १ ॥

"जन्म पर्यंत न खाधेलुं विष पण जो एक वार खावामां आव्युं तो ते मनुष्यने हणे छे. तेवी रीते वसुराजाए कदि पण असत्य वाणी कही न हती, पण एक वार असत्य वाणी कही तो तेणीए ते वसुराजानो नाश कर्यो हतो.१"

एवी रीते बीजा अणुव्रत उपर वसुराजानी कथा कहेवाय छे. आ प्रकारे मृषावादनो विपाक सांभळी सर्व भव्य जीवोए तेनो परिहार करवा तत्पर थवुं. तेम थवाथी सर्व प्रकारनी इष्ट सिद्धि प्राप्त थाय छे, तेने माटे आ प्रमाणे भावना छे—

" थोवंपि अलीय वयणं जे न हु जासंति जीवियंतेवि ।
सच्चे चेवरयाणं तेसिं नमो सव्व साहूणं ॥ १ ॥"

"जेओ जीवितनो अंत थाय तो पण थोडुं खोटुं पण बोले नहीं अने जेओ सत्य बोलवामां तत्पर रहे, तेवा सर्व साधुओने मारो नमस्कार हो."

त्रीजुं स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत.

स्थूल एवुं अदत्तादान एटले नहीं आपेल वस्तुनुं ग्रहण करवुं, तेनाथी विराम पामवुं, ते स्थूल अदत्तादान विरमण नामे त्रीजुं अणुव्रत कहेवाय छे. ते सचित्तादि स्थूल वस्तुनी चोरी न करवारुप छे. तेने माटे कह्युं छे के–

" तइय वयंमि वज्जा, सचित्ताचित्त स्थूल चोरिज्जम् ।
तिणमाइ तणुअ तेणिय, मेसो पुण मोत्तुमसमत्थो ॥ १ ॥"

" त्रीजा अणुव्रतने विषे सचित्त–अचित्त स्थूल चोरीने वर्जवुं. केमके, तृण वगेरे सूक्ष्म वस्तुनी चोरीने मुकवाने ते असमर्थ छे. " १

सचित्त एटले द्विपद (मनुष्य) चतुष्पदादि अने अचित्त एटले सुवर्ण, रुपुं वगेरे. उपलक्षणथी आभूषण, वस्त्र वगेरेनुं ग्रहण करवु. तेनो स्थूलपणे त्याग करवो. स्थूलपणे स्थूल बुद्धिथी. चारनो व्यपदेश हेतुपणाथी पण जाणवो, तो पछी सूक्ष्मनी शी वार्त्ता ? ते आ प्रमाणे–तृण–घासनी सळी, लोढानी रळी, नदीनुं जल, वनना फुल, छांणा, इंधण वगेरेनी सूक्ष्म चोरीनो त्याग करवाने गृहस्थ असमर्थ छे, कारण के, तेवी वस्तुओ लीधा शिवाय गाय वगेरेना निर्वाहनो अ-भाव थाय छे. तेवी सूक्ष्म वस्तुनी चोरीनो त्याग तो सूक्ष्मदृष्टिवाळा पुरुषो करी शके छे. ते स्थूल चोरी जेटला प्रकारे त्याग करवा योग्य छे, ते कहे छे––

" नासीकयं निहिगयं, पडियं वीसारियं ठिअं नट्ठं ।
पर अत्थं हीरंतो, निअअत्थं को विणासेइ ॥ १ ॥"

थापण मुकेलुं, दाटेलुं, पडी गयेलुं, वीसराइ गयेलुं, धणी मरी जवाथी कोइए ग्रहण न करेल तेथी नष्ट थयेलुं—एवुं परद्रव्य हरण करी पो-

चोरी कुलनी कीर्त्तिने कलंकित करनारी छे, तेथी हे नव्य, तुं कदि-पण चोरी करीश नहीं; कारणके तेथी आ जवमां कारागृहमां निवास, वध, बंध अने हाथ, नाक तथा पगने कापवा वगेरे घणां दुःखो प्रत्यक्ष आवी पमे छे अने तेमां वळी परद्रव्यनी प्राप्तिनो संदेह छे, एटले ते मळे अथवा न मळे तेवी शंका छे. १

जे मूर्ख लोको परद्रव्यनी चोरी करीने संपत्तिनी इच्छा करे छे, ते विषतुं जक्षण करी जीववानी इच्छा करे छे, पण तेओ उलटा विनाशने पामे छे.

उपर कहेला लक्षणोथी व्यतिरेक रीते (उलटी रीते) वर्त्तनाराओनी प्रशंसा करे छे.

"ते धन्ना सप्पुरिसा, जेसिं मणो पासिऊण परभूइं ।
एसा परभूइ चिय, एवं सकप्पणं कुणइ" ॥१॥

"जे पुरुषो पारकी संपत्तिने देखी" ते संपत्तिने लेवाथी ते वधबंधादिकनुं कारण थाय छे अने तेनाथी उजयलोकमां पराजव थाय छे, " एवो संकल्प करे छे, ते पुरुषोने धन्य छे. तेओने पुण्यवान् समजवा. तेओ पर संपत्तिने पराजवरुप जाणे एटले तेनाथी सर्वदा दूर रहे छे."१

चोरीना फळो कहे छे.

"वहबंधरोह मच्चू, चोरिज्जाउ हवंति इहलोए ।
नरय निवाय धणखय,दारिद्दाइं च परलोए "॥१॥

"चोरी करवाथी वध, बंध, रोध, अने मृत्यु आलोकमां थाय छे अने परलोकमां नरकमां पात, धननो क्षय अने दारिद्र वगेरे थाय छे." १

अहीं वध एटले लाकमी वगेरेनो प्रहार, बंध एटले दोरी, सांकळ वगेरेनुं बंधन तथा रोह एटले कारागृहमां वास अने मृत्यु एटले शिरच्छेदनादिक जाणवुं.

अदत्तादानना त्यागनुं दृष्टांत सहित फल आ प्रमाणे छे—

"जं इत्थ जण पसंसाइ परजवे सुगइमाइ होइ फलो।
मुक्के अदत्तदाणे तं जायं नागदत्तस्स"॥१॥

"अदत्तादाननो त्याग करवाथी आ जवमां लोकोना प्रशंसा अने पर जवमां सुगति वगेरे फल प्राप्त थाय छे. ते अदत्तादानना त्यागथी नागदत्तने शुज फळ प्राप्त थयुं हतुं. ते स्वरूप तेनी कथाथी जाणी लेवुं."

नागदत्तनी कथा.

वाराणसी नगरीमां जितशत्रु नामे राजा हतो. ते नगरमां धनदत्त नामे एक शेठ रहेतो हतो. ते शेठने धनश्री नामे एक स्त्री हती. तेणीना उदरथी नागदत्त नामे एक पुत्र उत्पन्न थयो हतो. नागदत्तने बाल्यवयथी सद्गुरुनो योग थइ आव्यो. आथी तेणे जैन धर्मने अंगीकार कर्यो हतो. अनुक्रमे गुरुनो उपदेश सांजळी ते आ संसार उपरथी विरक्त थयो हतो. तेणे गुरु पासेथी अदत्तादान विरमण व्रत ग्रहण कर्युं हतुं. जो के बीजा व्रतो पण तेणे अंगीकार कर्या हता, तथापि अदत्तादान विरमण व्रतमां ते विशेष चुस्त हतो.

एक दिवसे ते नगरना नगरशेठनी नागवसु नामनी कन्या जिनपूजा करवा माटे जिनालयमां जती हती. रस्तामां पेलो नागदत्त तेणीनी दृष्टिए पड्यो. तेने जोतांज ते बाळा तेना रूपमां मोहित थइ गइ. तत्काल तेणीए चिंतव्युं के, "मारे आ जवमां आ नागदत्तज जर्त्ता थाओ." आ प्रमाणे निश्चय करी ते बाला पोताने घेर आवी अने ते पोताना चिंतित अर्थने पिता पासे निवेदन कराव्यो. पोतानी पुत्रीनो आवो निश्चय जाणी तेणीनो पिता नागदत्तना पिताने घेर गयो अने तेनी आगळ पोतानी कन्यानो अभिग्रह जणाव्यो. ते शेठे ते वात मान्य करी. पछी नागदत्त के जे आ सांसारिक जोगनी इच्छा राखतो नथी तो पण पिताना आग्रहथी तेने मान्य करवुं पड्युं, पछी नागदत्तनी साथे ते नगर शेठनी पुत्री नागवसुनुं वेवीशाळ–विवाह करवामां आव्यो. ते पछी एवुं बन्युं के ते नगरना कोटवाळे एक वखते नगर शेठनी कन्याने जोइ ते उपरथी मोहित थइ तेणे नगरशेठनी पासे पोताना माटे मोकली ते कन्यानी मागणी करी. नगर-शेठे तेना माणसोने कह्युं के, "कोटवाळने कहो के, आ कन्या धनदत्त शेठना पुत्र नागदत्तने आपी दीधी छे. तेथी हवे बीजाने आपवा हुं समर्थ नथी. नीतिशास्त्रमां कह्युं छे के, "सकृत् कन्या प्रदीयते" "कन्या एक वारज अपाय

छे." शेठना आ वचनो ते माणसोए कोटवाळने कह्यां; तेथी कोटवाळ कोपायमान थइ गयो; त्यारथी ते नागदत्तना छिद्रोनी गवेषणा करवा लाग्यो.

एक दिवसे राजा एक अतिचपळ घोडा उपर बेसी रयवाडी फरवा नीकळ्यो. दैवयोगे राजाना कानमांथी कुंडळ पडी गयुं. राजा नगरमां आवतां तेने पोताना कुंडळनी खबर पडी एटले तेणे पोलीसना माणसो द्वारा आखा नगरमां ते कुंडळनी गवेषणा करवा मांडी, पण कोइ स्थळे कुंडळनो पत्तो लाग्यो नहीं.

ते अवसरे नागदत्त जिनालयमां दर्शन करवा जतो हतो. तेणे मार्गमां कुंडळ पडेलुं जोयुं. पोते अदत्तादानना पच्चखाण करेला तेथी तेणे ते कुंडळ लीधुं नहीं. तत्काळ ते जिनालयमां जइ प्रभुनी पूजा करी तेमनी समीपे ते कायोत्सर्ग करीने रह्यो. आ वखते दैवयोगे पेलो कोटवाळ त्यां आवी चड्यो. पडेलुं कुंडळ तेना जोवामां आव्युं. ते लइ देरासरमां गयो. त्यां नागदत्तने कायोत्सर्गे रहेलो जोयो. लाग आवेलो जाणी ते दुष्ट बुद्धिए नागदत्त उपर कलंक लगाडवाने ते कुंडल तेना कानमां पेहेरावी दीधुं. अने पछी तेने गाढ बंधनथी बांधी राजानी पासे हाजर कर्यो. राजाए तेना कानमां प्रत्यक्ष कुंडळ जोइ 'आ चोर छे' एवो निश्चय करी तत्काळ कोप पामी तेना वध करवानो कोटवाळने हुकम कर्यो. कोटवाल पोतानी धारणा सफळ थयेली मानी खुशी थयो. पछी ते कोटवाळ नागदत्तने चोरना जेवी विटंबना करतो बांधी शहेरमां फेरववा लइ गयो. ज्यां नगरशेठनी पुत्री नागवसु पोतानी हवेलीना गोखमां बेठी हती, ते गोखा नीचे थइ नागदत्तने काढवामां आव्यो. पोताना शुद्ध श्रावक भर्त्तारनी आवी अवस्था जोइ हृदयमां खेद पामती नागवसु बाला श्री जिनप्रभुनी लघुता निवारवाने अने पोताना भर्त्तारना संकटनो नाश करवाने तत्काळ बेठी थइ पोताना गृह देरासरमां आवी त्यां शासनदेवीनुं स्मरण करी, 'ज्यारे आ अकार्य नाश पामशे त्यारे हुं कायोत्सर्ग पारीश" एवी मनमां धारणा करी ते बाला धर्मध्यान धरती श्री जिनप्रतिमा आगळ काउस्सग्ग ध्याने उभी रही.

अहिं कोटवाळ नागदत्तने लइ स्मशान भूमिमां आव्यो. त्यां तेने शूळी उपर चडाव्यो, तेवामां शूळी भांगी गइ. पुनः चडाव्यो, त्यारे पण पाछी भांगी.

एम त्रण वार जांगी तोपण निर्दय कोटवाले तेने पासे चमाव्यो, तेवामां श्री जैन धर्मना प्रजावथी शासनसुरीए करेली सहाय वमे ते शूलीने ठेकाणे एक सुंदर सिंहासन थइ गयुं. पछी दुष्ट कोटवाले ते नागदत्त उपर खड्गना प्रहार करवा मांड्या, तो ते प्रहार पुष्पनी मालारुपे परिणम्या. आ देखाव जोइ लोको विस्मय पामी गया. तेमणे जइने राजाने आ चमत्कारी वृत्तांत कह्यो. ते सांजली अति आश्चर्य पामेलो राजा ते स्थले आव्यो. त्यां तेणे नागदत्तने सुवर्णना सिंहासन उपर बेठेलो विलोक्यो. तेना अंग उपर अनेक आभूषणो रहेला जोवामां आव्या. तत्काल राजा प्रसन्न थइ गयो अने नागदत्तनी आगल पोतानो अपराध खमावी तेने मोटा गजेंद्र उपर बेसारी महोत्सव पूर्वक नगरमां प्रवेश कराव्यो. नागदत्तने विषे धर्मनो प्रजाव जोइ लोको श्रीजिनधर्मनी प्रशंसा करवा लाग्या. पेली नागवसु तेवा आर्मबरवाला नागदत्तने पोतानी हवेलीना गोख पासे नीकलतो जोइ घणी खुशी थइ अने तेणीए ग्रहण करेला कायोत्सर्गने पारी दीधो.

ते वखते कोटवाले नागदत्तनी उपर खोटुं दूषण आप्युं हतुं, एवो निश्चय थवाथी राजा तेनी उपर घणो रोषातुर बनी गयो. तेणे कोटवालनुं सर्व द्रव्य लइ लीधुं अने तेने जानथी मारवानी आज्ञा करी. आ समये दयाने विषे जेनुं हृदय तत्पर छे एवा नागदत्ते राजाने विनंति करी ते कोटवालने जीवतो रखाव्यो. ते पछी नागदत्त पोताने विषे नागवसु कन्यानो तात्त्विक प्रेम जाणी माता पिताए करेला महोत्सव पूर्वक शुजलग्ने तेणीने परणयो. ते पछी तेणीनी साथे चिरकाळ पर्यंत सांसारिक सुख जोगवी अंते सद्गुरु समीपे तेणे दीक्षा ग्रहण करी. ते सम्यक् प्रकारे संयमनी आराधना करी समाधि पूर्वक काल करी देवपदने प्राप्त थयो हतो.

आ प्रमाणे त्रीजा अदत्तादान विरमण व्रतने विषे नागदत्तनी कथा कहेवाय छे. ते उपरथी सर्व जव्य आत्माओए सर्वथा अदत्तादाननो त्याग करवो.

ते व्रतनी जावना आ प्रमाणे छे—

" इणमविचिंतिअव्वं, अदिन्नदाणाउ निच्च विरयाणं ।
समतिणमणिमुत्ताणं, नमो सया सव्व साहूणं " ॥१॥

" जेओ अदत्तादानथी नित्य विराम्या छे अने जेओ तृण अने मणि-मोतीने तजी देनारा छे एवा सर्व साधुओने सदा नमस्कार छे " १

चोथुं स्थूल मैथुन विरमण व्रत.

हवे चोथुं स्थूल मैथुन विरमण व्रत कहे छे. स्थूल एवुं मैथुन एटले स्थूलपणे कामसेवन, तेनाथी विराम पामवुं, ते चोथुं स्थूल मैथुन विरमण व्रत कहेवाय छे. अर्थात् परस्त्री वगेरेनो त्याग करवा रुप ते व्रत छे. ते आ प्रमाणे—

" ओरालिय वेउव्विय, परदारासेवणं पमुत्तूणं ।
गेहिवए चउत्थे, सदारतुट्ठिं पवज्जिजा " ॥ १ ॥

" औदारिक अने वैक्रिय परस्त्रीनुं सेवन मुकीने गृहस्थ चोथा व्रतने विषे स्वदार संतोषना व्रतने ग्रहण करे छे. " १

अहिं औदारिक अने वैक्रिय एवी परनी–पोतानाथी जुदानी अर्थात् मनुष्य, तिर्यंच अने देवतानी–मनुष्यनी परणेली, अथवा ग्रहण करेली–राखेली वगेरे स्त्रीओ तथा तिर्यंचणी अने देवीओ, तेमनुं सेवन, तेनो त्याग करी गृहस्थ चोथा व्रतने विषे स्वदार संतोष अंगीकार करे एटले परस्त्री तथा वेश्याने वर्जी पोतानी स्त्रीमां संतुष्ट थइ रहे.

अहिं प्रश्न करे छे के, श्रावकोने वैरादि दोषने उत्पन्न थवाने लीधे परदारानो संसर्ग करवो युक्त नथी; ए तो ठीक, पण जे बीजी स्त्रीओ नदीना जलनी पेठे सर्वने साधारण होय छे, तेमनो उपभोग करवामां शो दोष छे ? " तेना उत्तरमां गुरु कहे छे–" एम न कहो. कारण के, तेवी स्त्रीनो उपभोग पण सर्व दुराचारोनी शिक्षानुं मूल होवाथी आलोक तथा परलोकमां महा दुःखनो हेतु छे, तेथी तेनो सर्वथा त्याग करवो युक्त छे. कह्युं छे के,—

" जंपंति महुर वयणं, वयणं दंसंति चंदमिव सोमं ।
तहवि न विससियव्वं, नेह विमुक्काणवेसाणं " ॥ १ ॥

" वेश्या स्त्री सुलक्षणा स्त्रीनां जेवां साकर साथे मळेला दूधनी समान मधुर वचन बोले छे. चंद्रमा जेवुं सौम्य वदन देखाडे छे, तोपण ए स्नेहहीन वेश्याओनो विश्वास करवो नहीं. " १

" मा जाणह जह मउअं, वेसाहिअअं सममणुन्नावं ।

आना जेवुं महत्ताना नंगनुं बीजुं कोइ कारण नथी, के जेथी पोतानी विवाहित प्रेमवती कुलीन स्त्रीओनो त्याग करी स्वार्थी अने निःस्नेह एवी वेश्याने विषे तमे प्रीति बांधो छो." इत्यादि पिताए तेमने शीखामण आपी तोपण तेमना मनमां तेनी कांइ पण असर थइ नहीं. तेओ उलटा चाबुकना प्रहारने नहीं गणनारा अश्वनी पेठे तोफानी अने बंधनस्थान जेणे तोडी नांख्युं छे एवा मदोन्मत्त हाथीनी पेठे स्वेच्छाथी वेश्यानी साथे विशेष विलास करवा लाग्या. एक वार एवुं बन्युं के, ते बंने एक वेश्या रुप वस्तुना अभिलाषी होवाथी तेमनामां परस्पर द्वेष उत्पन्न थइ आव्यो. तेओ कटीबद्ध थइ हाथमां खड्ग लइ जाणे वैरी होय तेम निर्लज्जपणे कलह करवा लाग्या. आ खबर राजाना जाणवामां आव्याथी तेना हृदयमां घणो परिताप थइ आव्यो. तेणे तेमने सुधारवा माटे घणा उपायो कर्या पण तेओ जरा पण सुधर्या नहीं. जाणे असाध्य व्याधिए ग्रस्त थया होय अथवा कोइ प्रबल पिशाचे छल्या होय, तेम बनी गयेला ते कुमारोने माटे सुधारवाना उपायनी अशक्यता जाणी आखरे ते राजाए पोतानी बे राणीओ साथे कालकूट झेर खाधुं अने तेथी तेओ त्रणे मरणने शरण थइ गया. ते बंने कुमारो परस्पर युद्ध करतां अने लोकोमां निंदाता महा दुःखना भाजन थया हता. आ उपरथी भव्य जीवोए वेश्यानुं व्यसन के जे दुःखे त्यजी शकाय तेवुं छे, तेम जाणी ते करवुं नहीं. उत्तम श्रावके परस्त्रीने विषे कायनो संसर्ग न करवो जोइए. तेणे तो सदा स्वदार संतोषना व्रतमां रहेवुं जोइए. जो एम करवामां न आवे तो कामांधपणानी प्राप्ति थाय छे अने ते कामांधपणुं श्रावकने अनुचित छे. तेने माटे कहे छे के,—

" कामं कामंधेणं, न सावएणा कयावि होयव्वं ।
देह धण धम्मखयकारिणीहि कामंमि अइगिद्धी" ॥१॥

" काम–विषयना अभिलाषथी अंधनी जेम जेनी विवेकरुपी दृष्टि नाश पामी छे, ते कामांध कहेवाय छे. उत्तम श्रावके तेवा कामांध थवुं न जोइए. कामांधपणाथी कामने विषे लोलुपताने लइने धर्म, देह अने धननो क्षय थाय छे." १

आ प्रमाणे कामांधपणामां दोषोने जाणी गृहस्थे पोतानी स्त्रीमां पण अत्यंत आसक्ति न राखवी. आ शीलनुं स्वरुप पुरुषोने आश्रीने कहेलुं छे,

हवे स्त्रीओने आश्रीने कहे छे—

" जह नारीओ नराणं, तह ताए नरावि पासभूयाउ ।
तम्हा नारीओ विहु, परपुरिसपसंग मुज्झंति " ॥ १ ॥

" आ लोकमां संयम रुप वाहागमां विचरता पुरुषरुपी मृगोने स्त्रीओ तेमनी सद्गतिमां जवामां विघ्नरुप, पाशरुप थाय छे—तेवी रीते स्त्रीओने पुरुषो पाशरुप थाय छे. कामदेव उजय अंशे अवलंबीने रहेल छे, एटले स्त्री तथा पुरुष बंनेमां व्यापीने रहेल छे, तेथी शीलना अभिलाषी पुरुषो परस्त्रीना संगने वर्जे छे. " १

एवी रीते स्त्रीओ पण पोताना पति शिवाय अन्य पुरुषोनी साथे प्रसंग, गुप्त वार्त्तालाप, एकांते वास, मुखदर्शन अने मन्मन आलाप वगेरे कामोद्दीपक परिचयनो परहरे छे. ब्रह्मव्रतनो आदर करती स्त्रीओए—पोताना जर्त्तारने वर्जीने सामान्य रीते बीजा पुरुष मात्रनो त्याग करवो.

हवे सुशील अने कुशीलनो अंतर बे गाथाथी कहे छे—

" ते सुर गिरिणोवि गुरू, जेसिं सीलेण निम्मलाबुध्धी ।
गयसीलगुणे पुण पुण, मणुए तणुए तिणाओवि ॥१॥
वग्घाइया जयाइ, दुट्ठाविजिआ न सीलवंताणं ।
निय छायंपि निरक्खिय, सासंका हुंति गयसीला" ॥ २ ॥

" जेमनी बुध्धि शीलगुणे करीने निर्मल छे, ते पुरुषो मेरुपर्वतथी पण मोटा छे; केमके, मेरुपर्वतनुं लक्ष योजननुं प्रमाण छे अने ते पुरुषोना यशनुं त्रण भुवनने विषे व्यापकपणुं छे अने जे पुरुषो शीलगुणे रहित छे, तेओ तृणथी पण लघु छे. तृण लघु होवाथी तेने वायु लइ जाय छे अने तेथी ते पर्वत पाषाण वगेरेमां स्खलना पामतुं रहे छे अने कुशील पुरुष घणां संचित करेला दुष्कृतवडे प्रेरायेलो सतो आ त्रण भुवनने विषे जमतो कोइ ठेकाणे पण स्थिरता पामतो नथी; तेथी कुशील पुरुष तृणथी पण लघु छे. जे शीलवंत पुरुषो छे, तेमने वाघ आदि शब्दथी सर्प, अग्नि, पिशाच वगेरे दुष्ट जीवो जयना हेतु थता नथी; अर्थात् जयना करनारा थता नथी, अने कुशील पुरुषो छे, तेओ-

" सर्वत्र शुचयो धीराः स्वकर्म बलगर्विताः ।
कुकर्मनिरतात्मानः पापाः सर्वत्र शंकिताः " ॥ १ ॥

" जे धीरपुरुषो छे, तेओ सर्वत्र पवित्र अने पोताना सत्कर्मना बलथी गर्व धरनारा होय छे अने पापी पुरुषो तो कुकर्मने विषे सदा तत्पर रही सर्वत्र शंकावाळा होय छे. " १

शीलवाळा पुरुषोने कोइ ठेकाणेथी जय उत्पन्न थतो नथी. तेने माटे आ प्रमाणे लखे छे–

" जलणो वि जलं जलहिवि गोपयं विसहरावि रज्जूओ ।
सीलजुअणं मत्ता, करिणो हरिणोवमाहुंति " ॥ १ ॥

" शीलवाळा पुरुषोनी आगळ अग्नि जल थइ जाय छे, समुद्र खावो-चीयुं थइ जाय छे, सर्प दोरडुं थइ जाय छे अने मदो मत्त हाथी हरिणना जेवो थइ जाय छे. " १

एवी रीते शीलना प्रभावथी सर्व कष्टोनो नाश थाय, एम कह्युं. हवे शीलना प्रभावथी मनोवाञ्छित लाभ थवानु कहे छे.

" वित्थरइ जसं वड्ढइ बलंच विलसंति विविह रिध्धीओ ।
सेवंति सुरा सिझंति मंतविज्जा य सीलेण " ॥ १ ॥

" शील पाळवाथी यश विस्तार पामे छे, बल वधे छे, अनेक प्रकारनी ऋध्धिओनो विलास थाय छे, देवताओ सेवा करे छे अने मंत्र तथा विद्या सिध्ध थाय छे. " १

शील सर्व बीजा अलंकारो करतां विशेष अलंकार रुप छे, ते दर्शावे छे.

" किंमंडणे हि कज्जं, जइ सीलेण अलंकिओ देहो ।
किं मंडणे हि कज्जं, जइ सीले हुज्ज संदेहो " ॥ १ ॥

" शीलरुप आभूषणथी देह अलंकृत होय तो पछी बीजा आभूषणनुं शुं काम छे ? अने जो शीलरुपी आभूषण न होय तो पछी बीजा आभूषण शा

कामना छे ? " १

अहिं शिष्य शंका करे छे के, पुरुषोने तो हृदयनुं दृढतापणुं होवाथी शील होइ शके परंतु स्त्री जातिनां हृदय तुच्छ अने चपळ होवाथी तेमज तेमनामां पुरुषोने आधीन रहेवापणुं होवाथी तेओने शीळ शी रीते रही शके ?" आ शंकाना समाधानमां गुरु कहे छे के, एवी शंका करवी अयुक्त छे. कारण के, सर्व स्त्रीओ एक स्वभाववाळी होती नथी. स्त्रीओमां पण घणी स्त्रीओ सुशील धर्मना अनुष्ठानथी अने शास्त्रना श्रवण करवाथी शोभनिक होय छे. तेने माटे कह्युं छे के,

" नारिओ वि अणेगा सीलगुणेणं जयम्मि विक्खाया ।
जासिं चरित्तसवणे मुणिणो विमणेचमक्कंति" ॥ १ ॥

" सुभद्रा, सीता, द्रौपदी आदि अनेक स्त्रीओ शीलगुण वडे आ जगतमां विख्यात थयेली छे. तेओनां चरित्रो सांभळी मुनिओ पण पोताना मनमां चमत्कार पामी जाय छे. " १

ते विषे आ प्रमाणे कह्युं छे—

" अज्जाओ बंभि सुंदरी, राइ मई चंदणा पमुक्खाओ ।
कालत्तए वि जाओ, ताओ वि नमामि भावेण " ॥ १ ॥

" आर्या ब्राह्मी, सुंदरी, राजिमती, अने चंदन बाला, प्रमुख सतीओ त्रण काळने विषे पण शीलगुणथी चलित थइ नथी, ते सतीओने हुं भावथी नमुं छुं. " १

आ जिनशासनने विषे जो के धर्म पुरुषथी उत्पन्न थयेलो छे अने मोटा मोटा ग्रंथोना कर्त्ताओ पण पुरुषोज होय छे, तेथी पुरुष जातिनुं प्रधानपणुं छे. परंतु जे कायर पुरुषो छे, तेमने स्त्रीओ पाशरूप छे, एवा व्यवहार नयनुं अवलंबन करीने प्रायः उत्कृष्ट मुनिओए स्त्रीनी निंदा करेली छे. तेने माटे कह्युं छे के,

" सोअसरी दुरियदरी, कवडकुडि महिलिआ किलेसकरी ।
वइर विरोअण अरणी, दुक्खखणी सुख पडिवक्खा " ॥ १ ॥

" स्त्री शोकनी सरिता छे, पापनी गुफा छे, कपटनी कुंभी छे, क्लेशनी करनारी छे, वैर विरोध करनारी छे, दुःखनी खाण छे अने सुखनी प्रतिपक्षी छे."

तथापि निश्चय नयथी विचार करतां पुरुषपणुं अने स्त्रीपणुं–बंने स्तुति के निंदाना हेतु नथी. केमके सुशीलता अने दुःशीलतानुं पुरुषपणुं अने स्त्रीपणुं कारणभूत छे. तेने माटे कह्युं छे के,

" इत्थिं वा पुरिसंवा निस्संकं नम सुसील गुणपुट्ठं ।
इत्थिं वा पुरिसं वा चयसु लहु सील पब्भट्ठं " ॥ १ ॥

" स्त्री अथवा पुरुष गमे ते होय, पण शीलगुण जेनामां स्पष्ट होय, तेने नमस्कार थाओ. अने स्त्री अथवा पुरुष गमे ते होय पण जो ते शीलगुणथी भ्रष्ट होय तो तेनो त्याग थाओ. " १

दुःशीलतानुं फळ शुं छे ? ते कहे छे—

" पंडुत्तं पंडत्तं, दोहग्गा मरूवयाय अवलत्तं ।
दुस्सीलया लयाए, इणमो कुसुमं फलं नरओ " ॥ १ ॥

" पांडुरोग–कोढ, नपुंसकपणुं, दुर्भाग्य, कुरूप, अल्पआयुष्य, अने निर्बलता ए दुःशीलता रुप लताना पुष्पो छे, अने नरक तेनुं फळ छे. " १

सुशीलतानुं फल शुं छे ? ते कहे छे—

" आरोग्गं सोहग्गं, संघयणं रूव माउवल मउलं ।
अन्नं पि किं अदिज्जं, सीलव्वय कप्परुक्खस्स " ॥ १ ॥

" शील व्रत रुपी कल्पवृक्ष, आरोग्य, सौभाग्य, संघयण, रूप, आयुष्य, अने अतुल बल आपे छे. तेनाथी बीजुं अदेय शुं छे ? अर्थात् सर्व आपे छे." १

हवे शीलव्रतनुं दृष्टांतथी वर्णन करे छे—

" चालणी जलेण चंपा, जीए उग्घाडिअं कवाडतिअं ।
कस्स न हरेइ चित्तं, तीए चरिअं सुभद्दाए " ॥ १ ॥

" जेणीए चालणी वडे जल काढीने चंपानगरीना त्रण दरवाजा उघाड्या

हता, ते सुभद्रा सतीनुं चरित्र कोना चित्तने न हरे ?" १

सुभद्रानुं चरित्र.

वसंतपुर नगरमां जिनदास नामे एक श्रावक रहेतो हतो. तेने अत्यंत शीलगुणवाळी जिनमती नामे स्त्री हती. तेमने सुभद्रा नामे एक पुत्री थइ हती. सुभद्रा बालवयथी सम्यक्त्व धर्मने धारण करनारी श्राविका थइ हती. ते बाला घणीज स्वरुपवती हती. आथी घणा मिथ्यात्वी वणिकोना पुत्रोए तेणीना रुपमां मोहित थइ श्रावक जिनदास पासे तेणीनी मागणी करवा मांडी तोपण जेम कागडो क्षीरनुं भोजन न प्राप्त करे, तेम मिथ्यात्वीपणाने लइने तेओ तेणीने जिनदास पासेथी प्राप्त करी शक्या नहीं.

एक वखते बुध्दिदास नामनो एक बौद्ध धर्मी वणिक् पुत्र चंपानगरीमांथी वेपार करवाने वसंतपुरमां रहेवा आव्यो. ते कोइ व्यापारने प्रसंगे जिनदासने घेर आवतां सौंदर्यवती सुभद्रा तेना जोवामां आवी. तत्काल मोह पामी तेणे जिनदासनी पासे पाणिग्रहण करवा माटे सुभद्रानी मागणी करी. जिनदासे तेने मिथ्यात्वीपणाना कारणथी आपवानी ना कही. बुद्धिदास पछी ते कन्या मेळववाना इरादाथी कपटी श्रावक थइ कोइ विचक्षण जैन मुनिनी सेवा करवा लाग्यो. ते अल्प समयमां ते मुनि पासेथी श्रावकना आचार शीखी गयो अने साचा श्रावक जेवो बनी गयो. तेनामां श्रद्धा न हती, पण ते निरंतर देवपूजा, साधु सेवा अने आवश्यकादि धर्म कृत्यो करवा लाग्यो. अनुक्रमे तेने जिनदासनी साथे मैत्री थइ, अने परिचय वधतो गयो. आखरे बुध्दिदासने शुध्द श्रावक जाणी जिनदासे पोतानी पुत्री सुभद्रा तेनी साथे परणावी. कपटी बुध्दिदास सुभद्रानी साथे विषयभोग भोगववा लाग्यो अने सुखे काल निर्गमन करवा लाग्यो.

एक वखते जेणे व्यापारमां घणुं द्रव्य उपार्जन कर्युं छे, एवा बुध्दिदासे पोताना देशमां जवा माटे पोताना ससरा जिनदासनी रजा मागी. ते वखते जिनदासे कह्युं, "वत्स, तमे स्वदेशमां जवानी इच्छा राखो छो, ते ठीक छे; परंतु तमारा माता पिता विपरीत धर्मवाळा छे ते पामा जेम घोमाने न सहन करी शके, तेम मारी श्राविका पुत्री सुभद्राने तेओ केम सहन करी शकशे?" बुध्दिदासे कह्युं, "भद्र, तमे ते विषेनी चिंता राखशो नहीं. हुं तेमने जुदा घरमां

राखीश; परंतु मने स्वदेश जवानी आज्ञा आपो." पछी ससराए कह्युं, "त्यारे खुशीथी जाओ. मार्गमां तमारुं कल्याण थाओ." ससरानी आज्ञा थतां बुद्धिदास पोतानी स्त्री सुजद्रा साथे रथमां वेसी मार्गे चाल्यो अने अनुक्रमे ते चंपानगरी आवी पोहोंच्यो. पोतानी स्त्री सुजद्राने जुदा वासगृहमां राखी पोते माता पिताने घेर गयो, अने तेमने आनंदथी मल्यो. तेणे पोतानो सर्व वृत्तांत माता पिताने जणाव्यो. पछी पोताना कार्यमां तत्पर थइ पोताने घेर रहेवा लाग्यो.

सुजद्रा जुदा घरमां रही निष्कपट वृत्ति वमे अरिहंत प्रजुनो धर्म सेवती हती; परंतु तेणीनी सासू अने नणंद तेणीनां छिद्रो जोयां करती हती. एक वखते एवुं बन्युं के, कोइ जैन मुनि जिक्षाने माटे सुजद्राना वासगृहमां आवी चाल्या गया. ते जोइ ते बुद्धिदासने तेनी माता अने व्हेने कह्युं के,"जाइ, तारी वहु कोइ जैन मुनिनी साथे रमे छे." बुद्धिदास बोल्यो, "तमारे एवी जुठी वात कहेवी नहीं; कारण के, मारी स्त्री कुलीन, जैन धर्ममां रक्त अने सती छे. ते कदि पण कुशीला थायज नहीं. तमे धर्मनी इर्ष्याथी आवो मिथ्या आरोप चडावी कहो छो. तमारे आवुं अघटित न बोलवुं जोइए." बुद्धिदासनां आवां वचनो सांजली ते सुजद्रानी सासू अने नणंद ते सुजद्राना विशेष छिद्रो जोवा लाग्या.

एक वखते कोइ जैन मुनि सुजद्राने घेर जिक्षा लेवाने आव्या. तेज वखते पवनवमे तेमना नेत्रमां उमतुं तरणुं पम्युं. ते साधुमां जिनकल्पीपणुं हतुं, एटले तेओ शरीर संस्कारथी विमुख हता. आथी तेमणे ते तरणांने नेत्रमांथी दूर कर्युं नहीं. आ समये सुजद्रा जिक्षा आपवा आवी. ते वखते तेणीना जोवामां आव्युं के मुनिना नेत्रमां कांइक पीमा थाय छे. आथी तेणीए चालाकीथी जिव्हाना अग्र जागथी ते मुनिना नेत्रमांथी तरणुं लइ लीधुं. तेम करतां,तेणीना कपालमां करेलुं कुंकुमनुं तिलक ते मुनिना ललाट उपर चोटी गयुं. मुनि जिक्षा लइ तेणीना घरमांथी बाहेर नीकल्या, ते वखते छिद्र जोनारी तेणीनी सासूए पोताना पुत्रने बोलावी ते मुनिना ललाटनुं तिलक प्रत्यक्ष बताव्युं. तेवी निशानी जोइ बुद्धिदासे पोतानी मातानुं वचन कबुल कर्युं अने सुजद्राना शील विषे तेने शंका उत्पन्न थइ. त्यारथी बुद्धिदास सुजद्रानी उपर विरक्त थइ गयो.

सती सुजद्रा पोताना पतिने पोतानी उपर निःस्नेह जाणी मनमां विचार करवा लागी. "अहा ! मारी उपर वृथा दोषारोप थयो. वली मारा निमित्ते

श्री जिनशासनने पण आ अपवाद लाग्यो, माटे हवे मारुं जीवित नकामुं छे. जीवितनो त्याग करीने पण हुं आ मलिनता दूर करुं तो ठीक." आवुं विचारी सती सुभद्राए आ प्रमाणे अभिग्रह धारण कर्यो. "ज्यां सुधी आ मारा अपवादनी मलिनता दूर न थाय, त्यां सुधी हुं कायोत्सर्गने पारीश नहीं." आवो अभिग्रह लइ तेणीए जिन पूजा करी अने शासनसुरीनी मनमां धारणा करी. संध्याकाळे घरना एक खूणामां कायोत्सर्ग करीने रही. तेणीना सम्यक् ध्यानथी आकर्षाएली शासन देवीए प्रगट थइ सुभद्राने कर्युं,—"हे वत्से, हुं तारा बोलाववाथी आवी छुं, माटे जे कार्य होय ते कहे. ते वखते सुभद्रादेवी ते देवीना वाक्य सांभळी कायोत्सर्ग पारी सहर्षा थइ देवीने नमन करी बोली—" हे देवी, मारा निमित्ते शासनने लागेलुं कलंक दूर करो." देवी बोल्या—" वत्से, तुं खेद करीश नहीं. तारुं कलंक दूर करवा माटे अने श्री जिनशासननी प्रभावना वधारवा माटे प्रातःकाले सर्व शुभ थशे. तुं निश्चित थइ शयन करी जा." आ प्रमाणे कही देवी अदृश्य थइ गया. ते पछी सुभद्रा निश्चित थइ सुइ गइ. प्रातःकाले ते जाग्रत थइ देव पूजा, गुरु पूजा वगेरे आवश्यक करी परवारी.

आ समये नगरना दरवाजा के जे रात्रे बंध करेला, ते उघडी शक्या नहीं. राजाना माणसोए घणुं कर्युं, पण कोइ रीते दरवाजाना कमाडो उघडता न हता. आथी नगरना लोको मुंझाइ गया. तेमनां ढोरो पशुओ क्षुधा अने तृषाथी आकुल व्याकुल थवा लाग्या. पोतानी प्रजाने माथे आवुं भारे दुःख थतुं जोइ राजा हृदयमां आकुल-व्याकुल बनी गयो. राजाए, विचार्युं के, आ कार्य कोइ देव तरफथी थयेलुं होवुं जोइए, आवुं विचारी राजा पोते पवित्र थइ धूप दीप करी अंजलि जोडी आ प्रमाणे बोल्यो—" हे देवदानवो, सांभळो. तमारामांथी जे कोइ मारी उपर कोपायमान थया होय तो तमे आ मारा धूप दीपथी प्रसन्न थाओ." राजाना आ शब्दोथी तत्काल आ प्रमाणे आकाश वाणी प्रगट थइ.—

" जलमुद्धृत्य चालिन्याः कूपतस्तंतुबद्धया ।
काचिन्महासती पुर्याः कपाटांश्चुलुकैस्त्रिभिः ।। १ ॥
आच्छोटयति चेच्छीघ्रमुद्घटंतेऽखिला अपि ।

कपाटा द्वार देशस्था, नोचेन्नैव कदाचन ॥ २ ॥

युग्मम् ।

"जो कोइ सती स्त्री काचा सूत्रना तंतु वमे चालणीने बांधी, ते वमे कुवामांथी जल लइ आ नगरीना दरवाजाने त्रण अंजलि छांटे तो ते नगर द्वारना कमाडो उघडी जशे. ते शिवाय कदि पण उघडशे नहीं." १, २

आ प्रमाणे आकाशवाणी सांभळी राजाए सर्व स्त्रीओने आज्ञा करी एटले नगरनी क्षत्रियाणीओ, ब्राह्मणीओ अने वणिक् स्त्रीओ कुवाने कांठे आवी चालणी वमे जल भरवा लागी, परंतु काचा सूत्रना तंतुओ तुटी जवा लाग्या. केटलीएक चालणीओ कुवामां पमी. कोइनाथी ते काम थइ शक्युं नहीं. बधीओ विलखी थइ पाछी चाली गइ. अने हृदयमां अत्यंत खेद पामवा लागी.

आ वखते विनयवती सुभद्रा पोतानी सासू पासे आवी अने आ प्रमाणे कहेवा लागी–" हे माता, जो तमारी आज्ञा होय तो हुं कुवामांथी चालणी वमे जल काढी आ नगरना दरवाजा उघाडवानी इच्छा राखुं छुं." सासूए ऊंचे स्वरे कह्युं, " अरे जैन मुनिने सेवनारी, ताराथी ए कार्य बनशे नहीं. तारुं सतीपणुं हुं सारी रीते जाणुं छुं." हवे बीजा लोकोने जणाववानुं शुं कारण छे? में एकलीए जाण्युं, एटलुं बस छे." नगरनी बधी स्त्रीओ जे दरवाजाने उघाडवा समर्थ थइ नथी, तो हवे तुं शी रीते थइश" ? सुभद्रा बोली–" माता, तमे कहो छो, ते युक्त छे, पण हुं पंचनी साक्षीए मारा सतीपणानी परीक्षा करी शकीश. तमारे आ कार्यमां मने अटकाववी नहीं." आटलुं कही ते सती सुभद्रा, तेणीनी सासू अने नणंद हास्य करती हती, ते छतां तत्काल स्नान करवा गइ. स्नान करी देवगुरुने नमन करी ते कुवाने कांठे आवी. त्यां नवकार मंत्र पूर्वक शासन देवीनुं स्मरण करी सूर्य सन्मुख ऊभी रही आ प्रमाणे बोली– " जो हुं जैन धर्म अने शील रुप अलंकारने धरनारी होउं तो आ काचे तांतणे बांधेली चालणी वमे कुवामांथी पाणी नीकळजो." आ प्रमाणे कही ते सतीए काचा तंतुओथी बांधेली चालणी कुवामां नांखी अने तत्काल तेणीए चालणीने जल साथे बाहेर काढी. आ शीलनो प्रभाव प्रत्यक्ष जोइ राजा वगेरे सर्व सानं-

दाश्चर्य थइ गया. राजा पोताना परिवार साथे ते सतीनी आगळ आव्यो अने आ प्रमाणे बोल्यो–" हे पतिव्रता, हे सती, आप कृपा करी आ नगरना दरवाजा उघाडो अने लोकोना संकटने दूर करो." पछी सती सुभद्रा नगर जनोथी वींटाएली, विकस्वर नेत्र तथा मुखवाळी अने बिरुदावळी बोलनाराओ जेनी आगळ जय जय शब्द करी रह्या छे, एवी थइ प्रथम नगरना दक्षिण दरवाजे आवी. त्यां नवकार मंत्र बोली तेणीए जलनी त्रण अंजलिओ ते दरवाजा उपर छांटी, एटले जेम जांगुलि मंत्रना जाप वडे सर्पना विषथी आर्त्त एवा नेत्रो उघडी जाय तेम नगरना दरवाजा उघडी गया. ते वखते आकाश मार्गे दुंदुभिनो नाद थयो अने देवताओए जैन धर्मने आश्री जयध्वनि कर्यो. आथी नगरना लोको घणांज आश्चर्य साथे हर्षित थइ गया. ते पछी सती सुभद्राए पश्चिम अने उत्तर दिशाना दरवाजाओ तेवी रीते उघाड्या. पछी सुभद्राए कह्युं के, में श्री जैन धर्मना पसायथी त्रण दरवाजा उघाड्या छे. हवे आ नगरमां जे कोइ स्त्री सतीपणानो गर्व करती होय तो तेणी आ चोथो दरवाजो उघाडे." आटलुं कही सती सुभद्रा पाछी वळी अने तेणीए ते दरवाजो उघाड्यो नहीं. पछी बीजी कोइ स्त्री ते पुर द्वारने उघाडी शकी नहीं. ते चंपानगरीनुं द्वार अद्यापि बंधज रहेलुं छे; एम संभळाय छे. सती सुभद्रानुं आ चरित्र जोइ तेणीनी सासू अने नणंद श्याममुखी थइ गइ. तेणीना पति बुद्धिदासनुं मुख तो पोतानी स्त्रीनुं आवुं आदरभूत शील जोइ शरद् ऋतुना चंद्रनी पेठे देदीप्यमान थइ गयुं. नगरना लोको ते सतीनी स्तवना करवा लाग्या. राजाए अत्यंत हर्ष पामी सती सुभद्राने उत्तम वस्त्रालंकारो आप्या अने मोटा उत्सवथी तेणीने तेने घेर पोहोचाडी. पछी ते महासतीना प्रतिबोधथी राजा विगेरे सर्व लोकोए जैन धर्मनो अंगीकार कर्यो. सर्व ते सतीनी स्तवना करतां पोतपोताने घेर चाल्या गया. पाछळथी सुभद्राना ससराना कुटुंबे घणो पश्चात्ताप कर्यो. पछी तेओए सतीनी समीपे जइ जैन धर्मने अंगीकार कर्यो. सती सुभद्रानो स्वामी बुद्धिदास के जे कपटी श्रावक हतो, ते पछी सत्य श्रावक बनी गयो. अने सत्य प्रेमथी सुभद्रा साथे रही सुखे काल निर्गमन करवा लाग्यो. ते बंने दंपती गृहस्थ धर्म पाळी अंते संयमने आराधी सद्गतिना भाजन थया हता.

एवी रीते चोथा व्रत उपर सती सुजद्राली कथा कहेवाय छे. आ प्रकारे शील व्रतनुं माहात्म्य सांजळी बीजा पण जव्यजनोए आदर पूर्वक शील व्रत पाळवाने तत्पर थवुं. तेनी जावना आ प्रमाणे छे—

" चिंतेअव्वं च नमो, तेसिं तिविहेण जेहिअवंजं।
चत्तं अहम्ममूलं, मूलं जवगप्भवासाणं" ॥ १ ॥

" जेमणे मन, वचन अने काया—ए त्रण प्रकारे अधर्मनुं अने आ संसारमां गर्जावासनुं मूल रुप एवुं अब्रह्मचर्य ठोमी दीधुं छे, तेमने नमस्कार हो. " १



पाचमुं स्थूल परिग्रह विरमण व्रत.

स्थूल एवा परिग्रहनुं परिमाण करी तेनाथी विराम पामवुं, ए पांचमुं स्थूल परिग्रह विरमण व्रत कहेवाय छे. जेमके,

" गेही गिद्धि मणंतं, परिहरिय परिग्गहे नवविहंमि।
पंचमवए पमाणं, करेज इच्छाणुमाणेणं " ॥ १ ॥

" पांचमा स्थूल परिग्रह विरति नामना व्रतने विषे गृहस्थ अनंत गृद्धि—इच्छानो त्याग करी नव प्रकारना परिग्रहनुं प्रमाण करे छे—आटलुं मारे मोकळुं छे, एवी अवधि करे छे. " १

परिग्रहना नव प्रकार आ प्रमाणे छे.

१ क्षेत्र, २ वास्तु, ३ हिरण्य, ४ सुवर्ण, ५ धन, ६ धान्य, ७ द्विपद, ८ चतुष्पद अने कुप्य—एवा नव प्रकार छे. तेमां पेहेलुं क्षेत्र ते त्रण प्रकारनुं छे. १ सेतु क्षेत्र, २ केतु क्षेत्र अने ३ उजय क्षेत्र. जे रेंट प्रमुखना जलथी सिंचाय, ते सेतु क्षेत्र कहेवाय छे, जे आकाशना पाणीथी सिंचाय ते केतु क्षेत्र कहेवाय छे अने जे बंनेना पाणीथी सिंचाय ते उजय क्षेत्र कहेवाय छे.

वस्तु एटले घर, हाट, गाम, नगर वगेरे. तेमां घर त्रण प्रकारनुं छे. १ खात, २ उच्छ्रित अने ३ तदुजय. जे भूमिगृह—जोंयरादि गृह ते खात-

गृह कहेवाय छे. जे मेहेल, हवेली वगेरे ते उच्छ्रित गृह कहेवाय छे अने जे भोंयरा उपर रहेल मेहेल वगेरे ते तदुभय गृह कहेवाय छे.

हिरण्य एटले सोनुं रुपुं, जे प्रसिद्ध छे ते. धन एटले गणिम वगेरे चार प्रकारनुं छे ते. सोपारी, जायफळ वगेरे जे गणी शकाय अथवा गणीने वेची शकाय, ते गणिम धन कहेवाय छे. कंकु, गोळ वगेरे जोखी शकाय अथवा जोखीने वेची शकाय, ते धरिम धन कहेवाय छे. घृत, लवणादि जे मापी शकाय अथवा मापीने वेची शकाय, ते मेय धन कहेवाय छे. अने वस्त्र, रत्न वगेरे जे परीक्षा करीने लेवाय ते परीक्ष्य धन कहेवाय छे.

धान्य एटले चोखा, डांगर वगेरे सत्तर प्रकारनुं कहेवाय छे. कोइ ग्रंथांतरमां तेना चोवीश प्रकार पण कहेला छे. सत्तर प्रकारना धान्यने माटे आ प्रमाणे लखे छे.

" व्रीहिर्यवो मसूरो, गोधूमो मुद्ग माष तिल चणकाः ।
अणवः प्रियंगु कोद्रवमकुष्टकाः शालिराढक्यः " ॥१॥
किंच कलाय कुलत्थौ शण सप्त दशापि सर्वे धान्यानि ।

"१ डांगर, २ जव, ३ मसूर, ४ गोधूम, ५ मग, ६ अडद, ७ तल, ८ चणा, ९ अणव, १० कांग, ११ कोद्रवा, १२ मठ, १३ शाल, १४ चोला, १५ कलथी, १६ शण अने १७ आढक, ए सत्तर प्रकारना धान्यो कहेवाय छे." १

द्विपद एटले स्त्री, दास, दासी, मेना, पोपट वगेरे. अने चतुष्पद एटले गाय, भेंस, ऊंट वगेरे जाणवा. कुप्य एटले शयन, आसन, रथ, गाडां, हल, माटीनां ठाम, स्थाल, कचोळा वगेरे घरना उपकरणो.

अहिं शंका करे छे के, ए उपर कहेला पदार्थोनुं शी रीते परिमाण करवुं? तेना उत्तरमां कहे छे के, पोतानी इच्छा–कल्पना प्रमाणे तेमनुं परिमाण थाय छे. कहेवानो आशय ए छे के, जो इच्छानी निवृत्ति थाय तो नियम करती वखते जेटलो परिग्रह सत्तामां रहेलो छे, एटले ते समये जे परिग्रह पोतानी पासे विद्यमान छे, तेनाथी ओछुं प्रमाण करवुं. अने पछी वधेलुं द्रव्य धर्मकार्यमां

जोमी देवुं. अथवा सत्तानुमाने करीने छतां प्रमाणे ठेवट नियम ग्रहण करवो. ते उपर आनंदादि श्रावकोना दृष्टांतो प्रसिद्ध छे. जो कदि गृहस्थ इच्छा निरोध न करी शके तो जे होय ते करतां बमणुं के चोगणुं मोकळुं राखीने बाकी जे शेष रहे तेनो नियम करे.

आहिं कोइ शंका करशे के, " आ व्रतां परिग्रहनो निषेध करीने जे व्रतनुं अंगीकार करवापणुं छे, ते मरु देशनी वापीकाना जळना स्नाननी जेम कोने हास्यनुं स्थान नहीं थाय " ? ते शंकाना समाधानमां कहेवानुं के, भाग्ययोगे कालांतरे करीने इच्छा प्रमाणे क्षेत्रादिक संपदाना पण अधिक आरंभनुं थवापणुं छे अने कदि संपदा न होय पण इच्छा अनंती होय छे, तेनो निरोध करवा माटे व्रतनो अंगीकार करवो ते सफल छे. तेने माटे कह्युं छे के,

" परिमिअमुवसेवंतो, अपरिमिअमणंतया परिहरंतो ।
पावइ परंमि लोए, अपरिमिअमणंतयं सुक्खं" ॥१॥

परिमित परिग्रहने सेवतो अने अपरिमित अनंतनो परिहार करतो पुरुष आ लोकनो पार पामे छे अने अपरिमित अनंत सुखने पामे छे. " १

आहिं प्रश्न करे छे के, इच्छा प्रमाणे वस्तु प्राप्त करतां इच्छा पोतानी मेळे शांत पामे छेज; तो पछी आ परिग्रह परिमाण करवानुं शुं कारण छे ? भोजन करवाथी क्षुधा एनी मेळे समाइ जाय छेज.

तेना उत्तरमां कहेवानुं के, एम नथी; कारण के परिपूर्ण समृद्धि प्राप्त थतां पण इच्छानी अतृप्तिज छे. तेने माटे कह्युं छे के,

" जह लहेई रिद्धिं, तह लोहो विवड्ढए बहुओ ।
लहिऊण दारुभारं, किं अग्गी कहविविज्झाइ " ॥१॥

" जेम जेम ऋद्धि प्राप्त थती जाय छे, तेम तेम लोभ बहु वृद्धि पामे छे. अग्नि लाकडानो समूह प्राप्त करीने बुझी जतो नथी, पण उलटो वृद्धि पामे छे. " १

परिग्रह सर्व क्लेशोतुं मूल छे, ते दर्शावे छे.

" सेवंति पहुं लंघंति सायरं सायरं भमंति भुवं ।
विविरं विसंति निविसंति पिउवणे परिग्गहे निरया" ॥१॥

"द्रव्यादि संचयने विषे एकाग्र चित्तवाला प्राणीओ धनना स्वामीनी सेवा करे छे, समुद्रनुं उल्लंघन करे छे, आदर पूर्वक पृथ्वीमां भटके छे, सिद्धरस वगेरेने माटे पर्वतनी गुफामां प्रवेश करे छे अने मंत्रादिकनी सिद्धिने माटे श्मशानमां वसे छे. आवा प्रकारनो परिग्रह दुःखनो हेतुरुप छे." १

एवा परिग्रहने दुःखनो हेतु जाणी, तेनाथी संतोष राखवो सारो छे. संतोषी मनुष्यो निर्धन होय तोपण इंद्रादिकना सुखने अनुभवे छे. तेने माटे कह्युं छे के,

" संतोसगुणेण अकिंचणोवि इंदाइअसुहं लहइ ।
इंदस्स वि रिद्धिं पाविऊण ऊणो च्चिय अतुट्ठो" ॥१॥

" निर्धन पण संतोषना गुणवडे इंद्रादिकना सुखने अनुभवे छे अने असंतोषी प्राणी इंद्रनी समृद्धिने पण पामीने ऊणो रहे छे—अपूर्ण रहे छे." १

असंतोषी मनुष्यने इंद्रना सुखो मळे तोपण संतोष वळतो नथी, एटले त करतां पण वधारे सुखनी इच्छा करे छे.

उपर कहेला स्वरुपवाला परिग्रह प्रमाणनुं स्वरूप अने संतोषनुं मूल विवेक छे, ए वात दृष्टांतथी देखाडे छे.

" विवेकः सद्गुणश्रेणिहेतुर्निगदितो जिनैः ।
संतोषादिगुणः क्वापि, प्राप्यते नहि तं विना" ॥ १ ॥

" विवेक सद्गुणोनी श्रेणिनुं कारण छे, एम जिनेश्वरोए कहेलुं छे. ते विवेकविना संतोषादि गुण बीजे कोइ स्थळे पण प्राप्त थतो नथी." १

विवेक प्रगट थवाथी सर्व सद्गुणो पोतानी मेळे आवी ते भव्य पुरुषना

शरीरमां धननी जेम आश्रय करे छे. तेने माटे कह्युं छे के,

" प्रादुर्भावे विवेकस्य, गुणाः सर्वेऽपि शोभनाः ।
स्वयमेवाश्रयंतेहि, भव्यात्मानं यथा धनम्" ॥ १ ॥

आ श्लोकनो अर्थ उपर कहेवामां आव्यो छे.
आ विषे विशेष अर्थ धन नामना शेठना वृत्तांतथी जाणवो.

धन शेठनी कथा.

कोइ एक नगरमां " श्रीपति " नामे एक मोटो धनवान् शेठ रहेतो हतो. तेने " धन " नामे एक पुत्र हतो. तेने पिताए एक मोटा धनाढ्य शेठनी पुत्रीनी साथे परणाव्यो. एक वखते आचार्यना सर्व गुणोथी अलंकृत एवा "सोमाचार्य" नामे एक आचार्य ते नगरमां आवी चड्या. तेमने वंदना करवा माटे नगरना घणा लोको गया. ते साथे श्रीपति शेठ पण गयो. आचार्य भगवाने सर्व धर्मनी देशना आपी. ते देशनामां परिग्रह परिमाण व्रतनुं स्वरूप विशेषपणे वर्णवी बताव्युं. देशनाने अंते जेने विवेक उत्पन्न थयो छे, एवा श्रीपति शेठे ते सूरिनी पासे ते व्रत ग्रहण कर्युं. बीजा पण श्रावकोए विविध प्रकारना नियमो ग्रहण कर्या. ते पछी सर्वे गुरु महाराजने नमीने पोताने घरे चाल्या गया.

ते पछी श्रीपति शेठे पोताना नियमित करेला द्रव्यथी वधारे रहेला द्रव्यने धार्मिक स्थानमां वापरवा निश्चय कर्यो. श्री अरिहंत चैत्यना निर्माणनुं मोटुं फल जाणी एक मोटुं जिनालय कराव्युं. ते जिनचैत्यमां शुभ मुहूर्त्तमां उत्तम परिवार साथे तेणे श्री जिनेंद्रनी प्रतिमानुं स्थापन कर्युं. ते पछी ते श्रीपति शेठ ते चैत्यमां निरंतर जिन पूजा करतां अने सत्पात्रने दान आपतां अनुक्रमे पोतानो काल निर्गमन करतो हतो. आयुष्य पूर्ण थतां ते शेठ शुभ ध्यानवडे काल करी सद्गतिने प्राप्त थयो, ते पछी स्वजनोए एकठा मली तेना पुत्र धनने तेना स्थान उपर स्थापित कर्यो. धन शेठ लोभग्रस्त अने निर्विवेकी हतो. तेणे आ प्रमाणे चिंतव्युं—" अरे मारो पिता गांडो थइ गयो हशे, तेथी तेणे घणुं द्रव्य खर्ची नांख्युं छे. आवा चैत्य बनाववामां द्रव्यनो व्यय करवो, ते व्यर्थ छे. हवे हुं मूल द्रव्य (मुडी) ना व्ययना कारणोने अटकावी नवुं द्रव्य उत्पन्न

करवाने उजमाल थाउं." आ प्रकारे चिंतवी ते धन शेठे पोताना निवासगृह शिवाय बीजा घर अने हाट वगेरे स्थानो वेची नांख्या अने दास, दासी वगेरे जे उपजीवक वर्ग हतो, तेने विसर्जन करी नांख्यो. ते शिवाय चैत्य पूजा तथा प्रभावनादिक बधां धर्मकृत्योनो पण त्याग करी दीधो. पछी पोते एकलो जीर्ण वस्त्रो पेहेरी खंभे कोथळो लइ गोळ प्रमुख लइ वेचवा माटे गामोगाम फेरी करवा लाग्यो. भोजन वखते ते मात्र तेल मिश्रित जुनी कलथी प्रमुख नीरस आहार करवा लाग्यो. धनशेठनी आवी कृपण स्थिति जोइ तेनी कुलवती अने शीलवती स्त्री हृदयमां खेद पामवा लागी. तेणीए तेने घणी हित शिक्षा आपी परंतु ते लोभादिकथी ग्रस्त हतो, एटले तेनां वचनने अल्प अंशे पण मानतो नहीं.

आवी रीते केटलोक समय वील्या पछी पेला आचार्य महाराज तेज स्थले पुनः आवी चड्या. भव्य जीवो तेमने वंदना करवा माटे आववा लाग्या. आचार्य महाराजे तेमने देशना आपी. ते आचार्ये श्रीपति शेठनी स्थिति अने प्रवृत्ति विषे लोकोने पुछ्युं. ते लोकोए कह्युं, " स्वामी, श्रीपति शेठ कालधर्मने पाम्यो छे. हाल तेनो " धन " नामनो पुत्र विद्यमान छे. ते घणो लोभाभिभूत थइ गयो छे. निर्विवेकपणे ते जिनपूजादि सर्व धर्मकृत्यो छोडी पशुनी जेम फोगट काल गुमावे छे. " ते श्रावक लोको आ प्रमाणे ते धनशेठनी स्थितिनुं व्यान करता हता, तेवामां खभा उपर कोथलो लइ मलिन वेषवालो ते धन शेठ कोइ गाम तरफ उतावले जतो दृष्टिए पड्यो. ते वखते श्रावकोए कह्युं, "स्वामी, जुओ, आ श्रीपतिनो पुत्र धन शेठ जाय छे." गुरु महाराज ते धननी एवी स्थिति जोइ, तेनो उपकार करवाने माटे पोतानी पासे बेठेला एक श्रावकने मोकली तेने बोलाव्यो. धन गुरुनी समीप आव्यो नहीं. ते तेज ठेकाणे उभो रही बोल्यो, " भाइ, हुं द्रव्यनो अर्थी छुं. मारे गुरुनी साथे कांइ काम नथी. " धनना आ शब्दो सांभळी आचार्य महाराज केटलोएक लाभ धारीने पोते त्यां गया अने बोल्या, " भाइ, तुं श्रीपति शेठनो पुत्र छे. तारा जेवाने आवी रीते धर्मकार्यनी विमुखता घटती नथी. कदि ताराथी कोइ नवुं धर्मकार्य न बनी शके तो कांइ नहीं; पण तारा पिताए करावेला जिनचैत्यमां रहेल प्रभुनी प्रतिमानुं मुखकमळ जोइ ते पछी तारे भोजन करवुं, एवो नियम तुं अंगीकार कर." गुरुनां

आ वचनो सांभळी, ते धन बोल्यो. " महाराज, हुं मारा कार्यमांथी अत्यारे भ्रष्ट थाउं छुं, माटे हाल मने छोडी द्यो. परंतु आजथी पछी तमारो कहेलो नियम मारे प्रमाण छे. " आ प्रमाणे कही ते धन पोताना धर्मकार्यमां प्रवर्त्यो अने आचार्य भगवान् त्यांथी विहार करीने बीजे स्थाने चाल्या गया.

त्यारथी कोइ शुभ कर्मना उदयथी ते शेठ निरंतर प्रभुनुं मुखकमळ जोया पछी भोजन करतो हतो. तेनी स्त्री पोताना पतिनी आ प्रवृत्ति जोइ खुशी थती हती. तेणी धारती हती के, आवा लुब्ध पुरुषना हृदयमां आवो शुभ भाव उत्पन्न थयो छे, तेथी जणाय छे के, आ पुरुषनो कोइ शुभोदय थशे.

एक वखते एवुं बन्युं के, लोभी धन गाममां फेरी करी बपोरे मोडो आव्यो. ते उतावळमां प्रभुना मुखकमळनुं दर्शन भुली गयो, अने तरत भोजन करवा बेठो. ते वखते तेने याद आव्युं के, " अरे ! में हजु देवदर्शन कर्यां नथी, माटे जइने सत्वर करी आवुं. " आवुं विचारी ते तत्काल बेठो थयो अने जिनचैत्यमां आवी प्रभुनां दर्शन करवा लाग्यो. तेवामां चैत्यनी अंदर " हे धन, माग, माग," एवो ध्वनि प्रगट थयो. आ शब्द सांभळी धन चारे तरफ जोवा लाग्यो, पण ते शब्द कहेनार कोइ माणस तेना जोवामां आव्युं नहीं. आथी तेना मनमां अतिशय आश्चर्य उत्पन्न थयुं. ते वखते ते धने आ प्रमाणे कह्युं, " तमे जे बोलो छो, ते कोण छो?" पुनः आ प्रमाणे ध्वनि थयो. "हुं आ चैत्यनो अधिष्ठायक अने श्रीअरिहंत भगवान्नो उपासक देवता छुं. तने तारा नियममां दृढ जोइ हुं तुष्यमान थयो छुं, माटे तुं वांछित वर माग. " धन बोल्यो—" हुं मारी स्त्रीने पुछीने मागीश. " आ प्रमाणे कही धन पोताने घेर आव्यो अने तेणे पोतानी स्त्रीने ते सर्व वृत्तांत कह्यो. ते सांभळी तेनी विवेकी स्त्रीए विचार कर्यो के, " घरमां द्रव्यनी कांइ न्यूनता नथी, पण आ मारा पतिमां विवेकनी खामी छे. जो तेनामां विवेक आवे तो पछी सर्व कार्यनी सिद्धि थशे. " आवुं विचारी ते स्त्रीए धनने कह्युं, " स्वामी, तमे सत्वर ते देव पासे जाओ अने तेमनी पासे विवेक मागो. " स्त्रीनुं आ वचन मान्य करी ते धनशेठ कोथलो फेरवतो चैत्यमां आव्यो. अने ऊंचे स्वरे बोल्यो, " हे देव, जो तमे मारी उपर तुष्ट थइ मने वर आपवा इच्छता हो तो मने विवेक आपो. " तेनां

आ वचनो सांजळी अने तेनां पुष्कर्मनो क्षय जाणी देवताए कह्युं, " हे धन, सर्व प्रकारनी जमताने नाश करनारुं विवेक रुपी रत्न हुं तने आपुं छुं. हवे तुं घेर जा. " ते पछी धन विवेकनुं वरदान प्राप्त करी पोताने घेर आवी जोजन करवा बेठो. ते वखते तेनी स्त्रीए तेलथी मिश्रित एवुं कळथीनुं अन्न तेनी आगळ लावीने मुक्युं. ते जोइ धन विवेकवान थइ बोल्यो, " अरे ! आपणा समृद्धिवाळा घरमां आवुं पुष्ट भोजन केम ? " स्त्रीए कह्युं. " स्वामी, तमे जेवुं अन्न लावी आपो छो, ते हुं रांधी आपुं छुं. " पछी तेणे घरमां नजर करी तेवामां स्थाने स्थाने विविध जंतुओना जाळथी जरेलुं तेवुं अन्न अने बीजा हलका पदार्थो तेना जोवामां आव्या. दारिद्र्यथी जरपूर एवो पोताना घरनो देखाव जोइ धन पोताना हृदयमां विचार करवा लाग्यो, " अरे ! मने अज्ञानीने धिक्कार छे. में आवां आचरण करी मारा कुळने लजव्युं. में कांइ पण धर्मकृत्य कर्युं नहीं. आटला दिवसो नकामा फोगट गुमाव्या. हवे हुं उत्तम व्यवहारने विषे उद्यमवान् थाउं तो वधारे सारुं. " आ प्रमाणे चिंतवी तेणे पूर्वे वेची दीधेलां घर, हाट वगेरे पाछा खरीदी लीधां, अने सर्व उपजीवक वर्गने पाछो बोलाव्यो. पोताना पिताना समयनी जे व्यवस्था हती, तेवी व्यवस्था करी दीधी. पछी पोताना पिताए करावेला चैत्यनो अने बीजा पण चैत्योनो विशेषपणे पूजा प्रभावनादि उत्सव कर्यो अने वर्द्धमान परिणामथी बीजा दानादिक कृत्यो करवा मांड्या. गुरुना योगथी परिग्रह परिमाणनुं व्रत लइ तेणे वधारानुं द्रव्य सर्व धार्मिक कार्योमां वापरवा मांड्युं अने अनुक्रमे ते बीजा व्रतोना नियमो लेवामां पण उद्यत थयो. आथी धनशेठ नगरना महाजन प्रमुख लोकोमां माननीय थइ पड्यो. अने उत्तम प्रकारनी यश लक्ष्मीने प्राप्त थयो. एवी रीते वर्ती ते धन शेठ चिरकाल श्रावक धर्मने पाळी छेवटे सद्गतिनो जाजन थयो हतो.

आ प्रमाणे पांचमा परिग्रह परिमाण व्रत उपर ते धन शेठनी कथा कहेवाय छे. बीजा पण जव्य प्राणीओए हृदयमां विवेकने धारण करी परिग्रह परिमाण करवामां उद्यमवंत थवुं अने लोजादिकनो त्याग करवो के जेथी उजय लोकमां मनवांछित समृद्धिनी सिद्धि प्राप्त थाय छे.

ते उपर आ प्रमाणे जावना छे—

" जह जह अन्नाणवसा, धणधन्नपरिग्गहं बहु कुणसि।
तह तह लहु निमज्जसि, भवे भवे भारियतरिव्व ॥१॥
जह जह अप्पो लोभो, जह जह अप्पो परिग्गहारंभो।
तह तह सुहं पवड्ढइ, धम्मस्स य होइ संसिद्धि ॥ २ ॥
तम्हा परिग्गहं उ–ज्झिऊण मूलमिह सव्वपावाणं ।
धम्माचरण पवन्ना, मणेण एवं विचिंतिज्जा " ॥ ३ ॥

" हे भवि, जेम जेम तुं अज्ञानना वशथी धन तथा धान्यनो परिग्रह करे छे, तेम तेम जाणे अति भारथी भरेलो हो, तेम तुं भवभवने विषे डुबे छे. जेम जेम थोडो लोभ होय छे, अने जेम जेम परिग्रहनो आरंभ अल्प होय छे, तेम तेम परिग्रहनुं सुख वधे छे अने धर्मनी सिद्धि थाय छे. तेथी परिग्रह सर्व पापोनुं मूल छे एम धर्मना आचरणमां प्रवीण एवा मन वडे विचारी तेनो त्याग करवो." १–२–३

एवी रीते पांचमुं व्रत कहेवामां आव्युं. आ व्रतो महाव्रतनी अपेक्षाए लघु–नाना छे, तेथी ते अणुव्रत कहेवाय छे.

त्रण गुणव्रतो.

आ व्रतो अणुव्रतोना गुण (उपकार)ने माटे वर्ते छे, तेथी ते गुणव्रत कहेवाय छे. ते गुणव्रतो दिशि परिमाण वगेरेथी हिंसाना निषेध करनार होवाथी अणुव्रतोने उपकारक छे.

पेहेलुं दिशिपरिमाण गुणव्रत.

जे सर्व प्राणीओथी सर्व भवमां ऊर्ध्व, अधो अने तिर्यग् दिशामां गमन आश्रीने परिमाण करवामां आवे छे ते पेहेलुं दिक्परिमाण गुणव्रत कहेवाय छे. तेनी अंदर " मारे दरेक दिशामां आटली भूमि आक्रमण करवी, ते करतां वधारे करवी नहीं " एवो नियम लेवाय छे.

अहिं कोइ शंका करे के, दिक्परिमाण व्रत लेवाथी शो लाभ थाय

तेथी तुं चक्रवर्ती नथी पण कोइ चक्रवालो लागे छे." अशोकचंद्र बोल्यो, "देव, तेने खबर नथी. हुं मारा पुण्यना बलथी तेरमो चक्रवर्ती थयो छुं. माटे तुं द्वार उघाम अने विलंब करी मने खेद न पमाम." अशोकचंद्रनां आवां आग्रही वचन सांजळी अने जाणे तेनामां भूतनो आवेश थयो होय तेम जाणी ते क्रोधातुर बनी गयो. तत्काल तेनामांथी जाज्वल्यमान अग्निनी छाया प्रगट थइ, अने तेथी तेणे तेने दग्ध करी छठी नरकनो अतिथि करी दीधो हतो.

आ प्रमाणे अशोकचंद्रनी कथा कहेवाय छे. आ वृत्तांत सांजळी बीजा जव्य मनुष्योए दिशिपरिमाण व्रतनो अनादर न करवो. जो ते व्रतनो अनादर करवामां आवे तो अशोकचंद्रनी जेम आ लोकनां कष्टने पामी परजवमां नरकनी पीमा जोगवे छे. तेथी ते व्रतने ग्रहण करवामां आलस करवुं नहीं.

तेनी भावना आ प्रमाणे छे—

" चिंतेअव्वं च नमो, साहूणं जे सया निरारंजा ।
विहरंति विप्पमुक्का, गामागर मंकिअं वसुहं " ॥ १ ॥

"जेओ हमेशा आरंज रहित अने मुक्त थइ ग्राम, आकर (खाणो)थी मंकित एवी आ पृथ्वीमां विहार करेछे, तेवा साधुओने नमस्कार हो, एम चिंतववुं." १

आ प्रमाणे छठुं दिशि परिमाण नामे पहेलुं गुणव्रत छे.

जोगोपजोग प्रमाण नामे बीजुं गुणव्रत.

जे पदार्थो एक वखत जोगवाय ते जोग एटले जोजन, पुष्प वगेरे. अने जे वारंवार जोगवाय ते उपजोग, एटले स्त्री, वस्त्र, आजूषण वगेरे. तेनुं परिमाण करवाथी जे व्रत लेवाय ते "जोगोपजोग परिमाण" नामे बीजुं गुणव्रत कहेवाय छे. ते व्रत जोजनथी अने कर्मथी— ए बे प्रकारे छे. ते विषे कहुं छे के,

" जोयण कम्मेहिं डुहा, बीयं जोगोवभोग माणवयं ।
जोयणओ सावज्जं, उसग्गेणं परिहरेइ ॥ १ ॥

" तह अतरंतो वज्जइ, बहु-सावज्जाइंएस भुज्जाइं ।
बावीसं अन्नाइवि, जहारिहं नाय जिणधम्मो" ॥ २ ॥

" बीजुं जोगोपजोग परिमाण व्रत जोजनथी अने कर्मथी एम बे प्रकारे छे. तेमां भोजनथी श्रावक उत्सर्ग मार्गे करी (मुख्य वृत्तिए करी) सावद्य (सचित अने एषणीय) जोज्यने परिहरे छे अने अने ए तेने परिहरवानी अशक्ति होय तो एकला सचित्तनेज परिहरे छे. [ते गाथामां कह्युं नथी, तो पण जाणी लेवुं] तथापि अशक्त छतां पण जिनधर्मने जाणनारो श्रावक बहु सावद्य एवा बावीश अजक्ष्यने परिहरे छे" १,–२

ते बावीश अजक्ष्योनां नाम.

" [५]पंचुंबरि [९]महविगई, [१०]हिम, [११]विस [१२]करगेअ [१३]सव्वमट्टीअ
[१४]राईजोअणगंचिय, [१५]बहुबीज [१६]अणंत [१७]संधाणं ॥ १ ॥
[१८]घोलवमय [१९]वायंगण, [२०]अमुणियनामाणि फुल्लफलयाणि ।
[२१]तुच्छफलं [२२]चलिअरसं, वज्जइ जुज्जाइ बावीसं" ॥ २ ॥

" पांच ऊंबरा, एटले ऊंबरो, पीपळानी पेपरी, वड, प्लक्ष, काकोदुंबरिका, ए पांचना फल जे मशकना आकारवाळा अने बहु जीवोथी जरेला होय छे, तेथी ते वर्जवा. तथा मद्य, मांस, मध, अने मांखण–ए चार विगय (विकृति) ते घृतादिकनी अपेक्षाए महाविकारना हेतु रुप होवाथी वर्जवी. तेम वळी ते क्रूर अध्यवसायना हेतु रुप छे, अने तेनी अंदर तत्काल तेना जेवा वर्णवाळा जीवो उत्पन्न थइ जाय छे, तेथी ते वर्जवा योग्य छे. तेने माटे कह्युं छे के,

" मज्जे महुमि मंसे, न वणीयंमि चउत्थए चेव।
उप्पज्जंति असंखा, तव्वण्णा तत्थ जंतुणो " ॥ १ ॥

" मद्य, मधु, मांस, अने मांखण ते चारमां तेना जेवा वर्णवाळा असंख्याता जंतुओ उत्पन्न थाय छे. " १

तेम हिम, विष, करा, माटी, अने रात्रिजोजन ते प्रसिद्ध छे. तेओ-

मां हिम, करा, माटीने विषे घणा जीवोनी उत्पत्तिनो संभव छे. अने विष तो पोतानेज उपघात करनारुं अने महामोहनुं उत्पादक छे. रात्रिभोजनमां घणा जीवोनो संपात थवानो संभव छे. अने तेथी ते आ भव तथा परभव संबंधी बहु दोषोथी दूषित होवाथी वर्जनीय छे. मसक [थमण]ने विषे मगनी पेठे अगणित बीज रहेला होय ते बहु बीज कहेवाय छे. पेपा वगेरे बहुबीज छे, तेना दरेक बीजमां जीवोनुं उपमर्दन थवानो संभव छे. जे म्लेच्छ कंदादिक ते अनंतकाय छे. तेना बत्रीश भेद छे. तेनी अंदर पण अनंत जीवोनी उत्पत्ति छे. संधान—एटले बोळ अथाणुं. तेमां पण बहु जीवनी व्याप्ति छे. घोळवडा एटले काची छाश; दहीं अने दाळना वडा, तेने मिश्र करीने करवामां आवे छे. ते विदल रुप छे. तेमां सूक्ष्म त्रस जीवोनी उत्पत्ति छे, ते केवलिगम्य छे. तेने माटे बृहत्कल्प सूत्रमां कहुं छे,

" जइ मुग्ग मास पमुहं, विदलं कच्चंमि गोरसे पडइ ।
ता तस जीवुप्पत्तिं, भणंति दहिए तिदिण उवरिं" ॥१॥

" मग, अडद, प्रमुख काचा गोरस (दहीं छास)मां पडे तेने विदल कहे छे. तेमां त्रस जीवनी उत्पत्ति छे, एम प्रभु कहे छे. " १

वृंताक—एटले रींगणादिक, ते प्रसिद्ध छे. ते बहु बीज छे. तेनुं अतिशय लोक विरुद्धपणुं छे. तेमां बहु जीवमयपणुं छे. वळी ते घणी निद्रा करनार तथा कामने उद्दीपन करनारा दोषना हेतुरुप छे, माटे वर्जवा योग्य छे.

पोताथी के परथी जेमनुं नाम जणाय नहीं, तेवा अजाण्यां फूल तथा फळ वर्जवां; कारण के, तेनी अंदर जीवोनो उपघात रहेलो छे. तेम जे भक्षण करवाथी तृप्ति अल्प थाय छे अने तेनो आरंभ मोटो होय, ते तुच्छ फल कहेवाय छे, ते गंगेटक, सींगोडा प्रमुख कोमळ फळो जाणवा. तेथी अनर्थ दंडनो संभव छे. एटले थोडा आरंभथी श्रावकने गृह व्यवहार चलावतां अनर्थ दंड होतो नथी. चलित रस एटले सडीगयेलुं. दुर्गंधी धान्य, (फुगी वळीगयेलुं होवाथी) ते अनंतकाय कहेवाय छे; माटे वर्जवा योग्य छे. सुखडी प्रमुख काल उपरांत रहेल होय ते तथा सडी गयेला दाणा के जेमना वर्ण अने गंधादिक बदलाइ गया होय ते कुत्सित अन्न कहेवाय छे.

आ प्रमाणे आ बावीश अभक्ष्यो कहेला छे. परंतु तेटला बावीशज अभक्ष्य छे, एम न समजवुं; कारण के उपलक्षणथी बीजा पण अभक्ष्य कहेवाय छे. जेमके, जेने बे दिवस उल्लंघन थइ गया होय, रांधेला चोखाए करी व्याप्त एवुं दहीं तथा पत्र पुष्पादि, जे बहु सावद्य होय ते वर्जवा.

अल्प सावद्य होय तोपण तेनो नियम करवो. जेमके, " मारे आटला प्रमाण ओदनादि जमवा. " तेवी रीते चित्तनी अत्यंत गृद्धि-लोलुपता, उन्माद तथा अपवाद वगेरेने उत्पन्न करनारां वस्त्र, आभूषण अने वाहनादिक वर्जवा, अने बाकीनानुं प्रमाण करवुं. प्रमाणमां विरतिनी परिणति एटले विरति करवाना परिणाम होय छे, माटे परिमाण अवश्य करवुं.

अहिं केटलाएक अज्ञानी लोको कहे छे के, "आ संसारमां शरीरज साररुप छे, माटे ते शरीरने जेम तेम पोषवुं जोइए.तेमां भक्ष्य अभक्ष्यनी कल्पना शा माटे करवी ? " आ संबंधे तेमने कहेवानुं के, तेओ खरेखरा मूर्खज छे. कारण के, आ शरीरने बहु प्रकारे पोषण करवामां आवे, तोपण ते शरीरनुं असारपणुंज होय छे; तेथी तेवा असार शरीरने अर्थे विवेकी पुरुषोए अभक्ष्य भक्षण करवुं नहीं. तेने माटे कह्युं छे के—

" अइ पोसिअंपि विहडइ, अंते एअं कुमित्तमिव देहं ।
सावज्ज भुज्ज पावं, को तस्स कए समायरइ " ॥ १ ॥

"आ शरीर अति पोषण कर्या छतां पण अंते नठारा मित्रनी पेठे विनाश पामी जाय छे, तेथी तेवा शरीरने माटे सावद्य भोगववानुं पाप कोण आचरे ? " १

हवे दृष्टांत सहित आ व्रत लीधानुं फळ देखाडे छे.

" मंसाईणं नियमं, धीमं पाणच्चए वि पालंतो ।
पावइपरंमिलोए, सुरभोए वंकचुलोव्व" ॥ १ ॥

"मांसादिकनो नियम बुद्धिमान् मनुष्य प्राणना त्याग सुधी पण पालन करतो तो परलोकमां वंकचूलनी पेठें देवलोकना सुखने पामे छे.

वंकचूलनी कथा.

आ जरतक्षेत्रने विषे विमल नामे राजा हतो. तेने सुमंगला नामे स्त्री हती. ते बंने दंपतीथी बे संतानो उत्पन्न थयां. तेमां पुष्पचूल नामे एक पुत्र अने पुष्पचूला नामे एक पुत्री हती. ते बंने अनुक्रमे यौवन वयने प्राप्त थयां. राजकुमार पुष्पचूलने एक सुंदर राजकन्या साथे परणाव्यो. राजकन्या पुष्पचूलाने कोइ उत्तम राजकुमारनी साथे परणावी. राजकन्या पुष्पचूला विवाहित थया पछी थोमाज वखतमां विधवा थइ. आथी राजा विमल अने सुमंगला राणी घणाज दुःखी थइ गयां. विधवा थयेली पुष्पचूला तेना जाइ पुष्पचूल उपर अति प्रेम राखती हती. आथी ते भ्रातृ स्नेहने लइने पोताना पिताने घेर रही हती.

राजकुमार पुष्पचूल चोरी वगेरे दुर्व्यसनोमां पमी गयो; तेथी ते नगरना लोकोने अतिशय पीडवा लाग्यो. आ दुर्व्यसनने लइने लोकोमां ते वंकचूलना नामथी ओलखावा लाग्यो. तेनी व्हेन पुष्पचूला पण तेना जेवीज बुद्धिवाली थइ, तेथी ते वंकचूलाना नामथी लोकोमां विख्यात थइ. वंकचूल नगर जनोने अत्यंत पीमतो हतो. तेनी घणी फरीयादो राजाना सांजळवामां आवी. आथी राजा तेनी उपर रोषातुर थइ गयो अने तेणे वंकचूलने पोताना राज्यनी हदमांथी काढी मूक्यो. तेनी वेहेन वंकचूला अने तेनी स्त्री तेना प्रेमने लइने तेनी पाछळ चाली नीकळी. वंकचूल पोतानी व्हेन अने स्त्रीने साथे लइ जंगलमां जमवा लाग्यो. कोइ एक जयंकर अटवीमां ते आवी पहोंच्यो, तेवामां कोइ धनुर्धर भिल्ले तेने जोयो. ते भिल्ले आकृतिथी तेने राजपुत्र जाणी बहु मानथी पोतानी पल्लीमां राख्यो. तेणे आदरथी तेनो वृत्तांत पुछयो. वंकचूले तेने पोतानो वृत्तांत कही संजलाव्यो. तेनो वृत्तांत जाणी ते भिल्लनी तेनी उपर घणी प्रीति थइ. ते समये त्यां मूल पल्लीपति मरण पामेलो हतो, तेथी तेना स्थान उपर वंकचूलने स्थापवामां आव्यो. वंकचूल एक मोटो भिल्ल राजा बनी गयो. ते जोल्लभीओनी साथे रहेवा लाग्यो अने भीलोनी साथे लोकोने लुंटतो ते स्थले सुखे काल निर्गमन करवा लाग्यो.

एक वखते वर्षाऋतुनो समय आव्यो. तेवामां चंद्रयशा नामना एक

आचार्य केटलाएक मुनिओना परिवारना साथमांथी जुदा पडी गयेला होवाथी जुदा पडी ते पल्लीमां आवी चड्या. ते आचार्य पोताना आचारमां सारी रीते वर्तनारा हता, तेथी वर्षामां निरंतर नवा उत्पन्न थयेला अंकुराना मर्दनथी अने सचित्त जलना संघट्टथी जय पामता हता, तेथी ते समय तेमने विहार करवामां अयोग्य लाग्यो. आथी तेओ ते पल्लीमां पेशी गया हता. वंकचूले कुलीनताने लइने ते मुनिने प्रणाम कर्यो. गुरुए तेने धर्मलाभनी आशीष आपी. गुरुए ते स्थले वसवा माटे वंकचूलनी पासे जग्यानी मागणी करी. ते वखते वंकचूले कह्युं, " महाराज, हुं तमोने रहेवा वसति आपुं, परंतु तमारे ते जग्यामां के मारी हदमां धर्मनी प्ररूपणा करवी नहीं. कारण के, हिंसा, असत्य, अने चोरी वगेरेनो त्याग करवाथी धर्म प्राप्त थाय छे. परंतु अमारी आजीविका तो तेमांज रहेली छे. माटे तमारे आ स्थले धर्मनी प्ररूपणा करवी नहीं."

आचार्य चंद्रयशाए ए वात कबुल करी. पछी वंकचूले तेमने रहेवाने माटे निरवद्य स्थान आप्युं. पछी गुरु स्वाध्याय ध्यानादि धर्मकृत्य करता ते स्थले चातुर्मास्य रह्या हता.

एक वखत वंकचूले आचार्यने आहारादिकने माटे निमंत्रण कर्युं, त्यारे आचार्ये कह्युं, " भद्र, अमारे तमारा घरनी भिक्षा कल्पती नथी. अमे तो अहिं तपश्चर्या करीने सुखे काल निर्गमन करीशुं. तमोए अमोने जे वसति दान कर्युं छे, तेथी तमोए महापुण्य उपार्जन करेलुं छे. तेने माटे आगममां आ प्रमाणे कहेलुं छे.

" जो देइ उवस्सं मुणि–वराण तवं नियम जोगजुत्ताणं ।
तेणं दिन्नावत्थन्न पाण, सयणासणंविगप्पा ॥ १ ॥
पावइ सुरनर रिद्धी, सुकुलुप्पत्ती य भोगसामग्गी ।
नित्थरइ भवमगारि, सिज्जा दाणेण साहूणं " ॥ २ ॥

" तप, नियम अने योगथी युक्त एवा मुनिओने जे उपाश्रय आपे छे, तेणे तेमने वस्त्र, पाणी, शयन, अने आसन प्रमुख सर्व आप्युं छे. ते वसति दानना पुण्यथी ते मनुष्य देव तथा मनुष्यनी ऋद्धिने पामे छे, सारा कुलमां जन्म

मेळवे छे, भोगनी सामग्री प्राप्त करे छे अने आ संसारनो पार पामे छे. "१-२

वर्षाकाळ अतिक्रांत थया पछी गुरु महाराजाए वंकचूलने पुछी त्यांथी विहार कर्यो. वंकचूल ते आचार्यनी सत्य प्रतिज्ञाथी हर्ष पामतो भक्ति वडे तेमनी पाछळ गयो. केटलोक मार्ग उल्लंघ्या पछी चिरकाळ रहेला मुनिना वियोगथी विह्वळ थयेला वंकचूले गुरुने नमन करी आ प्रमाणे विनंति करी– "स्वामी, अहींथी हवे बीजानो सीमाडो आवे छे, तेथी हुं हवे पाछो वळीश. हवे मने तमारुं पुनर्दर्शन तत्काळ थाजो." आ प्रमाणे तेनां वचन सांभळी आचार्ये मधुर वाणीथी वंकचूलने कह्युं, "हे भद्र, तमारी सहायथी अमे आटलो काळ तमारा स्थानमां सुखे रह्या हता, तेथी जो तमोने रुचे तो तमारो प्रत्युपकार करवा माटे थोडुं कांइ कहीए." वंकचूल बोल्यो—"महाराज, जे माराथी सुखे पाळी शकाय, तेवां वचनो कही मारी उपर अनुग्रह करो." वंकचूलना कहेवाथी ते आचार्य आ प्रमाणे बोल्या—"भद्र, १ जेनुं नाम कोइनाथी जाणी शकाय नहीं एवां अजाण्यां फळ तमारे खावां नहीं. २ बीजाने मारवानी इच्छा थतां तमारे सात आठ पगलां पाछुं हठवुं. ३ राजानी पटराणीने माता समान गणवी. अने ४ कदि पण कागडानुं मांस खावुं नहीं. आ चार नियमो तमारे चोकस रीते पाळवा. आ नियमो पाळवाथी तमारे उत्तरोत्तर मोटो लाभ थशे." आचार्यनां आ वचन सांभळी "महाराज, आपे मारी उपर मोटो अनुग्रह कर्यो" एम कही वंकचूले ते चार नियमो ग्रहण कर्या. पछी ते पोताने स्थाने पाछो फर्यो अने गुरु महाराज त्यांथी विहार करी बीजे स्थळे चाल्या गया.

एक वखते वंकचूल भिल्लोनी सेना लइ कोइ गाम मारवाने चाल्यो. ते गामना लोकोने अगाउथी मालुम पडवाथी तेओ गाम मुकीने नाशी गया. वंकचूल गामने खाली थयेलुं जोइ पोतानो परिश्रम निष्फळ थवाथी मनमां परिताप पामतो परिवार साथे त्यांथी पाछो फर्यो. अने अटवीमां एक वृक्ष नीचे विश्रांति लेवा बेठो. वंकचूलने क्षुधा लागवाथी तेणे अटवीमांथी फळादि लाववाने पोताना माणसोने आज्ञा करी. ते लोको पण क्षुधाथी पीडित थता हता, एटले तेओ फळादि लेवाने अटवीमां आम तेम फरवा लाग्या. कोइ वन लतामां सुगंधी अने पाकेलां फळोथी नम्र थइ गयेलुं एक किंपाकनुं वृक्ष तेमना जोवामां आव्युं. तत्का-

ल तेमणे ए वृक्षनां फलो लीधां अने ते लइ तेओ वंकचूलनी पासे आव्या. वंकचूलने ते फलोने जोतांज पोते लीधेलो नियम याद आव्यो. तेथी तेणे ते फलनुं नाम पुछ्युं. भिल्लोए कह्युं, " अमे आ फलनुं नाम जाणता नथी. परंतु ते बहु स्वादवालां छे. माटे आपने खावामां हरकत नथी. " वंकचूले कह्युं, " हुं अजाण्यां फल खातो नथी ; कारण के में अजाण्यां फल न खावानो नियम लीधो छे. " भिल्लोए आग्रह पूर्वक कह्युं, " स्वामी, आवी अस्वस्थ अवस्थामां नियमनो आग्रह राखवामां आवतो नथी. कारण के, अहींतो प्राण रहेवानो पण संदेह छे, तेवा वखतमां अभिग्रह शो ? " ते लोकोनां आवां वचन सांभळी वंकचूल धर्मनुं धैर्य धारण करीने बोल्यो, " भिल्लो, हुं क्षुधाथी पीडात छुं, परंतु मने ए नियममां दृढता छे. तमारे आवां वचनो बोलवां नहीं. प्राण जवानां होय तो भले जाओ, परंतु गुरु समीपे ग्रहण करेलो मारो नियम स्थिर रहो. " पछी ते भिल्लोए वंकचूलने आग्रह कर्यो नहीं. तेओ बधा ए फल खाइने ते वृक्ष नीचे सुइ गया; पण तेओमांथी वंकचूलना निरोधथी एक सेवके ते फल खाधां नहीं. पछी वंकचूल पण सूइ गयो. थोडीवार पछी वंकचूले जाग्रत थइ पोताना खास सेवकने जगाड्यो अने कह्युं के, "आ सूतेला लोकोने जगाड. हवे आपणे आपणी पल्लीमां जइए. " ते सेवके पोकार करी बधाने जगाडवा मांड्या, पण कोइ जाग्युं नहीं. पछी करस्पर्श करी जगाडवा मांड्या, तोपण कोइ जाग्या नहीं.तेणे तपास करी जोयुं, तो त्यां सर्वे मरण पामेला मालूम पड्या. पछी तेणे वंकचूलने ते वृत्तांत जणाव्यो. आथी वंकचूल आश्चर्य पामी गयो अने पोते ग्रहण करेलो नियम सफल थयो, एम जाणी मनमां आ प्रमाणे कहेवा लाग्यो. " अहा ! गुरु वाणीनुं माहात्म्य केवुं छे ? ते वाणीना प्रभावथी हुं जीवतो रह्यो.हुं केवो निर्भागी के सर्व इष्ट सिद्धिने करनार कल्पवृक्ष जेवा ते गुरु अकस्मात् मने प्राप्त थया हता, तेमनी वाणीना उपदेशनो लाभ में छोडी दीधो अने फोगटनो वखत गुमाव्यो. " आ प्रमाणे चित्तमां भावतो ते वंकचूल हर्ष अने खेद साथे रात्रि पडतां पोतानी पल्लीमां आव्यो. जेवामां ते रात्रे घरमां प्रवेश करे छे, तेवामां पोतानी व्हेन पुरुषनो वेष धारण करी पोतानी स्त्रीनी साथे सुतेली तेना जोवामां आवी. तेणे पुरुष वेषवाली पोतानी व्हेनने ओळखी नहीं. तेना मनमां एम आव्युं के, कोइ पुरुष साथे पोतानी स्त्री सुतेली छे. आथी

तेणे चिंतव्युं के, " अरे! मारी स्त्री दुराचारिणी छे. ते आ कोइ पुरुषनी साथे सुतेली छे; माटे आ बंनेने आ वखते खड्गथी मारी नांखुं. " आवुं चिंतवी ते प्रहार करवाने खड्ग उगामे छे, तेवामां तेने पेलो ग्रहण करेलो चोथो नियम याद आव्यो. तत्काल ते सात पगलां पाछो फर्यो. ते वखते क्रोधातुर एवा ते वंकचूलनुं खड्ग द्वारनी साथे अथडायुं. तेना शब्दथी तेनी पुरुषवेषधारी व्हेन वंकचूला जागी गइ. तेणे पोताना भाइने जोतांज कह्युं, " भाइ, चिरंजीवो. " वंकचूल पोतानी व्हेनने ओळखी शरमाइ गयो. पोताना खड्गनी साथे क्रोधने संवरी तेणे पोतानी व्हेनने पुरुष वेष धरवानुं कारण पुछ्युं. वंकचूला बोली- "भाइ, आजे संध्याकाळे तमारा शत्रुना सेवको नटनो वेष धारण करीने अहीं आव्या हता. हुं तेमनो कपट वेष जाणी गइ हती. ते वखते में चिंतव्युं के, भाइ वंकचूल बाहेर गया छे. ते क्यां छे, एनी मने खबर नथी. जो आ लोकोना जाणवामां आवशे के वंकचूल परिवार सहित बाहेर गयेल छे, तो तेओ आ पल्लीने अनाथ धारी पराभव करवाने आवशे; माटे कोइ उपाय करवो. आवुं चिंतवी में रात्रे कपटथी तमारो वेष पेहेर्यो अने पछी सभामां ते नट लोकोनी पासे नाटक करावी, तेमने योग्यता प्रमाणे द्रव्य आपी विदाय कर्या. पछी आळसथी में तमारो वेष काढ्यो नहीं अने ते वेष साथे मारी भोजाइनी साथे सुइ गइ हती. " पोतानी व्हेनना मुखथी आ [illegible] सांभळी [illegible] पोताना

पुरुषो नरने पण सेवनारी वेश्यानुं धन लेवुं, एतो विशेष निंदनीय छे; माटे मारे एवुं धन पण शा माटे लेवुं जोइए! " आम विचारी तेणे वेश्यानुं घर पण छोडी दीधुं. ते पछी ते राजाना घर आगळ आव्यो. त्यां तेणे चिंतव्युं के,

" चौर्यमाचर्यते तच्चे, ल्लुंब्यते खलु नृपतिः ॥
फलिते धनमक्षीणमन्यथापि चिरं यशः " ॥ १ ॥

" जो चोरी करवी तो राजानेज लुंटवो.कारण के जो काम सफळ थाय तो अक्षय धन मळे अने नहींतो लांबा कालनुं मोटुं यश मळे. " १

आवुं विचारी ते वनमांथी एक घो लाव्यो. तेने राजाना घरना किल्ला उपर चोटाडी, तेना पुछडा साथे वळगी राजाना मेहेलमां दाखल थयो. त्यां अद्भुत रुपने धारण करनारी राजानी पटराणी तेना जोवामां आवी. ते समये जागृत थयेली राणीए तेने जोयो अने आ प्रमाणे पुछ्युं,"तुं कोण छे? अने आहिं शा माटे आव्यो छे?" वंकचूले कह्युं, "हुं चोर छुं अने बहु प्रकारनां मणि तथा रत्नादिक द्रव्यनी इच्छाथी आहिं आव्यो छुं." आ वखते वंकचूलनुं रूप जोइ राजानी राणी तेनी पर मोहित थइ गइ. तेणीए कोमळ स्वरथी आ प्रमाणे कह्युं," भद्र, द्रव्यनी शी वार्त्ता छे ? आ बधुं तमारुंज छे. कोइ जातनो भय राखशो नहीं. स्वस्थ थाओ. आजे तमारा कुळ देवता तमारी उपर तुष्यमान थया छे. कारण के, हुं राजानी पटराणी तमारे वश थइ गइ छुं. आजे में मारा सौभाग्यना गर्वथी राजाने रीसाव्यो छे, तेथी तमे अहीं आवो अने तमारा यौवनने सफल करो.हुं संतुष्ट थतां माणसोने अर्थ काम सुलभ छे.मारो संतोष हशे तो पछी तमारो वध के बंध थशे नहीं. " आ प्रमाणे पटराणीए ते वंकचूलने कामग्रहथी लोभाव्यो अने क्षोभ पमाड्यो. तोपण वंकचूल पोते अंगीकार करेला नियमनुं स्मरण करी राणीने नमी आ प्रमाणे बोल्यो, " माता, तमे मारां पूज्य छो. मारा जेवा एक वनवासी तस्कर तरफ तमारे स्पृहा करवी योग्य नथी. " पटराणी बोली, " अरे वाचाल, हुं तारी साथे कामनी अभिलाषी छुं, तेने तुं माता कहीने बोलावता केम शरमातो नथी ? जो तुं मारुं वचन मानीश नहीं तो आजे तारी उपर यमराज रुठ्यो समजजे. " आ प्रकारे राणीए घणां वचनो युक्तिथी कह्यां, तोपण ते वंकचूल ज-

रा पण क्षोभ पाम्यो नहीं. पछी ते राणी क्रोधातुर थइ अने नखे करी पोतानुं शरीर उझरडी उंचे स्वरे पोकार करवा लागी."

आ तरफ राजा ते राणीवासना गृहना द्वार आगळ छुपी रीते उभो रही आ सर्व वृत्तांत सांभळतो हतो. ज्यारे राणीए पोकार करवा मांड्यो एटले द्वारपालो जागी उठ्या अने उघाडां शस्त्रो लइ दोडी आव्या. ते वखते राजाए ते लोकोने अटकावीने कह्युं, "आ चोर निरपराधी छे, माटे तेने मारशो नहीं. मात्र जरा बांधीने लइ जजो अने सवारे मारी आगळ सभामां लावजो." द्वारपालोए राजानी आज्ञा प्रमाणे कर्युं. ते चोरने पकडी बांधीने लइ गया.

आ वखते पोतानी राणीनो दुराचार प्रत्यक्ष जोइ राजा मनमां चिंता करवा लाग्यो अने ते चिंतामां तेणे जाग्रतपणाथीज महा कष्टे रात्रि निर्गमन करी. प्रातःकाले राजसेवको ते चोरने बांधी राजानी आगळ सभामां लाव्या. राजाए आक्षेपथी वंकचूलने, सत्य कहेवाने कह्युं, एटले वंकचूले रात्रिनो सर्व वृत्तांत जे बन्यो हतो, ते साचे साचो कही संभळाव्यो. अने राणीए पोताने मधुर वाणीथी केटलांक वचनो कह्यां हतां, एम गुप्तपणे ते वात जणावी. आथी राजा वंकचूलनी उपर संतुष्ट थइ गयो. तेने बंधमांथी मुक्त करी राजाए आलिंगन कर्युं. अने आ प्रमाणे कह्युं, "हे सत्पुरुष, तमारा साहसथी हुं तमारी उपर संतुष्ट थयो छुं, माटे मारी पटराणी हुं तमने अर्पण करुंछुं." वंकचूल बोल्यो- "स्वामी, आपनां पटराणी ए मारी माता छे. आपे एवुं वचन न बोलवुं." ते पछी राजाए धमकी आपीने कह्युं के, "जो तुं राणीने ग्रहण करशे नहीं तो हुं तने शूलीए चडावीश." वंकचूल आवी धमकीथी पण डर्यो नहीं. तेणे धैर्यथी ते वात अंगीकार करी नहीं. वंकचूलने आम अचल अने दृढ जोइ राजा

एक दिवसे वंकचूलना भाग्योदयथी ते आचार्य भगवान् तेज नगरीमां पधार्या. ते खबर जाणी वंकचूल मोटा आडंबरथी तेमने वंदना करवाने गयो. आचार्य पासेथी धर्मनुं शुध्ध स्वरुप सांभळी तेणे तत्त्व रुचिरुप सम्यक्त्व अंगीकार कर्युं हतुं. आ अरसामां ते उज्जयिनी नगरीनी समीपे आवेला शालिग्राम गामना रहेवासी जिनदास नामना श्रावकनी साथे वंकचूलने मैत्री थइ हती. ते जिनदास श्रावक ऊपर वंकचूलनो घणोज स्नेह थयो हतो.

एक समये राजाए अति दुर्जय एवा कामरूप देशना राजाने जीतवा माटे वंकचूलने आज्ञा करी. वंकचूले राजानी आज्ञाथी कामरुप देशमां जइ त्यांना राजा साथे युध्ध करी तेने पराजित कर्यो, परंतु शत्रुओनां शस्त्रोथी ते घणोज घायल थइ गयो.घायल थयेलो वंकचूल तेवीज स्थितिमां उज्जयिनी नगरीमां आवी पोहोंच्यो. वंकचूलनी आवी स्थिति जोइ राजाना हृदयमां चिंतानी पीडा उत्पन्न थइ आवी. तत्काल तेणे घणा वैद्योने बोलावी तेनी चिकित्सा करावी; पण वंकचूलना घा रुझाया नहीं. राजाए पछी पोताना वैद्योने क्रोध लावीने कह्युं, " तमे वंकचूलने शा माटे साजो करी शकता नथी! तमारे तेने जलदी साजो करवो. " वैद्योए कह्युं, " महाराज, तेने माटे हवे एक उपाय छे के, जो ते कागडानुं मांस खाय तो तेना शरीरना घा रुझाइ जाय. " आथी राजाए वंकचूलने आलिंगन करी अश्रुपात करतां कह्युं, " वत्स, तारी पीडा दूर करवा माटे वैद्योए घणा उपचार कर्या,पण तारा घा रुझाया नहीं. हवे कागडानुं मांस खावानो उपाय बाकी छे, ते तुं कर एटले तारा शरीरनी पीडा दूर थइ जाय. वंकचूले कह्युं, " स्वामी, हुं सर्वथा मांसभक्षणथी निवृत्त थयो छुं. तेमां खास करीने कागडानुं मांस न खावानो में नियम कर्यो छे; तेथी हुं मारो नियम तोडीश नहीं. राजा बोल्यो, " वत्स, जो जीवतां रहेवाय तो घणा नियमो लइ शकाशे. अने मृत्यु पाम्या पछी ते बधा नियमो चाल्या जशे. माटे जीवन राखवा तुं कागडानुं भक्षण कर. " राजानां आवां वचन सांभळी वंकचूल बोल्यो. " स्वामी, हवे मारे जीववानी जरा पण तृष्णा नथी; कारण के, एकवार अवश्य मृत्यु तो थवानुंज छे. तेथी आ प्राण भले जाय, पण हुं अकृत्य नहीं करुं. "

आ वखते राजाए पेलो शालिग्राम वासी जिनदास श्रावक के जे वंक-

चूलनो परम मित्र हतो, तेने बोलाव्यो. राजाना बोलाववाथी जिनदास तत्काल वंकचूलने मलवाने मार्गे चाली नीकल्यो. ते रस्तामां आवतो हतो, तेवामां कोइ बे देवीओ रुदन करती तेना जोवामां आवी. जिनदास तेमनी पासे आव्यो अने तेणे ते देवीओने पुछयुं, "तमे कोण छो ? अने शा माटे रुदन करोछो ?" ते स्त्रीओ बोली—"अमे सुधर्म देवमां रहेनारी देवीओ छीए. अमारो स्वामी देवलोकमांथी च्यवी गयो, तेथी तेना विरहथी अमे विह्वल बनी वंकचूल नामना एक क्षत्रिय भर्तारने प्रार्थवा इच्छीए छीए.आजे ते तमारां वचनथी जो तेनो नियम भांगशे तो ते सत्वर दुर्गतिए जशे.तेथी अमारे तेनो पाछो वियोग थशे. आथी अमे रुदन करीए छीए." ते बंने देवीओनां आ वचन सांभळी जिनदासे कह्युं, "तमे रुदन करशो नहीं. जेम तमारुं इष्ट थशे, तेम हुं करीश." आ प्रमाणे ते देवीओने आश्वासन आपी जिनदास उज्जयिनी नगरीमां आव्यो. ते राजाना मंदिरमां गयो अने राजाने मल्यो. पछी तेणे वंकचूल आगळ आवी तेनुं कुशल पुछी औषधना उपाय माटे पुच्छुं, ते वारे राजाए तेने सर्व वृत्तांत कह्यो. वंकचूलने काकमांस न खावाना नियममां अति दृढ जोइ अने तेनुं शरीर अत्यंत जर्जरीभूत थयेलुं देखी तेणे राजादि सर्वनी समक्ष आ प्रमाणे कह्युं- "आ मारा मित्र वंकचूलने धर्म तेज औषध छे, माटे बीजुं कोइ पण औषधनी प्रवृत्ति करवी नहीं." मित्रनां आवां वचन सांभळी वंकचूले कह्युं, "मित्र, तमे कह्युं, ते योग्य छे. हवे मारे तमने विशेषमां कहेवानुं के जो तमे मारी उपर पूर्ण स्नेह राखता हो तो आलस्यने दूर करी मने आ छेल्ले अवसरे कांइक [1]संबल आपो." वंकचूलनी आ मागणी उपरथी जिनदासे तेने सम्यक् प्रकारे आराधना करावी. तेथी वंकचूल चार आहारना पच्चखाण करी अने चार शरणनो अंगीकार करी पंच परमेष्ठी नमस्कारनुं स्मरण करतो, तथा सर्व जीवोने विषे निर्वैरपणानी धारणा करतो, पूर्वना करेलां पापने निंदतो अने सुकृतने अनुमोदतो समाधि पूर्वक काल करी बारमा देवलोके देवता थयो. ते पछी जिनदास वंकचूलनी मरण क्रिया करी शोक करतो पोताने [illegible] थयो. ते रस्ते जतो हतो, त्यां मार्गे पेली बे देवी[illegible] तेणे पुछ्युं, "भद्रे, हजु शा माटे रुदन करो छो ?[illegible] मृत्यु पामी देवलोकमां तमारो स्वामी न थयो ?" [illegible]

[1] भातुं.

" हे निर्मलाशय जिनदास, तमे शुं पूछो छो ? अमारे तो ते अमारा स्वामीनो वियोगज रह्यो. कारण के, तेओ परिणामनी विशुद्धिथी अमोने ओलंगीने बारमे देवलोके गया. " पछी जिनदास त्यांथी पोताने स्थाने चाल्यो गयो.

ए प्रमाणे वंकचूलनुं वृत्तांत कहेवाय छे. आ वृत्तांत उपरथी थोमा पण अभक्ष्य भक्षणना नियमनुं महा फल जाणीने भव्य प्राणीओए विशेपथी नियम पाळवामां तत्पर थवुं.

। प्रमाणे जोजनने आश्रीने जोगोपजोग व्रतनुं स्वरुप कह्युं. हवे नि कहे छे—

कम्माउ जइ कम्मं विणानतीरेइ निव्वहेउतो ।
नरसकम्मादाणे चयइअणंपि खरकम्मं " ॥ १ ॥

" कर्मने आश्री उत्सर्ग मार्गे करीने श्रावके कोइ पण सावद्य कर्म करवुं नहीं. अने निरारंजकरीनेज रहेवुं. पण जो कर्म विना निर्वाह न थाय तोपण पंनर कर्मादान अवश्य त्यजी देवा. " १

पंनर कर्मादान.

१ अंगार कर्म, २ वन कर्म, ३ शकट कर्म, ४ जाटक कर्म, अने ५ स्फोटक कर्म, ए पांच कर्म. १ दांत, २ लाख, ३ रस, ४ केश अने ५ विप, ए पांच वाणिज्य. १ यंत्रपीलन, २ निर्लांछन, ३ दवदान, ४ सरःशोपण, अने ५ असती पोपण, ए पांच सामान्य. ए पंनर कर्मादान कहेवाय छे.

१ आजीविका माटे अंगारा पामवा, जामजुंजीपणुं करवुं, कुंजार, लोहकार, अने सुवर्णकारनुं काम तथा ईंटो पकाववा प्रमुखनो आरंज करवो ते अंगार कर्म कहेवाय छे.

२ वृक्षादिकना पत्र, पुष्प वगेरेनुं छेदन, जेदन अने वेचवा प्रमुखना आरंज वमे जीववुं, ते वनकर्म कहेवाय छे.

३ गामा अने तेना अंगो घमावी राखवा—वेचवा तथा गामीथी आजीविका करवी, ते शकटकर्म कहेवाय छे.

४ पोताना गाडा, बळद तथा घोडावडे बीजानो जार वहेवो, अने भाडुं लइ गाडा प्रमुख बीजाने आपवा–ते वडे आजीविका करवी, ते जाटक कर्म कहेवाय छे.

५ कोदाळी, पावडो, हळ वगेरेथी भूमिनुं विदारण करवुं, तथा पथ्थर घडवा–इत्यादि वडे जे आजीविका करवी, ते स्फोटक कर्म कहेवाय छे. तेमज यव प्रमुख धान्यनो साथवो वगेरे करी वेचवुं, ते पण स्फोटक कर्म कहेवाय छे. तेने माटे कह्युं छे के,

" जव चणया गोहुम–मुग्ग मास करडिप्पभिइय धन्नाणं ।
सत्तुय दालि कणिक्का, तंडुल करणाइ फोडयणं ॥ १ ॥
अहवा फोडि कम्मं, सीरेणं भूमिफोडणे जंतू ।
उम्मत्तयणं च तहा, तह्राय सिद्ध कुट्टयं तं चेति " ॥ २ ॥

" जव, चणा, घउं, मग, अडद, करडी प्रमुखनो साथवो करवो, दळ कणिक अने तंदुल करवा, ते स्फोट कर्म कहेवाय छे अथवा हळे करीने जमीन फोडवी, पाणीने मारवा कूटवा लाकडीओना प्रहार करवा इत्यादि पण स्फोट कर्म कहेवाय छे.

६ प्रथमथी म्लेच्छ वगेरे लोकोने मोकली हाथीना दांत मंगावीने वेचवा अथवा जे खीणोमां ते हाथीना जीवो पेदा थता होय त्यां पोते जइ, दांत लावीने वेचवा ते दंतवाणिज्य कहेवाय छे.उपलक्षणथी शंख, चामडुं, चामर वगेरे पण जाणी लेवा, तेनो वेपार करवो ते पण दंतवाणिज्य कहेवाय छे. खीण शिवाय बीजे ठेकाणेथी दंतादिक वेचवामां के लेवामां दोष नथी.

७ लाखनो वेपार करवो ते लाखवाणिज्य. उपलक्षणथी गळी, मण शील आदि अथवा मनोहर धान्यादिक पण जाणी लेवा.

८ घी, तेल, मदिरा, मध, चरबी आदिनुं वेचवुं, ते रसवाणिज्य कहेवाय छे.

ए सींगमीओ वछनाग, अफीण, सोमल प्रमुख वेचवां, ते विषवाणिज्य कहेवाय छे. लोह, हरताळ पण घणा जीवना घातक छे, माटे ते उपलक्षणथी जाणवा.

१० दासी, गाय, भेंश ऊंट वगेरेने वेचवा, ते केशवाणिज्य कहेवाय छे.

११ तल शेलडी आदिने यंत्रे करी पीलवा, पीलावचा, ते यंत्रपीलण कर्म कहेवाय छे.

१२ बलद,घोडा वगेरे खांशी करवा,नाक वींधवा अने कान तथा कंवल वगेरेनुं छेदन करवुं, ते निर्लंछन कर्म कहेवाय छे.

१३ तृणादिकनी वृद्धिने माटे अथवा क्षेत्र वगेरेनं शोधवा माटे जे अग्नि लगाडवो ते दवदान कर्म कहेवाय छे.

१४ गोधूम वगेरेना लाभ माटे द्रह, सरोवर वगेरे सुकववा, ते शोषण कर्म कहेवाय छे.

१५ असती–दुःशील दासी, वीलाडी प्रमुख जानवरोनुं पोषण करवुं, ते असतीपोषण कर्म कहेवाय छे. अहिं उपलक्षणथी शुक, सारिका, कुतरा आदि अधम प्राणीओनुं पण पोषण जाणी लेवुं.

ए पंनर निविड कर्मना वंधना हेतु होवाथी आगम जाणाए ते पंनरकर्मादान कहेवाय छे. अहिं एटला मात्र पंनरज त्यजवानुं नथी परंतु वीजा पण खर–कठण कर्म, क्रूर, अध्यवसायथी साध्य कर्म जेवां के कोटवालपणुं तथा वंदीखानानुं रक्षकपणुं, इत्यादिकनो पण त्याग करवो. कदि अल्प सावद्य कर्मथी निर्वाह करवो पडे तो ते युक्त छे. तेने माटे कह्युं छे के,

" इयरंपिहु सावज्जं, पढमं कम्मं न तं समारभइ ।
जंदट्ठूण पयट्टइ, आरंभे अविरओ लोओ " ॥ १ ॥

" श्रावक नहीं निषेध करेल सावद्य कर्म के जे घरनो आरंभ, ग्रामांतर गमन,शकट,खेडवादिक छे,तेनो वीजाथी पेहेलो आरंभ पोते करे नहीं,ते शा माटे? ते कहे छे के, " जेने तेवुं कर्म करतो देखीने अयतनावंत लोको ते कार्य करवामां प्रवर्ते छे, तेथी वीजाना आरंभनो ते हेतु वने छे, माटे प्रथम आरंभ न करवो.

आ प्रमाणे कर्मथी भोगोपभोग व्रत समजवुं.

"अहिं शिष्य प्रश्न करे छे के, "पूर्वे भोगोपभोग शब्द वाची तो स्त्री वगेरे कह्या हता, तेथी ए व्रतमां तेनुंज प्रमाण करवुं जोइए. तो पछी कर्मथी ए व्रत होइ शके नहीं अने कर्म शब्दने क्रियावाचीपणुं होवाथी क्रियाने भोगोपभोगपणानो संभव नथी."

तेना उत्तरमां गुरु कहे छे—"ए वात सत्य छे, पण जे भोगोपभोग ते वेपारादिक कर्मनुं कारणभूत छे, तेथी कारणने विषे कार्यनो उपचार करवाथी कर्मने पण भोगोपभोगपणुं कह्युं छे. ते विषे अहिं वधारे चर्चा करवानी जरूर नथी.

ते व्रतनी भावना कहे छे—

"सव्वेसिं साहूणं, नमामि जेहिं अहियंति नाऊणं।
तिविहेण कामभोगा, चत्ता एवं विचिंतिज्जा" ॥ १ ॥

"जे मुनिओ कामभोगने अहित जाणीने मन, वचन अने काया, ए त्रिविध वडे तेनाथी विरम्या छे, ते सर्व मुनिओने हुं नमुं छुं." १

अनर्थदंड विरमण नामे

त्रीजुं गुणव्रत.

अनर्थदंड विरमण नामे त्रीजुं गुणव्रत कहेवाय छे. स्वजन, शरीर, धर्म तथा व्यवहारने माटे जे आरंभ करवामां आवे ते अर्थदंड कहेवाय छे. ते शिवाय बाकीनुं ते अनर्थदंड कहेवाय छे. एटले पोताना उपयोगमां आवे तेनो आरंभ ते अर्थदंड अने जेनी साथे पोतानुं कांइ पण प्रयोजन न होय, छतां तेनो आरंभ करवो ते अनर्थदंड. तेवा अनर्थदंडथी जे विरमण एटले विराम-पामवुं, ते अनर्थदंड विरमण नामे त्रीजुं गुणव्रत कहेवाय छे. ते व्रत दुर्ध्यान वगेरे चार प्रकारना अनर्थदंडना त्याग करवा रुप छे. तेने माटे कह्युं छे के,

" दंडिज्जइ जेण जिउं, वज्जिय निय देह सयण धम्मट्ठं ।
सो आरंभो केवल, पावफलोऽणत्थ दंडत्ति ॥ १ ॥
अवझाय पाव उवएस, हिंसदाणप्पमाय चरिएहिं ।
जं चउहा सो मुच्चइ, गुणव्वयं तं भवे तइयं ॥ २ ॥

" पोतानो देह, स्वजन अने धर्मनो अर्थ वर्जीने बाकीना जे जे आरंभोमां जीव दंडाय तेवो आरंभ के जे केवळ पाप रुप फळने आपनार छे, ते अनर्थदंड कहेवाय छे. ते दुर्ध्यान, पापोपदेश, हिंसा अने प्रमाद, ए चार आचरवाथी अनर्थदंड होय छे. ए चारनो जे त्याग करवामां आवे ते त्रीजुं अनर्थदंड विरमण नामे गुणव्रत कहेवाय छे. " १–२

बीजी गाथामां आ प्रमाणे विशेष व्याख्या छे. अपकृष्ट एटले हीण ध्यान, ते आर्त्त तथा रौद्रध्यान कहेवाय छे.

तेने माटे कहेलुं छे के—

" राज्योपभोग शयनासन वाहनेषु ।
स्त्री गंध माल्य मणिरत्न विभूषणेषु ॥
इच्छाभिलाष मति मात्रमुपैति मोहात् ।
ध्यानं तदार्त्तमिति संप्रवदंति तज्ज्ञाः ॥ १ ॥
संछेदनै दहन भंजन मारणैश्च ।
वंध प्रहार दमनै विनिकृंतनैश्च ॥
यो याति रागमुपयाति च नानुकंपां ।
ध्यानं तु रौद्रमिति संप्रवदंति तज्ज्ञाः " ॥ २ ॥

" राज्यनो उपभोग, शयन, आसन, वाहन, स्त्री, गंध, माल्य, मणि, रत्न अने तेना आभूषणोनी अंदर जे मोहथी अत्यंत इच्छा–अभिलाष प्राप्त थाय, तेने विद्वानो आर्त्तध्यान कहे छे. १

जे छेदन, दहन, भंजन, मारण, बंध, प्रहार, दमन अने खंडनथी रागने प्राप्त थाय अने दया न लावे तेने विद्वानो रौद्रध्यान कहे छे. " २

१ धर्मी पुरुषोने पण आ संसारने विषे घणुं करीने अंतरमां दुर्ध्यान थाय छे. परंतु तेओ पोताना प्रज्ञानना बलथी उन्मार्गे जातां एवा पोताना चित्तने अटकावी पुनः सन्मार्गे लावे छे. जे प्राणीओ निरंतर आर्त्त तथा रौद्रध्यानमां प्रवर्त्ते छे, तेमने तो अनर्थदंरुज छे.

२ पापनो हेतु होवाथी पाप एटले खेती आदि कर्म, तेनी दाक्षिण्यताना स्थान विना जे उपदेश ते पापोपदेश कहेवाय छे.

३ जे हिंसनशील होय ते हिंस्र कहेवाय छे. एवा विष, अग्नि, हळ अने शस्त्र वगेरे तेनुं दाक्षिण्यताना स्थान विना जे असंयतोने आपवुं, ते हिंस्रदान कहेवाय छे.

४ प्रमाद एटले मद्य, विषय, कषायादिक ते वडे जे आचरण, ते प्रमादाचरण कहेवाय छे. सात व्यसन, जलक्रीडा, वृक्षनी शाखाने आश्रीने हींचको खेलवो, कुकडा प्रमुख जीवोने लडाववा, कुशास्त्रनो अभ्यास करवो अने विकथा करवी वगेरे प्रमादाचरण कहेवाय छे; अथवा प्रमादाचरण एटले आलसनी व्याप्ति. नहीं शोधेला धन, धान्य तथा जलादिकनो व्यापार करवाथी, चुला,पाणीआरा वगेरेनी उपर चंदरवो न बांधवाथी अने घी, दहीं, दूध अने छाश आदिना पात्रो नहीं ढांकवाथी तेमां पोतानो तथा परनो उपघात थवाने लीधे ते बहु अनर्थना कारणो छे, एम जाणवुं. ते कारणने लइने परम गुरुए श्रावकने घेर सात गलणा अने नव चंदरवा[1] कहेला छे. जेमके—

" सुड्ढे सावयगेहे, हवइ गलणाइं सत्त सविसेसं ।
जल मिठ खार आछण तक्क घी तिल्लं चुणायं " ॥१॥

मीठुं जल, खारुं पाणी, उनुं पाणी, छास, घी, तेल अने लोट—ए सातने गळवा माटे श्रावके गरणा राखवा. आ गाथानो अर्थ सुगम छे. अहिं लोटनुं गळवुं एवी रीते समजवुं के, तेने चालणीथी चालवो. अहिं उपलक्षणथी दूध आदि वस्तुओ माटे पण गरणां राखवुं.

---

१ केटलेक स्थळे दश चंदरवा पण कहेला छे.

चंदरवा क्ये क्ये स्थळे जोइए.

वेश्वरने मिथ्यात्वी श्रावक बनी

जलस्थानोदूखलक० १ पाणीआरे, २ खांमणीए, ३ चंटीए, लइ ते ४ धान्यनी जूमिने विषे, ६ दहींनुं ज्यां मांखण करवामां आवे त्यां, ७ भोजने करवाने ठेकाणे, ८ सुवानी जग्योए अने ए उपाश्रये, ए नव स्थाने सुंदर वस्त्रय निष्पन्न करेला चंदरवा श्रावके धारण करवा. जो ते न करवामां आवे तो अनर्थदंड थाय डे. एवी रीते चार प्रकारना अनर्थदंडनो त्याग करवो.

ए अनर्थदंड नामे त्रीजुं गुणव्रत कह्युं.

आ अनर्थदंडने विषे त्याग करवापणुं विशेष प्रकारे बतावे डे. घणुं करीने पोतानी शक्ति प्रमाणे जेणे अनर्थदंड वर्जेलो डे अने परमार्थ जाणेलो डे, एवो श्रावक केवे प्रकारे अनर्थदंडने प्रयुंजे डे? ते विषे सर्व प्रकारना अनर्थदंडना जेदो उपर दृष्टांतो कहेवा अशक्य डे. तेथी मात्र एक चूला उपरनुं दृष्टांत आपवामां आवे छे. प्रमादे करीने चूला उपर चंदरवो नहीं बांधवाथी शुं थयुं हतुं, ते दृष्टांत अन्वय—व्यतिरेकथी कहे डे—

" चंदोदयदाणाओ, जाया मिगसुंदरी सया सुहिया ।
तज्जालनाउ कुट्ठी, तन्नाहो परभवे जाओ" ॥ १ ॥

" चूला उपर चंदरवो बांधवाथी श्रेष्ठीकन्या मृगसुंदरी नामे राजकन्या सदा सुखी थइ हती अने तेना जर्त्तारे ते चंदरवो बाळी नांख्यो, तेथी ते परजवे कुष्ठी थयो हतो. " १

बीजा केटलाएक तेना संबंधीजनो चूला उपर चंदरवो न बांधवा वगेरेथी अकस्मात् मृत्यु रुप कष्टने पाम्या हता, ए उपलक्षणथी जाणी लेवुं.

गाथानो अर्थ आ प्रमाणे अने तेनो भावार्थ कथाथी जाणवो.

मृगसुंदरीनी कथा.

श्रीपुर नगरमां श्रीषेण नामे राजा हतो. तेने देवराज नामे एक पुत्र थयो हतो. ते देवराज ज्यारे युवान थयो, त्यारे पूर्वना दुष्कर्मना उदयथी ते कुष्ठी थयो. तेना रोगने दूर करवा माटे सात वर्ष सुधी उपचारो करवामां आव्या; पण ते नीरोगी थयो नहीं. डेवटे कंटाळी गयेला वैद्योए तेनो उपचार करवानी ना पाडी. राजा

? धा॰ धारे दुःखी रहेवा लाग्यो. एक वखते तेणे एवी जाहेर घोषणा
छे. परंतु ते " जे मारा कुमारने नीरोगी करे तेने अर्ध राज्य आपवामां आवशे."
कावी "णानो पडह आखा नगरमां वगडाव्यो.

ते ते नगरमां यशोदत्त नामे एक मोटो धनाढ्य वसतो हतो. तेने शीलादि गुणोथी युक्त एवी लक्ष्मीवती नामे पुत्री हती. तेणीए राजाना ते पटहने निवार्यो अने कह्युं के, "हुं राजकुमारने नीरोगी करीश." राजाए अति आदरथी ते लक्ष्मीवतीने पोतानी पासे बोलावी. लक्ष्मीवती पोताना पिता वगेरेनी साथे राजानी पासे गइ.तेणीए पोताना शीलना प्रभावथी पोताना हाथनो स्पर्श करी ते राजकुमारना शरीरने नीरोगी बनावी दीधुं. आथी प्रसन्न थयेला राजाए पोतानी प्रतिज्ञा पालवाने माटे ते कन्या पोताना राजकुमारनी साथे परणावी. ते पछी ते पोताना पुत्रने राज्य आपी राजा गुरु पासे दीक्षा लइ चाली नीकल्यो. पाछल नवीन राजदंपती सुखे राज्य भोगववा लाग्यां.

एक दिवसे कोइ ज्ञानी आचार्य ते श्रीपुर नगरमां आवी चडया. तेमना आगमननी वार्त्ता सांभळी राजा देवराज अने राणी लक्ष्मीवती तेमने वंदना करवा आव्यां. गुरुए तेमने धर्मदेशना संभळावी. देशनाने अंते राजा देवराजे पोताने कुष्टनो रोग थवानुं कारण कारण पूछ्युं, त्यारे गुरुए कह्युं के, पूर्व भवने विषे उपार्जन करेलां दुष्कर्म वडे तमने रोग थयो हतो; तेनुं स्वरुप आ प्रमाणे छे.

वसंतपुर नगरमां मिथ्यात्वथी जेनी शुद्धमति आच्छादित थयेल छे, एवो देवदत्त नामे एक वेपारी रहेतो हतो. तेने धनदेव,धनमित्र, धनेश्वर अने धनदत्त नामे चार पुत्रो हता. ते चार पुत्रोमां जे धनेश्वर हतो ते व्यापार कलामां कुशल हतो. एक वखते ते धनेश्वर मृगपुर नगरमां व्यापार करवाने गयो. ते नगरमां जिनदत्त नामे जैनधर्मने पालनारो शेठ रहेतो हतो. तेने मृगसुंदरी नामे कन्या हती. ते बाला आर्हत धर्म उपर आस्तिक हती. एक वखते तेणीए गुरु पासे आ प्रमाणे त्रण अभिग्रह ग्रहण कर्या. श्री जिनेश्वरनी पूजा करवी, कोइ साधु महाराजाने दान आपी भोजन करवुं अने रात्री भोजननो त्याग करवो. आ त्रण अभिग्रह प्रमाणे ते सर्वदा वर्त्तती हती. मृगसुंदरी घणीज स्वरुपवती हती. एक वखते व्यापार अर्थे ते स्थले आवेला धनेश्वरे मृगसुंदरीने जोइ; तेणीने जोतांज ते तेना सौंदर्यथी मोहित थइ गयो. तत्काल तेणीने परणवाने ते अनुरागी बनी गयो.

तेणे जिनदत्त शेठनी आगळ ते कन्यानी मागणी करी; पण शेठे धनेश्वरने मिथ्यात्वी जाणी पोतानी कन्या आपी नहीं. मोह पामेलो धनेश्वर कपटी श्रावक बनी गयो. पछी ते मृगसुंदरीनो साथे परण्यो. परण्या पछी मृगसुंदरीने साथे लइ ते पोतानी नगरीमां आव्यो. घेर आव्या पछी धर्मनी इर्ष्याने लइने तेणे मृगसुंदरीने जिन पूजा वगेरे करतां अटकावी. श्राविका मृगसुंदरी आर्हतधर्म उपर पूर्ण आस्तिक हती, तेथी ते दृढता राखीने रही. तेणीए जिनपूजा न थवाथी उपवास करवा मांड्या. अनुक्रमे त्रण उपवास थया. चोथे दिवसे कोइ जैन मुनि तेणीने द्वार आवी चड्या. ते वखते तेणीए पोताना ग्रहण करेला नियमना रक्षणने माटे ते मुनिने उपाय पुछ्यो. ते समये गुरुए गुण अवगुणनो विचार करीने कह्युं, "भद्रे, तारे चुला उपर चंदरवो बांधवो. एम करवाथी पांच साधुओने प्रतिलाभित करवाथी अने पंच तीर्थोने नमस्कार करवाथी जेटलुं फल प्राप्त थाय, तेटलुं फल तने प्राप्त थशे." गुरुनी आ आज्ञा तेणीए शिरपर चडावी, अने त्यारथी ते प्रमाणे तेणीए कर्युं. ते चंदरवो बांधेलो जोइ तेणीना मिथ्यात्वी ससरा वगेरेए धनेश्वरने कह्युं के, "आ तारी वहुए वस्त्र बांधीने कामण कर्युं छे." ते सांभळी धनेश्वरने क्रोध चडी आव्यो अने तत्काल तेणे ते चंदरवाने अग्नि लगाडी बाळी नांख्यो. ते पछी मृगसुंदरीए फरीवार बांध्यो. ते पण धनेश्वरे बाळी नांख्यो. एवी रीते सात चंदरवा बांध्या अने सात बाळी नांख्या. पछी ससराए मृगसुंदरीने कह्युं, "भद्रे, शामाटे वृथा प्रयास करे छे ?" मृगसुंदरी बोली, "जीवदया माटे." ते सांभळी ससराए क्रोधथी जणाव्युं, "जो तारे जीवदया पाळवी होय तो तुं तारा पिताने घेर जा." मृगसुंदरीए कह्युं, "हुं कुलवाननी पुत्री छुं; तेथी कुलवानी पेठे एकली नहीं जाउं. माटे तमारा कुटुंब साथे मने मारा पिताने घेर मोकलो." तेणीनां आवां वचन सांभळी तेनो ससरो कुटुंब सहित तेणीने लइने मृगपुर नगर तरफ चाल्यो. मार्गमां कोइ एक गाममां तेणीना ससरानो सगो रहेतो हतो, तेने घेर तेओ मीजमान तरीके गया. ते सगाए पोताने घेर परोणा आव्या जाणी रात्रिने विषे भोजन तैयार कराव्युं. भोजन करवाने सर्व कुटुंब तैयार थयुं, पण रात्रि भोजनना नियमने संभारी मृगसुंदरी भोजन करवा उठी नहीं. कोइ पूर्वना पुण्यथी शुभ बुद्धि उत्पन्न थवाथी मृगसुंदरीना ससरा वगेरे मृगसुंदरीने मुकी भोजन करवा उठ्या नहीं. पछी ते गृहस्थना कुटुंबे ते भोजन

खाधुं, अने खाधा पछी तत्काल तेओ मरणने शरण थइ गया. प्रातःकाले ते सर्वने मरण पामेला जोइ, मृगसुंदरीना ससरा वगेरे तेनुं कारण जाणवा आमतेम जोवा लाग्या. तेनामां एक तपेलीनी अंदर सर्पनी गरळ जोवामां आवी. ते जोता ज तेओए विचार्युं के, रात्रे रसोइना धूमाडाथी आकुल थयेलो कोइ सर्प ऊंचथी तपेलीमां पडी गयेलो, तेना झेरथी सर्वनुं मृत्यु थयुं छे. आ वीना जाणी सर्वेए मृगसुंदरीनां वखाण कर्यां अने तेणीनी क्षमा मागी. आ वखते मृगसुंदरी बोली, " आर्यो, आवां कारणने लइने हुं चूला उपर चंदरवो बांधती हती, अने रात्रि भोजननो त्याग करती हती. " तेणीनां आवां वचन सांभळी सर्व प्रतिबोध पामी गया अने मृगसुंदरीने जीवितदात्री थवाथी कुलदेवीनी प्रमाणे मानवा लाग्या. पछी तेओ पाछा घेर आव्या अने मृगसुंदरीना उपदेशथी उत्तम प्रकारना श्रावको थया. ते पछी मृगसुंदरी अने धनेश्वर चिरकाल पर्यंत सम्यग् धर्मने आराधीने छेवटे समाधिपूर्वक काल करी स्वर्गे गयां हतां. स्वर्गनां सुखनो अनुभव करी आ वखते तमो बंने देवराज अने लक्ष्मीवती थया छो. ते पूर्वभवे चंदरवा बाल्या हता, ते दुष्कर्म निंदा वगेरे करवाथी ते खपावी दीधुं हतुं पण ते अंशमात्र रहेलुं, तेना थी आ भवमां तने सात वर्ष सुधी ते व्याधि रह्यो हतो. आ लक्ष्मीवतीए ते पूर्वना नियमना प्रभावथी तारा व्याधीने शांत कर्यो हतो.

राजा देवराज अने राणी लक्ष्मीवती गुरुना मुखथी आ प्रमाणे पूर्व भवनो वृत्तांत सांभळी जाति स्मरण ज्ञानने प्राप्त थयां. तत्काल तेओ बने आ संसार उपरथी विरक्त थइ गयां. पछी पुत्रने राज्य उपर स्थापितकरी तेमणे दीक्षा ग्रहण करी. छेवटे काल धर्मने पामी स्वर्गनां सुखनां भाजन थयां हतां.

आ प्रमाणे अनर्थदंड विरमणव्रतने विषे मृगसुंदरीनी कथा कहेवामां आवी. ते उपरथी बीजा भव्य जीवोए चुला उपर चंदरवा न बांधवा रूप वगेरे अनर्थदंडथी विराम पामवुं. अहिं आ प्रमाणे भावना छे—

" चिंतेअव्वं च नमो, सम्मद्दगाइं च जेहिं पावाइं ।

साहूहिं च वज्जियाइं, निरट्ठगाइं च सव्वाइं " ॥१॥

वळी,

" तुल्लेवि उअरजरणे, मूढ अमूढाण अंतरं पिच्छ ।
एगाणनरय दुक्खं, अन्नेसिं सासयंसुखं " ॥२॥

" जे स्व अने परने अर्थे—उभय प्रकारे पाप कर्मथी विराम पाम्या छे, ते मुनिराज प्रत्ये अमारो नमस्कार हो. " १

मूढ अने तत्त्वज्ञानी—बंनेने उदर भरवुं, ते सरखुं छे; पण मूढ अने अमूढ—तत्त्वज्ञानीनी वच्चे केटलो अंतर छे ? ते जुवो. मूढ पुरुषने नरकनां दुःख प्राप्त थाय छे अने अमूढ—तत्त्वज्ञानीने शाश्वत सुख मळे छे; एटलो अंतर छे. " २



चार शिक्षाव्रत.

वारंवार प्रवृत्ति जेमां छे, ते शिक्षा कहेवाय छे अने ते शिक्षा जेमां प्रधान छे एवुं जे व्रत ते शिक्षाव्रत कहेवाय छे. जेम विद्याना शिक्षक वर्ग वारंवार अभ्यास कराय छे, तेम श्रावके आ व्रतोनो अभ्यास वारंवार करवा योग्य छे.

प्रथम सामायिक व्रत.

चार शिक्षा व्रतोमां प्रथम सामायिक व्रत कहेवाय छे. सम एटले राग द्वेष रहितपणुं, तेनो आय एटले लाभ ते समाय कहेवाय छे. जे क्रिया—अनुष्ठान करवुं प्रयोजन एटले जे क्रिया—अनुष्ठान करवाथी समायनी प्राप्ति थाय ते सामायिक कहेवाय छे. ते रुपव्रत ते पेहेलुं सामायिक नामे शिक्षाव्रत छे. तेने माटे आ प्रमाणे कह्युं छे—

" सामाइय मिह पढमं सावज्जो जत्थ वज्जिओ जोगे ।
समणाणं होइ समो, देसेणं देसविरओवि " ॥१॥

" अहिं जे सामायिक नामे पेहेलुं शिक्षाव्रत करवाथी देशविरति श्रावक पण सावद्य एवा मन, वचन अने कायाना व्यापारने वर्जीने सर्वविरति मुनिसदृश थाय छे. " १

अहिं प्रश्न करे छे के, ते देशविरति सर्वविरति शी रीते थाय ? देशे करीने एटले देश दृष्टांते करीने. जेम चंद्रमुखी स्त्री, समुद्र जेवुं तळाव; नहीं तो साधु अने श्रावक वच्चे मोटो अंतर जे छे ते देखाय छे. उत्कृष्ट द्वादशांगीना अभ्यासी ते साधु अने श्रावक तो षट् जीवनिकाय नामना दश वैकालिकना अध्ययन सुधीनो अभ्यासी होय छे. साधु उत्कृष्टपणे सर्वार्थसिद्धि विमानमां उपजे छे अने श्रावक बारमा देवलोक सुधी उपजे छे. साधुओने काल धर्म पाम्या पछी देवगति अने मोक्षगति ए बे गतिओ छे अने श्रावकने एकली देवगति छे वळी साधु फक्त संज्वलनना चार कषायवाला होय छे अथवा निष्कषायी पण होय छे. अने श्रावक तो आठ कषायवाला एटले प्रत्याख्यानी अने संज्वलनी होय छे. साधुओ एकी साथे पंच महाव्रतना अंगिकारी छे अने श्रावक तो थोडा अथवा समस्तना पण इच्छा प्रमाण अंगीकारी छे. साधुओने एक वार अंगीकार करेलुं सामायिक व्रत जावजीव पर्यंत रहे छे अने श्रावकने तो ते सामायिक व्रत वारंवार अंगीकार कराय छे साधुने एक व्रतनो भंग थतां सर्व व्रतनो भंग थाय छे, कारणके मांहोमांही तेनुं सापेक्षपणुं छे अने श्रावकने तेम नथी. तेथी आ सामायिक क्यां करवुं ? एवी शंका थतां तेनो उत्तर आ प्रमाणे छे—

"मुनेः समीपे जिनमंदीरे वा, गृहेऽथवा यत्र निराकुलः स्यात् ।
सामायिकं तत्र करोति गेही, सुगुप्ति युक्तः समितश्च सम्यक्" ॥१॥

" गृहस्थ मुनिनी समीपे, अथवा जिनमंदिरमां, घेर अथवा ज्यां निराकुलपणे रहेवाय त्यां त्रण गुप्ति अने पांच समिति साथे सामायिक करे छे. " १

अहिं सामायिक करनारे लोक जिनमंदिरमां सामायिक करवुं योग्य छे कारणके, तेमां सम्यक् प्रकारे समाधि प्राप्त थाय छे, माटे तेनुं ग्रहण प्रथम करवुं जोइए. परंतु अहिं मुनिनी समीपे सामायिक करवानुं प्रथम कहेल छे; तेनुं कारण ए छे के, मुनिनी पासे धर्म वार्ता वगेरे सांभळवाथी विशेष लाभ थाय छे माटे तेनुं प्रथम ग्रहण करेल छे. वळी जे गृहादिकने विषे सामायिक करे तेणे पण समिति तथा गुप्ति सहित गुरु समीपे आवीने ते गुरुनी साक्षी पूर्वक सामायिक उच्चरे. आ विधि अल्प ऋद्धि श्रावकने माटे छे. बहु ऋद्धिवाळा श्रावकनो विधि तो आ प्रमाणे छे. जे महर्द्धिक राजादि छे, ते प्रथम साधुनी पासे आवी ते

पछी सामायिक उच्चरे. जो तेम न होय तो जेणे सामायिक करी छे एवो श्रावक समृद्धिमान् राजादिक श्रावकनी पाछळ चालतां तेने योद्धाओ अने घोडाओथी आरंभनो प्रसंग आवे छे. आ विषे विशेष विवेचन करवाथी बस छे. ते विषे वधारे जाणवुं होय तो आवश्यक चूर्णी ग्रंथ जोइ लेवो.

सामायिक लेनाराओनुं कृत्य.

सामायिक ग्रहण करनाराए केवी रीते वर्त्तवुं जोइए ? ते प्रथम जाणवानुं छे. सामायिकमां रहेला पुरुषे श्रेष्ट एवा सिध्धांतना अर्थो पुछवा. अने महात्मा पुरुषोनां चरित्रोने संभारवां. तेमज तेणे आलस, निद्रा, विकथा वगेरे दोषोने वर्जी देवा. हृदय शुद्ध अने दयामय राखवुं. तेने माटे आ प्रमाणे कह्युं छे.

" सामायिकस्थः प्रवरागमार्थं पृच्छेन्महात्माचरितं स्मरेच्च ।
आलस्य निद्रा विकथादि दोषान् विवर्जयेच्छुध्दमना दयालुः ॥१॥

आलस्य प्रमुख दोषो कहे छे.

कायाना बार दोषो.

१ आलस, २ निद्रा, ३ पलोंठी वालवी, ४ अस्थिर आसन, ५ दृष्टिनुं परावर्त्तन, ६ बीजा कार्यमां प्रवृत्ति, ७ भींत प्रमुखनुं ओठीगण, ८ अंगनुं अति गोपन, ९ देहनो मल उतारवो, १० आंगळी वगेरे मोडवा, ११ विश्रामण (लांबा पग करी बेठवुं) अने १२ खुजली खणवी.

वचनना दश दोषो.

१ कुवचन, २ अविचारी वचन, ३ प्रतिघात वचन, ४ बडबडवुं, ५ स्तुतिवचन अथवा परिचय वचन, ६ कलह, ७ विकथा, ८ उपहास वचन, ९ शीघ्र वचन अने १० जवा आववानुं कथन–ए दश वचनना दोष छे.

मनना दश दोष.

१ अविवेक, २ यश–कीर्त्तिनी अभिलाषा, ३ लाभार्थीपणुं, ४ अहंकार,

५ जय, ६ नियाणुं, ७ फलनो संशय, ८ क्रोध, ९ अविनय, अने १० भक्ति-शून्यपणुं–ए दश मनना दोष छे.

एवी रीते सर्व मळीने बत्रीश प्रकारना दोषो सामायिकने विषे वर्जवा. वळी कयुं छे के,

"गृहीत्रस स्थावरजंतुराशिषु, सदैव तप्तायसगोलकोपमः ।
सामायिकावस्थित एष निश्चितं, मुहूर्त्तमात्रं भवतीह तत्सखः"॥१॥

"गृहस्थ त्रस तथा स्थावर जीवोनी राशिने विषे हंमेशा तपेला लोढाना गोळा जेवो छे; पण ज्यारे ते सामायिकमां रहे छे, त्यारे मुहूर्त्त मात्र—ते घरी निश्चये करी तेमनो सखा—मित्र तुल्य छे." १

अहिं मित्र तुल्य शामाटे कह्यो ? तेणे सामायिकमां सर्व आरंभनो त्याग कर्यो छे. वळी अहिं सावद्य योगना पच्चखाणरूप सामायिकनुं जे मुहूर्त्तनुं प्रमाण ते सिद्धांतमां कहेलुं नथी पण जाणी लेवुं ; कारण के पच्चखाणनो काळ पण जघन्यपणे नवकार सहित पच्चखाणनी जेम मुहूर्त्त मात्रनो छे.वळी सामायिकनुं जघन्य अंतर्मुहूर्त्त प्रमाण छे अने उत्कृष्ट एक अहोरात्रनुं मान छे एम जाणवुं. ते वात दृष्टांतथी सिद्ध करे छे.

"सदैव सामायिकशुद्धवृत्तिर्मानेऽपमानेऽपि समानभावः ।
मुनीश्वरः श्रीदमदंतसंज्ञो बभूव सद्भूतसमृद्धिभोगी"॥१॥

"सदाकाळ सामायिकने विषे जेनी शुद्ध वृत्ति छे अने जे मान तथा अपमानने विषे समान भाववाळा छे एवा श्री दमदंत नामे मुनीश्वर सम्यक्रूपवाळी समृद्धिना भोगी थया हता." १

सामायिकमां रहेनारो पुरुष केवो होय छे ? ते कहे छे.

" निंदपसंसासु समो, समो अ माणावमाणकारिसु ।
सम सयणपरयण मणो, सामाइयसंगओ जीवो" ॥१॥

सामायिकमां रहेलो पुरुष निंदा अने प्रशंसा अने मान तथा अपमानने विषे समान तेमज स्वजन अने परिजनने विषे समान एवो होय छे." १

ते विषे दमदंत महर्षिनुं वृत्तांत.

हस्तिशीर्ष नगरमां दमदंत नामे एक राजा हतो. तेनी पासे घणी उत्कट सेना हती. ते सुखे करीने राज्य करतो हतो. ते समयमां हस्तिनापुर नगरमां पांडवो अने कौरवो राज्य करता हता. एक वखते राजा दमदंतने ते पांडवो अने कौरवोनी साथे राज्यना सीमाडानो मोटो कलह उत्पन्न थयो. ते पछी एक दिवस दमदंत राजा जरासंध राजाना पुत्रनी सेवा अर्थे गयो हतो. ते प्रसंगनो लाग जोइ कौरवो अने पांडवोए पाछळथी आवी दमदंतना देशनो भंग कर्यो. आ खबर जाणी राजा दमदंतने भारे क्रोध उत्पन्न थयो. तत्काल ते मोटुं सैन्य लइने हस्तिनापुर उपर चडी आव्यो. त्यां ते बंनेनी वच्चे मांहोमांही मोटुं युद्ध थयुं. दैवयोगे पांडवो अने कौरवो दमदंतथी भागी गया अने दमदंतनो जय थयो. राजा दमदंत विजयनो डंको वगाडतो पोताना नगरमां आव्यो.

ते पछी केटलोक काल निर्गमन थया पछी एक वखते राजा दमदंत संध्याकाले पोताना मेहेल उपर आकाश तरफ जोता हता, तेवामां पंचरंगी वादळांओ तेमना जोवामां आव्यां. तेओने क्षणवारमां वीखराइ गयेलां जोइ तेमना हृदयमां वैराग्य भावना प्रगट थइ आवी. तेमणे आ संसारना क्षणिक स्वरूपनो विचार कर्यो. प्रत्येकबुद्धपणाथी तेणे सर्व संसारने असार जोइ तत्काल दीक्षा ग्रहण करी राजा दमदंत त्यांथी विहार करी चाली नीकल्या. गामोगाम विहार करतां तेओ हस्तिनापुरनी पासे आव्या. त्यां ते नगरना दरवाजा पासे तेओ कायोत्सर्ग ध्याने रह्या. तेवामां पांडवो राजवाडीए जवा नीकळ्या. ते वखते ते मुनि तेमना जोवामां आव्या. पांडवोए पोताना सेवकोने पुछ्युं के, " आ मुनि कोण छे " ? सेवकोए तपास करीने कह्युं, " ते दमदंत राजर्षि छे. " ते सांभळतांज पांडवो तत्काल अश्व उपरथी नीचे उतरी त्यां आव्या अने ते महर्षिने त्रण प्रदक्षिणा करी नमन कर्युं अने तेमना उभय प्रकारना बळनी प्रशंसा करी त्यांथी आगळ चाल्या.

क्षणवार पछी ते मार्गे कौरवो नीकळ्या. तेओमांथी वृद्ध एवा दुर्योधने ते मुनिने जोइ सेवक पासे तपास करावी. सेवके दमदंत मुनिनुं नाम आप्युं, एटले दुर्योधने कह्युं के, अरे ! आतो आपणो शत्रु छे. तेनुं मुख पण जोवुं योग्य

नथी. इत्यादि दुर्वाक्योथी मुनिनो तिरस्कार करी ते साधु तरफ एक बीजोराना फळनो घा करी तेओ आगळ चालता थया. ते पछी ते कौरवोनी पाछळ चालता तेमना सैनिकोए " यथा राजा तथा प्रजा " ए कहेवत प्रमाणे लाकडा, धूळ, अने पाषाण वगेरे ते मुनि तरफ फेंक्या, जेथी करीने ते मुनिनी समीपे जाणे मोटो चोरो होय, तेवो एक ढगलो थइ गयो.

पांडवो स्वेच्छा प्रमाणे वनमां क्रीडा करी पाछा फर्या, तेवामां तेमणे ते मुनिनी पासे मोटो पाषाण वगेरेनो ढगलो जोयो. ते विषे लोकोने पुछतां तेवुं काम कौरवोए कर्युं छे, एम तेमना जाणवामां आवतां खेद पामी तेमणे ते पाषाण वगेरेना ढगलाने त्यांथी दूर करी दीधो अने पछी ते दमदंत महर्षिने विधि पूर्वक वंदना करी पछी पोताने स्थाने चाल्या गया हता.

आवी रीते पांडवोए सत्कार कोलो अने कौरवोए अपमान करेला पण ते दमदंत मुनिए ते बंनेनी उपर समभावने धारण कर्यो हतो. कोइनी उपर राग के द्वेष राख्यो न हतो. ते पछी चिरकाल पर्यंत चारित्रनी आराधना करी ते महा मुनि प्रांते उत्तम गतिना भाजन थया हता.

आ दमदंत महर्षिनी कथा जाणी दरेक आत्मिक गुणना इच्छक पुरुषोए स्थिर परिणामे सामायिक आचरवुं. अहिं आ प्रमाणे भावना छे.

" धन्ना ते जिय लोए जावज्जीवं करंति जे समणा ।
सामाइय विसुद्धं निच्चं एवं विचिंतिज्जा ॥ १ ॥
कइआणु अहं दिक्खं जावज्जीवं जहट्ठिअ समणो ।
निस्संगो विहरिस्सं, एवं च मणेण चिंतिज्जा " ॥ २ ॥

" जेओ निरंतर निर्मळ एवुं सामायिक जावजीव सुधी करे छे, तेमने धन्य छे. आ प्रकारे चिंतववुं. " १

" क्यारे हुं दीक्षा लइश ? अने जावजीव सुधी साधुओना समुदायमां रहीने निःसंगपणे क्यारे विचरीश. आ प्रमाणे मनथी चिंतववुं. " २

आ प्रकारे प्रथम शिक्षाव्रत समजवुं.

देशावकाशिक नामे बीजुं शिक्षाव्रत.

मोकला नियमोने संक्षिप्त विभागे करी, एटले देशथी अवकाश एटले छूट राखवी ते देशावकाशिक अने तेथी रचायलुं व्रत ते देशावकाशिक नामे बीजुं शिक्षाव्रत कहेवाय छे. अने बार व्रतोनी गणनामां ते दशमुं व्रत कहेवाय छे. कहेवानो नावार्थ एवो छे के, व्रत अंगीकार करती वखते यावज्जीवित ग्रहण करेला दिग्व्रतने, प्राणातिपातादिक विरमणनो अने बीजा सर्व व्रतोनो प्रतिदिन जे संक्षेप कराय छे, ते देशावकाशिक व्रत जाणवुं. तेने माटे एज नावार्थमां आ प्रमाणे लखे छे.

" पुव्वं गहिअस्स दिसा—वयस्स सव्व वयाणुदिणं ।
जो संखेवो देसा—वगासियं तं वयं विइयं " ॥ १ ॥

आहिं वृष्ट पुरुषो कहेछे के, दिग्व्रतनो जे संक्षेप करवो ते बीजा व्रतोनो संक्षेप करवा बावत उपलक्षणथी जाणी लेवुं ; एटले तेमां बीजा व्रतोनो संक्षेप पण आवश्यक छे. वळी दरेक व्रत प्रत्ये दिवस, अने पक्षादिक मर्यादा करीने संक्षेप करवाथी भिन्न व्रत होवाथी जे बार व्रतोनी संख्या छे तेमां विरोध आवे; ए प्रकारे जाणवुं के, देशावकाशिक व्रतमां दिग्व्रतनोज विषय छे, तेथी ए शंका दूर करवी. वळी कहुं छे के,

" दिसिवयगहियस्स दिसापरिमाणस्स पइदिणं
परिमाण करणं देसावगासियंति "—

" दिशिव्रत ग्रहण करेलुं होय तेने प्रतिदिवस दिशानुं परिमाण करवुं ते देशावकाशिक छे. ए मूल सूत्रमां दर्शावेलुं छे. अने जे आ व्याख्या करवामां आवी छे, ते उपलक्षणथी छे. वळी अवचूर्णी कहे छे के,

" एवं सव्ववएसु जे पमाणा ठविया ते पुणो पुणो
दिवसओ उसारेइ देवसिआओ रत्तिओ सारे "

ए प्रकारे सर्व व्रतोमां जे जे परिमाण करेलुं होय ते वारंवार दिवसे संक्षेपे अने दिवसनुं रात्रिए संक्षेपे. "

आ व्रत उपर दृष्टांत कहे छे. जेने नरकावास नजीक छे, एवो क्रूरमति चमकौशिक सर्प देशावकाशिक व्रतवमे तत्काल आठमे देवलोके गयो हतो.

चंडकौशिकनी कथा.

कोइ क्षपक (तापस) मुनि मासोपवासना पारणाने दिवसे शिष्य सहित आहारने माटे मार्गमां जता हता. तेवामां तेमना चरणना तल नीचे एक देमकी चंपाइ गइ. ते वखते शिष्ये कह्युं, "स्वामिन्, तमोए आ देमकी चगदी नांखी, माटे मिथ्या दुष्कृत आपो." शिष्यना आवा वचनो सांभळी ते मुनिने कषाय उत्पन्न थइ आव्यो. तेथी ते क्षपक तापसे ते मर्दन करेली देमकी लोकोने बतावीने शिष्यने कह्युं के अरे दुष्टात्मा, आ देमकीतो मरण पामी गइ, शुं ते में हणी?" त्यारे ते शिष्य गुरुने क्रोधायमान थयेला जाणी मौन धरीने रह्यो, कांइपण बोल्यो नहीं. पछी संध्या समये आलोचना करती वखते ते शिष्ये मुनिने ते देमकीनी वात संचारी आपी. ते वखते मुनिने विशेष क्रोध उत्पन्न थइ आव्यो, तत्काल रजोहरण उपामीने मुनि शिष्यने मारवा दोड्या. तेवामां वचमां एक स्तंभ आव्यो, तेनी साथे मुनिनुं मस्तक अफळायुं, अने फुटी गयुं, तेथी ते मुनि कालधर्मने पामी गया. मृत्यु पामीने ज्योतिषी देवमां उत्पन्न थया. त्यांथी चवीने ते कनकखल नामना वनने विषे चंमकौशिक नामे तापस थयो. ते भवमां पण पूर्व भवना परिचयथी ते घणोज कषायवान् थयो. एक वखते कोइ राजकुमारो तेना वनमां फलादिक लेवाने आव्या. तेमने जोतांज ते तापस कुहामो लइ तेमने हणवाने पाछळ दोड्यो. दोडतां दोमतां तेने पगे स्खलना थतां ते कोइ खामामां पमी मृत्यु पामी गयो. पछी तेज आश्रममां दृष्टिविष सर्परूपे उत्पन्न थयो. ते वनमां पूर्वभवना अभ्यासथी ते अति मूर्छा—मोह पामी कोइ पण मनुष्यनो संचार थवा देतो नहीं.

एक दिवसे श्रीवीर भगवान् छद्मस्थावस्थामां विद्यमान होइ विचरता विचरता ते वनमां आवी चड्या. त्यां जतां तेमने गोवालीआ लोकोए वार्या, पण तेओ ध्यान धारी ते दृष्टिविष सर्पना बिलपासे कायोत्सर्ग करीने रह्या. ते वखते ते सर्प पोताना बीलमांथी बाहेर नीकळ्यो प्रभुने जोतांज तेनामां उग्र कषाय उत्पन्न थइ आव्यो. तत्काल कषायना आवेशथी तेणे प्रभुना शरीर उपर मंश मार्यो.

वज्रना स्तंभनी जेम अचल एवा श्री वीर भगवान्‌ना शरीरमांथी दूधना जेवा उज्ज्वल रुधिरनी धारा नीकली. ते जोतांज ते सर्पना मनमां आश्चर्य उत्पन्न थइ आव्युं. तत्काल प्रभुना स्वरूपनुं चिंतवन करतां तेने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थइ आव्युं. पोताना पूर्व भवो तेना जोवामां आव्या. तत्काल ते निर्विष थइ प्रभुने प्रदक्षिणा फरी अने नमन करी सामे ऊभो रह्यो. पछी पोते करेल जीवहिंसादि अकृत्यने आलोची अनशन व्रत ग्रहण कर्युं. ते पछी, " मारी दृष्टिथी कोइ प्राणीने भय न थाओ. " एम विचारी तेणे देशावकाशिक व्रत अंगीकार कर्युं. पछी ते पोतानुं मुख बीलमां राखीने रह्यो हतो. आ सर्पनो वृत्तांत सांभळी गोवालीआओए आवी मांखणथी तेनी पूजा करी. ते मांखणना गंधथी कीडीओ आवी ते सर्पना शरीरने वळगी पडी अने तेना आखा शरीरने छिद्रवालुं करी दीधुं. तथापि ते चंडकौशिक सर्प मन अने काया वडे निश्चल रह्यो हतो. तेवी रीते अनशन व्रत पाली मृत्यु पामी आठमा सहस्रार नामना देवलोकमां महार्द्धिक देवता थयो हतो. एवी रीते दशमा देशावकाशिक व्रत उपर चंडकौशिक सर्पनी कथा कहेवाय छे. एवी रीते बीजा पण संसारभीरु प्राणीओए ए व्रतने पालवामां उद्यमवंत थवुं.

तेनी भावना कहे छे—

" सव्वे अ सव्व संगेहिं, वज्जिए साहूणो नमंसिज्जा ।
सव्वेहिं जे हिं सव्वं सावज्जं सव्वहा चत्तं " ॥१॥

ए प्रमाणे दशमुं व्रत अने बीजुं शिक्षा व्रत कहेवामां आव्युं.

त्रीजुं शिक्षाव्रत पोषधव्रत.

धर्मनी पुष्टि करे ते पोषध कहेवाय छे. तेने आचरनारुं व्रत ते पोषध व्रत कहेवाय छे एटले पर्वने दिवसे अनुष्ठान करवानो जे व्यापार ते रूप जे व्रत ते पोषधव्रत कहेवाय छे. ते आ प्रमाणे—

" आहार देह सक्कार—गेह वावार विरइ बंभेहिं
पव्वदिणाणुट्ठाणं, तइयं पोसहवयं चउहा " ॥ १ ॥

"आहार, देह सत्कार, तथा गृहना व्यापारनी विरति अने ब्रह्मचर्य ए चार प्रकारे जे पर्वना दिवसनुं अनुष्ठान ते श्रीजुं चार प्रकारनुं पोपधव्रत कहेवाय छे." १

वळि आहिं जे निवृत्ति शब्द छे, ते आहार, देह अने सत्कार अने गृह-व्यापारनी साथे राखवो. एटले आहारनी निवृत्ति, शरीर सत्कारनी निवृत्ति अने घरना व्यापारनी निवृत्ति—एम समजवुं. अने ब्रह्मचर्यनुं पालन करवानुं छे.

१ आहारनी निवृत्तिमां अशनादि आहारनो विशेषे करी त्याग समजवो.

२ शरीर सत्कार निवृत्तिमां स्नान, उद्धर्त्तन (शरीरे तेलादि चोळवुं) अने विलेपन वगेरेनो त्याग समजवो.

३ गृह व्यापारनी निवृत्ति, एटले घरना व्यापारनो निषेध समजवो.

४ ब्रह्मचर्य एटले स्त्री सेवा (संग)नो निषेध, आहिं वळी आहार निवृत्ति पोपध वे प्रकारे कहेलुं छे. एक देश थकी अने बीजुं सर्व थकी. त्रिविध आहारनुं पच्चखाण करनारने देशथकी पोपध होय छे अने चतुर्विध आहारना पच्चखाण करनारने सर्व थकी पच्चखाण होय छे. ते शिवायना बाकीना जेदोतो सर्व थकीज छे. तेने माटे आवो पाठ छे.

" करेमि जंते पोसहं आहार पोसहं देसओ,
सव्वओ वा, शरीरसक्कार पोसहं
सव्वओ, अव्वावारपोसहं सव्वओ, बंजचेर पोसहं सव्वओ,
चउव्विहे पोसहे सावज्जं जोगं पच्चखामि जावदिवसं
अहोरत्तिं वा पज्जुवासामि डुविहं तिविहेणमित्यादि"॥१॥

बीजे ठेकाणे बीजी रीते पण कहेलुं छे.

आ चार प्रकारनुं पोपधव्रत देश अने सर्व एम बे प्रकारे थाय छे.

१ तेमां देशथी आहार पोपध–विगय वगेरेनो त्याग अने एक वार बेवार

अन करवुं ते अने सर्वथी आहार पोषध चतुर्विध आहारनो त्याग करवो ते.

२—३ देह सत्कार अने गृह व्यापार पोषधने विषे कांइक देह सत्कार ते गृह व्यापार करवो ते. थोडुं करवुं ते देशथकी अने सर्वथा न करवुं ते सर्व थकी.

४ ब्रह्मचर्य पोषधमां ब्रह्मचर्यनुं प्रमाण करवुं ए देशथकी अने ब्रह्मचर्य थी पालवुं, ए सर्व थकी.

अहिं आ प्रमाणे समाचारी छे—

" जो देस पोसहं करेइ सो सामाइ करेइ वा नवा.
जो सव्व पोसहं करेइ सो नियमा सामाइयं करेइ,
जइ न करेइ तो वंचिज्जइ, तं कहं ? चेइघरे साहुमूले
घरे वा पोसहसालाए वा उमुक्कमणिसुवणो पढंतो
पुच्छंगं वा वायंतो सुणंतो धम्मझाणं झियाइत्ति "

अहिं तत्त्व शुं छे ? ते तो केवली जाणे.

जे देश पोषध छे, ते सामायिक करे अथवा न करे अने जे सर्व पोषध रे ते तो नियमा सामायिक करे. जो सर्व पोषधवालो सामायिक न करे तो ते लाजथी ठगाय छे. ते क्यां करे ? तेने माटे कहे छे के, चैत्यगृहे, साधु पासे पोताने घेर अथवा पोषधशालामां करे. जेणे मणि सुवर्ण वगेरेनो त्याग करेलो छे एवो ते जणतो, गणतो, पुछतो, वाचना लेतो, अने धर्म सांभळतो धर्मध्याननेध्यावे."

हवे पूर्वे जे कह्युं छे के, पोषध " पर्व दिवसना अनुष्ठाननो व्यापार छे, तेथी पर्व शुं ते कहे छे—चौदश, आठम, अमावास्या, पुनम एटली तिथिओना दिवसो, उपलक्षणथी कल्याणकना दिवसो अने पर्युषणा पर्व—ए दिवसोमां पापनो व्यापार मुकीने पंडित पुरुषो पोषध व्रतने करे.

अहिं नामथी पर्वतिथिओ चार छे पण वस्तुताथी छ छे. एक मासे बे आठम, बे चउदश, अमावास्या अने पुनम—एम छ थाय छे.

अहिं प्रश्न करे छे के, " श्रावक पर्व तिथिने दिवसेज पौषध करे ते शि-

वास न करे ?" तेना उत्तरमां कहे छे के, केटलाएक श्रावको सर्व तिथिओने विषे पोषध करे छे, परंतु केटलाएक तेम न करी शके त्यारे तेमणे पर्व तिथिने विषे ते व्रत अवश्य करवुं, तेथीज अहिं पर्वनुं ग्रहण करेलुं छे. आवश्यक वृत्तिने विषेतो श्रावके दररोज पोषध करवानो स्पष्ट रीते निषेध करेलो छे. तत्त्व शुं छे ? ते तो केवलिगम्य छे.

हवे पोषधमां सर्व आहार—त्याग करवो दुष्कर छे, पण ते करवानुं घणुं पुण्य छे, माटे ते अवश्य करवो जोइए. तेने माटे कहुं छे के,

" नृप निग्रह रोगादिषु, न ह्यशनाद्यं न धर्ममपि लभसे ।
तत् किं प्रमाद्यसि स्वयं त्वधर्मे पोषधे भव्य " ॥ १ ॥

" हे भव्य, राजा ए निरोध कर्यो होय, कोइ रोग थइ पड्यो होय इत्यादि[1] प्रसंगे अशनादि थतुं नथी, परंतु तेवा अनशनथी तने धर्मनी प्राप्ति थती नथी ; तो जेमां अवश्य धर्म प्राप्त थाय छे, एवुं पोषधव्रत लेवामां शा माटे प्रमाद करे छे ?" १

आ व्रत उपर दृष्टांत आपे छे.

"यः पोषधस्थः सुतरां सुरेण, पिशाचनागोरग दुष्टरूपैः ।
विक्षोभितोऽपि क्षुभितो न किंचित्,
स कामदेवो नहि कस्यवर्ण्यः" ॥ १ ॥

"जे कामदेव नामना श्रावकने पोषधव्रतमां रहेलां छतां कोइ देवताए पिशाच, हाथी अने सर्प वगेरेना दुष्टरूपोथी निरंतर क्षोभ पमाड्यो तो पण ते जरापण क्षोभ पाम्यो नहीं, ते कामदेव श्रावक कोने वर्णनीय न होय ?" १

ते कामदेव श्रावकनी कथा आगळ कहेवामां आवशे.

तेनी अहिं आ प्रमाणे भावना छे.

" उग्गं तप्पंति तवं, जे एएसिं नमो सुसाहूणं ।

---

१ इत्यादि शब्दथी वरणक अने दुकाळ वगेरे पड्यो होय त्यारे एम लेवुं.

निस्संगा य सरीरे,वि सावगो चिंतएमिइमं " ॥ १ ॥

" जे उग्रतप तपे छे अने जे शरीरने विषे निःसंग छे, एवा सुसाधुने नमस्कार थाओ. " आ प्रमाणे श्रावक मनमां चिंतवे. " १

एवी रीते त्रीजुं पोषध नामे शिक्षाव्रत कहेवामां आव्युं.

चोथुं अतिथि संविभाग नामे शिक्षाव्रत.

जेने तिथिपर्वादि लोक व्यवहार नथी, ते अतिथि कहेवाय छे. तेवा अतिथिने जे शुद्ध आहार वगेरे आपवारूप व्रत ते अतिथि संविभाग व्रत कहेवाय छे. केटलाएक आ व्रतने यथासंविभाग एवा नामथी कहे छे. ते नाम प्रमाणे आ प्रमाणे अर्थ करवो. यथा एटले प्रवृत्ति अर्थात् यथाप्रवृत्ति स्वभावे निष्पन्न थयेल जे आहारदिक ते साधु प्रमुखनें आपवा ते यथासंविभाग कहेवाय छे. एवो व्युत्पत्त्यर्थ छे.

गृहस्थ पोषधने पारणे परम विनयपूर्वक गुरुने जे शुध्ध अशनादिक आपे ते चोथुं शिक्षाव्रत कहेवाय छे. आ स्थले उपयोगि होवाथी चूर्णीमांथी केटलुंएक आपवामां आवे छे—

"पोसहं पारंतेणं साहूणं अदाउं न वट्टई, पारेइत्त सव्वं साहूणं दाउं पच्छा पारेयव्वं । काहे विहीए दायव्वं ? जाहे देसकालो ताहे अप्पणो सव्वं सरीरस्स विभूसं काऊणं साहू पडिस्सयगओ निमंतेइ भिक्खं गिण्हवत्ति साहुणं का पडिवत्ति ! । ता हे अन्नोपडलगं अन्नो भायणं पडिलेहेइ,मा अंतराइ अदोसा ठविअगाइ दोसाय भविस्संति. सो जइ पढमाइ पोरिसिए निमंतेइ अत्थिय नमोकारइत्ता ताहेघिप्पइ जंइ नत्थि ताहे न घिप्पइ । तं धरिअव्वयं होहि. इसो घणं लगिज्जा ताहेघिप्पइ सचिक्का विज्जइ जो वा उग्घाड पोरिसीए पारेइ पारणगइत्तो अन्नो वा तस्स विसाज्जिज्जए तेण सावएण सह गम्मइ संघाडओ

वच्चइ एगो न वच्चइ. साहु पुरओ सावगो पच्छओ घरं नेऊण आसणेण निमंतिज्जा, जइवि न निविट्टो विणओ पउत्तो ताहे जत्तपाणं सयं देहि अहवा जायणं धरेइ जज्जा देइ अहवा ठिओ अच्छइ जाव दिणं सेसं च गिण्हिअव्वं पच्छा कम्माइ परिहरणट्ठा दाऊणं वंदित्ता विसज्जेइ अणुगच्छिअ पच्छासयं भुंजइ. जं च किर साहुणं न दिन्नं तं सावएण न भुत्तव्वं जहि पुण साहूनत्थि तत्थ देसकाल वेलाए दिसावलोओ कायव्वो विसुद्धेणं भावेणं जइ साहूणो हुं तो तो नित्थरिओ तोत्ति " ॥

" पोषध पारीने साधुने वहोराव्या वगर पारणुं करवुं कल्पतुं नथी, माटे साधुने दान दइ पछी पारणुं करवुं योग्य छे. हवे क्यारे अने कइ विधिए करवुं ते कहे छे—देश कालने अनुसारे पोताना शरीरने विभूषित करी अर्थात् शृंगार करी साधु उतर्या होय ते स्थान (उपाश्रय) मां जइ साधुने आहारनी विनंति करे. ते वखते साधु शुं करे ते कहे छे—कोइ पमला कोइ पात्र विगेरे जुदां जुदां पमिलेहे जेथी वखत नही लागवाथी अंतराय दोष तथा स्थापना दोष लागे नहि. जो विनंति करनार पहेली पोरिसिमां विनंति करे अने कोइ साधुने नमुकारसहिलुं पच्चखाण होय तो ग्रहण करे अने जो न होय तो ग्रहण न करे, जेथी आहार राखी मूकवो न पमे ! जो श्रावक घणो पाछळ लागे तो ग्रहण करी साचवीने राखे, अथवा जे कोइ तपस्वी पारणा निमित्ते अथवा बीजो कोइ उग्यारुपोरिसिए पारे तेने आपे. आहार लेवा जती वखते एकलो साधु न जाय, परंतु संघाटक बे साधुओ जाय तेओ पण विनंति करनारनी साथेज जाय. तेमां पण साधु आगळ चाले अने श्रावक पाछळ चाले. आवी रीते घरे लइ जइ श्रावक आसननी निमंत्रणा करे. जो के साधु कारण विना बेसे नहि. तथापि पोताना तरफथी विनय कर्यो कहेवाय. पछी श्रावक पोते साधु महाराजने आहार पाणी वहोरावे अथवा श्रावक पोते पात्र धरे अने श्राविका वहोरावे, अथवा श्रावक पोते एक सर

उनो रहे अने स्त्री श्राविका विगेरे बीजा कोइ वहोरावे. साधु पण पश्चात् कर्मादि दोष वर्जवा निमित्ते जे चीज वहोरावे ते शेप बाकी राखीने ग्रहण करे. श्रावक शुध्ध भावथी दान दइ वंदना करी थोडे दूर गुरु महाराजने वळावी घरे आवी पोते आनंद पामतो जोजन करे. पण जे चीज साधुने दानमां न आपी होय ते श्रावके खावी न जोइए. जो नगरमां साधु न होय तो जोजनना स्थान अने काळमां दिशावलोकन करी मनमां शुध्ध भावना भावे के जो आ वखते साधु महाराज होतते मारो निस्तार थात." आथी करीने उत्तम श्रावके निरंतर साधुने दान देवुंज जोइए; पण अतिथि संविभाग व्रतनो उच्चार पर्वपोषधना पारणाने दिवसेज होय छे. तेने माटे आवश्यक वृत्तिमां कयुं छे के, पोषध अतिथि संविभाग तो प्रतिनियत दिवसे अनुष्ठेय छे, पण प्रतिदिवस अनुष्ठेय नथी. ते विषे बहु विस्तार करवाथी बस थयुं.

वळी सुश्रावके साधुने जे एषणीय आहारादिक आपवा, ते महालाभनुं कारण छे ; अने निर्वाह थता छतां अनेषणीय आहारादिक सर्वथा देवा नहीं; कारणके, ते अल्पआयुर्बंधादिकनुं कारण छे.

अहिं कोइ प्रश्न करे छे के "कुपात्रने विषे एषणीय आहारादिक देवाथी तथाप्रकारना गुण उत्पन्न थाय छे के नहीं ?" तेनो उत्तर आ प्रमाणे छे. कुपात्रने देवातुं एषणीय आहारादिक पण केवल पापनुंज कारण छे ; ते निर्जरानुं हेतु नथी. श्री भगवतीजीमां कयुं छे के, "श्रावक तथाप्रकारना असंयति, अविरति, तथा पाप कर्मना जेणे पच्चखाण कर्या नथी तेवा प्रत्ये फासु, अफासु, *एषणीय, अनेषणीय, असण, पाण, खाइम, अने साइमने प्रतिलाभतां (आ*पता) छतां शुं उपार्जन करे"? प्रभुए कयुं, "हे गौतम, ते एकांत पाप कर्म उपार्जे, पण तेने कांइ पण निर्जरा नथी. हवे एम छे तो श्रावकोए साधुशिवाय बीजे कोइ ठेकाणे दान आपवुं नहीं, एम थयुं. गुरु कहे छे. "एम नथी. आगमने विषे अनुकंपा दान निषेध्युं नथी". पूर्वाचार्योए कयुं छे के,

" जं मुक्खठा दाणं, तंपइ एसो विहि समक्खाओ ।
अणुकंपा दाणं पुण,जिणेहिं न कयावि पडिसिद्धं" ॥ १ ॥

" जे सुपात्र दानना लक्षणनो विधि कह्यो छे ते मोक्षने अर्थे करवामां

आवता दानने आश्रीने छे. पण जे कर्मनिर्जराने अणचींतवीनेज केवल कृपाए करीनेज देवाय ते अनुकंपा दान कहेवाय छे. ते कृपालु जिनभगवंते कोइ वखत पण निषेध्युं नथी. १ "

आ कारणने लइने श्रीराजप्रश्नीय उपांगमां प्रदेशीराजाने केशी गणधरे कह्युं छे के, " हे प्रदेशी, तुं पूर्वे रमणिक थइने अरमणिक न थइश. " ते उपरथी प्रदेशी राजाए पोताना देशना चार भाग करी, तेमां एक भागे दीन— अनाथादिकने माटे निरंतर दानशाला प्रवर्तावी हती; ते तेटला माटे प्रवर्तावी हती के, दानना त्यागथी जिनमतनी निंदा न थाओ. एटले जो ते बीजा दाननो तदन त्याग करे तो जिनमतनी निंदा थाय. तेथी ज्ञानी महाराजाए कोइ ठेकाणे अनुकंपा दान निषेध्युं नथी. जो वली जगद्गुरुए श्रावकोने सर्वे ठेकाणे दान करवानी आज्ञा न दीधी होत तो तुंगिका नगरीना श्रावकोना वर्णनना अधिकारमां कहेलुं छे के, "जेने विस्तारवंत—प्रचुर भात पाणी छे " इत्यादि विशेषणो आप्या छे, तेवा विशेषणो न आपतां केवल साधुदानमांज प्रचुर अन्न आपवुं एम कहेत, आ उपरथी निश्चय थयो के, कर्म निर्जराने माटे जे दान देवुं, ते साधुओनेज देवुं. साधुओने दान देवाथी कर्मनी निर्जरा थाय छे. अने जे अनुकंपा दान छे, ते बीजा सर्वने देवुं.

सुपात्र दानने माटे विशेष कहे छे.

" भयेनलोभेन परीक्षयावा, कारुण्यतोऽमर्पवशेन लोके ।
स्वकीर्त्ति प्रश्नार्थितया च दानं, नार्हति शुद्धा मुनयः
कदापि " ॥ १ ॥

" भयथी, लोभथी, परीक्षाथी, दयाथी, क्रोधने वश थवाथी, अने लोकोमां पोतानी कीर्त्ति प्रसरे तेवा हेतुथी अने प्रश्नना अर्थीपणाथी जे दान आपवुं, तेवा दानने शुद्ध मुनिओ कदि पण योग्य थता नथी. " १

१ भयथी एटले "आ लोकोने जो नहीं आपीए तो तेओ असत् करनार होइ मने शाप आपशे अथवा लोकोमां मारी विरुद्ध बोलशे"—आवा भयथी.

२ "लोभथी एटले दान आपवाथी आ जन्ममां अथवा अन्य जन्मने विषे

मने समृद्धि मळशे " एवा लोजथी.

३ परीक्षार्थी एटले " आ साधु निर्लोभी छे, एम सांभळ्युं छे ते आ दान लेशे के नहीं " एवी परीक्षा करवाना इरादाथी.

४ दयार्थी एटले " मारा आप्या शिवाय ए विचारानो शी रीते निर्वाह थशे." एवी करुणाथी.

५ अमर्षथी एटले " अमुक माणसे आप्युं, तो शुं हुं तेनाथी ओछो छुं, के न आपुं " एवा विचारथी.

६ पोतानी कीर्त्ति लोकोमां प्रसरे तेथी एटले " दान लेनारना अथवा मुखथी पोतानी प्रशंसा सांभळवानी इच्छाथी. "

७ प्रश्नना अर्थीपणाथी एटले " दानथी सत्कार करवाने लीधे ते मारा प्रश्नोनो ज्योतिष प्रमुखथी खुलासो करशे " एवी इच्छाथी.

ना कारणोथी शुद्ध मुनिओ लोकने विषे कदि पण दानने प्रर्थात् उपर कहेला सात कारणोने लइने मुनिओने दान नी निस्तार बुद्धिथी भक्तिवमेज दान देवुं योग्य छे.

पात्रने विषे दान आपनारा गृहस्थे पांच दूषणो वर्जवा अने धा-रण करवा.

पांच दूषणो.

" नादरो विलंबश्च, वैमुख्यं विप्रियं वचः ।
पश्चात्तापश्च पंचैते, सद्दानं दूषयंत्यहो " ॥ १ ॥

दान आपवामां अनादर करवो, आपतां विलंब करवो, मुख अवळुं क-अप्रिय वचन बोलवुं, अने आप्या पछी पश्चात्ताप करवो, ए पांच दानने दू-करे छे.

पांच भूषणो.

" आनंदाश्रूणि रोमांचो, बहुमानं प्रियं वचः ।
पात्रेऽनुमोदना चैवं, दानं भूषणपंचकम् " ॥ १ ॥

" दान आपतां आनंदना अश्रुओ आवे, शरीर रोमांचित थइ जाय, बहु मान करे, प्रिय वचन बोले अने पात्रनुं अनुमोदन करे, ए दानना पांच आभूषणो छे." १

सुपात्र दानना प्रस्तावमां जव्य प्राणीओए मनना परिणाम चडता राखवा. पंचक शेठनी पेठे हीन परिणामी थवुं नहीं.

पंचक शेठनी कथा.

कोल्लर नामना गामने विषे पंचक नामे एक व्यापारी शेठ रहेतो हतो. एक दिवसे कोइ ज्ञानी मुनि तेने घेर भिक्षा लेवाने अर्थे आव्या. ते वखते पंचक शेठ उल्लसित जाववमे ते मुनिने अखंड धारावमे घृतनुं दान आपवा तत्पर थया. घीनी धाराथी तेमनुं पात्र जरा जणुं रह्युं तोपण मुनिए ज्ञानना बलथी ते शेठना परिणामनी शुद्धिवमे घणो लाज्ञ जाणी तेना परिणामनो जंग न थाय, एवी बुद्धिथी, जेवामां मुनि ते शेठने दान आपता निषेधता नथी, तेवामां ते शेठना परिणाम चंचलताथी पतित थइ गया. तत्काल तेणे चिंतव्युं के, " अहो ! आ मुनि लोज्ञी लागे छे. पोते एकला छतां आटलाबधा घीने शुं करशे ? " आवुं चिंतवतांज तेना हाथमां घीनी धारा हळवे हळवे पमवा लागी एटले ते ज्ञानी मुनिए ज्ञानना बळथी तेना परिणाम जाणीने कह्युं,"हवे पमो नहि" पमो नहि त्यारे शेठे कह्युं,"स्वामी,हुं तो सारी रीते दृढताथी स्थिर रह्यो छुं,हुं लगारमात्रपण पडतो नथी, ते छतां तमे मृषा वचन केम बोलो छो ? " त्यारे मुनिए कह्युं, तुं द्रव्यथी पमतो नथी पण जावथी पड्यो छे. तने वधारे शुं कहेवुं ? पण बारमा देवलोकमां जवा योग्य एवा अध्यवसायथी पमीने तुं पेहेला देवलोकमां जवा योग्य एवा अध्यवसायमां आवी रहेलो छे."

मुनिना आ वचनो सांजळी ते पंचक शेठ अत्यंत पश्चात्ताप करवा लाग्यो. पछी मुनि तो पोताने स्थाने चाल्या गया.

एवी रीते पंचक शेठनी कथा छे.

दान कर्म उपर जावनुंज प्रधानपणुं छे, ए वात दृष्टांतथी देखामे छे. द्रव्यथी नहीं पण जाव शुद्धियीज दान आपनार जिनदत्त (जीरण) नामे शेठ

महान् लाजने पाम्यो हतो. अने पुरण नामे शेठ जावविना नगारा फलने पाम्यो हतो.

आगममां एम संजलाय छे के, "जिनदत्त शेठ प्रजुनो संयोग पामी द्रव्यथी दान न देतां छतां जावथी दान आपी महा लाजने प्राप्त थयो हतो अने पुरण शेठ द्रव्यथी दानने देतो पण जाव विना जिनदत्तनी पेठे महा लाजने पाम्यो नहि अर्थात् द्रव्य प्राप्तिरुप अल्प लाजनो ते जागी थयो हतो.

कथा.

एक दिवसे श्री वीरप्रजु छद्मस्थावस्थामां विचरता विचरता विशाळा नगरीनी बाहेर आवेला बलदेवना देहेरामां चार मास सुधी चतुर्विध आहारना पच्चखाण करी कायोत्सर्गे रह्या हता. ते नगरमां उत्कृष्टपणे जैन धर्ममां रक्त एवो जिनदत्त (जीर्ण) नामे शेठ रहेतो हतो. ते एक वखते बलदेवना मंदिरमां आवी चड्यो. त्यां श्री वीर प्रजुने जोइ वंदना करी ते पोताना मनमां आ प्रमाणे चिंतववा लाग्यो.—"आ स्वामीए उपवास करेल छे. ते स्वामी प्रातःकाले अवश्य पारणुं करशे ते वखते हुं आ प्रजुने पडिलाजीश.—तेमने आहार पाणी व्होरावीश." आ प्रमाणे ते दररोज ते प्रजु पासे आवतो अने आवी जावना जावतो हतो. तेम करतां पक्ष, मास व्यतीत थवा लाग्या, तेने गणतो ते शेठ निर्मल अध्यवसायवालो थतो हतो, तेम करतां चार मास व्यतीत थइ गया. चातुर्मास्यने अंते पारणाने दिवसे ते शेठ शुद्ध आहारनी सामग्री मेळवी बपोरे पोताना घरना द्वार उपर बेठो. प्रजुना आगमनना मार्गने जोतो ते आ प्रमाणे चिंतववा लाग्यो—"हमणां श्री वीर स्वामी अहिं पधारशे त्यारे हुं मस्तके अंजलि जोडी प्रजुनी सन्मुख जइ तेमने त्रण प्रदक्षिणा करी वंदना करी घरमां लइ जइश. त्यां जक्तिपूर्वक प्रधान प्राशुक अने एषणीय अन्न पानादिकथी प्रजुने पडिलाजीश, अने पारणुं करावीश. ते पछी प्रजुने नमी केटलांक डगलां प्रजुनी पाछळ जइश. त्यारबाद हुं मारा आत्माने धन्य मानी बाकी रहेल अन्नादिकनुं जक्षण करीश." आ प्रमाणे जीर्णशेठ जावनामयमनोरथो करता हता, तेवामां श्री वीर प्रजु जिक्षाने माटे विचरतां पुरण शेठना घरमां पेठा. ते पुरण शेठ मिथ्यात्वी हतो, तेथी तेणे दासीने हाथे प्रजुने अडदना

थाकळा देवराव्या. तत्काळ सत्पात्र दानना माहात्म्यथी देवताए त्यां पांच दिव्य प्रगट कर्यां. ते समये ते नगरनो राजा अने बीजा उत्तम लोको पुरण शेठने घेर एकठा थया अने ते शेठनी ज्यारे प्रशंसा करवा लाग्या. पछी श्री वीरप्रभु अरूदना बाकळाथी पारणुं करी त्यांथी विहार करी बीजे स्थळे चाल्या गया.

अहिं जीर्ण शेठ आकाशमां थता देवताना दुंदुभिना नादने सांजळी विचार करवा लाग्यो—"अहा ! मने निर्भागीने धिक्कार छे, हुं सर्व रीते अधन्य छुं, के श्री वीरप्रभु मारे घेर भिक्षा लेवाने पधार्या नहीं अने तेमणे बीजे ठेकाणे पारणुं कर्युं. मारा सर्व मनोरथो निष्फळ थइ गया." आ प्रमाणे ते शेठ अपशोच करवा लाग्यो.

आ अरसामां तेज दिवसे तेज नगरमां श्री पार्श्वनाथना संतानिक कोइ केवळज्ञानी मुनि महाराज समोसर्या. ते खबर जाणी राजा अने नगरना लोको तेमने वंदना करवाने गया. ते वखते राजाए ते केवळी जगवानने पुछ्युं, "स्वामी, अमारा नगरमां कयो जीव पुण्यवान् छे ?" "केवळी जगवाने कह्युं, राजा, आ नगरमां जीर्णशेठना जेवो कोइ पुण्यवान् नथी." राजाए कह्युं, "महाराज ते जीर्ण शेठे श्री वीरप्रभुने पारणुं कराव्युं नथी. परंतु पुरण शेठे पारणुं कराव्युं छे, तो ते पुरण शेठ तेनाथी पुण्यवान् केम नहीं ?" त्यारे केवळी जगवाने जीर्ण शेठनी जावनानुं स्वरूप मूळथी मांमीने कही संजळाव्युं. पछी विशेपमां कह्युं के, "पुरण शेठे प्रभुने दान आप्युं, पण ते द्रव्यथी आप्युं छे अने जीर्ण शेठे प्रभुने जावथी दान आप्युं छे. वळी ते जीर्णशेठे जाव समाधिने धारण करी बारमा देवलोके जवा योग्य एवुं कर्म उपार्जन कर्युं छे. जो ते जीर्णशेठे ते वखते देवदुंदुभिनो शब्द सांजळ्यो न होततो ते तत्काळ केवळज्ञानने पण प्राप्त करत. अने पुरण शेठेतो जाव शून्यपणे दान आप्युं छे. ते सुपात्रदान करवाथी सुवर्णवृष्टि वगेरेने प्राप्त थयेल छे. पण तेथी कांइ अधिक फळ पामेल नथी." आ प्रमाणे ते केवळी जगवानना वचन सांजळी राजा वगेरे सर्वे ते जीर्ण शेठनी प्रशंसा करता पोतपोताने स्थाने चाल्या गया हता.

जीर्ण शेठ चिरकाळ सुधी शुद्ध रीते जिनेश्वरनो धर्म आराधी बारमे देवलोके गयो हतो. आ प्रमाणे दान आपवामां जावशुद्धिने विषे जीर्ण शेठनी

कथा कहेवाय छे, ते उपरथी बीजा श्रद्धालु श्रावकोए दाननी क्रियामां निर्मळ भाव धारण करवो, के जेथी सर्व समृद्धिओ पोतानी मेळे प्रगट थाय छे.

,अहिं आ प्रमाणे भावना छे.

" धन्ना ते सप्पुरिसा, जे मणसुद्धीए सुद्धपत्तेसु ।
सुद्धासणाइदाणं, दिंति सया सिद्धिगइहेउं " ॥१॥

"जे मननी शुद्धिवडे सिद्धि गतिना हेतुरूप एवुं शुद्ध अशनादि दान शुद्धपात्रने सदा आपे छे, ते पुरुषोने धन्य छे. १"

सर्व धर्मने विषे दाननो गौणताने कहेनाराओना मततुं निराकरण करवाने आगमने अनुसारे तेनुं प्राधान्य बतावे छे.

" सर्वतीर्थकरैः पूर्वं, दानं दत्वाद्दतं व्रतम् ।
तेनेदं सर्व धर्माणा,माद्यं मुख्यतयोच्यते " ॥ १ ॥

"सर्व तीर्थंकरोए पूर्वे दान आपीनेज व्रतनो आदर करेलो छे, तेथी ए दान सर्व धर्मोमां प्रधानपणे मुख्य कहेवाय छे." १

तीर्थंकरोनो दानविधि.

प्रथम शक्र इंद्रनी आज्ञाथी धनद नामे लोकपाल आठ क्षणमां नीपजावेला, सोळ मासा प्रमाण वाळा, जिनेश्वरना पिताना नामथी अंकित अने सांवत्सरिक दानने योग्य एवा सोनैयावडे जिनेश्वरना भंडारो पूरे छे. ते वखते जिनेश्वर भगवान् दाननी प्रवृत्तिने अर्थे सूर्योदय पछी छ घडीए जे प्रहर आवे ते, एटले छ घडी पछी परिपूर्ण प्रहर सुधी प्रतिदिन एक कोटी अने आठ लाख सोनैया आपे छे. आवश्यकजीने विषे कयुं छे के, एक संवत्सरमां जिनेश्वर भगवान् त्रणसो अठ्यासी कोटी अने एंशी लाख सोनैयानुं दान आपे छे.

ते दान समये उत्पन्न थता छ अतिशयोः

जिनेंद्र भगवान् ज्यारे सुवर्णनी मुष्टि भरीने दान आपे छे, त्यारे सौधर्मेंद्र ते भगवान्‌ना जमणा हाथमां महा शक्ति स्थापन करे छे ; के जेथी तेमना हाथने जरापण खेद उत्पन्न न थाय. अनंत वीर्यवाळा भगवान्‌ना हाथमां इंद्र शक्तिनुं

स्थापन करे ए अयुक्त छे, एवी शंका अहिं करवी नहीं; कारणके, जगवान् अनंत बलवाला छतां पण इंद्रने ते न करवामां पोतानी चिरकालनी स्थिति अने जक्तिना जंगनो प्रसंग आवे, तेथी ते अनादि स्थिति पाळवाने माटे अने पोतानी जक्ति देखाडवाने माटे इंद्रनुं ते करवुं युक्तज छे, ते विषे विशेष विस्तार करवाथी सर्युं.

वळी ते समये ईशानेंद्र सुवर्णरत्नमय लाकडी ग्रहण करी वचमां ग्रहण करता बीजा सामानिक देवताने वर्जता छतां जे दान पामवाना छे, तेमने जिनेश्वरना हाथथी देवरावतां छतां लोको पासे शब्द करावे छे के, "हे प्रजु मने आपो." चमरेंद्र अने बलींद्र लोकोना लाजने अनुसारे प्रभुना दाननी मुष्टि पूरे छे अने देवरावे छे. जवनपति देवताओ दान ग्रहण करनारा जरत क्षेत्रना मनुष्योने त्यां लावे छे. व्यंतर देवताओ ते मनुष्योने पोताने स्थाने पहोचाडे छे. ज्योतिषी देवताओ विद्याधरोने ते दान ग्रहण करावे छे. वळी इंद्रो पण ते प्रभुना दानने ग्रहण करे छे, कारण के, ते दानना प्रजावथी देवलोकमां बार वर्ष पर्यंत कोइ पण जातनो क्लेश न थाय. मोटा चक्रवर्त्ती राजाओ पण पोतानो जंडार अक्षय करवा माटे ते दानने ग्रहण करे छे. श्रेष्ठी प्रमुख गृहस्थो पोतानी यश कीर्त्तिनी वृद्धिने माटे अने रोगी पुरुषो पोताना मूळ रोगनी हानि थवाने माटे तेमज बार वर्ष सुधी नवो रोग उत्पन्न न थाय तेने माटे ए दाननुं ग्रहण करे छे. वधारे शुं कहेवुं? सर्व जव्यजीवो ए दाननो योग प्राप्त करी पोतपोताना वांछित अर्थनी सिद्धि थवा माटे श्री जिनेश्वरना हाथथी दान ग्रहण करे छे. अजव्य आत्माओ कदि पण ते दानने पामताज नथी. शास्त्रने विषे ते अभव्यजीवोने तीर्थंकरोना हाथना दान प्रमुख केटलाएक उत्तम जावोनी प्राप्तिनी अयोग्यता कहेली छे. ते कहे छे.

जह अजवियजीवेहिं, न फासिया एवमाइयाभावा ।
इंदत्तमनुत्तरसुर, सिलाय नरनारयत्तं च ॥ १ ॥
केवलि गणहरहत्थे, पव्वज्जा तित्थवच्छरं दाणं ।
पवयणसुरी सुरत्तं, लोगंतिय देवसामित्तं ॥ २ ॥

तायत्तीससुरत्तं, परमाहम्मिअ जुयलमणुअत्तं ।
संभिन्नसोय तह पुव्व, धराहारयपुलायत्तं ॥ ३ ॥
मइनाणाइसु लद्धि, सुपत्तदाणं समाहिमरणत्तं ।
चारणदुगमहुसिप्पय, खीरासव खीणठाणत्तं ॥ ४ ॥
तित्थयर तित्थ पडिमा, तणुपरिभोगाइ कारणेवि पुणो ।
पुढवाइय जावमवि, अन्नव्व जीवेहिं नो पत्तं ॥ ५ ॥
चउदसरयणत्तंपिय, पत्तं न पुणो विमाणसामित्तं ।
सम्मत्त नाण संयम, तवाइ जावा न जाव दुगे ॥ ६ ॥
अणुत्तर जुत्ता जत्ति, जिणाण साहम्मिआण वच्छल्लं ।
न य साहेइ अन्नव्वो, संविगत्तं न सुप्पक्खं ॥ ७ ॥
जिणजणयजणणिजाया, जिणजक्खजरकणि जुगप्पहाणा ।
आयरियापयाइ दसगं, परमत्थ गुणाढमप्पत्तं ॥ ८ ॥
अणुबंधहेउसरूवा, तत्थअहिंसा तहा जिणदिक्खा ।
दव्वेण य भावेण य, दुहावि तेहिं न संपत्ता ॥ ९ ॥

" अनवी जीवो केटला जावोने पामता नथी ? ते कहे छे. १ इंद्रपणुं, २ अनुत्तर विमानवासी देवपणुं, ३ त्रिषष्टिशलाका पुरुषनी पदवी, ४ नारदपणुं, ५ केवली अने गणधरने हाथे दीक्षा, ६ तीर्थंकरने हाथे वर्षीदान, ७ शासनना अधिष्ठायक देव देवी, ८ लोकांतिकपणुं, ९ देवतानुं स्वामिपणुं, १० त्रायस्त्रिंशत् देवपणुं, ११ परमाधामीपणुं, १२ जुगलीया मनुष्यपणुं, १३ संभिन्न श्रोतोलब्धि, १४ पूर्वधरनी लब्धि, १५ आहारक लब्धि, १६ पुलाक लब्धि, १७ मतिज्ञानादिकनी लब्धि, १८ सुपात्रदान, १९ समाधिमरण २० विद्याचारण तथा जंघाचारणपणुं, २१ मधुशिल्प लब्धि, २२ क्षीराश्रव लब्धि, २३ क्षीणमोह गुणठाणुं, २४ तीर्थंकर अने तीर्थंकरनी प्रतिमाना शरीरना नोगमां आववाना कारणे पृथिव्यादिक भाव, २५ चौदरत्नोमां उपजवुं, २६ वि-

मानतुं स्वामिपणुं, २७ सम्यक् ज्ञान, चारित्र, तपादिक भाव तथा उपशमिक अने क्षायिक तथा क्षयोपशमिक भाव पामवापणुं[1] २८ अनुभव युक्त भक्ति, २९ साधर्मिवात्सल्य, ३० संवेगपणुं, ३१ शुक्लपक्षपणुं, ३२ जिनेश्वरना माता, पिता के स्त्रीपणे थवापणुं, ३३ जिनेश्वरना यक्ष यक्षिणीनुं थवापणुं, ३४ युगप्रधानपणुं, ३५ आचार्यादि दश पदमां थवापणुं, ३६ परमार्थ गुणोनुं पामवापणुं अने ३७ अनुबंध, हेतु अने स्वरुप—ए त्रण दयानुं द्रव्यथी अने भावथी पामवापणुं.

आ प्रमाणे साडत्रीश भाव अभव्य प्राणीने कदिपण प्राप्त थता नथी.

अनुबंध, हेतु अने स्वरूप ए त्रण प्रकारनी दया उपर कहेवामां आवी तेना लक्षणो आ प्रमाणे छे—जे साक्षात् जीवोनो अविघात ते पेहेली स्वरूप दया कहेवाय छे. जे यतना पूर्वक प्रवृत्ति ते बीजी हेतुदया कहेवाय छे अने जे ते दयाना फलरूपे परिणमे ते त्रीजी अनुबंध दया कहेवाय छे. वळी जिनाज्ञानुं अखंडन ते पण अनुबंध दया कहेवाय छे.

वळी प्रभुना दानना प्रसंगमां एम पण छे के, तेमना दानने अवसरे तेमना माता पिता अने भाइओ त्रण दानशाला करावी तेमां अन्न, पाणी, वस्त्र अने अलंकार देवरावे छे. ते विषे हवे विशेष विस्तार करवाथी बस छे.

ए प्रकारे सप्रसंग चोथुं शिक्षाव्रत कहेवामां आव्युं, हवे तेनुं निगमन कहे छे.

" इत्थं व्रतद्वादशकं दधाति, गृही प्रमोदेन प्रतिव्रतं हि ।
पंचातिचारान् परिवर्जयंश्च, ध्रुवं यथाशक्त्यापि भंगषट्के"।१

" गृहस्थ ए प्रकारे हर्षथी शक्ति प्रमाणे छ भांगाए करी बार व्रतने धारण करे छे अने प्रत्येक व्रतना पांच अतिचारोने वर्जे छे. " १

विस्तार थवाना भयथी अहिं अतिचार दर्शावेला नथी. ते ग्रंथांतरथी जाणी लेवा. अहिं बाहुल्यपणाने आश्रीने अतिचारनी पांच पांच संख्या कही छे, परंतु भोगोपभोगमां वीश अतिचार छे एम जाणवुं.

जे उपर छ भांगा कहेवामां आव्या, ते प्र...

---

[1] आ त्रण भावो भावथी न होय परंतु द्रव्यथी है

१ एकविध एकविध—ए पेहेलो भांगो. एटले मने करीने, वा वचने करीने वा कायाए करीने न करे अथवा न करावे.

२ एकविध द्विविध—ए बीजो भांगो ते कहे छे. जेम मन वचने करीने अथवा मन कायाए करीने अथवा वचन कायाए करीने न करे अथवा न करावे.

३ एकविध त्रिविध—ए त्रीजो भांगो छे. मन वचन कायाए करीने न करे अथवा न करावे.

४ द्विविध एकविध—ए चोथो भांगो छे. जेम मन अथवा वचन अथवा कायाए करीने न करे अने न करावे.

५ द्विविध द्विविध—ए पांचमो भांगो छे. जेम मन वचने करीने, तथा मन कायाए करीने अथवा वचन कायाए करीने न करे अने न करावे.

६ द्विविध त्रिविध—ए छठो भांगो छे. मन, वचन कायाए करीने न करे अने न करावे.

आ प्रकारे एकत्रीश भांगायुक्त एवी पच्चंगीनो श्रावकने घणुं करीने अनुमति अने निषेध नथी, तेथी तेना बीजा भेदो (भांगा) बताव्या नथी.

अहिं बारव्रतने आश्रीने भांगाना भेदने कहेवानी इच्छाने विषे ते अंगीकार करनारनी कर्मना क्षयोपशमनी विचित्रता होवाथी घणा भेदो उपजी शके छे. ते कहे छे—१३ अबज ८४ करोड, १२ लाख, ८७ हजार, २०० ने २ वे भांगा थइ शके छे. ए रीते श्री जिनेश्वरे श्रावकोने अभिग्रहना भेदनी संख्या दर्शावी छे. ए भांगाने माटे श्री प्रवचन सारोध्धारनुं वसोछत्रीशमुं द्वार जोवुं.

वळी बार व्रतमां प्रथमना आठ व्रतो एक साथे अंगीकार करेला जावजीव सुधी हाय छे, तेथी ते यावत्कथिक कहेवाय छे. जे चार शिक्षाव्रतो तेनो मुहूर्तादि अवधिथी लइने तेमनुं वारंवार अंगीकार करवापणुं छे ते अल्पकालभावि छे माटे ते इत्वर कहेवाय छे. तेम वळी ते बारव्रतने विषे पेहेला पांच व्रत धर्मरुपी वृक्षना मूलभूत होवाथी ते मूल गुण कहेवाय छे. बाकीना सात

व्रतो धर्मरुपी वृक्षनी शाखारुप होवाथी उत्तर रुपे होइ अणुव्रतोने गुण करनारी ते उत्तरगुण कहेवाय छे.

पूर्वे एक एक व्रतने आश्रीने दृष्टांतो बतावेला छे. हवे बारव्रतोने आश्रीने श्री वीरशासनना सर्व श्रावकोमां गुणोथी वृद्ध अने उपासक दशांगसूत्रमां प्रसिद्ध एवा दश श्रावकोना दृष्टांतो अनुक्रमे लेश मात्र दर्शावेला छे.

प्रथम ते दशना नाम कहे छे—१ आनंद, २ कामदेव, ३ चुल्लनी पिता, ४ सुरादेव, ५ चुल्लशतक ६ कुंभकोलिक, ७ सद्दालपुत्र, ८ महाशतक, ९ नंदिनीपिता, १० तेतलीपिता. ए दश उत्कृष्ट श्रावको कहेवाय छे.

आनंद श्रावकनुं वृत्तांत.

वाणिज्यग्राम नामना नगरमां चार कोटी सोनैयानो स्वामी आनंद नामे एक श्रावक रहेतो हतो. तेणे चार कोटी सोनैया निधानमां स्थापेला हता, चार कोटी व्याजमां अने चार कोटी व्यापारमां रोकेला हता.

तेने प्रत्येकमां दशहजार गायोवाला चार गोकुल हता. उत्कृष्ट शील तथा सौभाग्य वगेरे गुणोने धारण करनारी शिवानंदा नामे तेने स्त्री हती. ते वाणिज्य गामनी बाहेर ईशान खूणामां कोल्लाग नामना एक परामां ते आनंद शेठना ज्ञाति कुटुंबीओ अने घणा मित्रो रहेता हता.

एक वखते ते वाणिज्य गामनी समीपे आवेला दुतपलाश नामना चैत्यने विषे श्री महावीर प्रभु समोसर्या ते समये त्यां मोटी पर्षदा एकठी थइ हती, आ खबर सांभळी आनंद श्रावक स्नान पूर्वक शुध्ध वस्त्रो पेहेरी पोताना घणा परिवार साथे परवरी प्रभुनी पासे आव्यो, ते प्रभुने वंदन करी योग्य स्थाने बेठो ते समये प्रभुए देशना आपी ते प्रभुनी देशना सांभळी आनंदे शुध्ध श्रध्धान प्राप्त करी प्रभुने कह्युं, " भगवन् तमारो कहेलो धर्म मने रुच्यो छे, माटे हुं तमारी समक्ष बार व्रत लेवाने इच्छुं छुं, त्यारे प्रभुए कह्युं.

" यथासुखं देवानुप्रिय, मा प्रतिबंधंकार्षीः "

"हे देवानुप्रिय, जेम सुख उपजे तेम करो, पण विलंब करशो नहीं " ते वखते आनंदे प्रभु समीपे बार व्रत अंगीकार कर्या तेना विशेष विधिनो विचार

उपासक दशांग सूत्रथी जाणी लेवो. व्रत ग्रहण कर्या पछी आनंद श्रावक भगवान् ने नमीने आ प्रमाणे बोल्यो—" भगवन् आजथी अन्य तीर्थीओ, अन्य तीर्थी ओना देवो अने अन्यतीर्थीओए पोताना देव तरीके ग्रहण करेल अरिहंतनी प्रतिमा तेमने हुं वंदन करीश नहीं अने नमस्कार पण करीश नहीं; तेमणे प्रथम न बोलाव्या तो हुं तेमनी साथे आलाप तथा संलाप करीश नहीं. अर्थात् मारे हरेक कार्यने माटे तेमने बोलाववा नहीं. जो पहेलां ते बोलावे तो मारे बोलवुं. तेम वळी तेमने धर्मबुद्धिए अशनादि आपीश नहीं. राजाभियोगादि छ आगा रने वर्जी बीजे सर्व ठेकाणे मारे नियम छे; आजथी हुं श्रमणनिर्ग्रंथोने प्रासुक तथा एषणीय आहारादिवडे प्रतिलाभित करतो विचरीश. आ प्रमाणे अभिग्रह लइ प्रभुने त्रण प्रदक्षिणा फरी वंदन करी ते आनंद श्रावक पोताने घेर गयो हतो.

तेनी स्त्री शिवानंदा पण पतिनामुखथी आ प्रमाणे प्रवृत्ति सांभळी पोते प्रभुनी समीपे आवी अने तेणीए त्यां बार व्रत ग्रहण कर्या. ते पछी आनंद श्रावकने प्रभुता भावथी पोषध उपवासादि धर्मकृत्यवडे आत्माने भाव युक्त करतां चौद वर्ष व्यतीत थइ गयां. ज्यारे पंनरमा वर्षनो प्रवेश थयो एटले ते आनंद श्रावके एक दिवसे अगीयार प्रतिमा (पडिमा) अंगीकार करवानी इच्छाथी पोताना ज्ञातीय, स्वजन अने मित्रोने एकठा करी सरस भोजनथी तृप्त करी सत्कार कर्यो. पछी तेमनी समक्ष पोताना ज्येष्ठ पुत्रने कुटुंबना स्वामित्व उपर स्थापी, ते सर्वने अने पुत्रने पुछी पोते कोल्लाक संनिवेशमां पोतानी पोषधशाळामां आव्यो. त्यां भूमिने प्रमार्जी, अने उच्चार तथा प्रश्रवणनी भूमिने पडीलेही दर्भना संथारा उपर ते आरूढ थयो. त्यां तेणे श्रावकनी पेहेली पडिमा अंगी-कार करी. तेने सूत्रोक्त विधि पूर्वक आराधी अनुक्रमे अगीयार श्रावकनी पडिमा आराधी, ते पछी तपथी जेणे शरीरने सुकावी दीधुं छे एवा आनंद श्रावकने एक दिवसे निर्मल अध्यवसायथी अने ज्ञानावरणीय कर्मना क्षयोपशमथी अवधिज्ञान उत्पन्न थइ आव्युं. तेवामां एक दिवसे ते वाणिज्य गामनी बाहेर श्री वीर प्रभु समोसर्या. त्यारे प्रभुने पुछीने इंद्रभूति (गौतम स्वामी) गणधर त्रीजी पोरसीमां ते वाणिज्य गाममां यथारुचि आहार ग्रहण करी गामनी बाहेर

नीकळतां कोल्लाक संनिवेशनी अति नजीक नहीं तेम अति दूर नहीं तेम विचरतां लोकोना मुखथी आनंद श्रावकनी तपनी प्रवृत्ति तेमना सांभळवामां आवी. तत्काल पोते ते प्रत्यक्ष जोवा कोल्लाक संनिवेशमां आवेली पोषधशालामां आव्या. त्यारे आनंद श्रावक ते भगवान् गौतमने आवता जोइ घणाज खुशी थया अने तेमने वंदना करी आ प्रमाणे बोल्यो—" हे स्वामी, तपस्याने लइने जेना शरीरमां मात्र नाडी अने अस्थि रहेला छे एवो हुं आपनी समीपे आववाने शक्तिमान् नथी; माटे आप मारी उपर कृपा करीने पधारो. ते वखते गौतम स्वामी ज्यां आनंद श्रावक रहेला छे, त्यां आव्या. स्वामीने आवेला जोइ आनंद श्रावके तेमने मस्तक वडे त्रण वार चरणमां नमी आ प्रमाणे पूछ्युं.—" हे स्वामी, गृहस्थने घरमां रहेतां छतां अवधिज्ञान उत्पन्न थाय के नहीं ? " गौतम स्वामी ए कह्युं, " हा, उत्पन्न थाय, " त्यारे आनंदे कह्युं, " महाराज, मने पण अवधिज्ञान थयुं छे.तेनाथी हुं पूर्व, दक्षिण अने पश्चिम दिशामां पांचशो पांचशो योजन क्षेत्र रुप लवण समुद्र पर्यंत हुं देखी शकुं छुं अने उत्तर दिशामां हिमवंत वर्षधर पर्यंत जाणी शकुं छुं. ऊर्ध्व लोके सौधर्म देवलोक यावत् अने अधोभागे रत्नप्रभा पृथ्वीना लोलुचय नामना नरकवास पर्यंत जाणुं छुं–देखुं छुं. आनंदना आ वचनो सांभळी गौतम मुनि बोल्या " भद्र, गृहस्थने अवधिज्ञान उत्पन्न थाय, पण एटलुं बधुं मोटुं न थाय, माटे आ स्थाननुं आलोचन—निंदनादिक करो. " आनंदे कह्युं, " हे स्वामी, जिन वचनमां साचा अर्थनी आलोयणा होय छे? त्यारे गौतमे कह्युं, " एम न होय " आनंद बोल्या " महाराज, जो एम छे तो पछी तमारेज ए स्थानकनी आलोचना निंदना करवी. " आनंदना आ वचनो सांभळी गौतम हृदयमां शंकित थइ गया. पछी तत्काल त्यांथी नीकळी द्युतपलाश चैत्यमां ज्यां श्री वीरप्रभु रहेला छे त्यां आवी गमनागमन प्रतिक्रमणादि पूर्वक स्वामीने नमी सर्व वृत्तांत निवेदन करी आ प्रमाणे पूछ्युं भगवन्! ते स्थानक आनंदने आलोचवा योग्य छे के मारे आलोचवा योग्य छे? प्रभुए कह्युं, " तुंज ते स्थानने आलोच अने तेने माटे आनंदने खमाव " भगवान्ना आ वचनने विनयथी अंगीकार करी पोते गौतमे ते स्थानकनी आलोचनादि लइ पछी आनंद श्रावक पासे आवी ते अर्थने खमाव्यो हतो ते पछी आनंद श्रावक बहु प्रकारना शीलव्रतादि धर्मकृत्यवडे पोताना आत्माने भावी,

वीश वर्ष पर्यंत श्रावक पर्याय पाळी छेवट एक मासनी संलेखणा करी समाधि पूर्वक कालकरी सौधर्म देवलोके अरुणाज नामना विमानमां चार पल्योपमना आयुष्यवालो देवता थयो. त्यांथी चवीने ते महाविदेहने विषे सिद्धिपदने प्राप्त थशे. ए प्रकारे आनंद श्रावकनुं वृत्तांत छे.

कामदेव श्रावकनो वृत्तांत.

चंपानगरीमां कामदेव नामे एक गृहस्थ रहेतो हतो. तेने जद्रा नामे स्त्री हती. अढारकोटी सोनैयाना द्रव्यनो स्वामी हतो. तेटला द्रव्यमांथी छ कोटी सुवर्ण द्रव्य निधानमां छ कोटी व्याजमां अने छ कोटी व्यापारमां एम त्रण जागे तेनुं द्रव्य रहेलुं हतुं. ते शिवाय दश दश हजार गायोवाला छ गोकुलो तेनी पासे हता.

एक वखते ते नगरनी समीपे आवेला पूर्णजद्र नामना चैत्य मां श्री वीरप्रभु समोसर्या. आ खबर सांजळी कामदेव तेमने वंदना करवा गयो अने आनंद श्रावकनी पेठे तेणे प्रभु पासे बार व्रत अंगीकार कर्यां. अनुक्रमे ए व्रतनुं पालन करतां कामदेवे एक समये पोताना ज्येष्ठ पुत्रने कुटुंबनो जार सोंपी पोते पोषधशाळामां आवी पोषध व्रत लइ बेठो. अर्द्ध रात्रिनो समय थतां कोइ एक मायावी मिथ्यात्वी देव प्रगट थइ तेनी पासे आव्यो. ते विकराळ पिशाचनुं स्वरूप विकुर्वी हाथमां तीक्ष्ण धारावाळुं खड्ग लइ तेनी पासे उजो रह्यो. तेणे कामदेवने आ प्रमाणे कह्युं, " अरे कामदेव, तुं नहीं प्रार्थवा योग्यनी प्रार्थना करनार, बुद्धि लज्जा अने लक्ष्मी वगरनो अने धर्मपुण्यवमे स्वर्ग तथा मोक्षनी वांछना राखनारो छे. पण हवे तारा शीलव्रतादि तथा पोषधोपवासादिनो सत्वर त्याग करी दे. जो तुं त्याग नहीं करतो हमणांज आ तीक्ष्ण खड्गवमे तारा शरीरने खंम खंम करी नांखीश; जेथी तुं पीमा पामतो मरणने शरण थइश. " पिशाचे आ प्रमाणे कह्युं तो पण कामदेव तेथी जय पाम्यो नहीं; ते अधिक क्षोज पाम्या शिवाय, अचलित, मौनधारी अने धर्मध्यानथी युक्त थइने रह्यो. ते मिथ्यात्वी देवे तेने निश्चल जाणी ते प्रमाणे बे त्रण वखत कह्युं, परंतु धर्मवान् कामदेव तेनाथी जरापण चलायमान थयो नहीं. तेथी ते देवने जारे कोप थइ आव्यो. भृकुटी चमावी तेणे तेनी पर खड्ग उगाम्युं. तोपण कामदेव जराए

गयो नहीं. पछी तेणे खड्गनो घा करी तेना शरीरना खंड करी नांख्या, तथापि कामदेवे ते पीडा सहन करी अने ते पोताना धर्मने विषे निश्चल रह्यो. ज्यारे कामदेव पोताना पिशाचना रूपथी चलित थयो नहीं एटले मिथ्यात्वी देव हृदयमां खेद पामतो हळवे हळवे पोषधशाळामांथी बाहेरनीकळ्यो अने तेणे ते पिशाचना रूपने छांडी दीधुं. पछी तेणे हस्तिनुं रूप विकुर्व्युं. एव महान शुंढा दंडने उछाळतो, मदोन्मत्त थइ मेघनी जेम गुळगुळायमान शब्द करतो, अने भयंकर आकारने धारण करतो ते पोषधशाळामां आव्यो. तेणे गर्जना करीने कह्युं, "अरे कामदेव, जो तुं मारुं कहेलुं नहीं माने तो हमणा आ मारी शुंढ वडे ग्रहण करी तने आकाशमां फेंकीश; अने मारा तीक्ष्ण दंतो रूप शळवडे तने भेदी नांखीश. वळी नीचे नांखी पगवडे करी मसळीश. तेणे आ प्रमाणे कह्युं, तो पण कामदेव जरापण क्षोभ पाम्यो नहीं, त्यारे ते देवताए जेम कह्युं हतुं तेम करी बताव्युं तो पण ते श्रावके ते महा वेदना सहन करी अने ते धर्मध्यानमां स्थिर रह्यो. ज्यारे ते देव हस्तीरूपे पण ते कामदेवने क्षोभ पमाडवाने अशक्त थयो, एटले ते हळवे हळवे पाछो सरीने पोषधशाळामांथी बाहेर गयो अने त्यां जइ हस्तिना रूपनो त्याग कर्यो. पछी तेणे सर्पनुं रूप विकुर्व्युं. महा विष अने क्रोधथी पूर्ण, काजळना पुंजना जेवा वर्णवाळो, अति चंचळ जिह्वाने धरनारो, उत्कट, प्रकट, अने वक्र जटाधारी, अने कठिन फणाटोप करवामां दक्ष एवो भयंकर सर्प बनी ते पोषध शाळामां आव्यो. अने तेणे कामदेवने आ प्रमाणे कह्युं—" अरे कामदेव, जो तुं मारुं वचन नहीं माने तो हमणांज हुं सरसर शब्द करतो तारी काया उपर चडीने पश्चिम भागवडे त्रण वार आंटा दइ तारी ग्रीवाने वींटी भरडो लइश अने तीक्ष्ण विषथी व्याप्त एवी दाढावडे तारा उरस्थळने भेदी नांखीश." तेना आवा वचनोथी पण कामदेव चलित थयो नहीं, त्यारे तेणे अति क्रोधायमान थइने तेज उपसर्ग कर्यो. परंतु कामदेवे अक्षुब्ध थइ तेनी तीव्र वेदनाने धैर्यथी सहन करी. तेणे जैन धर्मने पोताना चित्तथी क्षणवार पण दूर कर्यो नहीं. आ प्रमाणे ते देव सर्प रूपे पण कामदेवने धर्मथी चलायमान करवाने असमर्थ थयो, एटले ते पाछो हळवे हळवे ओसरीने ते पोषधशाळाथी बाहेर नीकळ्यो अने तेणे सर्पना रूपनो त्याग कर्यो. पछी तेणे अति मनोहर, शीतळ—सौम्य, आकृतिवाळुं देदीप्यमान देवनुं स्वरूप विकुर्व्युं. पछी ते पोषधशाळामां आकाश मार्गे रही

कामदेव प्रति आ प्रमाणे बोल्यो—" हे कामदेव, तमने धन्य छे. तमेज पुण्य कर्युं छे अने जैनधर्मने अंगीकार करी पोताना जन्मने सफल कर्यो छे. हमणा एक वखते सुधर्मा इंद्र पोतानी सभामां तमारी प्रशंसा करता हता के, कामदेव नामे श्रावक देव दानवोथी पण अक्षोभ्य छे. " आ सांभळी में इंद्रना वचनने मान्युं नहीं. हुं तत्काल अहिं आव्यो. में तमारी परीक्षा करी, तेमां सुधर्मा इंद्रे जेवी वर्णवी हती, तेवी तमारी शक्ति मारा जोवामां आवी. हवे हुं तमोने खमावुं छुं. मारो करेलो अपराध तमारे क्षमा करवो. हुं हवे आजथी तेवुं कार्य नहिं करुं. " आ प्रमाणे कही ते देव कामदेवना चरणमां नमी अंजलि जोडी वारंवार पोतानो अपराध खमावी पोताने स्थाने चाल्यो गयो.

ते देव गया पछी कामदेवे उपसर्गनो अभाव जाणी कायोत्सर्गने पार्यो. आ समये श्री वीर परमात्मा त्यां आवीने समोसर्या. ते वार्ता सांभळी कामदेवे पोताना मनमां चिंतव्युं के, " हुं श्री वीरप्रभुने वंदना करी पछी पोषध पारुं तो वधारे सारुं. " आवुं चिंतवी ते घणा लोकोथी परिवृत थइ श्री वीरप्रभुनी पासे आव्यो. त्यां प्रभुने वंदना करी योग्य स्थाने बेठो. ते पछी श्री वीरप्रभुए ते कामदेवने उद्देशीने तेने रात्रे वीतेला उपसर्गोनो सर्व वृत्तांत कही संभळाव्यो. पछी विशेषमां जणाव्युं के, " हे कामदेव, आ हकीकत सत्य छे ? " त्यारे कामदेवे कह्युं " हे स्वामी, एमज छे. " ते समये भगवाने घणा निर्ग्रंथोने अने साध्वीओने बोलावी आ प्रमाणे कह्युं—" हे आर्यो, आ कामदेव तो गृहस्थ श्रावक छे ते गृहावासमां रहीने ज्यारे आ प्रमाणे देव तथा मनुष्यना करेला उपसर्गोने सम्यक् प्रकारे सहन करे छे, तो द्वादशांगीने भणेला एवा तमारे तेवा उपसर्गो सहन करवाने विशेष समर्थ थवुं जोइए. " प्रभुना आ वचनोने ते साधुओए अने साध्वीओए अति विनयथी अंगीकार कर्या. आथी कामदेव विशेष आनंद पामतो प्रभुने वंदना करी पोताने स्थाने आव्यो. ते पछी तेणे आनंद श्रावकनी पेठे श्रावकनी अगीआर पडिमाने अनुक्रमे सम्यक् विधिथी आराधी. अने वीश वर्ष पर्यंत श्रावक पर्याय पाली एक मासनी संलेखना वडे काल करी ते कामदेव श्रावक सौधर्मदेवलोके अरुणाभ नामना विमानमां देव पणे उत्पन्न थयो. त्यांथी च्यवी ते महाविदेह क्षेत्रने विषे सिद्धिपदने पामशे. ए रीते कामदेव श्रावकनो वृत्तांत छे.

त्रीजा श्रावक चुल्लनीपितानो वृत्तांत.

वाराणसी नगरीमां चुल्लनीपिता नामे एक गाथापति—गृहस्थ रहेतो हतो. तेने सोमा नामे स्त्री हती. ते चोवीश कोटी द्रव्यनो स्वामी हतो ते द्रव्य आठ कोटी निधानमां, आठ कोटी व्याजमां अने आठ कोटी व्यापारमां—एम त्रण जागे वहेंचाएलुं हतुं. प्रत्येक दश दश हजार गायोवाला आठ गोकुल तेनी सत्तामां हता, तेणे एक वखते आनंद अने कामदेवनी जेम श्री वीर प्रभु पासे बार व्रत ग्रहण कर्या. अवसर आवतां पोताना ज्येष्ठ पुत्रने कुटुंब उपर स्थापी पोते पोषधशालामां जइने पोषध लइने रह्यो. त्यां अर्ध रात्रे कोइ देवे हाथमां तीक्ष्ण खड्ग लइ ते चुल्लनीपिता श्रावकने आ प्रमाणे कह्युं,—" अरे चुल्लनीपिता, तुं आ धर्मनो त्याग कर. जो नहीं करे तो तारा ज्येष्ठ पुत्र वगेरेने आ खड्गथी हणीश. " तेणे आ प्रमाणे कह्युं, ते छतां पण ते चुल्लनीपिता जरा पण क्षोभ पाम्यो नहीं, त्यारे अति क्रोधायमान थयेलो ते देव तेना ज्येष्ठ, मध्यम अने कनिष्ठ—त्रणे पुत्रोने त्यां लाव्यो. ते त्रणेने तेनी समक्ष खड्गथी हणी नांख्या. अने पछी तेमने एक तपेली कडाहनी अंदर नांखी तेना मांस अने रुधिरथी ते चुल्लनीपिताना शरीर उपर सिंचन कर्युं. तथापि ते क्षोभ पाम्यो नहीं. पछी ते देवताए तेने वारवार आ प्रमाणे कह्युं, " अरे चुल्लनीपिता, जो तुं मारुं वचन नहि माने तो हमणांज तारी माता भद्रा सार्थवाहीने अहिं लावी तारी सन्मुख हणी तपेली कडाहमां नांखीश अने तेणीना मांस तथा रुधिरथी तारा शरीरनुं सिंचन करीश, जेणीना दुःखथी पीडित एवो तुं अकाले मृत्युने पामीश. आ प्रमाणे कहेतां छतां पण ज्यारे ते चुल्लनीपिता क्षोभ पाम्यो नहीं, एटले तेणे फरीवार कह्युं. ते पछी ते श्रावकना मनमां आ प्रमाणे विचार उत्पन्न थयो.— "अहो ! आ कोइ अनार्य पुरुष लागे छे, ते अनार्य बुद्धिथी न आचरवा योग्य एवा पाप कर्मने आचरे छे; जेथी तेणे मारा त्रण पुत्रोने मारी नांख्या अने हवे माताने मारवा ते तत्पर थयो छे, तो हवे हुं आ दुष्ट पुरुषने ग्रहण करुं तो ठीक " आवुं विचारी ते श्रावक शीघ्रताथी जेवामां तेने ग्रहण करवा हाथ प्रसारे छे, तेवामां ते देव उडीने आकाशमां चाल्यो गयो. अने चुल्लनीपिताना हाथमां एक स्तंभ आव्यो. पछी ते श्रावके मोटा शब्दोथी कोलाहल कर्यो, तेवामां तेनी माता

जद्रासार्थवाही पोताना पुत्रनो-शब्द सांभळीने तेनी पासे आवी अने तेणीए कोलाहल करवानुं कारण पूछ्युं. चुल्लनीपिताए पोते जे अनुजवेलो हतो ते सर्व वृत्तांत माताने कही संजळाव्यो. माता ते वृत्तांत सांजळी आ प्रमाणे बोली— " वत्स, कोइ एवो पुरुष नथी, अने तेणे तारा पुत्रोने हण्या नथी, आ कोइ पुरुष तने उपसर्गो करे छे, माटे तुं हमणां जग्न व्रत थयो छुं—तारा पोषध व्रतनो जंग थइ गयो छे, माटे तुं ए स्थानकनी आलोचना वगेरे कर. " माताना आ वचनो सांजळी ते चुल्लनीपिताए तेणीना वचननो अंगीकार करी ते स्थानकनी आलोचनादि ग्रहण कर्यां. ते पछी ते आनंद श्रावकनी जेम अनुक्रमे श्रावकनी अगीआर पडिमाने आराधी छेवटे समाधिवडे काल करी पहेला देवलोके अरुणाज विमानमां चार पल्योपमना आयुषे उत्पन्न थयो. त्यांथी च्यवीने ते महाविदेह क्षेत्रने विषे सिद्धिपदने प्राप्त थशे एवी रीते चुल्लनीपितानी कथा छे.

श्रावक सुरादेवनो वृत्तांत.

वाराणसी नगरीमां सुरादेव नामे एक गृहस्थ श्रावक रहेतो हतो. तेने धन्या नामे एक स्त्री हती. तेने कामदेवना जेवी द्रव्यनी संपत्ति अने गोकुलो हता. तेणे पण कामदेव श्रावकनी जेम व्रत ग्रहण कर्युं हतुं, अने तेमां उपसर्गो पण थया हता. ते सुरादेवने त्रण पुत्रो हता. पूर्वनी जेम कोइ मिथ्यात्वी देवे तेना त्रण पुत्रो हणवानो उपसर्ग करेलो तो पण ते सुरादेव मनमां जरा पण क्षोज पाम्यो न हतो. तेने व्रतमां दृढतावालो जोइ ते देवताए कह्युं, " अरे सुरादेव, जो तुं आ जैनधर्मनो त्याग नहीं करे तो तने सोळ जातना महा रोग उत्पन्न करी अकालेज तारा प्राणनो नाश करीश. ते उपरथी तेणे कोलाहल करतां तेनी धन्या स्त्री आवी अने तेणीए तेना नामनुं समाधान कर्युं. ते पछी पूर्ववत् वृत्तांत बन्यो हतो. मरण पामी ते श्रावक सौधर्म देवलोके अरुणाज्ज विमानमां देव रुपे उत्पन्न थयो हतो. त्यांथी च्यवीने ते महाविदेह क्षेत्रने विषे सिद्धिपदने पामशे. एवी रीते सुरादेवनो वृत्तांत छे.

पांचमा चुल्लशतक श्रावकनुं दृष्टांत.

आलजिका नगरीमां चुल्लशतक नामे एक गृहस्थ रहेतो हतो. तेने बहुला नामे स्त्री हती. तेने द्रव्यनी संपत्ति अने गोकुलो कामदेव श्रावक प्रमाणे

हता. व्रत वगेरे ग्रहण करवानो प्रसंग तेने त्रीजा श्रावकनी जेम बन्यो हतो. विशेषमां एटलुं के, परीक्षा करवा आवेला देवताए तेना पुत्रने उपसर्ग करतां ते क्षोभ पाम्यो नहीं, त्यारे कह्युं के, "जो तुं तारा धर्मनो त्याग नहीं करे तो अढार कोटी सोनैया तारा घरमांथी काढी आ नगरीना त्रिकमार्गे चौटामां एकदम विखेरी नांखीश, जेथी आर्त्त तथा रौद्र ध्यानमां पडेलो तुं अकाले मृत्यु पामीश" इत्यादि प्रसंग बनतां कोलाहल कर्यो एटले तेनी स्त्री बहुला आवी तेणे पूर्ववत् कर्युं. ते पछी ते श्रावक मृत्यु पामी सौधर्मदेवलोके अरुणात्मविमानमां देवपणे उत्पन्न थयो. त्यांथी च्यवी ते महाविदेहक्षेत्रने विषे सिद्धिपदने पामशे. एवी रीते चुल्लशतक श्रावकनुं दृष्टांत छे.

छठा कुंडकोलिक श्रावकनो वृत्तांत.

कांपिल्य नगरने विषे कुंडकोलिक नामे एक गृहस्थ रहेतो हतो. तेने पुष्पमित्रा नामे स्त्री हती. तेनी समृद्धि अने गोकुलो कामदेव प्रमाणे हता. अने व्रत ग्रहण वगेरेनो विधि पण एज प्रमाणे हतो. एक दिवसे ते कुंडकोलिक श्रावक मध्यरात्रे पोतानी अशोक वाडीमां पृथ्वीपर रहेली शिलाना पट उपर आव्यो. त्यां आवी पोतानी नामांकित मुद्रा अने उत्तरासंग वस्त्रने राखी ते धर्मध्यान करतो रह्यो हतो. ते वखते एक देव प्रगट थइ तेनी मुद्रा अने वस्त्रादि त्यांथी उपाडी आकाशे रही आ प्रमाणे बोल्यो—" अरे श्रावक कुंडकोलिक, गोशालेमंखलीपुत्रे कहेला धर्मनी प्रज्ञप्ति सुंदर छे, कारण के जेमां उद्यमादिक कांइ पण नथी. जीवोनो पुरुषाकार छतां पुरुषार्थनी सिद्धिनुं पाळवापणुं नथी, ते कारण माटे सर्व भाव नियत छे; अने श्री वीरप्रभुनी प्रज्ञप्ति सारी नथी, कारणके तेनी अंदर उद्यमादिक वर्ते छे. तेथी करी तेमां सर्व भाव नियत छे. ते देवना आ वचनो सांभळी ते कुंडकोलिक आ प्रमाणे बोल्यो. "हे देव, जो, एम होय तो, तुं आ देवनी ऋद्धि उद्यमादिकथी पाम्यो के उद्यमादिक विना ?" देव बोल्यो "हुं आ देवऋद्धिने उद्यमादिक विना पाम्यो छुं." कुंडकोलिके कह्युं, "जो तुं उद्यमादिक विना देवऋद्धि पाम्यो छो तो जे जीवोने उद्यमादिक नथी ते सर्वे जीवो देवपणुं केम पाम्या नहीं ? अने जो उद्यमादिकवडे आ ऋद्धि पा-

प्त थइ, एम कहे तो गोशालाना धर्मनी प्रज्ञप्ति सुंदर छे, इत्यादि तें जे कह्युं, ते मिथ्या छे." ज्यारे ते श्रावके आ प्रमाणे कह्युं, एटले ते देव शंका पामी ते श्रावकने प्रत्युत्तर आपवाने समर्थ थइ शक्यो नहीं. पछी तेनी मुद्रा अने उत्तरासंग पृथ्वीनी शिलाना पट उपर मुकी ते देव पोताने स्थाने चाल्यो गयो. तेवा अवसरमां श्री वीरप्रभु ते स्थले समोसर्या. ते खबर जाणी कुंभकोलिक प्रातःकाले वांदवा माटे गयो. ते पछी थयो वृत्तांत कामदेव श्रावकनी प्रमाणे जाणी लेवो. प्रभुए जेमके अर्थ हेतुना प्रश्नादिकथी अन्य तीर्थीओने निरुत्तर करवाथी कुंडकोलिक श्रावकनी प्रशंसा करी, त्यारे कुंभकोलिके चौद वर्ष सुधी श्रावकोनी पेठे ज्येष्ठ पुत्रने कुटुंबमां स्थापी पोते पोषधशाळामां रही अगीआर पडिमा आराधी हती. ते पछी एक मासनी संलेखनाथी समाधि पूर्वक काल करी ते पेहेले देवलोके अरुणाभविमानमां देवपणे उत्पन्न थयो. त्यांथी चवीने ते महाविदेह क्षेत्रने विषे सिद्धि पदने पामशे. ए रीते कुंभकोलिकनो वृत्तांत छे.

सातमा सद्दालपुत्र श्रावकनो वृत्तांत.

पोलासपुर नगरने विषे सद्दालपुत्र नामे एक कुंभकार श्रावक रहेतो हतो. ते गोशालानो सेवक हतो. तेने अग्निमित्रा नामे स्त्री हती. तेनी पासे त्रण कोटी सोनैयानुं द्रव्य हतुं. तेमां एक कोटी द्रव्य निधानमां, एक कोटी व्याजमां अने एक कोटी व्यापारमां रहेतुं हतुं. तेने दशहजार गायोवाळुं एक गोकुल हतुं तेना गामनी बहार कुंभारनी पांचसो दुकानो हती.

एक वखते सद्दालपुत्र मध्य रात्रे अशोक वाडीमां आवी गोशालाए कहेला धर्मध्याननुं ध्यान करतो हतो ते वखते एक देवे प्रगट थइने तेने आ प्रमाणे कह्युं, "हे देवानुप्रिय, अहिं महामाहण, जेने ज्ञान दर्शन उत्पन्न थयुं छे तेवा, ज्ञानदर्शनना धरनारा अने त्रिकालने जाणनारा अरिहंत प्रभु आवशे, तेमने तारे वंदना करवी अने तेमनी प्रतिपत्ति करवी." आ प्रमाणे देवता बे त्रणवार कही पोताने स्थाने चाल्यो गयो. ते देवतानुं आ वचन सांभळी ते सद्दालपुत्रे पोताना मनमां चिंतव्युं के आ देवताए जे गुणो कह्या, तेवा गुणवाळो तो अमारो धर्माचार्य गोशालो छे. ते निश्चे प्रातःकाले अहिं आवशे, ते वखते हुं

ने वंदना करीश." आ प्रमाणे ते शेठ विचार करवा लाग्यो. प्रातःकाल थतां श्री वीरभगवान् त्यां समोसर्या. ते खबर जाणी सदाल पोताना परिवार साथे प्रभुनी पासे आव्यो. त्यां प्रभुने वंदना करी योग्य स्थाने बेठो. प्रभुए धर्मदेशना आपी. पछी भगवंते ते सदालने बोलावी रात्रे बनेलो सर्व वृत्तांत कही संभलाव्यो. ते पछी आ प्रमाणे पुछ्युं, हे सदालपुत्र, आ वृत्तांत सत्य छे के केम ?" तेणे कह्युं, "हा एमज छे." पछी भगवाने कह्युं, "हे सदालपुत्र, ते देवताए गोशालाने आश्रीने कह्युं न हतुं." प्रभुनुं आ वचन सांभळी ते सदालपुत्रे चिंतव्युं के, "पूर्वे कहेला गुणोथी संपन्न एवा तो आ श्री महावीर स्वामी छे; माटे हुं आ प्रभुने वंदना करी पीठफलकादि वडे निमंत्रण करुं." आ प्रमाणे चिंतवी तेणे वंदना करी प्रभुने कह्युं, "हे भगवन्, आ नगरनी बाहेर कुंभकारनी पांचसो दुकानो छे, तेने विषे तमे पीठफलक शय्या संस्तारकादि ग्रहण करीने विचरो." आ प्रमाणे गोशालाना एटले आजीविक मतना श्रावकना वचन सांभळीने ते स्थले पीठफलकादिक ग्रहण करीने प्रभु रह्या हता.

एक वखते ते सदालपुत्रे शालामांथी भांमो (पात्रो)ने बाहेर लइ जइ तापमां मुक्या त्यारे प्रभुए पूछ्युं, हे सदालपुत्र, आ भांमो (ठाम) केम उत्पन्न थाय छे ?" त्यारे तेणे मृत्तिकाथी आरंभी भांमोनी निष्पत्तिनुं स्वरुप प्रभुनी पासे कही संभळाव्युं. त्यारे प्रभुए कह्युं, "ते भांमो उद्यमादिकवमे कराय छे के, अनुद्यमादिकवमे ?" त्यारे सदालपुत्र बोल्यो. "हे स्वामी, ते अनुद्यमादिकवडे कराय छे, उद्यमादिकवडे नहीं. तेथी उद्यमादिक नथी. माटे सर्व भाव नियतज छे." स्वामीए कह्युं, "जो कोइ पुरुष आ तारा भांमोने अपहरे अथवा विनाश करे अथवा तारी स्त्रीनी साथे भोग भोगवतो विचरे तो ते पुरुषने तुं शुं दंम आपे ?" सदालपुत्रे कह्युं, "स्वामी, हुं तेने हणवादिक करुं" आ प्रमाणे सदालपुत्रने पोताना वचने पुरुषाकार अंगीकार करावी प्रभु बोल्या —"जे निश्चे करी तारा भांमोने हरे नहीं अथवा तेनो नाश करे नहीं तो तेनुं हननादिक तुं न करे. वळी जो उद्यमादिक नथी अने सर्व भाव नियत छे, तेम अपराधी पुरुषने तुं हननादिक करे छे, तो तें जे कह्युं के उद्यमादिक नथी, ए वात मिथ्या थाय छे." प्रभुना आ वचनो सांभळी सदालपुत्र प्रतिबोध पाम्यो.

तत्काल तेणे प्रभुने वंदना करी अने तेमना मुखथी धर्म सांभळी आनंद पामी प्रभु पासे बार व्रतो अंगीकार कर्या. तेनी पासे पूर्वना श्रावक जेटलुं द्रव्य हतुं. ते पछी पोताने घेर आव्यो अने तेणे पोतानी स्त्रीनी आगळ ते सर्व वृत्तांत जणाव्यो. अने तेणीने पण व्रत ग्रहण कराव्या. त्यारथी ते श्रावक थयो हतो.

एक वखते आ वृत्तांत सांभळी गोशालो ते सद्दालपुत्रने जैनधर्ममांथी चलित करवा अने पोताना धर्ममां लाववा आजीविक संघथी परिवृत थइ ते नगरमां आव्यो. ते नगरनी अंदर आजीविकनी सभामां पोताना भांडादिक मुकी केटलाएक नियतवादी मतवालाओने साथे लइ ते सद्दालनी समीपे आव्यो. सद्दालपुत्रे गोशालाने आवतो जोयो पण तेनो आदरसत्कार कर्यो नहीं. ते मौनधरीनेज बेशी रह्यो. सद्दालपुत्रे पोतानो आदर कर्यो नहीं, ते छतां पीठफलकादिकने माटे ते श्रावकनी आगळ श्री वीरप्रभुना गुणोनुं कीर्त्तन तेणे करवा मांड्युं. तेणे कह्युं, हे देवानुप्रिय, अहिं महामाहण, महागोप, महा सार्थवाह, महाधर्मकथक, अने महानिर्यामक आव्या हता ? " सद्दालपुत्रे कह्युं, " हे देवानुप्रिय, एवा कोण छे ? " त्यारे गोशाले कह्युं, तेवा श्री श्रमण भगवंत महावीरस्वामी. श्रावक सद्दालपुत्रे कह्युं, " ते एवी उपमाना धारक केम छे ? " त्यारे गोशाले कह्युं, " हे सद्दालपुत्र, श्री वीरस्वामी अनंत ज्ञानादिकना धारक होवाथी अने चोसठ इंद्रोने पूजवा योग्य होवाथी महामाहण कहेवाय छे. आ संसार रुप अटवीमां त्रास पामता एवा बहु जीवोने धर्ममय दंडे करी रक्षण करनार अने निर्वाण पदरुप मोटा वाडाने पमाडनार होवाथी ते महागोप कहेवाय छे. आ संसाररुप अटवीमां उन्मार्गे पडतां जीवोने मुक्तिना नगरमां लइ जनारा होवाथी ते महासार्थवाह कहेवाय छे. सन्मार्गथी भ्रष्ट थयेला जीवोने अनेक प्रकारना अर्थ—हेतुवडे सन्मार्गे लावी संसारथी निस्तार करनार होवाथी ते धर्मकथक कहेवाय छे. आ संसार समुद्रमां डुबता एवा प्राणीओने धर्ममयी नाविकावडे निर्वाणरुप नगरना कांठानी सन्मुख करवाथी ते महानिर्यामक कहेवाय छे. " गोशालाना आवा वचन सांभळी सद्दालके कह्युं, " हे देवानुप्रिय, निपुण, नयवादी अने विज्ञानवान् एवा मारा धर्माचार्य श्री वीरप्रभुनी साथे तमे विवाद करवा समर्थ छो ? " गोशाले कह्युं,

"हुं समर्थ नथी." सद्दालपुत्रे कह्युं, "तमे केम समर्थ नथी ?" गोशालो बोल्यो—"महावीरस्वामी मारी प्रत्ये अर्थ-हेतु पक्षे करी ज्यां ज्यां ग्रहण करेछे, त्यां त्यां मने निरुत्तर करे छे, तेथी हुं तेमनी साथे विवाद करवाने समर्थ नथी." सद्दालपुत्रे कह्युं, "देवानुप्रिय, तुं मारा धर्माचार्यनुं आ प्रमाणे गुणोत्कीर्त्तन करे छे, माटे हुं पीठफलकादिवडे तने निमंत्रण करुं छुं, परंतु धर्मने माटे निमंत्रण करतो नथी. तमे मारी कुंभकारनी दुकाने जाओ अने पीठादिक ग्रहण करीने विचरो." ते श्रावकना आवा वचनथी गोशालो पीठादिक ग्रहण करीने त्यां रह्यो हतो. परंतु ज्यारे ते सद्दालपुत्रने कोइ प्रकारे पण जिनप्रवचनथकी चलाववाने शक्तिमान् न थयो त्यारे पोते खेद पाम्यो थको पोलासपुरनगरथी पाछो नीकळीने बीजे ठेकाणे चाल्यो गयो. सद्दालपुत्र सम्यक् प्रकारे धर्मने पालतो थको चौद वर्ष अतिक्रमे थके आनंदादिकनी पेठे पोषधशालामां आवीने रह्यो. त्यां चुल्लनीपितानी जेम ते श्रावकने उपसर्ग थया. पण एटलुं विशेष के चोथी वार अग्निमित्रा भार्याने हणवाना वचन देवे कह्या त्यारे ते देवने ग्रहण करवानुं आरंभे छते देव आकाशमां उडी गयो अने कोलाहल कर्या पछी अग्निमित्रा भार्या आवी ते वृत्तांत पूर्ववत् बन्यो. पछी सद्दालपुत्र एक मासनी संलेखना करी काल धर्मने पामी पहेला देवलोके अरुणाभ विमानमां उत्पन्न थयो. ते पछी ते महाविदेह क्षेत्रमां सिध्धिपदने पामशे. एवी रीते सद्दालपुत्रनो वृत्तांत छे.

आठमा श्रावक महाशतकनुं वृत्तांत.

राजगृही नगरीमां महाशतक नामे गाथापति रहेतो हतो. तेने रेवती प्रमुख तेर स्त्रीओ हती. तेनी पासे चोवीश कोटी सोनैया द्रव्य हतुं. निधान, व्याज अने व्यापारमां—आठ आठ कोटी द्रव्य रहेलुं हतुं, अने आठ गोकुल हता. तेनी मुख्य स्त्री रेवतीना पिता तरफथी आठ करोड सोनैया अने आठ गोकुलो मळ्या हता. बीजी बार स्त्रीओना पिताना घर तरफथी बार बार कोटी सोनैया अने बार बार गोकुलो आव्या हता.

एक दिवसे तेणे पण आनंद श्रावकनी पेठे श्री वीरप्रभु पासे बार व्रतो ग्रहण कर्या. विशेषमां एटलुं के, तेणे पोतानी निधाना चोवीश कोटी सोनैया

अने आठ गोकुलो राखी बाकीना रेवती प्रमुख तेर स्त्रीओना द्रव्यनो त्याग कर्यो. तेमज रेवती प्रमुख स्त्रीओ शिवाय बीजी स्त्री साथे विषयभोग करवानो पण त्याग कर्यो हतो. तेथी ते महाशतक श्रावक सुखे करी श्रावक धर्मने पालतो विचरतो हतो. एक वखते रेवतीना मनमां एवो विकल्प उत्पन्न थयो के, मारी बार शोक्योना व्याघातथी हुं मारा पति साथे एकली भोग भोगववाने शक्तिमान् थती नथी; माटे कोइ उपायथी ते शोक्योने मारी नांखु तो हुं भर्तारनी साथे एकली भोग भोगवुं अने तेम वली ते स्त्रीओना द्रव्यनी पण हुं एकलीज स्वामिनी थाउं." आवो विचार करी ते पापिणी रेवतीए कोइ छल करी पोतानी छ शोक्योने शस्त्रथी अने छ शोक्योने विष प्रयोगथी मारी नांखी अने तेमना द्रव्यनी पोते स्वामिनी थइ. आ प्रमाणे शोक्य वगरनी रेवती पोताना पति साथे एकली भोग भोगववा लागी. ते भोगनी आसक्तिथी मांस अने मदिरानी पण लोलुप बनी गइ.

एक दिवसे ते नगरीमां अमारी घोषणा थइ, आथी रेवतीने मांस मलवुं दुर्लभ थयुं. पछी तेणीए पोताना पिताना घरना खानगी पुरुषोने बोलावीने कह्युं के, "तमारे दररोज गायना बे बे वाछरडा मारीने अहिं लाववा." रेवतीना आ वचन प्रमाणे ते पुरुषो तेम करवा लाग्या. रेवती ते वाछरडानुं मांस खाइ मदिरापान करती विचरवा लागी. श्रावक महाशतके ते पछी चौद वर्ष अतिक्रमण करी पूर्वनी पेरे पुत्रने कुटुंब उपर स्थापी पोषधशालामां आवी धर्मध्यान करवा मांड्युं. आ वखते तेनी स्त्री रेवती मदिरानुं पान करी मदोन्मत्त बनी वीखराएला केशवाळी अने मस्तक उपरथी उत्तरासंग वस्त्र उतारती ते पोषधशालामां आवी. त्यां आवी पोताना भर्तारने उन्माद उत्पन्न कराववा हाव भाव देखाडती शृंगारना वाक्यो बोलवा लागी—"हे महाशतक श्रावक, तमे धर्मथी स्वर्ग तथा मोक्षादिकना वांछक थया छो. आ तमारी धर्मकरणीथी शुं थवानुं छे? तमे शा माटे मारी साथे भोग भोगवता नथी?" तेणीए आ प्रमाणे कह्युं, तोपण ते महाशतक श्रावक मौनधरीने रह्यो. तेणीना ए वचननो तेणे अनादर कर्यो. ते तो धर्मध्यानमां तत्पर थइने रह्यो हतो. रेवतीए ए प्रमाणे बे त्रणवार कह्युं, पण तेणीनो अनादर करवामां आव्यो, पछी ते पोताने स्थानके चाली गइ. ते पछी श्रावक महाशतक श्रावकनी अगीयार पडिमा आराधी अने बहु प्रकारना तप करी शरीरने सुकवी ते आ-

नंद श्रावकनी जेम मात्र नाडी तथा अस्थिवाळा शरीरने धारण करनारो थयो हतो.

एक दिवसे शुभ अध्यवसाये करी तेमने अवधिज्ञान उत्पन्न थइ आव्युं. तेनाथी ते पूर्व, दक्षिण अने पश्चिम दिशाना लवण समुद्रमां एक एक हजार योजन प्रमाण क्षेत्रने जाणनार अने जोनार थयो. बाकीनी दिशाओने पण आनंद श्रावकनी जेम देखवा लाग्यो.

एक वखते रेवती पूर्वनी जेम महाशतकने उपसर्ग करवा आवी, त्यारे ते गाथापति क्रोधायमान थइ गयो अने अवधिज्ञान प्रयोजी तेणे रेवतीने आ प्रमाणे कह्युं, " अरे रेवती, तुं नहीं प्रार्थना करवा योग्यने प्रार्थना करनारी छे. तुं सात दिवसमां अलसक......व्याधिथी पराभव पामी असमाधिवडे काळ करी पहेली नरके लोलुचय नामना नरकावासमां चोराशी हजार वर्षनी स्थिति- ए नारकीपणे उत्पन्न थइश. रेवती तेना आ वचनो सांभळी भय पामी मनमां आ प्रमाणे चिंतववा लागी—" आजे आ महाशतक मारी उपर रुष्टमान थयो छे, तेथी ते कोइ कदर्थनाथी मने मारशे. " आवुं चिंतवी ते हळवे हळवे त्यांथी पाछी ओसरीने पोताने घेर आवी अने दुःखे रहेवा लागी. ते पछी तेणी सात दिवसनी अंदर काळ करी पहेली नरके लोलुचय नामना नरकावासमां उत्पन्न थइ. आ अरसामां श्री वीर परमात्मा समोसर्या. त्यां एकठी थयेली पर्षदाने प्रभुए धर्मदेशना आपी. ते सांभळी पर्षदा पोतपोताने स्थाने गया पछी श्री वीरप्रभुए गौतम स्वामीने बोलावी श्रावक महाशतकने क्रोध उत्पन्न थया वगेरे बधो वृत्तांत जणावी आ प्रमाणे कह्युं,—" गौतम, पोषधशाळामां छेल्ली संलेखना करी जेणे पोताना शरीरने दुर्बळ कर्युं छे अने जेणे भात पाणीना पच्चखाण कर्या छे, एवो महाशतक श्रावक बीजा प्रत्ये साचा होय तोपण अप्रीति कारी वचनो बोले, ते घटित नथी; माटे तमारे महाशतकनी पासे जवुं अने तेने कहेवुं के, " हे महाशतक, तमे रेवती प्रति सत्य वचन कह्यां, पण ते अनिष्ट वचन होवाथी अघटित हता, माटे तेनी आलोयणा करो." प्रभुना आ वचनथी गौतम राजगृहनगरीमां महाशतकने घेर गया. ते गौतम मुनिने आवता जोइ श्रावक महाशतक खुशी थयो अने तेणे तेमने भावपूर्वक वंदना करी. पछी गौतमे श्री

वीरभगवानना वचनो तेमना नामथी कह्या, एटले ते महाशतके गौतम स्वामीना वचनने अंगीकार करी ते स्थानकनी आलोयणा लीधी. पछी गौतम स्वामी त्यांथी नीकळी श्री वीरप्रभुनी पासे आव्या. ते पछी महाशतक श्रावक सम्यक् प्रकारे श्रावकधर्मने पाळी, प्रांते अनशन करी अरुणावतंसक विमानने विषे देवपणे उत्पन्न थयो. त्यांथी च्यवीने ,ते महाविदेह क्षेत्रने विषे सिद्धिपदने पामशे एवी रीते महाशतक श्रावकनो वृत्तांत छे.

नवमा नंदिनीपिता श्रावकनो वृत्तांत.

श्रावस्तीनगरीमां नंदिनीपिता नामे एक गाथापति श्रावक रहेतो हतो. तेने अश्विनी नामे स्त्री हती. तेनी पासे द्रव्य अने गोकुळ आनंद श्रावकना जेटला हता, अने बार व्रत पण तेणे आनंदश्रावकनी पेठे ग्रहण कर्या हता. ते चौद वर्ष अतिक्रमण करी अनुक्रमे पुत्रने कुटुंब उपर स्थापी पोपधशालामां आवी अनेक प्रकारना धर्मकृत्योथी आत्माने भावी श्रावकनी अगीआर प्रतिमा आराधी प्रांते अरुणाभ विमानमां देवपणे उत्पन्न थयो हतो. अनुक्रमे ते महाविदेह क्षेत्रे सिद्धिपदने प्राप्त थशे. एवी रीते नंदिनीपितानो वृत्तांत छे.

दशमा तेतलीपिता श्रावकनो वृत्तांत.

श्रावस्तीनगरीमां तेतलीपिता नामे एक गाथापति रहेतो हतो, तेने फाल्गुनी नामे स्त्री हती. तेनी समृद्धि अने बार व्रत लेवानो प्रकार पूर्वनी पेठे समजवो. ते पोताना ज्येष्ठ पुत्रने कुटुंब उपर स्थापी, तेनी आज्ञाथी पोपधशालामां आव्यो अने श्रावकनी अगीआर पडिमा आराधी प्रांते सौधर्म देवलोके अरुणाभ विमानमां चार पल्योपमनी आयुष्ये देवपणे उत्पन्न थयो. त्यांथी च्यवीने ते महाविदेह क्षेत्रने विषे सिद्धिपदने प्राप्त थशे. ए प्रकारे दशमा तेतलीपिता श्रावकनो वृत्तांत छे.

आ दशे श्रावकोने पनरमा वर्षमां गृहत्याग करवानो अध्यवसाय थयो हतो, अने ते सर्वेए वीश वर्ष सुधी श्रावक पर्याय पाळ्या हता. तेमज तेओ सर्वे सौधर्म देवलोकमां समान आयुष्ये उत्पन्न थया हता. ते दश श्रावकोमां पहेला, त्रीजा,

नवमा अने दशमा श्रावकने उपसर्गो थया नथी. बाकीना छ श्रावकोने उपसर्गो थयेला छे. पहेला श्रावकने श्री गौतमस्वामी साथे प्रश्नोत्तर थया अने छठा श्रावकने देवनी साथे धर्मचर्चा थइ हती. आ दश श्रावकोना बार व्रत उपरना दृष्टांतो श्री उपासकदशांग सूत्रने अनुसारे लखेला छे. आ वृत्तांतो सांभळी बीजा पण सम्यग्दृष्टि जीवोए एवी रीते बार व्रतो पालवा तत्पर थवुं.

श्रावकनी अगीआर प्रतिमानुं स्वरूप.

" दंसण[1] वय[2] सामाइय,[3] पोसह[4] पडिमा[5] अबंभ[6] सचित्ते[7] । आरंभ[8] पेस[9] उद्दिट्ठ[10], वजए[11] समणभूए य ॥ १ ॥ "

" १ दर्शन—सम्यक्त्व प्रतिमा, २ व्रत—अणुव्रतादि, ३ सामायिक, ४ पोषध, ५ कायोत्सर्ग प्रतिमा—आ पांच प्रतिमाने विषे विधान रुपे करीने अभिग्रह विशेष रुप प्रतिमा जाणवी, ६ अब्रह्म, ७ सचित्त—ए बे प्रतिमा त्याग रुपे जाणवी, ८ आरंभ—पोतानी जाते पापक्रिया करवी ते, ९ प्रेष्य, एटले बीजाने पापकर्मनो व्यापार कराववो, १० उद्दिष्ट—एटले ते ते श्रावकने उद्देशीने सचेतन अथवा अचेतन अथवा पक्व आहारादिक ते त्रणेनो वर्जक तथा आठमी आदि प्रतिमानो धारक, ११. श्रमणभूत एटले साधुतुल्य—ए अगीआर प्रतिमा कहेवाय छे.

आ गाथार्थ थयो. हवे भावार्थ—आ प्रमाणे छे.

१ एक मास पर्यंत शंकादि दोष तथा राजाभियोग आदि छ आगार वर्जितपणे करी केवल शुद्ध सम्यक्त्वने धारण करवाथी पेहेली प्रतिमा थाय छे.

२ बे मास पर्यंत अतिचार रहित अने अपवाद वर्जित व्रतोने अने सम्यक्त्वने धारण करवाथी बीजी प्रतिमा थाय छे.

३ त्रण मास पर्यंत सम्यक्त्व अने व्रत सहित प्रतिदिन उभय संध्या सामायिक करवाथी त्रीजी प्रतिमा थाय छे.

४ चार मास सुधी प्रत्येक मासे छ पर्वने विषे चार प्रकारे पोषध करवाथी चोथी प्रतिमा थाय छे.

५ पांच मास पर्यंत स्नान रहित दिवसे प्रकाशवाला भागमां भोजन करतां अने राते सर्वथा भोजननो त्याग करतां पेहेरवाना वस्त्रनो कच्छ नहीं बांधतां दिवसे ब्रह्मचारी अने रात्रे अपर्वतिथिमां स्त्रीओनुं अने तेना भोगनुं परिमाण करतां अने पर्वतिथिए रात्रे चौटादिकने विषे कायोत्सर्ग करतां पांचमी प्रतिमा थाय छे. अहिं रात्रिभोजन वर्जवामाटे सूचव्युं छे. श्रावकोए तो केशवादिकनी पेठे कोइ काले पण रात्री भोजन न करवुं जोइए; परंतु जे कोइ श्रावक ते नियम करवाने शक्तिमान् न होय तेने पण पांचमी प्रतिमाथी आरंभीने अवश्य रात्रि भोजननो त्याग करवो. ते केशवनुं वृत्तांत आगळ कहेवामां आवशे.

६ छ मास यावत् दिवस अने रात्रिने विषे सर्वथा ब्रह्मचर्य धारण करवुं ए छट्ठी प्रतिमा थाय छे.

७ सात मास पर्यंत अचित्त अशनादिक भोगवनारने सातमी प्रतिमा थाय छे.

८ आठ मास पर्यंत आरंभनो त्याग करवाथी आठमी प्रतिमा थाय छे.

९ नव मास पर्यंत बीजा पासे पण आरंभ नहीं करावनारने नवमी प्रतिमा थाय छे.

१० दश मास पर्यंत क्षुरमुंड अने शिखाने धारण करतां अथवा उद्दिष्ट आहारनो त्याग करतां दशमी प्रतिमा थाय छे.

११ अगीआर मास पर्यंत क्षुरमुंड अथवा लोचे करीने लुप्तकेश एटले केश रहितपणे रजोहरण तथा पात्रादि साधुना उपकरणो ग्रहण करी साधुनी जेम एषणीय अशनादिकने ग्रहण करतां अद्यापि स्वजनने विषे अव्यवच्छिन्न स्नेहवाळो तथा गोचरीने अवसरे " जेणे प्रतिमा अंगीकार करेली छे, एवा श्रावकने भिक्षा आपो " ए प्रकारे बोलनारने अगीआरमी प्रतिमा होय छे.

आ काळनुं मान उत्कृष्टथी कह्युं छे. जघन्य पणे तो ते प्रत्येक अगीआर-

प्रतिमा अंतर्मुहूर्त्त प्रमाण चाली छे. ते मरण समये अथवा दीक्षा लेवामां संजवे छे, ते शिवाय संजवती नथी.

अहिं प्रथमनी सात प्रतिमा कोइ प्रकारांतरे कहेली छे, ते विषेनो विचार श्री प्रवचन सारोध्धार ग्रंथमांथी जाणी लेवो.

पूर्वे सूचवेलुं केशवनुं दृष्टांत.

कुंमिनपुर नगरने विषे यशोधन नामे एक वणिक् रहेतो हतो. तेने रंभा नामे स्त्री हती. तेणीना उदरमांथी हंस अने केशव नामे बे पुत्रो उत्पन्न थया. ते बंने पुत्रो अनुक्रमे यौवन वयने प्राप्त थया. एक वखते तेओ क्रीमा करवा माटे वनमां गया. त्यां धर्मघोष नामे एक मुनि तेमना जोवामां आव्या. तेमने जोतां ज तेओने विवेक उत्पन्न थयो. तत्काल वंदना करी तेमनी समीपे बेठा. गुरुए धर्मोपदेश आप्यो. ते उपदेशमां रात्रि जोजनने माटे आ लोक तथा परलोक संबंधी घणा दोषो बताव्या. ते आ प्रमाणे—रात्रिने विषे क्रीमा करवाने माटे निशाचर—राक्षस देवताओ स्वेछाथी जूतल उपर जमे छे, तेओ रात्रि जोजन करनाराओने तत्काल छल करे छे. जो जोजन करवा योग्य अन्नादिकमां कीडीओ आवेतो भक्षण करनारनी बुध्धिनो नाश करे छे; जो मक्षिका आवे तो वमन थाय छे, जो जू आवे तो जलोदरनो रोग थाय छे, जो करोलीओ आवे तो कोढ नीकले छे, जो वाल आवे तो गले वलगवाथी स्वरनो जंग करे छे, कांटो अथवा लाकमानो कटको आवेतो गले पीमा करे छे, जो वींछी आवे अथवा उपरथी सर्पनुं गरल पमे तो मरणांत कष्ट उत्पन्न थाय छे. ते वखते भाजन—पात्र वगेरेने धोवादिक करवामां लघु जीवोनी हिंसा थाय छे इत्यादि आ लोक संबंधी दोषो छे अने नरके पमवा रुप परलोक संबंधी घणा दोषो रहेला छे, तेथी ते रात्रिभोजनने घणा घणा दोषोथी दुष्ट मानी संसारजीरु प्राणीओए तेनो त्याग करवामां उद्यम करवो."

आ प्रमाणे गुरुना उपदेश वचन सांभळी जेमने प्रतिबोध थयो छे एवा बंने जाइओए गुरुनी साक्षीए हर्षपूर्वक रात्रिजोजनना त्यागनो नियम ग्रहण कर्यो. ते पछी गुरुने वंदना करी तेओ पोताने घेर आव्या. मध्याह्नकाले भोजन करी बंने जाइ वेपारना धंधा माटे दुकाने गया, ज्यारे बे घमी दिवस बाकी रह्यो

एटले तेओ घेर आव्या अने तेमणे मातानी पासे जोजन (वालु) माग्युं, त्यारे माताए कह्युं, " अत्यारे कांइ पण जोजन तैयार नथी, रात्रे थशे; तेथी चार घमी सुधी खमो. " माताना आवा वचन सांजळी हंस अने केशव बोल्या— "माता, तमे जे कह्युं, ते सत्य छे, परंतु अमोए रात्रिजोजननो त्याग करेलो छे, माटे जो अमोने जोजन कराववुं होय तो हमणांज आपो. " तेमना आ वचनो घरमां छाना रहेला यशोधने सांजळ्या. तत्काल तेना मनमां क्रोध उत्पन्न थइ आव्यो. तेणे मनमां आ प्रमाणे चिंतव्युं–" अरे कोइ धूर्त जरुर मारा पुत्रोने ठग्या लागे छे, नहीं तो कुलक्रमथी आवेला रात्रिजोजननो तेओ शामाटे त्याग करे ? हवे हुं तेमने बे त्रण दिवस जुख्या राखी तेमना रात्रिजोजनना त्यागना कदाग्रहने त्यजावी दउं तोज ठीक. " आ प्रमाणे चिंतवी तेज वखते कांइ जोजन आपवा थाळ ग्रहण करवाने गर्जगृहमां आवेली पोतानी स्त्री रंजाने तेणे गुप्त रीते आ प्रमाणे कह्युं, " तारे मारी आज्ञा शिवाय पुत्रोने जोजन आपवुं नहीं. " पतिनी आवी आज्ञा थतां तेणी घरमांथी पाछी आवी अने आ प्रमाणे पुत्रोने कह्युं, " पुत्रो, हाल घरमां कांइ पण पक्वान्न वगेरे खावानुं नथी, माटे रात्रे तमारे पितानी साथे जोजन करवुं. नीतिमां कह्युं छे के, " जेओ पिताना मार्गने अनुसरे तेज पुत्रो कहेवाय छे. " आ वखते ते बंनेए जरा हास्य करीने कह्युं, " माता, जे सत्पुत्र होय ते पितानो सन्मार्गी थाय छे, पण कुवामां पमता पितानी पछवामे शुं गमन कराय ? " पुत्रोना आवा वचन सांजळी माताए कह्युं के, " जे तमोने रुचे ते करो, पण आ वखते जोजनतो नहीं मळे. " माताना आ वचन सांजळी तेओ बंने मौन धरीने रह्या, पछी तेओ घरनी बाहेर चाल्या गया. ते पछी तेना मिथ्यादृष्टि पिताए अति क्रोधातुर थइ रंजाने आ प्रमाणे कह्युं, " तारे ए पुत्रोने रात्रिने विषेज जोजन आपवुं. दिवसे कदि पण आपवुं नहीं. " पतिनी आज्ञा रंजाए स्वीकारी. ज्यारे रात्रि पमी एटले ते बंने घेर आव्या, ते वखते माताए तेमने जोजन करवानुं कह्युं, पण ते धैर्यवाळा बंने पुत्रोए जोजन करवानी ना कही. बीजे दिवसे तेमना मूर्ख पिताए ते सरल चित्तवाळा बंने पुत्रोने क्रय–विक्रयना मोटा व्यापारमांज जोमी दीधा; ते वेपारमां तेमनो आखो दिवस पसार थइ गयो. तथापि ए व्यापारनो अंत आव्यो नहीं. ज्यारे रात्रि पमी त्यारे घेर आव्या. तेओ बंने पोताना नियमने अनुसरी जोजन कर्या शिवाय सुइ गया. आ प्रमाणे तेना द्वेषी पिताए तेमने ए

व्यापारमां एवा जोमी दीधा के जेथी तेमने आहार विना पांच रात्रिओ मसार थइ गइ. ते पछी छठे दिवसे रात्रे तेना कुटिलमति पिताए आ प्रमाणे सारा वचनोथी कहुं, " वत्सो, जे कार्य मने अनुकूळ अने सुखदायक होय ते तमारे इष्ट होवुं जोइए. आवी प्रतीति धारण करी हुं तमोने जे कहुं, ते प्रमाणे तमारे करवुं. वळी तमे रात्रिभोजननो त्याग कर्यो छे, ए वात मारा जाणवामां नथी, नहीं तो हुं तमोने एवा क्लेशकारी व्यापारना कार्योमां शामाटे जोडुं ? तमोए आटला दिवस भोजन कर्युं नहीं, तेथी तमारी माताए पण भोजन कर्युं नथी. तेणीने पण आजे छठो उपवास थयो छे, ते छ उपवास छ मास जेवा थइ पड्या छे, तमारी आ नानी व्हेन पण अन्न न पामवाथी अति ग्लान शरीरवाळी थइ गइ छे. में ज्यारे तेणीना शरीरनी ग्लानि थवानुं कारण पूछ्युं त्यारे तमारी माताए तमारो सर्व वृत्तांत मने जणाव्यो. माटे तमारे हवे आ बालिका उपर दया लावी भोजन करवुं जोइए एटले तमारी माता पण जमे. वळी पंडित पुरुषो रात्रिना पेहेला अर्ध पहोरने प्रदोष कहे छे अने पाछला अर्ध पोहोरने प्रत्यूष कहे छे अने तेज कारणथी रात्रि लोकोमां त्रियामा कहेवाय छे. ते अपेक्षाए जे रात्रिनेमुखे भोजन करवुं, ते निशाभोजन कहेवातुं नथी."

आ प्रमाणे पितानी वाणीथी जेने भारे क्षुधा लागी छे. तेथी विह्वळ थयेलो हंस केशवनी सन्मुख जोवा लाग्यो. पोताना मोटा भाइ हंसने कायर थयेलो जोइ पोते निश्चल चित्तवाळो थइ पिता प्रति आ प्रमाणे बोल्यो—" पिताजी, जे कांइ तमने सुखदायक होय, ते हुं करूं, पण जे मने पाप रुप होय ते तमने सुखने माटे शुं थाय ? वळी जे तमे माता वगेरेना वात्सल्य विषे कहोछो ते वात्सल्य धर्मकार्यमां शल्यरुप छे; कारणके सर्व लोक पोताना करेला कर्मना फळने भोगवे छे. ते कारणे कोण कोने माटे पापकर्म करे ? वळी जे तमे त्रियामानुं स्वरुप कहुं, ते तो कथनमात्र छे. तत्त्वथी तो दिवसना मुखे—अने अंते रहेलुं जे मुहूर्त्त ते रात्रिनुं समीपवर्त्ति होवाथी रात्रि तुल्यज छे, माटे तेमां उत्तमबुद्धिवाळाए भोजन न करवुं जोइए, अने हमणां तो रात्रिज छे, तेथी तेमां तो कदि पण भोजन थायज नहीं. पिताजी, तमारे मने ते विषयमां वारंवार कहेवुं नहीं."

आ प्रमाणे केशवनुं वचन सांभळी यशोधने क्रोधातुर थइने केशवने आ प्रमाणे कहुं, " अरे दुर्विनीत, जो तुं मारुं वचन उल्लंघेछे, तो मारी दृष्टिथी दूर जा."

पिताना आवां वचन सांजळी महाधैर्यवान् केशव तत्काल द्रव्यादिकनी ममतानो त्याग करी घरमांथी बाहेर नीकळ्यो, ते वखते हंस तेनी पछवाडे जवा लाग्यो, एटले यशोधने बलात्कारे तेने पकड्यो अने घणां वचनो कही तेने लोजावी दीधो. आथी हंस रात्रे भोजन करवाने बेठो.

हवे केशवे त्यांथी नीकळी देशांतरे जवा विचार कर्यो. मार्गमां घणां नगर, गाम तथा आराम वगेरे उल्लंघतो सात दिवस निराहारपणे एक मोटी अटवीमां आवी पोहोच्यो. ते अटवीमां रात्रि पडी एटले आम तेम जमतां घणा यात्रालुओथी युक्त एक यक्षायतन तेना जोवामां आव्युं. त्यां केटलाएक यात्रालुओ रसोइ करता तेना जोवामां आव्या. तेओए आ केशवने आवतो जोइ हर्षथी आ प्रमाणे कह्युं, " हे पांथ, अहीं आवो, अहिं आवो अने जोजन करी अमोने पुण्यनुं फल आपो; अमोए पारणुं करवानो आरंज करतां तमो अमोने अतिथि तरीके प्राप्त थया छो. अमे अतिथिनी गवेषणा करता हता. " यात्रालुओना आवां वचन सांजली केशवे कह्युं; " हे यात्रालुओ, आ केवा प्रकारनुं व्रत के जेमां रात्रे पारणुं थायछे ? " यात्रालुओ बोल्या—"हे पांथ, आ माणव नामे महा प्रजावक यक्ष छे आजे तेनो यात्रानो दिवस छे. अहिं आवेला लोको दिवसे उपवास करीने रात्रे कोइ अतिथिने जमाडी पारणुं करे छे. आम करवाथी महापुण्यनी प्राप्ति थाय छे. माटे तमे अमारा अतिथि थाओ. "

यात्रालुओना आ वचन सांजळी केशव बोल्यो–"राते अशन करवाथी पापना कारणरुप एवा आ पारणामां हुं जोजन करीश नहीं. जेमां राते पारणुं करवामां आवे, तेवो उपवास कहेवायज नहीं. धर्म शास्त्रमां आठ प्रहर सुधी जोजननो त्याग करवो, ते उपवास कहेवाय छे. वळी जेओ धर्म शास्त्र विरुद्ध तप करे छे, ते दुर्बुद्धि लोको दुर्गतिमां जाय छे. " केशवना आवां वचन सांजळी ते यात्रालुओ बोल्या—" अरे जाइ, आ देवना व्रतमां आवोज विधि छे.' माटे अहिं शास्त्रोक्त विधिनी युक्तायुक्त विचारणा करवानी नथी. अमारे अतिथिनी शोध करतां घणी रात्रि गइ छे; माटे ए विचार मुकी दइ तत्काल आ पारणुं करवाने तैयार थाओ. " आ प्रमाणे कही तेओ सर्वे उजा थइ तेना चरणमां पड्या. तोपण केशवे तेमनुं वचन मान्युं नहीं. आ समये यक्षना शरीरमांथी एक जयंकर रूपवालो पुरुष बाहेर नीकळ्यो. ते हाथमां मुद्गर लइ विकराळ नेत्रवाळो

थइ तीक्ष्ण अने रुक्षवाणीवमे केशवने आ प्रमाणे कहेवा लाग्यो—"अरे ! दुरात्मा, तुं मारा धर्मने दूषित करे छे अने मारा जक्तोनी अवगणना करेछे? तुं हमणा जलदी जोजन कर. जो नहीं करे तो तारा मस्तकना सो खंम करी नांखीश." आ वखते केशव हसीने बोल्यो—"हे यक्ष तुं मने शा माटे क्षोभ पमामेछे ? जवांतरे उपार्जित करेला प्रधान भाग्यनी ऋद्धिए करी मने मरणनो भय जरापण नथी." तेना आ वचन सांभळी ते यक्षे पोताना भक्तोने कह्युं, "हे जक्तो, आ माणसना धर्मगुरुने पकमीने लावो, तेने आनी आगळ मारे हणवो छे. कारणके, तेणे आ केशवने आवो धर्मोपदेश दीधेछे." आवुं कहेतांज ते सेवकोए जेनो केशपाश पकड्यो छे अने जे आर्त्तनाद करे छे, एवा धर्मघोष मुनिने त्यां लाववामां आव्या. अने तेमने यक्षनी आगल मुक्या. त्यारे यक्षे कह्युं, "अरे मुनि, आ तारा शिष्य केशवने अहीं जमाम, नहींतो तने हमणां हणी नांखीश." त्यारे ते मुनिए केशवने कह्युं; "जद्र, देव गुरु अने संघने माटे अकृत्य पण करवुं; माटे तुं जोजन करी ले, अने मने हणवाने तैयार थयेला एवा आ यक्षथी तुं मारुं रक्षण कर." तेना आवां वचन सांजळी केशव चिंतववा लाग्यो—"जेओ महा धैर्यादि गुणोथी संपन्न एवा धर्मघोष मुनि स्वप्नने विषे पण यथार्थ बोले नहीं, तेओ मृत्युना जयथी आवा पाप कृत्यमां अनुमति केम आपे ? माटे निश्चे आ मारा गुरुज नथी. आ यक्षनी कोइ माया लागे छे." आ प्रमाणे चिंतवी केशव मौनधरीने रह्यो. त्यारे यक्षे मुनिउपर मुद्गर उपामीने कह्युं, "अरे केशव, तुं जोजन कर नहींतो आ तारा गुरुने हणुं छुं." केशवे निःशंकताथी जणाव्युं, "अरे मायावी, आ मारा गुरु नथी. तेवा चारित्रना पात्र गुरु तारी आवी शक्तिने वश कदापि न थाय." ते वखते कल्पित मुनिए कह्युं, "अरे ! केशव, हुंज तारो गुरु छुं. मारुं रक्षण कर, रक्षण कर." आ प्रमाणे पोकार करता ते मुनिने यक्षे मुद्गरना प्रहारथी हणी नांख्यो. पछी तेणे केशवने कह्युं, "अरे ! जो तुं जोजन करीश तो आ तारा मरेला गुरुने पाछो सजीवन करीश. अने तने मोटुं अर्ध राज्य आपीश; नहींतो हुं आ मुद्गरना घा वडे तने पण यमराजनो अतिथि करीश." त्यारे केशव हसतो हसतो बोल्यो. "अरे यक्ष, आ मारा गुरु होयज नहीं, अने हुं तेना वचने करी मारा नियमनो जंग नहीं करुं; अने जो तुं मरेलाने जीवता करतो हो तो आ तारा जक्तोना पूर्वजोने

केम जीवता करतो नथी ? तेम वली तारामां जो राज्य देवानुं सामर्थ्य होय तो आ तारा भक्तोने राज्यधारी केम करतो नथी ? वली तुं मने वारंवार मृत्युनो भय बतावे छे, पण मारामां जो आयुष्यनुं बल हशे तो कोइ पण मने मारवाने समर्थ थवानो नथी. " केशवनी आ वाणी सांभळी अने तेनी दृढता जोइ यक्ष खुशी थइ गयो. तत्काल ते केशवने आलिंगन करीने आ प्रमाणे बोल्यो.

" अहो मित्र धियां पात्र न स्यादेष गुरुस्तव ।
मृता मया न जीव्यंते नैव राज्यं च दीयते " ॥ १ ॥

" अहो बुद्धिना पात्र मित्र, आ तारा गुरु नथी. मरेला (प्राणीओ) माराथी जीवता थता नथी अने माराथी राज्य आपी शकातुं नथी. " १

आ प्रमाणे ज्यारे यक्षे कह्युं, त्यारे मुनिरूपे भूमि उपर पडेलो ते यक्षनो किंकर हास्य करतो करतो उठी अने मुनिना रूपनो त्याग करी आकाश मार्गे चाल्यो गयो. आवी विचित्र मायाथी विस्मय पामेला केशवने यक्षे आ प्रमाणे कह्युं " हे मित्र, तुं सात उपवासे करी खिन्न थइ गयो छे. अने घणा मार्गनो विहार करीने थाकी गयेलो छे, माटे आ रात्रे अहिं विश्रांत था अने प्रातःकाले आ मारा भक्तोनी साथे पारणुं करजे. " आ प्रमाणे कही ते यक्षे पोतानी मायाशक्तिथी एक शय्या उपजावी तेने बतावी. पछी यक्षनी आज्ञाथी भक्तजनो जेना पग चांपेछे, एवो केशव ते शय्याने विषे सुइ गयो. ते श्रांत थयेलो होवाथी तत्काल निद्राने वश थइ गयो. चारघडी पछी प्रभात विकुर्वी निद्राथी जेना लोचन व्याप्त छे एवा केशवने यक्षे कह्युं, "भद्र, रात्रि चाली गइ. प्रभात थयेल छे, माटे निद्रानो त्याग करी जाग्रत् थाओ. " तत्काल केशव जाग्रत् थयो. दिवसना अजवाळाने अने सूर्यथी मंडित एवा आकाशने तेणे जोयुं. त्यारे ते आ प्रमाणे चिंतववा लाग्यो—" हुं रात्रिना पाछला पोहोरे सुतो होउं, तोपण ब्राह्म मुहूर्त्तमां स्वतः जागी जाउंछुं अने आजेतो अर्ध रात्रे सुतो हतो, तोपण आ अर्ध प्रहर दिवस चड्यो ते छतां केम जाग्यो नहीं, तेनुं शुं कारण हशे ? वली हजु मारा नेत्रो निद्राथी व्याप्त केम हशे ? तेमज मारा श्वासनो पवन हजु सुगंधी केम नथी ? " आ प्रमाणे चिंतवता केशवने यक्षे कह्युं,

" हे सत्पुरुष, तमे धीरपणुं छोमीदो. अने प्रजातना कृत्य करी पारणुं करो." केशव बोल्यो—" हे यक्ष, तारा यक्षपणाथी हुं ठगायो नथी. मने खात्री थाय छे के, हजु रात्रि छे. आ दिवसनो प्रकाश तारी मायाथी उत्पन्न थयेलो छे." आ प्रमाणे केशव बोलतो हतो, तेवामां तेना मस्तक उपर आकाशमांथी पुष्पनी वृष्टि थइ. अने जय जय शब्द प्रगट थयो. त्यारे केशवे पोतानी सन्मुख एक कांतिवाला दिव्य पुरुषने जोयो. अने यक्षायतन, यक्ष अने यक्षना जक्तो जोवामां आव्या नहीं. ते देवे केशवने कह्युं, हे महाधीरजवान्, हे पुण्यवानमां शिरोमणिरुप, तमारा जेवा पुरुषोनी उत्पत्तिथी आ पृथ्वी रत्नगर्जा कहेवायछे. हमणां इंद्रे पोतानी सजाने विषे रात्रि जोजनना त्यागना विषयमां तमारा धैर्यनुं अत्यंत वर्णन कर्युं ते माराथी सहन थइ शक्युं नहीं. हुं वह्नि नामे देव छुं. पछी तमारी परीक्षा करवाने माटे हुं अहिं आव्यो, पण नियमने विषे दृढ चित्तवाला एवा तमारुं एक रोम पण चलित करवाने हुं समर्थ थयो नहीं; हवे हुं तमोने खमावुंछुं. तमे मारो अपराध क्षमा करो. वळी देवनुं दर्शन निष्फल न होय, तेथी तमे मारी पासे कांइक वर मागी ल्यो; अथवा तमारा जेवा सत्पुरुषोने कोइ जातनी इच्छा होती नथी, पण मारे पोताने पोतानी जक्ति देखाडवी जोइए, तेथी हुं तमोने बे वरदान आपुं छुं. " आजथी जे कोइ रोगी पुरुष तमारा अंगने लागेला जलवडे पोताना शरीरनुं सिंचन करशे, ते तत्काल नीरोगी थशे." बीजुं तमे कदाचित् आतुरताथी जे कांइ चिंतवशो, ते कार्य सत्वर सिद्ध थशे." आ प्रमाणे बे वरदान आपी ते केशवने साकेतपुरनी पासे मुकी ते देव अदृश्य थइ गयो. केशवे पोताना आत्माने कोइ नगरनी पासे रहेलो जोयो. ते पछी सूर्योदय थतां केशव पोतानुं नित्य कृत्य करी ते नगर जोवाने अंदर गया. जतां मार्गमां कोइ प्रदेशना मध्यजागे राजादि लोकोने धर्मोपदेश आपता कोइ आचार्य तेना जोवामां आव्या. ते महामांगल्यरुप मानतो केशव तत्काल त्यां गयो अने ते गुरुना चरणमां नमी पड्यो अने पछी तेमनी आगळ बेठो. गुरुए धर्मदेशना आपी. देशनाने अंते ते नगरना राजा धनंजये गुरुने आ प्रमाणे विनंति करी—" जगवन्, हुं जराथी व्याप्त थयो छुं माटे हुं व्रत ग्रहण करुं तो ठीक, पण हुं अपुत्र छुं, तो मारा राज्य उपर कोने स्थापित करुं ? आवुं चिंतवन करतो हुं रात्रे सुइ गयो. तेवामां कोइ दिव्य पुरु-

पे स्वप्नमां आवी मने कह्युं, " काले प्रभाते देशांतरथी तारा गुरु समीपे कोइ पुरुष आवशे. ते सत्पुरुषने तारा राज्य उपर स्थापी तुं तारो मनोरथ पूर्ण करजे." आ स्वप्नथी तत्काल हुं जागृत थइ गयो. प्रभातना कृत्यो करी अहीं आव्यो. त्यां आ पुरुषने में आपनी पासे जोयो छे." राजाना आ वचन सांभली ते गुरुए ते केशवनो रात्रि भोजनना त्याग संबंधी सर्व वृत्तांत कही संभलाव्यो. आ वखते राजाए पूछ्युं, " भगवन्, मने जे पुरुषे स्वप्नमां कह्युं हतुं ते पुरुष कोण हशे ?" त्यारे गुरु बोल्या—" आ केशवनी परीक्षा करनार वह्नि नामे देवताए तने स्वप्नमां कह्युं हतुं." ते पछी राजा गुरुने नमी केशव सहित पोताना नगरमां गयो. अने मोटो उत्सव करी केशवनो राज्य उपर अभिषेक कर्यो. पछी पोते गुरु पासे व्रत लइ चाली नीकळ्यो हतो.

केशव राजा थया पछी प्रतिदिन चैत्यपूजा करतो हतो अने दीन जनोने दान आपतो हतो. तेणे पोताना प्रतापथी सीमाडाना राजाओने तावे करी लीधा हता. ते न्याय मार्गे प्रेमथी पोतानी प्रजाने पालतो हतो.

एक वखते केशव पोताना महेलना गोख उपर बेठो हतो, तेवामां तेने पोताना पितानुं स्मरण थइ आव्युं. पिताना दर्शन करवानी तीव्र इच्छा प्रगट थइ आवी. आ समये भूमि उपर तेज मार्गे चालता पिताने तेणे जोया. केशवे तत्काल पोताना पिताने ओलखी लीधा. तेज वखते ते महेल उपरथी नीचे उतर्यो, तेनी पाछल घणा सेवको दोडता चाल्या. केशव मार्गमां आवी पोताना पिताना चरणमां नमी पड्यो. केशवने ओलखीने आश्चर्य पामी गयो. केशवे कह्युं, " हे पिता, तमे एवा समृद्धिवान् हता, ते आजे रांकना जेवा केम देखाओछो ?" यशोधन पुत्रनी राज्यनी समृद्धि जोइ हृदयमां आनंद पामतो अने दुःखाश्रु वर्षावतो आ प्रमाणे बोल्यो—" हे पुत्र, तुं गया पछी में तारा भाइ हंसने रात्रे भोजन करवा बेसार्यो, अर्ध भोजन कर्या पछी तेने अकस्मात् भ्रम उत्पन्न थइ आव्यो, अने ते मूर्छा खाइ पृथ्वी उपर पडी गयो. तत्काल 'आ शुं थयुं' एम चिंतवती अने दुःखातुर थयेली तारी माता दीवो लावी अने तेणीए त्यां जोयुं, तेवामां तेना अन्नने विषे गरळ (विष) पडेलुं जोवामां आव्युं. पछी उपरना भागमां जोयुं, त्यां तुलापट्ट [मोभ] उपर रहेलो सर्प जोवामां आव्यो. आवी रीते रात्रिभो-

जनतुं फल जोइ अमो बधा कुटुंबे तने धर्मनो ज्ञाता जाणी मोटो आक्रंद करवा मांड्यो, तेथी घणा लोको त्यां एकठा थइ गया. तेवामां कोइ एक विषवैद्य त्यां आवी चड्यो. अमोए ते वैद्यने पूछ्युं के, "आ विष कोइ पण प्रयोगथी साध्य छे के नहीं ?" त्यारे तेणे कह्युं के, शास्त्रमां तिथि, वार, नक्षत्र आदि आश्रीने साध्य असाध्यपणानो विचार कहेलो छे.

ते आ प्रमाणे—

" तिथयः पंचमी पष्ट्य–ष्टमी नवमिका तथा ।
चतुर्दश्यप्यमावास्या–ऽह्निना दष्टस्य मृत्युदा ॥ १ ॥
।शेषास्तु नैवमित्यर्थः।
दष्टस्य मृतये वारा न्नानुभौम शनैश्चराः ।
प्रातःसंध्याऽस्तसंध्या च संक्रांतिसमयस्तथा ॥ २ ॥
न्नरणी कृत्तिकाश्लेषा विशाखा मूलमश्विनी ।
रोहिण्यार्द्रा मघापूर्वात्रयं दष्टस्य मृत्यवे ॥ ३ ॥
वारि श्रवंतश्चत्वारो दंशाश्च यदि शोणिताः ।
वीक्ष्यंते यस्य दष्टस्य स प्रयाति न्नवांतरम् ॥ ४ ॥
रक्तवान् दंश एको वा छिद्री काकापदाकृतिः ।
शुष्कः श्याम स्त्रिरेखो वा दष्टे स्पष्टयति व्ययम् ॥ ५ ॥
संवर्त्तः सर्वतः शोफो वृत्तः संकुचिताननः ।
दंशः शंसति दष्टस्य विनष्टमिह जीवितम् ॥ ६ ॥
केशांते मस्तके न्नाले भ्रू मध्ये नयने श्रुतौ ।
नासाग्र ओष्ठे चिबुके कंठे स्कंधे हृदि स्तने ॥ ७ ॥
कक्षायां नाभिपद्मेच लिंगे संधौ गुदे तथा ।
पाणिपादतले दष्टः स्पृष्टोऽसौ यमजिह्वया ॥ ८ ॥

" पांचम, छठ, आठम, नवमी, चौदश अने अमास–एटली तिथिओ सर्पे डशेला माणसने मृत्यु आपनारी छे, ते शिवायनी तिथिओ मृत्यु आपनारी नथी. रविवार, मंगलवार अने शनिवार एटला वार सर्पे डशेला माणसने मृत्यु आपनारा थाय छे. प्रातःकाल, सायंकाल, संक्रांतिनो समय, पण मृत्यु आपनार छे. नक्षत्रोमां, भरणी, कृत्तिका, अश्लेषा, विशाखा, मूल, अश्विनी, रोहिणी, आर्द्रा, मघा, त्रण पूर्वा (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपद) एटला नक्षत्रो सर्पे डशेला माणसने मृत्यु आपनारा छे. सर्पे डशेला माणसना जखमना चार भागमांथी जो पाणी झरतां अने रुधिरवाला देखाय तो ते माणस अवश्य मृत्यु पामे छे. ज्यां सर्प दंश मार्यो होय ते भाग रुधिरवालो, छिद्रवालो, कागडाना पग जेवी आकृतिवालो, शुष्क, श्याम अथवा त्रण रेखावालो होय तो ते डशेला माणसना नाशने करेछे. जो डंश आवर्त्त–घुमरीवालो, सर्व तरफ सोजावालो, गोळाकार अने संकुचित मुखवालो होय तो ते जीवितनो नाश सूचवेछे. केशने अंते, मस्तक उपर, ललाट, बे भ्रूकुटीनी वच्चे, आंखे, काने, नासिकाना अग्र भागे, होठे, हडपचीए, गळे, कांधे, छातीए, स्तने, काख उपर, नाभिए, लिंगे, सांधा उपर, गुद उपर अने हाथ पगने तलीए डशायलो पुरुष यमराजनी जिह्वाथी स्पर्श करायलो छे, अर्थात् मृत्यु पामे छे. १–२–३–४–५–६–७–८

शास्त्रमां आ प्रमाणे लखे छे, पण आ हंस सर्पे डशेलो नथी; परंतु तेना उदरमां गरळनो प्रवेश थयेल छे, तेथी तेमां साध्य–असाध्यनो विचार करवो शा कामनो छे ? " आवा ते विषवैद्यना वचन सांभळी में तेने पूछयुं के, "त्यारे आ हंस शा उपायथी जीवे ?" त्यारे तेणे मंत्रनुं आव्हान करीने कह्युं, "तमारो कोइ पण उपाय चालशे नहीं; तेथी तेने माटे श्रम करवो नहीं. कारण के, आ सर्पनुं विष तेना शरीरमां हलवे हलवे व्यापी जशे, अने आ बालकनी काया तेनाथी एक मास सुधी गळती जशे. पछी एक मासे तेनुं मरण नीपजशे." आवा तेना वचन सांभळी सर्व लोकोनुं विसर्जन करी तारा भाइ हंसने एक शय्यामां सुवाडी हुं पांच दिवस सुधी तेनी शी स्थिति थाय छे ते जोतो घरमां रह्यो. तेटला वखतमां तेना शरीरमां रोम रोम छिद्रो पडवा लाग्या तेथी ते मृत्यु पामी गयो. पछी हुं तारी शोध करवाने घरमांथी बाहेर नीकल्यो. हुं घणो मार्ग

उल्लंघन करी अहिं आव्यो, त्यारे पुण्ययोगें तारो अचानक मेलाप थइ आव्यो. घेरथी नीकळ्या मने आजे मास पूर्ण थाय छे. आजे ते हंसनुं मृत्यु थयुं हशे, अथवा हमणां थशे." पिताना आवा वचन सांभळी केशव अतिशय खेदातुर बनी गयो. ते पोताना मनमां आ प्रमाणे विचार करवा लाग्यो-"अहिंथी ते नगर सो योजन दूर हशे. हवे मारा जीवता बांधवनुं मुख जोवा शी रीते जावुं?" आ प्रमाणे जेवा पोते विचार करे छे, तेवामां केशवे पोताना आत्माने पिता सहित हंसनी पासे रहेलो जोयो. हंसनुं शरीर अत्यंत कोहाइ गयुं हतुं. तेनी दुर्गंध चारे तरफ प्रसरती हती, तेथी सर्व परिवारे तेने छोडी दीधो हतो. अति रुदन करवाथी जेणीना नेत्र शून्य थइ गयेला छे एवी तेनी माता तेनी पासे बेठी हती. नरकनी पीडाथी पीडित अने मृत्यु जेनी नजीक छे एवो हंस पृथ्वी उपर नां-खेलो जोवामां आव्यो. तेने जोतांज 'हुं अहिं अकस्मात् शी रीते आव्यो?' एम विचार करतां केशवे तेज वखते पोतानी समीपे पेला वह्निदेवने उभेलो जोयो. तत्काल ते देव बोल्यो—"मित्र, अवधिज्ञानथी तारी पीडा मारा जाणवामां आवतां तने आपेलुं वरदान सत्य करवाने हुं उतावळो आव्यो अने तने अहीं मुकी तारा मनोरथ में पूरा कर्या छे." आ प्रमाणे कही ते देव तत्काल अदृश्य थइ गयो. ते पछी हर्ष पामेला केशवे पोताना हस्तना स्पर्शवाळुं जल लइ हंसना शरीर उपर तेनुं सिंचन कर्युं. एटले तत्काल हंस रोगथी मुक्त थइ बेठो थयो अने तेनुं स्वरूप पूर्वना जेवुं थइ गयुं. हंसने आवो नीरोगी अने सुंदर जोइ सर्व परिवार आनंदित थइ गयो. सर्वे सानंदाश्चर्य थइ केशवना गुणोनी प्रशंसा करवा लाग्या. ते वखते बीजा रोगी अने विपनी पीडाथी पीडाता एवा घणा लोको आवी केशवना अंगने स्पर्शेला जलवडे पोताना शरीरनुं सिंचन करी नीरोगी थवा लाग्या. धर्मनो आवो प्रत्यक्ष प्रभाव जोइ तेना संबंधीओए अने बीजाओए रात्रिभोजनना त्यागनुं व्रत ग्रहण कर्युं हतुं. पछी केशवराजा पोताना कुटुंबने पोतानी राजधानी साकेतनगरमां लइ गयो. त्यां केशव चिरकाल राज्य भोगवी घणा लोकोने धर्म मार्गमां लावी अने पोते श्रावक धर्मने पाळी छेवटे सद्ग[illegible] भाजन थयो हतो. ए प्रकारे रात्रिभोजनना त्याग विषे केशवनो वृत्तांत कह्यो ॥

आ प्रमाणे अन्वय अने व्यतिरेकवाळा आ हंस केशवनो दृष्टांत विवेकी पुरुषोए रात्रिभोजनना त्यागमां उद्यमवंत थवुं. एवी रीते [illegible]८ ॥

मानुं स्वरूप कहेवामां आव्युं छे.

श्रावकने निवास करवा योग्य स्थानकनुं स्वरूप.

" न चैत्य साधर्मिक साधुयोगो, यत्रास्ति तद्ग्रामपुरादिकेषु ।
युतेष्वपि प्राज्यगुणैः परैश्च, कदापि न श्राद्धजना वसंति"॥१॥

" ज्यां चैत्यो, साधर्मिकजनो अने साधुओनो योग होतो नथी, तेवा गाम तथा नगर वगेरे कदि बीजा घणा गुणोथी युक्त होय तोपण तेमां श्रावक लोको वसता नथी. " १

अहिं बीजा गुणो एटले सारुं राज्य, जल, इंधण, धन उपार्जन करवाना व्यापारादि साधनो, कुटुंबीओ, घर, हाट अने सारां स्थानो वगेरे समजवा. जे नगरमां जिनालयो होय, साधर्मिक बंधुओ अने उत्तम धर्मनो उपदेश आपनारा साधुओ होय, तेवा गाम के नगरमां श्रावको वसेछे. ते विषे बीजे स्थले पण कह्युं छे के,—

" बहुगुण आईणेविहु, नगरे गामे च तत्थ न वसेइ ।
तत्थ नवि जइ चेइय साहम्मि य साहु सामग्गी" ॥१॥

तेनो भावार्थ उपर प्रमाणे छे.

ते नगरादिकमां वसनारा श्रावकोए केवा पडोशमां न रहेवुं ? ते कहेछे.

" पाखंडि पारदारिक—नटनिर्दयशत्रुधूर्त्तपिशुनानाम् ।
चौरादीनां च गृहा—न्त्यणे न वसंति सुश्राद्धाः"॥२॥

" पाखंडी, व्यभिचारी, नट, निर्दय, शत्रु, धूतारा, चाडीया अने चोरना घरना पडोशमां उत्तम श्रावकोए रहेवुं नहीं. " २

अहीं आदि शब्दथी क्षमा वगरना, अभिमानी, दानी, गोला, जुगारी वगेरे जाणवा. आवा पडोशमां रहेवाथी अनुक्रमे सम्यक्त्वनो नाश थाय, तेमनी कलानी अभिलाषा थाय, क्रूर परि

तना . सुवाडी तेटला वर पामी गयो. पड

उत्पन्न थाय, प्राणनो नाश थइ जाय, द्रव्यनी हानि थाय, राजदंडादिकना कष्ट उपजे, कलहनी वृद्धि थाय, इत्यादि घणा दोषो थवानो संजव छे, माटे ते वर्जवा योग्य छे.

केवो श्रावक उत्तम गणाय ?

" मातापित्रोर्भक्तः कुलशीलसमैश्च विहितविवाहः ।
दीनातिथिसाधूनां प्रतिपत्तिकरो यथायोग्यम् " ॥ १ ॥

" जे माता पितानो जक्त होय, कुल शीलमां सरखाओनी साथे विवाह करनार होय अने योग्यता प्रमाणे दीन, अतिथि अने साधुओनी बरदास करनार होय. (आवो श्रावक उत्तम गणाय छे) १.

आ उपरथी श्रावके समजवानुं के, तेणे समान कुलशीलवाळानी साथे विवाह संबंध जोडवो. विरुद्ध कुलशीलवाळानी साथे विवाह संबंध जोडवाथी निरंतर उद्वेग रहेवाने लीधे धर्मनी हानि थाय छे. वळी तेणे दीन पुरुषोने दान आपवुं अने उत्तम मुनिराजनी जक्ति करवी.

वळी कह्युं छे के,

" परिहरति जनविरुद्धं दीर्घं रोषं च मर्मवचनं च ।
इष्टः शत्रूणामपि परितापविवर्जको जवति" ॥१॥

उत्तम श्रावक लोकविरुद्ध, दीर्घकालनो रोष अने मर्मवचननो त्याग करे छे अने शत्रुओने पण इष्ट होय छे तेमज परिताप करतो नथी. " १

वळी कह्युं छे के,

" सव्वस्स चेव निंदा विसेसओ तहय गुणसमिद्धाणं ॥
उज्जुधम्माणं हसणं रीढा जणपूयणिज्जाणं ॥ १ ॥
बहुजणविरुद्धसंगो देसाचारस्स लंघणा चेव ।
पमाइयाइं इच्छई लोगविरुद्धाइं नेआइंति " ॥ २ ॥

अर्थ—सर्व प्राणीओनी निंदा—विशेषे करीने गुणोवडे समृद्ध थयेला

जनोनी निंदा, सरल स्वभावी माणीओनी मश्करी, पूज्य जनोनी हेलना, बहु जनना विरोधी मनुष्यनो संसर्ग, देशाचारनुं उल्लंघन करवुं, विगेरे आ सर्व लोकविरुद्ध जाणवा.

वळी श्रावके पासथ्थादिकना अब्रह्म सेवा वगेरे दुराचार जोइने धर्मनी विमुखता करवी नहि. कह्युं छे के—

" पासथ्थाईए फुरं अहम्मकम्मं निरिक्खिए तहवि ।
सिढिलो होइ न धम्मे एसो च्चिय वंचिओत्ति मइ" ।१।

आ गाथानो अर्थ उपर प्रमाणे छे, मात्र चोथा पदनो अर्थ एवो छे के, ते विचारो रांक कर्मे करीने ठगाणो छे एटले के जेणे कल्पवृक्षना माहात्म्यने नीचुं करेलुं छे तथा जे समस्त सुख आपवाने समर्थ छे तेवुं आ अपार संसारसमुद्रमां तारवाने यानपात्र समान अति निर्मल चारित्र पामीने उपर कह्या प्रमाणे प्रवर्त्तेछे—माटे ते कर्मवडे ठगायो छे.

वळी कोइ मुनिने स्खलित जोइने तेनी उपर निःस्नेहपणुं राखे नहीं. परंतु ते एकांतपणे ते मुनिने मातापितानी जेम शिक्षा आपे छे. तेने माटे कह्युं छे के,—

" साहूस्स कहवि खलिअं दट्ठूण न होइ तत्थ निन्नेहो ।
पुण एगंते अम्मा पिउव्वसे चोअणं देइ" ॥ १ ॥

" आ गाथानो अर्थ उपर आवी गयो छे. आथी करीने श्रावक साधुना मातापिता समान छे एम सूचव्युं छे.

ठाणांग सूत्रमां चार प्रकारना श्रमणोपासक श्रावको कहेला छे—१ मातापिता समान, २ भाइ समान, ३ मित्र समान अने ४ सपत्नी—शोक्य समान. ते चार प्रकारना श्रावकोने माटे आ प्रमाणे गाथा छे.

" चिंतइ मुणिकज्जाइं न दिट्ठ खलिओ वि होइ निन्नेहो ।
एगंत वच्छलो मुणि—जणस्स जणणीसमो सड्ढो" ॥१॥

" मुनितुं कार्य चिंतवे, मुनिने स्खलित जोइ स्नेह रहित न थाय

अने मुनि उपर एकांते वात्सल्य राखे, तेथी श्रावक मुनिने मातापिता समान थाय छे." १

हवे श्रावक भाइ समान केवी रीते थाय छे ? ते कहे छे—

" हियए ससिणेहोच्चिय मुणीण मंदादरो विणयकज्जे ।
भाउसमो साहूणं पराभवे होइ सुसहाओ" ॥ १ ॥

" मुनिने माटे हृदयने विषे स्नेहवाळो, विनय कार्यमां मंद आदरवाळो अने पराभवमां सहायभूत थनारो श्रावक मुनिने भाइ समान छे. १

श्रावक मित्र समान केवी रीते ते कहे छे.

" मित्तसमाणो माणाईहिं रूसइ अपुच्छिउं कज्जे ।
मन्नंतो अप्पाणं मुणीण सयणाउ अब्भहिअं " ॥१॥

" मुनिने पोताना कुटुंबथी अधिक मानतो अने मानादिकने विषे रोष करनारो अने पुछया वगर कार्य करनारो, ते श्रावक मुनिने मित्र समान छे. १

श्रावक मुनिने शोक्य समान केवी रीते थाय छे ? ते कहे छे—

" थद्धो छिद्दप्पेही पमाय खलिआणि निच्चमुच्चरइ ।
सड्ढो सवक्किकप्पो साहुजणं तणसमं गणइ" ॥ १ ॥

" स्तब्ध, मुनिना छिद्र जोनारो, ' आ मुनि प्रमादी अने स्खलित छे ' एम नित्य बोलनारो, अने साधुजनने तृण समान गणनारो श्रावक मुनिने शोक्य समान छे. १

श्रावकनुं संक्षिप्त आन्हिक.

"प्रबुध्य दोषाष्टमभागमात्रे स्मृत्वोज्ज्वलां पंचनमस्कृतिं च ।
अव्यापृतोऽन्यत्र विशुद्धचेता धर्मार्थिकां जागरिकां स कुर्यात्॥१।

" रात्रिने आठमे भागे एटले चार घडी रात्रि बाकी रहे त्यारे श्रावके जागीने उज्ज्वल एवा पंच नमस्कारनुं स्मरण करवुं. पछी बीजा काममां जोडाया

वगर-एटले गृहकार्यमां लाग्या शिवाय शुध्ध हृदयवाला थइ धर्मजागरिका करवी." १

ते धर्मजागरिका शी रीते करवी ? ते कहे छे—

" कोऽहं का मेऽवस्था, किं च कुलं के पुनर्गुणा निगमाः।
किं न स्पृष्टं क्षेत्रं, श्रुतं न किं धर्मशास्त्रं च " ॥ १ ॥

" हुं कोण छुं ? मारी शी अवस्था छे ? मारुं कुल शुं छे ? मारामां केवा गुणो छे ? में केवा नियमो कर्या छे ? में क्या क्षेत्रने स्पर्श्युं नथी ?. अने में शुं धर्मशास्त्र सांभळ्युं नथी ? " १

ते विषे विशेष कहे छे. रात्रे निद्राथी मुद्रित एवा लोचनवाला श्रावके प्रथम उठी चित्तनी पटुता प्राप्त कर्या शिवाय तेणे चिंतववुं के, हुं कोण छुं ? हुं मनुष्य छुं के देवता छुं ? हुं मनुष्य छुं तो मारी शी अवस्था छे ? हुं बाल्यावस्थामां छुं के यौवन अवस्थामां छुं ? जो यौवन अवस्थामां होउं तो मारामां बाल्यचेष्टाओ अने वृद्धचेष्टाओ न थाओ. हुं युवावस्थावालो छुं, तो पछी मारुं कुल शुं छे ? श्रावक कुल छे के बीजुं कुल छे ? जो मारुं श्रावक कुल छे, तो मारामां केवा गुणो छे ? मूल गुणो छे के उत्तर गुणो छे ? वली में केवा नियमो-अभिग्रहो धारण करेला छे? उत्ते वैळवे १ जिनभुवन, २ बिंब, ३ प्रतिष्ठा, ४ पुस्तक, ५-६-७-८ चतुर्विध संघ, अने ९ शत्रुंजयादि तीर्थयात्रा-आ नव लक्षणवाला नव क्षेत्रोने विषे में क्या क्षेत्रो स्पर्श्यां नथी ? धर्मशास्त्रमां दशवैकालिक वगेरेमां में शुं शुं नथी सांभळ्यां ? माटे हुं क्षेत्र स्पर्शवाने माटे तथा धर्मशास्त्र सांभळवाने माटे उद्यम करुं. वली ते श्रावक के जेने आ संसारने विषे वैराग्य उत्पन्न थयो छे, ते दीक्षा लेवाना ध्यानने मुकतो नथी. जेने ते समये बीजो व्यापार नथी एटले ते दीक्षाना अभिलाषथी आ प्रमाणे चिंतवे छे—" ते वज्रस्वामी प्रमुखने धन्य छे के जेमणे बाल्यावस्थाने विषे समग्र दुःखो जेथी निवारण थाय तेवा संसारना कारणोनो त्याग करी शुध्ध हृदयथी संयमनो मार्ग सेव्यो छे अने हुं तो अद्यापि गृहस्थावासरुपी पाशमां पडेलो ते मार्ग सेववाने शक्तिमान् थयो नथी; तेथी मारे तेवो शुभ दिवस क्यारे आवशे के ज्यारे हुं मारा आत्माने धन्य मानतो संयम मार्गने अंगीकार करीश."
(इत्यादि श्लोकमां कह्युं नथी तोपण जाणी लेवुं.)

आ प्रकारे रात्रिने शेष जागे चिंतवन करी पछी श्रावक शुं करेछे ते कहेछे–

" विभाव्य चेत्थं समये दयालुरावश्यकं शुद्धमनोंगवस्त्रः ।
जिनेंद्रपूजां गुरुवंदनं च, समाचरेन्नित्यमनुक्रमेण " ॥१॥

" दयालु एवा श्रावके ए पूर्वोक्त प्रकारे एटले रात्रि मुहूर्त्तमात्र बाकी रहे त्यारे सामायिकादि प्रत्याख्यान पर्यंत लोकोत्तर भावपूर्वक आवश्यक करवा. जो ते व्याकुलपणाने लइने षडावश्यक करवाने अशक्त होय तो ते निश्चे करी यथाशक्ति प्रत्याख्यान आवश्यक चिंतवे, तेने माटे कह्युं छे के, " श्रावके जघन्यथकी नमस्कार सहित प्रत्याख्यान तो करवुंज. " ते पछी सूर्यनुं अर्धबिंब जोवामां आवे त्यारे शुद्ध अने मनोहर वस्त्र अंगे धारण करी जिनेंद्रनी पूजा आचरेछे. ते पूजाने माटे प्रथम यतनाए करीने विधिपूर्वक घर देरासरनी पूजा करी पछी पूजाना उपकरण ग्रहण करी महोत्सवपूर्वक श्री जिनालयमां जइ मुखकोश बांधी दश त्रिक, पांच अभिगम इत्यादि शास्त्रोक्त विधिपूर्वक जिनपूजन करे छे. [पूजाना भेदोनुं व्याख्यान श्री ज्ञाताधर्मकथा आदि सिद्धांतने अनुसारे प्रथम प्रकाशमां आपेलुं छे त्यांथी जाणी लेवुं.]

प्रथम जे कह्युं के, " शुद्धमनोंग वस्त्रः " ते आ प्रकारे–प्रथम सर्व सावद्य अध्यवसायनुं वर्जवुं, ते मननी शुद्धि. ते पछी निर्जीव एटले कचरा रहित तथा पोलाश विनानी भूमिने विषे अल्पजल अने हस्तना बहु व्यापारवडे सर्वांग स्नान करवुं, ते अंगशुद्धि. ते पछी पवित्र, श्वेत, अखंडित वस्त्र धारण करवा ते वस्त्रशुद्धि. आ प्रमाणे मन, अंग अने वस्त्रनी शुद्धि करवी. स्नानवडे देहशुद्धि कर्या शिवाय देवपूजा कराय, एम कदि पण मानवुं नहीं. कारण के, तेम करवाथी आशातना थवानो प्रसंग आवे छे. जन्म पर्यंत निर्मल शरीरधारी देवताओ पण विशेष शुद्धिने माटे स्नान करीनेज देवपूजा अर्थे प्रवर्त्तेछे तो जेने नव अने अगीयार प्रवाह निरंतर स्रवता छे अने जे दुर्गंधी मलवाला छे एवा मनुष्योथी स्नान कर्या विना जिनपूजा केम कराय ? ए कारणने लइने देवपूजा करनारने सिद्धांतमां ठेकाणे ठेकाणे " एहाया कय बलिकम्मा " " न्हाइने जेणे पूजा करी छे. " एम विशेषण आपेलुं छे.

अहिं प्रश्न करे छे के, " यतनामां तत्पर एवा श्रावकोने बहु आरंभपणुं होवाथी स्नान करवुं अनुचित छे. " तेना उत्तरमां कहे छे के, " एम कहेवुं नहीं, कारण तो पछी जल, धूप, पुष्प वगेरे आरंभना हेतु होवाथी, तेमनो पण निषेध आवी पडशे, माटे पंडितोने तेनो निषेध करवो इष्ट नथी. कह्युं छे के,—

" छज्जीव कायसंयमा, दव्वथ्थ एसोवि सुझइ कसिणो ।
तो कसिण संयमविऊ, पुप्फाइय न इच्छंति " ॥ १ ॥

" छ जीवनिकायनी यतनावंत होय ते द्रव्यस्तवथी विराम पामे, तेथी संपूर्ण यतनावंत होय ते पुष्पादिकने इच्छता नथी. "

अथवा—

" अकसिणपवत्तयाणं, विरयाविरयाण एस खलुजुत्तो ।
संसार पयणुकरणे, दव्वथ्थए कूवदिट्टंतो " ॥ १ ॥

" असंपूर्ण चारित्रने विषे प्रवर्त्तनारा एवा विरताविरती श्रावकोने संसार पातळो-लघु करवा माटे कुवाना दृष्टांते करी द्रव्यस्तवमां प्रवर्त्तन युक्तज छे. " १

इत्यादि आगम प्रमाणे छे, माटे हवे ते विषे विशेष विस्तार करवानी जरुर नथी.

देवपूजा कर्या पछी श्रावक विनयपूर्वक गुरुवंदन आचरे, ते कहे छे—

"शृंगी यथा क्षारजले पयोनिधौ वसन्नपि स्वाडुजलं पिबेत्सदा ।
तथैव जैनामृतवाणिमादरा—द्भजद्गृही संसृति मध्यगोऽपि सन्॥१।

" जेम शृंगी जातनो मत्स्य खारा जळवाळा समुद्रमां वसता छतां पण सदा मीठुं जळ पीवेछे, तेम संसारना मध्यमां रहेलो पण गृहस्थ श्रावक जैन आगमनी अमृत जेवी वाणीने आदरथी सेवेछे. " १

ते पछी श्रावके बाळ तथा ग्लानादिक साधुउने प्रभाते खावा योग्य एवा औषधादि लावी देवा यत्नवान् थवुं. आ वात दर्शावी नथी तोपण जाणी लेवी. ते पछी श्रावके शुं शुं करवुं जोइए ? ते कहे छे—

" द्रव्यार्जनं सद्व्यवहार शुद्धया, करोति सद्भोजनमादरेण ।
पूजादिकृत्यानि विधाय पूर्वं, निजोचितं मुक्तविशेषलौल्यः" ॥१॥

ते पछी श्रावक व्यवहारशुद्धिवडे द्रव्योपार्जन करे छे. त्यार बाद पहेला मध्यान्हकाल संबंधी देवपूजा करीने, मुनि महाराजाओने दान आपीने अने वृद्ध, आतुर, अतिथि अने पशु वगेरेनी चिंता करीने विशेष लोलुपतानो त्याग करी श्रावक पोताने योग्य एवुं भोजन आदरथी करे छे. योग्य एवुं भोजन एम कहेवानो आशय एवो छे के, सूतकवालुं भोजन लोकविरुद्ध होवाथी, अनंतकायादिवडे व्याप्त एवुं भोजन आगमविरुद्ध होवाथी अने मद्यमांसादिकनुं भोजन उभयलोक--शास्त्र विरुद्ध होवाथी श्रावक करतो नथी, तेम लोलुपपणाथी पोताना जठराग्निना बलनो विचार कर्या वगर श्रावक अधिक भोजन करे नहीं. कारण के, अधिक भोजन करवाथी वमन, विरेचन आदि रोगनी उत्पत्ति अने तेमांथी मरण प्रमुख बहु अनर्थ उत्पन्न थाय छे; तेथी जे मितभोजन करे छे ते पछी धर्मशास्त्रनो परमार्थ चिंतवी योग्य व्यापारमां दिवसना त्रीजा पोहोरनुं निर्गमन करे छे. सूर्य अस्त थतां पहेला संध्याकाले जिनपूजा करे छे. जो द्विभुक्त [बेशणा]नुं प्रत्याख्यान कर्युं होय तो चार घमी दिवस बाकी रहे त्यारे व्यालु करेछे, ए श्लोकमां कहेल नथी तोपण जाणी लेवुं.

त्रिकाल जिनपूजानो विधि.

" प्रातः प्रपूजयेद्वासै र्मध्यान्हे कुसुमैर्जिनम् ।
संध्यायां धूपनैर्दीपैस्त्रिधा देवं प्रपूजयेत् " ॥ १ ॥

"प्रातःकाले जिनेश्वरने वासक्षेपथी पूजवा, मध्यान्हे पुष्पोथी पूजवा अने संध्याकाले धूपदीपथी पूजवा—एम जिनदेवने त्रिकाल पूजवा. " १

इति श्रावक दिन कृत्य.

श्रावक रात्रि कृत्य संक्षेप.

" कृत्वा षडावश्यकधर्मकृत्यं, करोति निद्रामुचितक्षणे च ।
हृदि स्मरन् पंच नमस्कृतिं स, प्रायः किलाब्रह्म विवर्जयंश्च"॥१॥

" ते पछी श्रावक षडावश्यकरूप धर्मकृत्य [प्रतिक्रमण] करीने योग्य अवसरे निद्रा करे छे. [ते वखते ते शुं करे छे ? ते कहे छे.] ते समये हृदयने विषे पंचपरमेष्ठी नमस्कारनुं स्मरण करेछे अने प्राये करीने अब्रह्मनो परिहार करेछे अने तेम करतां निद्रा करेछे. अहिं प्राये करीने कह्युं छे, तेनो हेतु एवो छे के, ऋतुकाले संतानने अर्थे तथा वेदोदय शमाववाने अर्थे तेमज पोतानी विवाहित स्त्रीने अब्रह्म सेवानो अनियम होइने अब्रह्म सेवा बनी आवे छे. तेम वळी श्रावक मैथुन भावमां अत्यंत लोलुप न थाय, ते पण सूचव्युं छे. ए रीते श्रावकना अहोरात्रना कृत्यो संक्षेपमां कहेवामां आव्या छे.

हवे उपर कहेल देवपूजाना विषयमां विशेष कहेवामां आवे छे. कारण के वारंवार जिनपूजानुं विधान मोटा पुण्यना लाभनुं कारण छे. तेने माटे कह्युं छे के,

" वीसेसइड्ढिजणणी, दुग्गइदालिद्दुक्खनिद्दलणी ।
दंसणसुद्धि निमित्तं, पुणो पुणो कीरए पूआ " ॥ १ ॥

" समस्त विशेष ऋद्धिने उत्पन्न करनारी अने दुर्गति, दारिद्र तथा दुःखने दळनारी एवी जिनेश्वरनी पूजा दर्शनशुद्धिने माटे वारंवार कराय छे." १

हवे स्थानांग नामना त्रीजा अंगना चोथा ठाणामां कहेली श्रावक संबंधी चार विश्राम भूमिओ देखाडे छे. जेमके व्यवहारमां,

जत्थणं अंसाओ अंसं साहरइ १, जत्थ वियणं उच्चारं पासवणं वा परिठवेइ २, सुवणकुमारावासंसि वा जत्थ वियणं नागकुमारावासंसि वासं उवेइ ३, जत्थ वियणं आवकहाए चिट्ठइ ४.

अर्थ—[१] जे अवसरे एक स्कंध उपरथी बीजा स्कंध उपर स्थापन करे,

[२] जे स्थाने मलमूत्र परठवे, [३] जे स्थाने नागकुमार अथवा सुवर्णकुमार असुरोना वासमां वासो ले—रात्रि रहे [४] जे स्थाने यावज्जीव रहे.

[१]ए प्रकारे श्रावकने चार विश्राम (विशामा) कहेला छे. कह्युं छे के,—

" जत्थणं सिलव्वयगुणव्वय वेरमण पच्चक्खाण पोसहोववासाइ पडिवज्जइ " ॥ १ ॥

" जत्थ विअणं सामाइयं देसावगासियं वा पडिवज्जइ"॥२॥

" जत्थ वियणं चाउद्दसिठ्ठद्दिट्ठपुण्णिम्मासीसु पडिपुन्नं पोसहं सम्मं अणुपालेइ " ॥ ३ ॥

" जत्थ वियणं अपच्छिमं मारणंतियसंलेहणा झूसणा झूसिए भत्तपडिआइक्खिए पाओवगए कालं अणवकंख माणे विहरइ " ॥ ४ ॥

अर्थ—[१] ज्यां अणुव्रत, गुणव्रत, विरमणव्रत, प्रत्याख्यान अने पोपधोपवासादि अंगीकार करे, [२] जे स्थाने सामायिक करे अथवा देशावकाशिकने आदरे, [३] जे स्थाने चतुर्दशी अष्टमी अमावास्या पूर्णिमाने दिवसे परिपूर्ण अहोरात्र पोपधव्रतने सम्यक् पाले, [४] जे स्थानमां मृत्यु समयनी संलेखना करवावमे कषायने पातळा करवापणुं अंगीकार करे, अणसण करे अने पादोपगमन करीने जीवित अने मरणने अणइच्छतो विचरे.

श्रावकना सद्भूत गुणोनुं वर्णन.

" जिनप्रणीतार्थविदो यथार्थ—सद्वाग्युतोऽपास्तमतांतरस्थाः ।
स्वकीय धर्मोज्ज्वल मार्गमग्नाः श्रद्धालवः शुद्धधियो जयंतु"॥१॥

" जिनप्रणीत एवा अर्थने जाणनारा, यथार्थ सत्य वाणी बोलनारा, मतमतांतरने दूर करनारा, पोताना धर्मना उज्ज्वल मार्गमां मग्न रहेनारा, श्रद्धालु अने शुद्ध बुद्धिवाला श्रावको जय पामो. " १

विशेषार्थ—जे श्रावको श्री जिनेश्वरे प्ररूपेला यथास्थित जीवाजीवादि

१ जेम कोइ भारवाही मनुष्य आ प्रकारे चार विसामा लीए तेम श्रावकने माटे नीचेना चार विसामा छे; अत्र दृष्टांत दार्ष्टांतिक छे.

पदार्थोना जाणनारा होय. मंडुक श्रावकनी जेम यथार्थ वचननी युक्तिवमे निरुत्तर करवाथी मतांतरीओ--कुलिंगिओने जेमणे पराभव करेला होय, जेओ पोताना धर्मना उज्ज्वल मार्गने विषे लीन थयेला एटले एकाग्र चित्तवाला होय, जेओ शुद्ध बुद्धिना धारक अने श्रद्धालु होय, तेवा श्रावको जय पामो. १

मंडुक श्रावकनो वृत्तांत.

[पंचमांग विवाहप्रज्ञप्तिमांथी संक्षिप्त.]

राजगृहीनगरीनी समीपे गुणशील नामे एक चैत्य छे. ते चैत्यना समीपना नागमां कालोदायी शैवालोदायी प्रमुख घणा अन्य तीर्थीओ वसता हता. एक वखते तेओ बधा एकत्र थया अने तेमनी वच्चे मांहोमांही वादविवाद थइ आव्यो. जे श्री महावीरस्वामी धर्मास्तिकायादि पांच अस्तिकायोने प्ररूपेछे, तेमां धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय अने पुद्गलास्तिकायने अचेतन अने जीवास्तिकायने सचेतन प्ररूपेछे. तेम वली धर्म, अधर्म, आकाश, जीव--अस्तिकायोने अरूपी अने पुद्गलास्तिकायने रूपी प्ररुपेछे, ए प्रकारे सचेतन--अचेतनादिरुपे करीने अदृश्यपणुं होवाथी ते शीरीते मनाय ?" आ प्रमाणे तेमनी मांहेमांही आलाप--संलाप थयो हतो.

हवे ते राजगृहनगरमां मंडुक नामे एक श्रावक रहेतो हतो. ते महान् समृद्धिवालो, सर्वलोकमान्य, जीवाजीवादि पदार्थोना स्वरूपने जाणनार, अने निरंतर धर्मकृत्यवमे आत्माने नावनार हतो. ते सुखेकरी काल निर्गमन करतो हतो.

एक वखते श्री वीर नगवान् गुणशील चैत्ये आवी समोसर्या. प्रनुना आगमननी वार्त्ता सांनळी ते मंडुक श्रावक अत्यंत आनंदथी प्रनुने वंदना करवा नीकळ्यो. जेवामां ते नगरनी बाहेर नीकली पेला अन्य तीर्थिओनी अति नजीक नहीं तेम अति दूर नहीं एम आव्यो, तेवामां ते तीर्थिओनी दृष्टिए आव्यो. तत्काल तेओ एकता थइ तेनी पासे आव्या अने आ प्रमाणे बोल्या--" हे मंडुक, तारो धर्माचार्य जे पंचास्तिकायादिकनी प्ररूपणा करे छे, ते शी रीते मनाय ? तेमने शी रीते जणाय ? " मंडुके कह्युं, " जे धर्मास्तिकायादिके कर तेना कार्य कराय छे, ते कार्य उपरथी ते धर्मास्तिकायादिकने अमे जाणीए छीए. जेम

धुमाडाथी अग्नि जणाय छे, तेम तेमना कार्य उपरथी ते जणायछे. वळी जो तेओथी कार्य करातुं न होय तो अमाराथी न जाणी शकाय. एटले कार्यादिक लिंगद्वारे करीनेज छद्मस्थ जीवोने अतींद्रिय पदार्थोनुं ज्ञान थाय छे; तेम वळी धर्मास्तिकायादिकनुं कार्यादिलिंग अमोने प्रतीतवाळुं देखातुं नथी ते प्रसंगे तेना अभावथी अमे नथी जाणता."

आ वखते धर्मास्तिकायादिक संबंधी अपरिज्ञानने अंगीकार करता मंडुकने उपालंभ आपतां ते अन्य तीर्थीओ बोल्या—"हे मंडुक, जो तुं आ अर्थने जाणतो नथी तो तुं श्रावक केम ?"

आवा उपालंभथी ते मंडुक श्रावक जेमणे अदृश्यमानपणे धर्मास्तिकायादिकनो असंभव कहेलो छे, तेमनो ते विषय खंडन करवा आ प्रमाणे बोल्यो—"हे आयुष्मंत, वायुकाय वाय छे ? त्यारे तेमणे कह्युं, 'हा, वाय छे.' मंडुके पूछ्युं, "तमे ते वायुकायने वातरुप देखो छो ?" तेमणे उत्तर आप्यो, "ए पदार्थ समर्थ नथी, एटले रूप देखता नथी."

मंडुक—गंधवाळा पुद्गलो छे ?
अन्यतीर्थिओ—हा, छे.
मंडुक—त्यारे तमे घ्राणसहगत पुद्गलोना रूपने देखो छो ?
अन्यतीर्थिओ—नथी देखता.
मंडुक—काष्ट सहचारी अग्निकाय छे ?
अन्यतीर्थिओ—हा, छे.
मंडुक—त्यारे तमे अग्निकायना रूपने देखो छो ?
अन्यतीर्थिओ—नथी देखता.
मंडुक—समुद्रनुं रूप पारगत छे ?
अन्यतीर्थिओ—हा, छे.
मंडुक—तमे ते देखी शको छो ?
अन्यतीर्थिओ—नथी देखता.
मंडुक—देवलोक संबंधी रूप छे ?
अन्यतीर्थिओ—हा, छे.

मंडुक—त्यारे ते रूपने तमे देखो छो.

अन्यतीर्थिओ—नथी देखता.

मंडुक—हे आयुष्मंतो, हुं तमे अने बीजा छद्मस्थ जीवो ज्यारे ते देखता नथी तो शुं ते सर्व नथी? तमारा मत प्रमाणे तो घणा लोको पण न होय. आवा प्रश्नोथी ते अन्यतीर्थिओने निरुत्तर करी दीधा. ते पछी मंडुक श्रावक गुणशील चैत्यने विषे रहेला श्री वीरस्वामी पासे जइ वंदनापूर्वक योग्य स्थाने बेठो त्यारे भगवाने मंडुकने कह्युं, " भद्र, तुं शोभनिक छे. कारण के तें अस्तिकायोने न जाणतां छतां अन्यतीर्थिओनी आगळ हुं नथी जाणतो एम कह्युं. जो तुं अजाणतो छतो ' हुं जाणुं छुं, ' एम कह्युं होत तो तुं अरिहंतादिकनी आशातना करनारो थात. " प्रभुना आवां वचन सांभळी मंडुक खुशी थइ गयो. पछी प्रभुने वंदना करी धर्मदेशना सांभळी पोताने स्थाने चाल्यो गयो. आयुष्यना क्षयथी अरुणाभ नामना विमानमां प्रथम देवलोके उत्पन्न थयो. ते पछी त्यांथी च्यवी महाविदेह क्षेत्रमां सिद्धिपदने प्राप्त थशे.

एवी रीते मंडुक श्रावकनुं वृत्तांत कहेवाय छे.

उपर प्रमाणे श्रावकपणुं पामी ते पाळवाने माटे सर्वथा प्रमादनो परित्याग करवो जोइए. ते कहे छे—

" निशम्य विप्रोपनयं सुधीभिः प्रमादसंगोऽपि न कार्य एव ।
इहोत्तरत्रापि समृद्धिहेतौ, महोज्वलेऽस्मिन्निजधर्मकार्ये" ॥१॥

" सारी बुद्धिवाला भव्यप्राणीओए दरिद्र ब्राह्मणनुं उपनय-दृष्टांत सांभळी आलोक तथा परलोकमां समृद्धिना कारणरुप एवा महान् उज्वल पोताना धर्मकार्यमां प्रमादनो संग पण न करवो जोइए. " १

ते दरिद्र ब्राह्मणनुं दृष्टांत.

कोइ नगरमां जन्मपर्यंत दरिद्री अने वणोज आलसु एक ब्राह्मण रहेतो हतो. एक दिवसे ते पोतानी स्त्रीनी प्रेरणाथी दान लेवा माटे राजानी पासे गयो. तेणे ' चिरकाल जीवो ' इत्यादि आशीष आपी. आकृति उपरथी तेने दरिद्री जाणी अनुकंपाथी पूरित हृदयवाळे राजाए कह्युं, " हे विप्र, सूर्यास्त थया अगाउ

तारी इच्छा प्रमाणे मारा भंडारमांथी द्रव्य लइ तारुं घर पूर. हुं तेवी आज्ञा आपुंछुं." आ प्रमाणे कही ते आज्ञानी साथे पोताना नामथी अंकित पत्र लखावीने ते विप्रने आप्यो. तेथी खुशी थइ ब्राह्मणे ते पत्र लइ पोताने घेर आवी ते वृत्तांत पोतानी स्त्रीने जणाव्युं. एटले स्त्रीए कह्युं, "स्वामी, सत्वर त्यां जाओ अने पूरतुं द्रव्य लइ आवो." कारण के, नीतिशास्त्रमां कह्युं छे के, "श्रेय कार्योमां विघ्न घणा होय छे." ब्राह्मणे कह्युं, "प्रिया, नीतिशास्त्रमां कह्युं छे के, "शतं विहाय भोक्तव्यं" "सो काम पड्या मुकीने जमवुं." माटे हुं भोजन कर्या पछी स्थिर चित्तवालो थइ पछी द्रव्य लेवाने माटे जइश." पतिना आवां वचन सांभळी स्त्री पाडोशीने घेरथी आटो लावी, तेने पकावी पतिने जमाड्यो. अने पछी तेणीए कह्युं, "स्वामी, हवे शीघ्र जइ पोतानुं कार्य साधो." पतिए कह्युं, "शास्त्रमां कह्युं छे के, "जो जम्या पछी सुवानुं न मळे तो सो डगलां चालवुं." माटे क्षणवार शयन कर्या पछी जइश." आ प्रमाणे कही ते विप्र सुइ गयो. प्राये करीने दरिद्रीने निद्रा घणी होय छे, तेथी ते एवी गाढ निद्रामां सुतो के, तेनी स्त्रीए घणा छांटा नाख्या अने तेना हाथ पग हलाव्या छतां ते दिवसने त्रीजे पोहोरे मांड मांड जागृत थयो. ते पछी स्त्रीनी प्रेरणाथी ते दरिद्री ब्राह्मण घेरथी नीकळ्यो, पण मार्गमां जतां चौटामां एक नाटक थतुं तेना जोवामां आव्युं, त्यारे तेणे चिंतव्युं के, "हजु दिवस घणो छे, माटे नाटक जोया पछी द्रव्य लेवाने माटे राजद्वारमां जइश." आ प्रमाणे चिंतवी तेणे पूर्ण रीते नाटक जोयुं. ते जोया पछी ते आगळ चाल्यो. मार्गमां ठेकाणे ठेकाणे कौतुको जोतो जोतो ते रोकायो. दिवस पसार थइ गयो, ते तेना जाणवामां आव्युं नहीं. ज्यारे सूर्य अस्त थयो, त्यारे ते राजाना भंडार समीपे आवी पहोंच्यो, त्यां भंडारी भंडारे तालु आपी जतो हतो, तेनी पासे आवी ते विप्रे राजाना हुकमनो पत्र आप्यो. भंडारीए पत्र वांचीने कह्युं, "अरे विप्र, राजाए करेलो नियम पूर्ण थइ गयो छे, तेथी हवे तने कांइ पण द्रव्य मळी शकशे नहीं; माटे पाछो घेर जा." भंडारीनां आवां वचन सांभळी प्रमादना वशथी द्रव्यने नहीं पामतो, हाथ घसतो अने पश्चात्ताप करतो ते पोताने घेर पाछो आव्यो, अने पूर्वेनी पेठे दरिद्रपणे रह्यो हतो.

आ लौकिक दृष्टांतनो उपनय आत्मा उपर आ प्रमाणे घटे छे. आ संसाररूपी नगरमां दरिद्री ब्राह्मणरूप दुःखी संसारी जीव रहे छे. तेने सत् कार्यमां प्रेरणा करनारी जे स्त्री ते सुमति समजवी. जे राजा ते तीर्थंकरादि सद्गुरु समजवा. तेओ धर्मरूपी धनना दातार छे. जे भंडार कह्यो, ते आ मनुष्य भव समजवो. कारण के, ते विना धर्मरूपी धननी प्राप्ति थती नथी. जे आयुष्य ते सूर्य समजवो. जे सूर्य अस्त पाम्या अगाउ धन ग्रहण करवानी आज्ञा हती, ते आयुष्यनो क्षय थया अगाउ धर्म करवानी गुरुनी आज्ञा समजवानी छे, तेने माटे कह्युं छे के,—

" जरा जाव न पीडेइ, वाहि जाव न वड्ढइ ।
जाव न इंदियहाणी, ताव धम्मं समायरे " ॥ १ ॥

" ज्यां सुधी जरा आवी नथी, ज्यां सुधी व्याधि वृद्धि पाम्यो नथी अने ज्यां सुधी इंद्रियोनी हानि थइ नथी, त्यां सुधी धर्मनुं आचरण करवुं." १

वळी जेम ते ब्राह्मण 'दिवस हजु घणो छे' एम मानी निद्रा, नाटक अने कौतुको जोवाना प्रमादमां आसक्त थतां धननी प्राप्ति करी शक्यो नहीं, अने पछी पश्चात्तापमां पड्यो गयो. तेम प्रमादी जीव आयुष्य होय त्यां सुधी प्रमादमां पडी पछी आयुष्य पूर्ण थतां धर्मकृत्य न करतां गत्यंतरमां जइ दुःखे पीडित थइ पश्चात्ताप करे छे जेमके–"अहो! हुं पूर्व भवे विषयोमां मग्न थइ पड्यो सर्व प्रकारनी सामग्री छतां में जैनधर्म आराध्यो नहीं." आ प्रमाणे ए दरिद्री ब्राह्मणनो उपनय समजवानो छे. अवसर गुमाव्या पछी कांइ पण कार्य सिद्ध थतुं नथी, माटे हे भव्यजनो ! प्रथमथीज प्रमादनो त्याग करी स्वधर्म पाळवाने तत्पर थाओ. जेथी सर्व इष्ट सिद्धि प्राप्त थशे.

आ प्रकारनुं श्रावकपणुं प्राप्त करवानी इच्छावाला भव्य पुरुषोए निन्हावादिक कुदृष्टिओना वचनमां विश्वासी थवुं न जोइए.

"जनस्य सत्कांचनकंकणद्वयी—निर्मापकस्योपनयं निशम्य सः ।

कुदृष्टिवाक्याश्रयणे पराङ्मुखो भवेन्नचेद्वंचनमश्नुते ध्रुवम्" ॥१॥

"सोनीनी पासे उत्तम प्रकारना सोनाना बे कंकणोने करावनार लोकोनो उपनय सांभळी श्रावके कुदृष्टिओना वचनने सांभळवामां विमुख थवुं, अन्यथा ते निश्चे वंचनाने पामे छे." १

कहेवानो आशय एवो छे के, सोनीनी पासे उत्तम प्रकारना बे कंकण घडावनार लोकोनुं दृष्टांत सांभळी योग्य धर्मना अभिलाषी एवा श्रावके कुदृष्टिओना वचनथी पराङ्मुख थवुं, एटले तेमना वचनोनो विश्वास न करवो. जो तेमना वचनथी पराङ्मुख न थाय तो निश्चे वंचनाने पामे छे. अर्थात् तेमना वचनथी व्युद्ग्राहित चित्तवालो थइ सद्गुरुना उपदेशनो अनादर करी स्वधर्मथी भ्रष्ट थाय छे.

सुवर्णना कंकण घडावनार पुरुषनुं दृष्टांत.

कोइ मुग्ध पुरुषे सोनीनी पासे सोनाना बे कंकण घडाववा आप्या. ते धूर्त्त सोनीए ते पुरुषने भोळो—मूर्ख जाणी तेने ठगवा माटे बे कंकणो बनाव्या; तेमां एक जोड सुवर्णमय अने बीजी पीतळमय जोड करी. बंने साचा कंकणो पेला मूर्खने आपी ठगवानी बुद्धिए ते सोनीए एकांते जणाव्युं के, आ गाममां सर्व लोको मारा द्वेषी छे, तेथी तेओ मारा बनावेला आभरणो साचा होय तो-पण तेने खोटा कहे छे, माटे तमारे मारुं नाम लीधा शिवाय बीजा लोको पासे आ बंने कंकणो बतावी तेनी परीक्षा कराववी पछी हुं ते कंकणोने उजाळीने तारा हाथमां पेहेरावीश. पेलो मुग्ध माणस तेना कपटने न जाणतो ते साचा कंकणनी जोड लइ लोकोने बताववा नीकळ्यो. लोकोए ते कंकणोने चोखा सो-नाना शुद्ध कह्यां, ते सर्व वृत्तांत तेणे सोनीने आवी जणाव्यो. पछी ते कपटी सोनीए पोताना हस्तनी लाघवतायी ते सुवर्ण कंकणना युगलने छुपी रीते मुकी दइ, तेना जेवा तुल्य प्रमाणवाला आकारना बीजा पीतळना बे कंकणो तेना हाथमां पेहेराव्यां अने कह्युं के, "आजथी मारुं नाम सांभळी जो कोइ लोको आ कं-कणने पीतळना कहे तो तारे तेमनुं वचन न मानवुं अने मारा वचन उपर विश्वास राखवो". ते मुग्ध पुरुषे ते वात अंगीकार करी. ते पछी ते अशुद्ध कंकणनी जोड

पहेरी ते पुरुष चौटामां नीकळ्यो, त्यारे लोको तेने पुछवा लाग्या के, " आ कंकणनी जोम कया सोनीए करी ? " तेणे ते सोनीनुं नाम आप्युं; पछी परीक्षक लोकोए तेने सारी रीते तपासीने कह्युं के, " आतो पीतळना कंकण छे. " तने ते धूर्त्त सोनीए ठग्यो छे. "पेला धूर्त्त सोनीए जेना चित्तने व्युद्ग्राहित करेलुं छे एवा ते पुरुषे मनमां चिंतव्युं के, " आ लोको तेना द्वेषी छे, माटे आ प्रकारे बोलेछे. आ मारा कंकणोतो शुध्ध सुवर्णमय छे. माटे आ द्वेषी लोको जले द्वेष बुध्धिथी कहे, पण हुं तो तेनो त्याग करीश नहीं. " आवुं चिंतवी ते पुरुष सारा माणसोना वचनमां अनादर करी अने ते धूर्त्त सोनीना वचन उपर विश्वास राखी अशुध्ध वस्तु पामीने ठगायो अने शुध्ध वस्तुनो जोगी थयो नहीं.

आ दृष्टांतनो उपनय आत्मा उपर आ प्रमाणे घटे छे. जे सुवर्णना कंकणने ग्रहण करनार पुरुष ते धर्मार्थी जीव समजवो. जे धूर्त्त सोनी ते निन्हवादिक कुगुरु समजवा. जे पूर्वे सुवर्णमय कंकणो बताव्या, ते अहीं प्रत्याख्यान, दान, दया आदि धर्मकृत्य बताववामां आवेछे ते समजवुं वळी तेणे पोतानो विश्वास उपजावी पीतळना कंकण आप्या ते अहिं कुदृष्टिवडे अनेक प्रकारना वचननी रचनावडे माणसना चित्तने विकल करी एकांतवाद युक्त श्री अरिहंतना धर्मनी विरुध्ध समजाववानुं समजवुं. ते पुरुष मिथ्यात्वथी व्युद्ग्राहित चित्तवाळो होवाथी शुध्ध धर्मना उपदेशक एवा गुरुने द्वेषी जाणी तेमना वचनने मान्य करतो नथी. जेम पेलो मुग्ध पुरुष अशुध्ध सुवर्ण पामीने ठगायो छे, तेम मिथ्यात्वथी व्युद्ग्राहित चित्तवाळो पुरुष अशुद्ध तत्त्व वस्तु पामीने ठगायो समजवो. तेवो पुरुष आखरे दुर्गतिनुं जाजन थाय छे अने पछी तेने सम्यग्धर्मरुप वस्तुनी प्राप्ति दुर्लज्ञ थइ पडे छे, माटे हे जव्य जीवो! जो तमारे शुध्ध धर्म प्राप्त करवानी इच्छा होय तो प्रथमथीज निन्हवादिक कुदृष्टिओना वचन उपर विश्वास करशो नहीं. श्रीमद् अर्हत्प्रणीत अनेकांत धर्मना उपदेशक एवा शुध्ध गुरुना वचन उपर विश्वास करवो; जेथी तमोने तत्काल परमात्मसंपत्ति प्रकट थशे.

ए प्रकारे कुदृष्टिना वचनमां विश्वास राखवा उपर सुवर्णकंकणनिर्मापकनो उपनय कहेवामां आव्यो.

" इत्थं स्वरूपं परमात्मरूप–निरूपकं चित्रगुणं पवित्रम् ।
सुश्रावकत्वं परिगृह्य भव्या भजंतु दिव्यं सुखमक्षयं च॥"१॥

" लेशाद्देशविरते र्विचार एषोऽत्र वर्णितोऽस्ति मया ।
अनुसाराद् ग्रंथस्योपदेशचिंतामणिप्रभृतेः " ॥ २ ॥

हे भव्यो ! आ प्रमाणे परमात्माना रूपने निरुपण करनार अने विचित्र गुणवाळुं पवित्र श्रावकपणुं ग्रहण करी तमे दिव्य एवा अक्षय सुखने भजो. १

उपदेश चिंतामणि वगेरे ग्रंथने अनुसारे आ देशविरतिना स्वरुपनो विचार में संक्षेपथी वर्णन करी बताव्यो छे. २

इति श्रीमद्बृहत् खरतरगच्छाधिराज श्री जिनभक्तिसूरिना
चरणकमळमां हंससमान श्री जिनलाभसूरिए रचेला
आत्मप्रबोध ग्रंथनो देशविरति नामे बीजो
प्रकाश पूर्ण थयो.

॥ इति द्वितीयः प्रकाशः ॥



अथ तृतीय प्रकाश.

(सर्वविरति.)



आ त्रीजा सर्वविरति नामे प्रकाशना आरंभमां तेनी प्राप्तिना भेदने सूचवनारी आर्या आ प्रमाणे छे—

" प्रत्याख्यानावरणकषायचतुष्कक्षयोपशमभवनात् ।
लभते मानव एतां देशविरतिमानविरतो वा "

" देशविरति एटले पंचमगुणस्थानवर्ती पुरुष अथवा अविरति एटले प्रथम गुणस्थानवर्ती अथवा चतुर्थ गुणस्थानवर्ती पुरुष प्रत्याख्यानावरणीय नामना त्रीजा कषायनी चोकडीनो क्षयोपशम थतां सर्वविरतिने पामे छे. त्रिविध त्रिविध भांगाए करीने सर्व सावद्य योगथी जे निवृत्ति ते सर्वविरति कहेवाय छे. देवता, तिर्यंच अने नारकी तथाप्रकारना भवना स्वभावने लइने ए सर्वविरतिने पामी शकता नथी, ते कारणथीज अहिं मनुष्यनुंज ग्रहण करेलुं छे. वळी ए सर्वविरति देशविरतिनी प्राप्तिने अवसरे भविष्यमां थनारी कर्मनी स्थितिमांथी संख्याता सागरोपम खपाव्याथी प्राप्त कराय छे, ए प्रथम विस्तार पूर्वक दर्शाव्युं छे. तथा स्थितिमान आ सर्व विरतिनुं तथा देशविरतिनुं पण जघन्यथी अंतर्मुहूर्त्त अने उत्कर्षथी देशोनपूर्वकोटीनुं जाणवुं, एवा प्रकारनी छे सर्व विरति छे जेने ते सर्व विरतिमान् साधु कहेवाय छे.

आवा साधुओ छद्मस्थ अने केवळी एम बे प्रकारना छे. तेमां जे मुनिराज छठा गुणठाणाथी आरंभीने बारमा गुणस्थानवर्ती छे, ते छद्मस्थ कहेवाय छे. अने जे तेरमा अने चौदमा—ए बे गुणस्थाने वर्तनारा छे, ते केवळी

कहेवाय छे. तेमां आ त्रीजा प्रकाशने विषे छद्मस्थ साधुनो अधिकार आवेछे. अने केवळी के जे परमात्मरुप छे, तेमनुं स्वरूप चोथा प्रकाशमां कहेवाशे.

अहिं प्रथम सर्व विरति अंगीकार करनार पुरुष स्त्री अने नपुंसकनुं योग्यायोग्यपणुं देखाडे छे.

" अट्ठारसपुरिसेसु वीसं इत्थीसु दस नपुंसेसु ।
पव्वावणा अणरिहा, इय अणला आहियासुत्ते" ॥१॥

" अढार पुरुषने विषे अने स्त्रीने विषे वीस तथा नपुंसकमां दश-दीक्षा आपवाने अनला एटले अयोग्य सूत्रने विषे कहेला छे. "

दीक्षाने विषे अयोग्य अढार पुरुषो आ प्रमाणे छे—

" बाले वुड्ढे नपुंसेय कीवे जड्डेय वाहिए ।
तेणे रायावगारीय उम्मत्ते य अदंसणे " ॥ १ ॥
दासे दुट्ठे य मूढेय रुन्नत्ते जुंगिएहइय ।
उच्चट्ठएयभयए सेह निप्फेमियाइय „ ॥ २ ॥

जन्मथी आरंभी सात—आठ वर्ष सुधी बाळ कहेवाय छे. बाळ जेनो तेनो तिरस्कार करे तेथी अने तेनामां चारित्रना परिणामनो अभाव होय तेथी ते दीक्षाने अयोग्य छे. वळी बालकने दीक्षा आपवाथी संयमनी विराधना थवा प्रमुख दोषो संभवे छे, जेथी ते बालक अज्ञानीपणे लोढाना गोळा जेवो छे. एटले जेम जेम ते चाले तेम तेम छकायना जीवोनो वध थवानो ते हेतुरुप बने छे. तेथी लोकोमां निंदा थाय छे के, " आ साधुओ निर्दय छे के जेमणे आवा बालकने बलात्कारे दीक्षारुप बंदीखाने नांख्यो छे अने तेम करीने तेनी स्वाधीनतानो उच्छेद कर्यो छे. " तेम वळी माता प्रमुखनी करवा योग्य एवी परिचर्या करतां स्वाध्याय (सज्झाय) ध्याननो भंग थाय छे.

अहिं प्रश्न करे छे के, ज्यारे बालकने दीक्षा अपाती न होय तो—

" छव्वरिसो पव्वइओ, निग्गंथरोइऊण पावयणं "

[इत्यादौषड्वार्षिकस्यातिमुक्तकुमारस्य]

" छ वर्षना अतिमुक्तकुमारनी दिक्षानी प्रतिपत्ति केम कहेवामां आवे छे ? आ प्रश्नना उतरमां कहेवानुं के, अतिमुक्तकुमारने त्रिकाळना ज्ञाता जगवान् श्री महावीर प्रभुए पोते दीक्षित करेल होवाथी तेमां कोइ जातनो दोष आवतो नथी. ते अतिमुक्तकुमारनुं वृत्तांत श्री अंतगम दशांग आदि सूत्रने अनुसारे अहिं आपवामां आवे छे—

अतिमुक्त कुमारनुं वृत्तांत.

पोलासपुर नगरने विषे विजय नामे राजा हतो. तेने श्री नामे पट्टराणी हती. ते श्री राणीने अतिमुक्त नामे कुमार थयो हतो. ते कुमार बहु प्रयत्नवमे वृध्धि पामतो अनुक्रमे छ वर्षनो थयो. ते अरसामां नगरनी बाहेर श्री वीरप्रभु समोसर्या ते वखते प्रथम गणधर गौतम स्वामी श्री वीरप्रभुनी अनुज्ञा लइ जिक्षाने माटे नगरमां आव्या. आ समये राजकुमार अतिमुक्त कुमार बालकोनी साथे रस्तामां क्रीमा करतो हतो. ते गौतम स्वामीने देखी आ प्रमाणे बोल्यो, " तमे कोण छो ? अने शा माटे फरो छो ? " गौतम स्वामीए कह्युं, " अमे साधु छीए अने भिक्षाने माटे फरीएछीए. " तेमना आ वचन सांजळी राजकुमारे कह्युं, " हे पूज्य, आवो तमोने जिक्षा अपावुं. " आ प्रमाणे कही ते कुमार गौतम स्वामीनी आंगळीए वळगी पोताने घेर लइ गयो. ते वखते तेनी माता श्रीदेवी अति हर्ष पामती जक्तिपूर्वक श्री गौतम स्वामीने नमीपमी अने तेणीए जावथी गणधरने प्रतिलाजित कर्या. ते वखते ते राजकुमारे आ प्रमाणे कह्युं, " महाराज, तमे क्यां वसोछो ? " गौतमे कह्युं, " जे उद्यानमां अमारा धर्माचार्य श्री वर्ध्धमान स्वामी वसे छे. त्यां अमे वसीए छीए. " राजकुमार बोल्यो. " स्वामी, त्यारे हुं तमारी साथे त्यां आवुं. अने तमारा धर्माचार्यने वंदना करुं. गौतमे कह्युं, " देवानुप्रिय, तमने सुख थाय तेम करो. " ते पछी अतिमुक्त कुमारे गौतम स्वामीनी साथे श्री वीरप्रभुने वंदना करी. " पछी प्रभुए तेने धर्मोपदेश आप्यो. ते सांभळी अतिमुक्त कुमार प्रतिबोध पामी गयो. अने दीक्षा लेवानी इछाथी पितानी आज्ञा लेवाने घेर आव्यो. तेणे घेर आ-

वी आ प्रमाणे माता पिताने कह्युं, " हे माता पिता, में आजे श्री वीरप्रजुनी पासे धर्म सांजल्यो छे अने ते धर्म मने रुच्यो छे. त्यारे माता पिता बोल्या. " पुत्र तने धन्य छे. तुं कृतपुण्य छे अने आ लोकमां कृतार्थ थयो छे ; के जे तें श्री वीरप्रजु पासे धर्म सांजल्यो अने वळी ते धर्म तने रुचिकर थयो. " कुमार बोल्यो. हे माता पिता, हुं ते प्रजुना मुखथी धर्म सांजळी आ संसारना जयथी उद्विग्न थइ गयो छुं. मने जन्म मरणनो अति जय लाग्यो छे ; तेथी तमारी आज्ञाथी हुं ते वीरप्रजु पासे दीक्षा लेवा इच्छा राखुं छुं. " ते अनिष्ट, अमनोज्ञ, अप्रिय अने पूर्वे नहि सांजळेल वचन सांजळी तत्काल माता शोक सागरमां मग्न थइ गया. तेमनुं हृदय दीनवत् खेद पामी गयुं अने मन उपर ग्लानि प्रसरी गइ. तत्काल ते पुत्रवियोगना जयथी मूर्छित थइ गृहना आंगणामां सर्वांगे पमी गया. ते वखते दासी सत्वर सुवर्णनो कलश लइ, ते कलशना मुखमांथी नीकळती शीतल अने निर्मल जळनी धारावडे ते राणीना शरीरने सिंचन कर्युं, अने वायुनो उपचार कर्यो एटले ते राणी चेतनाने प्राप्त थया. तत्काल ते विलाप करता राणीए पुत्रने आ प्रमाणे कह्युं, " हे पुत्र, तुं अमारे एकज पुत्र छे. इष्ट, कमनीय अने प्रिय छे. हे वत्स, अमूल्य रत्नना आजरणना करंमीया समान, हृदयने आनंद उपजावनार अने उंवराना पुष्पनी पेठे तुं दुर्लज छे ; माटे एक क्षणमात्र पण तारो वियोग सहन करवाने अमे शक्तिमान नथी ; तेथी ज्यां सुधी अमे जीवीए त्यां सुधी तुं घरमां रहे, ते पछी तुं सुखे करी चारित्र ग्रहण करजे. "

माताना आवां वचन सांजळी राजकुमार आ प्रमाणे बोल्यो—" माता, तमे कहो छो ते सत्य छे, परंतु आ मनुष्यजव के जे अनेक जन्म जरा मरणवालो छे तेमज शरीर अने मन संबंधी अत्यंत दुःख—वेदना अने उपद्रवोथी युक्त छे, ते अध्रुव—अनित्य छे. ते संध्याना वादलाना रंग सरखो, जलना परपोटा जेवो अने विद्युत् लतानी पेठे चंचल छे. शरीर के जे सकन, पकन, विध्वंसन धर्मवाळुं अने पेहेला अथवा पछी अवश्य त्याग करवा योग्य छे. वळी विचार करो के, आपणामांथी कोण जाणे छे के, परलोकमां पेहेलो कोण जशे ? अने पछी कोण जशे ? तेथी तमारी आज्ञावमे हुं हमणांज दीक्षा लेवा-इच्छा राखुं छुं. "

राजकुमारना आ वचनो सांजळी माता पिता बोल्या—" हे पुत्र, आ

तारुं शरीर अतिशय सुंदर अने लक्षण—व्यंजन गुणोथी युक्त छे, तेमज अनेक प्रकारनी व्याधिओथी रहित, सौभाग्यवालुं, उन्नत, मनोज्ञ, अने पंचेंद्रियोथी शोभायमान छे. वत्स, तेथी तारे प्रथम शरीरना ते सौभाग्यादि सर्व गुणोने अनुभवी पछी योग्य वयवाला थइ दीक्षा ग्रहण करवी." राजकुमार बोल्यो, "हे माता पिता, तमोए जे मारा शरीरनुं स्वरूप कही बताव्युं, ते मानव शरीर निश्चे सेंकमो दुःखनुं घर, अने सेंकमो व्याधिओनुं स्थान रुप छे. वली ते अस्थिरुप काष्ठपिंजरवालुं, नसो तथा ओररुप जालथी वींटाएलुं, मृतिकाना पात्रनी पेठे दुर्बल, अशुचि पुद्गलोथी उत्पन्न थयेलुं, " सडन, पडन, विध्वंसन धर्मवालुं अने प्रथम अने पाछलथी अवश्य त्याग करवा योग्य छे ; तेथी कयो बुद्धिमान् पुरुष तेवा शरीरने माटे राचे ? "

माता पिताए कह्युं, " पुत्र, आ तारा पूर्वज—वडिलोनी परंपराथी आवेल विस्तीर्ण धन, सुवर्ण, रत्न, मणि, मोती, शंखरत्न, प्रवालां, प्रमुख स्वाधीन प्रधान दोलत छे अने ते सात पेढी सुधी गरीब प्रमुखने आपतां छतां क्षय पामे तेवुं नथी, एवा द्रव्यनो स्वेच्छा प्रमाणे उपभोग करी अने तारी मनोवृत्ति प्रमाणे चालनारी अने तारी समान रुप लावण्यवाली घणी राजकन्याओने परणी तेमनी साथे आश्चर्यकारक सांसारिक सुख भोगवी ते पछी तुं दीक्षा ग्रहण करजे."

अतिमुक्त कुमार बोल्यो—" हे पूज्य माता पिता, तमोए जे द्रव्यादिकनुं स्वरूप कह्युं, ते द्रव्य निश्चे करीने अग्नि, जल, चोर, राजा अने भागीदारो प्रमुख घणाओने साधारण छे अने परिणामे अध्रुव छे तेथी ते पण पेहेला अथवा पछी अवश्य त्याग करवा योग्य थशे. जे मनुष्यसंबंधी कामभोगो छे, ते पण अशुचि अने अशाश्वत छे ; ते साथे वात, पित्त, कफ, शुक्र—वीर्य अने शोणितने आश्रय करनारा छे. आहिं कामभोग शब्दथी वातपित्तादिकना आधारभूत एवा स्त्री पुरुषना शरीरो जाणवा. वली ते अमनोज्ञ तथा दुर्गंध उत्पन्न करनारा मूत्र अने विष्टाथी परिपूर्ण, निःश्वास अने उच्छ्वासथी दुर्गंधी, अने अज्ञान जनोए सेवित छे. संसारने वधारनारा होवाथी साधुजनने निंदनीय छे. तेना फल घणां कटु छे, तेथी तेवाओने माटे कोण पोताना जीवितने निष्फल करे ? "

पुत्रना आ वचन सांभली तेना माता पिता विचारमां पडी गया. ते-

मणे विषयोने अनुकूल एवा घणां वचनोथी तेने लोभाव्यो, तो पण ते जरा पण डग्यो नहीं पछी तेने लोभाववाने अशक्त थयेला माता पिताए विषयने प्रतिकूल अने संयमना जयने बतावनारा वचनो आ प्रमाणे कह्या—" वत्स, निर्ग्रंथ संबंधी जे प्रवचन छे. ते सत्य छे ; सर्वोत्कृष्ट छे, शुद्ध छे, कर्म रुपी शल्यने तोडनार छे, मोक्ष मार्गनुं दर्शक छे अने सर्व दुःखोनो नाश करनार छे. ए प्रवचनने विषे स्थित एवा जीवो सिद्धिपदने पामे छे; परंतु ए प्रवचन लोढाना चणा चाववा जेवुं अत्यंत दुष्कर छे. रेतीना कोळीआ जेवुं स्वादरहित छे अने भुजावडे महासमुद्रने तरवा जेवुं दुष्कर छे. वळी ते प्रवचन खड्गनी धार उपर चालवा जेवुं, दोरडे बांधेली महा शिलाने हाथे धारण करवा जेवुं छे. वत्स, वळी साधुने आधाकर्मी, उद्देशिक आदि भोजन कल्पतुं नथी, ते तारा जेवा स्वादिष्ट भोजन लेनाराने शी रीते रुचिकर थशे ? पुत्र, तुं सदा सुखमां रहेनारो छे, दुःखमां रहेनारो नथी, तेथी साधुने सहन करवामां शीत, उष्ण, क्षुधा, पिपासा, डंश, मशकना तथा रोगादिकना परिसहो अने उपसर्गो सहन करवा समर्थ नथी तेथी तने प्रव्रज्या लेवानी आज्ञा आपवाने इच्छता नथी. " माता पिताना आवा वचन सांभळी कुमार बोल्यो—" हे पूज्य माता पिता, तमोए जे संयमनी दुष्करता बतावी ते सत्य छे, परंतु ते पुरुषातन विनाना कायर पुरुषोने माटे छे चारित्रनी दुष्करता वीरपुरुषोने माटे नथी; जेओ आ लोकमां प्रतिबंधवाळा, परलोकथी पराङ्मुख रहेनारा अने विषयोमां तृष्णावाळा छे तेओने महाव्रत दुष्कर छे; परंतु जेओ धैर्यवाळा, अने आ संसारना भयथी उद्विग्न रहेनारा छे, तेओने ए महाव्रतनुं ग्रहण जरापण दुष्कर नथी माटे आप पूज्य वडिलनी आज्ञाथी हुं दीक्षित थवाने इच्छुं छुं. "

माता पिता बोल्या—" भाइ, ए खरी वात छे. परंतु तारे आवी हठ न करवी जोइए. तुं बालक शुं जाणे ? "

अतिमुक्त कुमारे कह्युं, " पूज्य माता पिता, जे हुं जाणुं छुं, ते हुं नथी जाणतो अने जे हुं नथी जाणतो ते हुं जाणुं छुं." पुत्रना आवा वचन सांभळी माता पिता बोल्या—" वत्स, आ तुं शुं कहे छे ? ते कांइ समजातुं नथी. ते अमोने स्पष्ट रीते समजाव्य. " राजकुमार बोल्यो—" पूज्य, आ जगतमां जे

जन्म्या तेमने अवश्य मरवुं छे ते हुं जाणुं छुं. परंतु तेमने क्यारे क्यां, केवी रीते अने केटलेक काले मरवुं छे ? ते हुं जाणतो नथी. तेमज केवा कर्म करीने जीवो नरकमां उपजे छे ? ते मारा जाणवामां नथी पण तेओ पोताना करेला नठारा कर्मोथी नरकमां पडे छे, एम हुं जाणुं छुं."

अतिमुक्त कुमारना आ वचनो सांभली तेना माता पिता हृदयमां खुशी थइ गया. "आ पुत्र चारित्रमां स्थिर चित्तवालो छे." एवी खात्री थतां तेमणे दीक्षा लेवानी आज्ञा आपी. अने मोटा आडंबरथी तेनो दीक्षा महोत्सव कर्यो. राजकुमार अतिमुक्त स्नान, विलेपन तथा वस्त्राभूषणथी विभूषित थइ मातापितादि परिवारथी परिवृत बनी सुंदर शिबिकामां बेशी विविध वाजित्रोना ध्वनि साथे नगरमां फरवा निकल्यो. ते समये द्रव्यना दाननी इच्छा राखनारा चारण भाट वगेरे याचको आ प्रमाणे आशिष आपवा लाग्या—"राजकुमार, तमे धर्म अने तपथी कर्म रुपी शत्रुओनो जय करो. हे जगतने आनंद करनारा ! तमारुं सदा कल्याण थाओ. उत्तम ज्ञान, दर्शन तथा चारित्रवडे, न जीती शकाय तेवी इंद्रियोने जीतो, साधु धर्मनुं सम्यक् प्रकारे पालन करो. अने निर्विघ्ने सिद्धिपदने प्राप्त करो."

आ प्रमाणे याचकोथी स्तवातो नगरना स्त्री पुरुषोथी आदरपूर्वक जोवातो अने अर्थी लोकोने इच्छादान आपतो ते अतिमुक्त कुमार नगरनी बाहेर नीकली ज्यां श्री वीरप्रभुनुं समवसरण हतुं, त्यां आव्यो. दूरथी शिबिकामांथी उतरी गयो. पछी मातापिता तेने आगल करी श्री वीरप्रभुनी पासे आव्या अने वंदना करी आ प्रमाणे बोल्या—"भगवन्, आ अतिमुक्त कुमार अमारो इष्ट, मनोज्ञ अने एकनोएक पुत्र छे. जेम कमल कादवमांथी उत्पन्न थाय छे अने जले करी वधे छे पण ते कादव तथा जलनी साथे लिप्त थतुं नथी, तेम आ कुमार शब्द, रूप, लक्षणोए करी काममांथी उत्पन्न थयेलो छे, गंध, स्पर्श लक्षणवाला भोगमां वृद्धि पाम्यो छे, पण कामभोगमां के सगा स्नेहीओमां लेपायो नथी. वली आ कुमार आ संसारना भयथी उद्विग्न थइ तमारी पासे दीक्षा लेवा इच्छे छे, माटे अमो आपने आ शिष्यरुपी भिक्षा आपीए छीए ते आप कृपा करी अंगीकार करो."

प्रभु गंभीर स्वरथी बोल्या. "देवानुप्रिय, तमने सुख उपजे तेम करो. आ कार्यमां विलंब करशो नहीं." जगवान् वीरप्रभुना आ वचन सांजली अतिमुक्त कुमार खुशी थइ गयो. तत्काल तेणे प्रभुने त्रण प्रदक्षिणा करी अने वंदना करी इशान खूणामां आवी पोतानी मेळे अंग उपरथी वस्त्राजरणो उतार्यां. तेनी माता पुत्रना वस्त्राभरणो हंस चिह्नवाला कोमल रुमालमां लइ नेत्रोमांथी अश्रुधारा वर्षावता आ प्रमाणे बोल्या—"व्हालापुत्र, पामेला संयमयोगमां तमे प्रयत्न करजो. अने नहीं पामेला संयमयोगनी प्राप्तिने माटे घटना करजो. चारित्रने अखंम रीते पालवामां तमारा पुरुषत्वना अनिमानने सफल करजो अने प्रमादनो तदन त्याग करजो." आ प्रमाणे पिताए पण कह्युं. पत्री बंने माता पिता प्रभुने वंदना करी पोतपोताने स्थाने चाल्या गया. ते पत्री अतिमुक्त कुमार प्रभुनी पासे आव्या अने वंदना करी तेणे विधि पूर्वक दीक्षा ग्रहण करी. प्रभुए पंच महाव्रत ग्रहण करावी संयमना क्रिया कलापने शीखववा माटे गीतार्थ एवा स्थविर मुनिने तेने सोंपी दीधा. ते पत्री प्रकृतिए जद्रक अने विनयवान् एवा अतिमुक्त कुमार बालसाधुरुपे रहेवा लाग्या.

एक वखते ते कुमार मुनि मोटी दृष्टि पमतां पोतानी काखमां पात्र अने रजोहरण लइ बाहेर आव्या; त्यां जलना प्रवाहने वेहेतो देखी बाल्य वयने लीधे तेमणे ते प्रवाहनी आमे माटीनी पाल बांधी पछी तेनी अंदर रमत करवाने पोतानुं पात्र वहाणनी जेम तरतुं मुक्युं. आ देखाव स्थविर मुनिओना जोवामां आव्यो, एटले ते बाल मुनिनुं उपहास्य करता ते मुनिओए प्रभुनी पासे आवी आ प्रमाणे पुछ्युं, "जगवन्, तमारो अतिमुक्तकुमार शिष्य केटले जवे सिद्धिपदने पामशे?" महाज्ञानी प्रभु आ प्रमाणे बोल्या—"आर्यो! ए मारो शिष्य आ जवमांज मोक्ष पामशे. तेथी तमारे ए बाल मुनिनुं उपहास न करवुं. तेनी चेष्टानी निंदा के गर्हणा न करवी. तेमज अपमान न करवुं. जद्र देवानुप्रिय, तमारे ए मुनिने खेदरहितपणे अंगीकार करवा अने तेनो उपकार करवो. ते साथे जात पाणीथी अने विनयथी तेनी वैयावच्च करवी. ते बालमुनि आ संसारनो अंत करनार चरम शरीरी छे." प्रभुना आवा वचन सांजली ते मुनिओए वंदना करी प्रभुनुं वचन अंगीकार कर्युं अने अतिमुक्त कुमारने खेदरहित ग्रहण कर्यो. अने तेनी वैयावच्च करवा मांमी. छेवटे ते अतिमुक्त कुमार

पापस्थानने आलोवी, अनेक प्रकारनी तपश्चर्या करी संयमनुं आराधन करी अंतगम केवली थया अने परम सिद्धिपदने प्राप्त थया हता. आ वृत्तांतनो संबंध अंतगम दशांग नामना आठमा अंग तथा जगवतीजी–पांचमा अंग प्रमुख सूत्रोने आधारे कहेलो छे. आ प्रकारे बालवयनी दीक्षा उपर अतिमुक्त मुनिनो वृत्तांत कहेवामां आव्यो.

जे साठ तथा सीत्तेर वर्ष उपरांतना पुरुषो वृध्द कहेवाय छे, तेमनुं पण समाधानादिक करवुं अशक्य छे माटे तेवा पुरुषो दीक्षाने अयोग्य छे. तेने माटे कह्युं छे के,

" उच्चासणं समीहइ, विणयं न करेइ गव्वमुव्वहइ ।
वुड्ढो न दिक्खियव्वो, जइ जाओ वासुदेवेणं " ॥ १ ॥

" जे वृध्द होय ते ऊंचा आसनने इछे छे, विनय करतो नथी अने गर्व धारण करे छे तेथी कदि ते वासुदेवनो पुत्र होय तो पण वृध्द पुरुषने दीक्षा आपवी नहीं. " १

आ वृध्दपणुं सो वर्षना आयुष्यनी अपेक्षाए छे. अथवा जे जे काले जेटलुं उत्कृष्ट आयुष्य होय तेने दश जागे वेंहेची पछी आठमा नवमा के दशमां जागमां वर्तताने वृध्दपणुं जाणवुं. १—२

स्त्री तथा पुरुष—उजयनो अजिलाषी अने पुरुषनी आकृतिवालो पुरुष नपुंसक जाणवो. जे स्त्री वमे निमंत्रित थएलो होय अथवा असंवृत्त स्त्रीने देखीने कामाजिलाषी थइ वेदना सहन करवाने शक्तिमान् न थाय, ते पुरुष क्लीब कहेवाय छे.—आ बंने उत्कट वेदपणाथी अकस्मात् उड्डाहने करनारा थाय छे तेथी तेओ दीक्षा आपवाने अयोग्य छे. ४

जम पुरुष त्रण प्रकारना छे. १ भाषाजम, २ शरीरजम अने ३ क्रियाजड. तेमां जाषाजम पण त्रण प्रकारना छे.

१ जलमूक, २ मन्मन्मूक, अने ३ एलमूक. जे जलने विषे बुमवतानी जेम 'बुमबुमाक' शब्दो करे ते जलमूक कहेवाय छे. जे वचन बोलतो बोलतो स्खलना पामे ते एटले ' मण मण ' एवा शब्दो बोले ते मन्मन्मूक कहेवाय छे. अ-

ने जे बोकमानी पेठे मात्र अव्यक्त शब्दो बोले ते एडमूक कहेवाय छे. जे शरीर जड पुरुष छे, ते अति स्थूलपणाने लइने मार्गमां, भिक्षाटन करवामां अने वंदनादिकमां अशक्त होय छे. जे क्रियाजड छे ते प्रतिक्रमण तथा प्रत्युपेक्षणादि क्रियानो वारंवार उपदेश कर्या छतां पण जडपणाने लइने ग्रहण करवाने शक्तिमान् थतो नथी. अने जे भाषाजड छे ते ज्ञाननुं ग्रहण करवाने असमर्थ थाय छे. आथी तेवा पुरुषो दीक्षा आपवाने योग्य नथी. ५

वळी जे कोढ, भगंदर अने अतिसार वगेरे रोगोथी ग्रस्त थयेलो होय, तेवो व्याधिग्रस्त पुरुष पण दीक्षाने योग्य नथी. कारण, तेने चिकित्सा करवामां छ कायनी विराधना अने स्वाध्यायादिकनी हानि थाय छे. ६

खातर देवुं. लुंट करवी इत्यादि चोरीनी क्रियामां तत्पर एवो चोर जो दीक्षा ग्रहण करे तो तेथी गच्छने वध बंधनादि घणा अनर्थोनो हेतु थाय छे तेथी-ते दीक्षा आपवाने अयोग्य छे. ७

राजाना शरीरादिकनो घात करनार, जनानामां घातकपणुं आचरनार, अने राजकुमारने हानि करनार तेमज राजानो कांइपण अपकार करनार पुरुष अनर्थनो हेतु होवाथी दीक्षा आपवाने योग्य नथी. ८

यक्षादिकथी अथवा महामोहना उदयथी जेने गांडापणुं थयुं होय, तेवो पुरुष घणा दोषोनो हेतु होवाथी दीक्षा आपवाने अयोग्य छे ९

अदर्शन एटले नेत्र वगरनो अथवा सम्यक्त्व वगरनो. थिणद्धि निद्राना उदयवाळो पुरुष दिक्षित करवाथी दृष्टिनी विकलताने लइने पगले पगले षट्काय जीवोनो विराधक थाय छे अने पोतानो पण उपघातक बने छे. थिणद्धी निद्रावाळो पुरुष द्वेषने पाम्यो होयतो गृहस्थो तथा साधुओने मारणादिक करे छे तेथी -तेवो पुरुष दीक्षा आपवाने अयोग्य छे. १०

दास एटले घरनी दासीथी उत्पन्न थयेलो अथवा पगारथी राखेलो, वेचातो लीधेलो के लेणापेटे राखेलो पुरुष ते पुरुष पण दीक्षा आपवाने अयोग्य छे. कारणके, तेवा पुरुषने दीक्षा आपवाथी स्वामीना करेला दीक्षाना त्याग करवा रुप दोषो थवा संभव छे. ११

दुष्ट पुरुष बे प्रकारना छे. १ कषायदुष्ट अने २ विषयदुष्ट. तेमां गुरुए ग्रहण करेल सर्षपनी नालीना वृत्तांतथी रीसाएला साधुनी जेम जे उत्कट-कषायी होय ते कषायदुष्ट कहेवाय छे. तेम जे परनारी आदिमां अतिशय आसक्त रहे ते विषयदुष्ट कहेवाय छे. तेवा पुरुषो दीक्षा आपवाने अयोग्य छे, का-कारणके तेओ अत्यंत संक्लिष्ट अध्यवसायी होय छे. १२

स्नेह एटले अज्ञानादिकना वशथी तत्त्वज्ञानवडे शून्य हृदयवालो ते मूढ कहेवायछे. ते कृत्याकृत्यादि विवेकथी विकल होवाथी विवेकमूल एवी अरिहंतनी दीक्षाने अयोग्य छे. १३

ऋणार्त—एटले देवादार, तेने दीक्षा आपवामां घणा प्रसिद्ध दोषो छे. १४

जुंगित एटले जातिए करीने, कर्मे—क्रियाए करीने अने शरीरादिके करीने दूषित एवो पुरुष जुंगित ए नीच जातिनो पुरुष छे. चमार, धोबी, कोळी, मोची आदि जे अस्पृश्य छे, ते बधा जुंगितमां गणाय छे. तेओ जाति चंडाल पण कहेवाय छे. ते शिवाय स्त्री, मोर, कुकडा अने शुक आदिना पोषण करनारा स्पृश्य छे, छतां तेपण जातिचंडाल कहेवाय छे. वांस, दोरडा, उपर चडनारा, हजाम जातिना, कसाइपणुं अने पारधिपणुं आचरनारा कर्मचंडाळ कहेवाय छे. जेओ पांगला, कुबडा, ठींगणा अने काणाप्रमुख छे तेओ शरीर जुंगित कहेवाय छे. तेवा पुरुषो दीक्षा आपवाने अयोग्य छे; कारणके, तेवाओने दीक्षा आपवाथी लोकोमां अवर्णवाद थवानो संभव छे. १५

द्रव्य ग्रहण करवा माटे अथवा विद्या निमित्ते ' अमुक दिवस हुं तमारो छुं ' आ प्रकारे जेणे पोतानी पराधीनता करेली होय ते अवबद्ध कहेवाय छे. तेमां कलह आदि दोषोनो हेतु रहेलो छे, तेथी ते दीक्षा आपवाने अयोग्य छे. १६

जे अमुक द्रव्य—पगारथी धनवंतनी आज्ञा उठाववा नीमाएलो होय ते भृत कहेवाय छे, तेपण दीक्षा आपवाने अयोग्य छे; कारणके, तेवाने दीक्षा आपवाथी जेना कार्यमां पूर्वे ते निमाएलो होय, ते गृहस्थनी अप्रीतिनो ते पात्र बने छे. १७

जे दीक्षा लेवा उत्सुक होय तेनुं अपहरण करवुं, एटले जेनो दीक्षा लेवानो जाव होय तेने छुपी रीते बीजे लइ जवो—उपलक्षणथी माता पितादिकनी आज्ञा वगर जेने दीक्षा आपवी, ते शैक्ष्यनिष्फेटिका कहेवाय छे. तेवाओ पण दीक्षा आपवाने अयोग्य छे; कारणके, तेवाओने दीक्षा आपवाथी अदत्तादानादि दोषनो प्रसंग आवे छे. १८

आ प्रमाणे आ अढार पुरुषो दीक्षादानने अयोग्य कहेवाय छे. तेवाओमां पण वज्रस्वामीनी पेठे केटलाएकने दीक्षा आपवानी आज्ञा करेली छे.

स्त्री जातिने विषे पण वीश दीक्षा आपवाने अयोग्य छे.

"जे अढारसजेया पुरिसस्स तहित्थिआइ ते चेव ।
गुव्विणी[1] सबालवच्छा[2] दुन्नि इमे हुंति अन्ने वि" ॥१॥

जेम पुरुषना अढार जेद कहेला छे, तेवाज स्त्रीना पण अढार जेद छे. तेमां गुर्विणी एटले सगर्जा अने स्तनपान करनारा नाना बालकवाली ते बालवत्सा—ए बे जेद मेलववाथी स्त्री जातिना वीश जेद थाय छे." १

पूर्वोक्त ते वीश स्त्रीओना जेद छे ते दीक्षा आपवाने अयोग्य छे. तेमने विषे दोष पण पूर्वनी पेठे समजी लेवा.

नपुंसकना सोळ जेद.

आगमने विषे नपुंसकना सोळ जेद कहेला छे; तेमां दश जेद सर्वथा दीक्षा आपवाने अयोग्य छे; कारणके तेमां अतिशय संक्लिष्टपणुं रहेल छे.

ते आ प्रमाणे—

पंमए वाइए कीवे। कुंजीस्साल्लु एइय ॥ सउणी तक्कम्मसेवीय । पक्खिया पक्खिएइय ॥ १ ॥ सोगंधिए अ आसत्ते दसएए नपुंसगा ॥ संकिलट्ठत्ति साहूणं । पव्वावेउं अकप्पिया ॥ २ ॥

(१) पंमक (२) वातिक, (३) क्लीब (४) कुंजी (५) ईर्ष्यालु (६) शकुनी (७) तत्कर्मसेवी (८) पाक्षिकापाक्षिक (९)

सौगंधिक (१०) आसक्त ए दश नपुंसक संक्लिष्ट चित्तवाळा होवाथी साधुओने दीक्षा देवाने अयोग्य छे, ते सर्वेनुं संक्लिष्टपणुं महानगरदाह समान कामना अध्यवसाय युक्तपणावडे स्त्री पुरुष सेवन आश्रीने होय छे. केमके ते उन्नय सेवी छे. तेमनुं स्वरुप निशीथ भाष्यथी तथा प्रवचनसारोध्धारथी जाणी लेवुं. अत्र प्रश्न थाय छे के पुरुषना भेदमां अने अत्र नपुंसक कहेला छे तेमां शुं विशेष छे ? उत्तरमां कहेवामां आवे छे के त्यां प्रथम पुरुष आकृतिनुं ग्रहण छे अने अत्र नपुंसक आकृतिनुं ग्रहण छे—ए विशेषपणुं छे. तेमज स्त्रीने विषे पण समजवुं. हवे सोळ भेदमां बाकी रहेला छ भेद दीक्षाने योग्य छे ते दर्शावे छे.

" वद्धिए[१] चिप्पिए[२] चेव मंतओ[३] सहिउवहे[४] ।
इसिसत्ते[५] देवसत्ते[६] य पव्वावेज्ज नपुंसए " ॥ १ ॥

१ राजा अंतःपुरनी रक्षा माटे उत्तर काळमां बाळ अवस्थामां छेद आपी जे पुरुषना चिह्नने गाळी नांखे छे ते वर्द्धक नपुंसक कहेवाय छे.

२ जन्म पामतांज अंगुठाथी अथवा आंगळीथी जेनुं पुरुष चिह्न खेरवी नखाय अथवा वीखेरी नखाय ते चिप्पित नामे नपुंसक कहेवाय छे.

३—४ जेने मंत्रनी शक्तिथी अथवा औषधना प्रभावथी पुरुष वेद अथवा स्त्री वेद हणतां नपुंसक वेद उदय थाय ते बे प्रकारे नपुंसक कहेवाय छे.

५ कोइ ऋषि के तापसे शाप आपवाथी जे नपुंसक थयेलो ते ऋषिशप्त नपुंसक कहेवाय छे.

६ जे कोइ भुवनपति वगेरे देवताना शापथी नपुंसक थयेलो होय ते देवशप्त कहेवाय छे. आ छ प्रकारना नपुंसकोने दीक्षा आपी शकाय छे.

हवे अढार, वीश अने दश भेदथी व्यतिरिक्त एवा पुरुष स्त्री अने नपुंसकने विषे जे सर्व विरति अंगीकार कराय छे, ते कहे छे—

" अमंदवैराग्यनिमग्नबुध्धयः तनूकृताशेषकषायवैरिणः ।
ऋजुस्वभावाः सुविनीतमानसा भजंति भव्या मुनिधर्ममुत्तमम्"१

" जेमनी बुध्धि तीव्र वैराग्यमां निमग्न थयेली छे, जेमणे कषायरूपी सर्व शत्रुओने सूक्ष्म करी दीधा छे, जेमनो स्वभाव सरल छे अने जेमणे पोताना मनने अनुकूल करेलुं छे, एवा भव्य प्राणीओ उत्तम एवा मुनिधर्मने भजे छे." १

आ श्लोकमां अमंद वैराग्य ए विशेषण आपेलुं छे, ते उपरथी सिध्ध थाय छे के रोगादिजन्य एवा क्षण मात्र रहेनारा वैराग्यवडे कांइ पण सिध्धि थती नथी, एम सूचव्युं छे.

वळी कह्युं छे के,—

" रोगेण व सोगेण व, दुक्खेण व जं जमाण उल्लसइ ।
मग्गंति न वेरग्गं, तं विवुहा अप्पकालंति " ॥ १ ॥
सुहिअस्सव्व दुहिअस्सव, जं वेरग्गं भवे विवेएणं ।
पायं अपच्चयंवा, तं चिय चारित्ततरुवीअं " ॥ २ ॥

" तेवा वैराग्यने पंडित पुरुषो मागता नथी के जे वैराग्य निर्विवेकी पुरुषोने कासश्वासादि रोगथी, पुत्र वियोगादि शोकथी अने वध बंधादिकना योगथी उत्पन्न थाय छे. वळी आ असारसंसारने धिक्कार छे, कारण के, रोग, शोक आदि घणां कष्टो जेमां रहेला छे एवी विचारणामय वैराग्य जेमां उल्लास पामे छे तेवा वैराग्यने पंडित पुरुषो इच्छता नथी, जेथी तेवुं वैराग्य सर्व विरतिने अयोग्य छे. १

तेवा वैराग्यनी अयोग्यता शाथी थाय छे? ते कहे छे—तेवा वैराग्यनुं अल्प काल सुधी स्थायीपणुं छे, तेमज रोगादिकनी निवृत्ति थतां तेवा वैराग्यनी पण निवृत्ति थइ जाय छे, माटे उत्तम बुध्धिवाळा पुरुषोए तेवुं वैराग्य इच्छवा योग्य नथी. अहीं प्रश्न करे छे के, " त्यारे सर्व विरतिने योग्य केवुं वैराग्य होय ? " तेना उत्तरमां कहे छे के, सुखी अथवा दुःखी जनने जे वैराग्य थाय, तेवुं जे वैराग्य अनश्वर होय छे, कारण के, विवेकना मूलपणाने लइने सर्व दुःखादिकनी निवृत्ति थतां वैराग्य पण निवृत्ति पामतुं नथी, तेथी ए वैराग्य चारित्ररूपी वृक्षने उत्पन्न करवानुं कारण बीजरूप छे. अहिं चारित्रने वृक्षनी उपमा आपेली छे, ते सम्य-

क्त्वरुप मूलथी, प्रथम व्रतरुप स्कंधथी, शेष-बाकीना व्रतरुप शाखाओथी, प्रशमादिक प्रशाखाओथी, सकल क्रियाकलापरुप प्रवाळांथी, लब्धिओ रुप पुष्पोथी अने मोक्षरुप फलथी बराबर घटे छे. तेनी अंदर जे प्रायः शब्द मुकेलो छे, तेथी व्यभिचार छतां दोष आवतो नथी; कारण के, ते नंदीषेण वसुदेवना पूर्व जवनो जीव छे, ते अति कुरूपपणाथी स्त्रीवर्गे अनादर करातां मनने विषे अत्यंत दुःख पामता अविवेकथी पण अविनाशी वैराग्यने पामेला हता. १-५

दश प्रकारनो यतिधर्म.

" खंती १ मद्दव २ अज्जव ३ मुत्ती ४ तव ५ संजमेय ६ बोधव्वे।
सच्चं ७ सोयं ८ आकिं-चणंच ९ बंभं १०-च जइधम्मो " ॥१॥

" १ क्षांति—एटले सर्वथा क्रोधनो परित्याग, २ मृदुता—सर्वथा माननो त्याग, ३ सरलता—सर्वथा कपट वृत्तिनो त्याग, ४ निर्लोभता—सर्वथा लोभनो त्याग, एथी मुनिओए प्रथम चार कषायनो जय करवो, एम सूचव्युं छे. कषायो उभयलोकमां प्राणीओना स्वार्थनो विनाश करनारा छे. कह्युं छे के,

" कोहो पीइं पणासेइ माणो विणयनासणो ।
माया मित्ताणि नासेइ लोहो सव्व विणासओ ॥ १ ॥
कोहो नाम मणुसस्स, देहाओ जायए रिऊ ।
जेण चयंति मित्ताइ धम्मो य परिभस्सई ॥ २ ॥
नासियगुरुवएसं विज्जाअहलत्त कारणमसेसं ।
कुग्गहगयआलाणं को सेवइ सुव्वओ माणं ॥ ३ ॥
कुडिलगइ कूरमइ सयाचरणवज्जिओ मलिणो ।
मायाइ नरो भुअगव्व दिठमित्तो वि भयजणओ ॥४॥
किच्चाकिच्च विवेयं हणइ जो सया विम्बणाहेउं ।
तं किरलोहपिसायं को धीमं सेवए लोए " ॥५॥

" क्रोध प्रीतिनो नाश करे छे, मान विनयभंजक छे, माया मित्रोनो विनाश करनारी छे अने लोभ सर्व विनाश उत्पन्न करनार छे " (१)...

" क्रोध मनुष्यना शरीरमांथी उत्पन्न थयेलो शत्रु छे. जेना सद्भावथी मित्रो (संग) तजी दे छे अने धर्म दूर जाय छे. (२)

" जेणे गुरुना उपदेशग्रहणनो विनाश करेलो छे, जे समस्त विद्याने निष्फल करवाने कारणभूत छे, जे कुग्रहरुप हस्तीने बांधवानुं स्थान छे तेवा मानने कोण सदाचरणी पुरुष सेवे ? " (३)

मायावी मनुष्य वक्रगतिवालो, क्रूर बुध्धिवालो, सदाचरणवर्जित, मलिन, अने सर्पनी पेठे दृष्टिमात्रथी भयने उत्पन्न करनार होय छे " (४)

" जे कृत्याकृत्यना विवेकनो विनाश करे छे, जे सर्वदा विर्मबनाना हेतुभूत छे, तेवा लोजरुप पिशाचने कयो बुद्धिमान पुरुष सेवे ? " (५)

वली बीजा सर्व मोक्षना अंगोने विषे कषायनो त्याग ते पण मोक्षनुं एक मुख्य अंग छे ते विना कदिपण मोक्षनी प्राप्ति थती नथी. तेने माटे कह्युं छे के,—

" कठ्ठ किरियाहिं देहं दमंति किं ते जमा निरवराहं ।
मूलं सव्व दुहाणं, जेहिं कसाया न निग्गहिया" ॥१॥

" जेमणे कषायोनो निग्रह कर्यो नथी एवा पुरुषो कष्ट क्रियाओ करी सर्व दुःखना मूलरुप एवा निरपराधी देहने दमे छे तेओ जम पुरुषो छे." १

" सव्वेसुवि तवेसु कसायनिग्गहसमं तवो नथ्थि ।
जं तेण नागदत्तो सिध्धो बहुसो वि जुंजंतो " ॥ १ ॥

"सर्व प्रकारना तपमां पण कषायोनो निग्रह करवा रुप तपना जेवुं बीजुं तप नथी, जे तपना प्रजावथी नागदत्त घणीवार जोजन करतो पण सिध्ध थयो हतो."१

नागदत्तनुं बीजुं नाम कुरगडु साधु कहेवाय छे. ते दररोज त्रण त्रणवार जोजन करतो, पण केवल कषायना निग्रहना बलथी केवलज्ञाननी लक्ष्मीने प्राप्त थयो हतो. ए नागदत्तनी कथा प्रसिध्ध छे; तेथी आ स्थले दर्शावेल नथी.

हवे अपवाद मार्गने आश्रीने अहीं विशेषपणे देखाडे छे.

"यः शासनोड्डाह निवारणादि–सध्धर्मकार्याय समुद्यतः सन् ।
तनोति मायां निरवद्यचेताः प्रोक्तः स चाराधक एव सुज्ञैः"१

" जे मुनि शासननी निंदानुं निवारण करवा वगेरे सारा धर्मकार्योने माटे उजमाळ थइ निर्दोष हृदये मायाने विस्तारे छे, तेवा मुनिने सुज्ञ पुरुषोए आराधक कहेलो छे. " १

कहेवानो आशय एवो छे के, जे मुनि शासननी निंदा अटकाववाने माटे माया—कपट आचरे ते मुनि शासनना आराधक गणाय छे, विराधक गणाता नथी; कारणके, शासननी अपभ्राजना निवारवाथी पोते आचरेला मायाकषायना लेशनी आलोचना करी तेओ शुध्द थइ शके छे. वळी सिद्धांतमां पण नवमा गुणस्थान सुधी संज्वलन मायानो उदय कहेलो छे, ते उपर एक दृष्टांत कहेवामां आवे छे.

मायाकषाय विषे दृष्टांत.

कोइ एक नगरमां एक मिथ्यात्वी राजा राज्य करतो हतो. तेनी राणी जैनधर्म उपर परम रागवती हती. बंनेनी वच्चे अत्यंत प्रीति हती. तेओनी वच्चे वारंवार धर्मनी चर्चा थती हती. एक वखते ते मिथ्यात्वी राजाए विचार कर्यो के, "जो हुं कोइ रीते आ राणीना धर्मगुरुनो अनाचार प्रगट करी बतावुं तो राणी मौन थइने रहेशे. " आ प्रमाणे विचारी राजाए तेनो उपाय योजवा माटे पोताना नगरनी पासे आवेला एक चंडिकाना पूजारीने बोलावी आ प्रमाणे कह्युं—" जो कोइ जैनमुनि आ चंडिकाना मंदिरमां रात्रे निवास करे, त्यारे तमारे कोइ वेश्याने मंदिरमां राखी द्वार बंध करी देवा अने तत्काळ मने ते खबर आपवा. " आ प्रमाणे राजानी आज्ञा ते पूजारी अंगीकार करी पोताने स्थाने गयो.

एक दिवसे कोइ जैनमुनि चंडिकाना मंदिरमां आवी चड्या. ते वखते तेणे वेश्याने अंदर पूरी द्वार बंध करी दीधा. पछी तेणे राजाने ए वात निवेदन करी. राजाए कह्युं, " हवे ज्यारे हुं त्यां आवुं, त्यारे तमारे ते द्वार उघाडवां." राजानां आ वचनने अंगीकार करी पूंजारी पोताने स्थाने आव्यो.

अहीं मंदिरमां पूराएला जैनमुनिए चिंतव्युं के, " कोइ मिथ्यात्वीए द्वेष बुद्धिथी मने आ उपसर्ग करेलो छे, माटे मारे आ उपसर्गने सम्यक् प्रकारे सहन करवो. हुं आ उपसर्गने सहन करीश पण प्रभाते अहीं आवनारा लोकोमां मारा निमित्ते जिनमतनी निंदा थशे, तेथी आ निंदा दूर करवा माटे हुं कोइ उपाय

आचरुं." आ प्रमाणे चिंतवी तत्काल उत्पन्न थयेली बुद्धिवडे तेणे ते मंदिरना मध्य जागे रहेला दीपकना अग्निथी पोताना वस्त्रादिक सर्व उपकरणोने बाळी तेनी रक्षा करी. ते रक्षाथी तेणे पोतानुं सर्व शरीर चोल्युं अने रजोहरणमां रहेली लाकडी हाथमां ग्रहण करी जे खूणे वेश्या हती तेनाथी दूर मंदिरने बीजे खूणे ते निश्चितपणे बेठा.

मुनिनुं आवुं भयानक स्वरूप जोइ वेश्या मनमां भय पामी गइ अने ते मौन धरीने एकांत भागे लुपाइने बेशी गइ.

प्रातःकाले राजा जैन मुनिना अनाचार देखाडवानी इच्छाथी नगरना मुख्य लोकोने अति आग्रह करी चंडिकाना मंदिर पासे लाव्यो. नगरना श्रेष्ठी शाहुकारो सहित राजा मंदिर पासे आव्यो अने देवीना पूजारीने कह्युं, "पूजारी, आ द्वारना कमाड उघाड, अमारे माताना दर्शन करवां छे." राजाना आवा वचनथी पूजारीए मंदिरना द्वार उघाडयां, तेवामां ते जैनमुनि हाथमां लाकडी लइ नग्न स्वरूपे 'अलख अलख' एवा शब्दो करता अंदरथी बाहेर नीकल्या अने राजा वगेरे सर्व लोकोनी वच्चे थइ बीजे स्थाने चाल्या गया; तेनी पाछळ वेश्या पण बाहेर नीकली. राजा पोतानाज धर्मना गुरुनुं आवुं दुःस्वरूप जोइ अतिशय शरमाइ गयो अने नम्र मुखे उभो रह्यो.

आ वखते राणी बोली, "स्वामी, शी चिंता करो छो ? मिथ्यात्वनी विडंबनाए करी प्राणीने शी शी चिंता उत्पन्न थती नथी. ?"

आ वखते राजाए उठी पोताने स्थाने आवी पूजारीने क्रोधथी ते बनाव विषे पूछ्युं, त्यारे तेणे कह्युं, "स्वामी, आपना कहेवा प्रमाणे में कर्युं हतुं, ते छतां आम विपरीत बन्युं, ते विषे हुं कांइ पण जाणतो नथी. पछी राजाए ते वेश्याने बोलावीने पूछ्युं, त्यारे वेश्याए ते सर्व वृत्तांत राजाने निवेदन कर्यो अने जैनमुनिना धैर्यनुं वर्णन करी बताव्युं. पछी राजा ते वृत्तांत सांभळी राणीना वचनथी प्रतिबोध पामी सम्यक्त्ववंत श्रावक बनी गयो हतो.

पेला मुनि फरीथी मुनिवेष धारण करी पोते करेल मायाकषायना स्थानकने आलोची अने शुद्ध संयमने आराधी छेवटे उत्तम गतिना भाजन थया हता.

आ प्रमाणे शासननो उड्डाह निवारवा विषे माया करनार मुनिनो दृष्टांत छे.

तपस्यानुं स्वरूप.

तप बे प्रकारनुं छे. १ बाह्य अने २ आभ्यंतर. ते प्रत्येक छ छ प्रकारना छे, तेने माटे आ प्रमाणे कहेलुं छे—

" अणसणमुणोअरिआ, वित्तिसंखेवणं रसच्चाउ ।
कायकिलेसो संलीणा, याय बज्झो तवो होइ " ॥ १ ॥

" अनशन एटले आहारनो त्याग–ए बे प्रकारे छे. १ इत्वर अने २ यावत्कथिक. श्रीवीरतीर्थे नमुक्कारसहियी लइने छ मास पर्यंत अने प्रथम जिनना तीर्थमां वर्ष पर्यंत अने शेष जिनोना तीर्थमां आठ मास पर्यंत होय छे.

बीजुं यावत्कथिक.—१ पादपोपगमन, २ इंगितमरण अने ३ भक्त-परिज्ञा–एम त्रण प्रकारे छे. तेमां भक्तपरिज्ञामां त्रिविध अथवा चतुर्विध आहारना पच्चखाण अने शरीरनी परिकर्मता (शरीर संबंधी वैयावच्च) पोते करे अथवा बीजा पासे करावे. बीजा इंगितमरणमां निश्चे चतुर्विध आहारनो त्याग अने बीजाथी परि-कर्म–वैयावच्चनुं वर्जन होय छे, अने पोते पण पोताना कल्पेला देश भागमां उद्व-र्त्तनादिक परिकर्म करे छे. त्रीजा पादपोपगममां वृक्षनी पेठे पोताना अंग तथा उपांग ने सम अथवा विषम प्रदेशने विषे जेम प्रथम पड्युं होय तेम धारण करी निश्चल थइ रहेवानुं छे, एटले वृक्षनी शाखानी जेम पासु बदल्या वगर पड्युं रहेवानुं छे.

उनोदरी प्रमुखनुं स्वरूप.

" बत्तीस किरकवला–हारो कुच्छिपूरओ भणिओ ।
पुरिसस्स महिलयाए, अट्ठावीसं भवे कवला" ॥१॥

" जे बत्रीश कवळ–कोळीयानो आहार ते कुक्षिपूरण आहार कहेलो छे, तेमां पुरुषना बत्रीश अने स्त्रीना अठ्यावीश कोळीया कहेला छे. आ प्रमाणे आहारनुं मान संक्षेपरूपे जाणी लेवुं. वृत्ति–भिक्षाने द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भा-वथी अभिग्रहविशेषवडे संकोचवी ते वृत्तिसंक्षेप कहेवाय छे अथवा आजीविका संक्षेप कहेवाय छे. दहीं, दूध, वगेरेनो परिहार ते रसत्याग कहेवाय छे. तेम

कायानुं आसन बांधवुं अथवा लोचादिकथी कायाने क्लेश आपवो ते कायक्लेश कहेवाय छे. जे इंद्रिओनी गुप्तता ते संलीनता कहेवाय छे. एटले इंद्रिय, कषाय अने योगवडे संकीर्ण तेमज स्त्रीपशुपंडकादि वर्जित स्थाने रहेवुं ते संलीनता कहेवाय छे.

ए छ प्रकारना तप लोकोमां प्रवर्त्ते छे, वळी केटलाएक कुतीर्थिओ पण ए तप आचरे छे, तेथी ते बाह्य तप कहेवाय छे.

आभ्यंतर तपना प्रकार.

" पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ ।
झाणं उस्सग्गोवि अ, अब्भिंतरओ तवो होइ" ॥१॥

" १ प्रायश्चित्त, २ विनय, ३ वैयावृत्य, ४ स्वाध्याय, ५ ध्यान अने ६ कायोत्सर्ग–ए छ प्रकारनुं आभ्यंतर तप कहेवाय छे. " १

प्रायश्चित तपना दश प्रकार.

" आलोयण पडिक्कमणे, मीसविवेगे तहावि उस्सग्गो ।
तवच्छेय मूल अणवठ्ठ–याय पारंचिय चेव" ॥१॥

१ आलोचना–एटले गुरुनी आगळ पोतानुं दुष्कृत वचनथी प्रगट करवुं.

२ प्रतिक्रमण–एटले लागेला दोषथी पाछुं फरवुं–फरीथी ते दोष न करवाने माटे मिथ्या दुष्कृत आपवुं पण गुरु समक्ष न आलोचवुं, अनुपयोगपणे श्लेष्मादिकना प्रक्षेपनी जेम.

३ मिश्र–जे दुष्कृत आ बंनेथी शुद्ध न थाय तो तेनी शुद्धिने अर्थे आलोचना अने प्रतिक्रमण ए बंने करवा ते.

४ विवेक–जे आधाकर्मादि आहार ग्रहण करवा प्रमुख के जे अकृत्यपणे ग्रहण करेला आहारादिकनो त्याग करवाथी शुद्ध थाय छे, ते शिवाय बीजी रीते शुद्धि थती नथी, ते शुद्धिने अर्थे जे आहारादिकनो परित्याग ते विवेक कहेवाय छे.

५ व्युत्सर्ग–दुःस्वप्नथी उत्पन्न थयेल दोषनी शुद्धिने माटे कायाना व्यापारनो निरोध करवो ते.

६ तप–जे प्रथम कहेला उपाये करी जे अशुध्ध रहे तो ते दुष्कृतनी शुध्धिने माटे यथायोग्य नीवी आदि छ मास पर्यंत जे तपनुं आचरण ते.

७ छेद–शेष चारित्र पर्यायनी रक्षाने माटे सदोष पूर्व पर्यायनुं छेदन करवुं ते.

८ मूल–कोइ महा दोष लागतां समग्र चारित्र पर्यायने छेदी फरीथी महाव्रतनुं आरोपण करवुं ते.

९ अनवस्थाप्यता–क्रोधादिकना उदयथी सेवन करेला पापनी शुध्धिने माटे गुरुए यथार्थ आपेला तपनी शुध्धि ज्यां सुधी नथी करी त्यां सुधी तेने व्रतने विषे अथवा वेषने विषे न स्थापवा ते अनवस्थाप्यता कहेवाय छे.

१० पारांचित–मुनिघात, राजवध आदि महा अकृत्य सेववाथी लिंग, काल, क्षेत्र अने तपवडे तेनो पार पामवो ते.

आ प्रमाणे प्रायश्चित्त तपना दश प्रकार छे. ते प्रायश्चित्त अप्रगटपणे लिंग धरनारा, जिनकल्पिकना तुल्य रूपवाळा अने क्षेत्रथी बाहेर रहेला आचार्योने शुध्ध विस्तीर्ण तप करतां छतां जघन्यथी छ मास अने उत्कृष्टथी बार वर्ष पर्यंत होय छे; ते पछी एटले अतिचारनुं पार गमन कर्या पछी अनंतर तेने दीक्षा अपाय छे, अन्यथा अपाती नथी.

आ दश प्रकारना प्रायश्चित्तमां छेल्ला बे प्रायश्चित्त पहेला संघयणवाला चौद पूर्वी सुधी होय छे अने बीजा आठ प्रायश्चित्त श्री दुःप्रसन्नसूरि सुधी रहेशे, एम जाणवुं. विनय, ज्ञानादिक भेदे करीने सात प्रकारनो छे; तेमां ज्ञानादिकनी भक्तिरुप ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनो विनय त्रण प्रकारनो छे, तथा मन, वचन अने कायाए करी आचार्यादिकने विषे अकुशल एटले नठारी रीते प्रवर्त्तता मन, वचन अने कायानो निरोध अने कुशल प्रवृत्तिवाळाने मन, वचन तथा कायानुं उदीरण एम विनयना छ प्रकार थया. सातमो उपचारिक विनय ते गुरु आदिकनी अनुकूल प्रवृत्तिरुप कहेवाय छे.

आ सात प्रकारनो विनय सर्व काले मुनिओने आचरवा योग्य छे.

४ वैयावच्च.

वैयावच्च तप सेवावृत्तिमां आवे छे. आचार्यादिकने अन्न, पाणी, वस्त्र,

पात्रादि संपादन करवानी विधिनो जे व्यापार ते वैयावच्च कहेवाय छे.

५ स्वाध्याय.

अकाल वेलानो परिहार करीने अथवा पोरिसीनी अपेक्षाए जे अध्ययन करवुं ते स्वाध्याय कहेवाय छे. ते स्वाध्याय पांच प्रकारे छे. १ वाचना, २ पृच्छना, ३ परावर्त्तना, ४ अनुप्रेक्षा अने ५ धर्मकथा–एवा तेमना नाम छे.

जे नहीं जणेला सूत्रोनुं शास्त्रोक्त विधिवडे गुरु मुखे ग्रहण करवुं. ते वाचना कहेवाय छे. तेमां संदेह थतां पुछवुं ते पृच्छना कहेवाय छे. ते पृच्छना वडे निश्चित सूत्रोनुं विस्मरण न थाय तेने माटे गणवुं ते परावर्त्तना कहेवाय छे. सूत्रनी पेरे अर्थनुं जे चिंतववुं, ते अनुप्रेक्षा कहेवाय छे अने अभ्यास करेला सूत्र अने अर्थनो वीजाने उपदेश आपवो ते धर्मकथा कहेवाय छे.

अहीं सूत्र वे प्रकारे छे. १ अंगप्रविष्ट अने २ अंगबाह्य. तेमां वे पग, वे जंघा, वे उरु, वे गात्र, वे हाथ, एक ग्रीवा अने एक मस्तक ए बार अंगवालो पुरुष " सुअविसिट्ठो " थी ओलखाय छे.

ए प्रवचनरुप पुरुषना अंगमां जे रहेलुं ते अंगप्रविष्ट सूत्र कहेवाय छे. ते बार प्रकारे छे. आचारांग अने सूत्रकृतांग सूत्र ए प्रवचन पुरुषना वे पग छे. स्थानांग अने समवायांग—ए तेनी वे जंघा छे. भगवती अने ज्ञातासूत्र ते तेना वे उरु छे, उपासकदशांग तथा अंतगडदशांग ते तेना पीठ तथा उदररुप वे गात्र छे, अनुत्तरोववाइदशांग अने प्रश्न व्याकरण—ए वे तेना हाथ छे, विपाक सूत्र ते ग्रीवा अने दृष्टिवाद ते मस्तक छे. आ प्रमाणे प्रवचन पुरुषना ते सूत्रो बार अंग रुप छे.

हवे जे अंग बाह्य ते आवश्यक छे, ते उपांगो, पयन्ना आदि भेदथी अनेक प्रकारनुं छे दीक्षा ग्रहण करनारने जेटले वर्षे जे सूत्रनी वाचना ग्रहण करवा योग्य होय छे ते स्वरूप व्यवहार सूत्र मांहेली गाथावडे दर्शावे छे. संवत्सरादि कालना अनुक्रमे करी जे जे काल प्राप्त थाय, ते ते काले धीरपुरुष वाचना लेछे ते काल आ प्रमाणे छे.

त्रण वर्षना दीक्षा पर्यायवालो आचारकल्प नामना अध्ययन सुधी वाचना ले छे. चार वर्षवालो सूयगडांग नामे वीजा अंग सुधी अने पांच वर्षनो

दीक्षित दशाश्रुतस्कंध, कल्पसूत्र अने व्यवहार सूत्रनी वाचना लइ शके छे. अहिं आचारकल्प एटले निशीथ सूत्रनुं अध्ययन समजवुं. आठ वर्षना दीक्षा पर्यायवालो पुरुष श्री स्थानांग अने चोथुं समवायांग वांची शके छे. दश वर्षना पर्यायवालाथी श्री नगवतीजी वांची शकाय छे. अगीआर वर्षना पर्यायवालाथी श्री खुड्डियविमाणविनत्ती आदि पांच अध्ययन वाच्य छे. बार वर्षना पर्यायवालाने माटे श्री अरुणोववाइ आदि पांच अध्ययन कहेला छे. तेर वर्षना दीक्षा पर्यायवालाने उत्थाणश्रुतादिक चार अने चौद वर्षना पर्यायवालाने श्री आशीविष नावना वाचनीय छे. पंदर वर्षना पर्यायवाला दृष्टिविष नावना अने सोळ वर्षना पर्यायवाला चारणनावना सुधी वांची शके छे. सत्तर वर्षना पर्यायवालाने महसुमिण नावना अने अढार वर्षना पर्यायवालाने तेयगनिसग नावना सुधी अध्ययन करवुं योग्य छे. ओगणीश वर्षना पर्यायवालाने बारमा दृष्टिवाद वांचवानी आज्ञा छे अने संपूर्ण वीश वर्षना पर्यायवाला मुनिने सर्व सूत्रनी आज्ञा छे ते स्वाध्यायने करनारा अने संयम मार्गने नहीं विराधनारा मुनिओए व्याविध्दत्व प्रमुख अतिचारो सर्वथा वर्जवा जोइए. ते अतिचारो चौद प्रकारना छे.

१ व्याविध्दत्व–विपरीतपणुं. २ व्याम्रेडित–जुदा जुदा आलावा मेलवी बे त्रणवार कहेवुं. ३ हीनाक्षर—हीन अक्षरपणुं. ४ अत्यक्षर—वधारे अक्षरो कहेवा ते. ५ पदहीनता—पद ओछुं कहेवुं ते. ६ विनय हीनता—विनयनो त्याग करवो ते. ७ उदात्तादि घोष हीनपणुं. ८ योग हीनता—योगनी उपचारता न करवी ते. ९ अल्पश्रुतने योग्य होय तेने अधिक श्रुतनुं दान देवुं. १० पाग इछताने कलुषित हृदये ग्रहण करवुं ते. ११ अकाले स्वाध्याय करवो. १२ काले स्वाध्याय न करवो ते. १३ स्वाध्यायने अवसरे स्वाध्याय न करवो. १४ स्वाध्याय न करवो होय त्यारे करवो.

ए चौद अतिचारनुं स्वरुप विशेषपणे आवश्यकादि सूत्रोथी जाणी लेवुं. आ चौद अतिचारोने वर्जी स्वाध्याय करनारा मुनिओने महान् लान्न प्राप्त थाय छे. जो आ अतिचारोनो त्याग कर्या विना स्वाध्याय ध्यान करवामां आवे तो हीनाक्षर दोषने करनारा एक विद्याधरनी पेठे विद्यानी निष्फलता प्रमुख महादोषो उत्पन्न थाय छे.

ते विद्याधरनुं दृष्टांत.

एक वखते राजगृह नगरने विषे तेनी समीपे आवेला उद्यानमां श्री वीर प्रभु समोसर्या; ते वखते स्वामीना आगमननी वार्ता सांभळी जेनुं चित्त संतुष्ट थयेलुं छे, एवो श्रेणिक राजा अभयकुमार वगेरेने लइ त्यां आव्यो. ते प्रभुने त्रण प्रदक्षिणा करी वंदना करी घणा देव अने असुर कुमारादि तथा विद्याधर अने मनुष्योना समूहे विराजित एवी सभामां योग्य स्थाने बेठो. धर्मने सांभळी पर्षदा पुनः पोतपोताने स्थाने गइ. तेवामां कोइ विद्याधर आकाश मार्गे ऊभी जतो हतो, ते तत्काल पृथ्वी उपर पडी गयो. विद्याधरने पृथ्वीपर पडतो देखी श्रेणिक राजा विस्मय पामी गयो. अने तत्काल तेणे प्रभुने तेना पडवानुं कारण पुछ्युं. प्रभुए कह्युं, " राजन्, आ विद्याधर गगनगामिनी विद्यानो एक अक्षर चुकी गयो, तेथी तेनो अधःपात थइ गयो छे. ते हवे आकाश मार्गे जवाने समर्थ थवानो नथी. " आ वखते श्रेणिक राजानी पासे रहेलो मंत्री अभयकुमार प्रभुना वचन सांभळी तत्काल बेठो थयो अने तेणे त्यां जइ विद्याधरने कह्युं, "हे विद्याधर, तुं तारी विद्याना एक अक्षरथी भ्रष्ट थयो छे, जो तुं मने ए विद्या आपे तो हुं तने ते अक्षर आपुं. " विद्याधरे अभयकुमारनुं ते वचन अंगीकार कर्युं. पछी विद्याधरने एक अक्षर आपी तेणे तेनी पासेथी आकाशगामिनी विद्या ग्रहण करी. पछी विद्याधर पूर्ण विद्या प्राप्त करी आकाश मार्गे चाल्यो गयो अने अभयकुमार अनुक्रमे पोताने स्थाने आव्यो हतो.

आ विद्याधरना दृष्टांतनो लेश सांभळी मुनिओए पूर्वे कहेला दोषोनो त्याग करवा यत्न करवो.

वळी पोते स्वाध्याय करता अने बीजाने करावता एवा मुनिओए प्रथम सोळ वचनो अवश्य जाणवा जोइए. ते सोळ वचनो श्री अनुयोगद्वारादि सूत्रोमां आ प्रमाणे आपेला छे. ३ लिंग, ३ वचन, ३ काल, १ परोक्ष, १ प्रत्यक्ष, ४ उपनय-अपनय अने १ अध्यस्थ—ए सोळ वचनो कहेवाय छे.

३ लिंग त्रण छे. १ पुरुष लिंग, २ स्त्री लिंग अने ३ नपुंसक लिंग.

३ त्रण वचन. १ एकवचन, २ द्विवचन अने ३ बहुवचन.

३ त्रण काल. १ अतीत, २ अनागत अने ३ वर्तमान.

१ परोक्ष एटले ' ते ' निर्देशवचन.

१ प्रत्यक्ष एटले ' आ, ' प्रत्यक्षवचन.

४ उपनय--अपनय चार प्रकारे छे. जे प्रशंसा वचन ते उपनय वचन--जेमके, " आ रूपवती स्त्री छे. " जे निंदावचन ते अपनय वचन छे. जेमके, " आ स्त्री रूपवती छे, पण दुःशीलवाली छे. " अपनय--उपनय एटले निंदा करीने प्रशंसा करवी ते. जेम " आ स्त्री कुरूपा छे पण सुशीलवती छे. " चित्तमां बीजुं धारण करी, छेतरवानी बुद्धिए बीजुं कहेवा इच्छतां छतां पण जे चित्तमां छे, ते तत्काल बोली नांखे, ते अध्यात्मवचन कहेवाय छे.

जेओ आ सोळ वचनना अज्ञात होइ सूत्रवाचनादिकमां प्रवर्त्ते छे, ते मूढ जीवो जिनवचनने उल्लंघन करनारा होवाथी जिनाज्ञाना विराधक छे, एम समजवुं; तेथी उत्तम मुनिओए प्रथम कहेला विधिथी परिज्ञान पूर्वक सूत्रअर्थनो स्वाध्याय करवो.

४ ध्यान.

अंतर्मुहूर्त्त मात्र काल सुधी चित्तनो एकाग्र अध्यवसाय करवो ते ध्यान कहेवाय छे. ते ध्यान चार प्रकारनुं छे. १ आर्त्त, २ रौद्र, ३ धर्म अने ४ शुक्ल. तेमां आर्तध्यान चार प्रकारे छे. १ इष्टवियोग, २ अनिष्टसंयोग, ३ रोगचिंता अने ४ अग्रशोचविषय.

१ इष्ट एवा शब्द, रुप, रस, गंध स्पर्श लक्षणवाला विषयोनो जे वियोग, एटले " आ मने कदि पण न थाओ, " इत्यादि चिंतववुं, ते इष्टवियोग नामे पहेलुं आर्त्तध्यान कहेवाय छे.

२ " अनिष्ट शब्दादिक विषयोनो संयोग ते मने कोइ दिवस पण न थाओ. " एवुं जे चिंतवन ते अनिष्टसंयोग नामे बीजुं आर्तध्यान कहेवाय छे.

३ रोगनी उत्पत्ति थतां जे घणी चिंता करवी ते रोगचिंताविषय नामे त्रीजुं आर्त्तध्यान कहेवाय छे.

४ देवपणानी अने चक्रवर्त्तीपणानी ऋद्धिनी प्रार्थना करवा प्रमुख अनागतकाल संबंधी कार्यनो शोक करवो, ते अग्रशोचविषय नामे चोथुं आर्तध्यान कहेवाय छे. आ ध्यान शोक, आक्रंदन, स्वदेह ताडन आदि लक्षणोथी ओळखाय छे. ते तिर्यंचनी गतिनुं कारणरुप कहेवाय छे. आ ध्याननो संभव छठा गुणठाणा सुधी छे, एम जाणवुं.

दुर्बल प्राणीओने जे रोवरावे ते रुद्र कहेवाय छे, ते प्राणिवध आदि

कार्यवडे परिणत एवा आत्मानुं जे कर्म ते रौद्र अथवा ते रुद्रपणानो जे भाव (क्रिया) ते रौद्र कहेवाय छे ते संबंधी जे ध्यान ते रौद्रध्यान कहेवाय छे. ते रौद्रध्याननां चार प्रकार छे. १ हिंसानुबंधी, २ मृषानुबंधी, ३ चौर्यानुबंधी, अने ४ परिग्रहरक्षणानुबंधी. एवा तेना नाम छे.

१ प्राणीओना वध, बंधन दहन, अंकन अने मारणादिकनुं चिंतवन ते हिंसानुबंधी रौद्रध्यान कहेवाय छे.

२ पिशुनता, सत्यासत्य अने घातादिकनुं चिंतवन करवुं, ते मृषानुबंधी रौद्रध्यान कहेवाय छे.

३ तीव्रकोप, लोभाकुल, प्राणीनो उपघात करवामां तत्परता, परलोकना भय तरफ उपेक्षा तथा परद्रव्यना हरणनुं चिंतवन ते चौर्यानुबंधी रौद्रध्यान कहेवाय छे.

४ सर्व जनने शंकामां पाडवानी तत्परता, उपघातमां परायणता, विषय सुखनी साधकता तथा द्रव्यना संरक्षणनुं चिंतवन, ते परिग्रहरक्षणानुबंधी नामे रौद्रध्यान कहेवाय छे. आ ध्यान प्राणिवधादि लक्षणोथी ओळखाय छे, तेथी ते नरकगतिनुं कारणरूप थाय छे.

आ रौद्रध्याननो संभव पांचमा गुणठाणा पर्यंत जाणवो. केटलाएक आचार्यो आ ध्यानना चोथा प्रकार (परिग्रहरक्षणानुबंधी)ने छठा गुणठाणा सुधी माने छे.

धर्मध्याननुं लक्षण आ प्रमाणे छे–धर्म एटले क्षमादि दश प्रकारनो धर्म, तेनाथी युक्त अथवा ते संबंधी ते धर्मध्यान कहेवाय छे. ते धर्मध्यान चार प्रकारनुं छे. १ आज्ञाविचय, २ अपायविचय, ३ विपाकविचय अने ४ संस्थानविचय—एवा तेना नाम छे.

१ श्रीमान् सर्वज्ञ पुरुषोनी आज्ञानुं जे अनुचिंतन, ते आज्ञाविचय नामे धर्मध्यान कहेवाय छे.

२ राग, द्वेष, अने कषायने वशवर्त्ती एवा प्राणीओना सांसारिक कष्टोनुं जे चिंतवन ते अपायविचय नामे धर्मध्यान कहेवाय छे.

३ ज्ञानावरणादि कर्मोना शुभाशुभ विपाकनुं जे चिंतवन करवुं ते विपाकविचय नामे धर्मध्यान कहेवाय छे.

४ भूमंरुळ, द्वीप, अने समुद्र प्रमुख वस्तुना संस्थानादिक स्वजावनुं जे विचारवुं, ते संस्थानविचय नामे धर्मध्यान कहेवाय छे.

आ धर्मध्यान जिनोक्त तत्त्व पर श्रद्धा करवानुं शुजचिह्नरुप छे अने देवपति आदि फलनुं साधक छे. ए ध्याननो संजव चोथा अथवा पांचमा गुण ठाणाथी आरंभीने सातमा तथा आठमा गुणठाणा पर्यंत छे, एम जाणवुं तेने विषे पहेला बे जेद चोथे गुणठाणे अने पहेलेथी त्रण जेद पांचमे गुण ठाणे–एटलो विशेष छे.

आठ प्रकारना कर्मना मलने शोधे ते शुक्ल कहेवाय छे. ते संबंधी जे ध्यान ते शुक्लध्यान. ते शुक्लध्यान चार प्रकारे छे. १ पृथक्त्व वितर्क सप्रविचार, २ एकत्व वितर्क अप्रविचार, ३ सूक्ष्मक्रिया अप्रतिपाति अने ४ समुच्छिन्नक्रिया अनिवृत्ति—एवा तेना नाम छे.

१ जेने विषे जावश्रुतने अनुसारे अंतरंग ध्वनिरूप वितर्क–श्रुत अर्थथी अर्थांतरमां, शब्दथी शब्दांतरमां, अने योगथी योगांतरमां संक्रमे छे, वली पोताना शुद्ध आत्मद्रव्यथी द्रव्यांतरने पामे छे, गुणथी गुणांतरने पामे छे अने पर्यायथी पर्यायांतरने पामे छे. तेने माटे कह्युं छे के,—

" श्रुतचिंतावितर्कः स्या–द्विचारः संक्रमो मतः ।
पृथक्त्वं स्यादनेकत्वं, जवत्येतत् त्रयात्मकम् " ॥ १ ॥

" जे श्रुतनी चिंता ते वितर्क, संक्रम ते विचार अने पृथक्त्व ते अनेकपणुं—ए त्रण वस्तुमय पहेलो पायो थाय छे. वितर्कने माटे आ प्रमाणे कहेलुं छे–

" स्वशुद्धात्मानुजूत्यात्म–जावश्रुतावलंबनात् ।
अंतर्जल्पो वितर्कः स्यात्, यस्मिंस्तत् सवितर्कजम् ॥ १ ॥
अर्थादर्थांतरे शब्दाच्छब्दांतरे च संक्रमः ।
योगाद्योगांतरे यत्र, सविचारं तदुच्यते ॥ २ ॥
द्रव्याद् द्रव्यांतरे याति, गुणाद्याति गुणांतरम् ।
पर्यायादन्यपर्यायं, सपृथक्त्वं भवत्यतः " ॥ ३ ॥

आ त्रण श्लोकनो जावार्थ उपर कहेवामां आव्यो छे.

आ शुक्लध्याननो पहेलो पायो आठमा गुणस्थानथी आरंभी अगीआरमा गुणस्थान सुधी होय छे.

२ शुक्लध्याननो एकत्व वितर्क अप्रविचार नामे बीजो पायो निश्चल एक द्रव्यनुं अथवा एक पर्यायनुं अथवा एक गुणनुं अथवा शब्दथी शब्दांतरनुं इत्यादि जे संक्रमण तेनाथी रहित छे. भावश्रुतावलंबनवडे चिंतवन करवारूप बीजो पायो बारमा गुणठाणे होय छे अने ते पछी तेरमे गुणस्थाने ध्यानांतरिका होय छे.

३ ते पछी जेने विषे केवली भगवान अत्यंत आत्मशक्तिवडे बादर काययोगमां आत्म स्वभावथी स्थिति कर्या बाद बादर मन वचन युगलने सूक्ष्म करे छे, ते पछी सूक्ष्म वचन तथा मनने विषे स्थिति करी बादरकाययोगने सूक्ष्मतामां लइ जाय छे, ते पछी सूक्ष्म काययोगमां क्षण मात्र स्थिति करी तत्काल सूक्ष्म वचन तथा मननो सर्वथा निग्रह करे छे. त्यारबाद सूक्ष्म काययोगे क्षण मात्र स्थिति करी सूक्ष्म क्रियावाला ज्ञान स्वरूपी पोताना आत्माने पोतानी मेले अनुभवे छे अने तेने योग्य एवा जे शुभ परिणाम तेथी पडवापणुं थतुं नथी. आ शुक्लध्याननो त्रीजो पायो कहेवाय छे. ए तेरमा गुणठाणाने अंते प्राप्त थाय छे.

४ जेने विषे सूक्ष्मक्रियानो पण समुच्छेद थाय छे, ते शुक्लध्याननो चोथो पायो कहेवाय छे. ते चौदमे गुणठाणे होय छे ते पछी जीव सिद्धिपदने पामे छे.

ए ध्यान अबाधा अने असंमोहादि लिंग गम्य छे अने मोक्ष फलनुं साधक छे एम समजवुं. एथी अक्रियपणाने योग्य परम विशुद्ध परिणामनी निवृत्ति पण होती नथी.

ए चारे ध्यानमां धर्मध्यान तथा शुक्लध्यान—ए बे निर्जराना हेतु होवाथी अभ्यंतर तपरूप समजवा. अने आर्त्त तथा रौद्र—ए बे बंधना हेतु छे, निर्जराना हेतु नथी तेथी ते तपरूप नथी, माटे उत्तम बुद्धिवाला पुरुषोए ते आर्त्त तथा रौद्र—बंने ध्याननो परिहार करवो. अन्यथा नंदमणियार तथा कंडरीकादिकनी जेम महा दुःखनी प्राप्ति थाय छे.

५ जो के चित्तनुं अति चंचलपणुं होवाथी मनुष्य कुध्याननने पामे छे तोपण वीर पुरुषोए प्रसन्नचंद्रादिकनी पेठे ते दुर्ध्याननने निवारवा माटे आत्मवीर्यनो उल्लास प्रकट करवो—वीर्य फोरववुं अने शुभ ध्याननो विछेद न थाय,

तेवो अभ्यास करवो.

६ उत्सर्ग एटले त्याज्य वस्तुनो सम्यक् प्रकारे त्याग करवो ते. ते उत्सर्ग बे प्रकारे छे. १ बाह्य अने २ अभ्यंतर. बीजा अभ्यंतर उत्सर्गमां क्रोधादिक कषायनो त्याग करवानो छे.

अहिं प्रश्न थाय छे के, उत्सर्ग प्रायश्चित्तमां आवी जायछे, तो पछी फरीवार कहेवानुं शुं कारण छे ?

तेना उत्तरमां कहेवानुं के, ए सत्य छे परंतु पूर्वे अतिचारनी शुद्धिने माटे कहेल छे अने अहीं तो सामान्यथी निर्जराने माटे कहेल छे, तेथी तेमां पुनरुक्तिनो दोष आवतो नथी.

आ छ प्रकारनो तप लोकोथी अणओळखातो होवाथी, अन्यमत वाळाओए नहीं सेवातो होवाथी अने मोक्षनी प्राप्तिमां अंतरंगपणे रहेल तेथी आभ्यंतर कर्मने तपावनार होवाथी ते आभ्यंतर तप कहेवाय छे. ए प्रकारे तपनुं स्वरूप कहेवामां आव्युं. ए.

संयमनुं स्वरूप.

संयम शब्दनो अर्थ आ प्रमाणे छे—सं एटले सम्यक् प्रकारे यम एटले सावद्य योगथी निवृत्त थवुं, ते संयम कहेवाय छे तेना सत्तर भेद छे. पांच प्राणातिपातादिकथी विरमवुं अने पंच महाव्रतनुं धारण करवुं ते—तेमना व्रतोनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे.

१ त्रस स्थावरादि सर्व जीवोने मन, वचन, कायाए करी पोते हणे नहीं बीजानी पासे हणावे नहीं अने हणनारने अनुमोदे नहीं.

२ तेम त्रिविध त्रिविध भांगाए करी राग, द्वेष, क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य अने कलहादिके करी प्राणांते पण मृषावाद बोले नहीं.

ते मृषावाद चार प्रकारे छे. १ सद्भावनिषेध, २ सद्भाव उद्भावन ३ अर्थांतर अभिधान अने ४ गर्हावचन. पहेला भेदमां आत्मा नथी इत्यादि मानवुं. बीजीमां श्यामाक नामे धान्य अथवा चोखा जेटलो अथवा ललाटने विषे रहेलो आत्मा छे तेम मानवुं, त्रीजा भेदमां गवादिकने अश्वादिकना शब्दे कहेवा ते अने चोथा भेदमां काणाने काणो कही बोलाववो ते.

३ चारित्रवंत साधु उपयोगवंत थइ त्रिविध त्रिविध भांगे करी १ जीव-

अदत्त, २ तीर्थंकरअदत्त ३ स्वामिअदत्त, अने ४ गुरुअदत्त एवी अल्प वस्तु पण न ग्रहण करे.

A जे जीवअदत्त छे, ते सचित्त कहेवाय छे, ते पोताना विनाशनी शंका करता जीवोवडे पोते आश्रय करेल शरीरनुं अर्पण न करेल होवाथी जे सचित्तने ग्रहण करे ते जीवअदत्त कहेवाय छे. शिष्यने बलात्कारे दीक्षा आपवी ते जीव अदत्त कहेवाय छे.

B अचित्त होय तोपण जेने माटे श्री तीर्थंकरनी आज्ञा न होय, एवा सुवर्णादिकने ग्रहण करवुं ते तीर्थंकरअदत्त कहेवाय छे.

C तीर्थंकर प्रभुए आज्ञा आप्या छतां जे वस्तु तेना स्वामीए—धणी-ए न आपी छतां ग्रहण करवामां आवे ते स्वामि—अदत्त कहेवाय छे.

D धणीए आज्ञा आपी पण कोइ कारणने लइने जे वस्तु गुरुए निषेधली होय, जेमके, "हे मुनि, तुं आ वस्तु ग्रहण करीश नहीं." ते छतां लोभादिकने वश थइ ग्रहण करे तो ते गुरु—अदत्त कहेवाय छे. अथवा गुरुना कह्या शिवाय जे भोजनादिक भोगववां ते पण गुरु अदत्त कहेवाय छे.

४ साधु अढार प्रकारनुं मैथुन सेवे नहीं. तेमां औदारिक शरीर संबंधी मैथुन मने करी सेवे नहीं, बीजाने सेववामां प्रेरणा करे नहीं अने बीजा सेवनार-ने सारा जाणे नहीं एम त्रण भेद थाय छे. तेवी रीते वचने करीने अने कायाए करीने एम बधा मळी नव भेदो थाय छे.

एवी रीते औदारिके करी जेम नव भेद थाय, तेम वैक्रियवडे पण मैथु-नना नव भेद प्राप्त थता सर्व मळी मैथुनना अढार भेद थाय छे.

संयमने उपकार करनारी उपधि शिवाय मुनिए त्रिविध त्रिविध भांगे करी परिग्रहनो त्याग करवो. ते संयमने उपकार करनारी उपधिना बे प्रकार छे. १ औघिक अने २ उपग्रहिक. जे प्रवाहे करीने ग्रहण थाय अने कारणे भो-गवाय ते औघिक उपधि कहेवाय छे. तेना वस्त्र, पात्र, रजोहरणादि चौद भेदो छे. जे कारण छते ग्रहण कराय छे अने कारण पछी भोगवाय छे, ते उपग्रहिक कहेवाय छे. ते संथारो, उत्तरपट वगेरेना प्रकारे छे. ते औघिक अने उपग्रहिक उपधिने विषे मुनिए ममत्वने धारण करवुं नहीं. ममत्वथी रहित थइ मात्र संयम-यात्राने माटे बे प्रकारनी उपधिने धारण करतां छतां मुनिओ निष्परिग्रहीज प्र-

णाय छे तेने माटे कह्युं छे के,

" न सो परिग्गहो वुत्तो नाइपुत्तेण तायिना ।
मुच्छा परिग्गहो वुत्तो इइ वुत्तं महेसिणा " ॥ १ ॥

" त्राता एवा श्री महावीर प्रभुए ते परिग्रह कह्योज नथी, पण मूर्छाने परिग्रह कहेलो छे, अने महर्षिओए पण तेमज कह्युं छे. " १

अथवा मुनि द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भाव ए चार वस्तुमां ममत्व करे नहीं १ तेमां द्रव्यथी उपधिने विषे अथवा श्रावकादिकने विषे. २ क्षेत्रथी नगर, ग्राम, तथा सुंदर उपाश्रयने विषे. ३ कालथी शरद्ऋतु अथवा दिवसादिकने विषे. ४ भावथी शरीरनी पुष्टि आदिमां तथा क्रोधादिकमां ममत्वने धारण करे नहीं.

वली महाव्रतने उपयोगी होवाथी छठुं रात्रिभोजननिवृत्तिरुप व्रत पण मुनिओए अवश्य धारण करवुं. ते रात्रि भोजन चार प्रकारे छे. १ दिवसे लावेलुं दिवसे भोगववुं, २ दिवसे लावेलुं रात्रे खावुं, ३ रात्रे लावेलुं रात्रे खावुं, अने ४ रात्रिए लावेलुं दिवसे खावुं. तेने विषे दिवसे आणेला अशनादिकने ग्रहण करी रात्रे तेने उपाश्रयमां सम्यक् प्रकारे राखी बीजे दिवसे भोगववानरने पेहेलो भेद, दिवसे लावेलुं रात्रे भोगववुं ते बीजो तथा बीजा भेदो सुगम छे. आ चार प्रकारनुं रात्रि भोजन पंच महाव्रतनुं घात करनार होवाथी, तेमज जिनागममां तथा अन्य मतिओना आगममां तेनुं निषेधपणुं होवाथी, ते परिहरवाने अशक्य छे तोपण तेमां कुंथु आदि सूक्ष्म जीवोनो वध होवाथी, सर्व विरति साधुओए तेनो अवश्य परिहार करवो. ए रीते पंचमहाव्रतना पालवा संबंधी स्वरूप कहेवामां आव्युं.

पांच इंद्रिओना निग्रहनुं स्वरूप.

पंचमहाव्रतने पालवानी इच्छा राखनारो मुनि शब्द, रूप, गंध, रस अने स्पर्शरुप पांच विषयोमां रागद्वेषनो त्याग करी श्रोत्र, नेत्र, घ्राण जिह्वा अने स्पर्श लक्षणवाली पांच इंद्रियोनो निग्रह करे. तेमां १ सुस्वर—मधुर स्वरवाला एवा मुरज, वेणु, वीणा, स्त्री, आदिना शुभ अने काग, उंट, घुवड, गधेडा, घंटी अने रेंट आदिना अशुभ शब्दो सांभळीने, तथा २ अलंकार, गज, घोडो, वनिता, आदिनुं शुभ अने कुब्ज, कुष्टी, वृध्ध, अने मुडदुं आदिनुं अशुभ रूप देखीने तथा ३ चंदन, कपूर, अगर, कस्तूरी आदिनो शुभ अने मल, मूत्र,

मरेला कलेवर आदिना अशुभ गंधने सुंघीने ४ तथा खांड, साकर, मोदक आदिनो शुभ अने दुखुं वासी अन्न अथवा कोही गयेलुं अन्न, अने खारुं पाणी —इत्यादिकनो अशुभ स्वाद करीने, तथा ५ स्त्री, तलाइ, अने वस्त्रादिकनो शुभ अने पाषाण, कंटक, कांकरादिकनो अशुभ स्पर्श अनुभवीने तेओ उपर ज्यारे 'आ मने इष्ट छे' एवो राग अने 'आ मने अनिष्ट छे' एवो द्वेष धारण न करे त्यारे अनुक्रमे ते श्रोत्रादिक इंद्रियोनो निग्रह थाय छे.

वळी कदि मुनिने पूर्वे भोगवेला भोग, क्रीडानुं स्मरण थइ आवे तेम वळी कुतूहलीपणाने लइने इंद्रियो उध्धत थइ जाय त्यारे मुनिए आ प्रमाणे आत्माने शीखामण देवी—

" परिमियमाउ जुव्वण—मसंठियं वाहिवाहियं देहं ।
परिणइविरसा विसया अणुरज्जसि तेसु किं जीव"॥१॥

आयुष्य परिमित छे, यौवनवय असंस्थित छे, शरीर व्याधिवडे पीडित छे अने विषयोनी परिणति महा विरस छे, माटे हे जीव, तुं एने विषे शुं राचे छे?१

जे मुनि इंद्रियोनो निग्रह करे नहीं, परंतु उध्धत अश्वनी पेठे पोतानी इच्छाओने चलित करे, ते आ लोक तथा परलोकमां मोटा दुःखनुं भाजन बने छे.

आ विषे श्री ज्ञाता धर्मकथा सूत्रने विषे अन्वय तथा व्यतिरेकथी बे काचबाना दृष्टांतो आपेला छे.

बे काचबाना दृष्टांतो.

वाराणसी नगरीनी पासे गंगा नदीमां मृदंगतीर नामे एक द्रह छे. तेमां गुप्तेंद्रिय अने अगुप्तेंद्रिय नामे बे काचबाओ रहेता हता. ते बंने एक दिवसे स्थलचारी कीडाओना मांसनी इच्छावाला थया. तेथी तेओ द्रहनी बाहेर नीकल्या. कोइ दुष्ट बे शीयाळोए तेमने जोया, त्यारे तेओ बंने भयभीत थइ गया. तत्काल पोतानो बचाव करवाने तेओ चारे पग अने ग्रीवा [1]करोटीमां गोपवी चेष्टा रहित निर्जीवनी पेठे थइ गया. पेला शीयाळीआओ चंचलताथी तेमने उंचा नीचा करवा लाग्या अने तेमनीपर चरणोनो आघात करवा लाग्या. तेम करवाथी तेओ ते काचबाओने कांइ विकृति करी शक्या नहीं पछी तेओ श्रांत थइ त्यांथी दूरे जइ एकांते स्थिर थइने रह्या.

१ माथानी खोपरी.

आ वखते जे अगुप्तेंद्रिय काचवो हतो, तेणे चपलताथी पोतानी डोकने घरणोनी बाहेर काढी, तेवामां पेला बंने शीयालीओ दोडी आव्या अने तेना शरीरना कडके कडका करी तेने मरण पमाडी दीधो. जे बीजो गुप्तेंद्रिय काचवो हतो, ते अचपळ होवाथी घणा वखत सुधी तेवीज स्थितिमां रह्यो. ज्यां सुधी ते बंने शीयाळीआओ त्यां रह्या, त्यां सुधी तेणे कांइ पण चपळता करी नहीं. शीयाळीआओ घणी वार वेशी थाकी गया अने पछी त्यांथी बीजे स्थले चाल्या गया हता. ते पछी ते गुप्तेंद्रिय काचवो हळवे हळवे दिशानुं विलोकन करतो चाल्यो अने कुदीने पेला ह्रदमां पड्यो, पछी ते सुखी थइ रह्यो हतो.

आ प्रमाणे पांच अंगोने गोपवनारा ते काचवानी जेम जे मुनि पांच इंद्रियोने गोपवनार थाय छे, ते सदा सुखी रहे छे अने पेला बीजा अगुप्तेंद्रिय काचवानी पेठे जे पांच इंद्रियोने गोपवतो नथी, ते मुनि दुःखी थाय छे; तेथी मुनिए पांच इंद्रियोनो जय करवामां यत्न करवो. इंद्रियोनो जय करवामां ते बे काचवानो उपनय दर्शावी इंद्रियनिग्रहरुप संयम कहेलो छे.

कषायजयनुं स्वरूप.

पांच इंद्रियोनो निग्रह करनार साधुओए क्रोधादि चार कषायो के जेओ अनुदित छे तेमनो अनुदीरणावडे अने जेओ उदय आवेला छे, तेमने निष्फल करवावडे जय करवो—एटले निरोध करवो.

कषाय शब्दनो अर्थ.

जेनाथी प्राणी कष एटले संसारने अय कहेता पामे ते कषाय कहेवाय छे. क्रोध, मान, माया, लोभ, एवा तेना चार प्रकार छे. ते चार कषायोना प्रत्येकना अनंतानुबंधी आदि चार चार भेद छे.

१ अनंत भव भमवापणे करी जेमां कर्मनो अनुबंध थाय, ते अनंतानुबंधी कहेवाय छे, तेवा अनंतानुबंधी क्रोधादिकना उदयथी जीवो सम्यक्त्वने पामता नथी, अथवा पामे तो तेओ सम्यक्त्वने वमी नाखे छे.

२ जेने सर्वथा विरतिरुप प्रत्याख्यान नथी ते अप्रत्याख्यान कहेवाय छे, तेवा अप्रत्याख्यानी क्रोधादिकना उदयथी सम्यक्त्व पामेला होय तोपण तेवा जीवोने देशविरति परिणाम थता नथी अने थता होय तो अवश्य नाश पामे छे.

३ जे प्रत्याख्यानने आवरे ते प्रत्याख्यानावरणीय कहेवाय छे; तेना

उदयथी जीवो सर्वविरति परिणामने पामता नथी अने जो पाम्या होय तो तेनो विनाश थइ जाय छे. अहिं देशविरतिनो निषेध नथी.

४ जे जरा बाले-एटले परिषह उपसर्गो आवी पमतां साधुओने पण उदयिक जावमां लावे ते संज्वलन कहेवाय छे. तेना उदयथी जीवने यथाख्यात चारित्र होतुं नथी; परंतु तेने चारित्रना बीजा जेदो थवानो संजव छे.

आ अनंतानुबंधी आदि कषायो अनुक्रमे जावज्जीव, वर्ष, चार मास अने पक्ष सुधीनी स्थितिवाला छे. अनुक्रमे १ नरक, २ तिर्यंच, ३ मनुष्य अने ४ देवतानी गतिना आपनारा छे. अगीयारमा गुणगणाना अग्रभागे आरूढ थयेला साधुने पण पामी दइ फरीथी मिथ्यात्वरूप अंध कुवामां फेंकनारा छे, शुद्ध आत्म गुणना घातक छे अने सर्व अनर्थना मूल छे, माटे बुद्धिमान् उत्तम पुरुषोए तेमनो सर्वथा विश्वास न करवो, तेमनो निग्रह करवामांज उद्यम करवो. तेने माटे कह्युं छे के,—

" जा जीव वरिस चउमास पक्खगा नरय तिरिय नर अमरा ।
सम्माणु सव्वविरइ, अहक्खाय चरित्त घायकरा ॥ १ ॥
जइ उवसंत कसाओ, लहइ अणंतं पुणोवि पडिवायं ।
न हु ते विससियव्वं, थोवेवि कसाय सेसंमि " ॥ २ ॥

आ बे गाथानो जावार्थ उपर दर्शावेलो छे, तेमां बीजी गाथाना चोथा पदनो अर्थ एवो छे के, " थोडामां थोडो पण कषाय होय, तेनो पण विश्वास न करवो. वली कह्युं छे के,—

" तत्तमिणं सारमिणं, डुवालसंगीइ एस जावत्थो ।
जं जवजमण सहाया, इमे कसाया चइज्जंति" ॥ १ ॥

" तत्त्व पण आ छे, सार पण आ छे, अने द्वादशांगीनो पण एज जावार्थ छे के जे जवभ्रमणमां सहायभूत एवा कषायो छे, ते त्याग करवा योग्य छे."१

एवी रीते कषायजयरूप संयमनुं स्वरूप जाणवुं.

दंमविरति स्वरूप.

हवे त्रण दंमनी विरतिनुं स्वरूप कहे छे. उपर कहेला चार कषायोना

जितनारा मुनि मन, वचन अने कायाना त्रण दंडथी विरमे छे. अने त्रण गुप्तिने धारण करे छे. अहिं आगममां कहेला विधि प्रमाणे तो अशुद्ध क्रियाथी निवृत्त थयेला अने शुद्ध क्रियामां प्रवर्त्तेला एवा मन, वचन तथा कायाना लक्षणवाळा जे व्यापारो ते त्रण गुप्ति कहेवाय छे. तेमां वानरनी जेम चिंतवातुं एवुं जे मन तेनी चंचळता घणी छे, तेने माटे कह्युं छे के,—

" लंघइ तरुणो गिरिणो, य लंघए लंघए जलनिहिंवि ।
नमइ सुरासुरठाणे, एसो मणमक्कडो होइ " ॥ १ ॥

" मन रुपी मर्कट वृक्षोने ओलंघे छे, पर्वतोने अने समुद्रोने ओलंघे छे अने सुर—असुरोना स्थानमां नमे छे. " १

एज कारणथी ते मन मुनिने पण दुर्जय छे. अने सर्व कर्मोने बांधवामां मुख्य कारण छे; तेथी तेने वमन करवाने इच्छता एवा मुनिओए बहु प्रकारनी असद्भावना परिहरीने बार प्रकारनी सद्भावनाने विषे उत्तम प्रकारे विशेष आदर करवो. तेम करवाथी तेवुं चंचल चित्त पण सुखे करीने वशवर्त्ती थाय छे, ए मनो गुप्ति कहेवाय छे.

बीजी वचन गुप्तिने चिंतवतो एवो साधु सज्झाय ध्याननना समय शिवाय बीजे अवसरे घणुं करीने मौनपणुं धारण करीने रहे छे अने भ्रकुटी तथा हस्तादिकनी संज्ञा पण करतो नथी. कदि कोइ तेवुं कार्य आवी पडे तो ते सत्य तथा असत्य अमृषा वचन बोले छे. एटले के जे वस्तु ' प्रतिष्ठासया ' एटले वस्तु स्थापवाना आशयथी बोलाय छे, ते सत्य कहेवाय छे—जेमके " जीव छे, जीव कर्त्ता छे, कर्मनो भोक्ता छे. इत्यादि " जे ' प्रतिष्ठासां विना ' एटले आशय स्थाप्या विना बोले, ते असत्य अमृषा कहेवाय छे; आमंत्रण तथा आज्ञापनादि— आणाववा प्रमुख जेमके " देवदत्त, आ कार्य तुं कर " इत्यादि" अहीं तेज सत्य छे, जे सांभळनारने प्रिय—निरवद्य होय तेवुंज वचन बोले तेथी अप्रिय अने सावद्य होय ते कदि साचुं होयतो तेनाथी क्रोधनी उत्पत्ति तथा जीव घातादिक घणां अनर्थोनुं ते कारण होवाथी तेमज असत्य प्राय होवाथी तेनो परिहार करवो.

वळी प्रयोजनविना वाचालनी परे निरवद्य पण यथातथा—जेम तेम बोलवुं

नहीं. जे साचुं पण प्रिय होय ते बोलवुं, तेने माटे आ प्रमाणे कह्युं छे.

" नृपसचिवेश्वरनरादीं–स्तथैव जल्पयति न खलु काणादीन्।
न च संदिग्धे कार्ये–भाषामवधारिणीं ब्रूते " ॥ १ ॥

" राजा, मंत्री अने लक्ष्मीवान् आदि शब्दथी सामंत, शेठ तथा सार्थवाह वगेरेने तेमना नामथी बोलाववा. काणाने काणो वगेरेथी बोलाववो नहीं. जे कार्यमां संदेह होय, तेमां निश्चय बतावनारी भाषा बोलवी नहीं. " १

ते विषे आचारांग सूत्रने विषे पण आ प्रमाणे कहेलुं छे.

" तेयावन्ने तहप्पगाराहिं भासाहिं बूयानो कुप्पंति माणवा तेआवि तहप्पगारा तहप्पगाराहिं भासाहिं अभिकंखभासिज्जन्ति। " न च काणादिष्वपि अयं न्यायोऽनुसर्त्तव्यः ।

जे जेवा होय, तेने तेवा प्रकारनी भाषावडे बोलावतां माणस काम करे नहीं, तेथी तेमने तेवाज प्रकारनी भाषावडे बोलावे, पण ए न्याय काणाने काणा कहेवा वगेरेमां अनुसरवो नहीं.—एटले काणाने काणो कही बोलाववो नहीं. आदि शब्दथी कुष्टीने कुष्टी, लंगडाने लंगडो अने चोरने चोर वगेरे समजवुं.

ते विषे आगममां आ प्रमाणे कहेलुं छे—

" तहेव काण काणंति पंडगं पंडगंति वा ।
वाहिअं वा रोगिन्ति तेणं चोरंति नावएन्ति " ॥१॥

" काणाने काणो, व्याधिवालाने व्याधिवालो, रोगीने रोगी, अने चोरने चोर–एम बोलवुं नहीं. तेम संदेहवाला कार्यमां पण एमज न्याय छे–तेथी ए प्रकारनी अवधारिणी भाषा बोलवी नहीं. मुनिएतो वर्त्तमान योग एम बोलवुं जोइए.

तेने माटे कह्युं छे के,

" आउस्स न विस्सासो, कज्जस्स बहूणि अंतरायाणि ।
तह्मा साहूणं वट्ट–माणजोगेण ववहारोत्ति " ॥ १ ॥

" आयुष्यनो विश्वास नथी अने कार्य करवामां घणा अंतरायो रहेला

छे, तेथी साधुने वर्त्तमान योगवडे बोलवानो व्यवहार छे. " १

वळी " आ वाछडा धुंसरी खमवाने योग्य थयेला छे, एटला आंबाना फल जक्षण करवा लायक छे, आ वृक्षो स्थंभ, जार, वस्त्र, शय्या अने आसन प्रमुखने योग्य छे, ए शाळी, गोधम आदि अन्न लाणी करवाने योग्य थयेला छे. " आवा प्रकारना वचनो साधुए बोलवा न जोइए. कारणके, साधुना वचनो प्रतीतिपात्र होवाथी ए वृषजादिकने गाम्हे जोडवा प्रमुख क्रियानो काल थइ गयो छे, एम निश्चय करी सांजलनार पुरुषो तेमना दमनादि कार्योमां प्रवर्त्ते तेथी मोटो आरंज थवानो संजव छे तेम माता, पिता, जाइ, व्हेन आदि स्वजनोने " हे मात, हे तात, हे जाइ, हे व्हेन " इत्यादि जापावडे साधु बोलावे नहीं, कारण के, साधु लोकाचारथी रहित होवाथी लोक संबंधीना जापणनो अनधिकारी, छे, तेने माटे आ प्रमाणे कहेलुं छे—

" दम्मे वसहे खज्जे, फले थंजाइ समुचिए रुक्के ।
गिज्जे अन्ने जणयाइंयति, सयणे वि न लवेइ" ॥१॥

आ गाथानो अर्थ उपर आवी गयो छे. अहीं विशेष कहे छे के,—

" राजेश्वराद्यैश्च कदापि धीमान्, पृष्टो मुनिः कूपतमागकार्ये।
अस्तीति नास्तीति वदेन्नपुण्यं, जवंति यद्भूत वधांतरायाः"॥१॥

" राजा, धनाढ्य वगेरे कदि कुवा के तलाव करावबाना कार्यमां मुनिने पुण्य विषे पूछे तो बुध्धिमान् मुनि तेमां ' छे अथवा नथी ' एम कहे नहीं. कारण के, तेम एक वात कहेवाथी प्राणीओनो वध अने अंतराय थाय छे." १

विशेषार्थ एवो छे के, कोइ युवराज, धनाढ्य के गामम्हीओ पुरुष कोइ वखते मुनिने पुछे के कुवो के तलाव करावबामां पुण्य छे के नहीं? अथवा पाणीनी परब बंधावबामां पुण्य छे के नहीं ? तेना उत्तरमां बुध्धिमान् एटले सम्यक् प्रकारे आगमना जाण एवा मुनि " कुवो के तलाव करावबो तेमां महा पुण्य छे अने न करावबो तेमां कांइ पण पुण्य नथी, एम बे प्रकारे मुनि बोलता नथी. कारण के, जो मुनि ' पुण्य छे ' एम बोले तो प्राणीनो वध थाय छे तेना शोषण समये जलने आश्रीने रहेला सेवाळ प्रमुख अनंतकायोनो तथा पूरा, शंख, मत्स्य, देडकां, आदि त्रस जीवोनो प्रत्यक्ष विनाश देखावाथी अने मत्स्यादिकनुं मांहोमांहे ज-

क्षण होवाथी, पाप लागे छे अने जो ' पुण्य नथी ' एम बोलवामां आवे तो अंतरायनो दोष थाय. कारण के, घणां पशु, पक्षी, मनुष्यो जे तृषार्त्त होय छे, तेमना जलपाननो व्यवच्छेद होवाथी पण पापनो संभव छे; तेथी मुनिए तेमां मौननुं आलंबन करवुं अथवा एवा लौकिक कार्यमां अमारे जाषण करवानो अधिकार नथी एम कहेवुं. ते विषे सूत्रकृतांगना बीजा सूत्रमां आ प्रमाणे कहेलुं छे.

" तहा गिरं समारब्भेअत्थि पुण्णंति नो वए ।
अहवा नत्थि पुण्णंति एवमेयं महब्भयं ॥ १ ॥
दाणठयाइ जे पाणा हम्मंति तस थावरा ।
तेसिं सारक्कणठाए तम्हा अत्थियत्ति नो वए ॥२॥
जेसिं तं उवकप्पेइ अन्नपाणं तहाविहं ।
तेसिं लाभंतरायंति तम्हा नत्थियत्ति नो वए ॥ ३ ॥
जे अ दाणं पसंसंति वहमिच्छंति पाणिणं
जे अणं पडिसेहंति वित्तिच्छेअं करंति ते ॥ ४ ॥
दुहओवि न जासंति अत्थि वा नत्थि वा पुणो ।
आयंरयस्स हिच्चाणं निव्वाणं पाउणंति ते " ॥ ५ ॥

" (आ अमारा अनुष्ठानथी पुण्य छे के पाप छे ? एम मुनिने पूछतां) ते आ समारंभमां पुण्य छे एम पण न कहे तेमज तेमां पाप छे एम पण न कहे." केमके ए प्रकारे महाभय थाय छे.१

" दानने अर्थे (अन्न पाणी आपवा माटे) जे त्रस अने स्थावर जीवो हणाय छे ते जीवोने राखवाने माटे आ तमारा अनुष्ठाने पुण्य छे एम पण साधु न कहे " २

"जे लोकने माटे अन्नपाणी तथाविध नीपजावे छे ते लोकने माटे निषेध करे तो लाजांतराय रुप आहार देवानुं विघ्न प्राप्त थाय तेथी पुण्य नथी एम न कहे"३

" कोइ यति दाननी प्रशंसा करे तो ते प्राणीना वधनी इच्छा करे छे अने जे कोइ यति निषेध करे छे ते अनेक जीवोनी आजीविकानो छेद करे छे"४

"'हा' 'ना' बंने प्रकारनी भाषा बोले नहि केमके कर्मरजनो तेथी लाभ थतो जाणीने तेवी भाषा त्याग करे ते निर्वाणपद पामे छे." ५

जेम कालिकाचार्ये दत्तनी आगळ सत्य वचन कह्युं हतुं, तेम पुण्यना अर्थी मुनिए आपत्तिने विषे पण सत्य वचन बोलवुं, मृषा बोलवुं नहीं.

दत्त अने कालिकाचार्यनी कथा.

तुरमिणी नगरीमां श्री कालिकाचार्यनो भाणेज दत्त नामे हतो. ते राजानो पुरोहित हतो. तेणे छले करी पोताना स्वामी राजाने बंदीखाने नांखी पोते स्वतंत्र राज्यना भारने वहन करनार थयो हतो. एक वखते ते मातानी प्रेरणाथी कालिकाचार्य पासे गयो. त्यां तेणे उन्मत्तपणे धर्मनी ईर्ष्याथी क्रोध सहित आग्रह पूर्वक कालिकाचार्यने यज्ञ करवानुं फल पुछ्युं. ते वखते सूरिवरे धैर्यनुं अवलंबन करी कह्युं के "यज्ञ हिंसारुप छे अने यज्ञनुं फल नरक छे." आ प्रमाणे तेमणे जे सत्य हतुं, ते कह्युं, अन्यथा कह्युं नही. ते वखते दत्ते पुनः पुछ्युं के, "एमां निश्चय शुं छे." अने ते वचनमां विश्वास शी रीते पडे? "गुरुए कह्युं के, आजथी सातमे दिवसे कुतराए भक्षण कराएल कुंभीमां पडशो, पछी हवे तेमां शो निश्चय करवो छे?" तेम छतां तेणे पाछो प्रश्न कर्यो के, 'एथी शुं?' त्यारे सूरिजीए कह्युं, "तेज दिवसे अकस्मात् तारा मुखमां विष्टा पडशे." आ सांभली अति क्रोधायमान थयेला दत्ते कह्युं, के, "तमे शी रीते मरण पामशो?" गुरु बोल्या—"हुं समाधिवडे मृत्यु पामीश अने पछी हुं स्वर्गे जवानो छुं." सूरिना आ वचन सांभली हुंकार करतो दत्त घेर आव्यो अने सूरिनुं वचन व्यर्थ करवाने पोते पोताना घरमां सुभटोथी वींटाइ समाधिथी छानोमानो रह्यो. ज्यारे सातमो दिवस आव्यो, एटले ते बुद्धिना मोहथी तेने आठमो दिवस मानी अने 'आजे आचार्यना प्राणथीज शांतिक कार्य करुं' एवुं धारी ते घरनी बाहेर नीकळ्यो, तेवामां कोइ एक माली नगरीमां पेसतो हतो, तेवामां तेने दस्तनी हाजत लागी एटले कार्यनी आकुलताथी तेणे राजमार्गमां ठल्लो करी ते उपर पुष्पोथी आच्छादन करी चालतो थयो. आ अरसामां दत्त पोतानो घोडो चलावतो तेज मार्गे आव्यो अने पेली ढांकेली विष्टा उपर घोडो चाल्यो एटले तेमांथी विष्टानो जरा भाग उड्यो, ते तेना मुखमां पडी, विष्टाना स्वादथी ते चमक्यो अने तेना जाणवामां आव्युं के आजे आठमो दिवस नहीं, पण सा-

तमो दिवस हशे, तत्काल खेद पामीने ते पाछो फर्यो. तेज दिवसे दत्तना घणा दुराचारोथी कंटाळी गयेला मंत्रिओए पेला शत्रु राजाने पांजरानी बाहेर काढयो अने राज्य उपर बेसार्यो अने पाछळथी दत्तने बांधी राजाने सोंपी दीधो. राजाए तेने कुंभीमां नांखी नीचे अग्नि सळगावी कुतराओने छुटा मुकी तेने कदर्थना पमाडी मारी नखाव्यो; ते मरीने नरके गयो अने आचार्य भगवान् राजा प्रमुखथी बहुमान पाम्या हता.

आ प्रमाणे वचन गुप्तिने विषे श्री कालिकाचार्यनो वृत्तांत ध्यानमां लइ मुनिओए वचन गुप्ति धारण करवी.

कायगुप्ति.

कायगुप्तिना चिंतवनमां मुनि कायोत्सर्ग करीने अथवा पद्मासनादिके करी शरीरनो व्यापार रोके अने तथाप्रकारनुं गमन, शयनादिक कार्य उत्पन्न थतां शरीरने प्रवर्त्तावबाथी पगले पगले मारा शरीरवडे कोइ जीवनो वध न थाओ एवी यतना चिंतवे. कारणके, यतना विना पगले पगले छकाय जीवनो विघात थाय छे तेने माटे कह्युं छे के,

" गमणठाण निसीयण–तुअट्टणगीहण निसरणाइसु ।
कायं असंवरंतो गण्हंपि विराहओ होई " ॥ १ ॥

" मुनि गमन, स्थान, निसीदन, तुअर्त्तन[1], ग्रहण, निक्षेप आदि कार्यमां कायाने संवरे नहीं तो ते विराधक थाय छे. "

आ प्रमाणे कायगुप्ति कहेवाय छे. ए त्रिविधगुप्तिने कहेवावडे सत्तर प्रकारे संयम कहेलो छे.

हवे दशविध यति धर्मना बाकी रहेला चार सत्यादि भेदो आ प्रमाणे छे.

७ सत्य—एटले मृषावादनी विरति ८ शौच—एटले संयममां निरतिचारता—निरुपलेपता. ९ अकिंचन एटले निष्परिग्रहपणुं. १० ब्रह्मचर्य एटले सर्वथा कामक्रीडानो निषेध.

अहिं केटलाएक भेदोनुं अन्यमां अंतर्भूतपणे होवाछतां पृथक् ग्रहण करवुं ते तेनी स्पष्टता करवा माटे छे एम सद्बुद्धिवालाओए जाणी लेवुं.

एवी रीते दश प्रकारनो यतिधर्म कहेवामां आव्यो.

---

[1] आळोटवुं.

ए अत्यंत दुर्लभ एवा मुनिधर्ममां निर्ग्रंथोए सर्वथा प्रमादनो परिहार करवो, ते देखाडे छे—

" जवसय सहस्स दुलहे, जाइ जरा मरण सागरुत्तारे ।
जइ धम्मंमि गुणायर, खणमविमाकाहिसिपमायं " ॥१॥

" हे गुणवंत मुनि, लाखो जवे करीने दुर्लन अने जन्म, जरा, मरणरुप, समुद्रने उतारनार एवा यतिधर्ममां क्षण मात्र पण प्रमाद करीश नहीं, कारण के, ते मोटा अनर्थनो हेतुरुप छे. कह्युं छे के,—

" सेणावईमोहनिवस्स एसो, सुहाणजं विग्घकरोदुरप्पा ।
महारिऊ सव्वजियाण एसो, कयावि कज्जो न तओ पमाओ" १

" जे कारण माटे आ दुरात्मा प्रमाद मोहराजानो सेनापति छे, ते कारणे ते मोक्षादिक सुखोमां विघ्न करनारो छे अने ते विघ्न करनार होवाथी सर्व जीवोनो महान् रिपु छे, तेथी जेणे परमार्थने जाणेलो छे, एवा मुनिए कोइ काळे पण ए प्रमादने करवो नहीं. " १ वळी कह्युं छे के,—

" थोवोवि कयपमाओ जइणो संसारवड्ढणोभणिओ ।
जह सो सुमंगल मुणी पमाय दोसेण पयवद्धो " ॥१॥

" यतिने थोमो पण प्रमाद संसारनी वृद्धि करनारो कहेलो छे, तेवा थोमा प्रमादना दोषथी सुमंगळ मुनि चामडाथी पगे बंधाया हता. " १

सुमंगळ मुनिनो वृत्तांत.

आ भरतक्षेत्रने विषे सुमंगळ नामे एक आचार्य पांचसो शिष्योथी परिवृत हता. तेओ अप्रमत्त थइ सर्वदा शिष्योने वांचना देता हता. एक वखते वात व्याधिवडे आचार्यनी कटीमां वेदना उत्पन्न थइ आवी, तेथी तेओ वांचना देवाने अशक्त थइ गया ते वखते तेमणे पोताना शिष्योने कह्युं, " हे शिष्यो, तमे कोइ गृहस्थना घरमांथी योगपट्ट लावो. " ते वखते एक शिष्ये गुरुनी जक्तिथी योगपट्ट लावी गुरुने आप्यो. गुरुए तेने कटीप्रदेशमां स्थापन कर्यो अने तेना योगथी पछीथी वाळी एटले तेओ अति सुख पाम्या. पछी आचार्य ते योगपट्टने एक क्षणवार मुकता न हता. तेवी रीते केटलाएक दिवसो गया पछी शिष्योए आचा-

येने कह्युं, " जगवन्, आपने शरीरे हवे आराम थयो छे, तेथी तमारे गृहस्थने योगपट्ट पाछो आपवो जोइए, अने आपे आ प्रमादना स्थाननो त्याग करवो जोइए. कारण के, थोडा पण प्रमादथी संसारनी वृद्धि थाय छे." आचार्ये कह्युं, " शिष्यो, आ योगपट्ट धारण करवामां शो प्रमाद थाय छे. आ योगपट्ट तो मारा शरीरने सुख करनारो छे, ते प्रमादनुं स्थान नथी. " गुरुनां आवां वचनो सांजळी ते विनीत शिष्यो मौननुं अवलंबन करीने रह्या हता.

केटलाक समय गया पछी ते सुमंगळ आचार्य श्रुतना उपयोगथी पोतानुं आयुष्य पूर्ण थवानो अवसर जाणी अने एक विशिष्ट गुणवाला शिष्यने सूरिपदे स्थापी पोते संलेखना करी कालनी राह जोइ रह्या हता, ते वखते शिष्यो शुभध्यानोपगत गुरुनी निझामणा करतां आ प्रमाणे बोल्या—" हे स्वामी, व्रतग्रहण कर्या पछी आज सुधीमां जे कांइ प्रमाद स्थान सेव्युं होय तो ते आप आलोवो-पडिक्कमो. " शिष्योना आ कथनथी सूरिए योगपट्ट धारण करवा शिवायना बीजा जे जे प्रमादना स्थान हता ते आलोव्या अने पडिक्कम्या. त्यारे शिष्योए कह्युं, " स्वामी, योगपट्ट धारणनो प्रमाद पण आलोवो. " शिष्योनुं आ वचन सांभळी आचार्य कोपानळथी प्रज्वलित थइ बोल्या—" अरे शिष्यो, तमारी मति दुर्विनीत छे, जेथी तमे अद्यापि योगपट्टथी थयेला मारा दूषणने ग्रहण करो छो. " आ प्रमाणे गुरुने कोपायमान थयेला जाणी तेओ विनयपूर्वक बोल्या—" स्वामी अमारो अपराध क्षमा करो. अमोए अजाणतां तमोने अप्रीति वचन कहेलुं छे, आजथी हवे अमे बोलीशुं नहीं. " शिष्योना आ वचनथी सूरिनो कोप शांत थइ गयो, पण तेमनुं ध्यान योगपट्टने विषे रह्युं, तेओ ए प्रमाद स्थानने आलोव्या विना काल करी गया. ते पछी तेओ ए दोषने लइने कुडागार नगरना राजा मेघरथनी विजया नामे देवीना उदरमां गर्भपणे उत्पन्न थया. प्रसव समये जेना पग कटीपर वींटाएला चामडा पट्टे बांधेला छे, एवो ते पुत्र उत्पन्न थयो. राजाए तेनो जन्मोत्सव कर्यो अने बारमे दिवसे ते पुत्रनुं नाम दृढरथ पाड्युं. पांच धात्रीओथी लालन करातो ते बालक ज्यारे आठ वर्षनो थयो त्यारे तेने कलाचार्यने सोंप्यो अने ते अनुक्रमे बोंतेर कलामां प्रवीण बनी गयो. ते कलाओमां ते संगीतकलामां विशेष निपुण थयो. कुमार दृढरथने संगीतकलामां विशेष निपुण जाणी घणा गंधर्वो पोतपातानी कला बताववाने तेनी पासे आववा लाग्या. ते

चतुर कुमार एटलो बधो संगीत कुशल हतो के जेथी कोइ पण गायक तेना मनने रंजन करवा समर्थ थइ शकतो नहीं. राजकुमार दढरथ उंची जातना संगीतने जाणनारा गायकोनी कदर करतो. तेमने घणुं द्रव्य आपी संतोष पमाडतो हतो. तेओ तेनाथी संतोष पामी देश देशांतरमां ते दढरथनी कीर्त्तिने विस्तारता हता.

आ प्रमाणे दढरथकुमार पोतानो समय सुखे प्रसार करतो हतो. एक समये जे पेला पांचसो शिष्यो हता, तेओमांथी निर्मल ज्ञान, दर्शन अने चारित्रने धरनार जे शिष्य सुमंगलसूरिना आचार्यपद उपर आवेल, ते अने बीजा शिष्योए अवधिज्ञानथी जाण्युं के, पोताना गुरु सुमंगलाचार्य दढरथ कुमार थइ अवतर्या छे. आथी पोताना गुरुना स्वरुपनुं दर्शन करवा तेमनी इच्छा थइ अनार्य क्षेत्रमां कुमार दढरथ रुपे गुरुनो अवतार थयेलो जाणी तेमना मनमां खेद उत्पन्न थयो अने तेओ प्रमादना आचरणने धिक्कारवा लाग्या. तेओए कह्युं के, प्रमादना थोडां पण आचरणथी आ अमारा गुरुना जीवनी आ दशा थइ छे. जेओ संसारमां आ प्रमाणे प्रमादनुं सेवन करशे, तेओ अमारा गुरुनी जेम बहु प्रकारे दुःखना भाजन बनशे." तेओ आ प्रमाणे चिंतवता हता, तेवामां तेमना आचार्यपद उपर आवेला शिष्यना मनमां विचार उत्पन्न थयो के, "हवे कोइ पण उपाय करी गुरुना जीवने अनार्य क्षेत्रमांथी आर्य क्षेत्रमां लावयतो वधारे सारुं." आवो विचार करी तेमणे बीजा शिष्योने ते वात निवेदन करी. पछी कोइ एक योग्य शिष्यने गच्छनो भार सोंपी ते आचार्य अनार्य देशमां शुध्ध आहारनी दुर्लभता मानी तेवा दढ संघयणथी महातप तथा चारित्र पालवानी शक्तिवाला केटलाएक साधुओने साथे लइ गामोगाम विहार करी अनार्य देशमां आव्या. त्यां आवतां तेमणे आहारनी गवेषणा न करवाथी घोर परिश्रम पड्यो हतो. यानक नामना अनार्य देशमां आवेला कुडागार नगरमां तेओ आवी पोहोच्या. ते नगरनी समीपे आवेला एक उद्यानमां तेओ दाखल थया. त्यां शुध्ध भूमिने पडी लेही अने इंद्रादिकनो अवग्रह लइ तेओ रह्या हता.

आ नगरना वासीओ के जेओए साधुना रूपने कदिपण जोयेलुं नहीं, तेओ आ साधुओने जोइ आश्चर्य पामी गया. तेओए तेमनी समीपे आवीने आ प्रमाणे पुछ्युं, "तमे कोण छो ?" साधुओए कह्युं, "अमे नट छीए." त्यारे लोकोए कह्युं, "जो तमे नट हो तो राजानी पासे जाओ, एटले तमोने यथेष्ट ध-

न प्राप्त थशे." साधुओए कह्युं, "अमे कोइनी पासे जता नथी, जेओ अमारी पासे आवे तेमने अमे अमारी नृत्य कला बतावीए छीए." लोकोए प्रश्न कर्यो." जो तमे राजानी पासे नहीं जाओ तो भोजन क्यांथी करशो ?" त्यारे साधुओ बोल्या—"अमे भोजन करता नथी." आ सांभळी लोको विस्मय पामी गया पछी ज्यारे साधुओ पडिलेहणा तथा प्रतिक्रमण करता, त्यारे केटलाएक लोको आवी तेमने पुछवा लाग्या के "तमे आ शुं करो छो" साधुओ बोल्या, "अमे आ नृत्य संबंधी परिश्रम करीए छीए." ते सांभळी लोको पोताने स्थाने चाल्या गया. लोकोना मुखथी वृत्तांत नगरमां फेलायो. ते राजाना सांभळवामां आव्यो ते सांभळी विस्मय पामेलो राजा तेमनुं स्वरूप जोवाने माटे उद्यानमां आव्यो. तेणे आवी साधुओने पुछ्युं, "तमे कोण छो? क्यांथी अने शा प्रयोजनने माटे तमे अहीं आव्या छो?" आचार्ये कह्युं, "अमे नट छीए. तमोने अमारी कला देखाडवाने दूरथी आव्या छीए." राजाए कह्युं, त्यारे तमारुं नृत्य मने बतावो—" साधुओ बोल्या—"देवानुप्रिय, जे संगीत कलामां निपुण होय, तेनी आगळ अमे नाटक करीए छीए." त्यारे राजाए कह्युं, "मारो पुत्र दृढरथ ए सर्व जाणे छे." गुरु बोल्या—"तेमने अहीं सत्वर बोलावो." आ उपरथी राजाए राजकुमार दृढरथने बोलावा एक पुरुषने मोकल्यो. ते पुरुष राजकुमारने तेडवा गयो. राजकुमार पालखीमां बेशीने त्यां आव्यो. तेणे आवी साधुओने कह्युं, "तमे संगीत शास्त्रमां कुशल हो तो प्रथम संगीतना भेदो बोलो," ते वखते आचार्ये श्रुतना बलथी संगीतना बधा भेदो कुमारनी आगळ कही संभळाव्या ते सांभळी कुमार अत्यंत विस्मय पामी गयो अने मनमां चिंतववा लाग्यो के, "अहो ! आ तो संगीत शास्त्रमां प्रवीण लागे छे. आना जेवो बीजो कोइ नटाचार्य नथी, माटे तेनी नृत्यकला हमणाज जोइए." आ प्रमाणे चींतवी तेणे साधुने आ प्रमाणे कह्युं,—"नटो, तमे नृत्य करो, जेथी तमारी नृत्यकलानी परीक्षा करी शकाय. त्यारे आचार्ये कह्युं के, प्रथम नृत्यना उपकरणो मंगावो. त्यारे कुमारे पोताना माणसो मोकली नृत्यना सर्व उपकरणो मंगाव्यां ते पछी आचार्ये वादित्रनो ध्वनि करतां पेहेला मधुर स्वरे करी तेवा प्रकारनो आलाप कर्यो. जे सांभळी सर्व श्रोताओ चमत्कार पामी गया. अने जेम चित्रमां आलेखेला होय, तेम स्तब्ध थइ गया.

आ वखते आचार्य नृत्यना आरंभमां आ ध्रुवपद भाण्या हता.

" धि धि पमाय ललियं सुमंगलो वच्छमेरिसिंपत्तो ।
किं कुणिओ अंबडया पसरंति न अम्हगुरुपाया " ॥१॥

हे वत्स, आ प्रमादना लालित्यने धिक्कार हो, के जेथी सुमंगल आवी दशाने पाम्या ! पूर्व कर्मना दोषथी अमारा गुरुना चरण प्रसरता नथी, तेमां अमे शुं करीए ? अमारो शो उपाय ?

ते पछी आचार्यना कहेला वाक्योने बीजा साधुओए मोटे स्वरे उच्चार्या अने तेमां वीणादिक वाद्यो वगाड्या. राजकुमार दृढरथ वारंवार जणाता ते ध्रुवपदने सांभळी पोताना चित्तमां विचार करवा लाग्योके, "आ साधुओ शुं जाणे छे?

सुमंगल कोण अने तेणे केवी रीते प्रमाद कर्यो ? राजकुमारे एवी रीते वारंवार उहापोह करवा मांड्यो, तेवामां ते तत्काल मूर्छा* पामी भूमि उपर पडी गयो. ते वखते सर्वत्र हाहाकार थइ गयो. तत्काल राजादिके तेनो शीतोपचार करवा मांड्यो. क्षणवारे चेतना पामी ते कुमार पोताना पूर्व भवने संभारी ते पूर्वना शिष्योने देखी आ प्रकारे विलाप करवा लाग्यो—" अहो ! आ संसार दुःखमय छे अने कर्मनी गति विचित्र प्रकारनी छे. आ संसारमां दुष्कर्मना उदयथी थयेला प्रमादना दोषे करी आ जीवो बहु प्रकारना दुःखने अनुभवे छे. हुं लगार प्रमादने आचरवाथी आवी दशाने पामी गयो."

कुमारने आम चिंतवतो अने विलाप करतो देखी राजाए चिंतव्युं के, "निश्चे आ साधुओए मारा कुमारने घेलो करी दीधो, माटे तेमने हणवा जोइए." आवुं चिंतवी राजाए रोषथी सेवकोने ते साधुओने बंदीवान करी वध करवानी आज्ञा आपी. ते वखते कुमारे कह्युं, " हे पिता, आ पुरुषो तो हितकर्ता छे अने परना कार्य साधनारा छे, माटे ते पूजवायोग्य छे. वध बंधन करवाने योग्य नथी. " कुमारना आ वचन सांभळी राजाए ते आज्ञा पाछी खेंची लीधी अने ते साधुओनी बहुभक्तिपूर्वक सेवा करी.

ते पछी कुमारे एकांते जइ ते साधुओने आ प्रमाणे कह्युं, " हे देवानुप्रिय, आ अनार्य क्षेत्र छे. अहीं वसनारा लोको पण अनार्य छे. आ स्थले सारा धर्मनी वार्त्ता पण सांभळवामां आवती नथी, तेथी अहिं मारी शी गति थशे?"

आचार्य बोल्या—"जड, तमे अमारी साथे आवो; जेथी तमारा कार्यनी सिद्धि थशे."

राजकुमार बोल्यो—" महाराज, मारा चरण बंधाइ गया छे, तेथी हुं चालवाने समर्थ नथी, तेथी आगळ जतां मारो शी रीते निर्वाह थशे ? " आचार्ये जणाव्युं, " जड, ज्यारे तमे हळवे हळवे आर्यक्षेत्रमां आवशो, एटले आ साधुओ तमारी वैयावच्च करशे. " आ आचार्यना आ वचन सांभळी कुमारने हिंमत आवी पछी ते पोताना माता पिता पासे आवी आ प्रमाणे बोल्यो—"हे माता पिता, जो आप आज्ञा आपो तो हुं आ महान् कलाचार्य पासे कला शीखवाने जाउं " माता पिता मोहातुर थइने बोल्या—" वत्स, अमे तारो वियोग सहन करवाने समर्थ नथी माटे ए नटोने अहींज राखी कलानो अभ्यास कर. " राजकुमार बोल्यो, " ए वात सत्य छे, ए लोको परदेशी छे, तेम आपणा द्रव्यने लेनारा नथी, तो तेओ अहीं शी रीते रहे ? तेथी बीजा सर्व विचार छोडी दइ मने तेमनी साथे जवा आज्ञा आपो जेथी हुं तेमनी साथे संगीत कलानो संपूर्ण अभ्यास करुं. " राजकुमारनो आवो अति आग्रह जाणी माता पिताए तेने आज्ञा आपी ते साथे तेने बेशवाने एक शिबिका, अने केटलाक माणसो आप्या. राजकुमार खुशी थइ शिबिकामां आरुढ थइ तेमनी साथे चाल्यो तेनी पाछल साधुओ चालवा लाग्या, अनुक्रमे तेओ अनार्य क्षेत्रनुं उल्लंघन करी आर्यक्षेत्रने प्राप्त थया. एटले कुमारे ते शिबिकाने पाछी वाळी मुकी. साधुओए ते आर्य क्षेत्रमां आवी कोइ एक नगरमां भिक्षाने माटे जइ शुद्ध आहार लावी पोते करेला लांबा तपनुं पारणुं कर्युं. ते वखते राजकुमारे कह्युं, " भगवन्, हवे मारे शुं करवुं ? " आचार्य बोल्या,—" तमे व्रत ग्रहण करो. " सूरिवरनी आवी आज्ञाथी ते कुमारे चारित्रने ग्रहण कर्युं. पछी तेना पूर्व भवना शिष्यो खेद रहित थइ तेनी वैयावच्च करवा लाग्या. पछी अनुक्रमे तेमना पोताना गच्छना बीजा साधुओ एकठा थइ आव्या अने तेओ अत्यंत आनंद पामी गया. ते कुमारमुनि महा तपस्वी थया. चारित्र ग्रहणथी मांडीने तेमणे यावज्जीवित छठ तप कर्युं अने अप्रमत्तपणे संयमने पाळ्यो. अनुक्रमे आयुष्यनो क्षय थतां समाधि पूर्वक काल करी तेओ नवग्रैवेयकमां देवपणे उत्पन्न थया हता, त्यांथी चवीने महाविदेह क्षेत्रने विषे तेओ सिद्धिपदने प्राप्त थशे. बीजा पण साधुओ संयमनी आराधना करी अनुक्रमे उत्तम गतिने प्राप्त थया हता. ए म-

कारे प्रमाद उपर सुमंगलमुनिनुं दृष्टांत छे. आ दृष्टांत उपरथी प्रमादना क्लेशथी उत्पन्न थयेला कर्मनो विपाक केवो विषम छे? तेनो विचार करी संसारभीरु एवा मुनिओए सर्वदा प्रमादनो परिहार करवो जोइए.

हवे प्रमादनो परिहार करी संयम पालवामां उजमाल थयेला मुनिओ मननो निग्रह करवा प्रमुख कार्यमां जे बार सद्भावना भावे छे. तेनुं स्वरुप कहेवामां आवे छे.

" पढम मणिच्च मसरणं संसारो एगया य अन्नत्तं ।
असुइत्तं आसवसंवरोय तह निज्जरानवमी ॥ १ ॥
लोग सहावो बोहि—दुल्लहा धम्मस्स साहगा अरिहा ।
एयाओ भावणाओ, भावेयवा पयत्तेणं " ॥ २ ॥

१ अनित्य, २ अशरण, ३ संसार, ४ एकत्व, ५ अन्यत्व, ६ अशुचि, ७ आश्रव, ८ संवर; ९ निर्जरा, १० लोक स्वरुप, ११ बोधि दुर्लभ अने १२ धर्मना साधक अरिहंत—इत्यादि बार भावनाओनो सुदृष्टि पुरुषोए यत्ने करी अभ्यास करवो.

१ आ संसारमां मोहादिकने वश थइ सर्व वस्तुने विषे अवली बुद्धिवाला मूढजनो स्वामित्व, धन, यौवन, शरीरलावण्य, बल, आयुष्य, विषय सुखनी वल्लभता अने जनसंयोगादिक पदार्थोने पर्वतथी उतरती महा नदीना पूरनी पेठे अत्यंत वायुना समूहे कंपावेला ध्वजपटनी जेम वांछित प्रदेशमां पोतानी इच्छा प्रमाणे विहार करनारा अने चारे तरफ भमराओना समूहे आश्रित एवा गंडस्थलवाला मदोन्मत्त हस्तीना कर्णतालनी पेरे अने निविड पवने करी हणाएला वृक्षना पाका पात्राना समूहनी पेरे अति चंचल छे, तोपण ते सर्वदा नित्यरुपे जाणे छे, पण तत्त्व दृष्टिए जोतां आ सर्व भावो अनित्य छे, तेमां एक पण नित्य—शाश्वत नथी. वली जे परमानंदने आपनारा सद्ज्ञानादिक आत्माना गुणो ते नित्य छे, आ प्रमाणे जे चिंतववुं, ते पेहेली अनित्य भावना कहेवाय छे.

तेने माटे आ प्रमाणे कहेलुं छे.

" सामित्तणधणजुव्वणक्क रूवबलाउइठसंजोगा ।
अइलोला घणपवणा हयपायव पक्कपत्तव्व " ॥ १ ॥

आचार्य बोल्या–"भद्र, तमे अमारी साथे आवो; जेथी तमारा कार्यनी सिद्धि थशे."

राजकुमार बोल्यो—" महाराज, मारा चरण बंधाइ गया छे, तेथी हुं चालवाने समर्थ नथी, तेथी आगळ जतां मारो शी रीते निर्वाह थशे ? " आचार्ये जणाव्युं, " भद्र, ज्यारे तमे हळवे हळवे आर्यक्षेत्रमां आवशो, एटले आ साधुओ तमारी वैयावच्च करशे. " आ आचार्यना आ वचन सांभळी कुमारने हिंमत आवी पछी ते पोताना माता पिता पासे आवी आ प्रमाणे बोल्यो—" हे माता पिता, जो आप आज्ञा आपो तो हुं आ महान् कळाचार्य पासे कळा शीखवाने जाउं " माता पिता मोहातुर थइने बोल्या—" वत्स, अमे तारो वियोग सहन करवाने समर्थ नथी माटे ए नटोने अहींज राखी कळानो अभ्यास कर." राजकुमार बोल्यो, " ए वात सत्य छे, ए लोको परदेशी छे, तेम आपणा द्रव्यने लेनारा नथी, तो तेओ अहीं शी रीते रहे ? तेथी बीजा सर्व विचार छोडी दइ मने तेमनी साथे जवा आज्ञा आपो जेथी हुं तेमनी साथे संगीत कळानो संपूर्ण अभ्यास करुं. " राजकुमारनो आवो अति आग्रह जाणी माता पिताए तेने आज्ञा आपी ते साथे तेने बेशवाने एक शिबिका, अने केटलाक माणसो आप्या. राजकुमार खुशी थइ शिबिकामां आरुढ थइ तेमनी साथे चाल्यो तेनी पाछळ साधुओ चालवा लाग्या, अनुक्रमे तेओ अनार्य क्षेत्रनुं उल्लंघन करी आर्यक्षेत्रने प्राप्त थया. एटले कुमार ते शिबिकाने पाछी वाळी मुकी. साधुओए ते आर्य क्षेत्रमां आवी कोइ एक नगरमां भिक्षाने माटे जइ शुध्ध आहार लावी पोते करेला लांबा तपनुं पारणुं कर्युं. ते वखते राजकुमारे कह्युं, " भगवन, हवे मारे शुं करवुं ? " आचार्य बोल्या,—" तमे व्रत ग्रहण करो. " सूरिवरनी आवी आज्ञाथी ते कुमारे चारित्रने ग्रहण कर्युं. पछी तेना पूर्व भवना शिष्यो खेद रहित थइ तेनी वैयावच्च करवा लाग्या. पछी अनुक्रमे तेमना पोताना गच्छना बीजा साधुओ एकठा थइ आव्या अने तेओ अत्यंत आनंद पामी गया. ते कुमारमुनि महा तपस्वी थया. चारित्र ग्रहणथी मांडीने तेमणे यावज्जीवित उग्र तप कर्युं अने अप्रमत्तपणे संयमने पाळ्यो. अनुक्रमे आयुष्यनो क्षय थतां समाधि पूर्वक काळ करी तेओ नवग्रैवेयकमां देवपणे उत्पन्न थया हता, त्यांथी चवीने महाविदेह क्षेत्रने विषे तेओ सिद्धिपदने प्राप्त थशे. बीजा पण साधुओ संयमनी आराधना करी अनुक्रमे उत्तम गतिने प्राप्त थया हता. ए प्र-

कारे प्रमाद उपर सुमंगलमुनिनुं दृष्टांत छे. आ दृष्टांत उपरथी प्रमादना लेशथी उत्पन्न थयेला कर्मनो विपाक केवो विषम छे ? तेनो विचार करी संसारभीरु एवा मुनिओए सर्वदा प्रमादनो परिहार करवो जोइए.

हवे प्रमादनो परिहार करी संयम पालवामां उजमाल थयेला मुनिओ मननो निग्रह करवा प्रमुख कार्यमां जे बार सद्भावना भावे छे. तेनुं स्वरुप कहेवामां आवे छे.

" पढम मणिच्च मसरणं संसारो एगया य अन्नत्तं ।
असुइत्तं आसवसंवरोय तह निज्जरानवमी ॥ १ ॥
लोग सहावो बोहि–दुल्लहा धम्मस्स साहगा अरिहा ।
एयाओ भावणाओ, भावेयव्वा पयत्तेणं " ॥ २ ॥

१ अनित्य, २ अशरण, ३ संसार, ४ एकत्व, ५ अन्यत्व, ६ अशुचि, ७ आश्रव, ८ संवर, ९ निर्जरा, १० लोक स्वरुप, ११ बोधि दुर्लभ अने १२ धर्मना साधक अरिहंत–इत्यादि बार भावनाओनो सुदृष्टि पुरुषोए यत्ने करी अभ्यास करवो.

१ आ संसारमां मोहादिकने वश थइ सर्व वस्तुने विषे अवली बुद्धिवाला मूढजनो स्वामित्व, धन, यौवन, शरीरलावण्य, बल, आयुष्य, विषय सुखनी वल्लभता अने जनसंयोगादिक पदार्थोने पर्वतथी उतरती महा नदीना पूरनी पेठे अत्यंत वायुना समूहे कंपावेला ध्वजपटनी जेम वांछित प्रदेशमां पोतानी इच्छा प्रमाणे विहार करनारा अने चारे तरफ भमराओना समूहे आश्रित एवा गंडस्थलवाला मदोन्मत्त हस्तीना कर्णतालनी पेरे अने निबिड पवने करी हणाएला वृक्षना पाका पात्राना समूहनी पेरे अति चंचल छे, तोपण ते सर्वदा नित्यरुपे जाणे छे, पण तत्त्व दृष्टिए जोतां आ सर्व भावो अनित्य छे, तेमां एक पण नित्य—शाश्वत नथी. वली जे परमानंदने आपनारा सद्ज्ञानादिक आत्माना गुणो ते नित्य छे, आ प्रमाणे [illegible] चिंतवनुं, ते पेहेली अनित्य भावना कहेवाय छे.

तेने माटे अ[illegible] णे कहेलुं छे.

" सामि[illegible] णजुव्वणरू रूवबलाउय्हसंजोगा ।
अइच[illegible] घणपवणा हयपायव पक्कपत्तव्व " ॥ १ ॥

आ गाथानो अर्थ उपर कहेवामां आव्यो छे.

२ बीजी अशरण भावना छे. जेम आ लोकने विषे माता, पिता, भाइ, व्हेन, स्त्री, पुत्र, मित्र, सुजनादि परिवार देखता छतां एक जैन धर्म शिवाय बीजुं कांइ पण शरण रूप नथी इत्यादि चिंतवन करवुं, ते अशरण भावना कहेवाय छे. तेने माटे आ प्रमाणे कहेलुं छे—

" पिउ भाउ भयणि भज्जा, भडाण पच्चक्खमिक्खमाणाणं।
जीवं हरइ मच्चू, नत्थि सरणं विणा धम्मं " ॥१॥

आ श्लोकनो भावार्थ उपर कहेवामां आव्यो छे.

३ त्रीजी संसार भावना छे. जेनी अंदर आ प्रमाणे चिंतवन करवानुं छे—" आ संसारने विषे चोराशीलाख जीवायोनिमां वारंवार जन्ममरण आश्रीने भ्रमण करता एवा संसारी जीवो कर्मना उदयथी कोइवार सुखी, कोइवार राजा, कोइवार रंक, कोइवार कुरूपी अने कोइवार स्वरूपवान् एम विविध प्रकारनी अवस्थाने अनुभवे छे. वळी परस्पर संबंधीओनी चिंताने विषे रह्या करे छे. कर्मना वशने लइने कुबेरदत्त प्रमुखनी जेम एकज भवमां महान् दुष्कर्मना बंधना हेतुरूप एवा अनेक संबंधो उत्पन्न थाय छे, तो अनेक भवोमां अनेक संबंधो थाय, तेमां शुं कहेवुं ? तेथी वस्तुताए एकांत दुःखरूप एवा आ दुःखमय संसारने विषे मूढ पुरुषो रच्या पच्या रहे छे. पण जेओ तत्त्वज्ञानी छे, तेओ तेमां कदिपण आसक्त थता नथी, आ प्रमाणे जे चिंतवन करवुं, ते त्रीजी संसार भावना कहेवाय छे. तेने माटे कह्युं छे के,

" जाइमिगं मुंचंतो अवरं जाइं तहेव गिण्हंतो ।
भमइ चिरमविरामं, भमरोव्व जिओ भवारामे" ॥१॥

" एकेंद्रिय आदि जातिने मुकतो अने बीजी बे इंद्रिय प्रमुख जातिने ग्रहण करतो एवो जीव भमरानी जेम आ भवरूप आरामने विषे विराम पाम्या वगर चिरकाल भमे छे." १

ते विषे कुबेरदत्तनो वृत्तांत.

मथुरा नगरीमां कुबेरसेना नामे एक गणिका रहेती हती. एक दिवसे ते-

णीने नवीन गर्भ उत्पन्न थइ आव्यो, आथी ते हृदयमां अत्यंत खेद पामवा लागी. तेणीनी माताए ज्यारे तेणीने खेद पामती जोइ, त्यारे तेणीए तेनुं दुःख दूर करवा माटे वैद्योने बोलाव्या. वैद्योए नाडी जोइ तेणीने नीरोगी जाणी कह्युं, " आना शरीरमां कोइ जातनो रोग नथी, पण तेणीना उदरमां युगलनो गर्भ छे ते हेतुथी आ स्त्रीने खेद थयो छे. ते पछी ते वैद्योने विदाय करी दुष्ट कुट्टिनी पोतानी पुत्रीने आ प्रमाणे कहेवा लागी—" पुत्री, आ तारा उदरनो गर्भ ॥ रा माएने हरनारो छे, माटे तेने पाडी नांखवो योग्य छे. वेश्याए कह्युं,—" हुं गमे तेटला क्लेश सहन करीश पण मारा गर्भनुं कुशल थाओ. " पछी ज्यारे योग्य अवसर आव्यो, एटले तेणीए पुत्र अने पुत्रीना युगलने जन्म आप्यो. आ वखते तेणीनी माताए कह्युं, " पुत्री, आ छोकरां तारा यौवनने हरनारा छे, तेथी आ युगलने विष्टानी जेम त्यजी दइ तारी आजीविकाना साधनरूप एवा यौवनवयनुं रक्षण कर. " माताना आ वचन सांभळी ते वेश्या बोली—" माता ज्यारे आप कहो छो तेम होयतो दश दिवस सुधी राह जुवो, पछी तमे जेम कहेशो, तेम हुं करीश. आ प्रमाणे कही ते कुबेरदत्ता वेश्या ते पोताना बालकोने दश दिवस सुधी स्तनपान करावा लागी, ज्यारे अगीआरमो दिवस आव्यो, एटले तेणीए पोताना बालकोनां कुबेरदत्त अने कुबेरदत्ता एवा नाम पाड्यां. पछी तेमना ए नामथी अंकित एवी बे मुद्रा करावी तेमनी आंगळीओमां पेहेरावी अने तेमने एक लाकडानी पेटीमां मुकी बंनेने सायंकाले यमुना नदीना प्रवाहमां वेहेता मुक्या. जलना प्रवाहमां वेहेती ते पेटी अनुक्रमे सूर्योदय वखते शौर्यपुर नगरने दरवाजे आवी. ते वखते कोइ बे शेठना पुत्रो त्यां स्नान करवा आवेला, तेमणे ए पेटी जोइ अने तत्काल तेने ग्रहण करी उघाडी; त्यां ते बंने बालको तेमना जोवामां आव्या. तेओमांथी एकने पुत्रनी इच्छा हती, तेणे पुत्र लीधो अने एकने पुत्रीनी इच्छा हती तेणे पुत्री लीधी. तेओ बंनेने लइ पोतपोताने घेर आव्या अने ते संतानो पोतानी स्त्रीने आप्या अने तेमनी मुद्राना लेख प्रमाणे तेमना नाम राख्या. केटलेक काले ज्यारे ते बंने बालको एकठा थया त्यारे ते शेठीआओए पोतानो स्नेह संबंध जाळववाने माटे ते बंनेनो विवाह संबंध जोडी दीधो—मोटी धामधूमथी तेमनो लग्नोत्सव करवामां आव्यो. ते बंने दंपती एक वखते एकांते सोगठा बाजीनी क्रीडा करता हता तेवामां कुबेरदत्तना हाथमांथी

मुद्रा नीकळीपमी अने ते कुबेरदत्तानी आगळ पमी. कुबेरदत्ताए ते हाथमां लीधी; तेमां रहेल नाम वांची अने ते पोतानी मुद्रा साथे मेळववा मांमी, तेवामां ते बंनेनो सरखो घाट अने समान आकृति जोइ तेणीना मनमां शंका उत्पन्न थइ आवी अने कुबेरदत्त वखते पोतानो भाइ हशे एम निश्चय थवा मांड्यो. आ प्रमाणे निश्चय थतांज तेणीए मुद्रा कुबेरदत्तना हाथमां पेहेरावी दीधी तेने जोतांज कुबेरदत्तना मनमां पण शंका थइ आवी अने कुबेरदत्ता पोतानी व्हेन हशे, एवो तेणे निश्चय कर्यो. आथी तेना मनमां अत्यंत खेद उत्पन्न थइ आव्यो. पछी बंने एकत्र थइ विचार करी पोताना विवाहना कार्यने अकार्यमानी ते संदेह दूर करवाने पोतपोतानी माताने सोगन आपी अतिशय आग्रहथी पुछवा लाग्या. ज्यारे तेमनो अति आग्रह देखायो, एटले ते माताए पेटीनी प्राप्तिथी आरंभीने बधो वृत्तांत तेमनी आगळ निवेदन करी दीधो. आ वखते कुबेरदत्ते प्रश्न कर्यो —" तमोए अमोने युगल जन्मेला जाणतां उतां आवो लग्न संबंध केम कर्यो ? तमारे आवुं अकार्य करवुं न हतुं. " ते माताए कह्युं, " तमारा जेवी रूप, गुण अने शीलमां मळती बीजी जोम न मळवाथी अमोए आ संबंध जोड्यो छे, छतां जो तमारा मनमां ते विषे खेद रहेतो होय तो हजु कांइ बगमी गयुं नथी; कारणके, हजु तमारुं मात्र पाणिग्रहणज थयुं छे कांइ मैथुन थयुं नथी; तेथी तमो खेद पामशो नहीं. तमोने फरीवार बीजा योग्य जोडां साथे परणावीशुं." माताना आ वचनो सांभळी कुबेरदत्त बोल्यो—" तमे कहो छो, ते यथार्थ छे. पण हाल हुं वेपारने माटे विदेशमां जवा इच्छा राखुं छुं, माटे मने आज्ञा आपो." माता पिताए कुबेरदत्तने आज्ञा आपी. पछी कुबेरदत्त पोतानी व्हेनने आ वृत्तांत जणावी घणुं करीयाणुं लइ परदेश चाल्यो गयो. कर्मयोगे ते पोतानुं वतन जे मथुरा नगरी तेमां आवी चड्यो. त्यां पोते व्यापार कर्म करवा लाग्यो. एक दिवसे तेनी माता पेली कुबेरसेना वेश्या तेना जोवामां आवी. तेणीने घणी सुंदर जोइ कुबेरदत्त कामवश थइ गयो. तत्काल घणुं द्रव्य आपी तेणे तेणीनी साथे विषय भोग भोगव्यो. एवी रीते केटलोक वखत विषयभोग भोगवतां तेणीने एक पुत्र उत्पन्न थयो.

अहीं शौर्यपुरमां कुबेरदत्ताए ज्यारे पोतानी माता पासेथी पोतानो वृत्तांत सांभळ्यो, एटले तेणीना मनमां वैराग्य उत्पन्न थइ आव्यो. तत्काल तेणीए कोइ

साध्वीनो योग थतां तेणीनी पासे दीक्षा ग्रहण करी. संयमने प्राप्त करी तेणीए एवो तप आचर्यो के, जेथी निर्मल अध्यवसायने लइने तेणीने अल्प समयमां अवधिज्ञान उत्पन्न थइ आव्युं.

एक वखते ते कुबेरदत्ता साध्वीजीए अवधिज्ञानना बलथी पोताना नाइनुं स्वरूप विलोक्युं, तेवामां तेणीना जाणवामां आव्युं के, पोतानो नाइ कुबेरदत्त मथुरामां पोतानी माता साथे आसक्त थयो छे, अने तेनाथी एक पुत्र उत्पन्न थयेलो छे. आ स्वरूप जाणी तेणी कर्मनी गतिने धिक्कार आपी पोताना बंधुने ते अकार्यरूप महा पापमांथी मुक्त करवा अने तेना आत्मानो उध्धार करवा मथुरानगरीमां आवी. ते नगरीमां कुबेरसेना वेश्याने घेर जइ धर्मलाभ आशीष आपी, तेणीए रहेवा माटे आश्रय माग्यो. कुबेरसेनाए कह्युं, " हे महा सती, हुं वेश्या छुं तोपण हमणां एक नर्त्तारना संयोगथी कुलीन स्त्री बनी छुं; तेथी तमे सुखे करी मारा घरनी नजीक निरवद्य आश्रयने ग्रहण करो अने उपदेश आपी अमोने सदाचारमां प्रवर्त्तावो. वेश्यानां आ वचनो उपरथी कुबेरदत्ता साध्वी पोताना परिवार साथे ते वेश्याना घरनी पासे वास करीने रह्या हता.

वेश्या कुबेरसेना दररोज ते साध्वीनी आगळ पोताना बालकने आलोटतो मुकती त्यारे अवसरने जाणनारा साध्वी ते बालकने आ प्रमाणे बोलावता हता, " अरे बालक, १ तुं मारो नाइ छे, २ तुं मारो पुत्र छे, ३ मारो दीयर छे, ४ मारो नत्रीजो छे, ५ मारो काको छे अने ६ मारो पौत्र छे.

वळी तारो जे पिता ते १ मारो नाइ छे, २ मारो पिता छे, ३ मारो दादो छे, ४ मारो नर्त्तार छे, ५ मारो पुत्र छे, अने ६ मारो ससरो पण छे.

वळी जे तारी माता ते १ मारी माता छे, २ मारी दादी छे, ३ मारी नाजी छे, ४ मारी पुत्रवधू छे, ५ मारी सासू छे अने ६ मारी शोक्य पण छे.

एक वखते कुबेरदत्ते आ वचन सांभळी विस्मय पामी साध्वीजीने आ प्रमाणे पुछ्युं, " साध्वीजी, तमे आवा अयुक्ति वचनो केम बोलो छो ? ते वखते साध्वीजी बोल्या, " नाइ, हुं जे बोलुं छुं, ते युक्तज छे, अयुक्त नथी. सांभळो, १ आ बालक अने हुं एक माताना छीए तेथी ते मारो नाइ थाय छे, २ ते मारा नर्त्तारनो पुत्र होवाथी मारो पुत्र थाय छे, ३ ते मारा नर्त्तारनो नानो नाइ होवाथी मारो दियर थाय छे, ४ मारा नाइनो पुत्र होवाथी मारो नत्रीजो थाय छे,

५ मारी माताना पतिनो भाइ होवाथी मारो काको थाय छे ६ अने मारी शोक्यनो पुत्रनो पुत्र होवाथी मारो पौत्र थाय छे.

आ प्रमाणे बालकनी साथे पोताना छ संबंधो देखाडी साध्वीए पुनः जणाव्युं, " १ आ बालकना पितानी अने मारीमाता एक होवाथी ते मारो भाइ थाय छे, २ आ बालक मारी मातानो भर्त्तार होवाथी मारो पिता थाय छे, ३ आ मारा काकानो पिता होवाथी मारो दादो थाय छे, ४ ते पूर्वे मने परणनारो होवाथी मारो भर्त्तार थाय छे, ५ मारी शोक्यनो पुत्र होवाथी मारो पुत्र थाय छे अने मारा दियरनो पिता तेथी ते मारो ससरो थाय छे.

हवे आ बालकनी माता मारी प्रसव करनारी होवाथी १ ते मारी पण माता थाय छे, २ ते मारा भाइनी वहु तेथी भाभी थाय छे, ३ मारा काकानी माता होवाथी ते मारी दादी थाय छे, ४ मारी शोक्यना पुत्रनी वहु होवाथी मारी वधू थाय छे. ५ मारा भर्त्तारनी माता तेथी ते मारी सासू थाय छे, ६ अने मारा भर्त्तारनी बीजी स्त्री, तेथी मारी शोक्य थाय छे. ए बालकनी माता कुबेरदत्ता वेश्यानी साथे मारा पोताना छ संबंध थाय छे.

आ प्रमाणे कही ते कुबेरदत्तना आत्मानो उध्धार करवा पोते राखेली पेली मुद्रा तेनी आगळ प्रगट करी बतावी. कुबेरदत्त ते मुद्रा जोइ विचारमां पडी गयो अने साध्वीए बतावेला सर्व संबंधोने विरुध्ध जाणी तेना हृदयमां वैराग्य भावना प्रगट थइ आवी. आत्मनिंदा करता ते कुबेरदत्ते पोतानी शुध्धिने माटे विचार करी तत्काल दीक्षा ग्रहण करी अने ते महान् तपस्या करवाने प्रवर्त्यो. आ प्रवृत्ति जाणी कुबेरसेना वेश्याए पण प्रतिबोधने पामी श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो. साध्वी कुबेरदत्ता आ प्रमाणे तेमनो उद्धार करी पोतानी प्रवर्त्तिनी पासे चाल्या गया. अनुक्रमे ते सर्वे जीवो पोताना धर्मने सम्यक् प्रकारे आराधी उत्तम गतिना भाजन थया हता.

अढार संबंध उपर कुबेरदत्तनुं दृष्टांत आ प्रमाणे छे—आ अढार संबंधो एक भवने आश्रीने बताव्या छे. अनेक भवनी अपेक्षाए तो प्राये करीने सांव्यवहारिक एटले व्यवहार राशिवाळा जीवोनो एकेको संबंध अनंतीवार थयो, तेमज श्री भगवती सूत्रना बारमा शतकना सातमा उद्देशमां कह्युं छे के,—

" अयणं भंते जीवे, सव्व जीवाणं माइत्ताए " इत्यादि ।

आ कहेवानुं तात्पर्य ए छे के, " हे नगवन्, आ जीव सर्व जीवोना मातापणे, पितापणे, नाइपणे, व्हेनपणे, स्त्रीपणे, पुत्रपणे, पुत्रीपणे, वहुपणे, शत्रुपणे, घातकपणे, प्रत्यनीकपणे, शत्रुसहायपणे, राजापणे, युवराजपणे, सार्थवाहपणे, दासदासीपणे, नागग्राहीपणे, शिक्षकपणे, अने इर्ष्यालुपणे पूर्वे उत्पन्न थयो हशे?" आ प्रमाणे गौतम महाराजे पुछतां श्री वीरप्रजु कहे छे—" हा, गौतम, अनेकवार अथवा अनंतवार पूर्वे उत्पन्न थयो, एम सर्व जीवो आ जीवना मातादिकपणे अनेकवार अथवा अनंतवार पूर्वे उत्पन्न थया छे.

४ चोथी एकत्व नावना आ प्रमाणे छे—आ संसारमां जीव एकलो उत्पन्न थाय छे अने एकलो मरण पामे छे; तेमज एकलोज कर्म उपार्जे छे अने तेना फल पण एकलोज नोगवे छे, तेथी तत्त्वपणे करी एक श्री जैन धर्म विना कोइ पण अन्य स्वजनादिक सहाय करता नथी. इत्यादि जे चिंतवन, ते एकत्व नावना कहेवाय छे, तेने माटे आ प्रमाणे कहेलुं छे—

" इक्को कम्माइ समं, जणेइ भुंजइ फलंपि तस्सिक्को ।
इक्कस्स जम्ममरणे, परभवगमणं च इक्कस्स " ॥ १ ॥

आ गाथानो अर्थ उपर कहेवामां आव्यो छे.

५ पांचमी अन्यत्व नावना आ प्रमाणे छे—चिरकालथी आत्म प्रदेशनी साथे गाढ संबंधवालुं अने मनवांछित अशनपानादिके करी बहु प्रकारे लालित एवुं पोतानुं शरीर पण वस्तुगतिए करी अन्य—जुदुंज छे. ते अन्यपणाने लइ छेवटे प्राणीओनी पछवाडे जतुं नथी तो पछी बाह्यनूत एवा धन सुवर्णादि परवस्तुओनी शी वात करवी ? माटे एक आत्म धर्म विना सर्वे सांसारिक नावो अन्य छे—जुदा छे, आवुं जे चिंतवन ते अन्यत्व भावना कहेवाय छे, तेने माटे आ प्रमाणे कहेलुं छे—

" चिरलालिअंपि देहं जइ जिअ मंतंमि नाणुवट्टेइ ।
तातंपि होइ अन्नं धणकणयाईण का वत्ता " ॥ १ ॥

अपिच—

" अन्नं इमं कुटुंबं अन्ना लच्छी सरीरमवि अन्नं ।

मोत्तुं जिणंदधम्मं, न भवांतरगामिओ अन्नो " ॥ १ ॥

पेहेली गाथानो अर्थ उपर दर्शाव्यो छे.

बीजी गाथानो अर्थ आ प्रमाणे छे.

" कुटुंब पण अन्य छे, आ लक्ष्मी पण अन्य छे अने आ शरीर पण अन्य छे. श्री जिनधर्म शिवाय भवांतरमां आवनार कोइ बीजुं नथी." २

६ छठी अशुचि भावना कहे छे—" रस, रुधिर, मांस, मेद, अस्थि, शुक्र, अने मज्जा—ए सात धातुमय श्लेष्म तथा मल, मूत्र, पुरीष, त्वचा, आंतरडा अने ओरना समूहवडे वींटाएलुं अने सर्व काले कृमि, रोग, गंडोला आदिथी भरेलुं आ औदारिक शरीर तत्त्वदृष्टिए जोतां महा अशुचिवालुं छे. ते एक अद्भुत आत्मधर्म विना कइ प्रकारें शुचि थाय? कदिपण थाय नहीं. वली जे आवा शरीरने केवल जलादिवडे शुध्ध करवा इच्छे छे ते तत्त्वथी विमुख अने अज्ञानी जाणवा " आ प्रकारे जे चिंतवन करवुं, ते अशुचि भावना कहेवाय छे. तेने माटे आ प्रमाणे लखे छे—

" मेयवसरे अमलमुत्त पूरिअं चम्म वेढिअं तत्तो ।
जंगममिव वच्चहरं कहएयं सुइए देहं " ॥ १ ॥

आ गाथानो अर्थ उपर दर्शाव्यो छे—हवे तंडुलवियालि प्रकीर्णने अनुसारे ते औदारिक शरीरनुं गर्भाधानथी आरंभीने कांइक विशेष अशुचिनुं स्वरूप देखाडे छे.

स्त्रीनी नाभिनी नीचे पुष्पनालने आकारे बे नाडी छे, तेनी नीचे अधो मुखी कमलना कोशने आकारे जीवनी उत्पति स्थान रुप योनि होय छे. तेनी नीचेना भागमां आंबानी मांजरीना जेवी एक मांसनी मंजरी छे, ते मंजरी ऋतु वखते फुटी रुधिरना बिंदुओने मुके छे. ऋतुकाल वीत्या पछी एटले त्रण दिवस पछी ते कमलना कोशना आकारवाली योनिने विषे प्रवेश करे छे, पछी पुरुषना संयोगथी पुरुषना शुक्र (वीर्य) नी साथे मिश्र थाय छे, त्यारे ज्ञानी महाराजाए ते योनि जीवने उपजवा योग्य कहेली छे; ते स्थले बार मुहूर्त सुधी ते शुक्र अने शोणित अविनाशी योनीपणे थाय छे अने बार मुहूर्त पछी विनाशी योनिपणाने पामे छे तेथी ते बार मुहूर्त सुधीमां जीवनी उत्पति छे; ते बार मुहूर्त प-

थी जीव उत्पन्न थतो नथी; ते उत्पत्तिना प्रथम समये एकत्र थयेल पिता संबंधी वीर्य अने माता संबंधी शोणित तेने ते जीव आहारपणे ग्रहण करे छे, ते आहारने ओज आहार कहेवामां आवे छे, ते ओज आहार अपर्याप्त अवस्था सुधी होय छे, ते पछी ज्यारे ते पर्याप्त थाय छे, त्यारे ते गर्भमां रहेला जीवने लोमाहार होय छे.

ते जीवने आश्रीने रहेल शुक्र अने शोणित द्रव्य सात दिवस सुधी कलल रूपे होय छे अने ते सात दिवस पछी परपोटा रूपे रहे छे. ते पछी पेहेले मासे 'कर्षोपल' एवा प्रमाणनी मांसनी पेशी रूपे बने छे. बीजे मासे ते निबिड मांसपिंडिका थाय छे, त्रीजे मासे ते माताने दोहद उत्पन्न करे छे. चोथे मासे माताना अंगने पीडा उत्पन्न करे छे. पांचमे मासे ते जीवनी मांस पिंडिकामांथी अंकुरानी पेठे बे हाथ, बे पग अने मस्तक—एम पांच अवयव निष्पन्न करे छे. छठे मासे पित्त अने शोणितने बनावे छे. सातमे मासे सातसो नसो, पांचसो मांसपेशी नव धमनी नाडीविशेष अने साडात्रण कोटी रोमराजी, निष्पादन करे छे, आठमे मासे लगार उणो उत्पन्न करे छे अने नवमे मासे सुनिष्पन्न सर्व अंगोपांग वालो जीव बनी जाय छे.

ते गर्भावस्थामां माताना जीवनी रस हरनारी तथा संततिना जीवनी रस हरनारी जे बे नाडीओ होय छे, तेओमां पेहेली माताना जीवनी साथे बंधाएल छतां संताननना जीवने स्पर्शेली छे, तेथी संताननो जीव माताए भोगवाता अनेक प्रकारना रसविषयनो एक देशे करीने ओज आहारने ग्रहण करे छे,

बीजी नाडी जे संततिना जीवनी साथे बंधाएल ते माताना जीवने स्पर्शेली छे, ते नाडीवडे जीव पोताना शरीरने वृद्धि पमाडे छे, परंतु ते अवस्थामां ते कवल आहारने ग्रहण करतो नथी; तेथी तेने उच्चार (झाडो) तथा प्रस्रवण (मूत्र) संभवता नथी तेम वली ते जीव जे आहार द्रव्य ग्रहण करे छे, ते पोतानी श्रोत्रादिक इंद्रियो अने अस्थि, मज्जा, केश, रोम अने नखपणे परिणमे छे.

ते गर्भमां रहेलो जीव माताना शयन वखते सुइ जाय छे अने मातानी जाग्रत अवस्थामां जागे छे. माता सुखी एटले ते पण सुखी होय छे. एवी रीते कर्मना उदयथी जीव उत्कृष्ट अंधकारमां अशुचि भरेला गर्भस्थानमां महा दुःख अनुभवतो रहे छे. ज्यारे नव मास अतीत थतां ते पुरुष, स्त्री, नपुंसक अने बिं-

व ए चारमां हरकोइ रुपे प्रसवाय छे. जो शुक्र अल्प होय अने शोणित विशेष होय तो स्त्री, शुक्र विशेष अने शोणित अल्प होयतो पुरुष अने शुक्र अने शोणित समान होय तो नपुंसक जन्मे छे. जो केवल शोणितनो ज योग होयतो मांसना पिंडरुप बिंब प्रगटे छे. वली कोइ प्राणी माताना उदरमां उत्पन्न थयेलो होय परंतु घणा पापे करीने पराभूत थयेलो होय तो ते वात तथा पित्तादिकवमे दूषित थयेलो अथवा देवतादिके स्तंभित करेलो होवाथी आंतरा रहित बार वर्ष सुधी त्यांने त्यां (गर्नमां) रहे छे—एटले बार वर्ष वीत्या पछी जन्मे छे, लोकमां ते छोरु—चोडना नामथी ओळखाय छे. आ प्रमाणे गर्ननी भवस्थिति कहेवाय छे.

तेनी जे कायस्थिति छे, ते मनुष्यने चोवीश वर्षनी छे—ते आ प्रमाणे—कोइ जीव छोरुरुपे बार वर्ष गर्नमां रही अंते मृत्यु पामी तेवा प्रकारना दुष्ट कायना योगथी त्यांज गर्नमां रहेला कलेवरमांज उत्पन्न थाय छे अने उत्पन्न थइ तेमांज बार वर्ष सुधी रहे छे—एवी रीते उत्कृष्टी चोवीश वर्ष सुधी तेनो गर्नावास थाय छे.

तिर्यंच जीवो तिरश्चीना गर्नमां उत्कृष्टथी आठ वर्ष सुधी रहे छे, ते पछी तेनो विनाश अथवा प्रसव पण थाय छे.

स्त्रीनी गर्नोत्पत्तिनी योग्यता अने पुरुषना वीर्यनी गर्नाधान करवानी योग्यताने माटे आ प्रमाणे लखेलुं छे—स्त्रीनी योनि पंचावन वर्ष पर्यंत अम्लान होवाथी गर्नने धारण करी शके छे अने ते पछी आर्त्तवनो अन्नाव होवाथी तेनी योनि म्लान थइ जाय छे. तेने माटे निशीथ चूर्णीमां आ प्रमाणे कहेलुं छे—

"इत्थिए जाव पणपन्नावासा न पूरयंति ताव अमिलिआणा य जोणी"

आनो अर्थ उपर-दर्शावेलो छे. पुरुष पंचोतेर वर्ष सुधी गर्नाधानने योग्य एवा वीर्यवालो होय छे; ते पछी ते प्राये करी तेवा वीर्यथी रहित थइ जाय छे. ते विषे पण निशीथ चूर्णीमां कहेल छे—आ सो वर्षनी आयुष्यवाला नी अपेक्षाए समजवुं. सो वर्षनी आगल बसो, त्रणसो, चारसो इत्यादि पूर्व कोटी होय.

स्त्रीनुं जेटलुं आयुष्य होय, ते सर्व आयुष्यमांथी अर्ध आयुष्य पर्यंत म्लानपणा रहित होवाथी ते गर्न धारण करवाने समर्थ होय छे. अने पुरुषने तो

सर्व पूर्व कोटी पर्यंतना पोताना आयुष्यनो छेल्लो वीशमो न्हाग अवीज होय छे अने पूर्व कोटी उपरनी स्थितिवालाने तो युगलिकपणे करी एकवार प्रसवधर्मीपणाने लइने अने निरंतर यौवनपणाने लइने आ नियम लागु पमतो नथी.

आ शरीरें त्रण माता संबंधी अंगो छे १ मांस, २ रुधिर अने ३ मस्तक—नेजुं. अने त्रण पिता संबंधी अंगो छे, १ अस्थि, २ अस्थिमज्जा अने ३ केश, स्मश्रु, (दाढी) रोम तथा नख.

आ शरीरना अवयवोनी संख्या आ प्रमाणे छे—तेमां प्रथम मनुष्य शरीर माटे कहे छे—मनुष्य शरीरमां पृष्ठ वंशनी ग्रंथिरुप अढार संधिओ छे—एटले वासामां अढार सांधाओ छे. तेओमां बार संधिओमांथी बार पांसळीओ नीकळी बे पासा—पमखाने वीटाइ वक्षस्थलना मध्य न्हागे रहेला हाम्नने लागी पल्लाना आकारपणे परिणमे छे; तथा ते पृष्ठवंशना अवशेष रहेला छ संधिथी छ पांसळीओ नीकळी बे पमखाने वीटाइ हृदयनी बे बाजु वक्षपंजरथी नीचे शिथिल अने कुखनी उपर परस्पर नहीं मळेली रहे छे तेने कटाह कहे छे.' वळी शरीरमां दरेक पांच पांच वामना बे आंतरमां छे; तेमां एक स्थूल छे अने बीजुं सूक्ष्म छे. तेमां जे स्थूल छे, तेनाथी वमीनीति परिणमे छे अने जे सूक्ष्म छे तेनाथी लघुनीति परिणमे छे. आ शरीरमां बे पमखा छे. एक जमणो अने बीजो माबो. तेमां जे जमणुं पमखुं छे, ते दुःखकारी परिणामवाळुं छे अने जे माबुं छे ते सुखकारी परिणामवाळुं छे. वळी आ शरीरमां बीजी एकसो साठ पांसळीओ छे. ते अंगुलीआदि अस्थिना खंमना मेलापना स्थानथी ओलखाय छे. बीजा एकसो सीतेर संखाणिकादिक मर्मस्थान छे. तेमां पुरुषना शरीरे नाभिथी उत्पन्न एवी सातसो नसो छे, तेमां एकसो साठ नस ऊर्ध्वगामिनी छे, ते नाभिथी आरंभीने मस्तक सुधी जाय छे, तेने रसहरणी कहे छे. तेना अनुपघात पणामां कान, चक्षु, घ्राण अने जिह्वानुं बल उल्लसे छे. अने जो तेनो उपघात थाय तो ते कान वगेरेनुं बल क्षीण थाय छे. ते शिवाय एकसो आठ बीजी नसो अधोगामिनी छे. ते पगना तळीआ सुधी रहेली छे, तेनो अनुपघात होय तो ते जंघाना बलने आपनारी छे अने तेनो उपघात थतां मस्तकनी वेदना अने अंधता वगेरे पीडा उत्पन्न करे छे. तेम वळी एकसो साठ बीजी गुदाप्रविष्ट नसो छे, ते नसोना बलथी प्राणीओने वायु, मूत्र अने विष्टा प्रवर्त्ते छे. जो तेनो विघात थाय तो अर्श,

पांडुरोग, मल, मूत्र अने वायुनो निरोध थाय छे. वीजी एकसो सात नसो तिरछी गामिनी छे, ते हस्ततळने स्पर्शेली छे; तेनो उपघात न थाय तो ते नुजाने बल आपनारी छे अने उपघात थवाथी पमखामां के कुखमां वेदना उत्पन्न करेछे. वीजी पचवीश नसो श्लेष्मने धरनारी छे, पचीश पित्तने धारण करनारी छे अने दश शुक्र नामनी सातमी धातुने धरनारी छे. आ प्रकारे नाभिथी उत्पन्न थयेल सातसो नसो पुरुषना शरीरे होय छे, तेनाथी स्त्रीओने त्रीश ओछी होय छे अने नपुंसकने वीश ओछी होय छे.

वली आ शरीरमां नवसो हाम बंधननी नामीओ छे, तेमां चार रसने वहन करनारी धमनी नामीओ छे. दाढी तथा मुंछना केश विना नवाणुं लाख रोमकूप छे अने मुंछ सहित गणतां साडा त्रण कोटी रोमराजी थाय छे. तेमां दाढी, मुछ अने कूर्चना केशोने शिरोरुह कहेवामां आवे छे. मुखमां जे मांसना खंमरुपे जिह्वा रहेली छे ते पोताना दीर्घ अंगुलना प्रमाणे सात आंगळ प्रमाण होय छे अने तेनो तोल मगध देशमां प्रसिद्ध एवा चार पलना मापे चार पलनो छे. चक्षुना वे मांसना गोळा तोलमां बे पल छे. मस्तक हामना खंम रुप चार कपाले करी निष्पन्न थाय छे. ग्रीवानुं प्रमाण चार आंगुलनुं छे. मुखमां अस्थिना खंम रुप दांत प्राये करीने बत्रीश होय छे अने हृदयनी अंतर्वर्ती एवो मांसनो खंड साडात्रण पळनो छे अने वक्षस्थळना अंतरनो गूढ नाग के जे कलेजाना नामथी ओलखाय छे ते पचास पलनुं होय छे.

वळी शरीरमां मूत्र अने रुधिर दरेक आढक प्रमाण छे अने ते सर्वकाले अवस्थित होय छे. चरवीनुं प्रमाण अर्धा आढकनुं छे. मस्तकनुं नेजुं एक प्रस्थ प्रमाण छे अने पुरुपने छ प्रस्थ प्रमाणनुं होय छे. पित्त अने श्लेष्म प्रत्येक एक एक कुरुव प्रमाण अने शुक्र अर्ध कुरुव प्रमाण सर्वदा अवस्थित छे.

आ आढक तथा प्रस्थ वगेरेनुं माप बालक, कुमार अने तरुण वगेरेनुं "दोअसइउ पसइ" इत्यादि क्रमे करीने पोतपोताना हाथने आश्रीने जाणवुं तेने माटे कहुं छेके,—

"दोअसइउ पसई, दोपसइओ सेइआ,
चत्तारि सेइआओ कुलओ, चत्तारि कुलओ पच्छो,

चत्तारि पच्छ आढयं, सुचत्तारि आढयो दोणो" इत्यादि—

धान्यथी भरेलो अवांङ्मुख करेलो हाथ 'असती' कहेवाय छे—आगला सूत्र प्रमाणे तेनो अर्थ जाणवो; एटले बे मूंढा हाथनो एक पसी थाय, बे पसीनो एक सेतिका थाय, चार सेतिकानो एक कुलव, चार कुलनो एक प्रस्थ, चार प्रस्थनो एक आढक अने चार आढकनो द्रोण थाय छे.

आ प्रमाणे कहेला प्रमाणथी शुक्र तथा शोणित वगेरेनुं जे न्यूनाधिकपणुं थाय छे, ते वातादिकना दोषने लइने थाय छे. पुरुषना शरीरमां पांच अने स्त्रीना शरीमां छ कोठा छे. पुरुषने बे कान, बे आंखो, बे नसकोरां, एक मुख, एक गुदा अने एक पुरुष चिह्न, ए नव द्वार प्रवाहने वहन करनारा छे. ए नव सहित बे स्तन वधवाथी स्त्रीने प्रवाहने वहन करनारा अगीयार द्वार छे. आ गणना मनुष्य गतिने आश्रीने जाणवी.

तिर्यंच गतिमां बकरा वगेरे बे स्तनवालाने अगीयार अने चार स्तन वाली गाय प्रमुखने तेर तथा शुकरीने वगेरेने आठ स्तन गणतां सत्तर— आ प्रमाणे व्याघात विना जाणी लेवानुं छे. व्याघात होयतो एक स्तनवाळी अजाने दश, त्रणस्तनवाळी गायने बार,—एम समजवानुं छे.

पुरुषना शरीरमां कुल पांचसो मांसनी पेशीओ छे, तेनाथी स्त्रीओने त्रीश अने नपुंसकने वीश ओछी छे.

आ शरीर अनेक महा रोगोनुं उत्पत्ति स्थान छे, तेने विषे संसारी जीवोना रोगोनी संख्या पांच करोड, अडसठ लाख, नवाणुं हजार अने पांचसो चाळीशनी छे. कह्युं छे के,

पंचेवयकोडीउ लखाअडसट्ठिसहस्सनवनवई
पंचसयाचुलसीई रोगाणहुंतिसंखाउत्ति ॥

अर्थ उपर आवी गयो छे—आ प्रमाणे अस्थि आदिना समूहवाला अने अनेक प्रकारना व्याधिओथी व्याप्त एवा ए शरीरमां शुं शुचि छे? कांइपण छेज नहीं.

७ सातमी आश्रव भावना छे. आ संसारमां जीवो १ मिथ्यात्व, २ अविरति, ३ कषाय अने ४ योग रूप आश्रवे करी समय समय प्रत्ये शुभाशुभ कर्मना

पुद्गलोने जे ग्रहण करे छे. पुण्यात्माओनुं चित्त निरंतर सर्व प्राणीओमां मैत्रीभाव, जे गुणोथी अधिक होय तेमां प्रमोद, जे अविनीत होय ते उपर मध्यस्थता अने जे दुःखीया होय ते उपर करुणा—करवाथी शुभ कर्म बांधेछे अने जे जीवोनुं चित्त आर्तध्यान, रौद्रध्यान, मिथ्यात्व तथा कषाय विषय वगेरे सर्वदा पीडित छे, तेओ अशुभ कर्म बांधे छे—इत्यादि जे चिंतवन, ते आश्रवभावना कहेवाय छे तेने माटे आ प्रमाणे कहेलुं छे—

" मिच्छत्ता विरइ कसाय–जोग दारेहिं जेहिं अणुसमयं ।
इह कम्मपुग्गलाणं गहणं ते आसवा हुंति " ॥ १ ॥

ते गाथानो भावार्थ उपर आवी गयो छे—आठमी संवर भावना नीचे प्रमाणे—

उपर कहेल मिथ्यात्वादिकना आश्रवोने सम्यक्त्वादिकथी जे निरोध करवो, ते संवर कहेवाय छे—ते देशथी अने सर्वथी—ए बे प्रकारनो छे. तेमां सर्वथी संवरतो अयोगी केवलीनेज होय छे अने देशथी संवर एक, बे त्रण आश्रवना निरोधीने होय छे, ते संवर प्रत्येक द्रव्य अने भावथी बे प्रकारनो थाय छे. आत्माने विषे थता आश्रवथी कर्मना पुद्गलोने जे ग्रहण करवापणुं, तेने सर्वथी अथवा देशथी छेदवुं ते द्रव्य संवर कहेवाय छे अने जे भवहेतुक सर्व क्रियानो त्याग करवो ते भाव संवर कहेवाय छे. एवा स्वरूपना आश्रवना विरोधी संवरनुं जे चिंतवन करवुं, ते संवर भावना कहेवाय छे, तेने माटे आ प्रमाणे कहेलुं छे.

" आसवदारपिहाणं सम्मत्ताईहिं संवरो नेओ ।
पिहियासवो हि जीवो सुतरिव्व तरेइ भवजलहिंति " १

आश्रवद्वारनुं सम्यक्त्वादिवडे जे आछादान करवुं, ते संवर कहेवाय छे, ते संवरथी सर्व जीवो सारा वाहाणनी पेठे आ संसार समुद्रने तरे छे. "

नवमी निर्जरा भावना छे.—आ संसारमां पूर्वे बांधेला कर्मोने तपवडे जे बालवा, ते निर्जरा कहेवाय छे. जे कर्म बंधाता होय तेने विषे संवर अने पूर्वे बांधेला कर्मोने विषे निर्जरा ए तेमनी वच्चे भेद छे. ते निर्जरा बे प्रकारे छे—सकाम अने अकाम. तेमां जे सकाम निर्जरा छे ते बाह्य अने आभ्यंतर—एवा प्रत्येक तपना

ब भेदथी बार प्रकारनी थाय छे. ते भेद प्रथम यति धर्मना अधिकारमां कहेला छे तेथी आ प्रसंगे आपवामां आव्या नथी.

आ बार प्रकारनी निर्जरा विरति परिणामवाळाने होय छे; एटले विरति-परिणामी कर्मक्षयने माटे पोतानी अभिलाषाथी सकाम निर्जरा करे छे. अने जे विरति परिणामथी रहित छे, अने ते शिवाय बाकीना मनुष्य प्राणीओ छे, तेमने अभिलाष रहित शीत, उष्ण, क्षुधा, तृषा आदि सहन करवाथी अकाम निर्जरा थाय छे.—आवी निर्जरानुं जे चिंतवन, ते निर्जरा भावना कहेवाय छे. तेने माटे आ प्रमाणे कहेलुं छे.

" कम्माण पुराणाणं निक्कंतणं निज्जरा डुवालसहा।
विरयाण सा सकामा तहा अकामा अविरयाणं तु" ॥१॥

आ गाथानो अर्थ उपर आवी गयो छे. दशमी लोकस्वरूप भावना छे. आ लोकना मध्य भागमां चतुर्दश रज्जु प्रमाण लोक विद्यमान छे. कटी उपर राखेला छे बे हाथ जेणे अने तिर्छा प्रसारेला छे बे चरण जेणे एवा पुरुषना आकार जेवो आ लोक छे अथवा अधोमुख करेल मोटा शरावनी उपर रहेल जे लघु शराव, तेना संपुटना जेवी तेनी आकृति छे. कहेवानुं तात्पर्य ए छे के, सात रज्जुना विस्तारथी नीचे लोकना तळीयाथी उंचे थोडुं थोडुं संकोचता तीर्छा लोक एक रज्जु विस्तारवाळो छे. ते पछी ऊर्ध्व भागे अनुक्रमे विस्तारने पामतो ब्रह्मदेवलोकने त्रीजे पाथडे पांच रज्जु विस्तारवाळो छे. ते पछी थोडेथोडे संक्षेपने भजतो सर्व उपरना लोकाग्र प्रदेशने प्रतरे एक रज्जु विस्तारवाळो छे, ए रीते यथोक्त संस्थानवाळो लोक छे. ते लोकने विषे धर्मास्तिकायादि ब द्रव्यो छे.

१ स्वभावथी गतिपरिणत जीव अने पुद्गलोनो मत्स्य अने जलनी जेम जे उपष्टंभकारी संबंध ते धर्मास्तिकाय कहेवाय छे.

२ वटेमार्गुने छायानी जेम तेनी स्थितिमां जे उपष्टंभकारी, ते अधर्मास्तिकाय कहेवाय छे.

३ पूर्वोक्त बंने द्रव्यो प्रदेशथी अने प्रमाणथी लोकाकाशतुल्य छे; तेमज तेमने गति अने स्थितिमां प्रवर्त्ततां अवकाश आपवाथी जे अवगाहन धर्मवाळो छे, ते

आकाशास्तिकाय कहेवाय छे.

४ जे चेतना लक्षणवाळो, कर्मनो कर्त्ता तथा भोक्ता अने जीवनधर्मी छे, ते जीवास्तिकाय कहेवाय छे.

५ जे पृथ्वी, पर्वत आदि समस्त वस्तुओनुं परिणामी कारण अने पूरण गलन धर्मवाळो, ते पुद्गलास्तिकाय कहेवाय छे.

६ जे वर्त्तना लक्षणवाळो, नवीन पुद्गलिक वस्तुने जीर्ण करनार, तथा समयक्षेत्र (अढी द्वीप) अंतर्वर्त्ती छे ते काळ द्रव्य कहेवाय छे.

आ छ द्रव्यमां एक पुद्गल द्रव्य मूर्त्त छे अने बाकीना पांच द्रव्य अमूर्त्त छे. तेमज एक जीव द्रव्यने वर्जीने बीजां सर्व द्रव्य अचेतन छे; मात्र जीव द्रव्यज सचेतन छे.

अहीं प्रश्न थाय छे के असंख्याता प्रदेशमय लोकाकाशमां अनंतानंत जीव द्रव्यो तथा तेथी अनंत गुण अधिक पुद्गल द्रव्यो शी रीते रहेता हशे? तेमने संकडाश केम न थाय ?

आ शंकाना उत्तरमां कहेवानुं के, जीव द्रव्योनुं अमूर्त्तपणुं छे तेथी तेमां संकीर्णपणुं थतुं नथी अने पुद्गलोनुं मूर्त्तपणुं छे. दीपकनी प्रजाना दृष्टांते करी तेवा परिणामनी विचित्रताथी एकज आकाशना प्रदेश उपर अनंतानंत परमाणवादि पुद्गल द्रव्यो असंकीर्णपणे प्रवेश करे छे; तोपछी ते असंख्याता प्रदेशनुं कहेवुंज शुं ? अर्थात् तेमां समाइ जाय, तेमां शुं आश्चर्य ? तेथी तेमां कोइ जातनो दोष आवतो नथी, ते विषे श्री अनयदेव सूरिजीए श्री जगवतीनी टीकामां तेरमा शतकना चोथा उद्देशमां कहेलुं छे—

" आगासत्थिकाएण " ॥ इत्यादि ।

" जीव द्रव्योनुं अने अजीव द्रव्योनुं भाजनभूत आकाशास्तिकाय छे. "

एथी तेमणे आ प्रमाणे कह्युं के, आकाश जीवोनुं तथा अजीवोने अवगाहन आपनार छे केमके विस्तारवाळुं छे. ते पछी आकाशनुं भाजनपणुं देखाडता थका कहे छे—

" एगेणवि " इत्यादि ।

एक परमाणु आदिके करीने आकाशास्तिकायनो प्रदेश पूर्ण कहेवाय छे; बे परमाण्वादिके करी पूर्ण अने शतसहस्रादिके करीने पण पूर्ण छे, एम जणाय छे ! एम केम कहेवाय ?

तेना उत्तरमां कहे छे के, ते परिणामना भेदथी कही शकाय छे. जेम ओरडानो आकाश एक दीवानी प्रजापटलथी पूराय छे, तेम बीजा दीवानो प्रकाश पण त्यां समाइ जाय छे, यावत् एकसो दीवापण तेमां समाइ जाय छे. तेमज औषध विशेषना एकठापणाथी एक पारो खेंचवामां सो सोनामोहर पेशी जाय छे पछी ते पारो अने कर्षीकृत औषधना सामर्थ्यथी पारानी कणी अने सुवर्णना सैकडो कर्ष पृथक् थइ जाय छे, कारण के पुद्गलोना परिणामनुं विचित्रपणुं छे.

वळी लोकप्रकाश ग्रंथमां पण कह्युं छे के औषधना सामर्थ्यथी पारानी एक कणीमां सुवर्णनी सो कणी नांखीए तोपण तोलमां कर्षथी अधिक न थाय, वळी औषधना सामर्थ्यथी ते बंने जुदा जुदा थइ जाय छे—सुवर्णना कर्षक सो अने पारानो एक कर्ष ए प्रमाणे थाय छे.

अहीं वळी ऊर्ध्व, अधो अने तीर्छो लोकनुं स्वरूप ग्रंथांतरथी जाणी लेवुं—आ प्रमाणे लोकनुं स्वरूप चिंतववुं, ते लोक स्वभाव भावना कहेवाय छे, तेने माटे कह्युं छे के.

" अहमुहयरुमल्लयठिअ लहु मल्लयजुयलसंठिअंलोगं ।
धम्माइ पंच दव्वेहिं पूरिअं मणसि चिंतिज्जेति " ॥१॥

अर्थ. नीचे मुखवाळा मोटा सरावळांनी पेठे रहेला तथा नाना सरावळांना संपुटनी पेठे (ऊर्ध्व भागमां) रहेला तथा धर्मास्तिकायादि पांच द्रव्योवडे परिपूर्ण एवा आ लोकनुं मनने विषे चिंतवन करवुं.

अगीआरमी बोधि दुर्लभ भावना छे. अनंतानंत काले पंचेंद्रियपणुं दुर्लभ छे तेमां पण मनुष्यभवादि सामग्री दुर्लभ छे, तेनो योग थतां पण प्राणीओने परम विशुध्धि करनार सर्वज्ञे दर्शावेल तत्त्वज्ञान रुपी बोधि (सम्यक्त्व) पामे करीने घणुं दुर्लभ छे, जो ते एकवार पण प्राप्त थयेल होय तो प्राणीओने आटला समय सुधी आ संसारनुं पर्यटन होय नहीं. " इत्यादि जे चिंतवन ते

बोधि दुर्लभ भावना कहेवाय छे—

तेने माटे आ प्रमाणे कहेलुं छे—

" पंचिंदियत्तणाइ, सामग्गीसंभवेपि अइदुलहा ।

तत्तावबोहरूवा बोहि सुही जीअस्सजओत्ति " ॥ १ ॥

आ गाथानो अर्थ उपर आवी गयो छे.

बारमी धर्मकथक अर्हन् भावना कहेवाय छे. आ संसारमां वीतरागपणे करीने सर्वदा परकार्य करवाने सावधान एवा अने निर्मल केवलज्ञानरूप चक्षुए-थी जेमणे सर्व लोकालोक अवलोक्यों छे एवा श्री अरिहंत विना यति अने श्रावकनो निर्मल—सद्भूत धर्म कहेवाने बीजो कोइ समर्थ नथी. कुतीर्थिओना कहेला कुवचनो अज्ञान मूल होवाथी पूर्वापर विरुद्ध अने हिंसादिक दोषोथी दूषित छे, तेथी ते वचनो प्रत्यक्ष असद्भूतज छेः तेमज तेमना कोइ वचनमां दया सत्य वगेरेनुं कांइक पोषण देखाय छे, ते फकत वचन मात्रज छे, पण तत्त्व-थी नथीज; ते माटे तत्त्वथी शुध्ध स्वरूपने धरनारी अने सकल जगतना जंतुओ-ने तारनारी श्रीमद् अरिहंत प्रभुनी वाणीनुं केटलुं विवेचन करीए! जो कोइ पण रीते ते वाणीनुं एक पण वाक्य कर्णगोचर थयुं होय तो ते रोहिणीया चोरनी पेठे प्राणीने महान् उपकार करनारुं थाय छे. " आ प्रकारनुं जे चिंतवन ते बारमी धर्मकथक भावना कहेवाय छे.

तेने माटे आ प्रमाणे कहेलुं छे—

" धम्मो जिणेहिं निरवद्दिजवयारपरेहिं सुट्ठु पणत्तो ।

समणाणं समणोवा—सयाण दसहा दुवालसहा" ॥१॥

आ गाथानो अर्थ उपर आवी गयो छे.

रौहिणेय चोरनी कथा.

राजगृह नगरमां श्रेणिक नामे राजा हतो. तेने सर्व बुध्धिओनो निधान रुप अभयकुमार नामे पुत्र थयो हतो. ते नगरनी समीपे वैभारगिरि नामे एक पर्वत हतो. तेनी एक गुफामां लोहखुर नामे एक घातकी चोर रहेतो हतो. ते राजगृही नगरीना लोकोना द्रव्य अने स्त्री वगे पोताना काम अने अर्थ अनायासे साधतो हतो अने तेमांज पोतानो काळ निर्गमन करतो हतो. ते लोहखुर चोरने

रोहिणी नामे एक स्त्रीना उदरथी रौहिणेय नामे पुत्र थयो हतो.' ते पण पितानी जेम घणोज घातकी थयो हतो.

एक वखते लोहखुर मरण पथारीए पड्यो, एटले तेणे पोताना पुत्र रौहिणेयने बोलावीने कह्युं, "वत्स, जो तुं तारुं हित इच्छतो हो तो मारी शिक्षा सांभळ—"जे आ त्रण गढ देखाय छे तेमां महावीर नामे एक महात्मा छे, तेओ कोमळ वचन बोले छे, ते वचन उत्तरकाळे दारुण होवाथी तारे कदिपण सांभळवा नहीं." आ प्रमाणे शीखामण आपी ते लोहखुर चोरे पोताना प्राणनो त्याग करी दीधो. ते पछी रौहिणेय ते पिताना वचनने संभारतो नित्य चोरी करतो हतो.

एक वखते श्रीवीर परमात्मा ते स्थळे समोसर्या. देवताओए ते स्थळे समवसरण रच्युं. ते वखते भव्य जीवोने धर्मनी देशना आपवानो प्रभुए आरंभ कर्यो—ते वखते चोर रौहिणेय राजगृह नगरमां चोरी करवा जतां ते समवसरणनी पासे आवी चड्यो. ते वखते तेने याद आव्युं के, जो हुं आ मार्गे जइश तो वीरभगवान्नी वाणी संभळाइ जशे अने अहिं जवानो बीजो मार्ग छे नहीं. हवे शुं करवुं ? अथवा एवो खेद करवाथी सर्युं. हुं कानमां आंगळीओ नांखीने चाल्यो जाउं. पछी ते कानमां आंगळी नांखी उतावळे पगले चाल्यो; तेवामां तेना पगमां कांटो वाग्यो. एटले ते आगळ एक पगलुं भरवाने पण समर्थ थयो नहीं. पछी कानमांथी एक आंगळी जुदी करी तेवमे कांटो काढवा लाग्यो, तेवामां अंतरना शल्यने शोधनारी अने देवस्वरूपने वर्णन करनारी श्री वीरप्रभुनी वाणी तेना कानमां आ प्रमाणे सांभळवामां आवी—

" अणिमिस नयणा मणकज्ज साहणा पुप्फदाम अमिलाणा ।
चउरंगुलेण भूमिं न च्छिविंति सुरा जिणा विंति " ॥ १ ॥

जेमना नेत्रो मीचाता नथी, जेओ मनथी चिंतित एवा कार्यना करनारा छे, जेमनी पुष्पमाला करमाती नथी अने जेओ भूमिथी चार आंगळ उंचा रहे छे, एवा देवताओ होय छे." १

आ प्रमाणे जिनेश्वरे कह्युं ते रौहिणेय चोरना सांभळवामां आव्युं. तत्काल तेणे चिंतव्युं के, अरे ! मारा सांभळवामां घणुं आवी गयुं—आम कही

चिंतातुर थतो ते चोर कांटो काढी पाछो कानमां आंगळी नांखतो ते राजगृह नगरमां चाल्यो गयो अने त्या पोतानी इच्छा प्रमाणे चोरी करी पाछो पर्वतनी गुफामां पेशी गयो. परंतु पेली जे प्रभुनी वाणी तेणे सांभळी लीधी छे, तेने माटे ते निरंतर चित्तमां खेद पाम्या करतो हतो. ते हमेशां गुप्त रीते राजगृही नगरीने लुंट्या करतो अने लोकोने रंजाडतो हतो.

चोरनी पीडाथी कंटाली गयेला लोकोए राजा श्रेणिकनी आगळ फरीआद करी अने पोताना दुःखो निवेदन कर्या. राजाए मधुर वचनोथी लोकोने आश्वासन आप्युं. पछी तेणे कोटवालने बोलावीने कह्युं, " कोटवाल, तमे आखा नगरने हेरान करनारा चोरने पकडी लोकोनी रक्षा केम करवा नथी ? कोटवाले कह्युं, "राजन, रौहिणेय, नामे एक चोर थयो छे, पण ते घणी मुस्केली वडे पकडाय तेवो छे, तेने पकडवा माटे अमे घणा उपायो योजीए छीए, पण ते पकडातो नथी; महाराजा, जो आप पोते तलारक्ष बनो तो वखते पकडाशे. " कोटवालना आ वचनो सांभळी राजा श्रेणिके पोताना पुत्र अने प्रधान अभयकुमारनी सामे जोयुं. एटले अभयकुमार अंजलि जोडी बोल्यो—" पिताजी, हुं सात दिवसनी अंदर ते चोरने पकडी लावीश. जो सात दिवसनी अंदर तेम न बने तो तमारे मने ते चोरनी जेम शिक्षा करवी. " अभयकुमारे आवी ज्यारे प्रतिज्ञा करी; ते सांभळी सर्व सभा अने राजा आश्चर्य पामी गया.

पछी अभयकुमारे भारे प्रयत्नथी ते चोरनी शोध करवा मांडी, पण कोइ रीते ते चोरनो पत्तो लाग्यो नहीं. एवी रीते छ दिवस वीती जवा लाग्या. छठे दिवसे संध्याकाले लोकोना कोलाहलने शांत करी ते गढनी बाहेर केटलाएक सुभटोने तेणे गोठवी दीधा. पेलो रौहिणेय चोर केटलाएक अपशुकनोए तेने अटकाव्यो छतां पण ते कर्मने वशः थइ नगरीमां चोरी करवाने पेठो; जेवामां तेणे कोइ धनवान्ना घरनुं खातर पाडवा मांडयुं, तेवामां पगी लोकोए मळी एक मोटी हांक मारी तेने त्रास पमाडयो, तेथी ते त्यांथी नाशी नगरीना किल्ला उपर आव्यो. तेने उंचो चडी किल्ला उपरथी बाहेर पडतो सुभटोए पकडी लीधो. प्रातःकाले सुभटोए तेने अभयकुमारने सोंपी दीधो. अभयकुमार तेने राजा पासे लइ गयो. चोरेला द्रव्य साथे पकडेला ते चोरने जोइ राजाए पुछ्युं, तुं कोण छे ? चोर बोल्यो " राजन्, हुं शालिग्रामनो रहेवासी अने दुर्गचंद नामे राजाने जमे

भरनारो खेडुत छुं. हुं मारुं कांइक काम करी रात्रे मारा गाम तरफ जतो हतो तेवामां तमारा सुभटोए मने वीहराव्यो, एटले कील्लो ठेकी बाहेर पडतां सुभटोए मने चोर जाणी पकडी लीधो. हे शुद्ध विचक्षण राजा, विचार करो. जो हुं चोर होउंतो मने खुशीथी शिक्षा आपो; अने जो मने मारवाथी अभयकुमार जीवे तो तेम करो." तेना आवां वचन सांभळी राजाए दृढ बंधनथी छोडाव्या पछी तेनी खात्री करवाने माटे पोताना सेवकोने शालिग्राममां मोकल्या. रौहिणेय चोर एटलोबधो लुच्चो हतो के, तेणे प्रथमथी शालिग्रामना लोकोनी साथे संकेत करी राख्यो हतो अने तेमनी साथे ते चोरे ठराव करेलो के, तेणे कदि पण शालिग्राममां चोरी करवी नहीं अने ते गामने मदद आपवी; आथी ते लोको तेनी सर्व वात मान्य करता हता. राजा श्रेणिकना सुभटोए शालिग्राममां आवी त्यांना लोकोने पुछ्युं के, आ गाममां कोइ दुर्गचंद्र नामे खेडुत रहे छे ? ते गामना लोक के जेओ तेना संकेत प्रमाणे वर्त्तनारा हता, तेओ बोल्या,—"हा, ते खरी वात छे. दुर्गचंद्र आ गामनो रहेवासी छे ते गइ काले नगर तरफ गयो छे, ते हजु सुधी आव्यो नथी; अमे सर्वे तेनो वृत्तांत जाणवाने आतुर थइ रहेला छीए."

ते लोकोना आ वचनो सांभळी ते सुभटोए श्रेणिक राजाने ते वृत्तांत जणाव्यो, ते वखते राजाए विचार्युं के "आहा ! आ केवी वात कहेवाय ? अभयकुमार मृत्युना भयथी सरल हृदयना एक गामडीआने चोर ठरावे छे." राजाना मुखना चेहेरा उपरथी अभयकुमार समजी गयो अने तत्काल तेणे विचार्युं के, आ चोरनुं कांइ पण कपट छे, ते कोइपण रीते खुल्लुं करवुं जोइए. आम विचारतां ते चतुर प्रधानना हृदयमां बुद्धि स्फुरी आवी. तेणे एक देव विमान जेवो सुंदर मेहेल रचाव्यो. ते मेहेलनी अंदर सात भूमिकाओ रची. अनेक प्रकारना चंदरवा अने मोतीओना तोरणोथी तेने अलंकृत कर्यो. रंभासमान स्वरूपवाळी स्त्रीओ अने देवतुल्य स्वरूपवाला पुरुषो तेमां स्थापित कर्या. पछी अभयकुमारे पेला रौहिणेय चोरने बोलावीने कह्युं. "भाइ, मारा जेवा मूर्ख माणसने धिक्कार हो. तमे तो कोइ भक्ति करवा लायक पुरुष छो. तमोने में अतिशय हेरान कर्या. ते क्षमा करो. हवे एकवार आ मारा मेहेलमां आवो, जेथी हुं त्यां तमारी भक्ति करी मारा अपराधने दूर करुं."

अभयकुमारना आवां कपट भरेलां वचनोनो मर्म ते चोरना समजवामां आव्यो नहीं. तत्काल ते तेनी साथे मेहेलमां गयो; त्यां तेने प्रथम मिष्ट आहार आपी तृप्त कर्यो. पछी कपटी अभयकुमारे तेने मदिरापान करावी उंची जातना दिव्य वस्त्रो पेहेरावी एक सुंदर पलंग उपर सुवाड्यो—ते चोर ते दिव्यमंदिरमां रही जाणे पोते स्वर्गमां रह्यो होय तेम मानवा लाग्यो. शयन कर्या पछी ते जागृत थयो, एटले अभयकुमारनी आज्ञाथी केटलाएक सामंतो अने नरनारीओनो समूह त्यां हाजर रहेल, ते 'जय जय नंदा' इत्यादि मांगलिक शब्दोनो उच्चार करतां तेना सांभळवामां आव्या. आ देखाव जोइ ते मदिराथी मत्त थयेलो चोर पोताना आत्माने भुली गयो. पेला हाजर रहेला लोको तेनी पासे आवी आ प्रमाणे केहेवा लाग्या—" भद्र, पूर्वना सुकृत्यवडे तमे आ स्वर्गना विमानमां प्रगट थइ तेना स्वामी थया छो अने आ अमे सर्वे तमारा सेवक छीए." आ प्रमाणे कही तेमणे नाटक करवानो आरंभ कर्यो. ते पछी अभयकुमारनी सूचनाथी जेना हाथमां एक सुवर्णदंड रहेलो छे एवो एक पुरुष आव्यो; तेणे आवी नाटक करनाराओने कह्युं के, " हाल नाटक बंध करो, हुं आ देवने तेमनी देव स्थितिनुं भान करावुं." आ प्रमाणे कही तेणे रौहिणेयने कह्युं 'हे नवा देव, पोताना पूर्वोपार्जित एवा जे तमारा पुण्य अने पाप होय ते निवेदन करो अने ते पछी सुख भोगवो." ते पुरुषना आ वचनो सांभळी ते रौहिणेय विचारमां पड्यो. "शुं आ साचुं स्वर्ग हशे? अथवा मारे माटे अभयकुमारे प्रपंच तो नहीं रच्यो होय?" आ प्रमाणे चिंतवी ते धीर बुद्धिवाला चोरे कंटक काढती वेलाए सांभळेली देवना स्वरूपना वर्णनवाळी प्रभुनी वाणी (अणिमिसनयणा इत्यादि) संभारी तत्काल तेणे पोतानी आगल रहेला लोकोने पृथ्वी उपर लागेला चरणवाला, करमाएला पुष्पोनी मालाने धरनारा, मटका मारता नेत्रोवाला अने मनोभीष्ट साधनमां असमर्थ एवा जोइ श्री वीरपरमात्माना वचनो साथे तेमनो विरोध जोइ अभयकुमारे करेला कपटने जाणी लीधुं." आ वखते पेलो दंडधारी पुरुष बोल्यो. " देव, शो विचार करो छो? आ बधो देवलोक पोतपोतानी भक्ति देखाडवाने उत्कंठित छे; तेथी तमारो जे शुध्ध वृत्तांत होय ते सत्वर निवेदन करो." आ वखते ते रोहिणेय बोल्यो—" जिनपूजा, साधुसेवा, दयापालन, सुपात्रदान अने चैत्य निर्मापन आदि उत्तम धर्मकार्यो में पूर्व भवे करेला छे." ते दं-

रुधर बोल्यो—" हे देव, प्राणीओनो जन्म एक स्वभावे करीने थतो नथी तेथी तमे जेम पुण्यनुं वर्णन कर्युं, तेम तमारा पापनुं वर्णन पण करो. चोरी, स्त्रीलोलुपता अने बीजा जे कांइ नठारां पाप कर्मो कर्यां होय ते निःशंकपणे कहो."

रौहिणेय बोल्यो—" अहा! दिव्यज्ञानने धारण करनारा एवा तमोने आवो मतिभ्रम शो थयो छे? साधुओनी सेवा करनारा श्रावको शुं एवा खराब काम करे? तेम छतां जो तेओ एवा काम करे तो पछी तेमने आवो स्वर्गवास केम प्राप्त थाय? तेथी मेंतो जरा पण पाप कर्म कर्युं नथी, शा माटे वारंवार पुछो छो?"

आ वखते अभयकुमार के जे छुपो रही आ वृत्तांत सांभळतो हतो ते पोताना मनमां ते चोरनी बुद्धिनी भारे प्रशंसा करवा लाग्यो. क्षणवार पछी ते चोरनी समीपे आव्यो अने ते रौहिणेयने आलिंगन करी आ प्रमाणे बोल्यो —" हे वीर, हुं आज सुधी कोइनाथी जीतायो नथी, पण एक ताराथी जीताइ गयो छुं; हुं तने निग्रह करी शक्यो नहीं, ए मोटामां मोटुं आश्चर्य छे" आ प्रमाणे अभयकुमारे प्रेमपूर्वक कह्युं, एटले ते रौहिणेय चोर आ प्रमाणे बोल्यो—" हे राजकुमार, हुं श्री वीरवाक्यने हृदयमां धारण करतो हतो, तेथी तमाराथी पकडायो नहीं, तेथी तेमां कांइ पण आश्चर्य पामवा जेवुं नथी; पण तमोए मने मद्यपान करावी स्वर्गनी प्राप्ति करावी ए मोटा आश्चर्यनी वार्त्ता." रौहिणेयना आ वचनो सांभळी अभयकुमार बोल्यो—" भाइ तुं मारा कहेवाथी लज्जा पामीश नही अने मने कहे के तारा जेवा चोरने श्री वीरप्रभुनी वाणी शी रीते कर्णगोचर थइ?" अभयकुमारे आ प्रमाणे स्नेहपूर्वक पुछ्युं, एटले ते चोरे पोतानी कथा आदिथी अंतसुधी कही संभळावी. अने विशेषमां जणाव्युं के जो में ए जगद्गुरुनी वाणी न सांभळी होततो हुं आजे तमाराथी छळाइ जात अने तेथी शी शी विटंबना पामत ते कही शकातुं नथी; जे प्रभुनी एटली अल्पवाणी पण प्राणीओने कष्ट निवारक थाय छे, तो ते प्रभुनुं सर्व आगम सांभळवाथी अक्षय सुखनी प्राप्ति थाय, एमां शुं आश्चर्य? हुं तो मारा पितारुप शत्रुथी ठगायो हतो, तेथी ते वखते कर्णगोचर थयेली श्री वीरवाणीने शल्यतुल्य मानतो हतो पण अत्यारे ते वाणीए मने जीवितदान आपेलुं छे. हे राजकुमार, हवे में इत्यादि चोरेल छे, ते तमने बतावी हुं श्री वीरप्रभुनी पासे व्रत ग्रहण

करवा इच्छा राखुं छुं.

ते पछी अभयकुमारे ते रौहिणेय चोरने राजानी पासे लावी आ प्रमाणे कह्युं, " स्वामी, आ चोर पोतानी चोरी मानी जाय छे. " तत्काल राजाए तेने वध करवानो आदेश कर्यो एटले अभयकुमारे कह्युं, " पिताजी, जो आपणे आ-चोरने छोडी दइए तो ते चोरेलुं सर्व धन पाछुं आपशे; ते शिवाय ते द्रव्य आ-पणाथी ग्रहण करी शकाय तेम नथी; वळी में आ चोरने बंधु करीने पकड्यो छे, बुद्धिए करीने पकड्यो नथी. तेमज आ चोरनुं हृदय वैराग्यथी वासित थयेलुं छे, तेथी ते अहींथी मुक्त थइ दीक्षा ग्रहण करवाने इच्छे छे; तेथी आ चोर वध करवाने योग्य नथी. " अभयकुमारना आ वचनो उपरथी राजाए तेने छोड्यो, एटले तेणे सर्व धन बताव्युं. पछी राजाए नगरजनोने एकठा करी जेनुं जे हतुं, तेने ते धन आपी दीधुं. ते पछी श्रेणिक राजाए जेनो दीक्षा महोत्सव करेलो छे अने जेणे धन, वैभव, स्त्री अने परिवारनो त्याग करेलो छे एवा रौहिणेय चोरे श्री वीरपरमात्मानी पासे दीक्षा ग्रहण करी. ते वखते नगरजनोए तेनी भारे स्तुति करी हती.

रौहिणेय चोर मुनिव्रत धारण करी पोताना दुराचारनी शुद्धिने माटे अनेक प्रकारना तप तपी अने भवपर्यंत शुद्ध धर्म आराधी अंते अनशन करी ते देवपदने प्राप्त थयो हतो. आ प्रमाणे भगवंतनी वाणीना प्रभावने दर्शावनारी रौहिणेय चोरनी कथा कहेवामां आवी.

ए रीते बार भावनानुं स्वरूप लक्षमां राखी भव्य जीवोए तेना आराधन-ने विषे तत्पर थवुं जोइए.

बार प्रतिमानुं संक्षिप्त स्वरूप.

पेहेली प्रतिमा एक मासनी कहेवाय छे; बीजी बे मासनी, त्रीजी त्रण मासनी, चोथी चार मासनी, पांचमी पांच मासनी, छठी छ मासनी अने सात-मी सात मासनी प्रतिमा छे. आठमी नवमी अने दशमी ए त्रण सात अहो रात्रिनी छे. अगीयारमी एक अहो रात्रिनी अने बारमी एक रात्रिनी छे—एवी रीते भिक्षु—साधुनी प्रतिज्ञा रुप—बार प्रतिमा थाय छे, तेओमां पेहेली प्रतिमा अ-न्नपानना अव्यवछिन्न दानरुप होवाथी एक दत्ती कहेवाय छे. तेवी रीते बीजी

बे दत्ती, त्रीजी त्रण दत्ती—एम सातमी सात दत्ती सुधी गणाय छे. सात अहो-रात्रना प्रमाणवाळी आठमी प्रतिमाने विषे जल रहित एकांतर उपवासे रही पारणाने दिवसे आंबिल करवामां आवे छे. अहीं दत्तीनो नियम नथी. वळी तेमां ग्रामादिकनी बाहेर ऊर्ध्व मुखे शयनादि आसने रही घोर उपसर्गो सहन करवाना छे. नवमी प्रतिमामां पण तेज प्रमाणे उत्कटादि आसने रहेवुं पडे छे. दशमी प्रतिमामां पण एवीज रीते रहेवानुं छे पण गोदोहासन–गाय दोहोवानुं आसन करवानुं छे. अगीआरमी प्रतिमामां पण एमज वर्त्तवानुं छे परंतु तेमां जल रहित छठ करी लांबी भुजावडे रहेवानुं छे.

बारमी प्रतिमामां उपर प्रमाणे छे, परंतु तेमां जल रहित त्रण उपवास करी एक पुद्गलव्याप्त निमेष रहित दृष्टि राखी अने लांबी भुजा करी रहेवानुं छे. एनो अंगीकार करनार १ वज्र ऋषभ नाराच, २ ऋषभनाराच, अने ३ अर्ध नाराचमांथी हरेक कोइ संघयण युक्त होय छे. जघन्यथी नवमा पूर्वनी त्रीजी वस्तु सुधी अने उत्कृष्टथी कांइक उणा दश पूर्व सुधी सूत्रार्थ अधिगत होय छे. तेमज १ तप, २ सूत्र, ३ शक्ति, ४ एकत्व अने ५ बले करी प्रतिमा अंगीकार करनारने ए पांच प्रकारनी तुलनावडे परिकर्म—अभ्यासथी पेहेलाज भावितात्मा थइ जवाय छे.

ते परिकर्मनुं परिमाण आ प्रमाणे छे—मासिक आदि सात प्रतिमाने विषे जेटला प्रमाणनी प्रतिमा छे, तेटला प्रमाणे करी ते परिकर्म होय छे. तेम वर्षाऋतुमां ए प्रतिमा अंगीकार करातीनथी अने परिकर्म पण कराता नथी. प्रथमनी बे प्रतिमा एकज वर्षमां थाय छे. त्रीजी तथा चोथी एक एक वर्षमां होय छे. बीजी त्रण अन्यत्र बीजे वर्षे अने परिकर्म पण अन्यत्र—बीजे वर्षे थाय छे.

ते प्रतिमानी प्रतिपत्ति आ प्रमाणे छे—नव वर्षे करीने पेहेली सात प्रतिमा समाप्त कराय छे, आठमी आदि त्रण प्रतिमाओ एकवीश दिवसे समाप्त कराय छे अने अगीआरमी त्रण दिवसे प्राप्त थाय छे, अने ते अहो रात्रिने अंते छठ करवाथी बने छे अने बारमी प्रतिमा रात्रि पछी अनंतर अठम करवाथी थाय छे अने चार रात दिवसना प्रमाणवाळी छे. अहीं बीजुं घणुं कहेवानुं छे, पण ग्रंथ विस्तारना भयथी कहेवामां आव्युं नथी. ते प्रवचन सारोद्धार ग्रंथमांथी जाणी लेवुं.

आ प्रमाणे संक्षेपथी भिक्षुकनी वार प्रतिमानुं स्वरूप कहेवामां आव्युं छे.

अहो रात्रिनुं संक्षिप्त कृत्य.

" शुद्धाचारः साधुः श्रीजिनवचनानुसारतो नित्यम् ।
कुर्यात् क्रमेण सम्यक् स्वस्याहोरात्र कृत्यानि " ॥ १ ॥

" शुद्ध आचारवाळा साधुए हंमेशा श्री जिनवचनने अनुसारे अनुक्रमे पोताना अहोरात्रिना कृत्यो सम्यक् प्रकारे करवा. " १

कृत्यनो क्रम.

साधुए रात्रिना पाछला पोहोरे जाग्रत थइ मंदस्वरे करी सूत्र तथा अर्थना परावर्त्तन रुप स्वाध्याय करवो. जेथी आसपास रहेला आरंभी लोको जाग्रत न थाय. ते पछी ज्यारे ते पोहोरनो चोथो अंश बाकी रहे त्यारे छ प्रकारना आवश्यक करवा एटले प्रतिक्रमण करवुं. त्यार बाद उत्कट आसने रही शरीरना परिभोग्य मुहपत्ति आदि उपकरणोनी विधि पूर्वक पडिलेहणा करवी. ते पडिलेहणानी समाप्ति वखते सूर्योदय थाय त्यारे उपाश्रयने प्रमार्जे. ते पछी वंदना पूर्वक आचार्यादिकने पुछी तेमनी आज्ञावडे वैयावच्च तथा सझाय ध्यान करे. पण ते पोतानी बुद्धिए न करे. तेने माटे कह्युं छे के " छठ, अठम, चार, पांच, मास, अर्ध मास, अने मासखमण तेने विषे जे गुरु वचनने अनुसारे न करे तेने अनंत संसारी कहेला छे जेम के,

" छट्टम दशम डुवालसेहिं, मासद्धमासखमणेहिं ।
अकरंता गुरुवयणंअणंतसंसारिआ भणिआ " ॥१॥

ते पछी कांइक उणी पोरिसि वखते वेशी मुहपत्ती पडीलेही पछी पात्रादिक उपकरणानी पडिलेहणा करे. त्यार बाद बीजी पोरसीमां पूर्वे ग्रहण करेला श्रुतना अर्थनुं स्मरण करे. ते पछी ज्यारे भिक्षाकाल प्राप्त थाय एटले आगममा कहेल विधि प्रमाणे गुरुनी आज्ञा ग्रहण करी " आवस्सही " वडे उपाश्रयथी नीकली भिक्षाकालना समयमां एटले उत्सर्गथी त्रीजी पोरिसीरुप निमेला वखतमां अथवा " कालेकालं समायरे " ए आगमना वचन प्रमाणे जे देशमां के जे गाममां लोको ज्यारे भोजन करता होय ते देशमां ते वखते स्थविर कल्पीओने भिक्षानो काळ जाणी लेवो.

ते पछी साधु व्याक्षेपतां, आकुलता, अने शठताए रहित थइ युगमात्र दृष्टि राखी, पाछल अने पडखे उपयोग राखी एक गृहथी बीजे गृह भिक्षा माटे जमे, अने तेम जमीने बेतालीश दोषे रहित एवी भिक्षा ग्रहण करे. त्यांथी पाछो फरी " निस्सिहि " पूर्वक उपाश्रयमा प्रवेश करी इरियावही पडिक्कमी विधि पूर्वक ते अशनादि गुरुने बतावी पछी पच्चखाण पारी, गृहस्थनी दृष्टि न पडे तेवा प्रकाशवाला स्थानमां रही क्षुधानी वेदना उपशमाववा माटे १ वैयावच्च, २ इर्यानी शुद्धि, ३ सत्तर प्रकारे संयमनुं पालन, ४ प्राण धारण, ५ सझाय ध्यानादि अने ६ धर्म चिंताने माटे भोजन करे. ते भोजन समये सुरासुरादि पांच दोषने वर्जे. तेने माटे आ प्रमाणे कहेलुं छे—

"[1]असुरसुरं १ अचवचयं, २ अदुअ ३ मविलंवियं ४ अपरिसाडिं ५ मणवयणकायंगुत्तो भुंजे अहपक्खिवणसोही " ॥ १ ॥

ए पांच मांडलाना दोषने वर्जे. ते पछी मुनिए मात्रा करवानुं पात्र प्रक्षालन करवुं. तथा सझाय ध्यान अने वैयावच्चादि कार्य करी ते पछी चोथे पोहोरे मुखवस्त्रिका पडिलेही गुरुना अने पोताना उपकरणोनी पडिलेहणा करवी. ते पछी ज्यारे सूर्य अर्ध बिंबरुपे रहे त्यारे गुरुनी समक्ष प्रतिक्रमण करवुं ते पछी एक प्रहर पर्यंत श्रुतपरावृत्तिरुप स्वाध्याय ध्यान करवा. ते पछी तेज प्रहरनो चोथो भाग बाकी रहे त्यारे उच्चार प्रश्रवणना स्थंडिलो (मांडला) करवा. ते पछी सूत्र तथा अर्थने संभारवा. त्यार बाद ज्यारे निद्रानो समय आवे त्यारे गुरुनी आज्ञा ग्रहण करवा पूर्वक पृथ्वी उपर संथारो पडिलेही चैत्यवंदन पूर्वक रात्रिना संथारानी गाथा (संथारा पोरिसी) भणी अने रजोहरणने जमणी बाजु मुकी स्वल्प निद्रा करवी. अति निद्रावश न थवुं.

आ प्रमाणे संक्षेपथी अहोरात्रना कृत्यो बताव्या छे, विस्तारथी ते साधु संबंधी अधिकार ग्रंथांतरथी जाणी लेवो.

मुनिओ अनेक गुणोना आधार रुप छे, ते वात दर्शावे छे—

" निच्चमचंचलनयणा । पसंतवयणा परिद्धगुणरयणा ।
जियमयणा मिउवयणा सव्वत्थविसन्निहिअ जयणा ॥१॥

---

[1] भोजन वखते सुर सुर शब्द न करवो (२) अचवच शब्द न करवो (३) उतावलु न जमवु (४) अति विलंबपणे न जमवु (५) भोज्य पदार्थ वेरवा नहिं

इरियासमिइपमुहे, नियसुद्धायारसेवणे निउणा ।
जे सुयनिहिणो समणा तेहिं इमा भूसिया पुहवी" ॥२॥

" जेओ नेत्रोनी चंचलताथी रहित छे, जेमना मुख शांत छे, जेमना गुणरत्न प्रसिद्ध छे, जेओ कामना जितनारा छे, जेमना वचन कोमळ छे जेमनी नजीक सर्व प्रकारे यतना छे, जेओ इर्या समिति प्रमुख पोताना शुध्द आचारने सेववामां निपुण छे, अने जेओ श्रुतना निधान रुप छे, एवा मुनिओथी आ पृथ्वी विभूषित छे. १—२

सिध्धांतोक्त साधु गुणवर्णन.

" जाइसंपन्ना, कुलसंपन्ना, बलसंपन्ना, रूवसंपन्ना विणय संपन्ना, णाणसंपन्ना, दंसणसंपन्ना, चरित्तसंपन्ना, लज्जासंपन्ना, लाघवसंपन्ना, मिउमद्दवसंपन्ना, पगइभद्दया, पगइविणीया, ओयंसि, तेयंसि, वच्चंसि, जसंसि, जियकोहा, जियमाणा, जियमाया, जियलोहा, जियणिद्दा, जितेंद्रिया, जियपरिसहा, जिवियासमरणभयविप्पमुक्का, उग्गतवा, घोर तवा, दित्ततवा, घोरबंभचेरवासिणो, बहुसुया, पंचसमिईहिंसमिआ, तिहिं गुत्तीहिं गुत्ता, अकिंचणा, निम्ममा, निरहंकारा, पुक्खरंव अलेवा, संखोइव निरंजणा, गयणंव निरासया, वाउव्व अप्पडिबध्धा, कुम्मो इव गुत्तेंदिया, विहंगुव्व विप्पमुक्का, भारंडव्व अपमत्ता, धरणिव्व सव्वंसहा, किं बहुणा ! एगंतपरोवरायनिरया, जिणवयणोवदेसण कुसला, जावकुत्तियावणभूयाएरिसा जिणाणाराहगा समणा भगवंतो नियचरणेहिं महीयलं पवित्तयंतो विहरंतित्ति " ॥

" जाति, कुल, बल, रूप, विनय, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, लज्जा, लाघ-

व अने मृदु मार्दवता, ए सर्वने पामेला, प्रकृतिवडे ऋजुक, प्रकृतिवडे विनीत, पराक्रमी, तेजस्वी, वाणीनी सुंदरतावाला, यशस्वी, क्रोध, मान, माया अने लोभने जितनारा, निद्राने, इंद्रियोने अने परिषहोने जितनारा, जीवितनी आशा तथा मरणना भयथी रहित, उग्र तपस्वी, घोर तपस्वी, दीप्त तपस्वी, घोर ब्रह्मचर्यना धारक, बहुश्रुत, पांच सुमतिवडे सुमत, त्रण गुप्तिवडे गुप्त, निष्परिग्रही, निरहंकारी, कमलनी जेम निर्लेप, शंखनी जेम निरंजन, आकाशनी जेम निराश्रय, वायुनी जेम प्रतिबंध रहित, काचवानी जेम गुप्तेंद्रिय, पक्षीनी पेठे विप्रमुक्त, भारंडनी जेम प्रमाद रहित, पृथ्वीनी जेम सर्वने सहन करनारा, जिनवचननो उपदेश करवामां कुशल, एकांते परोपकार करवामां तत्पर, विशेष शुं कहेवुं ? पण तेओ [1]कुत्रिकापण जेवा छे, एवा जिनेश्वरनी आज्ञाना आराधक, श्रमण—तपस्वी मुनिओ पोताना चरणवडे आ पृथ्वीतळने पवित्र करता विचरे छे."

आवा साधुजन प्रमुख उत्तम पुरुषोने आराधन करवा योग्य एवा सर्वोत्तम धर्मनी दुर्लभता दर्शावे छे—

" जह चिंतामणि रयणं सुलहं न होइ तुच्छविहवाणं ।
गुणविहववज्जियाणं जियाण तह धम्मरयणंमि " ॥१॥

" पशुपालनी पेठे तुछ वैभववाला अने थोडा पुण्यवाला जीवोने जेम चिंतामणि रत्न सुलभ होय नहीं, तेम सम्यक्त्वादि गुण रुप वैभवथी रहित एवा जीवोने धर्म रत्न सुलभ होतुं नथी. तेतो जयदेव कुमारनी जेम जे अतुल गुणवान् होय छे तेने मणिनी खाण रुप एवी मनुष्य गतिमां चिंतामणि तुल्य उत्तम धर्मने पामे छे." १

पशुपाल अने जयदेवनुं दृष्टांत.

हस्तिनापुर नगरमां नागदेव नामे एक शेठ रहेतो हतो. तेने वसुंधरा नामे एक स्त्रीना उदरथी जयदेव नामे एक पुत्र उत्पन्न थयो. ते जयदेवे बार वर्ष सुधी रत्ननी परीक्षानो अभ्यास कर्यो हतो, आथी शास्त्रने अनुसारे ते चिंतामणिने महान् प्रभाववालुं जाणी बाकीना रत्नोने पाषाण तुल्य समजतो हतो; आथी ते चिंतामणि रत्न उपार्जन करवा माटे आखा हस्तिनापुरमां दरेक दुकाने अने घेर घेर फर्यो. तोपण कोइ स्थले तेने चिंतामणि रत्न मळ्युं नहीं. आथी

[1] शास्त्रमां कहेल देवताधिष्ठित दुकाननी जेवा—अर्थात् जेमनी पासेथी जे जोइए ते मळी शके तेवा.

खेद पामी तेणे पोताना मातापिताने कह्युं. " हे पूज्य, मारुं चित्त चिंतामणि रत्नने माटे लागेलुं छे; में घणी शोध करी पण ते रत्न अहीं प्राप्त थयुं नहीं, तेथी जो आज्ञा आपोतो हुं अहींथी बीजे स्थले जाउं. " माता पिता बोल्या " वत्स, ए चिंतामणिनी तो कल्पना छे, परमार्थथी चिंतामणि रत्न छेज नहीं, माटे तुं तारी इछा प्रमाणे बीजा रत्नोनो वेपार कर्य. " आ प्रमाणे कही तेमणे जयदेवने घणो अटकाव्यो, तथापि जेणे चिंतामणि रत्न मेळववानो निश्चय करेलो छे एवो ते हस्तिनापुर नगरमांथी नीकली गयो. घणा नगर, गाम, खीण, कर्बट, पाटण अने समुद्र तीरे गवेषणा करतो ते अतिशय फरवा लाग्यो पण कोइ ठेकाणे तेने चिंतामणि रत्न प्राप्त थयुं नहीं. आथी ते खेदातुर थइ आ प्रमाणे चिंतववा लाग्यो—" शुं चिंतामणि रत्ननी वात सत्य नहीं होय ? कोइ पण ठेकाणे ते देखातुं नथी अथवा ते मणि शास्त्रमां दर्शावेल छे, एटले तेनुं अस्तित्व न होय, ते केम संभवे? शास्त्रनुं वचन अन्यथा होय नहीं. तेथी कोइ ठेकाणे ए रत्नो हशेज. " आ प्रमाणे चिंतवी पाछो ते मणिनी खाणोमां फरी तेनी शोध करवा लाग्यो. तेवामां कोइ एक वृध्ध पुरुष तेने मळी आव्यो, तेणे जयदेवने कह्युं, "अहीं एक मणिनी मोटी खाण छे, ते खाणमांथी पुण्यवंत पुरुषो चिंतामणि रत्नने प्राप्त करी शके छे. " वृध्ध पुरुषना आवां वचनो सांभळी जयदेवे ते खाणमां चिंतामणि रत्ननी गवेषणा करवामांडी; तेवामां एक मंदबुध्धि पशुपालना हाथमां वर्तुलाकार पथ्थर जोवामां आव्यो. शास्त्रमां कहेला लक्षणोथी तेने चिंतामणि जाणी जयदेवे तेनी पासे तेनी मागणी करी. पशुपाल बोल्यो—" तारे आ वस्तुनुं शुं काम छे ? जयदेव बोल्यो—" हुं आ वस्तु घेर जइ बालकोने रमवा आपीश. " पशुपाले कह्युं, " आवी वस्तुतो अही घणी छे, तुं पोतानी मेळे ते शा माटे लइ लेतो नथी ? " जयदेवे कह्युं, " अत्यारे घेर जवानी मने भारे उत्कंठा थइ छे माटे मने सत्वर आप, एटले हुं मारे घेर चालतो थाउं. तने आ स्थले बीजा आवा पदार्थों मळशे. " आवा जयदेवना वचनो सांभळीने पण ते पशुपाल परोपकारशील न होवाथी पीगळ्यो नहीं अने तेने ते रत्न आप्युं नहीं. पछी जयदेवे उपकार बुद्धिथी तेने आ प्रमाणे कह्युं, " भद्र, जो तारे मने आ रत्न न आपवुं होय तो तुं तेनी आराधना कर. ए चिंतामणि रत्न छे तेनी आराधना करवाथी ते तने वांछित फळ आपशे. " पशुपाल बोल्यो—" जो आ

साचुं चिंतामणि रत्न होय तो ते मने बदरीना चितवेला फल तथा कचकर्मा शीघ्र आपो." पशुपालना आ वचनो सांजली जयदेव हसीने बोल्यो—"अरे पशुपाल, एम चिंतववाथी कांइ मलतुं नथी, पण प्रथम तेनी आराधना करवी जोइए. पेहेला त्रण उपवास करी संध्याकाले ते रत्नने शुद्ध जले न्हवरावी, शुध्ध भूमिना उंचा प्रदेशमां स्थापी तेनी चंदन, कपूर तथा पुष्पादिकवडे पूजा करी पछी नमस्कार करी ए रत्ननी आगल पछी जे इष्ट होय, तेनुं चिंतवन करवुं, तो पछी प्रातःकाले ते प्राप्त थाय छे."

जयदेवना आ वचन सांजळी ते पशुपाल पोताना बकरां अने मेंढाना वृंदने वाळी गाम तरफ चाल्यो. "निश्चे आ मणि आ हीन पुण्यना हाथमां रहेशे नहीं" एम धारतो जयदेव पण तेनी पाछल चालवा लाग्यो. मार्गे चालतां पशुपाल ते मणिने उद्देशीने बोल्यो—"अरे मणि, हुं आ बकरां वेची तेवमें चंदनादि सामग्री लावी तारी पूजा करीश अने तारे पण मारा चिंतितकार्य साधवामां पूर्ण उद्यम करवो. वळी हे मणि, हजु अहींथी गाम दूर छे, तेथी रस्तामां कांइ कथा कहे तो रस्तो खूटशे. जो कदि कोइ कथा तारा जाणवामां न होय तो हुं कहुं छुं, ते सांजल—

"कोइएक एक हाथना प्रमाणवाळुं देवगृह छे, तेनी अंदर चार भुजावाळो देव छे." आ प्रमाणे तेणे वारंवार कहेवा मांडयुं, तोपण ते मणि कांइ पण बोल्यो नहीं, त्यारे ते रोषातुर थइ आ प्रमाणे बोल्यो. "अरे मणि, तुं मारी वातमां होंकारो पण आपतो नथी, तो पछी वांछित आपवामां तारी शी आशा राखवी ? अथवा तारुं नाम चिंतामणि छे, ते बराबर छे, कारण के तारी प्राप्तिथी मारा मननी चिंता नाश पामती नथी. जे हुं छाश विना एक क्षणमात्र पण रही शकतो नथी ते हुं तारे माटे कराता त्रण उपवास करी मरणज पामुं, एमां शक नथी. एथी हुं तो एम मानुं छुं के, आ वणिके मने मारवाने माटेज तारुं वर्णन करेलुं छे, तेथी तुं चाल्यो जा. फरीवार मारी दृष्टि गोचर थइश नहीं," आ प्रमाणे कही ते पशुपाले मणिने फेंकी दीधो. आ वखते आनंदित थयेला जयदेवे तत्काल ते चिंतामणिने प्रणामपूर्वक ग्रहण करी अने पोताना मनोरथ पूर्ण थयेला जाणी पोताना नगर तरफ चाल्यो. मार्गमा चालतां महापुर नामे एक नगर आव्युं. मणिना प्रजावथी ते नगरमां लक्ष्मीनो समूह तेने प्राप्त

थइ आव्यो. ते समये ते नगरना सुबुद्धि नामना शेठे पोतानी पुत्री रत्नवतीने तेनी साथे परणावी. पछी जयदेव ते कन्या तथा बहु परिवार सहित पोताना वतन हस्तिनापुरमां आव्यो अने तेणे पोताना मातापिताना चरणमां वंदना करी. पोताना पुत्रने आवो समृद्धिमान् जोइ ते माता पिता आनंदित थइ तेनी वारे प्रशंसा करवा लाग्या. स्वजनोए जयदेवनुं बहु सन्मान कर्युं अने बीजा लोको तेनी स्तुति करवा लाग्या. अने जयदेव यावज्जीवित सुखी थयो हतो. आ प्रमाणे धर्म रत्ननी प्राप्तिमां जयदेव अने पशुपालनो वृत्तांत कहेवाय छे; ते उपनय रुपे जाणवो. एवी रीते प्रसंगे प्राप्त थयेल्ल ग्रहस्थाश्रित एवुं सर्वविरतिनुं स्वरूप कहेलुं छे.

" इत्थं स्वरूपं परमात्मरूप–निरूपकं चित्रगुणं पवित्रम् ।
सुसाधुधर्मं परिग्रह्य भव्या भजंतु दिव्यं सुखमक्षयं च" १

" आवा स्वरूपवाला, परमात्मरूपने निरुपण करनारा, विचित्रगुणवाला, अने पवित्र एवा उत्तम साधु धर्मने ग्रहण करी भव्य प्राणीओ दिव्य अने अक्षय सुखने भजो. " १

" प्राक्तन सद्ग्रंथानां पद्धतिमाश्रित्य वर्णितोऽत्रमया ।
साध्वाचारविचारः शुद्धो निज आत्मशुद्धिकृते " ॥२॥

पूर्वना सद्ग्रंथोनी पद्धतिने आश्री मारा पोताना आत्मानी शुद्धिने माटे में अहिं शुद्ध एवो साधुनो आचार वर्णन करेलो छे. " २

ए प्रकारे श्रीमान् वृहत् खरतर गच्छना अधिराज श्री जिनभक्तसूरींद्रना चरणाराधक श्री जिनलाभसूरिए रचेला आ आत्मप्रबोध ग्रंथनो संक्षिप्त सर्व विरति नामनो त्रीजो प्रकाश संपूर्ण थयो.



अथ चतुर्थ प्रकाश.

परमात्म स्वरूप.





अनुक्रमे आवेला आ चोथा परमात्म प्रकाशनो आरंज करवामां आवे छे. प्रथम परमात्मताना बे प्रकार छे. १ जवस्थ परमात्मता अने २ सिध्धस्थ परमात्मता.

ते परमात्मतानी प्राप्तिने सूचवनारी बे आर्याओ आ प्रमाणे छे—

" क्षपकश्रेण्यारूढः कृत्वा घनघातिकर्मणां नाशम् ।
आत्मा केवलजूत्या जवस्थपरमात्मतां जजते ॥ १ ॥
तदनुजवोपग्राहक–कर्मसमूहं समूलमुन्मूल्य ।
ऋजुगत्या लोकाग्रं प्राप्तोऽसौ सिध्धपरमात्मा" ॥ २ ॥

क्षपक श्रेणी उपर आरुढ थयेलो आत्मा ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय अने अंतराय—ए चार कर्म के जे आत्मगुणना घातक होवाथी घनघाती कहेवाय छे, तेनो नाश करी लोकालोकने प्रकाश करनार केवलज्ञाननी संपत्ति प्राप्त करी ते वमे जवस्थ एवा परमात्मपणाने पामे छे. " १

ते पछी ते आत्मा तत्काल काले करीने एटले चौदमा गुणठाणाना छेल्ला समयमां जवोपग्राही एटले वेदनीय, आयु, नाम अने गोत्र रुप चार कर्म जे भव पर्यंत स्थायी छे, ते कर्मना समूहने मूलमांथी उखेमी नांखी ऋजुगति एटले समयांतर के प्रदेशांतरनो स्पर्श न करीने लोकाग्र—सिध्धि स्थानने प्राप्त करी सिध्ध परमात्मपणाने पामे छे. २

अहीं भवस्थ परमात्मतानी स्थितिनुं मान जघन्यथी अंतर्मुहूर्त्तनुं छे अने उत्कृष्टथी देशे ऊणी एवी पूर्व कोटि वर्षनुं छे अने सिध्ध परमात्मतानी स्थितिनुं मान सादि अपर्यवसित काळनुं छे. एवा प्रकारनी परमात्मता जेने होय छे ते परमात्मा कहेवाय छे.

ते परमात्मा भवस्थ केवळी अने सिध्ध एवा बे प्रकारे छे. तेमां प्रथम भवस्थ केवलीनुं स्वरूप बतावे छे.

भवस्थ केवलीनुं स्वरूप.

भवस्थ केवलीना पण १ जिन अने २ अजिन एवा बे भेद छे. तेमां जे जिन नामकर्म उदयवाळा तीर्थंकर ते जिन कहेवाय छे अने जे सामान्य केवली ते अजिन कहेवाय छे. ते जिन १ नाम जिन, २ स्थापना जिन, ३ द्रव्य जिन अने ४ भाव जिन—एम चार प्रकारे छे. ते विषे आ प्रमाणे कह्युं छे—

" नामजिणाजिणनामा ठवणजिणा पुणजिणंदपडिमाओ।
दव्वजिणाजिणजीवा भावजिणा समवसरणत्था" ॥१॥

जे श्री ऋषभ, अजित अने संभव वगेरे जिनो छे ते नाम जिन कहेवाय छे. ते नाम जिन साक्षात् जिनगुण, वर्जित छे, तोपण परमात्मगुणनुं स्मरण वगेरे कारणने लइने परमार्थपणे सिध्धिने करनार होवाथी सम्यग् दृष्टि पुरुषोए ते सर्व काळे स्मरण करवा योग्य छे जेम लोकने विषे पण मंत्राक्षरना स्मरणथी कार्यनी सिध्धि देखाय छे.

रत्न, सुवर्ण, रजत, आदि धातुमय एवी कृत्रिम तथा अकृत्रिम जे जिनेश्वरनी प्रतिमा ते स्थापना जिन कहेवाय छे, तेने विषे पण जो के साक्षात् जिनगुण विद्यमान नथी तोपण तेमां तात्त्विक जिन स्वरूपनुं स्मरण थवाने लीधे तेना दर्शन करनार सम्यग्दृष्टि जीवोना चित्तमां परमशांत रसनुं उत्पादक होवाथी अने अबोधी जनने उत्तम बोधिबीजनी प्राप्तिनुं हेतु होवाथी तेमज श्री केवली भगवानना वचनवडे तेमां जिनतुल्यपणुं होवाथी शुध्ध मार्गानुसारी श्रावकोने द्रव्य अने भावथी सर्वकाळे शंका रहितपणे ते स्थापना जिन वंदनीय, पूजनीय अने

स्तवनीय छे. अने मुनिओने सर्व सावद्य योगनी निवृत्ति होवाथी तेमनी भावपूजा करवी योग्य छे ते विषे आगमने विषे प्रतिपादन करेलुं छे.

केटलाएक सांप्रतकाले बुद्धिहीन, श्री वीरप्रभुनी परंपरानी बाहेर वर्तनारा, मिथ्यात्वना उदयथी पराभव पामेला, स्वमति कल्पित अर्थने स्थापनारा अने श्री जिनेश्वरे प्ररूपेला स्याद्वाद–अनेकांत मार्गने लोपनारा लोकोए कुदृष्टिनो विलास प्रगट करेलो छे; ते लोको जैनाभास एटले जैन लक्षण रहित छतां जैनना जेवो आभास बतावनारा छे. तेओ श्री परम गुरु–तीर्थंकरना वचनोने उथ्थापनारा होवाथी अनंत भव भ्रमणना भयने अवगणी पोते ग्रहण करेला असत्पक्षने सिद्ध करवा माटे भोळा लोकोनी आगळ उत्सूत्र प्ररूपणा करे छे. तेओ कहे छे के, " स्थापनाजिन ज्ञानादि गुणोथी शून्य होवाथी वंदना करवा योग्य नथी, तेमने वंदना करवाथी सम्यक्त्वनो नाश थाय छे. आगमने विषे पण तेमने वंदना करवानो अधिकार कह्यो नथी. आधुनिक लोकोए पोतानुं माहात्म्य प्रगट करवाने माटे जिनचैत्यनी स्थापना करेली छे. "

वळी तेओ कहे छे के, "जिनबिंबनी पूजा वगेरे करवामां साक्षात् जीवहिंसा देखाय छे अने ज्यां जीवहिंसा होय त्यां धर्म होयज नहीं. कारण के, धर्म तो दया मूळज कह्यो छे, तेथी पोताना सम्यक्त्वनुं अक्षयपणे रक्षण करवाने इच्छनारा प्राणीओने तो श्री जिन प्रतिमानुं दर्शन करवुं पण अयुक्त छे. "

अहा ! केवी अज्ञानता छे ! पूर्वजोने संतुष्ट करवा माटे पीपळा आदि वृक्षोना मूळमां सचित्त जळनुं सिंचन करवा प्रमुख आचरण अने मिथ्यात्वी देवनी पूजा वगेरेमां प्रवर्त्तन—ए करवामां सम्यक्त्वनो नाश थतो नथी. कारण के, संसारीपणाने लइने श्रावकोने एवा कार्यमां अधिकार छे.

आ प्रसंगे सिध्धांतना वचनोने अनुसरी अद्भुत युक्तिथी तेमना असत् पक्षने दूर करवा माटे उत्तररूपे वचनो कहेवामां आवे छे–जे स्थापना जिन छे तेनो जिन स्वरूपने स्मरण कराववा प्रमुख जे तात्त्विक हेतु युक्तिपूर्वक प्रथम कहेवामां आव्यो छे, ते प्रत्यक्षादि प्रमाणवडे सिध्ध थाय छे, तेथी तेमनामां सर्वथा गुणशून्यपणानो अभाव होवाथी तेनामां वंदनादि करवानी योग्यता साबित थाय छे. ते स्थापना जिननुं दर्शन वंदन वगेरे करवाथी तत्काळ शुभ ध्यान प्रगट थतां प्राणीओने सम्यक्त्वनी निर्मळता प्राप्त थाय छे. तेथी ते जैनाभासोए सम्यक्त्वने नाश थवानी जे युक्ति करेली

छे ते सर्वथा मिथ्यात्वनी मूल रुप छे. आ प्रमाणे जाणी सम्यग्दृष्टि जीवोए ते युक्तिने आदर आपवो नहीं. वली जे स्थानकमां चित्रमां आलेखेली स्त्री होय तेवा स्थानकमां साधुओने रहेवानो निषेध आचारांग सूत्रमां कहेलो छे; चितरेली स्त्री साक्षात् स्त्री गुणथी वर्जित छे, छतां आकार मात्रे करी विकार उत्पन्न थवानुं कारणभूत छे. त्यारे जो तेना दर्शनथी विकार उत्पन्न थाय छे तो पछी परम शांत रसवाळी सौम्य आकारने धारण करनारी श्री जिन प्रतिमाना दर्शनथी प्रबुध्ध पुरुषोने उत्तम ध्यान थवानो संभव केम न होय? आवी रीते सद्बुध्धिवाला पुरुषोए विवेकपूर्वक विचार करवो जोइए. ते जैनाभासो कहे छे के, " आगमने विषे जिन चैत्यवंदनादिकनो अधिकार नथी, चैत्य स्थापन ए आधुनिक छे. पूजामां हिंसा थवाथी ते अधर्म छे अने वृक्ष-पींपळा प्रमुखने पाणी पावुं, तथा मिथ्यात्वीओना देवनुं पूजन करवुं, एमां सम्यक्त्वनो विनाश थतो नथी. आ तेमना आलापो उन्मत्त माणसना आलापना जेवा अयुक्त छे. कारण के, आगमने विषे स्थाने स्थाने जिन चैत्यवंदन तथा पूजनादिकना अधिकार छे तेथी स्थापनानुं अने पूजानुं प्राचीनपणुं सिध्धज थाय छे. जो तेमां अधर्मपणुं होय तो आगमने विषे कहेला हित, सुख अने मोक्षादिकना फलनी प्राप्तिमां विरोध आवे. तेम वली तिर्यंच, नरक गति आदि नठारा फल अधर्मना कहेला छे. जे पींपळाने सचित्त जल सिंचन करवुं, ते प्रत्यक्ष जैन धर्मनी श्रध्धानी विरुध्ध होवाथी ते साक्षात् मिथ्यात्वीओनुंज कार्य छे ए प्रसिध्ध छे; कारण के, सम्यक्त्वीओने अन्य देवने वंदनादिक करवामां राजाभियोग आदि आगारने वर्जीने बीजे सर्व स्थले तेनो सर्वथा परिहार करवाने आगममां कहेल छे, तेथी उत्सर्ग मार्गथी अन्य देवनें वंदनादि करवामां सम्यक्त्वनो अवश्य नाश थाय छे. उपर कहेला अर्थने प्रतिपादन करनारा श्री ज्ञाताधर्मकथा सूत्रना केटलाएक वचनो आ प्रमाणे छे—

१ "तएणं सा दोवई रायवरकन्नगा एहाया कय बलिकम्मा कयकोउय मंगलपायछित्ता सुध्धपावेसाइं मंगलाइं वच्छाइं पवरपरिहिया मज्जणघराउ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव

१ द्रौपदी—द्रुपद राजानी पुत्री—पांडवोनी पत्नीए जिन प्रतिमानी पूजा केवा प्रकारोथी करी तेनो अधिकार छे.

जिणहरे तेणेव उवागच्छईश्त्ता जिणहरं अणुपविस्सइ आलोए पणामं करेइ लोमहत्थयं परामुसइ एवं जहा सूरिआन्ने जिणपडिमाउ अच्चेइ तहेव न्नणिअव्वं जावधूवं रुहइ वामं जाणुं अच्चेइ दाहिणजाणुं धरणीतलंसि निहट्टु तिख्कुत्तो मुध्धानं धरणीतलंसि निअंसेइ ईसिं पच्चुन्नमइ करयलजावकट्टु एवं वयासी नमुत्थुणं अरिहंताणं जावसंपत्ताणं वंदइ नमंसइ जिणहराउ पडिनिस्कमइत्ति ॥

वळी रायपसेणी सूत्रमां पण आ प्रमाणे कहेलुं छे—

[२]" तएणं से सुरिआन्ने देवे पोत्थयरयणं गिण्हत्तिश्त्ता पोत्थयरयणं वाएत्तिश्त्ता धम्मियं ववसायं पगिण्हत्तिश्त्ता पोत्थयरयणं पमिनिख्कमंतिश्त्ता सिंहासणाओ अब्भुट्ठेइश्त्ता ववसायसन्नाउ पुरित्थमल्लदारेणं पमिनिख्कमइश्त्ता जेणेव णंदा पुख्करणि तेणेव उवागच्छइश्त्ता णंदा पुख्करणीए पुरत्थिमल्लेणं दारेणं तिसोपाण पमिरूवेणं पच्चोरुहइश्त्ता तत्थ हत्थपादं पख्कालेइश्त्ता आयते चोख्के परमसुइन्नूए एगं सेयं महं रययामइं विमलसलिलं पुण्णं मत्तगयमुहागिइसमाणं भिंगारं पगिण्हंत्तिश्त्ता जाइं तत्थउप्पलाइं जाव सयपत्ताइं सहसपत्ताइं ताइं गिण्हंत्तिश्त्ता णंदाउ पुख्करणीओ पच्चोरुहइश्त्ता जेणे व सिध्धायतणे तेणेव पहारत्थगमणाए इत्यादि जाव बहु हिय देवेहिंअ देवीहिय सध्धिं संपरिवुमे सव्वध्धीए जाव वाइयरवेणं जेणेव सिद्धायतणे तेणे व उवागछइ सिध्धायतणं पुरित्थिमल्लेणं

२ सूर्याभदेवे देवलोकमां जिन प्रतिमानी केवा केवा द्रव्य अने भावमय प्रकारोवडे पूजा करी तेनो अधिकार छे.

दारेणं अणुपविसइ२त्ता जेणेव देवच्छंदए जेणेव जिणपमिमा तेणेव उवागच्छइ जिणपमिमाणं आलोए पणामं करेइ२त्ता लोमहत्थगं गिएहइ२त्ता परामुसइ२त्ता लोमहत्थगं जिणपमिमाओ लोमहत्थेणं पमज्जइ२त्ता जिणपमिमाओ सुरहिणा गंधोदएण एहाणेइ२त्ता सरसेणं गोसीस चंदणेणं गायाइं अणुलिंपइ२त्ता जिणपमिमाणं अहियाइं देवदूसजुयलाइं निअंसेइ २त्ता अग्गेहिंवरेहिं गंधेहिं अच्चइ२त्ता पुप्फारुहणं मल्लारुहणं वन्नारुहणं चुण्णारुहणं वत्थारुहणं आभरणारुहणं करेइ२त्ता आसत्तो सत्त विउल वग्घारिअमल्लदाम कलावं करेइ२त्ता जावक-रग्गह गहिअ करयलपब्भट्ठ विप्पमुक्केणं दसद्धवणे कुसुमेणं मुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं करेइ२त्ता जिणपमिमाणं पुरओ अत्थेहिं संण्हेहिं अत्थरसा तंडुलेहिं अट्ठमंगले आलिहइ तं सोत्थियामएहिं १ सिरिवच्छ २ सुह्निअनंदिआवत्त ३ वद्धमाण ४ वरकलस ५ भद्दासण ६ मच्छयुगल ७ दप्पण ८ तयाणंतरं चणं चंदप्पभ रयण वइर वेरुलिय विमलदंडं कंचणमणिरयण भत्तिचित्तं कालागुरु पवर कुंडरुक्क तरुक्क धूव मघमघंतगंधुत्तमाणुविद्धं धूमवट्टिं विणिम्मुयंतं वेरुलियमयं कडुच्छुअं पग्गहिअं पयत्ते धूवं दाऊण जिणवराणं अट्ठसयविसुद्ध गंधजुत्तेहिं महावित्तेहिं अत्थजुत्तेहिं अपुणरुत्तेहिं संथुणइ२त्ता सत्तट्ठपयाहिं ओसरइ२त्ता वामंजाणुं अंचेइ२त्ता दाहिणजाणुं धरणितलंसि निहट्टु तिखुत्तो मुद्धाणं धरणीतलं निवामेइ ईसिं पच्चूण्णमइ२त्ता करयलपरिगाहिअं सिरसावत्तं दसनहं मत्थ अंजलिं कट्ट एवं वयासि नमुत्थुणं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं

तिकट्टु वंदइ नमंसइति ॥

तेवी रीते जीवाभिगम उपांगने विषे पण विजयदेवना संबंधमां विजयदेवने नामे आ प्रमाणे आलाव कहेलो छे; ते ते स्थलेथी जाणी लेवुं. एवी रीतना घणा आलावानी अंदर सम्यक्त्ववंत देव तथा मनुष्ये करेली पूजानो अधिकार साक्षात् जोवामां आवे छे छतां ते वातनी ना कहेवा सम्यक्त्व धारीओए शक्तिमान् थवुं, ए तद्दन अयोग्य छे. विवेकी पुरुषोए ते विचारी लेवानुं छे.

वली आ अधिकारने विषे जैनाभास लोको पोते मिथ्यादृष्टि होइ बीजाओने मिथ्यादृष्टि तरीके जोवाथी सम्यक्त्ववती द्रौपदीने पण मिथ्यादृष्टि कहे छे अने सिद्धायतन तथा जिनगृह ए शब्दना मूल अर्थने उलटावे छे अने तेने स्थाने कामदेव यक्ष वगेरेना देहरानो अर्थ प्ररूपे छे, ए केटलुं अयोग्य कहेवाय? तेने माटे एटलुं कहेवानुं के, जो द्रौपदीए मिथ्यादृष्टिपणाने लइने कामदेव यक्षनी पूजा करी होय तेमज सूर्याभ प्रमुख देवे यक्षादिकनी पूजा करी होय तो ते द्रव्य पूजाने अंते "नमुथ्थुणं अरिहंताणं" इत्यादि शक्रस्तव न जाणे; कारण के, शक्रस्तव कह्यानो पाठ आगमने विषे साक्षात् देखाय छे; ते छतां ए जैनाभासो निन्हव रूपे खोटुं बोलवाने केम समर्थ थाय छे? वली वैमानिक देवताओ पोताथी हीन पुण्यवाला एवा यक्षादिकनी पूजा केम करे? अर्थात् नज करे. तेम वली जो द्रौपदी श्राविका न होततो नारद आवतां अभ्युत्थान प्रमुख करत पण जे तेणीए कर्युं नथी तेथी निश्चे ते श्राविकाज हती एम सिद्ध थाय छे. वली श्राविका विना तेणीने 'नमुथ्थुणं' (शक्रस्तव) नी विधिनुं परिज्ञान पण न संभवे, ए पंडितोए विचारी लेवुं. वली ते जैनाभासो कहे छे के, "सूर्याभ देवे पोतानी राजधानीना मंगलिकने माटे जिन प्रतिमा पूजी छे," तेने माटे सूत्रमां एवा प्रकारनो पाठज नथी परंतु तेनी करेली पूजाने आश्रीने—

"हियाए, सुहाए, खेमाए, निस्सेयहिए, अणुगामियत्ताए भविस्सइ"

ए पाठ विद्यमान छे अने त्यां निःश्रेयस शब्द मोक्षवाची छे, ते सर्व

शास्त्रोमां प्रसिद्ध छे. वळी श्री अरिहंतना वचनमां पण अनुक्रमे पूजानुं फल मोक्ष प्ररुपेलुं छे, ते जाणीने पछी स्वेछावादीओना वितथ वचनो उपर केम विश्वास रहे ?

तेमज पूजाने आश्रीने ते जैनाभासो कहे छे के. "भगवंते हिंसानो तदन निषेध कर्यो छे, तो पछी पूजानुं आचरण केम कराय ? तेना उत्तरमां कहेवानुं के ए वचन कये ठेकाणे कह्युं छे के हिंसा करवी ?' हिंसानो निषेध कर्यो छे, ए वात सत्य छे, परंतु भगवंते कया आगममां जिनपूजा निषेधेली छे ? ते जणावो. आगमने विषेतो उलटुं सत्तर भेदी पूजा करवाने कहेलुं छे अने ते वात कर्त्तव्य रुपे दर्शावेल छे.

श्री प्रश्न व्याकरण सूत्रने विषे पेहेला संवरद्धारमां जे अहिंसा—दयाना साठ नाम आपेला छे, तेमां पूजानुं पण नाम छे. जेम के,

" निव्वाणं १ निव्वुइ २ समाहि ३ संती ४ इत्यादि यावत् जण्णो ४६ आयतणं ४७ जयण ४८ मप्पमाउं ४९ आसासो ५० वीसासो ५१ अभओ ५२ सव्वस्सविअनाघाओ ५३ चोक्ख ५४ पवित्ती ५५ सुइ ५६ पूया ५७ विमल ५८ प्पभासई ५९ निम्मलतरित्ति ६० " एवमाइणि नियय गुणनिम्मियाई पज्जवनामाणिहोंत्ति ॥ अहिंसाए भगवई एति ॥ (इहाऽहिंसानामसु जण्णशब्देन 'पूया' शब्देन च देवपूजा गृहीताऽस्ति).

अहिं दयाना नामने विषे (जण्ण) शब्द तथा (पूया) शब्दे करी देव पूजा ग्रहण करेली छे, कारण के ' यजनं यज्ञः ' इत्यादि व्युत्पत्ति थाय छे. तो हवे तमो जिन पूजाने हिंसामां केम गणो छो ? वळी श्री सूयगडांगजीना बीजा श्रुतस्कंधना बीजा अध्ययनमां अर्थदंडना अधिकारमां कह्युं छे के, " नागहेउं भूयहेउं " इत्यादि पाठमां नाग, भूत यक्षादिकनी हेतु पूजाने विषे हिंसापणुं कहेल छे, पण जिन पूजामां कहेल नथी, कारण के, जो जिन पूजामां हिंसा थती होत तो ते सूत्रमां 'जिणहेउं.' एवो पाठ कहेत, पण तेवो पाठ त्यां आपेलो नथी; तेथी आ प्रमाणे सूत्रना वचन उत्थापन करी तमारुं अंगीकार केम कराय ? वळी ते

जैनाभासो कहे छे के, " जिनपूजाने विषे छ कायना आरंभनो संभव छे तेथी श्रावकोए तेनुं आचरण केम कराय ? " तेना उत्तरमां कहेवानुं के, जैनधर्मनुं अनेकांतपणुं होवाथी सम्यक्त्ववंत पुरुषोने तेवा एकांतपक्षनो आग्रह होतो नथी; कारण के, श्री ज्ञाताधर्मकथा—छठा अंगने विषे त्रण ज्ञानवाळा श्री मल्लिनाथ जिनेश्वरे पोताना छ मित्रोने प्रतिबोध करवा माटे सुवर्णनी पुतळीमां निरंतर कवळनो प्रक्षेप कर्यो छे तथा सुबुद्धि मंत्रीए पोताना स्वामीने प्रतिबोधवा माटे एक खाइना जळनुं परावर्त्तन करावेलुं छे. तेम वळी आगमने विषे घणा हाथी, घोडा, रथ अने पायदळ प्रमुख परिवार सहित कुणिकादिक राजाओए आचरेल जिनवंदनादि महोत्सव स्थाने स्थाने सांभळवामां आवे छे. ए कार्योमां घणी हिंसा थवानो संभव छे, परंतु ते लाभनुं कारण होवाथी तेनी गणना हिंसामां करेली नथी पण ते लाभनुं कारण छे, एम समजवानुं छे.

आ कारणथी एम निश्चय थयो के, श्री जिनाज्ञाने आश्री, सम्यक् यतनाए करी अने भक्तिए करी उत्तम क्रिया करवामा हिंसानो कोइ पण दोष नथी. " ज्यां हिंसा त्यां जिनाज्ञा नथी. " एम जे कहे छे, तेने माटे एटलुंज कहेवानुं के, जो एम होय तो साधुओने प्रतिक्रमण अने विहारादिकने विषे पण जिनाज्ञा न होवी जोइए. कारण के, तेने विषे पण हिंसानो संभव छे; माटे श्रुत व्यवहार एवो छे के, जे लाभने माटे निर्दोष परिणामवडे यतना पूर्वक प्रवर्त्तन छे तेवा प्रसंगे तेवा प्रकारनो कर्मबंध नथी. आ वात श्री भगवतीजीना अढारमा शतकना आठमा उद्देशमां विवेचन करी समजावी छे ते विस्तारथी जाणी लेवी. ते प्रसंगमां दर्शाव्युं छे के, भावितात्मा अनगार युगमात्र[1] दृष्टिवडे जोइ जोइ गमन करतां तेना पग नीचे कुलिग (कुकडा) आदिकनुं बच्चुं मरण पामे तोपण तेमने हिंसाना परिणामनो अभाव होवाथी इरियावही पडिकमवानी क्रिया होय छे परंतु सांपरायिकी क्रिया होती नथी विगेरे ते अधिकारमांज छे.

वळी जे पूजामां पुष्पारंभ देखाय छे, ते उपचारिक छे, परंतु उत्ताम सद्भावे करी ते आरंभनो परिहार थाय छे, तेमज जेम मुनिओने नदी उतरती वखते जळ उपर करुणाना परिणाम होय छे, तेम श्रावकोने जिन पूजामां पुष्पादिक उपर करुणाना परिणाम होय छे. एवी रीते हिंसानुबंधी क्लिष्ट परिणामना अभावे

१ गाडानी धूसरी जेटला प्रमाणवाळी

करी साधुनी जेम श्रावकने पण तेवो दुष्ट कर्मनो बंध थतो नथी.

जेम चाटुं पमेलुं होय, तेना छेदन वखते प्राणीओने वेदनानो संभव छतां अंते महा सुखनी उत्पत्ति थाय छे. तेम पूजाने विषे पण स्वल्प मात्र आरंभ छे छतां परिणामनी शुद्धिने लइने अनुक्रमे परमानंदनी प्राप्ति थाय छे.

अहीं प्रश्न करवामां आवे के, " जो, पूजाथी परिणामनी शुद्धि अने तेथी अनुक्रमे परमानंदनी प्राप्ति थती होय तो साधुओ द्रव्यपूजा केम नथी करता ?"

तेना उत्तरमां कहे छे के, " रोगीओने जेम औषधोपचार महान् उपकारी थाय छे, तेम द्रव्यपूजा आरंभमग्न एवा प्राणीओने महान् उपकारी थाय छे; तेथी ते श्रावकोनेज करवा योग्य छे. सर्वारंभथी मुक्त एवा साधुओने ते द्रव्यपूजा योग्य नथी. जे सर्वथा नीरोगी होय तेने औषध उपकारकारक नथी. एज कारणथी श्री तीर्थंकर भगवाने तेमने अनुकंपा दान करवा वगेरेनी पण आज्ञा आगममां आपेली नथी. वळी दशमा अंगमां (श्री प्रश्न व्याकरण सूत्रना पहेला आश्रवद्वारमां) धर्मार्थे वगेरेने माटे हिंसा करनारने मंदबुद्धिपणुं कहेलुं छे, तेनुं रहस्य पण आ ज छे. तेमज देशविरति श्रावकने सिद्धांतमां बालपंडित कहेल छे, एकांत पंडित कहेल नथी; कारण के, तेनामां देशथकी बालपणुं रहेलुंज छे; आवा कारणने लइने सांसारिक कार्योमां प्रवर्त्तता एवा पुरुषोने द्रव्यपूजानो निषेध केम थाय ? ए विवेकी पुरुषोए विचारी लेवुं जोइए; अथवा ते युक्ति दूर रहो. तथापि पाप आचरनार पुरुषोने आश्री तेवुं मंदबुद्धिपणुं कहेलुं छे, बीजाने आश्रीने कहेल नथी. वळी ते स्थले हिंसा करनारना द्वारने विषे शौकरिक–मच्छीमार आदि जे अशुभ परिणामी पापरुचि जीवो छे, तेमने तेवा हिंसाना करनार कहेला छे, पण शुभ परिणामवाला जिनगृह वगेरेना करनारा श्रावकोने कहेला नथी.

वळी जे जैनाभासो कहे छे के, "प्रतिमामां एकेंद्रियदलपणुं छे, तेथी तेनुं वंदनादिक करवुं अयुक्त छे. " तेने माटे एटलुंज कहेवानुं के, " श्री जिनेंद्रोए जिनबिंबोने जिन प्रतिमाना शब्दे कहेल छे अने तेमना गृहने सिद्धायतन शब्दथी उच्चारे छे, तेथी ते जैनाभासो भवभ्रमणना भयथी अवगणना करी शामाटे आवा कठोर शब्दो बोलता हशे ? त्यारे पुछवुं जोइए के, " तमे दिशा सन्मुख थइ वंदनादिक करो छो, तो ते दिशा अजीवरुप छे, तेथी तमारे दिशा सन्मुख शा माटे थवुं जोइए ? "

कदि तेओ एम कहे के, " दिशावंदन समये अमारा मनमां सिद्ध प्रमुख रहेला छे, तेथी तेम करवामां दोष नथी," तो अमे पण कहीशुं के, "श्री जिन प्रतिमाने वंदन करवा समये अमारा मनमां पण सिद्ध प्रमुख होय छे." आथी ज्ञावनी अपेक्षाए बंने ठेकाणे न्यायनुं समानपणुं छे, तेथी कोइ प्रकारे पण जिन पूजानो निषेध करवो युक्त नथी.

वळी सूत्रने विषे गुरुना आसनादिकनी आशातना वर्जवाने कहेल छे, तो ते पाट पाटला प्रमुख आसनादिक अजीवरूप छे, छतां गुरुना संबंधने लइने ते स्थापित होवाथी तेनुं जे बहुमान करवामां आवे छे, ते वस्तुताए गुरुनुंज बहु मान छे, तेवी रीते जिन प्रतिमानुं जे बहु मान छे, ते परमार्थपणे सिद्ध भगवान्नुं ज बहु मान छे.

वळी सुधर्मा सजामां जे जिन जगवान्नी दाढाओ छे, तेओ अजीवरूप छे, छतां सिद्धांतने विषे तेमनुं वंदनिकपणुं तथा पूजनिकपणुं कहेलुं छे. ते साथे तेमनी आशातना न करवी एम पण जणावेलुं छे, तो पछी जिन मुद्रानी वंदनीयतामां अने पूजनीयतामां शो संदेह राखवो ? वळी पंचमांगनी आदिमां " णमो बंजिए लीविए " ए वाक्योए करी श्री सुधर्मा स्वामीए पोते अक्षरविन्यासरूप एवी लीपिने जो नमस्कार कर्यो तो तेमना वचनने अनुसारे प्राणीओने लीपिनी जेम जिन प्रतिमाने नमस्कार करवामां क्यो दोष उत्पन्न थाय ? कारण के, बंने ठेकाणे स्थापनानुं तो समानपणुं छे.

तेम वळी ज्यारे त्रैलोक्यस्वामी जगवान् समवसरणने विषे मूळरूपे पूर्व दिशा सन्मुख थइ सिंहासने बेसे छे, त्यारे देवता तत्काळ जगवंत समान आकारवाळा त्रण प्रतिबिंब करीने बाकीनी त्रण दिशाओमां सिंहासन उपर स्थापन करे छे, ते अवसरे सर्व साधु श्रावकादिक जव्यजनो प्रदक्षिणापूर्वक तेमनी वंदना करे छे. आ वात तो आखा जैनमतमां प्रसिद्ध छे. वळी जगवंते दानादिक धर्मनी प्रवृत्ति देखाडी छे, तेमज पोतानी स्थापनानुं पोतानी जेम वंदनीयपणुं देखाड्युं छे, जो एम न होय तो श्री जिनाज्ञानुवर्ती साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविका वंदनादिक केम करे ? ए प्रकारे विवेकी पुरुषोए पोतानी मेळे विचारी लेवुं जोइए. श्रीमद् जगवती अंगने विषे वीशमा शतकना नवमा उद्देशामां विद्याचारण जंघाचारण मुनिने आश्रीने शाश्वती तथा अशाश्वती जिन प्रतिमाना वंदननो अधिकार स्पष्ट-

पणे कहेलो छे, ते आ प्रमाणे छे—" श्री गौतमस्वामी पुछे छे के, " भगवन्, विद्याचारणनी तिर्छी गतिनो विषय केटलो छे ? प्रभुए उत्तर आप्यो के, " तेओ एक डगले मानुषोत्तर पर्वते जाय छे अने त्यां चैत्यवंदन करी बीजे डगले नंदीश्वर द्वीपे जाय छे. त्यांना चैत्योने वंदना करी त्यांथी नीकळी एक डगले अहिं आवे छे अने अहींना चैत्योने वंदना करे छे; ए प्रकारनी तेमनी तिर्छी गति कहेली छे." पछी गौतम स्वामीए पुछ्युं के, " हे भगवन्, विद्याचारणनी ऊर्ध्व गतिनो विषय केटलो छे ?" प्रभुए उत्तर आप्यो–" हे गौतम, तेओ एक डगले नंदनवनमां जाय छे अने त्यांना चैत्योने वंदना करी बीजे डगले पंडगवनमां जाय छे, त्यां चैत्यवंदन करी त्रीजे डगले अहीं आवी अहींना चैत्योने वंदन करे छे. ए प्रमाणे विद्याचारणनी ऊर्ध्व गतिनो विषय कहेलो छे. परंतु गतिना प्रमादथी वच्चे रहेला चैत्योनुं वंदन रही जाय तो ते स्थानकनी आलोयणा–पडिक्कमण कर्या विना तेमने आराधना होती नथी; ज्यारे ते स्थानकने आलोच्या–प्रतिक्रम्याथी आराधना होय छे. एवी रीते जंघाचारणना विषयनुं सूत्र जाणी लेवुं. तेनी गतिना विषयमां जे फेर छे, ते आ प्रमाणे—"जंघाचारण मुनि तिर्छी गति आश्रीने एक डगले तेरमा रुचक द्वीपमां जाय छे, त्यांथी पाछा फरी बीजे डगले नंदीश्वरे आवे छे अने त्रीजे डगले अहीं आवे छे अने तेमनी ऊर्ध्व गति आश्रीने पहेले डगले पंडगवनमां जाय छे, त्यांथी पाछा निवर्ती बीजे डगले नंदनवनमां आवे छे अने त्रीजे डगले अहिं आवे छे. ते स्थानकनो आ भावार्थ छे."

लब्धि फोरववाथी थयेलो जे प्रमाद तेने सेववाथी तेने आलोच्या के पडिक्कम्या विना चारित्रनी आराधना थती नथी, कारण के, तेनी विराधना करनारने चारित्रना आराधननुं फल मळतुं नथी.

आ अधिकारने विषे ते जैनाभासोए उत्सूत्र प्ररूपणानो भय अवगणी बहुश्रुत परंपराए आवेलो चैत्य शब्दनो ज्ञान रुप अर्थ जे प्ररूपे छे ते विषे कहेवामां आवे छे—

जो अहीं साधुओए ज्ञान वंदन करेलुं होय तो चेइयाइं (चैत्यानि) एवा बहु वचननो प्रयोग न करत. भगवान्ना ज्ञाननुं अति अद्भुत एक स्वरूप होवुं जोइए तेथी 'चेइय' (चैत्य) एवो एक वचननो पाठ होवो जोइए, पण तेवो पाठ मुकवामां आव्यो नथी; ते उपरथी ते चारण मुनिओए श्री जिन

प्रतिमानुं वंदन कर्युं, एम समजवुं. वळी एम न मानवुं के, मानुषोत्तर वगेरे पर्वतोमां श्री जिन प्रतिमा नथी, केमके जंबुद्वीप पन्नति आदि शास्त्रोने विषे मेरु, रुचक, मानुषोत्तर, नंदीश्वर द्वीप प्रमुख सर्व शाश्वत स्थानोने विषे श्री जिन प्रतिमानो सद्भाव कहेलो छे. तेम वळी श्री जगवतीजीना त्रीजा शतकना बीजा उद्देशमां प्रगटपणे श्री जिन प्रतिमानो अधिकार आपेलो छे. ते आ प्रमाणे— गौतम मुनिए जगवंतने पुछ्युं के " हे जगवन्, असुरकुमार देवता कोनी निश्राए उंचे उमे छे अने यावत् सुधर्म देवलोक सुधी जाय छे ? " तेना उत्तरमां जगवाने आ प्रमाणे कह्युं के,

" से जहानामए इह सप्पराइवा वव्वराइवा ढंकणाइवा चुचुयाति वा पल्हवाति वा पुलिंदातिवा एगं महं रणं वा गड्डुं वा पुग्गं वा दरिं वा विसमं वा पव्वयं वा निस्साए सुमहल्लमपि आसवलं वा हत्थिवलं वा जोहवलं वा धणुवलं वा आगलिंति एवमेव असुरकुमाराविदेवा णणथ्थ " ॥

आ पाठमां जे 'णणथ्थ' शब्द छे, तेना अर्थमां एटलो विशेष छे के, अरहंत, अरिहंतना चैत्य अने अनगार जावित आत्मा—ए त्रणनी निश्राए ते असुर कुमार देवता यावत् सुधर्म देवलोक सुधी उंचे उडे छे.

वळी 'णणथ्थ' नो एवो अर्थ पण छे के, निश्चे करीने आ लोकने विषे अथवा अरिहंतादिकनी निश्राए करी ते उंचे उमे छे. तेमनी निश्रा विना ते उंचे उमी शके नहीं. आ उद्देशमां उत्तरोत्तर त्रण निश्रा कहेली छे. अने पछी बे आशातना कहेली छे. एक अरिहंतनी अने बीजी साधुनी. त्यां एम संजवे छे के, अरिहंतनी प्रतिमानुं कोइ प्रकारे अरिहंतनुं तुल्यपणुं जणावाने माटे जुदुं कहेवामां आव्युं नथी. एटले अरिहंत पदे करी तेमनी प्रतिमानुं ग्रहण थवाथी जूदो निर्देश कर्यो नथी.

अहीं ते जैनाजासो कुतर्क करे छे के, क्या श्रावके जिन प्रतिमा पूजी छे? तेना समाधानमां कहेवानुं के, सिद्धार्थ राजा, सुदर्शन शेठ, शंख, पुष्कलिक, कार्त्तिक शेठ अने बीजा तुंगिया नगरी निवासी घणा श्रावकोए जिन प्रतिमा पूजी छे. अने ते ते अधिकारे सिद्धांतमां देखाय छे. " न्हाया कयवलिकम्मा "

एवो जे पाठ छे, तेनो अर्थ आ प्रमाणे छे " जेमणे स्नान कर्या पछी बलि कर्म करेलुं छे. " एटले पोताना गृह चैत्यना अरिहंत देवनी प्रतिमानी जेमणे पूजा करेली छे.

अहीं कुलदेवीनी पूजा करेली छे, एवो अर्थ न करवो, कारण के, सम्यक्त्व अंगीकार करती वखते जिन जगवानथी व्यतिरिक्त एवा देवोने वंदन पूजन आदि करवानो त्याग करवामां आव्यो छे, तेम वली तुंगिया नगरीमां रहेनारा श्रावकोनुं सूत्रमां जे वर्णन करवामां आवेलुं छे तेमां तेथी विरोध आवे छे.

तेना वर्णननो पाठ श्री जगवती सूत्रना बीजा शतकमां पांचमां उद्देशमां आ प्रमाणे छे.

" अह्वादित्ता इत्यादि यावत् असहिज्जदेवासुरनागसुवएाजक्खरक्खस किंनर किंपुरिस गरुल्ल गंधव्व महोरगादिएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणतिक्कमणिज्जा निग्गंथे पावयणे निस्संकिया निक्कंखिआ निव्वितिगिच्छा लद्धठा गहियठा पुच्छियठा " इत्यादि ॥

तेमां असहिज्जत्ति ए पदनो एवो अर्थ छे के, जेने परनी—बीजानी सहाय नथी एवा अर्थात् आपत्तिने विषे पण देवादिकनी सहायताने नहीं इछनारा—पोताना करेला कर्म पोतानेज जोगववा पडे छे, एम मानी अदीन मनोवृत्तिवाला आवा विशेषण वाला श्रावको बीजा मिथ्यादृष्टि देवनी पूजा केम करे ? आ प्रत्यक्ष विरोध आवे छे, तेथी उत्तम बुद्धिवाला पुरुषोए तेनो सम्यक् प्रकारे विचार करवो योग्य छे.

श्री उव्वाइ उपांग सूत्रने विषे अंबम परिव्राजकना अधिकारमां श्री जिन चैत्योनुं साक्षात् वंदनिकपणुं कहेलुं छे, ते सूत्र आ प्रमाणे छे—

" अंबमस्सणं परिव्वायगस्स णो कप्पंति अणउत्थिएवा अणउत्थियदेवयाणिवा अणउत्थिय परिग्गहियाणि अरिहंतचेइयाणि वा वंदित्तए वा नमंसित्तए वा जावपज्जु वा-

सित्तएवा णण्णथ्थ अरिहंते वा अरिहंतचेइयाणि वा " इ-
त्यादि ॥

अंबड परिव्राजकने जे कल्पतुं नथी तेने माटे कहे छे के, अन्यतीर्थिओने तथा अन्य तीर्थिओना देवोने तेमज अन्यतीर्थिओए ग्रहण करेला अरिहंतना चैत्योने वंदन—नमस्कार तथा पर्युपासना करवी ते विषे. परंतु तेमां आटलुं विशेष छे के, अरिहंत तथा अरिहंतनी प्रतिमाने वंदनादिक करवुं कल्पे छे. ए प्रमाणे श्री उपासकदशांगसूत्रमां पण आनंद श्रावकने अधिकारे जे कहेवामां आव्युं छे, ते ते स्थलेथी जाणी लेवुं.

वळी ते जैनाभासो कहे छे के, " प्रदेशी राजाए चैत्यो केम न कराव्या ? " तेना उत्तरमां कहेवानुं के, प्रदेशी राजा श्री जैनधर्मनी प्राप्ति कर्या पछी केटलो काळ जीव्यो हतो के ते चैत्यो करावे ? तेम वळी सर्व श्रावको एकज प्रकारनुं धर्म कार्य करे, एवो नियम क्यां छे ? तेथी सुदृष्टि पुरुषोए सर्व धर्मकार्यमां सम्यग् दृष्टिवडे श्रध्धा करवी. पण कुदृष्टिओनी जेम श्री जिनोक्त धर्मकृत्यनो स्वमति कल्पनाए निषेध करवो नही.

वळी श्री जंबूद्वीप पन्नत्तिमां प्रथम जिनना निर्वाणने स्थाने स्तूप करवाना अधिकारमां " जिणभत्तिए धम्मत्तिए " एवो पाठ छे. अने तेनो " जिन भक्तिथी धर्मथी " एवो अर्थ थाय छे, ते उपरथी पण सिध्ध थाय छे के, आगमने विषे स्तूप निर्माणनी अंदर जिन भक्ति करवी कहेली छे. तो पछी जिन चैत्य करवा—कराववामां जिन भक्ति प्रगटज छे; तेमां शो संदेह करवो.

तेमज महानिशीथ सूत्रमां श्रावकोने आश्रीने चैत्य निर्मापणनो अने साधुओने आश्रीने चैत्यवंदनादिकनो अधिकार प्रगटपणे कहेलो छे. धर्मना अर्थी प्राणीओए ते स्वतः सम्यग् दृष्टिए विचारी लेवो.

वळी व्यवहार सूत्रमा " जहेव सम्मं भावियाइं पासिज्जा तहेव आलोइज्जा " ए पाठमां पण चैत्यनी साक्षीए आलोचना लेवी कहेली छे, एम केटलाएक आगमना वचनो देखाय छे. घणा आगमने विषे स्थापनादिकनो अधिकार विद्यमान छे.

ते जैनाभासो कहे छे के, " बत्रीशज आगम प्रमाण छे, तेना संबंधमां

कहेवानुं के, श्री नंदी सूत्रने विषे साक्षात् कहेला आगमोनुं उत्थापन करी ते बत्रीश आगमोनेज प्रमाण मानवामां कोनी आज्ञा छे ? कदि तेओ कहेशे के तेवा प्रकारना उत्कृष्ट प्रमाणे करी अमो कहीए छीए, तो ते कहेवुं तदन अयुक्त छे; कारण के, हाल तेवा प्रकारना ज्ञाननो असंभव छे. तेम वळी आ काळने विषे श्री वीरवाणीमां विश्रांत थयेला, अने तेमनी परंपरामां उत्पन्न थयेल आज्ञाने अनुसारे वर्त्तमान काळना वर्त्तता सर्व सिद्धांतना लेखक महोपकारी श्री देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमणे सर्व साधुओने संमतिथी जे सिद्धांतो पुस्तक रूपे स्थाप्या छे, तेमने उत्थापन करनारा ते जैनाभासोने जिनाज्ञानुं विराधकपणुं प्रगट रीते प्राप्त थयुं छे. तेमज आगमने विषे प्रमाण करेला निर्युक्ति, चूर्णी, भाष्य, वृत्ति प्रमुखने उत्थापन करवाथी जिनाज्ञानुं विराधकपणुं अवश्य प्राप्त थयेलुं छे. तेओ कहे छे के भगवती सूत्रमां आ प्रमाणे लख्युं छे—

" सुतथ्थो खलु पढमो बीओ निज्जुत्तिमीसिओ भणिओ
तइओ य निरवसेसो एस विहि होइ अणुओगो" ॥१॥

वळी ते जैनाभासो कहे छे के, अमे फक्त श्री सूत्रने अनुसारे प्ररूपणा करीए छीए; तेथी निर्युक्ति वगेरेनुं शुं काम छे ? तेना जवाबमां कहेवानुं के, तेमनुं ए कहेवुं तदन अयुक्त छे; कारण के, सूत्रना अति गंभीर आशयने लइने निर्युक्ति आदिना परिज्ञान विना उपदेश करनाराओने नय, निक्षेप, द्रव्य, गुण, पर्याय, काल, लिंग, वचन, नाम, धातु अने स्वर आदिनुं परिज्ञान थइ शकतुं नथी, पदे पदे मृषावादादि दोषनो संभव छे, तेने माटे श्री प्रश्न व्याकरण सूत्रमां बीजा संवर द्वारने विषे आ प्रमाणे कहेलुं छे—

"केरिसयं पुणाइ सच्चं नु भासिअव्वं जं तं दव्वेहिं पज्जवेहिं गुणेहिं कम्मेहिं बहुविहेहिं सप्पेहिं आगमेहिं नामक्काय निवात उवसग्ग तद्धिय समास संधि पद हेउ जोगिअ उणादि किरियाविहाण धाउ सर विभत्ति वण्णजुत्तं तिकालं दसविहंपि सच्चं जह भणियं तहय कम्मुणा होइ दुवालसविहाय होइ सोलसविहं एवमरिहंत अणुन्नायं समक्खियं संज-

एएं कालंमि अवत्तव्वं[1] " इत्यादि ॥

आवा कारणथी ते विषे वधारे कहेवानी जरुर नथी. वस्तुगतिए दुष्ट मिथ्यात्व रुपी पिशाचे तेमनी कुदृष्टिओने ग्रसेली छे; तेथी तेओए ग्रहण करेला असत् पक्षनी पुष्टिने माटे अनेक प्रकारनी स्वेच्छाथी वर्त्ती तेओ उत्सूत्र प्ररूपणा करता थका लोकने विषे नाव साधुनी उपमाने धारण करता पोताने अने बीजा मंदबुद्धि जनोने आ अपार संसाररुप समुद्रमां डुबावे छे, तेथी ते संसाररुप समुद्रथी जय पामनारा जे जव्य प्राणीओ होय—के जेओ पोताना आत्मगुणनी कुशलताने इछनारा होय तेमणे बगलानी जेम बाह्य क्रियामां तत्पर एवा ते परम अज्ञानी निह्नवोनो परिचय सर्वथा न करवो. कारण, तेवा पुरुषो सूत्रमां विराधक छे. जेओ गीतार्थपणाथी आचार्य, उपाध्याय, कुल, गण वगेरेनी निश्राए विचरे छे, तेओने सूत्रमां आराधक कहेला छे अने जेओ गीतार्थनी निश्राए विचरता नथी, तेओने विराधक कहेला छे. ते विषे श्री जगवतीजीमां आ प्रमाणे कहेलुं छे—

" गीयथ्थो य विहारो बीओ गीयथ्थनिस्सिओ जणिओ।
इत्तो तइयविहारो नाणुन्नाओ जिणवरेहिं " ॥ १ ॥

" पेहेलो गीतार्थ विहार छे, बीजो गीतार्थ निश्रानो विहार छे अने त्रीजा विहारने माटे श्री जिनेश्वर जगवंते आज्ञा करेली नथी. "

आथी ते जैनाजासोने एक पण निश्रानो असंजव होवाथी श्री जिनाज्ञानुं विराधकपणुं छे.

वळी सिध्धांतमां योग उपधान वहन कर्या पछी सूत्र पाठ भणवानी आज्ञा आपेली छे, तेमां श्रावकोने श्री आचारांग सूत्र जणवानी आज्ञा नथीज. निशीथ सूत्रमां कह्युं छे के—

"जो ज्ञिरकु अन्नतित्थीयं वा गारत्थायं वा वायणं वाइज्जति वाइज्जंतं साइजतिस्स चउम्मासि अपरिहारठाणं इत्यादि" ॥

" जे मुनि अन्य तीर्थीओ तथा गृहस्थने सूत्रनी वाचना आपे ते मुनि पोतानुं चार मासनुं चारित्र नाश करे छे; तेम वळी साधुओए घणुं करीने साध्वी-

[1] आनो अर्थ संक्षिप्तपणे आगळ लखवामा आवेल छे.

ए लावेला आहारने ग्रहण करवो नहीं इत्यादि जिनाज्ञा छे; ते ते आज्ञाओने ते जैनाभासोए मूलमांथी उन्मूलन करेली छे.

आवा ते जैनाभासोनो सर्वथा परिचय करवो न जोइए, कारण के, तेम करवाथी तत्काल सद्भूत एवा सम्यक्त्व रत्ननी मलिनतानी प्राप्ति थाय छे. जेमना मनमां कदि शंका उत्पन्न थती होय तेमणे सिद्धांतमां कहेला अनेकांत मार्गने अनुसरी तेनी परीक्षा करवी; परंतु मात्र बाह्य क्रियामां अनुरक्त थवुं नहीं; कारण के, तेओना करतां पण अधिक एवा अभव्यो आ संसारने विषे भमता थका अनंतवार बाह्य क्रिया कर्या करे छे. वली आगमने विषे सद्ज्ञाननी अपेक्षाए क्रियानी गौणता कहेली छे. तेनी व्याख्या श्री भगवतीजीना आठमा शतकना दशमां उद्देशामां आ प्रमाणे आपेली छे—

[१]" मए चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तथ्थणं जेसे पढमे पुरिसजाए सेणं पुरिसे सीलवं असुयवं उवरए अविन्नाय धम्मे एसणं गोयमा ! मए पुरिसे देसाराहए पन्नत्ते तथ्थणं जेसे दोच्चे पुरिसजाए सेणं पुरिसे असीलवं सुतवं अणुवरए विन्नायधम्मे एसणं गोयमा मए पुरिसे देसविराहए पन्नत्ते तथ्थणं जेसे तच्चे पुरिसजाए सेणं पुरिसे सीलवं सुतवं उवरए विन्नायधम्मे एसणं गोयमा! मए पुरिसे सव्वाहारए पन्नत्ते तथ्थणं जेसे चउथ्थे पुरिसजाए सेणं पुरिसे असीलवं असुतवं अणुवरए अविन्नायधम्मे एसणं गोयमा ! मए सव्वविराहए पन्नत्ते ॥

अहिं प्रश्न करे छे के, श्री ठाणांगजीमां जमालि प्रमुख सात निन्हवो कहेला छे तेनी अंदर तो आ अंतर्भूत थता नथी तो पछी ते जैनाभासोने निन्हवपणुं केम प्राप्त थइ शके ?

" मग्गानेयाइयं सुच्चा बहवे परिभस्सइ " ॥

इत्यादि उत्तराध्ययन सूत्रना वचनना प्रमाणथी दिगंबरनी जेम तेमने प-

१ गौतम स्वामीने श्रीमद् वीरप्रभु उत्तर आपे छे के 'चार प्रकारना पुरुषो छे A शील अने श्रुत संपन्न (सर्वाराधक) B शील असंपन्न अने श्रुतसंपन्न (देशविराधक) C शीलसंपन्न अने श्रुतअसंपन्न (देशआराधक) D शीलअसंपन्न अने श्रुतअसंपन्न (सर्व विराधक).'

ए निन्हवपणुं मात्र थवुं युक्तज छे. जे श्री स्थानांग सूत्रमां तेमनुं ग्रहण कर्युं नथी त्यां एम संजवे छे के ते सूत्रने विषे लघु निन्हव ग्रहण करेला छे अने आतो दिगंबरनी पेठे महा निन्हव थाय छे, तेथी ए सूत्रमां ते प्रतिमा उत्थापक तथा दिगंबर—बंनेने ग्रहण करेला नथी परंतु तत्त्व तो केवली गम्य छे. अथवा बहुश्रुतगम्य छे. हवे ते विषे विशेष विस्तार करवाजी जरुर नथी. आ प्रकारे स्थापना जिननुं स्वरूप कहेवामां आव्युं.

३ डव्य जिन स्वरूप.

३ हवे डव्य जिननुं स्वरूप कहे छे—

जे जीवो तीर्थंकरपणे थशे, तेओ डव्यजिन कहेवाय छे. जेम श्रेणिक, कृष्ण वगेरे. तेओ जविष्यकाळने आश्रीने वंदनिक छे; कारण के, जरतचक्रिए मरिचिना जवमां श्री वीरप्रभुना जीवने वंदन कर्युं हतुं.

४ जावजिन स्वरूप.

४ जे समस्त जीवादि पदार्थना समूहने यथास्थित प्रकट करनार केवलज्ञान पामी सर्व लोकना नेत्रोने अमंद आनंदना उत्सवने करनारुं छे, जे उपमाथी रहित छे, जे त्रण गढथी सुशोजित एवा समवसरणना मध्य जागे स्थापित थयेला विविध रत्नोथी जमित एवा सिंहासन उपर बेशी आठ महा प्रातिहार्य वगे उत्कृष्ट एवा अरिहंतपणानी संपत्तिने जे अनुजवे छे, ते जावजिन कहेवाय छे. ते जावजिन सन्मार्गने देखामवा प्रमुख कृत्योथी सर्व प्राणीओनो परम उपकारी होवाथी सर्वकाले वंदन, पूजन, अने स्तवनादि करवाने योग्य छे.

आ प्रमाणे चार निक्षेपाथी श्री जिनजगवंतनुं स्वरूप कहेलुं छे. आ निक्षेपा जिनथी अन्य एवा केवली तथा सिद्धोने विषे एवेज प्रकारे योग्यता अनुसारे लगामी जोमी देवा. कारण के चार निक्षेपे करीनेज सर्व पदार्थोनुं जाववापणुं छे.

हवे केवलीने आहार संबंधी जे विशेष छे, ते श्री पिंमनिर्युक्तिने अनुसारे देखामे छे—

" ओहो सुओ व उत्तो, सुयनाणी जइवि गिएहइ असुद्धं।
तं केवली वि जुंजइ, अप्पमाणसुअंजवेश्यरा" ॥ १ ॥

" सामान्यपणे करी श्री पिंडनिर्युक्ति आदि आगमने विषे उपयुक्त थयो थको एटले ते शास्त्रने अनुसारे कल्पनीय—अकल्पनीयने विचारतो थको श्रुतज्ञानी साधु जो कोइ प्रकारे अशुध्ध आहारादिक ग्रहण करे तोपण ते अज्ञानादिक केवळज्ञानी पण भोगवे—आहार करे; जो तेम न करे तो श्रुतज्ञान अप्रमाण थइ जाय. "

आ वात स्पष्ट करे छे—" छद्मस्थने श्रुतज्ञानना बळे करी शुध्ध आहारादिकनी गवेषणा करवी प्रमाण छे; पण बीजे प्रकारे ते प्रमाण नथी. जो केवली—श्रुतज्ञानीवडे ग्रहण करायेलो आहार आगमने अनुसारे गवेषण करता छतां अशुद्ध छे, एम जाणी न भोगवे तो श्रुतज्ञाननो अविश्वास थइ जाय; पछी कोइ श्रुतने प्रमाणिकपणे अंगीकार न करे, ज्यारे श्रुतज्ञान अप्रमाणिक थाय तो पछी सर्व क्रियानो लोप थवानो प्रसंग प्राप्त थाय. अने वळी श्रुत विना छद्मस्थोने क्रियाकांडना परिज्ञाननो असंभव होय छे; तेथी श्रुतज्ञानीनो लावेलो आहार केवली भोगवे छे. आ अधिकार शिष्यादिक सहित एवा केवळीने आश्रीने कहेलो छे. जो केवळी एकला होय तो पोताना ज्ञानना बळवडे यथायोग्य शुध्ध आहार ग्रहण करे, ए विवेक छे.

अहिं जिनो अने अजिनोने आश्रीने बीजुं घणुं कहेवानुं छे, पण ग्रंथ वधी जवाना भयथी ए कहेवामां आव्युं नथी, आ तो भवस्थ केवलीनुं लेश मात्र स्वरूप कहेवामां आव्युं छे.

सिध्ध स्वरूप.

हवे श्री पन्नवणा सूत्रमां कहेली गाथावडे सिध्धनुं स्वरूप दर्शावे छे. तेमां प्रथम उत्तानीकृत एटले पोहोळा करेला छत्रना आकारवाळी सर्व रीते श्वेतवर्ण स्फटिक रत्नमय अने समय क्षेत्र (अढी द्वीप)नी सम श्रेणीए पीस्तालीश लाख योजन प्रमाणवाळी सिद्धशिला छे, ते मध्य भागे आठ योजन प्रमाण लांबी पोहोळी अने जाडी छे. ते पछी सर्व दिशा अने विदिशाने विषे थोडी थोडी प्रदेशनी हानिए करी घटती घटती सर्व चरम (छेल्ला) प्रदेशना अंतने विषे माखीनी पांखना जेवो पातलो एवो अंगुलना असंख्यातमा भागना जाडापणावाळी सिध्धशिलारुप पृथ्वीना उपर निसरणीनी गतिए करी एक योजनमां लोकांत भाग आवेलो छे ते उपरनो योजननो जे चोथो गाउ; तेनो सर्वोपरिनो छठो

नाग तेने विषे श्री अनंता सिद्ध जगवानो अनंत अनागत कालना स्वरूपे रहेला छे; तेना स्वरूपने प्रतिपादन करनारी गाथा आ प्रमाणे छे—

" तत्थवि अ ते अवेया, अवेयणा निम्ममा असंगाय ।
संसारविप्पमुक्का पएसनिव्वत्तसंठाणा " ॥ १ ॥

ते सिद्ध क्षेत्रमां रहेला सिद्ध जगवानो पुरुष वेदादिके रहित, शाता—अशाता वेदनाए वर्जित, ममत्व विनाना अने बाह्य तथा आन्यंतर बंने प्रकारना संगथी रहित छे; कारण के, तेओ आ संसारथी मुक्त थयेला अने आत्म प्रदेशथी निष्पन्न थयेला संस्थानवाळा छे.

अहिं प्रदेशमां आत्माना प्रदेश लेवा पण बाह्य पुद्गल न लेवा; कारण के, तेमने पांचे शरीरनो त्याग थयेलो छे.

अहिं प्रश्न करे छे के,

" कहिं पडिहया सिद्धा कहिं सिद्धा पइठिया ।
कहिंबोदीं चइत्ताणं कत्थ गंतूण सिज्झइ " ? ॥१॥

(अहिं 'कहिं' ए त्रीजी विजक्तिना अर्थमां सप्तमी विजक्ति छे)

" ते सिद्ध जगवानो कोनाथी स्खलना पाम्या ? तेओ कया स्थानमां रह्या छे ? कया क्षेत्रमां जइने तेमणे शरीरनो त्याग कर्यो अने क्यां जइने सिद्धि पदने वरे छे एटले निष्ठितार्थ थाय छे. ? "

तेना उत्तरमां कहे छे के,

" अलोए पडिहया सिद्धा लोगग्गे य पइठिआ ।
इह बोंदींचइत्ताणं तत्थ गंतूण सिज्झइ " ॥ १ ॥

" ते सिद्ध जगवानो अलोके करीने—केवळ आकाश रूपे करीने स्खलना पाम्या एटले सिद्धना जीवो अलोकमां धर्मास्तिकायादिकनो अजाव होवाथी तेनुं जे समीपवर्त्तीपणुं, तेज अहिं तेमनुं स्खलन छे; पण संबंध छतां तेमनो विघात (रोकवापणुं) नथी, कारण के, तेमने रोकवापणानो अजाव छे. तेम वळी पंचास्तिकाय रुप जे लोक तेना छेल्ला अग्रजागना मस्तक उपर ते रहेला छे अने फरी पाछुं संसारमां आववुं नथी, एवी स्थितिए रहेला छे तथा आ मनु-

ष्य लोकमां शरीरनो त्याग करी त्यां लोकाग्रने विषे समयांतर अने प्रदेशांतरने आणफरसी गतिवडे जइने सिध्ध जीवो रहे छे अने त्यां निष्ठितार्थ (सर्व अर्थेथी परिपूर्ण) थाय छे. अहिं शंका करे छे के, सिध्ध जीवोने कर्म रहितपणुं होवाथी तेमने गति थवी केम संजवे ?

तेना उत्तरमां कहेवानुं के, एवी शंका करवी नहीं कारण के, पूर्व प्रयोग अने गति परिणामथी तेमने गति थवानो संजव छे. तेने माटे जगवती अंगमां आ प्रमाणे कहेलुं छे—

" कहणं जंते अकम्मस्स गइपण्णायमिति गोयमा निस्सं- गताए निरंगणताए गतिपरिणामेणं बंधणछेयणताए निरिं धणताए पुव्वपयोगेणं अकम्मगइं पं० " ॥

श्री गौतम स्वामी श्री वीरप्रज्जुने पुछे छे के, " हे जगवन्, अकर्मने गति केवे प्रकारे थाय ? जगवन् कहे छे—नि संगपणे एटले कर्मरुपी मलनो नाश होवाथी, नीरोगीपणे एटले मोहनो विनाश होवाथी, गति परिणामे एटले तुंबडीना फळनी जेम गतिना स्वजाववडे, कर्मना बंधने छेदवावडे एटले एरंमीना फलनी जेम, निरिंधनपणे एटले कर्म रुपी इंधणाथी धूमामानी जेम मुकाववावडे, पूर्वना प्रयोगे करीने एटले सकर्मताने विषे गति परिणामवाला बाणनी जेम अकर्मवंतोने पण गति जणाय छे. ए प्रकारे विशेषपणे तुंबी फलना दृष्टांतोनी योजना सूत्रथी जाणी लेवी.

ते स्थले गयेला सिध्ध जगवानोने जे संस्थाननुं प्रमाण छे ते बतावे छे—

" दीहं वा हस्सं वा जं चरिमं जवेज्ज संगाणं ।
तत्तोऽतिज्ञागहीणा सिध्धाणोगाहणा भणिया " ॥१॥

" पांचसो धनुष्य प्रमाण दीर्घ, बे हाथ प्रमाण हस्व, वा शब्दथी मध्यम अथवा विचित्र प्रकारनुं जे छेल्ला जवमां शरीरनुं संस्थान होय ते संस्थानथी त्रीजे जागेहीन एटले मुख उदर आदि छिद्रो पूरातां त्रीजे जागे न्यून एवी सिध्धना जीवोनी अवगाहना श्री तीर्थंकर जगवाने कहेल छे. " १

अहिं संस्थान प्रमाणनी अपेक्षाए त्रिजाग हीन एवुं ते संस्थान जाणवुं.

ते विषे विशेष स्पष्ट करी बतावे छे—जेटला प्रमाणनुं जे संस्थान आ मनुष्य ज-न्ममां होय, तेज शरीरने त्याग करती वखते छेल्ले समये सूक्ष्मक्रियाअप्रतिपाती नामना शुक्लध्यानना त्रीजा पायाना ध्यानना बलथी मुख, उदर आदि छिद्रो पूराइ जवाथी त्रीजे भागे हीन एटले प्रदेशनो जे घन होय, ते प्रदेशघनना मूल प्रमाणनी अपेक्षाए करी त्रीजे भागे हीन प्रमाणवालुं संस्थान होय छे. ते संस्थान लोकांत क्षेत्रमां ते सिद्ध भगवानोने होय छे, बीजुं संस्थान होतुं नथी.

ते विषे कहेलुं छे के,—

" जं संठाणं तु इह भवं चयंतस्स चरिमसमयंमि ।
आसीयपएसघणं तं संठाणं तर्हि तस्स " ॥ १ ॥

हवे उत्कृष्टादि भेदे करीने त्रीजी अवगाहना देखाडे छे—

" तिन्निसया तित्तिसा धणूतिभागो य होइ नायव्वो ।
एसा खलु सिद्धाणं उक्कोसोगाहणा भणिया " ॥ १ ॥

त्रणसो तेत्रीश धनुष अने एक धनुषनो त्रीजो भाग उपर एटली उत्कृष्टी अवगाहना सिद्धना जीवोनी छे. आ अवगाहना पांचसो धनुष्यवाला जीवोना शरीरनी अपेक्षाए जाणवी.

अहिं कोइ शंका करे छे के, " नाभि कुलकरनां पत्नी मरुदेवा हता. ते नाभि राजाना शरीरनुं प्रमाण सवा पांचसो धनुष्यनुं हतुं. अने जेटलुं नाभि राजाना शरीरनुं प्रमाण हतुं तेटलीज मरुदेवाना शरीरनी अवगाहना ह-ती. एटले पांचसोने पचवीश धनुष्यना प्रमाणनी हती" तेने माटे आ प्रमाणे कहुं छे—

" तदेव मरुदेवाया अपि संघयणं संठाणं उच्चत्तं कुल-गरेहिं समं " ॥

" मरुदेवा माताना संघयण—संस्थाननुं उंचपणुं नाभि कुलकरनी बराबर हतुं. "

हवे ज्यारे मरुदेवा सिद्ध थया त्यारे तेमना शरीरना प्रमाणनो त्रीजो

भाग हीन करतां सिद्ध अवस्थाने विषे साडात्रणसो धनुष्यनी अवगाहना प्राप्त थाय छे, त्यारे उपर कहेल त्रणसो तेत्रीश अने एक धनुषनो त्रीजो भाग ए शी रीतें घटे ?

आ शंकाना उत्तरमां कहेवानुं,के मरुदेवाना शरीरनुं प्रमाण नाभिराजाना करतां कांइक ओछुं होवाथी पण कोइ जातनो विरोध आवतो नथी; कारण के, उत्तम संस्थानवाळी स्त्रीओ उत्तम संस्थानवाळा पुरुषोथी पोतपोताना काळनी अपेक्षाए करी कांइक ओछा प्रमाणवाळी होय छे; ते उपरथी मरुदेवा पण पांचसो धनुष्यना प्रमाणवाळा जाणवा; एवी रीते होवाथी कोइ जातनो दोष आवतो नथी. तेम वळी मरुदेवा हाथीना स्कंध उपर आरूढ थतां संकुचित अंगवाळा सिद्धिपदने पाम्या छे. त्यारे शरीरना संकोचपणाना सद्भावथी अधिक अवगाहना संभवती नथी; ए पण अविरोध—निर्दोष छे. ते उपर भाष्यकार आ प्रमाणे कहे छे—

" कहमरुदेवा माणं नाभीतो जेण किंचिदूणा सा ।
तो किर पंचसयच्चिय अहवा संकोचतो सिद्धा " ॥१॥

(आ गाथानो अर्थ उपर कहेवामां आव्यो छे.)

मध्यम अवगाहनानुं स्वरूप.

" चत्तारिय रयणीओ, रयणीतिभागुणिया य बोधव्वा ।
एसा खलु सिद्धाणं, मज्झिमोगाहणा भणिया " ॥१॥

" चार हाथ अने एक हाथना त्रण भागमांथी बे भाग उपर एटले हाथ ४⅔ मध्यम अवगाहना जाणवी. " १

अहिं वादी प्रश्न करे छे के, जघन्य पदथी सात हाथ उंची अवगाहनावाळा जीवोनी सिद्धि आगमने विषे कही छे, माटे उपर कहेली ४⅔ जघन्य स्थिति थाय छे; पण मध्यम स्थिति केम थाय ?

आ प्रश्नना उत्तरमां कहेवानुं के, तीर्थंकर भगवाननी अपेक्षाए करीने जघन्य पदथी सात हाथनी अवगाहनावाळाओने सिद्धि कहेली छे अने सामान्य केवलीनी अपेक्षाए तेना करतां हीन प्रमाणवाळाओने पण सिद्धि थाय छे, आ

सात हाथनी अवगाहनानुं मध्यम मान सामान्य सिद्धनी अपेक्षाए चिंतववुं, जेथी कोइ जातनो दोष आवशे नहीं.

जघन्य अवगाहनानुं स्वरूप.

" एगाय होइ रयणी, अठेवय अंगुलाइ साहिया ।
एसा खलु सिद्धाणं, जहन्नओगाहणा जणिया " ॥१॥

" एक हाथ अने आठ आंगळ उपर एटले $1\frac{1}{3}$ हाथनी अवगाहना जघन्यथी सामान्य केवळीनी जाणवी. " १

आ अवगाहना बे हाथ प्रमाणवाळा कुर्मापुत्र वगेरेनी जाणवी; अथवा सात हाथ उंचा शरीरवाळा अने यंत्रपीलणने लइने संकुचित शरीरवाळानी पण ते जघन्य अवगाहना जाणवी. ते उपर जाष्यकार श्री जिनजद्रगणी क्षमाश्रमण जगवान् आ प्रमाणे कहे छे—

" जेठाउ पंचधणुसय, तणुस्स मज्जायसत्तहथ्थस्स ।
देहत्तिजागहीणा, जहन्निया जावहथ्थस्स " ॥१॥

पांचसो धनुष्यवाळानी उत्कृष्ट अने सात हाथवाळानी मध्यम अवगाहना अहिं शरीरने त्रीजे जागे न्यून समजवी अने एक हाथ अने एक हाथनो त्रीजो जाग उपर ए जघन्य अवगाहना समजवी.—एटले उत्कृष्ट $333\frac{1}{3}$ मध्यम $4\frac{2}{3}$ अने जघन्य $1\frac{1}{3}$ ए रीते अवगाहना समजवी. ते विषे आ प्रमाणे लखे छे—

" सतुसिएसु सिद्धि, जहन्नउ कहमिहं विहत्थेसु ।
सा किर तिथ्थयरेसु, सेसाणंसिज्जमाणाणं ॥ १ ॥
तेपुण होज्जविहुत्था, कुम्मापुत्तादयो जहन्नेणं ।
अन्ने संवट्टियस्स-सहथ्थ सिद्धस्स हीणत्ति " ॥२॥

सिद्धोना संस्थाननुं लक्षण.

" ओगाहणाए सिद्धा, जवत्तिभागेण होइ परिहीणा ।
संठाणसेणिथ्थंं, जरामरणविप्पमुक्काणं " ॥ १ ॥

" सिद्ध भगवाननी अवगाहना त्रीजे भागे हीन होय छे. ते 'अनित्थं-स्थं' एटले आ प्रकारे पामेल नथी अर्थात् मुख आदि पोलाशनो भाग पूरावाने लइने पूर्वना आकारथी अन्यथा प्रकारे आकारनो तेमां सद्भाव छे ए भावार्थ समजवो. तेम वळी सिद्धादिकना गुणोने विषे सिद्ध भगवानोने जे दीर्घपणानो प्रतिषेध कह्यो, ते पूर्वना आकारनी अपेक्षाए संस्थानना अनित्थंस्थं (ए प्रकार रहितपणे) पणे अंगीकार करवो, पण सर्वथा संस्थाननो अभाव नथी.

अहिं कोइ शंका करे के, " सिद्धना जीवो परस्पर देश भेदे करीने रह्या छे के बीजी रीते ?"

तेनो उत्तर कहे छे—

" जत्थ य एगो सिद्धो, तत्थ अणंता भवक्खयविमुक्का ।
अन्नोन्न समोगाढा, पुट्ठा सव्वेवि लोगंते " ॥१॥

" ज्यां एक सिद्ध छे, त्यां अन्योऽन्य अवगाहीने लोकांतने स्पर्शी अनंता सिद्ध भगवानो रहेला छे. " १

सिद्धजीवोनुं लक्षण.

" असरीरा जीवघणा, उवउत्ता दंसणे य नाणे य ।
सागारमणागारं, लक्खणमेयं तु सिद्धाणं " ॥ १ ॥

" शरीर रहित जीवघन एटले घणा जीवो अथवा वदनादि छिद्रो पूराइ जवाथी जीवघन केवळ दर्शन तथा केवळज्ञानने विषे उपयोगवाळा; अहिं जो के सिद्धपणुं प्रगट थवामां केवळज्ञानना उपयोगनो संभव होवाथी ज्ञाननी प्रधानता छे तथापि सामान्य सिद्धोनुं लक्षण जणाववा माटे प्रथम सामान्य अवलंबन रुप दर्शन कह्युं छे. अहिं सामान्य विषय ते दर्शन अने विशेष विषय ते ज्ञान समजवुं; तेथी साकार अने अनाकार—सामान्य विशेष उपयोगरुप सिद्ध जीवोनुं लक्षण छे.

केवळज्ञान अने केवळदर्शनने समस्तवस्तुनुं विषयपणुं छे.

" केवळनाणुवउत्ता, जाणंति सव्वभावगुणभावे ।
पासंती सव्वत्त खलु, केवलदिट्ठीहिणंताहि " ॥१॥

" सिद्ध भगवानो केवलज्ञाने करी उपयोगवाळा थइ सर्व द्रव्य, गुण-पर्यायोने जाणे छे. तेमां जे सहवर्त्ती ते गुण अने क्रमवर्त्ती ते पर्याय कहेवाय छे; वळी तेओ अनंत एवी केवळदृष्टिओवडे सर्व प्रकारे देखे छे. अहिं जे केवळदर्शननी अनंतता कही, ते सिद्धोनी अनंतता होवाथी जाणवी. आ स्थले प्रथम ज्ञाननुं ग्रहण कर्युं छे, तेनुं कारण ए छे के, प्रथम ज्ञानना उपयोगवडेज सिद्धिपद प्राप्त थाय छे, एम जणाववा माटे समजवुं.

सिद्धना जीवो निरुपम सुखना भजनारा छे.

" नवि अत्थि माणुसाणं, तं सुक्खं न वि य सव्वदेवाणं ।
जं सिद्धाणं सुक्खं, अव्वाबाहं उवगयाणं " ॥ १ ॥

"सिद्धना जीवोने जे सुख छे, ते चक्रवर्त्ती आदि मनुष्योने पण नथी अने अनुत्तर विमानवासी देवताओने पण नथी, तो पछी बीजा नीचेना देवताओने क्यांथी होय ? कारण के, ते सिद्ध भगवानो अव्याबाध–बाधाना अभावने प्राप्त थयेला छे. " १

ते सिद्धना सुखनी समान बीजुं सुख नथी.

" सुरगणसुहं समत्तं, सव्वद्धापिंडिअं अणंतगुणं ।
ण वि पावइ मुत्तिसुहं, णंताहिं वि वग्गवग्गेहिं " ॥१॥

" अतीत, अनागत अने वर्त्तमानकालथी उत्पन्न थयेल एवुं जे देवसमुदायनुं सुख, तेने सर्व काळना समय साथे गुणी अनंतगणुं करीए एवा प्रमाणना सुखने असत् कल्पना करी एकेक आकाश प्रदेश उपर स्थापीए, एवी रीते सर्व आकाश प्रदेश पूरवाथी पण अनंतु थाय, ते अनंताने पण अनंत नामना वर्गे करी वर्गित करीए–गुणीए तेथी प्रकर्षपणाने पामेलुं सुख पण मुक्ति सुखनी बराबर थइ शके नहीं. " १

ते सिद्धनुं सुख निरुपम छे.

" जह नाम कोइ मेच्छो, नयरगुणे बहु विमाणंतो ।
न सक्कइ परिकहेउं, उवमाए तहिं असंतीए " ॥१॥

" जेम कोइ वनेचर म्लेछ नगरना निवास करवा वगेरे गुणोने जाणतो होय पण ते बीजा वनेचरोनी आगळ कहेवाने समर्थ थइ शकतो नथी; कारण के, वनमां तेवी उपमानो अभाव छे. " १

ते विषे कथानक.

" कोइ मोटी अटवीमां घणा म्लेछ लोको (जंगली लोको) रहेता हता. तेओ वनना पशुओनी जेम त्यां रहीने पोतानो काळ निर्गमन करता हता. एक वखते कोइ लुंटाएलो राजा ते अटवीमां आवी चड्यो. तेने एक वनवासी म्लेछे जोयो. ' आ कोइ सत्पुरुष लागे छे ' एवुं धारी ते वनेचर ते राजाने पोताना वासस्थानमां लइ गयो अने त्यां तेनी सारी बरदाश करी तेने संतुष्ट कर्यो. राजा तेने पोतानो उपकारी जाणी पोताना नगरमां ते म्लेछ पुरुषने तेडी गयो. त्यां तेने एक सुंदर बंगलामां राखी स्नान, विलेपन, अमूल्य वस्त्राभरण वगेरेथी तेने घणोज संतोष पमाड्यो. पोताना शरीरनी जेम तेनी उंची जातनी बरदास करावी. शेहेरमां हरवा फरवाथी अने राजवैभव भोगववाथी ते अत्यंत खुशी थयो. केटलाक दिवसो रह्या पछी वर्षाकाळ आव्यो. वर्षाकाळ आवतां तेने पोतानुं चिरकाळनुं वतन जंगल सांभरी आव्युं. ते वखते तेने राजवैभव गम्यो नहीं. तत्काल पोतानो मूळ वेश पेहेरी ते पोताना जंगलमां चाल्यो आव्यो. तेने जोतांज वनवासी म्लेछो तेनी पासे आव्या अने तेने आ प्रमाणे पुछवा लाग्या—" अरे भाइ, तुं कयां गयो हतो ? " तेणे कह्युं के "हुं एक मोटा नगरमां गयो हतो." वनचर म्लेछोए पुछ्युं, " भाइ, कहे, ते नगर केवुं होय अने तेमां शुं शुं हतुं ?" ते जंगली मनुष्य नगरना बधा गुणोने जाणतो हतो, पण नगरनी उपमा आपवाने ते जंगलमां कांइपण हतुं नहीं, तेथी ते नगरना गुणोने कहेवाने समर्थ थइ शकयो नहीं. नगरमां जे वस्तुओ तेणे जोयेली तेवी वस्तु अटवीमां न होवाथी ते उपमाना अभावे कांइपण कही शक्यो नहीं. "

आ दृष्टांत उपरथी समजवानुं के, केवळज्ञानी भगवान् पोताना अनंत ज्ञानना बळे करीने सिद्धिना (मोक्षना) सुखने जाणे छे, छतां पण आ संसारमां तेनी उपमाना अभावथी तेओ भव्य जीवोनी आगळ ते सुखनुं वर्णन करवाने शक्तिमान् थता नथी. उपर कहेला दृष्टांतनो आ उपनय समजवो.

ते विषे कह्युं छे के,

" इय सिद्धाणं सुक्खं अणोवमं नत्थि तस्स ओवम्मं ।
किंच विसेसेणेत्तो सारक्खणमिणं सुणह वोच्छुं " ॥१॥

" आ प्रमाणे सिद्ध जगवानोनुं सुख अनुपम छे, एटले ते सुखनी उपमा आपी शकाती नथी; तथापि बाल जनने समजाववा माटे कांइक विशेषणोए करीने तेने आ प्रमाणे कहेवामां आवे छे—

" जह सव्वकामगुणियं पुरिसो जोत्तूण जोयणं कोइ ।
तण्हा छुहा विमुक्को अछिज्ज जहा अमियतत्तो ॥ १ ॥
इय सव्वकालतत्ता अतुलं निव्वाणमुवगया सिद्धा ।
सासयमव्वाबाहं चिठंति सुही सुहंपत्ता " ॥ २ ॥

"जेम कोइ पुरुष संपूर्ण सुंदरताए करी संस्कार करेला जोजनने जमी क्षुधा अने तृषाथी मुक्त थइ जाणे अमृतथी तृप्त थयो तेम रहे छे, तेम निर्वाणने पामेला सिद्ध जगवानो सादि—अपर्यवसित कालपर्यंत तृप्ति पामेला सर्व प्रकारे उत्सुकपणानी निवृत्तिथी परम संतोषने आश्रित थता अतुल, अनुपम, शाश्वत, अप्रतिपाती अने अव्याबाध एवा सुखने पामेला छे, तेथीज तेओ परम सुखी छे. "

उपर कहेला अर्थनी विशेष भावना कहे छे.

" सिद्धत्तिय बुद्धत्तिय, पारगत्तिय परंपरगयत्ति ।
उम्मुक्क कम्मकवया अजरा अमरा असंगा य ॥ १ ॥
णित्थीण्णसव्वदुक्खा जाइजरामरणबंधणविमुक्का ।
अव्वाबाहं सोक्खं अणुहोतिसासयं सिद्धा " ॥ २ ॥

"जेमणे आठ प्रकारना कर्म क्षय करेला छे, ते सामान्यपणे कर्मक्षयसिद्ध कहेवाय छे. " सिद्धोना प्रकारने माटे कह्युं छे के,

" कम्मे सिप्पे य विज्जाए मंते जोगे य आगमे ।
अथ्थजुत्त अभिप्पाए तवे कम्मक्खए इय " ॥ १ ॥

" कर्मसिध्ध, शिल्पसिध्ध, विद्यासिध्ध, मंत्रसिध्ध, योगसिध्ध, आगमसिध्ध, अर्थसिध्ध, युक्तिसिद्ध, अभिप्रायसिध्ध, तपःसिध्ध अने कर्मक्षयसिध्ध इत्यादि सिध्धो कहेला छे, ते कर्मादि सिध्धोनो त्याग करवा माटे बुध्ध कहेल छे एटले अज्ञाननिद्राने विषे सूतेला एवा जगत्‌ने विषे बीजाना उपदेशवडे जीवादि तत्त्वोने जाणनारा ते बुध्ध कहेवाय छे.

हवे घणा बुध्धो पण आ संसारना भयने त्याग करनारा छे, तेमनो निरास करवाने कहे छे के, ते पारगत छे, एटले संसारना सर्व प्रयोजनना समूहने पार पामेला छे. केटलाएक यदृच्छावादीओ पण अक्रम सिध्धपणाथी तेवा कहेवाय छे, ते भ्रमनो निरास करवा माटे 'परंपरागताः' कहेल छे, एटले ज्ञान, दर्शन अने चारित्रद्वारा चौद गुणठाणाए करी अनुक्रमे मोक्षना पदने पामेला, ते परंपरागत कहेवाय छे. केटलाएक तत्त्वथी कर्ममुक्त नहीं थयेला कहे छे के, 'पोताना तीर्थना तिरस्कारपणाथी (विनाशपणाथी) तेना उध्धार माटे आ लोकमां अवताररूपे आवे छे.' ए वचनथी फरीवार संसारमां आववानुं अंगीकार करवामां आवतां, तेमनो निरास करवाने कहे छे के, ' उन्मुक्त कर्मकवचाः ' प्रबळताथी--फरीथी प्रगट न थवापणाथी सर्व प्रकारे कर्मरुपी कवचनो जेमणे त्याग कर्यो छे एवा छे. तेथीज तेओ 'अजराः' शरीरना अभावथी जरावस्थाए रहित, माटेज 'अमराः' शरीरने अभावे नहीं मरनारा, कारण के, शरीरना असंभवथी प्राणना त्यागनो पण तेमने असंभव छे, एवा अमर छे; वळी ते सिद्ध भगवानो 'असंगाः' एटले बाह्य तथा आभ्यंतर एवा संगथी रहित छे. वळी तेओ " निस्तीर्णसर्वदुःखाः " एटले जेओ सर्व दुःखोने ओळंगी गया छे कारण के, जाति, जरा, मरण अने बंधनथी मुक्त थयेला छे; जाति एटले जन्म, जरा एटले वयनी हानि, मरण एटले प्राण त्याग अने बंधन एटले तेना कारणरुप कर्मो—ते सर्वेनो जेमणे सम्यक् प्रकारे विनाश करेलो छे, तेथीज ते सिध्ध भगवानो अव्याबाध शाश्वत सुखने अनुभवे छे.

सिद्ध भगवान्‌ना एकत्रीश गुणो.

" संठाण[5] वण्ण[5] रस[5] गंध[2] फरस[8] वेयं[3]गसंगन्नवरहियं[3]।
इगतीस गुणसमिद्धं सिद्धं बुद्धं जिणं नमिमो " ॥१॥

" १ वृत्त, (वर्तुल) २ त्र्यस्र (त्रणखुणादार) ३ चोरस, ४ लांबुं अने ५ परिमंमल—ए पांच संस्थान, १ कृष्ण, २ नील, ३ पीत, ४ रातो अने ५ श्वेत—ए पांच वर्ण, १ तीखो, २ कमवो, ३ कसाएलो, ४ खाटो अने ५ मधुर—ए पांच रस, १ सुगंधी अने २ दुर्गंधी—ए बे गंध; १ गुरु, २ लघु, ३ मृदु, ४ खर, ५ शीत, ६ उष्ण, ७ स्निग्ध अने ८ लुखो—ए आठ फरस, १ स्त्री, २ पुरुष अने नपुंसक—ए त्रण वेद, अंग एटले शरीर, संग एटले परवस्तुनो संसर्ग, अने जव एटले जन्म—संसार—आ एकत्रीश उपाधिथी रहित–तेथीज एकत्रीश गुणोथी समृद्धिमान् एवा श्री सिद्ध जगवानोने नमस्कार करीए छीए. "

ते सिद्धोना आठ गुण.

आठ कर्मोना क्षयथी सिद्धोने विषे आठ गुणो उत्पन्न थाय छे, ते दर्शावे छे—

" नाणं च दंसणं च अव्वावाहं तहेव सम्मत्तं ।
अक्खयठिई अरूवं अगुरुलहू वीरियं हवइ " ॥ १ ॥

" ज्ञानावरणीय कर्मना क्षयथी अनंतज्ञानपणुं, २ दर्शनावरणीय कर्मना क्षयथी अनंत दर्शनपणुं, ३ वेदनीय कर्मना क्षयथी अनंत अव्यावाधपणुं,–आ अव्यावाध गुणने लइने अनंत सिद्धो परिमित क्षेत्रमां अन्योन्य अवगाढपणे रहेला उतां तेमने परस्पर वाधा थवानो अजाव छे. ४ मोहनीय कर्मना क्षयथी क्षायिक सम्यक्त्वपणुं, ५ आयुः कर्मना क्षयथी अक्षय स्थितिपणुं, ५ नाम कर्मना क्षयथी अरूपीपणुं, अने ६ गोत्र कर्मना क्षयथी अगुरुलघुपणुं —कारण के, उच्च गोत्रना उदयथी लोकमां गौरव थाय छे अने नीच गोत्रना उदयथी लघुता थाय छे—सिद्ध जगवानोने विषे ए बंनेनो अजाव होवाथी अगुरुलघुपणुंज छे. अहिं कोइ वादी शंका करे के, सिद्ध जगवानने, सज्जनोने पूजनीय होवाथी गुरुपणुं अने नास्तिकोने पूजनीय न होवाथी लघुपणुं होय,

तेथी अहिं अगुरु लघुपणुं केम कहेवाय ?" तेना उत्तरमां कहे छे के, "जेम उच्च गोत्रवाळा पुरुषना आववाथी आसन उपरथी उठवुं, आसन देवुं अने पूजा करवी वगेरे थाय छे, अने नीच गोत्रवाळा पुरुषना आववाथी तेम थतुं नथी, तेने तो दूरज रखाय छे, तेवी रीते अहिं सिद्ध भगवानोना व्यवहारमां थतुं नथी; माटे तेओमां अगुरु लघुपणुं छे, ते युक्तज छे. ७ अंतराय कर्मना क्षयथी सिध्ध भगवानोमां अनंतवीर्यपणुं छे, तेथी लोकवर्ती अनंत पदार्थोनुं समकाळे ज्ञान तेमने संभवे छे. ८ वळी ते सिद्ध भगवानोने अनंत सुखपणुं कहेवाय छे, ते वेदनीक कर्मना विनाशथी उत्पन्न थयुं एवुं अव्याबाध स्वरूप अथवा सम्यक्त्व स्वरूप समजवुं.

आ प्रमाणे श्री सिध्ध भगवानना गुणोनुं वर्णन करवामां आवे छे; तेमना सकळ मंगळमय परमात्म स्वरूपनुं वर्णन करतां कहे छे के,—

" इत्थं स्वरूपं परमात्मरूपं, निधाय चित्ते निरवद्यवृत्तेः ।
सद्ध्यानरंगात्कृतशुद्धिसंगा भजन्तु सिद्धिं सुधियः समृद्धिम् ।१।

" ए प्रकारे निर्दोष वृत्तिथी चित्तनी अंदर श्री परमात्मानुं स्वरूप धारण करी शुभ ध्यानना संगथी जेमणे भाव शुध्धि प्राप्त करेली छे, एवा सद्बुद्धिवाळा जनो सिध्धिरूपी समृध्धिने भजो." १

" भगवत्समयोक्तीना-मनुसारेणैष वर्णितोऽस्ति मया ।
परमात्मतत्वविचारः शुध्धः स्वपरबोधकृते " ॥ २ ॥

" श्री जिनराजना आगमना वचनोने अनुसारे आ शुध्ध परमात्म तत्त्वनो विचार (स्वरूप) में पोताना अने पर (भव्यजीवो)ना बोधने माटे वर्णन करेल छे. २

श्री जिनभक्तिसूरिना चरणकमळना आराधनमां भ्रमरतुल्य
एवा श्री जिनलाभसूरिए प्रकाशित करेला आ
आत्मप्रबोध ग्रंथने विषे परमात्म स्वरूप वर्णन
नामे चोथो प्रकाश संपूर्ण थयो.



आत्मबोधनी दुर्लभता.



" नरेन्द्र देवेंद्र सुखानि सर्वाण्यपि प्रकामं सुलभानि लोके ।
परं चिदानंदपदैकहेतुः सुदुर्लभस्तात्त्विक आत्मबोधः " ॥१॥

" आ लोकने विषे चक्रवर्ती अने इंद्र वगेरेना सर्व सुखो प्राप्त थवा सुलभ छे, परंतु चिदानंद–ज्ञानानंद पद (मोक्षपद)ना हेतुरूप एवो तात्त्विक–पारमार्थिक आत्मबोध थवो अत्यंत दुर्लभ छे. " १

" ततो निरस्याखिलदुष्टकर्म–व्रजं सुधीभिः सततं स्वधर्मः ।
समग्रसांसारिकदुःखरोधः समर्जनीयः शुचिरात्मबोधः ॥२॥

" तेथी उत्तम बुद्धिवाळा पुरुषोए सर्व दुष्ट कर्मना समूहनो नाश करी संसारना सर्व दुःखोने रोकनार एवा आत्मिक धर्मरूप पवित्र आत्मबोधने संपादन करवो. " २

ते आत्मबोध करनारी श्री जिनवाणीनुं माहात्म्य.

" न ते नरा दुर्गतिमाप्नुवन्ति, न मूकतां नैव जडस्वभावम् ।
न चांधतां बुद्धिविहीनतां नो, ये धारयन्तीह जिनेंद्रवाणीम्" ।१।

" जे पुरुषो आ लोकमां श्री जिनेंद्रवाणीने धारण करे छे, ते पुरुषो दुर्गतिने, मुंगापणाने, जड स्वभावने, अंधपणाने अने बुद्धिनी हीनताने पामता नथी. " १

" ये जिनवचने रक्ताः, श्री जिनवचनं श्रयंति भावेन ।
अमलागमतोऽक्लेशा, भवंति ते स्वल्पसंसाराः " ॥२॥

" जे पुरुषो श्री जिन भगवानना वचनने विषे रक्त छे अने जेओ भाववडे श्री जिन वचनने अंगीकार करे छे, तेओ निर्मल आगमना बोधथी क्लेशरहित अने अल्प संसारी थाय छे. " २

यदुक्तमादौ स्वपरोपकृत्यै, सम्यक्त्वधर्मादिचतुःप्रकाशः ।
विज्ञाप्यतेऽसौ शुचिरात्मबोधः, समर्थितं तद्भगवत्प्रसादात् ॥३॥

" जे प्रथम कहेवामां आव्युं हतुं के, पोताना तथा परना उपकारने-अर्थे सम्यक्त्वधर्म वगेरे चार प्रकाशवाळो आ आत्मप्रबोध ग्रंथ कहेवामां आवे छे, ते प्रमाणे श्री भगवान्ना प्रसादथी आ शुद्ध-पवित्र आत्मप्रबोध ग्रंथ संपूर्ण कहेवामां आव्यो छे. " ३

मिथ्यादुष्कृत प्रार्थना.

प्रमादवाहुल्यवशादबुद्ध्या, यत्किंचिदाप्तोक्तिविरुद्धमत्र ।
प्रोक्तं भवेत्तज्जनितं समस्तं, मिथ्याऽस्तु मे दुष्कृतमात्मशुद्ध्या १

" विशेष प्रमादना वशथी, अने बुद्धिना अभावथी, आ ग्रंथमां जे कांइ आप्त पुरुषोना वचनथी विरुद्ध कहेवामां आव्युं होय, ते आत्मशुद्धिवडे मारुं तमाम दुष्कृत मिथ्या थाओ. " १.



ग्रंथकार प्रशस्ति.

(ग्रंथकर्त्तानी गुरुपरंपरा.)



" श्रीमद्वीरजिनेंद्रतीर्थतिलकः सद्भूतसंपन्निधिः
संजज्ञे सुगुरुः सुधर्मगणभृत्तस्यान्वये सर्वतः ।
पूर्णे चांद्रकुलेऽजवत्सुविहिते पक्षे सदाचारवान्
सेव्यः शोत्तनधीमतां सुमतिमानुद्योतनः सूरिराट्" ॥१॥

" श्री वीरजिनेश्वरना तीर्थमां तिलकरुप अने सत्य संपत्तिओना निधानरुप गुरु श्री सुधर्मा स्वामी थया हता. तेना वंशमां सर्व प्रकारे पूर्ण एवा चंद्रकुलमां[1] विधिपक्ष (खरतरगछनी) अंदर उत्तम आचारवाला अने सारी बुद्धिवाळा विद्वानोने सेववा योग्य एवा उद्योतन नामे सूरिवर थया हता.

" आसीत्तत्पदपंकजैकमधुकृत् श्रीवर्द्धमानाभिधः
सूरिस्तस्य जिनेश्वराख्यगणभृद् जातो विनेयोत्तमः ।
० ८ ० १
यः प्रापच्छिवसिद्धिपंक्तिशरदि श्रीपत्तने वादिनो
जित्वा सद्विरुदं कृती खरतरेत्याख्यंनृपादेर्मुखात्" ॥२॥

" ते उद्योतन सूरिना चरणकमलमां भ्रमररुप श्री वर्द्धमान नामे तेमना शिष्य थया हता. ते श्री वर्द्धमानसूरिना उत्तम शिष्य श्री जिनेश्वरसूरि गणधर थया हता. ते जिनेश्वरसूरिए विक्रम संवत् १०८० ना वर्षमां श्री जवलपुर-

---

१ अहिं 'सुविहिते पक्षे' एनो अर्थ चंद्रपक्षे उज्वल पक्ष पण थाय छे

" जे पुरुषो श्री जिन भगवान्ना वचनने विषे रक्त छे अने जेओ भाव-वडे श्री जिन वचनने अंगीकार करे छे, तेओ निर्मल आगमना बोधथी क्लेश-रहित अने अल्प संसारी थाय छे. " २

यदुक्तमादौ स्वपरोपकृत्यै, सम्यक्त्वधर्मादिचतुःप्रकाशः ।
विज्ञाप्यतेऽसौ शुचिरात्मबोधः, समर्थितं तद्भगवत्प्रसादात् ॥३॥

" जे प्रथम कहेवामां आव्युं हतुं के, पोताना तथा परना उपकारने अर्थे सम्यक्त्वधर्म वगेरे चार प्रकाशवाळो आ आत्मप्रबोध ग्रंथ कहेवामां आवे छे, ते प्रमाणे श्री भगवान्ना प्रसादथी आ शुद्ध-पवित्र आत्मप्रबोध ग्रंथ संपूर्ण कहेवामां आव्यो छे. " ३

मिथ्यादुष्कृत प्रार्थना.

प्रमादबाहुल्यवशादबुद्ध्या, यत्किंचिदाप्तोक्तिविरुद्धमत्र ।
प्रोक्तं भवेत्तज्जनितं समस्तं, मिथ्याऽस्तु मे दुष्कृतमात्मशुद्ध्यै १

" विशेष प्रमादना वशथी, अने बुद्धिना अभावथी, आ ग्रंथमां जे कांइ आप्त पुरुषोना वचनथी विरुद्ध कहेवामां आव्युं होय, ते आत्मशुद्धिवडे मारुं समस्त दुष्कृत मिथ्या थाओ. " १.

आत्मप्रबोधः समाप्तः





ग्रंथकार प्रशस्ति.

(ग्रंथकर्त्तानी गुरुपरंपरा.)



" श्रीमद्वीरजिनेन्द्रतीर्थतिलकः सद्भूतसंपन्निधिः
संजज्ञे सुगुरुः सुधर्मगणभृत्तस्यान्वये सर्वतः ।
पूर्णे चान्द्रकुलेऽत्रवत्सुविहिते पक्षे सदाचारवान्
सेव्यः शोभनधीमतां सुमतिमानुद्योतनः सूरिराट्" ॥१॥

" श्री वीरजिनेश्वरना तीर्थमां तिलकरुप अने सत्य संपत्तिओना निधानरुप गुरु श्री सुधर्मा स्वामी थया हता. तेना वंशमां सर्व प्रकारे पूर्ण एवा चंद्रकुलमां[1] विधिपक्ष (खरतरगच्छनी) अंदर उत्तम आचारवाळा अने सारी बुद्धिवाळा विद्वानोने सेववा योग्य एवा उद्योतन नामे सूरिवर थया हता.

" आसीत्तत्पदपंकजैकमधुकृत् श्रीवर्द्धमानाभिधः
सूरिस्तस्य जिनेश्वराख्यगणभृद् जातो विनेयोत्तमः ।
० ८ ० १
यः प्रापच्छिवसिद्धिपंक्तिशरदि श्रीपत्तने वादिनो
जित्वा सद्बिरुदं कृती खरतरेत्याख्यंनृपादेर्मुखात्" ॥२॥

" ते उद्योतन सूरिना चरणकमळमां भ्रमररुप श्री वर्द्धमान नामे तेमना शिष्य थया हता. ते श्री वर्द्धमानसूरिना उत्तम शिष्य श्री जिनेश्वरसूरि गणधर थया हता. ते जिनेश्वरसूरिए विक्रम संवत् १०८० ना वर्षमां श्री जवलपुर-

1. अहिं 'सुविहिते पक्षे' एनो अर्थ भद्रपक्षे-उज्वल पक्ष पण थाय छे.

मां वादिओने जीती त्याना राजा वगेरेना मुखथी खरतर एवी पदवी : करी हती. २

" तच्छिष्यो जिनचंद्रसूरिगणभृद् जज्ञे गुणांभोनिधिः
संविज्ञोऽभयदेवसूरिमुनिपस्तस्यानुजोऽभूत्ततः ।
येनोत्तुंगनवांगवृत्तिरचनां कृत्वार्हतः शासने
साहाय्यं विदधे महच्छ्रुतपरिज्ञानार्थिनां धीमताम् " ॥३॥

ते श्री जिनेश्वरसूरिना शिष्य गुणोना समुद्ररूप श्री जिनचंद्रसूरि गणधर थया हता. तेमना शिष्य संवेगी अभयदेवसूरि थया हता. तेमणे श्री जिनशासनने विषे मोटा सिद्धांतोना अर्थने जाणवाना अर्थी एवा बुद्धिमान् पुरुषोने सहाय करवा नव (श्री स्थानांगसूत्रथी विपाकसूत्र सुधीना) अंगो उपर टीका रची हती. ३

" तत्पट्टे जिनवल्लभो गणधरः सन्मार्गसेवापरः
संजातस्तदनुप्रभूतमहिमा सद्भव्यबोधप्रदः ।
अंबादत्तयुगप्रधानपदभृत् मिथ्यात्वविध्वंसकृत् धर्मः
नेता श्रीजिनदत्तसूरिरभवद् वृंदारकाभ्यर्चितः " ॥४॥

" ते श्री अभयदेवसूरिनी पाटे सन्मार्गनी सेवा करवामां तत्पर एवा श्री जिनवल्लभ गणधर थया हता. ते पछी ते श्री जिनवल्लभनी पाटे जेमनो घणो महिमा छे, जेओ उत्तम एवा भव्य प्राणीओने बोध आपनारा छे, अंबा देवीनी सहायथी जेमणे युगप्रधान पद प्राप्त करेलुं छे, जेओ मिथ्यात्वनो नाश करनारा छे अने जेओने देवताओए पूजेला छे, एवा श्री जिनदत्तसूरि थया हता. ४

" तदनु श्रीजिनचंद्रः सूरिवरोऽभूत् स्वधर्मनिस्तंद्रः ।
सन्मणिमंडितभालप्रणताखिलशिष्टभूपालः " ॥ ५ ॥

" ते पछी श्री जिनदत्त सूरिनी पाटे श्री जिनचंद्रसूरि थया हता. जेओ स्वधर्मने विषे अप्रमादी अने जेमने सर्व उत्तम राजाओ पोताना सुंदर टवाळा मस्तकोथी नमता हता.

" तद्वंशे गुणनिधयः सम्यग्विजया मुनीश्वराः शुचयः ।

श्री जिनकुशलमुनींद्र—श्रीजिनभद्रादयो मुनयः ॥६॥

श्री जिनचंद्रसूरिनी पाटे पोताना निधि रुप, सम्यक् प्रकारे विजयी थयेला, अने पवित्र एवा श्री जिनकुशल अने श्री जिनभद्र वगेरे मुनींद्रो थया हता. ६

" जज्ञे मुनींद्रस्तदनुक्रमेण श्रीजैनचंद्रो मुनिमार्गसेवी ।
प्रबोधितो येन दयापरेण अकब्बराख्यः प्रतिसाहिमुख्यः ७

ते पछी अनुक्रमे मुनिओना मार्गने सेवनारा श्री जैनचंद्रमुनि थया. जे दयालु मुनिए बादशाहोमां अग्रेसर एवा श्री अकबर बादशाहने प्रतिबोधित कर्यो हतो. ७

तदन्वभूत् श्रीजिनसिंहसूरिः स्वपाटवाल्हादितसर्वसूरिः ।
ततः स्वधीनिर्जितदेवसूरिः स्फुरत्प्रतापो जिनराजसूरिः ८

श्री जैनचंद्रसूरिनी पाटे पोताना चातुर्यथी सर्व विद्वानोने आनंदित करनार श्री जिनसिंहसूरि थया हता अने तेमनी पाटे पोतानी बुद्धिथी देवताना सूरि बृहस्पतिने पण पराजय करनार अने प्रतापथी स्फुरणायमान एवा श्री जिनराजसूरि थया हता.

शिष्यो जिनरत्नसूरिसुगुरुः श्री जैनचंद्रस्ततो
गच्छेशो गणभृद्वरो गुणगणांभोधिर्जगद्विश्रुतः ।
तत्पट्टोदयशैलमूर्ध्नि च सूरि र्भास्वत्प्रतापोद्धुरः
पूज्यः श्रीजिनसौख्यसूरिरभवत्सत्कीर्त्तिविद्यावरः ॥९॥

" ते श्री जिनराजसूरिना शिष्य जिनरत्नसूरि थया अने तेमना शिष्य श्री जिनचंद्र थया, जेओ गच्छना नायक, गणधरोमां श्रेष्ठ, गुणगणोना समुद्र अने जगत्मां प्रख्यात थया. तेमनी पाटरूपी उदयगिरिना शिखर उपर सूर्यना जेवा प्रतापी, पूज्य अने सत्कीर्त्ति तथा सद्विद्याथी श्रेष्ठ एवा श्री जिनसौख्यसूरि थया हता. ९